MANUSCRIPT NO.	**247**
NAME OF MANUSCRIPT	**Mahabharta**
AUTHOR	**N.A.**
SUBJECT	**Religion**
LANGUAGE	**Hindi**
SCRIPT	**Devnagiri**
BRIEF EXPLANATORY NOTE	**The manuscript is a hindi verse of the great epic Mahabharta.**

247

...तमसमहोन्ता जगमाही॥समभ...
...समसुहिरराविकरा॥१॥॥से...
...अज्ञानशीलशतधाम्ना॥भ...
...शीहपुंनसमाकरतेनतज...
...ज्योसजसमहरधकते...
...मनमोकापूटीविन...
...हावत॥कृतकार्य...
...प्रगटेंहि॥न...
...तभोरे॥इ...
...दोहरा॥...
...न...

...नावोमनेहिलसंपर॥इहितेउपजे
...गयेमइनोरिदेवीचारधगयेमभी
...काहूपरचितनाहलुभावे॥
...तेनोकाहिविदासिधावे॥
...सीठोरसैननमेंजारे॥
...॥ताजीवतजगपमेर
...१४॥समचिंततविसमे
...गोरे॥करेरघहमरीहि
...१२०॥दुर्योधनोवाच॥

247

...निज...
...रहीवतज...
...दुखाछाने॥

14½×13½

247

247

गेतमसमहो चाजगमाही॥समझी स्वर्ग ईहोर हिजाई॥मनतन दनाकी महिहिस्संपरा॥इहिते उपजे
ममनुहि ग्यानिकरा॥१४॥ संजयोवाच॥ भीषमकी द्रिढताहि बरायो॥ इन्होंरिदे वीचारघनायो॥ भी
षमग्यानशील शतधामा॥भगतप्रीतजगसोनिहकामा॥१६॥ काहूपरचितनाहलुभावे॥
इहिपुंनसमानाऊरतेनतजावे॥सरसिहजाभीषमपदु हायो॥इहि दोनोकौहि विदासिघायो॥
जैयोग्य जसमनहर घडतेहीना॥त्यों कुरसेन द्रिगपरीग्यधीना॥ऐसीढोरसेनमंठारे॥
मनन्नो काफूटीविनामलारे॥१८॥याबलपरसमुयोधकहावत॥ताजीवतजगपर्मर
हावत॥कृतकार्यतेग्याज्ञापाई॥स्वततामहिग्यानरवग्यधिकाई॥१९॥समचिततनविसमे
प्रगर्टैही॥जगभीषमसमकोननिहारैही॥विनुभीषमकौसिष्याधारै॥करेरछहमरीहि
तभारै॥इहिप्रकारग्यानि वहुचिंताते॥कौरवानजीयमंत्रसठाने॥२०॥दुर्योधनोवाच॥
दोहरा॥भीषमहो तुमसेन मोभारयोधवडग्यान॥तिहवलपरगर्वीतहम रछाकरतमहा
न॥२१॥अवसेनापतिरणकोकीजेहितचितहोइ॥भीषमहीज्यौंभारवलकरररछारणसो
इ॥२२॥संजयोवाच॥दोहरा॥भीषमझरणसुधुकर्णसुनाई॥अधिकसोकघरचितविस
माई॥मनविचारकीयोरविसुतभारी॥ग्यानिवलयाकुरसेनमझारी॥२३॥भीषमविनु
कुरसेनदिषावे॥निहचैपांडवसवलपरावे॥सवलहोइकुरसेनसिघावै॥भावत
इहिगर्थचढतनकोरे॥२४॥भीषमपगपरसीसुधरायो॥चरमचरननमुरवतेप्रगटायो॥दों
हेकर्णहेतातहमारे॥केरोछिमामहरग्य घन्सतिभारे॥हमतुमरेसननमुरवउचराव
त॥अधिकऊनकवहूप्रगटावत॥तेसमगय घमुनिरछिमाकरावो॥तुमरतानरूप
निनग्यानदिषावो॥२६॥तुमजीवतवडयोधकहायो॥कीयोनिवाहमुरवप्रसादपायो॥
रहीवतजगवडसोभतुमनाही॥अवजगजसरपुरगतभारी॥२७॥तुमसेयोधनक
छदुग्राछिने॥जिहिपरसत्तमसेरणअजरकाने॥अवजैनहोयजोतुमनहिपगने॥

लघहो चितकी चा[illegible]हानि ॥२८॥ कौरवानकी जैसो धविहानी ॥ कह्यो ईश्मित्र तसमकी निकट
नी ॥ तातरतु हि अर्जुन कह्यो गेयें ॥ अजु अज्ञ गेहु ज जैसे करीये स्यौं ॥२९॥ कहति अस चर्य ह
मुरे मन कह्यो वै ॥ ईश इछ कहीये न जनावै ॥ सकल गाय हरि इछा माही ॥ हरि गति मे
रस के को नाही ॥३०॥ यों सस्य धुसम जगत भ्रमाये ॥ उदम कह्यो स उपावो पाये ॥ स्रनो
ता तन्न व विनी हमारी ॥ मिधा धारे मो हित कारी ॥३१॥ भीष्मो वाच ॥ हे रवि सत इहसि
छवधानो ॥ कौरवान सो रहो इक ठानो ॥ यथ वल हिरदा हित धारो ॥ पांडवान सो युद्ध
सभारो ॥३२॥ यद्यपि ज्ञान तेहो मन माही ॥ जह ज्ञ अर्जुन सन रुकमनि दिषाही ॥ कह्यो अर्जुन
तेजु सम कह्यो निधरावे ॥ बहुर रवहम्र पर ज्वल करावे ॥३३॥ तिह ज्वाले सम जगत ज
रावें ॥ वचेन को मो को दिषरावे ॥ पदये तुम उधम करसा को ॥ धरहो हित चितवि
ल्मुनता को ॥३४॥ संजयो वाच ॥ भीष्म वचन मान रवि सुत वर ॥ पगच नतमं यो
सिदा दुरग ज्ञलुहर ॥ जब गयो कर्ण भीष्म मुरझाने ॥ कह्यो धनुर धरी अखल सोने ॥३५॥
जैं कय सुनत क्रोता उठ जावे ॥ वकता क्रम लसकर पो हुवे ॥ दुर्योधन निकट
गये जवर विसुत ॥ कुरन पादि सम भये हरयुत ॥३६॥ सम के मन कस्रति धीर्य ज्ञायो ॥
इयते सहि सगुन वल उपायो ॥ दुर्योधनो वाच ॥ कोहि सैन को होय सेनपति ॥ कोरह र
णभु महित चित ज्ञति ॥३७॥ कर्णोवाच ॥ हेन्त पद्रोणादि ज सम भते उचो ॥ वलु विधारणयो
युध स्रचा ॥ तिहि हेवत इहि उचत न तो हा ॥ सैना पति धारत रे मो हा ॥३८॥ समभाक
कर्णो व चसुनाहि नु मानो ॥ द्रोणाचार्य निकट गमानो ॥ चाहत तिह सेनापति धारे ॥
भीष्म सम निजरथ संभारे ॥३९॥ द्रोण उवाच ॥ दोहरा ॥ हम जांनन हें गाथ सम
नीरु भांत जीय मार ॥ पांडुवान के कैसे समजन दूसर नी दिषाह ॥४०॥ पदयतु मनेरि
नयुध करोध रोन प्यारे प्रान ॥ घोड्ञावे ना सोल्लेरे करे गसा च वध्यान ॥४१॥

धृष्टद्युम्न कर सिव तुह मारी ॥ ता सो राषत है मय भारी ॥ जैसे से हम रवि ते जु दिषाही ॥ घट जावे नर
उहर सकाही ॥ ४२ ॥ ति उ धृष्टद्युम्न आगे हम रेवल ॥ धरन सको धीर्य जावे टल ॥ निह चे तिह
सो काल हमारे ॥ ईह सुन कुरन पांचन उचारे ॥ ४३ ॥ दुर्योधन बाच ॥ हे गुर होना विन दू
नर राई ॥ तुम हो हु से नपती हत चित लाई ॥ से ना पति विन सैना जैसे ॥ सीस हीन देहि
ही से जैसे ॥ ४४ ॥ ईह प्रकार बहु बचन सुनाये ॥ द्रोण भयो पत सेन महाये ॥ तब कुरन नृप
नि जसे नस भारी ॥ द्रोण रन धारत चित भारी ॥ ४५ ॥ कुलंग ब्यूह सेना तब धार्यो ॥ चुंच ठौ
र निज निज बल भार्यो ॥ कृपा शकुन कृतवरम जे दुष ॥ दाहन अंग ईह संग सेनाति
पुन कंधार को भूप सेन सरण ॥ बाम अंग कीना बल दल रण ॥ दछन दिस के योधा बला
री ॥ ग्रीवा बोज को नृप अति भारी ॥ ४६ ॥ ईह पाछे कीने बलकारी ॥ शस्त्र परब उछवे
दिषारी ॥ दुर्योधन कर्ण दोऊ बलसारे ॥ सभ के आगे भये युध सारे ॥ ४७ ॥ ऐसे सभ भांत ज
र सेना धारी ॥ भीषम सम हू दीयो विसारी ॥ पांडवा नभी ईह विध कीने ॥ कुलंग ब्यूह से
ना सजलीने ॥ ४८ ॥ ऐसे ब्यूह तब लगे दिषाही ॥ जब लग योधन आपर हाही ॥ च
त सेन रविधर लुपाना ॥ चील्हन भकिल कार महाना ॥ ४९ ॥ बढउ उ काग धुजन प
रव हही ॥ स्वान सिगाल बेग अति गहही ॥ मास अहार करे यो जनि गण ॥ होय घपर दो
री फिर भूमर ण ॥ ५० ॥ चुंच दंत नष तीछन धारी ॥ भये रूर घस भ मास अहारी ॥ ऐसे भूत
प्रेत दोराये ॥ मन धाम षान धमाऊ आये ॥ ५१ ॥ दुहू ओर योधे दोराने ॥ निज निज अर
लीने पहिंचाने ॥ अर्जुन सोर विस्त संवादे ॥ भये सनमुख दोऊ योधा अवादे ॥ ५२ ॥
धर्म ज भीम नकुल सहदेवा ॥ भये द्रोण सनमुख निह भेवा ॥ पुत्र सपर वानर वै वडर
रही ॥ दोर तह नह नश बद उचरही ॥ ५३ ॥ कुरसेना अधिक सबल परानी ॥ दोर ओर धृ
ष्टद्युम्न दिषानी ॥ द्रुपद पुत्र अस तेज हि आये ॥ कुरसैना महि फार कपाये ॥ ५४ ॥ निर

३
३६ घट्टेणनिजसेनसंभारी॥ कुअरसेनाकी धीरनिवारी॥ द्रोणवलीकैसे वलुपाये॥ ५९॥ दुस्र
कथ्थकरनस्काये॥ ५॥ सादिजकातेजवढेवेगनिहोरे॥ पांडुवपुनविसमानेभारे॥ ६०॥
दुस्र परभीरदिखाये॥ कुरजैनसोधर्मेजपुगटाये॥ ६१॥ अनुमदिजसोयुधकाहेकरहो॥ नि
जभुजवलकाहेनसंभरहो॥ पर्ईहमोहिधर्मपुचकर्जैनसण॥ ६२॥ दुस्रकरभीमशत्रुहन
५६॥ कुभमनन घेटातकचतेजअपारे॥ पंचालीसुतपांचोभारे॥ स्यातकचेकतानवलसेरे॥
युयुतसभाप्राक्रनवलनरे॥ ६४॥ समसैदोरथरेइकवाली॥ प्रसपरसरवर्धवढधारी॥ ६५॥
प्रहारसभीइकठाये॥ निर्धतादिजनहिधीरतजाये॥ ६६॥ रोरवरकानप्रहारत॥ सभकेसन्मु
खकीयेवढभारत॥ ६७॥ जरघकसुपदातजेहाने॥ ६८॥ तनाहकोडिनेमहाने॥ ६९॥ पवन
पुत्रतवरिसकतधाये॥ द्रोणसनमुखेयुद्धमझाये॥ ७०॥ कैसेवलदिजरथदोनवै॥ कराजमनगमन
तिहकोछुनलधावै॥ ७१॥ कहनिजनामजवरुप्रहारे॥ तवलखवरदितकेवलभारे॥ ७२॥ कोप
युधदिजवरप्रगटाने॥ रणभुमनमधवढवलैमहाने॥ ७३॥ प्रहतवउगाइकतेदयकरहा॥ ७४॥ श
त्रप्रहारदोइइकधरही॥ दिजकैसेरणभुमयुधुकीने॥ पंडुसततनभारीमयलीने॥ ७५॥ ७६॥
वैयोंतरथत्रपवनवला॥ कुराधादोदिजवानीहिनमथला॥ हिनकेअस्रगजैजभुमरण॥
धनुघटंकाररघचलतशरघण॥ ७७॥ जाघीरसकीकोनसुनावत॥ धनतेयोधजोधी
रधरावत॥ देसकेपालेकेनपभारी॥ सननसवेद्रोणकेभयेवलाधी॥ ७८॥ दिजवढवलसोतन
छिनकीने॥ स्वरणपरएसकलप्रवीने॥ रणतजमठेहिरनहीसाके॥ दिजकेमयभाभीच
तताके॥ रथुदिजकासमपौनचलावे॥ रघउपरचपलाचमकावे॥ ७९॥ दोहरा॥ पांडुवा
नकीसेनरणदिजरथोदिखईहिभांत॥ केपउठेकाहिकवपरेधर्नैसकावेशांत॥ ८०॥ पव
नपुत्रकरजैनसहितजरकाशीकोमपा॥ द्रुपदसुताकेसुतोसनभयेसमुखवेकानूपा॥
चौपई॥ द्रोणभुजननवलस्रपरहारे॥ सभकेतनकेधेयुधभारे॥ इनभीसरवरधावह

भासी॥ सैन द्रोण की रणसिंघारी॥७॥ आतुर रूप द्रोण सो कही उचारे॥ मै दिज बर तुहि बलु निह
कारे॥ अस्त्र जु पाउ बाकी सैना सभ॥ निबल दिखावत हो रण भुन क्रम वा॥७॥ हम सभ सैन क्रुध
के बलु पाये॥ दीसत रण भुमानि हचाक्रमाये॥ ता ते कैसे बलु रण पावो॥ धर्म जको जीवत
गहि ल्यावो॥७५॥ अस्त्र जु गहो न ही ता हत जावो॥ कैसे सासमा काल कहा पावो॥ संजयोवाच
धर्मपुत्र इहि गाथ सुनायो॥ अर्जुन सो भाखत प्रगटायो॥७६॥ हे अर्जुन आतुर रूप की वा
ता॥ कहे द्रोण सो गर्व तज्या ता॥ चाहत है मो को पकरावै॥ द्रोण सह तरण भुन बलज्यावै॥
तुम यो कहत सदवार वारे॥ सभ कौरव रण के तोंसिंघारे॥ अब न करो कब करो भुजा बल
परे सबल हम पर रणज्ञ रघल॥७७॥ बलु संभार कैसे युध धारो॥ अब रण स्या निरा
सकर तुरे॥ द्रोण सपादु हुसो रणलर है॥ भुज बलु भार भनरण धरहो॥७८॥ कैसे प्रा
क्रम मो ह दिखावो॥ दुहु की सुध बुध रण बिसरावो॥ जब क्रम पुन ज्ञाप संभरन सकावै॥
मो ह पकर रण युध कहा पावै॥८०॥ अर्जुनोवाच॥ द्रोणाचार्य गुरदेव हमारे॥ ता को नहि
हत करो सुचारे॥ पय जो लो मर्हि जीवत द्रिण रो॥ तो तुह पर को परे बिचारो॥८१॥ गर्व
बचन ये कहे दुर्योधन॥ अस कौ हहर घर हत है निज मन॥ ये न भउ ठगन हू रपराही
पक्ष मदि न ते भान उदाही॥८२॥ सुरपत ये नु हसन न मुख क्यावै॥ मह जीवत तनुहि जित न
सकावै॥ हमरे बचन सान्च कर मानो॥ है अस्त्र न कब हू न बधानो॥ हरि को सपथ करो सु
न लीजै॥ यां मो भर्म भेद मत कीजै॥८३॥ संजयोवाच॥ दोहरा॥ इहि कहि पाउ व इक ठहो
चिंतते चिंत बिसार॥ पुन दिज के सनमुख भये निज बलु तेज संभार॥८४॥ चौपई॥
गांडीव धनुष अर्जुन कर धारे॥ स्रणभु मनो सरकर तप्र हारे॥ दिज वानो अर्जुन के वाना॥
म गहि कटावत तेज महाना॥८५॥ धष्टदुम्न तन वानल जाये॥ कीयो विसुध दिजवर रव लु

੪
੩੦

ਪਾਏ॥ਏਤੇਡਗਿਨਵਾਨੀਦਜਉਰੇ॥ਲਗੀਡਗਿਨਮਨੀਨਹਗੋਰੇ॥੨੬॥ਦ੍ਰੋਣਵਾਣਕੋਉਬ੍ਰਿਧਾਨਪਰਹੀ
ਠਜਰਥਅਸੁਪਦਾਤਹਨਕਾਰਹੈ॥ਕਰੇਸੀਸਰਣਕ੍ਰੋਣਨਮਰੇ॥ਮਨਨਰੇਲਤਰਕਰਤਲਪਰੇ॥੨੭॥ਸਹ
ਦੇਵਸ਼ਕੁਨਕੇਸਨਮੁਖਹੋਏ॥ਕਰਤਯੁਧਰਣਭੁਮਵਲਦੋਏ॥ਸਰਪਰਸਰਸਹਦੇਵਪ੍ਰਹਾਰੇ॥ਸ਼ਕੁਨਤਹਾ
ਯਤੇਧਨੁਕਟਉਰੇ॥੨੮॥ਪੁਨਧ੍ਰਿਸਟਦ੍ਯੁਮਨਸਰਤਕੀਨੇ॥ਪੁਨਕਸਰਤਨੁਧਿਨਕੀਨਪ੍ਰਬੀਨੇ॥ਅ
ਕਤਕੋਪਸਰਕੇਰੇਪ੍ਰਹਾਰੇ॥ਪਤੁਸੁਤਕੇਧਨਅਸਕਟਉਰੇ॥੨੯॥ਦ੍ਰੁਪਦਦ੍ਰੋਣਕੇਸਨਮੁਖਜਾਏ॥ਇਵ
ਸਵਾਣਦਸਧਾਰਤਜਾਏ॥ਦ੍ਰੁਪਦਨਿਰਖਦਸਹੀਸਰਲਾਏ॥ਦ੍ਰੋਣਕੋਚਿਤਕੀਨੋਵਲੁਪਾਏ॥੩੦॥ਅਨਵ
ਵੇਨਤਸੋਸੁਤਪਵਨਲਰਤਰਣ॥ਪ੍ਰਹਰਤਸਸਤ੍ਰਦੋਉਯੋਧਅਚਲਮਨ॥ਵੇਨਤਸਰਪਰਸਰਪਰਹਾਰੇ॥
ਧਜਬਭੀਮਕਾਕਟਮਨਉਰੇ॥੩੧॥ਭੀਮਪਦਾਤਰਣਠਾਦਸੰਭਾਰੀ॥ਮਾਰਕੋਪਕਰਰਥਪਰਉਰੀ॥ਸਣ
ਸਾਰਥਅਸਰਥਭਯੋਧੂਰੇ॥ਵੇਨਤਕੂਦਠਾਯੋਵਲਭਾਰੇ॥ਘਤੁਗਚਰਮਕਰਮਾਹਧਾਯੋ॥ਸਨਮੁਖ
ਭੀਮਕੇਦੌਰਲਗਾਯੋ॥ਰਣਭੂਮਦੋਉਸੇਰਰਜਾਏ॥ਮਨਦੋਉਗਜਉਨਮਤ੍ਰਲਗਾਏ॥੩੨॥ਕ੍ਰਿਪਾਚਾਰਯ
ਅਰਧਕੇਤਵ॥ਕ੍ਰਸਪਰਤਨਮਮੈਰਣਪਰਹਰਾ॥ਧਕੇਤਸਰਕੀਨਪ੍ਰਹਾਰੇ॥ਦਸਅਸਮਰਠਰਕਹੀ
ਗਾਰੇ॥ਕਰਮਜੋਯਧੀਰਰਦੇਹਾ॥ਕ੍ਰਿਪਾਚਾਰਯਕੋਯੋਵਲਨਹਾ॥ਕੇਸੀਅਰਕੋਵਧਕਰਾਈ॥ਅਸਰਥ
ਦੇਖਵਧਿਦਧਰਾਈ॥੩੩॥ਕ੍ਰਿਪਾਮਕਰਦੂਜਪਰ॥ਕੀਯੋਯੁਧਕੋਉਹਰੇਨਪਗਧਰ॥ਸਾਤਕ
ਤਵਰਮਾਕੇਸੰਗਾ॥ਕਰਤਯੁਧਰਣਹੋਇਸ੍ਰਮਭੰਗਾ॥ਸਰਮਰਿਤਾਰਦ੍ਰਮਨਵਲਭਾਰੇ॥ਰਣਭੁਮਧਾਰਤ
ਯੁਧਅਪਾਰੇ॥ਰਿਵਸੁਤਕਰਸੋਧਨੁਖਸੰਭਾਰੀ॥ਰਥਾਸੇਨਕਰਤਵਲਭਾਰੀ॥੩੪॥ਕੇਤੁਵਾਨਕੇਵਾਨ
ਦਿਖਾਯੋ॥ਕਰਕਟਉਰਤਰਣਵਲੁਪਾਯੋ॥੩੫॥ਦੇਖਕੌਰਵਕੀਸੈਨਿਚਨੁਰਾਈ॥ਕਰੇਉਪਮਸਭਜਨਵਉ
ਰਾਈ॥੩੬॥ਮਿਥਉਸੋਮਦਤ੍ਰਰਣਲਰਹੈ॥ਪ੍ਰਸਪਰਸਤਸਤਵਾਨਪ੍ਰਹਰਹੈ॥ਉਲੇਕਸਯੁਧਘੋਰਤਕਕ
ਸਗਾ॥ਦੋਉਸਰਵਉਯੋਧਅਭੰਗਾ॥੩੭॥ਦੋਊਨਾਗਾਕੀਮਾਯਾਧਾਰੀ॥ਕਨਕਭਾਨਤਵਉਯੁਧਸੰਭਾਰੀ॥
ਡਨਕਾਯੁਧਕਰਨਨਹੀਂਆਵੈ॥ਅਨਿਭਯਾਨਕਤਧਪਾਰਨਪਾਵੈ॥੩੮॥ਦੁਰਯੋਧਨਲਖਨਚੇਕ

ता न्ना॥ करन पुरस परयुद्ध महा ना॥ अरस्त्र वाले कुस मन न परवल्ला॥ करत युद्ध दोऊ भारी रणथल॥
९९॥ कुस मन न तन कुसर धित दी यो कस्ति॥ अर्जुन सत रण लो पम यो न ना॥ सरत कुसर साथ ऊन
दा ये॥ पुन दूसर धनु कम तुं दिखा ये॥ पंच वल हि सर कुस सार पसरा॥ छित की ने कुस तिमा
री भुमर रना॥ दिख हाई कउ वल धनु ख संभा रे॥ कुस मन न वल की ये गान पुहारे॥ १०॥ कुस मन न
साथ न पार रउ हारे॥ कुस मन न रिस कर धनु ख संभा रो॥ खउ ग भुमा य भुमा य वल हिर॥
कु सर परउ सी पय न लल ची वर॥ ११॥ अर्जुन सत दिख को धु उपाये॥ खउ गसता ग दो सो रि स
बाये॥ सूद शत्रु के के स ग हाये॥ खेच वल हि भुम सो पट का ये॥ १२॥ ये दु य दिख वल दोर प
रा न्ना॥ कुस मन न सन्मुख वे दोग री न्ना॥ ये दुप ऊरकुस मन न दिखा ये॥ पन दो र हाई दे को
जा ये॥ १३॥ सूद शत्रु केर प हिंच उ ये॥ ये दु पसोर प मो पुछ पाये॥ जै सम खु कर तपु
धु भारे॥ लरत लरत भुम परे वला रे॥ १४॥ पुसपर भु जव लकी ये महाने॥ एक जाम दोऊ
पुरुस माने॥ अर्जुन सत वल दा प मरो रे॥ नि ज भुज वल दी ये व उ फ कउरे॥ १५॥ ये
दुप कुसन हाय धु उ ये॥ उ पो भा ग रण पुछत जा ये॥ अर्जुन सत दिख कुस उ ये॥
कोपकाश न्हदि दिखन सन का ये॥ १६॥ अर्जुन सत पर दौर शम कत व र॥ कीन पुहार श
त को पभा र धर॥ कुस मन न शल की शक तर रा ने॥ पुन सर उर पर ह लो म हा ने॥ १७॥
शल दिख सी सन्म पाय नि जा ये॥ तक कुस मन न सर कौर त जा ये॥ शल की ये रख उ
वल करउ रे॥ खेच तन स्य ते भ म उ ता रे॥ १८॥ खेच तन लके शस्त्रु गिरे सम भूव उ हिचार ह
न ना हकी ये न वा॥ कुस मन न वल की उप म कुसपा रे॥ करे दु हू ऊर उ सन्ति जन स्सारे॥ १९॥
पंक पुत्र हि खस्ति कर पाने॥ करसुस मन नकी उपम महाने॥ सिंहसार गर्जे रमा है॥
कसि उ चे जय जय पुन राहे॥ औरन दिख सन्ति सा जु भग ने॥ सरस्ती व ब धनी कुस धका ने॥

११॥ प्रथमदिवसयुद्धसमाप्तम॥१॥ संजयोवाच॥ दोहरा॥ प्रथमदिवसउवकौरवाद्रो
णसैन्यपतिकीन॥ पांडवानपरमबलहुइयुद्धभाररणलीन॥१॥ द्रोणबलयदोउ
सैन्यदिखाने॥ शत्रुमित्रसमहीविसमाने॥ चौरवकुलनिहरखेमननमाही॥ भीष्मते
भीवतेभीवलीदिखाही॥२॥ धृतराष्ट्रोवाच॥ हेसंजयकसमनकीबाता॥ मोमननसु
नविसम्योमतिजाता॥ रथविहीनशल्यकोजबकीने॥ तबशल्यरथकीनपरकी
ने॥ संजयोवाच॥ जबकमभमनशल्यकोरथुउरयो॥ शल्यपदातलाजतरिसकोर
यो॥ ३॥ भीष्मनइयनेनधारबाउरण॥ पुनसमारबलमयोज्ञचलनन॥ जदधारज्ञ
भमनपरधायो॥ भीमसनिरथदौरतनवज्ञायो॥ ४॥ मननमोकीयोविचारयोनसुत
जायपरेकुमाररेबलयुत॥ नदीपिशल्यबलज्ञाधिकाई॥ ज्ञमनरोयबावालुद
ताई॥ ५॥ ज्ञमननकोनिजपाधिधारे॥ शल्यवेसननुरवमयोबलारे॥ जदायुद्धप्रस
परदुहूकीने॥ ज्ञमनचप्रकारदुहूबलुलीने॥ ६॥ दोहरनकेमयेरज्ञपरतन॥ ज्ञंजज्ञम
धनुरबरहोयेमनन॥ ज्ञिनवरमेशलतेउररदिखाना॥ रथुनवहीरबलयाहरपिखाना
॥ तारररथदोसोबलभारे॥ निजरथचाउलीयोतनकोरे॥ शल्यसुधहीवीरथेचला
यो॥ रणभुमतेलेजायोतदायो॥ कुरसेनाशल्यतेरनिहारे॥ जयेमागीचनधीरनि
वारे॥ ८॥ ज्ञमनसरज्ञेमीसेरनिहारीहि॥ ज्योज्ञपुनावरिजीउसमागेहामीमरतोद्व
ज्ञाजरजानेबे॥ जदाभुमायमुरवेतेपुजटावे॥ १०॥ वहाजाहुरेयोधवलामी॥ रणभमवीवि
स्मजोबलभामी॥ पंडुपुत्रतबोचिनदररहायो॥ विजैमोरवबहुधुनेवजायो॥ ११॥ दरथपर
रणमोदोगवहि॥ कौरवानवीरदेनपावहि॥ १॥ ज्ञसतान्नीबसुतज्ञसरबलामी॥ नद
स्नम्रवसरररतप्रहामी॥ नवछरूपञ्जीव्रठसेनन्नामोमर॥ रिमवतबानप्रतास्त्रे

निहि॥ नकुलपुत्रवलनै जेम महानो॥ त्रिष्ठ से नदेहि सम रक्त भिजाने॥१३॥ त्रिष्ठ से नको पसर
तीघ प्रहारो॥ धृष्ट्ज्ञुम्न घणारवं अम मठो रो॥ द्रुपद सुताके सतीन रथा ये॥ दोरव रेरन ते जन मदाये
॥१४॥ वर्ण पुत्र पर सर पर हारो॥ छिनकी नो जरके नते कोरे॥ जस सपामा दिक जधिक से नसरण
श त्र णस्मो ऊदेयु द्ध मार रण॥१५॥ वर्ष्ठ बानै कहीति घनी कराई॥ दिखय धर्म जपद्र चौनदिक सा
ई॥ घने म पसे नावर्ह सं गा॥ दिज समुत सन्मुख रव भये ऊसं गा॥१६॥ समरतार्दिक्ष ज्ञाय घनेयुधको
ने॥ नु मलयुद्ध रण धीरे प्रवीने॥ ऐसे जान केदेष्ठन हारे॥ प्रसपरउच्चरहि हि देहि चारे॥१७॥
जेदिहि गतई हियु द्धकरा वै॥ कोज ननभी जा वतनर हावै॥ द्रोण द्रर नेश वदर खेभारे॥ जस
धाने सो कछो उच्चारे॥१८॥ द्रोण उवाच॥ जसा वतेही हो द्रुक वि स्मधरा ते॥ मुहि जसा वण दीजे
सु सुता वे॥ ऊनम मतज हूं दजो दिज दो राये॥ पाऊ वा न मोयु द्ध धरा ये॥१९॥ दिज सुनन मुख
धर्म ज सर प्रदन रण॥ दिज सर वल करधणो ता रहै धन॥ चारत धर्म कोप करा वे॥ सुनेम ने
नपके निकरा वे॥२०॥ नपते चाल ता सुत वलका री॥ धर्म ज के दार हन याभारी॥ दो र द्रो
ण के सन्मुख जाये॥ धर्म जनि कर दिज जान नपाये॥२१॥ एक वान कहीति तीघ्र चलाये॥
दिज कार थ पाछे हर काये॥ पांऊ वान दिव श वदउ पारे॥ ऊपम कुमार की की नउच्चारे॥
२२॥ द्रोण मार यो धामु ज वल सत॥ शस्त्र शास्त्र विद्या सम सत जानि॥ सुम कज्ञर सम जान
प्रवीना॥ रयव कुमार हनयो वलुकीना॥ याना लक रयेरण वलकीने॥ जावर नको करसे ऊ
वीने॥२३॥ दोहरा॥ द्रोण वाल कबे वल निरघ भयो जल तक्षाधिकान॥ चहुदिस वालक स
रप्रहरछित की ये यो धमहान॥२४॥ चौपई॥ जोप द्रोण जरसे नदि वाये॥ सर रघष्ठ
तीक्षाधिकाये॥ त्रिष्ठ द्वी पर सर दादस द्वारे॥ छितकी नो तिहर रण भुमनमारे॥२५॥ दादस हि
ऊन मेजाचे तन्म॥ पर हर की ये सम मर्द जनि रभय मन्न॥ पंच न नकुलपर त जेव लाये॥ पन्ची
सवि शरऊ र प्रजाये॥२६॥ धर्म ज सऊ जेते धरे॥ ते सम भघि छत की नवछ मरे॥ पुनन्चा

६
२५
ह्वै धर्मजन गम्हाई॥ जीवत नहीं मिज जर्जो ह्लेजाई॥ पुनकुमार द्विज मग रोकायो॥ धर्मजपर द्विज
जान न पायो॥ २८॥ दोहरा॥ जेंपा पवन सबल सलता जलहि पाछे को ले जाइ॥ त्यों द्विज ब्राव
त तेज अति दीयो कुमार हटाइ॥ २९॥ धर्मजइति उनहे गयो सम जान जीय माहि॥ मतद्विज ग
हि करम वपय ले जावे वल नाहि॥ ३०॥ नव द्विज वरषा मरो जो धार्मि जाहि न अंत॥ सोई अंत यहि
हो यसी यो चित वेम गवंत॥ ३१॥ चौपई॥ पांडुव हरि सन जैसे न दिखाई॥ काहू चित न ही धीर
रहाई॥ चिंतत ही घरे माहि विचारहि॥ ड्रुपण वली के वलहि निहारहि॥ ३२॥ मत धर्मजं वर स्र
म वल धारहि॥ करविधुं सवल ते जस पारहि॥ इहि विचार वै रहु पद वरा॥ पचंगजीसा
घनी सैन भपत केस जा॥ दीये दो रायत तका लक्ष्मं गा॥ ३३॥ द्विज के सन मुख वै दोरे धा
हो रे॥ मधुविक्रांत को लगो छत धारे॥ विक्रांत को पसरत जत मह्रांने॥ जनस्यावण की
वर्ष समाने॥ ३४॥ द्विज सरव हर लक समान पावत॥ शत्रुन के वली दष विसमावत॥ हर
घत सर छटा रहस्याने॥ विक्रांत भुजन पर भुज ठहकाने॥ ३६॥ द्विष द्विष द्विज अति क्रोध
जलायो॥ सरपर हर ज्वालिकधु न जनायो॥ वके सैन दूसर विक्रांता॥ दो उं हने सरव
लव इक्रांता॥ वेधमा रत दो उसी सउठायो॥ कौरवान को पुग रदिषायो॥ पुनसरवर
द्विज वरषा धारे॥ डोर डोर धरपरे अपारे॥ ३७॥ द्विज सन मुख तिहं सम जोंग सायो॥ छिम
भयो वायमतो कलि धायो॥ धिन तके सम अति कादर होये॥ रथ हि चलायो शरके तन
कोये॥ ३८॥ द्विज देषत धर्मज पर धायो॥ जीवत जाह्रे दघ अति पायो॥ यो धर्मजत द्विज
जह ते नदायो॥ थम पुरमई भीर अधिकायो॥ ३९॥ कौरवा नाद्विष निहचापायो॥ द्विज धर्म
जको नाहत जायो॥ ये करधर्मज रोहम हंसा॥ तो भीरजा जन व चे असे समां॥ ४०॥ इहि

विचार कै रव्व हर रव रहौ ॥ द्रोणाचार्य वलु निरखर रहौ ॥ ईह मो अर्जुन को सुख होई ॥ परे दोरदि जस
न मुख सोई ॥ ४२ ॥ ये वल भीषम सो रण धारे ॥ ते सभार मा षत युग टारे ॥ मा षम मुख करघनु
षु टंकारे ॥ दे षसैन सजन सुनि विसमासे ॥ ४३ ॥ अर्जुन सर वर्षा अस कीने ॥ मानलु पावर
सो परवीने ॥ मये तिमिर मन रेन परा ने ॥ कथ दुष्ट न परत गवार मह ने ॥ ४४ ॥ घोर हंदि
न र हत तदा ये ॥ अर्जुन अति ताव लक रवाये ॥ मानलु पानि तिमर उपज्यो अति ॥ ढारु
म ये दो ऊ सैन यो धसत ॥ ४५ ॥ अपु ने अपु ने धाम सिधये तव ॥ कछे निवारण युद्ध समे स
म ॥ दुर्योधन द्रोण के निकट गये तव ॥ कहे वचन मन अति विस्मत सम ॥ ४६ ॥ दुर्यो
धनो वाच ॥ दोहरा ॥ धर्मज अरु तुम गहत तये ईह मो शंसा नाह ॥ यद उन के कछु दिन म
ले धर गयो रण माह ॥ ४७ ॥ यो अस कहि वलु धरो र रण भुमन मो तुम काल ॥ निद चे ल्यावो
जेपक रहे गर युद्ध विशाल ॥ ४८ ॥ द्रोणा वाच ॥ चौपई ॥ ये सी रहम दुख हर अर्जुन स
ण ॥ करे रक्त धर्मज की भ्रमरण ॥ कहा करो वलु कछु चलावै ॥ हरि सम वलु को ऊना
हधरावै ॥ ४९ ॥ ये अर्जुन विन धर्मज पावो ॥ स गम गहो रणभ मन न तजावो ॥ सुसर
मो वाच ॥ पांडु वान के वल दिषरा ये ॥ हम च व च व च रण भ मते आये ॥ ५० ॥ अर्जुन ते अ
वधेर गहो ऊ ॥ नाहतजो कहि प्रगट सुना ऊ ॥ धर्मज ते अति दूर हि जाये ॥ अर्जुन सो
युध करे मह ये ॥ ५१ ॥ वहि हरावे तव लक हि तुकरहौ ॥ जहि को ऊ कहे तहीं युधु धरहौ
घोर अधिक सैना ना विचारै ॥ करे युद्ध चित गर्व अपारै ॥ ५२ ॥ ता सो युद्ध करे रहम भाजी
धर्मज डारत मरहो वलाती ॥ अर्जुन ऊरते सक्ति रहावो ॥ धर्मज को गहो रण वलु पा
वो ॥ ५३ ॥ वे शंपायनो वाच ॥ सुसरमा ज वइह वचन व षाने ॥ दुर्योधन सुनके अति अ
भमाने ॥ दुर्योधनो वाच ॥ सुसरम प्रति ॥ अर्जुन स न मुख ये तुम जावो ॥ कवन कव
न निज संग लेधावो ॥ ५४ ॥ सुसरमो वाच ॥ भ्राता निज संग धरावो ॥ अर्जुन सो

रणयुद्ध मचावे॥५५॥ चाले संसप्तक सुरथी संग लो है॥ जीत लेहि शत्रु हिरण रो है॥ तब अर्जुन
को लेहि मद्ध धरा॥ धर्म जनि करन पद चमक वेवर॥५६॥ दोहरा॥ इहि तुम राम तरम सुभमा
न्यो॥ उत्तम ते उत्तम जीय जान्यो॥ जीव मे जइ हिरिदि तुम धार्यो॥ याते उत्तम कछु नाहि
चाह्यो॥५७॥ वैशंपायनो वाच॥ दोहरा॥ सुसरमा चारो भ्रात सम रणजीत सव युद्ध गरज्यान॥ सा
थी संसप्तक रणभूमि है मजो न रण तज प्रान॥५८॥ कौरवान इहि मंत्र धर दीयो संदेस पठा
या॥ अर्जुन सो उन जा कही रक्षम लाल प्रगटाइ॥५९॥ वसीठो वाच॥ चौपई॥ काल
युद्ध तुम सो हम धारे॥ धर्मयुद्ध प्रसपर प्रतिपारे॥ जीवत को मरव नाहि फिरावै॥ जो च
कुलाल न ठौर तजावै॥६०॥ जीते के रत हो रण माही॥ जीवत रण भुम त्यागन जाही
नि जनि जक्षर सो समर रण धारही॥ धर्मयुद्ध मज वलेस भारही॥६१॥ सुसरमा अ
र्जुन सो युध चाहे॥ करो प्रमान रण भुमनि रवाहे॥ अर्जुन सुन मानी इहि बाता॥
कहयो जैसे सेही करहे साता॥६२॥ अर्जुन धर्म जसो उचरायो॥ तुमरे मन इहि नेम धाया
क्षायो॥ धर्मजो वांचा॥ धर्मसो द्रोणपुत्र मोह गरावै॥ जानन ते हो दिज वलु क्षतिपावै॥६३॥
तुम सुसरमा सो युध जाकरहो॥ मोको धाउ दूर मत लरहो॥ इहि गथ मुह मनन नीवनक्षा
वत मजानन ते हो क्षरमपर धरावत॥६४॥ अर्जुनोवाच॥ हे नृप मुहि प्रण यो इधाधर॥
कहे मो सो रण भम युद्धवर॥ तासो लरो मरव नाहि फिराऊं॥ इहि प्रण ते कवहू न मुराऊं॥
६५॥ अब हौं क्षरर कहे तहा ही लरहो॥ यामो भम भेद न हिदि धरहो॥ घोर रवनी से नान दिखाऊं॥
गहे युद्ध पाछे न हटाऊं॥६६॥ तुमरे रथ कहे भगवान नाम जाकी है समरचन मरहना॥
तुमरासत क्षरथी लक्ष प्रपारे॥ तुम पर सवल को परे सुचारे॥६७॥ धर दुमन तुहि निकट
रहावै॥ द्रोणाचार्य को पतीज्ञावै॥ कौरवान को कहो संदेसा॥ जो तुम रहो क्षवर रोजगे
सा॥६८॥ दोहरा॥ बीती निस जव दिन उद्यो उठे योध वल भार॥ प्रात सत्रु क्षवल कीये परतन

२ युद्ध हेत बलकार ॥६९॥ अर्जुन निज सैना सह तब धर्म जहां आये ॥ गयो सुसरमा जहं दू
तो शेष बजायो जाय ॥७०॥ चौपई ॥ कौरव अर्जुन कों निरषाने ॥ भये दूरष तचित मेंनाधि
का ने ॥ कहे प्रसपर इही चाहु हम मारें ॥ रहे धर्म जइ कलाइ हि वारें ॥७१॥ अर्जुन शंष की
धुनें सुनाये ॥ सुसरम सैन के मुख पीत आये ॥ के ते अस्त्र रथ ते गिर पाने ॥ के तन को सु
धन्ना हर रहाने ॥७२॥ पथ सन्मुख वे हाये युध हेते ॥ सर पर हार करत भ्रम चेते ॥ अर्जुन
निज बाने अररवाना ॥ मड मो करे पुर्वी नम हाना ॥७३॥ सुसरमें सैन करी वर्षा बानअ
ना ॥ अर्जुन सम भका रें भुम रणस ता ॥ तिन ते बीस बानन करटाने ॥ आये अर्जुन ऊर
म हाने ॥७४॥ इक कुअर्जुन के तन सुधु हाये ॥ पथ अर्जुन रुधु भ्रम न जनायो ॥ ओर
सैन को लागे जाई ॥ अर्जुन दीढ अतिरिस उप जाई ॥७५॥ कुंती सुत रिस बान प्रहारे
सुसमके धनुष काट भुम डारे ॥ भ्रात नन देषत कुपो सुसर्मा ॥ अवर धनुष लीये कर दुरु
कर्मा ॥७६॥ अर्जुन ऊर सर करे प्रहारे ॥ पुन अर्जुन कोप्यो वलभारे ॥ वहुर धनुष स
म के कर डारे ॥ रथ सम हनन के घोरे मारे ॥७७॥ सभ भ्रात नन मो वली सुधन्वा ॥ ते ऊ अर्जु
न रण कीयो दुष धन्वा ॥ ता पाछे कौरह नन सकायो ॥ रणभुम तज सभ चरे तरुप्यो ॥७८॥
अर्जुन दीढ कहे ऊंच पुकारे ॥ रहो वाहुबि ति भाग सिधारे ॥ अपुन ने प्रण ते का हम राखे ॥
पाछे फिर भुज वल पुरारे वे ॥७९॥ सुन सस प्रक जब नाम तुमारे ॥ पुन्न न मकीने प्रण
भ्रत मारे ॥ कुल को नाम प्रण त्यागसिधाये ॥ इरि ग तयो पछो कोन सुहाये ॥८०॥ सुन अ
र्जुन के वचन मराये ॥ कर तिव डरि सकरि दें ठहि राये ॥ अर्जुन पर दो रे इकवारें ॥ तिन की
दुष्टि हरते जरुआपारे ॥८१॥ इक नारायण हती गोपाला ॥ प्रगर नाम जग मार हविशा
ला ॥ दो ऊ सैना सन्नेदा रपरा ने ॥ सर प्रहार रथ न ज्यों गरजाने ॥८२॥ अर्जुन जा मअस
सर रुंधाये ॥ हीर अर्जुन प्रसपर नींद षाये ॥ अर्जुन सैसे को धमरायो ॥ अपने आप

कैसधनरहाये॥६॥ज्यौंजीवधनुबकोपेकरधारे॥मसखधरसंधदिवदतधुनमारे॥संत्रत
सरकारसैनप्रहारे॥अरसैनसमजरतदिखारे॥५॥जिहिदिदेखितितहीहरिअर्जुन॥इन
विनद्रिशनपरतकोऊजन॥अर्जुनजानतिबवानप्रहारे॥हतद्रोरेरणभुमवलमारे
जवजीवतअर्जुननिरखावै॥हतद्रोयेनिजजनद्रिष्टावै॥अरसैनाप्रसपरसंहर
हो॥हरिअर्जुनसरणदेवहरबरहो॥८॥अरपुनसैनउनघनीसंघारी॥अर्जुन
वानअर्थदिखारी॥वनेयोधअर्जुनसंहारे॥सोअर्जुनहरिमित्रवलारे॥१८॥
दोहरा॥वचेजुकारकोसैननतेवरखावेरणवान॥उनजान्योहत्योहरखतमयेमहान॥
१९॥रथअर्जुनकेअसहनेवाननवलेसुचार॥हरखपरयेरणलरैअपुनीविजेवि
चार॥२०॥चौपई॥ससमसैननिजविजेविचारी॥संघवजायेधुनअतिभारी॥को
रवाननकेदुंदभवाजे॥नेपरेमनोघनगाजे॥२१॥गजगर्जेअसहिनहिनकरहे
रणभुमभारशवदत्रगरहे॥अर्जुनसहतहरिजायसुनाये॥कैसेनिहसुधमये
तदाये॥२२॥चलेआपदेदमुखदेहिभिगाने॥हरिअर्जुनसोवचनवखाने॥श्रीभ
गवानोवाच॥कहुअर्जुनअवकियाजीयधरहे॥जिहिविलंवशत्रुनतेकरहे॥
२३॥अर्जुनहरिकेवचनसुनाये॥भयेकोपचितरिसकवधाये॥करमेंत्रतसर
वानप्रहारो॥सैनदहूउजीयारदिखारयो॥२४॥रणभुमसिन्नितकमयेअगोना॥गाय
लघुमेज्योंमदमंता॥ज्योंपथानभुमसीसमगनी॥भुजाहाथतरपेअधिकानी॥२५
गजरथहस्नेपरेगिरजैसे॥असुपदातगनीयेकहूकैसे॥नाच्चतपिरेंरुंडछअपारे
सीसहीनदेऊवाहपसारे॥२६॥धनुषवडडाढ्हरकेजुशकतऊति॥जिहिविहि
गरेपरेरणभुमसत॥योधनतननतेमसनमारे॥गिरेपरेरणअनकदिखारे॥२७॥

गसुनशवदपरतजुवकान्ना॥लषीअतगर्जेकाललेकेन्नान्ना॥रक्षप्रवाहचलेअतिभा
री॥षषपसारचीललेनारी॥८॥जैयाजलमाहदुरंगतरावै॥त्यौंतरतश्रोणमोची
लदिषावै॥लजेषउगइवतेदोवरही॥सरपरहरदोपोयइकधरही॥९॥ईहिक्र
जुनकेयुद्धसुनायो॥अवकौरवानकीसुनोसुहायो॥जवसुसर्मअर्जुनकेयुधहि
न॥गयोभ्रमरणकीऊरहरषचित॥१०॥पाछेकुरनपसैनसंभारे॥गरउवादू
कीनोअतिभारे॥द्रोणचंचदुर्योधनसीसा॥कृतवर्मदपादोऊनेउअनीसा॥
११॥दाहनमरश्रवाअरशल्ल॥सोमदत्तसंगधनेमपवल॥वामसुदछनम
गदनेरेश॥मपकानकेक्षमभेषा॥१२॥पाछेशकुनसेगमफअपारे॥येदुष
र्योरणभुमवलभारे॥उदरहैरमगदत्तसुहायो॥ताहकोटसमव्यूहदिषायो॥
१३॥सैनचुफेरेगजमतवारे॥मनागिरकोटऊरद्रिमारे॥गजरथअसचउयोध
दौरावै॥संगामइछमनमाहधरावै॥१४॥दोहरा॥पांडुवाननिजसैनकोचंद्र
व्यूहधरलीन॥घघापोगकीवैगदृषयोधेठाडेकीन॥१५॥कौरवानकाव्यूहदिष
धर्मजवहतउचार॥धृष्टद्युम्नसौंदसुनोहिनुधरवचनहमार॥१६॥युधिष्टरो
वाच॥चौपई॥आजद्रोणवलतेजदिषावै॥सैनव्यूहगतभारसुहावै॥मुहिरक्षा
अर्जुनहितधारत॥मोहशत्रुदिषरणसंहारत॥१७॥तेसुसर्मकेयुद्धहेतवर॥
प्रातगयोनिजप्रणचितद्रिउवर॥द्रोणकीनप्रणमोहगहावै॥आवसमसरक्षक
कौनकरावै॥१८॥इतिचितवततनुमसोप्रगटावे॥दिजकाभयवहुरिदेवसावे॥तु
ममुहितजनकदूरणजावो॥द्रोणाचार्यवलीजनावो॥१९॥ईहिनेहापदिजमो
हगहावै॥अपुनेप्रणकोपरदिषावे॥दुर्योधननिकटेलेजाई॥ततहमनोहियार

हे वउाई ॥११॥ जाहदास जगमाह कहावे ॥ इहि कुनीति लाज मन न माह रसावे ॥ ये को धजी
मोह न गहावे ॥ ताते कैसा भय न हिजावे ॥ पय इहि दिजा मिहा अरषाही ॥ नरे तला ज
ता दास कहाई ॥१११॥ धृष्टद्युम्नो वाच ॥ हे धर्म जसन सील रूपारे ॥ सो हम कवनग
हसके सुचारे ॥ मुहि जीवत तुहि निठर मन हाने ॥ परन सके दिज ते ज मया ने ॥११२
रहो स्वस्थि चित चिंतन न धारो ॥ हम रे वल रण मन दृढ धारो ॥ इहि कहि धृष्टद्युम्न दी
रा न्हा ॥ दिज सन मुख वज्ञार घव हि रिस न्हा ॥११३॥ दुर्योधन नाम कुरन्ह प को भ्राता ॥ भ
यो धृष्टद्युम्न सन मुख वड जाता ॥ धृष्टद्युम्न दुर्योधन जमाही ॥ परे युद्ध सर वर्षी दिषा
ही ॥११४॥ चिरत क दुहू रण युद्ध कीये घन ॥ कोन सके ताको वरनन गन ॥ द्रो
ण साधु विदस्ये नलराधो ॥ ता युद्ध का वरनन न हीं पायो ॥११५॥ कंस तद्रोण रण
कर हि मगाये ॥ धर्म ते ओर दोरयो वल पाये ॥ ज्यों कज्ञा सं वृ हसिंह ानिरषा वे ॥ पव
न भार वादर फर जावे ॥११६॥ त्यों ही दिज ते पांडु व सेना ॥ फरी जात भय भार कन्ना
चै ना ॥ योधदोर रण धर उठावे ॥ भयो न भय पर रवि लोप म हाने ॥ ग ज स्यामघन
ज्यों उमड़ावे ॥ तिह पर धुजा स्वेत च मकावे ॥११७॥ गर्जे गजमनु घन गरजावे ॥ ह
ते पर रण डारदु र्छावे ॥ डा ज कुमवा रसो गज कुसवारे ॥ रथ सो रथ कस कुस है
उारे ॥११८॥ पाय कसो पाय करण लरहीं ॥ ह ने सैन तिह को गनन करहीं ॥ मजु
मास वो रण तज्ञानि की चौ ॥ के सी कीन द्रोण रण वी चो ॥१२०॥ धर्म जके पकरन की का
सा ॥ चित धर द्रोण युध कीन प्रकाशा ॥ हनत नसेन जरह धर्म ज भूपा ॥ जाप हुच्यो दि
ज ते जन्न न्पा ॥१२१॥ ज्यो गज पर केहर दोराई ॥ त्यो व द्रोण धर्म ज पर जाई ॥ हसो

सारथी नपकसरवल।। नवीद जधु जाअरीरणभुमपल।। १२२।। पुननपवाणद्रोण
केलाये।। द्रोणकेपवनपधनपुरटाये।। इहिमोसतज्जितअरत्रिगसेना।। अज्ञापहचे
देउसरतमेना।। १२३।। कीनद्रोणपरवानपुहारे।। दिजनिहधनधुकारभुमडोरे।।
हतेसारथीताके दिजवर।। देमोकोकीनोछितरणधर।। १२४।। त्रिगसेनकोपसर
कीनपुहारे।। सणसारथदिजकीनदुघारे।। द्रोणकोपकीयेपुरमहाने।। देउसवल
असरसीसकराने।। १२५।। दिषधर्मजमयमाणीपाये।। चलन्वितहोनिजवानतजा
ये।। पाछेद्रोणअज्ञाजेनपजावे।। चाहतदिजजीवतेगहावे।। १२६।। दिषचंदेगीके
योधेज्ञाति।। अवरपालेकेयोधेसता।। धर्मजकीरद्राहितदोरे।। येदोरेरणभुमम
नवोरे।। १२७।। दिजकेसनमुखजाहंकारे।। करेभुजावलयुधअज्ञातिभारे।। सताजी
केवेगारअज्ञातिभारे।। अलीद्रोणसोयुधुरसाधारे।। १२८।। दिजरथसारथअरअ
सुनसना।। वाननवलउनकीनरोहन।। दिजअवरसारथीअस्वजुधारे।।
तेभीउनसरवलहतडारे।। १२९।। इसीभांतषटसारथीमारे।। उरजायोरणभुम
ताकीसनदिषधनीसहारी।। रहीषोषभाजेभयभारी।। भीमनकुलसहदेव
दिषाये।। निजसेनाभाजतहरकाये।। १३१।। करडकउतीनोदौराने।। धर्मज
रछ्याहितचितहितहिगाने।। सनमुखदिजकेआहंकारे।। सघडीसणभुजवलअ
तिभारे।। १३२।। सघडीपंचवानपरहारे।। पुनसातकसतकीयेचिवामा।। युधमे
नसरअसमहाने।। दादसधर्मजतजेसजाने।। १३३।। घपडुकेसरतीन

लगाये॥ वेकतानसरदसमझाये॥ सभीवानदिजतेरसिधारे॥ द्रोणप्रतीनसभकीनस
भारे॥१३४॥ दैसेदिजरणमोवलुपाये॥ धनीसेनहतकीनतदाये॥ दिजकेनिकटये
जापहुचाये॥ उसेयमपुरमरगेहनजाये॥१३५॥ धनीसेनवलुमरतहताये॥ चारतचि
तधर्मजेगहाये॥ सिषडीकोहदसमरजोरे॥ धर्मजपरदैसोनलभारे॥१३६॥ उतसोजापर
सरवीसपुहारे॥ पुनतीसवानसातरूपरजोरे॥ दिवधर्मजमनकीयेविचारे॥ सरकेकोगरे
दिजवलभारे॥१३७॥ रथतेकुदरथचउदैगये॥ मुरनतरुयेपाछेनाफिगये॥ केनहुधर्म
जसेंपुगरना॥ नपकारणत्यागननवषाना॥१३८॥ येनपरणकोत्यागभगावे॥ व
उकलंवनिजनामलगावै॥ धर्मजताकोउत्तरदीना॥ सुनोभयाहितपरवीना॥
१३९॥ धर्मजउवाच॥ येछत्रीछत्रीसोभाजै॥ निहचेतिहकोगनवडुलाजै॥ दिजसो
भजेसोगननाही॥ सिमतवेदाइहिपुगटाही॥१४०॥ वैरागकौरडगमसातलवमाने
पलदेसवेयोधवलीधर॥ झुटयेधर्मरहोहित॥ सभीभगायेद्रोणजित॥१४१॥ वे
शंपायनोवाच॥ दिजएकोतनकमवलधारे॥ दुर्योधनदिवरहतउचारे॥ दुर्योधनोवा
च॥ द्रोणपुतिजैसेवलतुमरणभमकीने॥ कवरकौनरसकेपुतीने॥१४२॥ छिन
मोकरसैसेनसंहारी॥ धर्मजगहनकीतेतकयारी॥ जोइतुछिनकैसेसहीकरने॥
धर्मजकोनिहचेगहधरते॥१४३॥ अचार्योवाच॥ दोहरा॥ द्रोणसमाणपुकामीदूसर
नाहीकोय॥ पयपांडुसुतेतेहतनकोपिदेनचाहतसोय॥१४४॥ जोभीष्मउनके
हतनकोनीकनमानतजीय॥ सोहीद्रोणमहावलीरापतहेहितहीय॥१४५॥ चौ
पई॥ पुरातजनचीपुहीवाता॥ वलभजवडुउरपेकुलघाता॥ चाहेज्योतोंजोनवग
वै॥ छिसीभांतसंग्रामभिरावे॥१४६॥ रविसतकेदिजवचनसुनाये॥ कतिसिसधा

११ रिदेतप्राये॥ पुत्र देरोर रणभ म न वलारी॥ ध्रष्टद्युम्न परपरो हंकारी॥ १४॥ ध्रष्टद्युम्न दिव अस्त्र
सदोरायो॥ द्रोण वलीके सन्मुख आयो॥ पाछे छत्री दोव डुसता॥ सैन समूह तजाये वल
मता॥ सिघ द्रुपद सहस्र सु संग सैना॥ दस सहस्र संगी वलुपेना॥ वीरभद्र क्रोधे व
मपवर॥ दस सहस्र संग अमवासंग धर॥ १४४॥ ईहि सम हीव उते जधरायो॥ सन्मुख
दि जवेर रणभुमभ आयो॥ भिन भिन सम कोधु जादि धावै॥ मारशवद दुंदभ सव जावै॥
१४५॥ जाइ पाते गिरज्यो द्रिजपर ही॥ पाथक की अख्र गगन तन धरही॥ द्रुपद सात तसर
सैन प्रहारे॥ कितवर्मा की दोउ भुज भिद डारे॥ १४६॥ कितवर्म रिस सम सर वरष धरही॥
करे पछ्र दुहू व उच तुराई॥ धनदेवयेद्रु पपर वाना॥ प्रहारत सर रण तीछ मद्राना॥
१४७॥ ये द्रुपद रिस तिह छती मझारे॥ सर प्रहार की पोको पञ्चपारे॥ सवाल जसो रण
युध प्रजारा ना॥ दोउ प्रवीन रण भ मभ्याना॥ १४८॥ शल्य युधिष्टर सन्मुख हौये॥
रणभुम सर पर हरे घरोये॥ वाह्लीक द्रुपद संग्रामा॥ विध विराट दोउ वलधामा॥
१४९॥ हुतनमीसो नकुल ललरत रण॥ नकुल तीन सर त्याग तत छिन॥ भीम पुत्र स
तसो मवलारी॥ द्रोण साथ युध इथा धारी॥ १५०॥ वेन तरो मयो मझो मझारे॥ सदउन
केसो युद्ध भ्यारे॥ दुहू की नेरण युद्ध मचाने॥ सर पर सरपर हरे महाने॥ १५१॥ चित्रसे
ले नसो अस्वथामा वर॥ ध्रष्टद्युम्न द्रुपद के पुत्र सो युध धर॥ विकर्ण सिखंडी सो युध धारो
उतसो जा[illegible]दपु जारायो॥ १५२॥ दुस्थरथ पुरजित रण मेडु॥ रवि सुतके सैसो वल
वेडु॥ रवि सुत भजवल वान प्रहारे॥ ता[illegible]नके असहत डारे॥ १५३॥ वहुधा
घलकी ने वहु मारे॥ कुंति भारे वलर विसुत धारे॥ भीम पुत्र वृहतसो लरही॥ अस
निव उपुध कोधे दोउ करही॥ १५४॥ द्रोण तसो हमही निव नाना॥ निज मरे जा रपुह

रेमहाना ।। धनषु ताहकरतेकटडारयो ।। पुनदुहूकरधनुजंभमडारयो ।।१६०।। सोमदत्तछे
मदोउकटेहायो ।। शेवमपसोलरतहेगयो ।। इनधुजंशेवकीकटमनडारी ।। रथतेग
स्वहृतकीयेवलाली ।।१६१।। पुनधत्रुमीसतेमनभिगना ।। दूसररथचढशेवमहाना
धनसंभारसरकरतप्रहारे ।। दुहुकोनिवलकीनरणभारे ।।१६२।। त्रिगसेनयुद्धरण
जैसेकीने ।। जरहवहपररहरसरसप्रवीने ।। घटोतकचभीमपुत्रदेखोजवा ।। कर्णप
तकनीसैननिवलसभ ।।१६३।। मायाकीरासुमायाधारे ।। ऋचयेरुपकीनेतत
कारे ।। एकदेहिस्वतसीसदेहिश्रति ।। हाथपाउन्रनतनऋचयेगति ।।१६४।। समहा
योमोशस्त्रगहायो ।। अउगशकतगदधनषसहायो ।। तरपषानवडुगिरउपडायो ।। भ
योत्रिगसेनकेसन्मुखआयो ।।१६५।। समसरवतेवडुऋगिनिनिकारे ।। कुरसेनदेषचि
तमयेमयारे ।। जिहपरशस्त्रप्रहारकरावै ।। तेनवचेयमपंथपठावै ।।१६६।। चलचि
तमईकुरसेनदिषावे ।। घटोतकचकेयुधसहनसकावें ।। पीरोरकुरसेनामाही
घटोतकचकेतेजहिप्रगटाही ।।१६७।। दुर्योधनदिषोदेखिचारे ।। लोहसोलोहव
नेकरडारे ।। उलंबसआसुरकोदीयोपठाई ।। दुहुआसुरजीयेयुद्धआई ।।१६८।।
कहूसुमैनदेखेआगे ।। जैसेयुद्धदुहूमोजागे ।। नागनेकननपमजवलभारे ।। क
रतभीमतासोयुद्धधारे ।। गजऋक्षनेकतानपकेसघा ।। घोरोगजनहिभीमऋभंगा
भीमसेनदसस्हसगजनवल ।। गजजहिडारतरणतेमनपल ।। घनेगदापरहा
रकरावत ।। वहुभमपरकरधारदिषावत ।।१६९।। चूरकटहाउगजनकेकरही ।। वव
नपुत्रवउफ्राक्रमधरही ।। गजसमरहमजहीभयषाये ।। सन्मुखभीमकेरहनसका

१२

हे॥७१॥ ज्यों सिंह ग्रास तें कंप जगत न भाउ॥ त्यों भीम त्रास गज रण भुमन त्याउ॥ इहि दिष दु
यों धन नत तजायो॥ सन्मुख भीम न हो युद्ध उपजायो॥७२॥ दोहरा॥ पवन पुत्र बड युद्ध
धर कुरपत बल पतीजाय॥ सब लषे रण मन में भारी ते जु दिषाय॥७३॥ नाग
ने कवच पहिराय के दौर पहेर रण माह॥ गज चढ सन्मुख भीम के सर पर हर बल वा
ह॥७४॥ तिह गज संड प्रसार के बड बल भीम गहान॥ भीम बली धर गदा तजन्न पस
णगजेंद तान॥७५॥ चौपई॥ जब नाग ने कवच पहिरे भयो हत॥ भगी सैन भय ससो
दिष भगदत॥ नाग बड रगजनाम रहायो॥ ता पर चढ दौर तन हु जायो॥७६॥ भ
दमा ते गजं संगज पारे॥ गज भगदत के तुंड पसारे॥ गहयो भीम को बल जति मारे॥
बल दिषा सो भीम चतुर कत॥ गज सो छूट गयो भज बल सत॥७७॥ पुन गज पक
रे भीम को चाहे॥ चढे न भें सत पोन जगा है॥ छिन जागे छिन पाछे जाई॥ छि
न इक उदर रहे लपटाई॥७८॥ गज सो फिर ज्यों चक्र कुं भारे॥ ते सभी म फिर तन ते
करे॥ जान्ह्यो रहें नाहर रहाने॥ ज्यों सब लु गज धरे मरहाने॥७९॥ ज्यों तभी मके
डरे मकरे॥ डास्यो तुंड गजं ते जकपारे॥ निरख यसी सभी म भुमजुरे॥ चारत प
गनल मरदन धारे॥८०॥ भुम परपर त भीम न तत काला॥ भाज ल ज्यो ता उदर विंला गा
जान्यो सभी भीम हत हेयो॥ भंमे दया सो नहीं कीयो॥८१॥ दिष पांडव सभ हीं दौर
ये॥ सरव धाग जपर क्रुतिपायो॥८२॥ के सारण गज चढ दौर तकायो॥ भगदत
सो बड युद्ध मचायो॥८३॥ भीम पाय कंसनि जमु क्रायो॥ गयो दौर बड नेत धरायो
सारण गज पर चढ दसमाने॥ भगदत कोपि छन तब नमरहाने॥८४॥ सारणि

सघरवानव्रहारे॥भगदतगजकीदेहिमिदारे॥सारणपाछेपाधर्मजवरा॥भगदत
दौरपरेधर्मजपरा॥१८४॥युयुधानदौरमजमारहरकाये॥धर्मजपरपहूचनन
हिपाये॥भगदतगजयुयधानकेरथपरदौरपरे रणभुमऊतिवलुधरा॥१८५
सातकमरवहनहनपुगराई॥भगदन्नकेसन्मुखभयोञाई॥भगदतयुयधा
नहितगंवलानी॥सातककोकीयेवलनिहपानी॥भगदतगजवहुवारचला
यो॥सातककेरथकोनहटायो॥१८६॥दोहरा॥सातककासारथचतुरऊति
रथचंचलफिराय॥गजभगदतकीयेयतनवहुसकोनहोसवलाय॥१८७॥ग
जभगदतकोरिसकरणऊहिगजातमहान॥पगतरसेनकरतमथनगऊ
तऊतभयमान॥१८८॥चौपई॥गजैतगजरणभुमभयसारे।सहूसगजेसमस
वदनिकारे॥द्रिवंदुसैनभईविसमाने॥गजकैत्रासरिदेऊतिमाने॥१८९॥
ब्रिजवर्मातर्वादजदौरना॥भगदतकोसरतजतमहाना॥सूरसैनातेयोधा
भारी॥दौरपरेब्रिजसमेवलाणी॥ब्रिजवर्माब्रिजसमीयोधे॥दुहूकीनेरणयुध
वहुकोधे॥ब्रिजवर्मावलसवलपराये॥ब्रिजसमीकेरथऊसहटाये॥१९१॥
पुनऊभमनधरकेतचेकताना॥द्रुपदसुतानेसुतवलवाना॥युयतसगव
हुयोधवलारे॥भगदतपरधाईसरवर्षऊपारे॥१९२॥भगदतगजसरणसर
हिपरोये॥सरविहीनसंगरसौनसोये॥युयतऊरभगदन्नोदिखाने॥परौदौरव
लेतेजमहाने॥१९३॥गजवरदुनेजहियुयुसगहाये॥युयुतसचढ्डगरपरधा
गभंगाये॥ऊभमनकेरथदौरपराना॥सरप्रहरतभयेदोऊमहाना॥१९४

१३

ॐ अस्वसवाररतनगजदेषा॥ मनपंचसहतगिरझचढेपेषा॥ गजरिसरलायमसमदोनाव
त॥ चरवरअस्सुरणगिरगिरपावत॥१५॥ द्वनेकीनदलमलतलकाये॥ दुनेमप
सरवलहिहतये॥ पांडवानकीसेनभयमानी॥ चलच्चितमईरिदेउरपानी॥१६॥ दु
वेभीपायनोवाच॥ दुर्योधनरविसुतसरणभावत॥ हेभगदतव्चसुनहमनासत॥१७॥ अ
दुर्योधनोवाच॥ अर्जुनअरजन्यारेपुष्करहै॥ धर्मजमीकछसुधनसमरहे॥ कैसेसाव
लुकरहेरणमाही॥ जिह्हविद्धधर्मजेतहाई॥१८॥ येजीवतपकरोनहीजावे॥
हृतेवलहिमुहिमेंसामिरावै॥ सुनभगदतगजकोदोरानो॥ धर्मजधर्मजसुखवउ
चरानो॥१९॥ हतेसेनजोतनमुरछावत॥ पवनवेगगजरणदोरावत॥ धर्मजसे
नतरववैनिहारी॥ वजीधीरभारीभयभारी॥२०॥ रविसुतसंगकुरनपरचमाधन
तोसमवलुकोउनहिनिरषत॥ पुनतुहिवरकोउजितनसकाई॥ अर्जुनतेउरजावव
लपाई॥२१॥ अर्जुनहैरणमोहकारक्षोति॥ सुसरमापरमतपरेसवलसत॥ पाहीते
नमसेपुजराये॥ सुसर्माकोसधलेकोजाये॥२२॥ जोअर्जुनकोसवलदिषावे॥
नुममजवलसोताहहतावे॥ करनवचनभगदत्तसुनाये॥ दुर्मेउरनेगजउलटा
ये॥२३॥ अर्जुनउरवउवेगचलाये॥ दूरहितेअर्जुनदृष्टिआये॥ भगदतवेगजकोप
हचाने॥ अर्जुनहरिसेकरतवषाने॥२४॥ अर्जुनोवाच॥ हेयदुपतसुनावतभगद
त्त॥ येभजवलुसमतेजरीतेत्रा॥ लषीपतधर्मजकोनिवलाये॥ जायोहैफिरितेज
महाये॥२५॥ सुसर्मासम्मुखसवचकमारे॥ हमकौनेहैनिवलसुचारे॥ लषीपतन
कोहेवलहारी॥ भागतहैचितधीरनिवारी॥२६॥ भगदत्तकेमनसावतानिरषाई॥

मोमन्नीं च तापलीमहाई ॥ कछुनलखेंा धर्म जनी वाता ॥ काकरइहि ज्ञायो वलज्ञाता ॥ जे
धर्म जपरखेद उपावै ॥ मोहु विजे किहि कार्य ज्ञावै ॥ ममयुधजी ने ज्ञ न कप्रकाली ॥ ज्ञ
वचलहे धर्म ज निकटाली ॥ १० ॥ ज्ञर्जुन के वरवचन सुनाये ॥ हाकयो रघुवर उवेग
तदाये ॥ मगाद तसो मगयुद्ध पराने ॥ मिजा हारसरवर्ष धराने ॥ १० ॥ दोहरा ॥ ज्ञर्जुनम
गदतसन्मरवेयुद्ध करतनि रधार ॥ पाछे सरपर हूर करत सन सप्रकवलभार ॥ ११ ॥
चौपई ॥ ज्ञर्जुन दूर के मद्ध मराना ॥ सरपरहारक रतविधनाना ॥ करहू भगाद तते र
प्रहारे ॥ कनी सम समी सो युधु धारे ॥ १११ ॥ कुरन पसे नक्ज्ञाधिकपकाई ॥ सुसर मानी
रधाहितज्ञाई ॥ तायुध मो रपसहसपचासा ॥ ज्ञर्जुन सो युध करत नप्रकासा ॥ १२ ॥
ऽकयो जन उचीधुज ज्ञर्जुन ॥ मई लोप वानन तल रघसन ॥ ज्ञर्जुन रघुधु जस
ननदिखावत ॥ सनसप्रकज्ञ ससर वरखावत ॥ १३ ॥ ज्ञर्जुन हरि सलकलनलज्ञा
ये ॥ सतितउ तकी कछुसधन दिखाये ॥ तवज्ञर्जुन ब्रह्मास्त्रु सभासे ॥ ज्ञरतोरवउ
वलै प्रहासे ॥ १४ ॥ जरपज्ञ सवहु हनेमहाना ॥ ब्रह्मास्त्रु वउते जप्रधाना ॥ ससर
मानी सभसेन संहारी ॥ पतीधामयमलेकतारी ॥ १५ ॥ श्रीयदुपत तवभये रथ
ज्ञाति ॥ दयाहाय जनमापधरेतता ॥ ससमैं सेनानि जहा नदिखावत ॥ ज्ञर्जुन पर
दैसोरिसकावत ॥ १६ ॥ रिसरणसरप्रहरत वलवाना ॥ ज्ञर्जुनदिधकी वीवोकोपम
हाना ॥ सरपरसरपरहारकराये ॥ ज्ञरधुजसणस्यारथीकराये ॥ १७ ॥ पुनसरतज
ज्ञरधनखवकराने ॥ ससरमवली दहीशकतनहाने ॥ ज्ञर्जुनपरवलशकतप्रहा
रे ॥ हरि कीउरपथानदुखारे ॥ १८ ॥ ज्ञर्जुन सरपरहारकराये ॥ सरपथानदोउभम
करपाये ॥ पुनतीध्न सरपरहरकीने ॥ दोदो पोइऽकरेप्रवीने ॥ १९ ॥ चहूउतोरतेसे

२८

नरहता के ॥ भगद तपरदे रो वलपाये ॥ ज्यों चिरीव नपर पवे मिचाना ॥ त्यों ही अर्जुन गये मरा
ना ॥ २२ ॥ भगदत की सेना निरखाये ॥ अर्जुन ने ज हि सहन सकाये ॥ ज्यों नो का डिरल गपर
जावै ॥ त्यों भागन अर सेना दिखावै ॥ २३ ॥ भगदत हरि अर अर्जुन ठौरे ॥ सर पर हार करतव
लखोरे ॥ अर्जुन नि जवानो अर बानो ॥ वरन करन अौयो तुग महाने ॥ २४ ॥ दुर्योधन चिर
नक पृथु कीने ॥ रण भुमदो अग्नि चतुर प्रवीने ॥ भगदत गज वठवे गचलायो ॥ दिखपद
पतरथ दहन लायो ॥ २५ ॥ गजको अस्त्र पर नपरावै ॥ तौ भी गज अति ते ज दिखावै ॥ ग
ज के भय अर्जुन न डोरे ॥ कृष्ण सुमान अति ते ज ॥ २६ ॥ श्री यदुपति तिह वो मरहा वै ॥ ल
हम लम्बलभार लगावै ॥ अर्जुन ता का धनख कटायो ॥ तब भगदत त्र शक्ति कर सकायो
॥ २७ ॥ उपधान गज च उत प्रहारो ॥ अर्जुन सर प्रहार कटकर डारो ॥ भगदत हरि की ऊ
र निहारो ॥ शक्त तप्रहारे भुज वलभारे ॥ २८ ॥ अर्जुन दिख सर तीछ प्रहारे ॥ कनी दुहूक म
ग हि दे फारे ॥ पुन अर्जुन सर ओर प्रहारो ॥ भगद त्र्यस्य ते छत्र उडारो ॥ २९ ॥ पुन धु
जा कार म उपर डारी ॥ दिख नृप दिस कहो अति भारी ॥ धन सनान सर वर्ष धराई ॥ ग्वा
ले दिस सव सर र है छाई ॥ ३० ॥ हरि सन अर्जुन दिख अरकानो ॥ छिन इक निह सुधर दे
म हाने ॥ अरण दिस न निरदेर लनाही ॥ ज्यों पंछी इम नहीं ॥ ३१ ॥ छिन पाछे अर्जु
न सुध पाये ॥ दस कौ भ्राठ सर तीछ चलाये ॥ हरि सनान सर ते जु धरावै ॥ जिह दिख
न रथ मंच पर रावे ॥ ३२ ॥ तौ भगदत कोते उचाना ॥ अति कोर अस्त्र मुनि दिखराना
को धभार सर वान लडायो ॥ विद्युत कर्ण ता ने जु कोपायो ॥ ३३ ॥ वह विष धर सम भप
दिखायो ॥ मेघ न करडा रयो कोपायो ॥ दिख यदुपति सम भुजा नन रारे ॥ नि ज छाती सर ली
ना धारे ॥ ३४ ॥ जव हरि रथ छाती ता न लडायो ॥ समन कुमार लहार के उस हायो ॥ वादिन

तेवे जंतीमाला॥ नामपुरारी है जगतविशाला॥ हिय अर्जुन इहि नीरजनमानी॥ कोपतहां
सोक देवधानी॥ ४३३॥ अर्जुनो वाच॥ हे हरि तुहि महि निवल जनायो॥ लीये वान
निजधाती माहे॥ छंउ नदीयो मोपर सरआवन॥ पसुन तहसे हरि जगसुषपा
वन॥ ४३४॥ श्री भगवानो वाच॥ हे अर्जुन इहि वान विषम अति॥ तुम सो सघो
न जात जान सत॥ याते तुम रघुसे सुन रहे॥ हमरे वचन साच चित धरहे॥
४३५॥ चार रूप हमरे जग माही॥ नरनारायण प्रिथम कहाही॥ गिर वद्रीमो वउ
तपु धारे॥ तिसी रूप सो हे प्रभ चारे॥ ४३६॥ दूसर रूप हम नारविज्ञाने॥ सकल
गाथ जग की श्रिसमाने॥ तीसर रूप इहि देषो मोहा॥ जिह स्वरूप हा कोर घुतो हा
४३७॥ चतुर्थ रूप दधि धीर मझारे॥ सोवत हो सुषनिद्रा धारे॥ सहेस वर्षं पाछे इ
क वारे॥ जागत हो कहो साच उचारे॥ ४३८॥ दोहरा॥ हमरे जागत के समे मांगत
जो को ऊ आय॥ देवत हो तन काल ही सो पुण्य दृढ इहि भाय॥ ४३९॥ इक दिन मो
जागत समे धर नरसिंह वपु धार॥ जाइनि कर ठाडी भई अचर्ज रूप कुमार॥ ४४०॥
चौपई॥ मम स्वरूप कहि येषा वाला॥ कृपा चाहत है कहु तत काला॥ कुमारे वा
चा॥ धरते उवाच॥ मोह पुरुष नरकासुर नामा॥ पाल राज जाकौ निह कामा॥ ४४१
इहि वर देहि मम सुत पर कोई॥ सवलुन पर पोवे रता सोई॥ मम स्वरूप जीय व
चन सुनाये॥ एही वानी तिह दीयो तदाये॥ ४४२॥ सुघते कहीसु नो सकुमारे॥
ते कोसुत तुपजावे भारे॥ जगत नुनाम भगदत पुरता रे॥ ता हदेहि इहि सर कार
नासे॥ ४४३॥ याते तन ल ऊ वानु पहि जाई॥ वचे नाह पमजो हसि धाई॥ याते हम
निजरि दोवे धारे॥ लीये वानु निजधती न डारे॥ ४४४॥ तुमपाका वल सहन सा

१५ का॥वत॥ बिह्मतेजधामो पुगरावता॥ इह्रीवेघसभजद तवलुधारता॥ करेभमरण
कीवड्डुभारता॥२५४॥अरजबधातेइह्रिमेच्रु तवान्ना॥ लीयो विकारसचमानमहाना
अबधामोरध्युवलुनरहाथो॥ हेतोस्गमहमपुगटमुन्नायो॥२५६॥ हरितेक्रोसे
बचनरचनसुन॥ अरजुनसोवलुउपज्योसतगुन॥ गजकेमनोकवानलगा
यो॥ सीसभेदसरपारसिधायो॥२५७॥ वेदजायो भुमपरगजमारी॥ दिघमगदतव
लकेरेअपारी॥ गजकोभुमतेवहुरउठायो॥ वानन्नपुहारकीनबलपायो॥२५८॥ पु
नअरजुनगजतनसरडारयो॥ कीयोदुफारभुजवलअर्पतिधारयो॥ भगदततव
कैसावलुकीनो॥ दुहूजाघवलथंभ्योउवीनो॥२५९॥ गजतनसेजणतधरत
नपाई॥ जोगनवलगजकोदेगई॥ पुणहीनगजदेरायेरण॥ घुडकेभग
दतधीरघण॥२६०॥ सरतलरततेदोउजोगघवीहसति॥ रमडवाहचल्योगज
तेसता॥ गिरोधर्नपरगजअरजतिभारी॥ मनोगिरगिरोशवदुनिहपारी॥२६१॥
अरजुनकुपसरकीनप्रहारो॥ एकेसरवलदेउहततारो॥ देघशकुनदेख्योक
परासे॥ कपरयुद्धअरजुनसोठासे॥२६२॥ छतीससरशस्त्रधारपुहरधर॥
अरजुनपरडारेतलरिसकर॥ ताकेवाननतनभएगाये॥ भयोतिमरअर्पतिक
धुनदिघयो॥२६३॥ अरजुनकोवधसोधनवान्ना॥ रीतितेजाकेतेजमहान
करमंत्रतरणभुमपरहारयो॥ ततछिनतिमरदूरकरडारयो॥२६४॥ भयोउज
आरअधिकउगरासे॥ अपरशकुनकाशाजडाके॥ सरपरहारमेअर
जुनवार॥ हरकेसीतरणभुमअर्पति वतुधर॥२६५॥ ज्योगजपुवारपर्वुतसोजा
ये॥ वेद्रुवेडुरतेजरुनधगाये॥ सोंअरजुनपुरमेनासिधारी॥ रहीसदेकोभगासि

धारी॥२५६॥गजरथअश्वतजंतजसमभाडे॥ठाढेरहेरनसकेधीरचितत्याउं॥अश्वदुर्योधनउांर
दिषाने॥ताकेपाछेजायलजाने॥२५७॥रथ्थकेद्रोणकेपाछेजाये॥भयेस्नोपानिजप्राणरचा
ये॥स्वानस्विसालचीलरणमांही॥श्रोणमांसभरउदरभरांही॥२५८॥द्रोणवलीपुनधीर
धराये॥सैनइकठकरयुद्धपराये॥२५९॥वैशंपायनोवाच॥दोहरा॥पंचालदेसकीसै
नसोअस्वथामावलवान॥युद्धकरतरणमेअधिकजहसुजप्राक्रमभान॥२६०॥नी
लमपसरपरहैजिहनिकसतवडज्वाल॥अतितीछनदिजपुत्रपरडारततेजविसाल
२६१॥चौपई॥अस्वथामेसोवडुयुधकीने॥नीलसैनअववहुहततलीने॥अस्वथामे
कुपवानप्रहाले॥सीसनीलकाकरभमडाले॥२६२॥दोहरा॥अस्वथामरविसुतस
हतदोरेतेजमहान॥पांडुवानकीसैनपरपरेजायवलवान॥२६३॥पवनपुत्रदिष
कोपकरकसपरहारेवान॥इतिरविसुतसरपरहरेउर्वज्योयद्धभयान॥२६४॥चौपई
निरषद्रोणअस्वपरहारे॥पवनपुत्रपरमजवलभारे॥भीमद्रोणपरवानपचासा
कीयेप्रहरवडुतेजप्रकाशा॥२६५॥अस्वथामापरहादसवाने॥परहरकीनेभीमन
हाने॥हादसहीकुरनपपरडारे॥पवनपुत्रमानवलुधारे॥२६६॥युधिष्ठरपहुंचोत
तवदोराये॥भीमसैनरथछरिहतपाये॥चेकतानदिजसनमुखहोये॥रणसंग्राम
करतभयोसोये॥२७०॥दो॥उसैनापरसपेलपतनी॥परेअसरणयुद्धभयानी॥श्रो
णपूरसमचेतनदेषे॥कोनपछानेपरतवशेषे॥२७१॥दो॥उसैनजेयुद्धकसाहो॥
चलेभसनरणरक्तप्रवाहा॥अस्वसवारथविनरथरणपरे॥उनमतनतिनकोनजे
परे॥२७२॥घनेसांरथीविनदौराही॥गजअस्वविनअस्ववारभ्रमाही॥सैनचदे
मीऊरपंचाला॥द्रोणचलेभयेदुखीविशाला॥२७३॥सहदेवनकुलनयमधामपुचाये॥

१६ घनेपवेरणधिततरफाये॥अर्जुनकुरन्पसन्मखधाये॥दिखकुरन्पचितधीरतजा
ये॥२०॥ज्यौरविउदयोहिमगिरजाई॥त्यौकुरसैनघरहरकंपाई॥कहेसभाईहको
तन्कखपा॥आवनहैयनतेजअनूपा॥२१॥आगेहीसतपौनवलागी॥कुरसैनासस
भकरीमिहानी॥अवआयोहैईहवलवाहा॥लषीपतकौनवचेरणमाहा॥२२॥भये
मनकर्णद्रोणकेपाछे॥जाहदपनाहहुतोरदिखआछे॥कर्णद्रोणवडुधीर्यधरही॥तोभी
भयधुतघरहरकरही॥२३॥कर्णउवाच॥अर्जुनभीतुमसमनररूपा॥नहिसदंस
भुजतादृअनूपा॥नाहधरेदनसीसदेहपर॥तिउघरहरहोसरयुद्धवर॥२४॥यद्यपि
अर्जुनवलीकहावे॥तोभीहमुरीदृष्टनआवे॥संजयोवाच॥भाषतकर्णदोदेवले
नेजे॥अर्जुनकेसन्मखविहसेजे॥२५॥पुनपरसरवर्णप्रजहाने॥मनुसावनवरसे
घवसाने॥नीरहवाकेवानेवहुनाटे॥पैनदोउविसमेदिखढाटे॥२६॥कहवानन
दिकाहलजाये॥दोउपुनीनसंस्नानमहाये॥दोउभैनअसमयुद्धकनाये॥प्राणप्या
रकादूनधनाये॥२७॥हतेयोधरणढाल तीनाही॥तिनकेपासुंरणमनपराही॥
मनभास्कुकेकोटवनाये॥विवहरसोयरहेनीदाये॥२८॥कहूंसीसकहूपाँयपराने
कहूंभुजाकहूंजांघदिखाने॥विनअसवारपरहिअसधदे॥कहूंगजकहूंअसव
हूरथहूहे॥भेरुणसलतरणमनवहाई॥दुर्योधनतवकहतदिखाई॥२९॥दुर्योधन
उवाच॥हेगुरजवसमसन्मुखसोअर्जुन॥करतयुद्धदोउभजवलअतिघन॥तवतुमक
होधमैनजकोडाहहे॥अवलौतेवचपर्यालहहे॥३०॥कैतुमकरिहोपक्षरनसाके
केहमारहतहोवनताके॥द्रोणवाच॥हेनृपयोहितमहनुहूंसदा॥तुमनलषोरि
लेषअसमंडा॥३१॥हमतेहोइसकेसोधारहि॥नीरहछपायरगोवलंकारहि॥

अवलो उन सों रहे समाने ॥ हम मई हरि जानि तिन्ही को कर जाने ॥२६॥ वहाके जे पंडु सत वलवा
ना ॥ हुतन पर वल का हम महाना ॥ अब इदु जावत पिंडे मन ठरे ॥ केहा ते म्ह सो वचन उचा
रे ॥२७॥ विशंपाय नो वाच ॥ इन्न वच कावारु हु सैना कानेने ॥ यो धो वसचं दन तनदी
ने ॥ फूलन न माल गरे सम डारे ॥ सुगंध जाने कछि रका हुसपारे ॥ भ्रापश सुप हरे नि
ज देह ॥ रण भुम चउ जाये वल डोहा ॥२८॥ दोहरा ॥ दुर्योधन वडु सोच सोच का करे
म थहोइ ॥ दो सहस जस वार सो लछ मन पाछे सोइ ॥२९॥ कर्ण दुसासन जस्न पा
छि रहि सैन चों फेरा ॥ द्रोण योध वडु संग धर सभ ते जाते मेरा ॥३०॥ चौपई ॥ ये दुपच
का वाट हदे दरपरा ॥ ठाडो कीन सैन जानि संग धर ॥ गंज भर स्ववाव ल भारे ॥ ये दुप
के रथा हित धारे ॥३१॥ इति पे उस्तनन जार का हलवाये ॥ मये च कत चित जाति
विसमाये ॥ कहे हे सा जुरा जे नवल कारी ॥ जयो सुसर्म सो लरन सुचारी ॥३२॥ ता
विन हम गत सैनन न जाने ॥ जर वे वा हुसन पदिया ने ॥ जेनल रे जरभुज वलु
काये ॥ हत डारत है ते जम हाये ॥३३॥ व जीकट नकास वहम को जाये ॥ पय रुधु ठद्य
मकर तवन्नाये ॥ स्रात वकछ सद्रु स्रुद्र तथारी ॥ जहू तह विधर चसै न सिंगारी ॥३४॥
सभ जाडे सु तपो न महाना ॥ पथा पुत्र सभ धरे मयाना ॥ द्रोण वली का भय वडु उधर
ही ॥ गज रजयो केहर जासे उरहीं ॥३५॥ युधिष्टर वाच ॥ भ्रात न सैन गतन ई वना
ये ॥ हम इ हिव्य हवव हू न दिखाये ॥ इहि व्य हलन रेवे की राता ॥ हमन्नी के न ही जाने सा
ता ॥३६॥ किरविध जावे किह नि कसावे ॥ या गद्य को वधु मर्मन पावे ॥ हम मैं सकली
सैना माही ॥ इहि रुधको को उसम कै नाही ॥३७॥ याकी गत जननाहि जन न लीने ॥ इन
विन चौद्या को उन लीने ॥ इक अर्जुन इहुमवली पुदुमन वरा ॥ तेसर जाजे जोरण
जार हरा ॥३८॥ इहि ती नो पाण्डु धगत जाने ॥ इन्ना विन जसवरन को पीरवाने ॥ यो दो

धाभुजवलुग्रतिपाये॥जापपकेसोऊपुत्राणनजाये॥२५॥जोनकरेरणहमयुध
जाये॥कहेशत्रुवलहीनपराये॥सुमरमापरग्रजैनजयधारे॥जानकैनपावै
निकटारे॥३०॥यानकथारवहुतमथकीजे॥कथ्थउपारधारेहीसीजे॥न्मातरग्रजै
नसभकेग्राये॥कहेनिपुंसकमरवपुगटाये॥३१॥तवधर्मजग्रमनवुलाये॥
मरवतेतासोवचपुगटाये॥धर्मजोवाच॥हेसुनवरप्रानोनेपाये॥तुमभीकह
गतजाननहारे॥३२॥पितसमनुहिवलउपमविचरहै॥यथावीजतैसेफलु
परहे॥सिंहसपुत्रसिंहहीहोवै॥योधपुत्रवउप्रीधणसोवै॥३३॥तुमपरजाज
पसोयहिकाज॥करोकोरवसोयुध्दसमाज॥ईश्वरकारजकोविल्मनकरेहो॥
शत्रुनसेसन्मुखमरवधरेहो॥३४॥अर्जुनोवाच॥दोहरा॥जानतहेप्रभुर
सेनमोद्रोणमहावलवान॥तासोहमरेयुधपरेरणकोभमनमहान॥३५॥पुनः
हमीवध्याव्रहगैग्राधीजाननहार॥जावोजासगमानहैतिवकसनवठन
सचार॥३६॥चौपई॥विद्यागमननीकहमपाई॥निवकसावननीगतनसिधा
के॥भीमोवाच॥हेसुनहमभहैनुहिसंजा॥तुमग्राजेमगवकेग्रभंगा॥३७॥
नुमकेद्वकलान्नाहतजावै॥तेहवधकपाछेहमधावै॥ग्रभमननसुनतातन
केवैना॥भयोविदापढलजाप्रिगनैना॥३८॥विदासमेमुखतेउचराना॥सु
नातातममवचनमहाना॥ग्रभमंनोवाच॥हेपितनुमईहनिहचेजानो॥
भभैभेदयामेनहिमानो॥३९॥देहेग्रहूरव्यहयेकीने॥तोरनाहवलधरोप्रव
तेरहिहाउ॥सुभद्राकापुत्रसुतननमदाउ॥हतननहाररणमोदेउवाना॥
मन्नातेमेरानीकानामा॥४१॥मैजयेवाचौंभोरवदिहवलसन्मुखग्राये॥
ईश्वभावतमर्जुनसुतग्रभमन॥हाकोरथवढुवेगगजचलमन॥

अमनन सो संगम्मु दिखाये ॥३०॥ अमनन रपु समचपलफि रौवे ॥ कोनस के नाको
अरकावै ॥ द्रोणादिक सभ के वल तोरे ॥ जुद्ध मन कध सयो वल घोरे ॥३१॥ अमनन
करवउ शवद उचारे ॥ मुहि जानो अर्जुन के वारे ॥ याको प्राण तजन की आसा ॥ क
रे मोह सो युद्ध प्रकाशा ॥३२॥ मह वानन को अपुने प्राना ॥ करे न वेदन रण हिम दा
ना ॥ करहत कुवर सर वर्षा धारी ॥ कुरसेना हतकी न अपारी ॥३३॥ दिव कुरन पआर
द्रोण व लारी ॥ भद तव्र हद वल कै सलभारी ॥ धने सर मे तिन के संग्रा ॥ परे दोरण
म मग्न भंगा ॥३४॥ इक वारहि सर सहंस प्रहरही ॥ अमनन सो समयुद्ध समरही ॥
अर्जुन सत सर वर्ष दिखाये ॥ रथो अचल गिर सम इक ठाये ॥ इकु इकु सर तज सभ
छित कीने ॥ अर्जुन सत रण अस वल कीने ॥३५॥ दोहरा ॥ दुसासन परत जका ठस
रथ दस द्रोण की ठौर ॥ कतवर्म पर अशाठ ही जुरे भुज वल घोर ॥३६॥ द्रोण व्रहद
वल दुहू पर सात सात तर वान ॥ अस्थामे को अष्ट सर परहर कीये भयान ॥३७॥
सात तजे भरश्रवा पर नौ शल ते उर चलाय ॥ पटतीपन सर शकुन तन लाये तेज महाय ॥३८॥
सभ छितहि दोये भमरण अमनन के निष वान ॥ अर्जुन सत के भुज वलै सम हूलीने मान ॥३९॥
चौपई ॥ इतिनै रथ सर घनन र घारे ॥ ते सभ करतन सजी द्विज वारे ॥ कुवर हाथयों धनु छोप
रौवे ॥ ज्यो हरि हाथा हि चक्र भमावे ॥ अचशवद मुख ते उचारे ॥ को हाथ वीर मो सो युध धारे
मन मो न नर न पर पदी न आये ॥ दौरवी रजे सन्मुख अ आये ॥४०॥ समर अमनन तउर चलाये
दिव अमनन अदार हसाये ॥ रसत हसत अमनन इकु जाने ॥ भनपर जुरकी जानि हप्राने ॥
दिवकौ रव सभ दोर पन आये ॥ अमनन सो युद्ध लाये ॥ रविसत को सभ ते वडु जाने ॥ अर्जुन सत
सर तीछन जाने ॥४१॥ जव रविसुत की छतील आये ॥ चिरतक व गं धर सके पाये ॥ प
न कुरु भम दुरि दिखाये ॥ अमनन पर सर रव धराये ॥४२॥ सर पचीस रविसत कुप सा

ऊ॥ सभ मजा॥ सभ मन न रोते न लागे॥ सभ मन न कोप आधि जीव धाते॥ सच लखा पर वान प्रहा
गे॥ ३२६॥ पाल न को धि सकी ना सति भाही॥ तिसे मन न शाल सुध न सभा ही॥ शाल की तोरी इसा
कल दिखाते॥ गये भाजा चित धीर तजा ते॥ ३२७॥ अब उनाम शाल को लघु भ्राता॥ भ्रात दु
धे दे रे वा वडु आता॥ पे रो पुष्ट सभ ते आति आतारा॥ सभ मन न सर उर तर दुना तारा॥ ३२८
द तम पेल संगती छन वा नो व ला॥ दिष ता सैन दे ती सभ कलम ला॥ सभ मन न पर सभ
श सु पुहरी॥ कार्जेन सत सर वधी करही॥ ३२९॥ पित की ने सभ रूप को देहा॥ मधु र ते
न धु भाडो ते दा॥ सर्जेन सत पाउ रपर तै॥ भाडो के सन न सु खर दराते॥ ३३०॥ नि धि
दु रा कु धा लि ज राते॥ पाडु वा न सन दर खब धाये॥ ३३१॥ दे हरा दुर्योधन रिस सभ न
के कर दत दो सूति भार॥ नृमपा को न दी दल को रा ए ते रा व लखार॥ ३३२॥ सन न दु सा स
न पुत्र सम दरपते न खार ला॥ दिष ता को सभ मन न करे मृग ते वचन रसाल॥ ३३३॥
सभ मन तो बन्धु॥ ती निस तके सध ही नदि धाये॥ ले ता लो सार थी रण तजा ये॥ का लि पुत्र तव दे
र पत ना॥ पिता उन ता दिषन सकाना॥ ३३४॥ सभ मन न ता मो पुरुष न रा ने॥ रण भु
म बलुकर ली न दर ताने॥ सर्जेन सर ता जैत पुरा ये॥ सा ते प्रो वडु या धव रा ये॥ ३३५
तिलो ते ये नू न र ण सा ये॥ सत ले ते नि जैवे रजु धाये॥ जे प्रभ द्रुपद सु ता वर धाये॥ तेस
मने रतोरा दी दवो रे॥ ३३६॥ ई द्रजु दो पत वान चलाये॥ दुसा सन न का लर वो धु सा ये॥
पुन दवा न ब ता पर जो रे॥ ती ते सु तन को मुर धाये भारे॥ ३३७॥ न र चे ता ता न सभ र दुपद
सु ता सत॥ ने रा टी सघ द्रो ध कर दुष्ट पुत॥ धर्म्ने तम न सधर्म जवर॥ दो रे सभ मन न र
कर दि तधर॥ ३३८॥ सुतन पतिरथ कर लीसो वो ले॥ मन रवि सतम दव च न सभ मोले
दुर्योधन तो वा च॥ दुस्सासन न सभ मन रखे हीन पराधो॥ सर्जेन सते सा ब लु पाये॥ ३३९॥
पुन धर्म जसु सोनै न सभ पाती॥ सापे सभ मन न र छीदे न रा ती॥ डी ह दलका ही रसो न

जावै॥धर्मराजकोदिष्टकसातिवलपावै॥३४१॥करेसभेरणभलनिजासे॥यानेकहे
नुमतेपरकासे॥धर्मराजकोरोकोनजामाही॥भीमसेननिकटनवहुंचपाई॥
३४२॥सुनतनकलीदेखोततकाले॥धर्मराजसोगहेयुधिष्टिरशाले॥उसभीमसेन
रणमोवउयोधा॥भीमकेवलतोरेकसतिकोधा॥३४३॥पुनकैरवसभहीरस
धारे॥भीमसेनपरदौरेइकवारे॥भीमसेनकेचहूंओररथिकराये॥मारथस
मसुरवरधाये॥३४४॥भीमदुसासुतकसतिभीरधराये॥जउजउधावपरहरसेयान
हाये॥जिहपरजायपरेभीमसेनवर॥सोईहतेतासहमहोजासुधर॥[illegible]॥
वहुहतहेहघनेध्धितपरही॥वहुभांतोधीर्यैनसभमरही॥लघुभ्राताकेशोक
तिदेघर॥त्रिवसेनकरेभीमसेनसोयुधवर॥३४५॥अर्जुनसुतकेसमावलु
पाये॥रविसुतसुतकोरणनिवलाये॥भाजीताकीसेनभयारी॥भीमसेन
नेरखतिवलनिरखारी॥३४६॥पुनयमनदेसकरेअपवलानी॥तीनवानअर्ज
भमनपरडारी॥अर्जुनसुततासीसुकटराये॥दीयेउरकसतिहीवलपाये॥
भीमसेनकेवलअसरचतुराई॥पीतवर्नेसभभयेदिखाई॥३४७॥दोहरा॥
ठधौंयेहेतुधरदीयेअर्जुनकोवान॥तासोंभीमसेनसेनअसरकरतभरन
रणहानम॥३४९॥धाउधर्ववानगुनअसरसुधरेशस्त्रसमुद्धतहेय॥वाणश
कतमुनदरथउठाये॥चितवेहुहुसोये॥३५०॥चौपई॥अर्जुनसुतसरकोदि
धावै॥धरेधनुषतबशतद्रुरावै॥चलतसहसहसलाउतलखदेखे॥दिखकुरु
सेनभईकेसतविशेषे॥३५१॥भजतसेनकुरुअपदिखाये॥भीमसुधामादि

१९

गोधेइकठाये॥ श्रस्वस था ना वलरु तव मो॥ व्रह्मदेवलक्षपाचार्य युधधर्मा॥ २५२
न्त्रपस्नपईह्हेघेइकठाये॥ श्रभमनकेस्नन मृषप्रुगटाये॥ श्रर्जुनस्मनतवर
सप्रुगटाये॥ हस्नत हूस्नतम घोसन्म रवङ्गाये॥ धृलमनन सनस्मतद्रोणपनानम॥
श्रभमनन सोरसायुधिदिवराना॥ सरश्रर शरु तवउगसंग्रामा॥ अरतमघरण
देउवल्लधामा॥ २५४॥ श्रसमारथदुहूकेमयेघाता॥ धृजाकरानमईछितस
था॥ होपपदातमृरयुधकीने॥ केसस्रीसपैचेपुरकीने॥ श्रभमनश्रंतङ्गधि
रवल्लपाये॥ पितुनिर्षत सुतसीसकटाये॥ कुरन्नपदिघस्नतकोपतपाये॥ श्र
भमनपरसभेदोराये॥ २५६॥ घेरसलीनो श्रभमननमघघर॥ श्रर्जुनसतनीह
उरघोघोधवरा॥ सभवेवाननमडोकरडारत॥ श्रतिवउप्रा कमरणदिघारत॥
२५७॥ यमनदेस्नपका सतयुधवरा॥ श्रभमनकरघोसीसनिहवलधरा॥ तव
रिसघरमहावलइकठाने॥ श्रर्जुनसुतपरजायपराने॥ २५८॥ द्रोणकृपाचार्य
श्रसथामा॥ करनवसेकरणीयेदुषवलधामा॥ श्रर्जुनसुतकोसेवलुकरई॥ के
रघेरसभकेमृघधरही॥ २५९॥ दोहरा॥ स्वठवानीदजपुत्रपर श्रभमनजकीन
प्रहार॥ रिजस्नतरिसधरसीनसरदीघेवीरपरडार॥ २६०॥ द्रोणवाणस्नोपरहर
घो श्रभमनउरमहान॥ अरीवीसकपचार्यदोदसशल्यनेतभयान॥ २६१
चौपई॥ श्रर्जुनसुतसभहीनरडारे॥ कोउनपहुंचेजेश्रमधारे॥ पुनश्रभमन
सरवर्षाधारेसी॥ घोव्रह्मदेवलघोरतडारे॥ २६२॥ पुनश्रवघमपरेप्रानीनक
रे॥ वाननवलवहुन्त्रपसंहारे॥ पुनरविसतकोश्रभमननमारही॥ परेपद्रवधर्रके

नजाही॥३६३॥घरखड्गमपधुधकरभारे॥कर्मिसाथयेरणतिहवारे॥जिहपररविसुत
कोभरेसकुति॥घरहीहेसिरकटेसरहिसत॥३६४॥घनेभपसणसेनहताने
जिनकैगनननाहपुगराने॥हनहनरणघरुपलोवलाही॥चाहतनिकसोक
रहिविडारी॥३६५॥पोडुवानसोजाथमिलावे॥देखदरसुसभकोविरमावे॥इक
कोहतदूसरदिखराई॥ताकोहतहेसरपुगराई॥३६६॥जोपछीपेदेपिंजरेमाही
लोकसभननमधसेनंदिघारी॥चकाव्रहवेनिकसनकीगत॥नंदिजानतक्ष
भमननभुजवलसत॥३६७॥विनजानेरेसेनिकसावे॥करेवलुजधिकोनक
सननहीपावे॥निजप्रानअभसानरहानी॥समसोयुधकरेवलुठानी॥३६८॥इ
निधमैजुसननसेनअपावे॥चाहतजारवालनिकरोरे॥वडूकरहीपडुचननहै
पावे॥कोरववलुधरमजाहिलकावे॥३६९॥पवनपुत्रकोयेदुधवलुधरा॥रोकरहा
मजमाहयुधकर॥३७०॥दोहरा॥दुसासनकोसतवलीअभमननसोयुधलीन॥पं
चवाननतजवीरकेअससमारणहतकीन॥३७१॥पुनदसकोरपरहरकीयेलजेवीर
कोजाइ॥कुपअभमननसरसततजेमरवतेकहिपुगराइ॥३७२॥चोपई॥अभमने
वाछ्या॥हेनिलजतृहिपितमोसोअवा॥जयोवचाइप्रानजानेसभ॥तुमभिरहवल
मोसोयुधधोरे॥येप्रानप्यारयुधत्याजसिधारे॥३७३॥ईहिकहिअभमननकैर
कीडोरे॥सरपुत्रररतरणभुमवलवोरे॥अससथामेसरमजाहिकराने॥दुसासनस
तसरलगननपाने॥३७४॥दूसरडोरहिसरवलकारी॥अभमननपरसरतरताप्र
हारी॥सरपुत्रहारअभमननरिसकाने॥तीनोकेअससमारथीहाने॥३७५॥पुन
सरवलतीनोछिनतकीने॥अरजुनसततसेयानपुत्रकीने॥पुनकुमारनिषवानप्रर

रे॥ कालकराल रूप मृग मेघ बरसो रे॥ ३२६॥ ऊँचि सतदेव देवगण सो भाये॥ दिग्गज जुन मस्तो रे
पावसु राखे॥ बालक हम रीसे न सहारी॥ हमरे बल पतीजा ये भारी॥ ३२७॥ ईश्वर को
हठ ताके उन्माद धरत हो॥ पाके मकस तिभार सहत हो॥ द्रोण वाच॥ हम का हू के युध र
ठन धारे॥ जे सेपा संग्रामनि हारे॥ ३२८॥ देव देव ग्रीश्मा नर हारे॥ पास न पथु जा
हू नीद पावे॥ वेद न रम कज जुन को दीने॥ ते सभग न ईश्वर बाल पवीने॥ ३२९॥ ईश्व
रे बानवर लो हम सना ने॥ व उर स्मार साजा वे अति भयाने॥ पाते हत न यो ग नरि बाला
पत्रिय द्वारण भ नरविलूला॥ ३३०॥ बाल कूर वस्था पा शिदि शाउ॥ पको हनचि तज त
सेपा उ॥ ३३१॥ दोहरा॥ पाकु नार वे रध रसो भरो हाथ रण माहा॥ सेपा व त हो नि ज
रे दपा मे पे सानाह॥ ३३२॥ जो तुम कै से चा हूचि तन करदे जो धनु ताहा॥ रूप बा
धनु पत्र तेच सण करभुम धरबल नाह॥ ३३३॥ चौपई॥ तब ईश्वर बाल सुजमह
ने हो ई॥ सुन तव ग त रोरण सोई॥ वेतन सर परहार करा वे॥ करवे जस मुसार
पर लपा वे॥ ३३४॥ धनु तेच सण करम मजो रे॥ जमनन रघु त जोरे स्पोजपा
रे॥ घोउ स वर्ण बाल सुकुमारे॥ घ उ गन्ध मेले दोर यो भाये॥ ३३५॥ ईश्वर विद्यानि
पुनवली जानि॥ ईश्वर बाल संग्राम करत समत॥ कर द्रोण जस प्यामम हाना
रुप करत वर्म पे दु पपु जटाना॥ ३३६॥ इन घर हू के सन मुख वे होई॥ करत युद्ध व
दुधा उसोई॥ सभ भे बान घर वर रम मडार ता दोर पत्र तेच धन चहू दकार ता॥ ३३
७॥ समर रण सर व घन पानी॥ जभं मन नचो दोहू वे धी स्मानी॥ ३३८॥ दोहरा॥ सज
के वाच॥ दोहू वाल सम नघा नानी वे धीर विस रभार॥ सरवि हीन न पस मन करहू
नार हाति हार॥ ३३९॥ विकव समन स्यु धहान तन न तन पद्य कुमार॥ सर हरत

रणतेजधरवानखड़गदहुार॥३५॥ अंतसमेयापरपरो अरजुनमसतवरयोध॥ जीव
तनाहिछाड्यातिसेपठेमस्यमपुरकोध॥३६॥ चौपई॥ यमनरेसकेयोधवलाते॥
केकेदेसकेनपकज्ञतिमारे॥ अमननवहुछितवहुहतकीने॥ रणभुमभुजबल
धारपुवीने॥३७॥ पुनदुसासनमीछितमयोरना॥ जदापुत्रदोहूकीनेअतिघन
संध्यानकदुहूंयध्रकगये॥ होनहारगतकोनलषाये॥३८॥ अरजुनमसतजापहु
फिसलाये॥ दुसासमसततवसमादिषाये॥ अमननसीसपरजदाप्रहारे॥ पोर
धोसीसलजननहिवारे॥३९॥ निकसप्रानसरलोकसिधारे॥ दुहूंलोकसुरबस
जससंभारे॥ अमननबालकअबधविझारे॥ पुनसंग्रामकरावलाहिचितारे॥
दुहूसैनकेयोधविसमकरांति॥ धनेसीसकरमीजेसभसनत॥ वडेहेसयोधव
लर्कोहपावहि॥ येलखकोरयतननरलावहि॥४०॥ जजनेकधुनषायजमा
लर्कोहपावहि॥ येलखकोरयतननरलावहि॥ जिरवालअवस्याइहिवालहतान॥ देषस
यो॥ जसकेभोजपरनसिधाये॥ दोहरा॥ अमननकोहतहोवनाधर्मजसनविसमा
नेक्षमहोयमहांना॥४२॥ दोहरा॥ अमननकाहतहोवनाधर्मजसनविसमा
ना॥ ततछिनउठदोरेसभीवधुनसमादिषान॥४३॥ अमननमिरतकरणप
रथोहिदधमिजमरछाया॥ जेरोभुमाहीषायभुमसिरतकपरोदिषाय॥४४॥
पुनउठरोवतनेनमरउमेभरभरस्वास॥ सभेनिरर्षनिजजीयकीस्याहीचि
ततेसास॥४५॥ चौपई॥ धर्मजकोसमधीरंधरही॥ शोकरनमुरतवचनउच
रही॥ नहेयावालकयेजलपाई॥ तेऊनाकिनहूंसुपनादिषाई॥४६॥ रणभम
मोवडुधरसंग्रामा॥ उयोत्याजजनजशिवकेधामा॥ याजतकोवडुस्वरसजाध
सोवडुधरसंग्रामा॥ ताधनास्याधहि॥४७॥ वडुयोधजनसननमरवयुधमारे॥ यापु
रे॥ जपतपुयेतमा

२१ मारग्गलप्राणतजावे॥ पापरसदनमाहत्नुमकरहे॥ पापरसदनकाहत्नुमकरहे॥ पा
पेहांतिवडुवीरविचरहे॥४२॥ सदनताहूपरजीजेमसपा॥ घेरगहतहोहरगग्गा
गाजनपा॥ ब्रमनन जेषेसभहमनरही॥ पातेउब्रमगतनविचरही॥४४॥
जोछडीरगप्राणतजावे॥ उब्रमतेउब्रमगतपावे॥४५॥ अर्जुनउवाच॥ परीरेन
ज्ञेहिनजनिजधाना॥ सभपाहुवीचतशोवनमकाना॥ धर्मजसभतेवडुबनध
रही॥ नब्रमननवेगुनवलीहरिविचरही॥४६॥ छिनप्राजनछिनसदरताई॥
पुवन्ननस्पछिनपुधुसमनराही॥ हाब्रमभमेनहापब्रमभमन॥ सदनवरतधम
जविहवलमनना॥४७॥ हमहिपवधोरगभननमऊरे॥ मोहसीसदइरदोसब्रमपारे॥
जवब्रमजेनब्राबेब्रहरितनापे॥ निहमरववहोतासोपुगराये॥४८॥ सुभद्रुम
न्मुरवमरवविहूरधाऊ॥ नेउपार्यारदनाहीचेताऊ॥ धर्मपुब्रमतवरविरलापा॥
ववब्रमपुगारपाव्यासब्रमपापा॥४९॥ व्यासोवाच॥ दोहरा॥ हेधर्मजजेअचदतहोपु
नजीवेसवुनार॥ पवधोपदवीउनलहीजोरनलहेसचार॥५०॥ कालब्रमव
स्पवडुसरहतरगभमनमोनितरलीन॥ साधुजुमकेकोपापवेगयोवेकुंठपु
जीन॥५१॥ चौपई॥ जोब्रमवजीवउडेइहिवाला॥ तबीनहचेजानोभपाला॥
पुनवैमसीमितपार्थावि नाही॥ वडुमोमेनिजरिदिसमुझाही॥५२॥ धर्म
जोवाच॥ हेव्यासदेवतुमसर्वज्ञानी॥ मितविघाहेवेसउपजानी॥ तिहिकार्पं
वोइहिउपजाई॥ पुनधर्मसमेवीहिव्यासीहिताई॥५३॥ व्यासोवाच॥ पंचतलुवे
पुतेरगापे॥ चोरासीलपपनब्रमनापे॥ तिहमोजोतईगळीजानो॥ तिहिते
चलमविरतपरिहचाना॥५४॥ देहेसनेमचेहोपावता॥ ताहीजोतसेलेसभ

ज्ञावत॥तिसीजोतमेसोसमभाविधुजाने॥पवनस्वरूपताकोजीयमाने॥जबवाहिजो
तन्यारहोजाई॥पुनओबलदेहिस्वबलनिटाई॥४१५॥दोहरा॥चलननरनदेख
नसूननषावनचालनदेन॥इहिसमनमोजोतिविनइहीचितवेहेस्वनैन॥१६
भगवतइधापायकेजबउपजेजीयजंता॥लषचौरासीभयेपुगटमावतमनतहे
नेता॥४१७॥चौपई॥जउमारजातिमनकेपानी॥हरिपदजायपुकारीवानी॥भ
मोराम्चा॥देहहरिइतिनीस्विषउपाई॥मोरमारजातिसमेतनजाई॥४१८॥दुरवी
होयधसजाउप्याले॥सहनसकेउइहिमारविशाले॥ज्ञाकसमाउतनकज्ञागिनिश्र
जारी॥भईजाजासमधरेविनाशी॥४१९॥सुनतजागिनितवविनतीधारी॥हेर
रितुहितातजापरजपानी॥तुहिहइधानीकीसमतेजाति॥तौहरिजाजातेकोउ
मुरनसकेसत॥४२०॥तुमसमजाननहारस्वामी॥घरघरव्यापकजमेतरजा
मी॥एतीकहाशकमुउहेजागिनि॥ज्ञिहितेजानसकलजगतसत॥४२१॥पुन
हरिकहेहेजागिनिसजाने॥निजगायेमोरहेमचने॥पुनकहेजागिनिमुनोजग
दीणा॥सुमोरवचननुहिईशानईशा॥४२२॥एतुबेनतीजावरउचारे॥नहि
सकोइकवारेजारे॥छेकनलवदनतेजाजापाउ॥शनेशनेसमजारदिषाउ॥२३
पषसममोहशत्रुकरजानै॥कोउकोउकोवरदेवनमानै॥तालेकहेतातेगउतपके॥
धरेजगतपरमलुजातिजैसे॥४२४॥कहेसमभीकेतेहतुहिहोपे॥मुजकोदेसधरेनहो
केपे॥पातेमोहिकोउशत्रुनभाषे॥रोठेपरजीवतामितलाषे॥४२५॥भईजाजा
भुमजेतानुममापो॥स्योहीकहेस्वस्मितचितरापो॥जगपरहैसीलायाहोके॥समकि
प्रदेषजाकविचारे॥४२६॥तेजीहतेसमहीमितजाने॥मोहतेतारहराषेनपधा

२२ नांहि ॥ थे जन मुहि पछितावन लागे होरे ॥ ते उस मृग जे ज्ञान विचारे ॥ ४२७ ॥ सिमरन
भजन हमारे रहे नाही ॥ इस ज्ञान मैं लवि ज्ञानी रहे दहदी ॥ जो अब धु जगत मांहि डुलावे
हीरे हीरे समुहाय जनावे ॥ उन्हा विन पावर नहीं उलघाई ॥ तुम रहु निज कार्य
स्वामि चिताई ॥ ४२८ ॥ व्यासोवाच ॥ थो नहीं तन्नित जगत मझारे ॥ जीव न भार भु
मसाझन धारे ॥ धर्म चर्न न ही ठौर रहावत ॥ जो नित तया जीवो न हता वता ॥ ४२९
उपजत पपत दोनो हरि रहाया ॥ हरि जन लखे ज्ञान वरसाया ॥ पुन हरि के ओ
धु दो सु न धारहि ॥ निज धर्म न ने फल की चाहहि ॥ ४३० ॥ या ते तुम भी सोक
न धारे ॥ हरि इछा इही मंहि विचारे ॥ यो जन मोइ कदिन ने मरना ॥ व्रि
कपो तु वालव वापरना ॥ ४३१ ॥ थे जगत जे जीव की धाती ॥ काहू ते नाहि होतनि
वारी ॥ थे कह जे न समुनरणा पाई ॥ ताका फल तब थे तु न पाई ॥ ४३२ ॥ संजयोवा
च ॥ दोहरा ॥ इरि इउ कारके बचन व हु के है व्यास प्रजरान ॥ ज्ञा ओ भी विर लोकि सो
धिद जानि लीन महान ॥ ४३३ ॥ भयो भ प दृ सुर वि जे सुन ना कया सु ज्ञान ॥ सुवर्ण
सी सब ताहि सुत कारनि ब हुर च न महान ॥ ४३४ ॥ सुवर्णसी सब बचन ते निकस
न सुनि प्रकार ॥ ताके न सत्र रले गये जा हत की न कुमार ॥ ४३५ ॥ सुन तिव थे धारमु
रवि जे सब न धीर धरायु ॥ चाहत चितनि जप्राण वर प्रि ही क हके ते न जाय ॥ ४३६
चौपई ॥ तब सुरवि जे सोक सतभारे ॥ चाहत नृप पुन प्रान निकारे ॥ रद नकरत मा
ता न तज प्रायो ॥ का हू विधि चित न धीर न पायो ॥ ४३७ ॥ इरि मो नारद मुन पुजारो ॥
कही सुनो नृप ज्ञान न हा ने मरदनु करि ह्रि या ज्ञावे हाया ॥ कियाक र सके ना नव ग
न हरि माया ॥ ४३८ ॥ सदा व जनमु नृप तु हि कुल माही ॥ भयो ते न सो व हु बल साही ॥

२३ हिवडुमावदउकचपुगराती॥मवोनाच॥सहस्त्रवोरमोईभुजवलतेतोरे॥देसमस्तरावली
तेवलवोरे॥४५३॥प्रालुनजीस्योज्ञातमहाना॥समुसंपतजुगमत्वडसमाना॥मत
कोवलधनमपदिधावे॥मरणविसारपरेगरवाये॥४५४॥सवडुसमानसवलजु
गज्ञाने॥प्राहूसेचिनमोहनज्ञाने॥पुनइकअतिपरिवलवज्ञाना॥शंपरदित
तापुत्रअक्रमा॥४५५॥दोलपविपुनादहमोईमाहे॥सवधनमोजनघातसदाई॥
सकलदेसविजयज्ञानीते॥धुघतकेनरहेधनसीते॥४५६॥पात्रसदोईवेज
वधीते॥तदुलहेयधापजलचोते॥चुलीकरनजसजेदजगुरहि॥चलतनदीव
डुतेजअपागरि॥४५७॥चवलनदीनानुनिहनग्धा॥सवलोचलेपुगरहनमाधा॥
इवीसमस्तसवंगार्यजरदधिवह॥नितपतिदानदेतहितचितसडु॥४५८॥तेमी
जगकोत्यागमिधावे॥कालवलीप्राहूनतजावे॥जवनरहेजगनामुरहाई॥म
लीवुसीपाधेपुगरहै॥४५९॥अवरभरतमतवलकारी॥जिनवतासिहवसकीन
वलारी॥वंधनसमयेगरेवंधाये॥तिनपरचडतसैनमहाये॥४६०॥मिरनकेश
सवाससैनवरा॥दुइपरतमयमानजधिकतर॥जेजनतासोपाचनधोरे॥देत
नाहनामसवपुगरारे॥४६१॥इकसहस्त्रगजजेमेदीने॥जेपाहूनपसपुनलीने
तेभीजगतेनातरहाना॥कालनधार्योचसनहाना॥४६२॥मीगमसारदाी
उविताऐ॥प्रलेघासिभजिहमगवीयेभरे॥गवणवलीसेजसरहताने॥तेरस
काकोरमहाने॥४६३॥तेभजगकोत्यागमिधाये॥नामवतीविधापपामचोरे॥
पुनपरमनमसारचितारघराये॥इकीसवारतिनधत्री घाये॥४६४॥कुरछेत्रमार
कैयपुक्रमहाने॥ग्नामसलवउडुतेजचलाने॥अवनवरक्रवरणतावरती॥रन
तममानभमहिगपरती॥४६५॥जवकुरघेत्रमोघरघापरही॥रघनवर्णताजलहि

[illegible]

२४॥ ञमिसिधाये॥समसुतदान्नओरेहितु पाये॥इक्कइक्कसुतसंगशतशतरघुवरा॥समरथ
एकजीयासंदरधरा॥५०८॥जड्डे जउ तमषनतसमअंग॥ञ्जमोलवसनधरत
सेञ्जंभगा॥इक्कइक्करघुवेशतशतचोरे॥जरेसाजनगमोलनउरे॥५०९॥श
तशतचेनइक्कइक्कसपाये॥जिनवेधीरध्यावतञ्जाये॥इहिसमतान्नपदा
नुगताये॥नुञ्जेतमहवउपजधराये॥५१०॥दिजशिषतासुतलेगये॥सुत
वतन्नपञ्जहिराषतमये॥निजनिजविध्यासभेमिसिषाई॥वरभाजीदीनेसुखदा
ई॥५११॥दिजशिषिवेवरपायसकलसुता॥भयदेसनतेभयतेजयुता॥फमे
पयसिसाविधनरेसा॥भयेकालवसतेजरिनेसा॥५१२॥निजनिजसमेस
केलसुतलोये॥केउनवचेकालवेकोये॥जिनवेजेसतेजञ्जगाइा॥तिनकी
केवरहीवधुनाइा॥५१३॥वेनभपधनसैनञ्जपारे॥उदेञ्जमितजीसेदिस
चारे॥निजत्रिभवनपतिजहिवाहा पे॥दिषञ्जसुररवेउड्डिएनल्याये॥५१४
पाके दीनोदि जहिशापा॥जठञ्जगतमयेतेजञ्जमापा॥पुनतांकोसतपिय
जगमाही॥कीयेराजउनतिजवलताही॥५१५॥पितुतेतेजञ्जाधिकप्रगटाने॥
समजुनपररहेवलवाने॥समनरेसताञ्जाजापाये॥राजुकरतसुतदेस
नेस्राये॥५१६॥तेभीइतकालवशञ्जाये॥पुणतासाठयनमेदसिंधाये॥न
पयजातजिहिकुलञ्जतिभाती॥ञ्जवलजगजेोकेराजसुचाली॥५१७॥तेभीकाल
वसीहततलीना॥तजेनरसेनञ्जलधुवीना॥नउन्नपजातेसुरपतिभाइा॥
सुरपुरराजुकीनञ्जनगाजा॥५१८॥सुरपतिकीनाजीहुएन्नी॥दुषहिएनापर
न्नपवाली॥ञ्जजमितमनीतिहिदीयेसरापा॥सरपुरतेभूपपरेञ्जनापा॥५१९

हे धर्म जइस केक हे नामा ॥ क्र व र पु ले न्य व रे हे स्त्र का म ॥ व हो ला क हू सं तु न दे छा

ब ता ॥ स मे क्र धी न स भ ज ग नु दि छा व ता ॥ ४९ ॥ या हि स न र्ग हे ज्ञा ते ॥ ता ते

उ रा ष न स को ते ॥ स्त्र म न न से व द्रु ज ग नु त ज्ञा ये ॥ नि ज नि ज स मे ता ये न र द्वा ये ॥

५१ ॥ ता ते स दु न का ह तु म क र हे ॥ वे ता ति नि नि ज ज्ञा न पु हू र रे हे ॥ ५२ ॥ स्ते ज ये वा च

द्या स व च न सु न ध र्म सु ना ये ॥ ग्गो वु. त्या ग त ही धी र म द्वा ये ॥ द्या स्त्र वि दा हे त ये

ज्ञा न व रा ध र्म जू ते ति दि क्र वि र धी र धी र ॥ ५३ ॥ वे शं पा य नो वा च ॥ दे र ता ॥ द स स

हे स क्र र ह्या न ज र स्त्र जे न स त व ल ते हि ॥ त व नि ज ज्ञा स न ज्ञा य र ला ग ये ति व पु मे ते

हि ॥ ५४ ॥ च वा च्य ह प र वे शा की ज्ञा न त वि धा धी रा ॥ नि र स न जी त न ना प जी ना ते

ह यो स्र धी र ॥ ५५ ॥ चो प ई ॥ स्ते धा त र स्त्र म न न र ल मा दी ॥ स्त्र न र स्त्र नि व उ ने जी द

वा ही ॥ स स स न स न्म र जो त स्त्र पा स जी व न हो ल धी य त स्र ज्ञा ते ॥ ५६ ॥ हा ल धी

य त स्त्र व उ ह दो र प रा व ता ॥ को र वा न को ज्ञा य ह ता व ता ॥ स्त्र म न न को नि न र दि ह ग

ये ॥ स म को र व न्हि न ह र ष म रा ये ॥ ५७ ॥ पा उ वा न्हि त न्हि त ज रा ने ॥ र ला म ने दे

उ से न मु रा ने ॥ ता धु मि त पु स धा को ना री ॥ दा हा ला र प रो स्त्रि न भा री ॥ ५८ ॥ स्त्र

म न न रे गु न ज्ञा न स भ र ही ॥ दु ज म र नी र द नु स्त्रि त र ही ॥ न म मो स र्म न र

ध त वि स्या ने ॥ उ र र घ ने व र स्त्रा पु ग रा ने ॥ ५९ ॥ स्त्र र भा हे इ न र री स्त्रा नी त स्त्र

ना ॥ इ कु का ल क र्इ ह र र इ को हे त त ॥ म हू पे र वा ल कु ह त ली ने ॥ इ न को धु न को स्त्रा

म न र ली नो ॥ ६० ॥ सो र वा न के दी यो स रा पा ॥ जि स स्त्र नी त स्त्रि त र री स्त्र मा पा ॥

स्त्र स्र ग ज र प ज्ञा ह ते प रा ने ॥ तु ग व उ जि र ज्ञा दि ह ग ने ॥ ६१ ॥ म प न न व रे म ष

न भा रे ॥ ष रे म न न त चे म न र स्त्र पा रे ॥ दो र हो र व उ नु ग प रा ने ॥ स्त्र म न ली ज्ञा धा प ल घ

25

[illegible]

ऊत्मनवउत्तरदीयाजैयोवहीनुमपुगटारा॥ऽपसगुनयेतुमनकोदिषावेपरेस्रमुकोऊभार
याप्यविजादेवसचेविनविहिधेपेचितचितान॥विनजलुनिहारेचर्नेपनीपाव
ननजाहमहान॥चितान्चितजञजेनगनायोगयोजवानिजधाम॥देयापधि
एरचितचितविस्मानजाधिऊञकाम॥९॥धर्मजलरतदुगनीरजञजेनमोवही
ऊपसार॥नुमगयेसुसर्मायुधकोवदृषलीतेजञपार॥हमभीमकोऽसभमंननेऊर
धमपठोपुगटाय॥पुनहमननुलमहदेवसगारहषभयेहिहतुपाय॥१०॥येदुपाप
गेयोगेवजगयुधकीनहमसोभार॥पदुचननदीनोक्राहकोऽसतिवदुप्राऋनुधी
रा॥धरमहारघीइरुठानरगाभुमल्लीनवालहताय॥नुमरेहेनिजपुगपालेती
तजधुलषीर्नहिजाय॥११॥नुहिमुतऊगीजेभुमरगकोऊञवरऊरनसकाय॥द
ससहस्वऊरवलडाऊनीरतकीनयोधमहाय॥वदुनामुऊपनापुगटऊरज
गनजगयोनिजपुान॥हमदूपठयोयालाजनुहिमसमुखसकोनदिषान॥१२॥
अर्जुनमचनजभमंनरहनुगिरपगेधरऊपाय॥वडुरुदनुऊरऊरगरदऊचेभरे
मरवपुगटाय॥केतकोदिवमतेसबुदुगपरतडीहस्रमुल्लीन॥ऊवमोहपुगयेउ
थरतो॥रगसुनोभ्रातपुकीन॥१३॥दोहरा॥येयेदुपकोनहिहतोछालभुमरग
जाय॥जेऽसघमातपितहतेसोमीहसीसचनुराय॥१४॥ऽसधवाधुरकीनारमोऊरे
मोगनरजोइ॥जेऽसघतावोलागहीतेऽसघलातेमोह॥१५॥चामरछंद॥ऽसजेन
उचारतवारवारपुगसभाकेमाह॥पुगमुन्योचुननपसगसुसनोसुनतचित
चितदा॥येदुपठरतऽसजुनपुगेमुरवतेऊदेपुगटाय॥सुहिपोठवामेवेरकी

ते ऋधिके तेऋ धकाया॥ तन मे गहा नी हुपदी लेच ले हमउपराया॥ इनमज्ञन तल
गहि मे हमे ली थे वचन दा समकहाया॥ ऋवयु दुभाते मेस्नु नो मेन गनदी नो ज्ञान
घा ते हस्यो ऋभमे नरण वहु पाप मो हल गान॥ घा ते हुरो ऋति रिहे मो न तग हे मो हव
लु पाया॥ स्रुमभार उप जो वैन धाहु वे रि देव साया॥१७॥ से जपे वम्ह॥ दोहरा॥ वेहु
घहु रपत ऋर्धं नि सठ घो दु यौ धन पास॥ ऋी कोउ व मो हमन तुरी न्ही की की नीन्नाहि॥
१८॥ विदादेहु कहू कुं ज दिष वे ठरे हातपु धार॥ निज ऋ नी ते हुरप हो सन्कार्जु नपुण
भार॥१९॥ चोपई॥ गुर न्यप ऋोम समें उरप ऋति॥ तथे दुण मे निबर चिं नचित॥
ब हत दुण मे बुरन्न प वे न्ना॥ स्नो गुरे तु मव दु स्नरव देन्ना॥२०॥ पेहु यव उऋी तमय
चित धारे॥ न्ना दूव हेन्नीचं तनि वारे॥ स्नु न ऋ जे नने पुण मय घाये॥ उरप तस्न रन
नु मानी ऋाये॥२१॥ दुण वाच॥ हे स्र्मन नु मानि हि भय धरेहा॥ रवि स्नत स्नेनि जरछ
विचरहे॥ पुन्नि त्रे मे न ऋरण व्रवला री॥ मरम्र वा पुन ते ज ऋपा री॥ पुन हमतु
म री रधा धरही॥ तष दुवे उरव तउर ही॥ का ल मे न ऋ स्नी विध धारहि॥ ऋर्जु
न स्नो युध वर पुनि पारहि॥ सो हि निवर चे मे प हु न्चाई॥ वे स्ने ग हे ना हवल पाई॥
स्न व ल स्ने न पाछे तुमे हाँवे॥ रहे स्न्ही स्नी चिन चिंता घोवे॥२२॥ हम स्नभ तु मं री रधा
धारहि॥ ऋ र्जुन स्नो संग्राम विचारहि॥ तुमरी वाव ऋधिव वल भारी॥ ऋर पुण
स्नन व त उरव लारी॥२३॥ संजयो वाच॥ दुण चायं वच स्नन तमस्नर्म॥ धीरमार
गहि शिर युध धर्मा॥ इनि ऋर्जुन जव पुण पुरा न्ना॥ तव हरि ताम्रो वहत मरा न्ना॥
२४॥ ऋी भगवानो वाच॥ हे ऋर्जुन्नी न ऋभ्रा न पुधावे॥ पाछे न रहे पुण पुराये॥

जवहरि सचन सभाव सन्नाये ॥ सुन अर्जुन मन नवी अनभावो ॥ २७ ॥ हरि सो कहत सचन
रिस काये ॥ हे हरि नमन्नी हरि निव लल बाये ॥ अहीद धोभ्रा तन सो वाता ॥ भ्रातन मो ऽिया
वतुवल ताता ॥ ये भ्रातन के भजव लहो वत ॥ अर्जुन मन नररा भुनजीव न बोवता ॥ २८ ॥ सुज
बोवाच ॥ या पुकार के व चन वषाने ॥ नरव पुसे दडिगर कत सनाने ॥ अपतन नाचित तुको
धअधिकवरा ॥ दिव अर्जुन न व कहे व चन वगा ॥ २९ ॥ हे अर्जुन मतेरे सकराये ॥ हमचोरे
नि जपुरास पुराये ॥ नम अर्जुन मन के शोकत पाने ॥ भ्रातन पर शिवाते समहाने ॥ ३० ॥ दे
हरा ॥ जे नर रोमहिसे जपरत जेपुन व सवाना ॥ अपचवानि तुम गतल हे तिन परदु नु
चवधाना ॥ ३१ ॥ अर्जुन मन न ये की ये पछवरस सेनन कहू दिधाना ॥ भुम गना मजाताज
गतजीवन तेसे वर जाना ॥ ३२ ॥ चोपई ॥ सुन तधन सखहरि हीये जाने ॥ अपुन हाथ
वधुनाह पधाना ॥ जेयथा हि दवे वन जारे देवहि ॥ जवचा हेत वहीले लेवीर ॥ ३३ ॥
नापरे सकाह जीय की जे ॥ त्रिपा शोक सो हीय राखीजे ॥ या पुकार कहु व चन जान व
र ॥ हरि अर्जुन सो कहे धीरधर ॥ ३४ ॥ अर्जुन नाचित न कहु धीर धराये ॥ सुमर्दुर्जन क
र गये यदु गये ॥ समदुर्जन वन सतके शोका ॥ नाहि देखे अर्जुन मन न पालेका ॥ ३५ ॥ श्री
वदुपति वहु जान सुनाई ॥ निज भगवानी के शोक निवाई ॥ श्रीभगवानो वाच ॥ धन
नेजिनि अर्जुन मन न सुनताये ॥ तुहि सुनस मकाव नुपतीक्षाये ॥ ३६ ॥ तुहि मदनाहि क
सुनाहि विनासे ॥ कालव सीस भयपर कासे ॥ को ज्ञाने सोपाके ज्ञाई ॥ सदा अमरजु
गको नरहाई ॥ ३७ ॥ इन्द्रीन ह मभी जगतु तजावे ॥ कहे को नमन्दि तचिताते ॥ तोहि
धीरवहु पद वीपावे ॥ अर्जुन मन को बहु फलु उपजावे ॥ ३८ ॥ से जपो वाच ॥ समदुर्जन
हीरवहनु नि वारे ॥ जये कुपदीनि करस चारे ॥ अर्जुन मनन की जी यपुनन याते ॥ कहे

मेव ऋषिभिर्ज्ञेयधारी ॥ ३४ ॥ उत्तराज्ञा हृत्वा मम पुराणं गर्भवती श्रीतश्चितज्ञ राजे ॥ नि
नवे हरि रवदु ज्ञा न धराये ॥ तिन वे मन न धीर्य उपजाये ॥ ४० ॥ यदुपति हरि रवदु धीर्य धारी द
तो भी उनवे दुख ना निवारी है ॥ उत्तरा वे दरश हि विस्मानी ॥ जैसे मीन दुखी बिन पानी ॥ ४१ ॥
ये न पद पुष्कर्ना हृत तन हराये ॥ तेसम यदुपति विदारा राये ॥ सब लम पराये तिन ज्ञान न जधा
मा ॥ अर्जुन हरि देउ रहे हे असवाना ॥ ४२ ॥ हरि रहे जुन रा हा पुरा हाये ॥ ले गये अहि हिं सदर
वेढाये ॥ वदुस्तु ढोधन दर रते आवत ॥ जति कि अचर्य अहे वन तीर्थ पावत ॥ ४३ ॥ ढोता ऊ
लव रवु भम राये ॥ तामे दर मो अधि वधराये ॥ मद्दारे वृक्ष पुत्र ना शोभत ॥ त्रिहि दिश स
र न र मुन मन लोभत ॥ ४४ ॥ हरि अर्जुन को न हास वाये ॥ घने योध सब धान वद्दा
ये ॥ मन अर्जुन नमृत मोनु अपारे ॥ परेदार न ही समाविचारे ॥ ४५ ॥ दोहरा ॥ धर्मजप्रा
रश हृदं तुस न अवर ठने न्य पभाग ॥ तुम पर वहीं विसमा चहि अर्जुन पुत्रोति चारा ॥ ४६ ॥
धर्मजो नाचा ॥ अर्जुन पुत्र ये दुपहते ने ते हे संजति वस्वान ॥ इसी दिन मो विहि हृत पारे व
उवजी अवस्मान ॥ ४७ ॥ चौपई ॥ ये अर्जुन पुत्र पापार न पारही ॥ तिर हे चे अजिन माह
चिजर जर ही ॥ अर्जुन नाविन रस नावि पाव रसाये ॥ इहि हरि मन रस न रुथ न हीनाये ॥ ४८
वेद रिर हृ न रिर न्वु न पसारे ॥ अर्जुन पुत्र दर्पा पुत्र पारे ॥ एव ज्ञाम ज वनि शार हाई ॥
दरव सो हरि रवद्या पुरा हाई ॥ ४९ ॥ रे दार अर्जुन पुत्र की ना ॥ यदु पयको रत नवे पुत्री
ना ॥ अर्जुन उरर हमारे पुत्र ना ॥ ए को देन ही भेद धरा ना ॥ ५० ॥ मोहि न पार मत्त्रा विन
अैसे ॥ जो मर धर्मा विनु धनु मर ते से ॥ पुत्र न ह स ही र पुले अन्य धा ॥ स यं उदे हो न
जी रवा ये ॥ ५१ ॥ अैसे अर्जुन मधा रार ध्रम ज्ञा ॥ तर उन्म माने वे ता ओ भे ता ॥ मा र गा वह
व वहि न ज्ञा वे ॥ मद्दा वली ग व हु न पद्मा वे ॥ ५२ ॥ मे ज ये गा न ॥ दार वही के वचन मम

२८ ॥ बेमपधरआगेहरिहरनेरणा ॥ याहि उपमको नाहम्वकेजाणा ॥ तेअबअर्जुनको हरिनदी
ना ॥ पेइचकोदनुजेरे प्रवीना ॥ ६५ ॥ अर्जुनसबलेहर्षपुराये ॥ हरिसमेतहरि दास
धाये ॥ मठमोदिषनिरमलजलताला ॥ मजुनाहरतदोउपरेविशाला ॥ ६६ ॥ जवज
लमेदुइवकीज्ञादीनो ॥ फलसहश्रदुगपरेप्रवीनो ॥ ६७ ॥ फलपरवैठेशिवदेषे ॥ दो
अशिवकेपगलगेविशेषे ॥ ६८ ॥ शिवदयालदीयोधनपुवाचसन ॥ मंत्रसहतलीये
हर्षकअर्जुन ॥ शिवोवाच ॥ ६ हीमंत्रपटरणपरहारो ॥ शत्रुकोसहसैनसंहारो ॥ ६९
धाम्योजागउठोअर्जुनवर ॥ विस्मतभयोदेषरचनाहरि ॥ भईप्रभातअर्जुनमजु
नकर ॥ वस्त्रसुगंधतऊनगलाठेवर ॥ ७० ॥ हरिसमेतधर्मजपयआये ॥ देषधर्मजहरिको
निवराये ॥ कुशलकृतप्रसपरवैठारे ॥ धर्मजहरिसोवचनउचारे ॥ ७१ ॥ धर्मजोवाच
चादोहरा ॥ अर्जुनकीनेअहरनपुलकीजे कथउपचारयथातेसाप्रणपरणीदेह
रेतारहमार ॥ ७१ ॥ श्रीभगवानोवाच ॥ चितनाशरहोसवाभीचितपुरवेइछनुना
गादेवुअसीमोभातकोजीनेअगंसहार ॥ ७२ ॥ धर्मजोवाच ॥ चौपई ॥ हेअर्जुन
जराजायपरावो ॥ हरिरक्षणानेविजेधरावो ॥ तुमतेरमतरिदारहरषजीत ॥ तोहि
शत्रुहतपरेकुलसन ॥ ७३ ॥ अर्जुनचलततब्रमगतजीदराये ॥ सठधर्मजदवस्थ
लेआयो ॥ अर्जुनरिदेहर्षउपजायो ॥ विदाहोतसातमसोडायो ॥ ७४ ॥ हरमीनज
रहीउगमसधावे ॥ धर्मजरथपतेरिहलपावे ॥ धर्मजकीरथाअनिउरेहा ॥ ताको
कवृधिचनयाउनधरेहा ॥ ७५ ॥ अर्जुनोवाच ॥ पाउवानकीकहीवताई ॥ हैरवान
कैमैनमउरे ॥ सोमोरिदेकोउनाहरदिषारे ॥ ७६ ॥ मरवतेकोअमभवचनवभाषे

ऽर्जुन युण ते समुझ्य वताये ॥ पीतवदन समहे हि सौवै ॥ समझे चित भयभीत दिखावै ॥२२॥
धीरज मन का छूटन लषाने ॥ विपरीत बुद्धि भये सभी भयाने ॥२३॥ इति श्री महाभारते
भीषमपर्व ले अर्जुन उपदेस सातव करे बोगुणपर ती सारदिन चल रे को ॥१॥ ध्यान पहे रे
बाच्या दोहरा ॥ ती सरदिन की पद्ध गया उरदुसे जय प्रगराय ॥ हे राय पुद्ध रे से कीये र
लभमम जब लुपाइ ॥१॥ संजयोवाच ॥ चौपई ॥ दो उसैना शस्त्र तन धारे ॥ रणभुम
ज्य ज्रेकर बलु भारे ॥ प्रगाज्ञा सनि जजीयत जाये ॥ रणभूमि सिध न समन गार जाये
॥२॥ देह्वे लानि जसैना मा ही ॥ सन यदु घट मस तप्र गरा ही ॥ ज्ञाजु युद्धपरे रेरण
भारी ॥ ऐसे पद्ध करे बल कारी ॥३॥ सोमद त कुरु न्यपक्ष सयाना ॥ शल्य रपाचो
र्य व लधाना ॥ ए कला धक्ष सवार संगघ रा ॥ सठसहस्र रथ पुयो धमहा वरा ॥४॥ स
हस्र चतुर्दस गज मतवारे ॥ इकी सम सहस्र पदाति बलारे ॥ यो जन पुधं तसैन ते जा
ये ॥ एक कुरु एठा ठुर हाये ॥५॥ सात सहस्र जरासंधसे सहस्र गज ॥ घोडु बठा तु भयो धर
से जानि ज ॥ कुरु न्यपदु दुस्सा सन नीति हिपाद्धि ॥ ठठु भये धीरज फिरि जाछि ॥६॥ वरये
जन लाकी कु सैना ॥ नतु युद्ध यो घन चक्र लीये ना ॥ सकल व्यूह सैना काधारे ॥
ये द्रुपद कि यो चीन्हारे ॥७॥ रतन रमाच हूउ रथपर वै ॥ ननको ऊपर दुपच परपटु
चौचे ॥ न वयो धेदो रे सिंह जगत ॥ बनस मान गर जे भुम रणसत ॥८॥ इति ध्वज तु
चसा तक बल धारी ॥ सुत सना न कुल ठहुवल सारी ॥ धनुष पु मान ज्ञान रा पाये ॥
ज्ञान द सरज विद्धि प्रगराये ॥९॥ गाज गाज सैन इहि भारथ राने ॥ इकु इकु रघु ऊ
सस्रहस्र दिषाने ॥ इकु गज ज बन ते सहस्र पदाता ॥ इहि विधि दो सहस्र गज माता ॥

१॥सभअरजोतस जुनवलधारी॥रणबेबाजवजेधनभारी॥अर्जुन मन सुन बैरतपाने
॥अररसैनाजोधार
जोधअधिकाँदुगअस्मिनसमाने॥११॥सिर्हस्मारदेरतगरजाये॥अररसैनाजोधार
मिरदये॥अर्जुन तेजदेषसमतुरे॥धरधरकंपेयोधेषरे॥१२॥मरणमलअपुनासम
भजाने॥१३॥सन्नरवरहेजतिहरषाने॥अर्जुन्नैसेमेतेजधरेरण॥बेदरजैजाप
रेगजुनवन॥१३॥सुरसैननैसैमपमाने॥जिहिदेषितिहअर्जुनजाने॥गज
रथअसमुजेभ्यन्मुखआवता॥अर्जुनसुनतविलम्बनलावता॥१४॥प्रथमरंगारे
कानवभारी॥गजानीजिहिनानवलाभी॥गजनपातजिसहीकेहाथा॥अर्जुन
नतिहिहरतयोवलमाथा॥१५॥पुनरथवीराने रवलीजति॥तावेअर्जुन लीयो
रणभुमरहत॥जवधानपदेउसीपेहरअर्जुन॥सुरसैनादिषमठीविमनमन॥१६
अजासमानगजनचौपाता॥भागवरणतजमधअततआता॥दुसानसणसुत
गजाचीनवला॥युद्धसभारतमधेरणभुजवला॥वदुगजमतवाभेतिरसंगा॥अर
जुनसन्मुखभयेअभंगा॥जाकोअर्जुनचानुलगाई॥चचयोनकोपमधानसि
धाई॥१७॥गजौगिरेमिगसमानागिरहीं॥असपदातनहीगणतधराहीं॥ना
चतीपरतचंधअपारे॥रतनप्रवाहचलेअतिभारे॥दुसासनचित्ततेधीरत्यागे
रणभुमतजभागीभयजागे॥भागदुगणपाछेजापरयो॥दर्पादजअर्जुनसन्मु
रवधरयो॥२०॥निरउदुणकोकुपचर॥कोधेप्रणमदेउदायमाथधरा॥व
दुरदुणकोवचनउचारे॥दूगरनुमहेपजरहमारे॥२१॥तुमसोनारहउचतमुरि
पधरण॥नुममतलरोमोरस्योदिजतन॥तोरहरतेमहिपासुलगावे॥गगोसघ

पदुम रतन सहौं बे ॥ सब नर अर्जुन बोले बे न द्रोण तब ॥ हम सब तब देख सबब चढ्न भार छाछा ॥ ४४ ॥ द्रो
णाचार्य दोहरा ॥ नृप देखो सब अर्जुन जीत रण यह अवगुन क्षत्रि भार ॥ विजय पुत्र की पै ज्ञा तह द्रो
सुनवर रवचन हम रा ॥ ४३ ॥ अर्जुन बोबाच ॥ प्रथम शम्बुन पर हरे तो नृप सरी हो रम हम ॥
जै नृप शम्बुन पर हरे तो बिल्मुन धरे सज्ञान ॥ ४४ ॥ चौपई ॥ द्रिह बोहि अर्जुन धन बु
सभा रे ॥ प्रथम द्रोण सार की नप्र हारे ॥ अर्जुन की धनब
सभारे ॥ पुत्र तोरी पो ते अग्र पारे ॥ रुप्र सभा रपो ॥ जाकि बनाम ज्ञाना प्रगट दारपो ॥ वि
धर दुरे ॥ ४५ ॥ तब अर्जुन नाँ निज धनु गसभार ॥ दैन ते उर पुत्री ला ॥ ३६ ॥ गुरु तान धन पर नव धार
नसो धान पुत्र मकारी ला ॥ सर पुर रती दिन ते उर पुत्री ला ॥ सब तस ताब शत ते हो हरे ते जु ज्ञाति ॥ लाठा तशत सर
ही ॥ दस तेसर जो दस पुत्र गरहे ॥ चल तस ताब शतते ही दैन पुहारे ॥ दिन की सै नव दानी सहरो ॥ द्रोणको
सती छ तस तो ॥ २७ ॥ पवि बेबक बदुगान प्रहरे ॥ दिन की सैन दानी सहदो ॥ द्रोणको
पवर वान्ते ज्ञापो ॥ २८ ॥ भमनो बउ ते जउ पापो ॥ २८ ॥ पांचवान हरिते रप्रहारे ॥ पु
नसर वर्ष वतीनि रपारे ॥ अर्जुन रपुसरत सेलु पानो ॥ नृपअर्जुन सरस बलसर
से ॥ २९ ॥ तब अर्जुन सो हरि उचरापो ॥ ज्ञान द्रोण सो पुछ सुहापो ॥ ये दुपसो सेग
नह मारे सबरे दुरु नकीन तकारे ॥ ३ ॥ सन पो वाच ॥ अर्जुन हरि ते वचन सनापो ॥
जी बसे तेज्ञाति नीव लगापो ॥ उदेद्रोण सोरे गुरदेवा ॥ नृप सो पुत्र न ही नीव अर्जुन भेवा ॥
३१ ॥ जेरसाति चुलपरे लपु ताज्ञाति ॥ सवल परे ले पाप लगा तस ता ॥ ओदे जग तुइन
गुरनिव लापो ॥ दुहू सोर मज्ञ बगन लपापो ॥ ३२ ॥ इहि बोहि कर प्रणाम कर जो
रे ॥ पदुप वरहो रपो बलपो ॥ धीदपस तब मो सब तसे ना ॥ गुपाल समापणा पवर
मेना ॥ मौरपनेन पदोरपगमे ॥ अर्जुन सो बहुपधु उपज्ञा सो द्रोणाचार्य सेग

३०

[illegible]

भमतज्ञाये॥ अर्जुनयेदुपउवाचस्त्योवरः॥ त्रिभुवनवाजयपुत्रीयासेनाधराः॥४३॥ देवकीस्वर
सरवरषाही॥ जनसावनवेनेपवस्ताही॥ उतनकीमरवर्णोनिरणाते॥ अर्जुनवक्षीम
योविस्माने॥४४॥ निरहसधहोयरपुमोवेदाने॥ शत्रुमित्रसंवत्नामभुलाने॥ हरितव
जलतंत्रंजलमुखज्ञाने॥ कीयोसवधानमुखउचपुकारे॥४५॥ होसवधानवेदापत्रधका
नेः॥ तवतस्रजेनसरपवयोमहाने॥ तानएकदुइभयहतायो॥ दोऊमीसवरभुमयरपा
योः॥ पः॥ दुहूकेसनदोरेसनपितृहत॥ अर्जुनमनमुखकज्ञायेवलजानि॥ धिनइकज्ञ
जेनसोपुधुधारे॥ ज्ञातभयेयमपुरदुकठोरे॥५१॥ पुनचवहूदिसवेनपडमवाये॥ कोद
लणकोपक्रमनराये॥ कोपर्वकोउत्तरदेसा॥ भाईसैनधरसजलनवेसा॥ परासमहो
दोरवीरपरज्ञाये॥ जउरथज्ञसुपदातज्ञगनाये॥ योरकालवरपुत्रमहाने॥ अर्जु
नहतकीयेवलसुअधिकाने॥५३॥ ज्ञोवचावववुभाजस्मिधाने॥ तेजुवीरकासहनमको
नेः॥ मीसवरेरणभुमननगनाही॥ ज्ञोपरवतपाधानदियाही॥५४॥ जजमहावतेसहर
तमजाये॥ ज्ञसुपदातरथगजानननपाये॥ पुनपमनदेसवेभपवलाती॥ जिहिसग
ज्ञमितसैनवलकाली॥५५॥ वउपुधुकरतिनज्ञोनिवलाये॥ येदुपउरज्ञानवलपाये॥
अर्जुनवेसनमुखदेखरावत॥ घउगपुराम्होहूजयरावत॥ कैसीनारधर्मज्ञअर्जुनत
वा॥ लछीयनघातदेनदेजनसभा॥ ओइसहस्रवनपतहारतामे॥ जिनदेनामननभाषव
घाते॥५७॥ दोहरा॥ दुर्योधनजैसेनिरखकहेद्रोणकोवेन॥ येदुपज्ञावनधानीनज
नुमरणधोम्रिगतेन॥५८॥ करतअर्जुनहायतेवेदोनिजजरिज्ञाय॥ सभुभाषेन
मानहीसमभेवदेरहाय॥५९॥ ज्ञोपई॥ ज्ञानयुदअर्जुनज्ञसखीने॥ हमरेयोधसभी
हतलीने॥ यमनदेसवेभपवलाते॥ अश्वश्रीनेहतनिसत्नज्ञपारे॥६०॥ जानेनपरत
ज्ञसैनहतनाई॥ संपूउपावकरहोसवदाई॥ द्रोणवाच॥ इद्रुमवचनिजननपारेण

ते॥ जितन्तो वीतिन विज्ञेयंगते॥ ६१॥ संजयोवाच॥ इदंहृष्टेद्रोणं दुर्योधनोत्रतन॥ इद्रुम
व चर्पाहृतयेतत्तोभ्न॥ लब्धस्वर्गान्पसेनाधराये॥ निजभ्रसीस्सेनयोतदोय॥
६२॥ डाज्ञस्तहस्वसमुहीमदमाते॥ पार्थेद्रोणज्ञानवलज्ञाते॥ दुर्योधनज्ञरज्ञजेन
माही॥ पवेयुद्धगननतोरथुनाहीम॥ ६३॥ श्रीलपुत्रवाहेज्ञयावस्वलाही॥ पामेवद्रुपाय
लवहिज्ञाही॥ रणलेभुमयेयोधहताने॥ कोंहसेजोगनतीत्वाने॥ ६४॥ दिज्ञसर्ह
नवेवलीदृपाये॥ दोरपरानववलुज्ञधिकाये॥ भुज्ञावलैवहूसेनसंहारे॥ ६५॥ धृष्टद्यु
म्नोदिवगदेयुधमाते॥ तुरसेनाधीधीरनिकाली॥ धृष्टद्युम्नोनेज्ञपाही॥ द्रुपदपुत्र
वेमयद्यानियरही॥ धृष्टपदिजवेपाथेपाही॥ तुरनपाथेवदूज्ञापरे॥ धृष्टद्यु
म्नेवाप्सहिवरे॥ ६५॥ द्रुपदपुत्रतुरसेनहपारे॥ घतुगगदावेवलेसंघारे॥ द्रोण
देवतुरसेनभयाने॥ दोरपरारणतेजमहाने॥ ६६॥ पंडुसेनानिरवतीदिज्ञनेज्ञा
स्पाडधीरपारहरनववेज्ञा॥ दिज्ञसन्मुखवेहासवेनकोइ॥ जेवडुयोधडाडुरहेसोइ॥
सेवमपचित्रसेनवेसन्मुख॥ विकर्णसिंधसेनवेपुधरव॥ छेमदूरतवाहूलीव
मदावर॥ द्रुपदसुतासुतसन्मुखवलुधर॥ ६७॥ विक्रांतविश्लेषदुष्ठरहेज्ञानि
शल्यधर्मजवेपधरणमुनसत॥ नकुलतानसातकवलपरे॥ दुर्मासनदुर्हसो
वलनरे॥ ६८॥ युयुधानसमेवडीदोऊवलवारा॥ रपन्याधीसोलरतउमाही॥ न्नुस
थमविराटलरेरिस्ववतमन॥ दुहूतोरसेनाभईहतवन॥ ७०॥ दोहरा॥ इति उतते
दुहूतोरतेहवेपरेइववार॥ मिलनकीवोसमाधाववेज्ञिरनहीपानावार॥ ७१॥ धृष्टद्यु
म्नोयुधवेगनतीरथुनपगाय॥ क्रूरसेनापरयोपरेचीलमसीदवगव॥ ७२
चौपई॥ द्रोणवलीजेसेवलवाने॥ क्रूरवेधनुषधुज्ञावरहीने॥ पामपुत्रहारचाह
नलीहलेही॥ दिवसानवदोरथोननतेही॥ धृष्टद्युम्नोरथीहतावे॥ विप्रमारनली

३२ जैन तुम के हो नीव रूंति॥ जल बिन मन तुन करूं में रे सत॥ नदी ताल कुल पेत्र मन करे॥
मध्र पर सम मये सचोरे॥८७॥ हरि मुख ते दोइ बचन सुनायो॥ काजै नर युतजे
भमपर ज्ञायो॥ करो उरस रवंध धरी सत॥ नानको रधारे भाली तत॥८८॥ पुत्र
सर का मे दरत हाथा कैयो॥ सरयु ता पते जल पुगटायो॥ हरि सो पहे हे त्रिभवन
नाथ॥ कासन को जल दे हुका पायक॥ कासों त्रिपता यव हुव लउपजावहि॥ हम
मजुन कर स्नानहि मिरावहि॥ तव ये दुय की उरसि धावहि॥ भुजवल जार को र
कोर तावहि॥८९॥ तवपद पत जल जाय दिखायो॥ जाति निर्मल शीतल मन भा
यो॥ शोभत कमल सुगंध जपावै॥ जलत रहि छि साधत त पुभावै॥९०॥ मरे शवदु
धुन नीक भमर वर॥ जैसी रचना निरथउ तुम हरि॥ काजे नकी व हु उपमउ
चारी॥ तुम बिन कौन सकै उर धारी॥ जैसी ठवरे जल उपजायो॥ जिहि उपमा
रध्रवरनन नपायो॥९१॥ सजे यो वाच॥ जवहरि काजे नदि गनादिखाही॥ कौर
नान जान्यो जीय माही॥ रमभमन तजव हू जाय लपाने॥ निवल होयमय भीतमय
ने॥९२॥ हरउपर रहसरससे दोरे तव॥ जरका जैन तोहि आपहु चे सम॥ दिख काजैन
सरवउमहायो॥ समको दीनीधी रमिराये॥९३॥ हरि कासन को मलु काच वावहि
मल मल निन की देहि पपरावहि॥ निजस्नान कर जलु काच वाये॥ रथ सजु च
हे काजैन ससु पाये॥९४॥ सरपर सर काजैन पर हारे॥ कर की सेनन मजादि खा
रे॥ पाछे मर काहूनादि खायो॥ काजैन काजे सामथया पो॥९५॥ काजैन रथ वरु चे
ग चलायो॥ पदु धा निकर जये वलपाये॥ पुरजन पथे दुपदी रथ धाहि ता॥ चाय्हे या
घनी सैन सो हिनमिवि त॥९६॥ तव काजैन सो हरि पुगटारे॥ पुरजन पसो लरहे पु

चमारे॥इसेभजाइविधंसकरनावे॥नवैपद्रुपकोसुगमहतावे॥९८॥अर्जुनदुर्योनमो
वृधवर॥कीयेसमाररलोभजवलुधरा॥कुरनपत्रयोदससरपरहारे॥हरिकेअ
जुनपरवलमारे॥९९॥कैअर्जुनकोदसहरिकेतैसे॥अर्जुनजैवानवलदोरे॥इ
निअर्जुनजैसरपरहरहरही॥कुरनपमजाहिकादहोकरही॥१००॥कुरनपपरको
नीहदवरुचावत॥दुर्योधनकैसेवलपावत॥हरिकुपअर्जुनसोपुगरारे॥अ
हाभयोतुहिवलुईहरवारे॥तोहवानअरखोनहीलागै॥यादेवतमुहिमनक
पजांतैम१०१॥अर्जुनोवाच॥दोहरा॥हरिमतकोपोमोहपरद्रोसामैवड़ाहरी
न॥निजसंजोयकुरुमपकेतनपरधरोपुकीना॥१०२॥कोसरताहनधुहसके
कीयेमैवड़ाहिमान॥मोहदोसयामोनवधुसनोईशजगताना॥१०३॥चौपई॥
सुरपतिमुहिसंजोयदईवर॥अश्वत्थामादेहुधरोनिजतनपर॥द्रोणसंजोयअधिक
उचीअरति॥तावलममसंग्रामहिंदिषोमत॥१०४॥कैसेवलुकुरनपसोधाम॥अ
ररनवलकरगुभटरघाम॥सेजयोवाच॥धारहिहरिकेमीतवलताती॥इडुकोच
निजतनपरधारी॥१०५॥कुरनपपरसरवरपरहारे॥दिषअसुथामनमजाहिह
रतुरे॥दुर्योधनकोलगननदीना॥द्रोणपुत्रकैसेवलकीना॥१०६॥सरपर
सरअसुथामपुहारे॥अर्जुनपरवउभीरातुरे॥यामोदुर्योधनसरतजेअति॥
अर्जुनकारपलोपपख्योतनम१०७॥हरिभारेकोरहिपाने॥रिसअर्जुनदोवान
सजाने॥रपकुरनपकेअसुहतकीने॥गाजेभमकुरनपपरवीने॥१०८॥
कुरुसैनाकैसरवलाती॥अर्जुनपरदोरैवलकाती॥सभीवानकीवरघाके
रही॥अर्जुनवरसभसोवलसरही॥हरिमिनकैसेवानपुहारत॥दसदसत

नेतेवेर्धनिकारन॥कुरन्नपसनीपद्मवेसवुनाने॥ञोनवचोसमुहतेमहा
ने॥ने उअन्वेञाजेभाजमिधायो॥नवहरणधारवडुशंखवजायो॥मैनभारधु
नसंघवजायो॥येदुयन्नामजाधिकजोपधायो॥१०॥ जानेञ्जवमुहितेरवराही
रेहदमतेविधरेको उनाही॥येदुपञ्चमुनीसेनसमभारे॥समुदरतदोरेदमवारे
११॥दोहरा॥दीनधर्मजमननमरवदुलाणवेवरतरणोमेञाम॥धर्मजमरतेधनपु
मरचास्येविदुपुधधान॥१२॥समजाननधर्मजमज्योदेतउलाहनेभारमतहा
कि उस्पाकीमसरणमहिन्नपवानुसवार॥१३॥चौपई॥धर्मजेलाजञपवादुस
नाये॥रिमदैस्येवरशारतउडाये॥दुलाउरदुरीवलमारे॥निरवदुलानेनीक
निवरे॥१३॥कुवधर्मजवलामुवुहलाये॥दतेदुलाणवरवानतजासे॥नपवल
मुञ्जरदिजवेवाना॥मतामेवुमपरलेरमहाना॥१४॥दुदुममाननीनेवल
भारी॥धर्मजञ्जानशरतपरहारी॥दुलाणवार्यवेधनपुरतये॥दिजोरिमदै
रशरतलहाये॥१५॥जरयुदवुमपरदुदूकीने॥दुलाभारकनुरणभुमलीने॥
धर्मजवेकोरमभराम्वु॥निरराम्वुवरजासेभुमपरा॥१६॥राम्वुहीनधर्मज
होदीने॥भयेरिमिमरनलीनपुकीने॥हाहाकाररमैनमेपरयो॥पुनदिज
शम्वुपुहारनररयो॥१७॥दिनैमनेधर्मजमुधहारी॥निरम्बधररयोसाम
ममरुारी॥पंडुनधर्मउरदिघरायो॥दरदुलाणवेमन्नुरवञायो॥१८॥दोहरा॥
पंडुवाननीसैनतेहिञ्जघत्रवलवान॥छेमधुरतजामीमरुरजुरयोम
ममहान॥१९॥चौपई॥दुर्मुखवेमरदेवहताना॥नवलजमिवकेरस्याम
हाना॥पुनविकर्णकोनिवलवरायो॥धवेनचुधनञ्जामाररयो॥२०॥

सातवरखापृदंतकेरतनरउरा॥उजनमनतजंजैतपिरनररहेवरा॥सातकऐसनमुखजेआ
ये॥हतकीनोअसयवाधितपाये॥१२१॥निरबद्रोणतापरदोराये॥सरकीवरखाघ
नीकराये॥१२२॥दोहरा॥सोमदतकेपुत्रकोसिरकटसतसहदेव॥रदमनलालव
उवलधेरेरणभमतेजुअनेव॥१२३॥उलेवससापघअटोतनचअरतरणेसंकान
वहुप्रकारमायाधरीप्रगटदुहूवलधाम॥१२४॥अंतउलेवससोहत्योभीमपुत्रव
लधार॥घनेयोधताकेहतेडनेनजातसंघार॥१२५॥चौपई॥द्रिष्टपांडुकरजीतहर
खभराने॥कुरसेनाभईअतिभयमाने॥द्रोणसवलसातअपरपरये॥सातकर
णवजपडसजधरये॥१२६॥धर्मजपुत्रदुत्रसोवाले॥सातरऔरतुमजाहुअने
लेओरयोधपुत्रवलकारी॥सन्मुखदिजरेभयोहंकारी॥१२७॥तवसात
कवलपायमहाना॥दोरयोदिजपरअतिवलवाना॥योधपचीससातकसंग
वलअति॥तेसभुहतेद्रोणरणभमसत॥१२८॥दैवैदेसऐयोधवलानी॥हतेद्रो
णदिजगणतनधारी॥असुरचपायकजैदिजहाने॥तिनकीगणतीकोनकर
ने॥१२९॥पांडुवानकीसैनभजाये॥न्वस्योद्रोणअस्त्रजुनरदिसधाये॥दियधर्म
जसातकसोभाये॥दिजकेचासारदेमोराये॥१३०॥धर्मजेवाच॥देसातकअज
वलदिजलीने॥रवमैनसभुदनीप्रवीने॥अस्वचेरअर्जुनपरजाये॥उरप
नेरोगिदिवडुस्वमुपाये॥तुमअस्त्रअर्जुनकीरहतवरोहित॥सोसमकीरकोऊनादहदे
घयतो॥१३१॥सातकेवाच॥देधर्मपुत्रतुहिरपक्षहितापे॥मुहिअस्त्रअर्जुनधाउहुयोद
द्रिताये॥जिनजेयेदुपथकेपुरुषिमधाना॥नाहउचतनतुहितजेमहाना॥१३२॥
धर्मजेवाच॥पुत्रदुत्रैरनिकटरहमारे॥धोरसक्षहमपरीवलभारे॥तुमकरअर्जुन

३५ [illegible]

३१ यो॥ चारस्तथ्यातामृमत्रियाधरयो॥ ७५॥ धर्मदुत्वतनुमभीनह्राज्ञोवो॥ वेरोरध
नेनकीरहितपावे॥ ७५॥ देहरा॥ धर्मदुत्नुसोपवनस्तभावतचल्लेतेवा॥ धर्म
जेज्ञीचतगरेकीयोपुण्डेणवलाश॥ ७७॥ उरपतेहेनकूतेवरेमतधर्मजपरक्षा
या॥ नुमहीवरमभुल्लाजरेहेमपवेरहेसह्राय॥ ७६॥ चौपई॥ ईहिजीहमभीनेवेग
ज्ञानिधायो॥ रिजनिरवततासम्मरवकुयो॥ मगरकापीदिजुमरववुगराना
मिमज्ञावेगमेंर्नानिरकरमह्राना॥ ८०॥ भीमरस्नादिजमेमुरववेलो॥ स्नेनेगु
मतमवचनस्नेलो॥ नुमहोदिज्ञहनधकी धर्मा॥ रणभुनमोपुधुहमेरोवर्मा
८१॥ ज्ञावोत्रिहस्मर्जेनम्नातवसरो॥ नुहिरोवेनरहेचलमरे॥ ज्योग्मर्जेनस्ना
तववलवाद्या॥ नुहिरोवेनारहेस्रगार॥ ८२॥ तेस्नेहीहमज्ञारलघावे॥ रे
गुरथामोभर्मनपावे॥ रमेहेतुमरेवालसमावे॥ नुमतेविद्यालीनमह्राने
८४॥ नारउचतनुमहेस्रभाया॥ यधविभमेचेररणराया॥ ज्ञेपुथमेनुमसर
मपुह्रारो॥ रमनउत्नुवोह्रायविचारो॥ ८५॥ ज्ञोनुमपुहवरोपुथमारी॥ नि
हर्चोवलमहमारेनारी॥ मुनीदिजकोप्योघउगुउदायो॥ चारतभीमपरतज्ञो
मराया॥ ८६॥ भीमगदभुजवलेपुहारी॥ दोरगयोदिजमरहमस्वारी॥ गदा
ज्ञायीदिजरथपरपती॥ धनुमारथमगज्ञस्मभमती॥ ८७॥ दुसासनभीनि
रधनमपकायो॥ गयोभागरणामनतज्ञायो॥ भ्रधलोचनजरनपमधेनवरा॥
विदाररजौरदुवनधर॥ ८८॥ ईहिचोरवानजेयोधवलानी॥ रनकीयेभीनत
दावेजभारी॥ तेउवचेज्ञोभार्गामध्यायो॥ भीमदेवकाहनतज्ञायो॥ ८९॥ उदार
वज्ञायमरवमावदुमपायने॥ वहेनामुर्महभीममह्राने॥ ज्ञोहियुधडधर्मारिस

नमरवस्माथे॥नमपुत्रोवलुरणपुंधिदिशवे॥१०॥धिनपाथैदिजवरसुधपाये॥सन
मुखभीमसेयुधउपजाये॥दिजझोवानभीमपरडुरत॥पवनपुत्रजयुक्ष्मनर्जाव
चारत॥११॥गदपुहारसमसेनहतावत॥नसर्जुनउरचल्योवलजावत॥नसपद
नभुमपरपरकारे॥भस्मकरतसुतपैानवलारे॥१२॥जवकरजेनकौधुजर्दिशान्ती॥
गरजतमथोवउशवदमयान्ती॥रणभुमसोवउरैरपरायो॥सनतशवद्दुधर्मजहर
सायो॥१३॥जान्योसभपरवलीपरान्ता॥जारणभुमनसधुनगरजान्ता॥रविसु
तभीमसनमुखेजाई॥पुसपरदुहूवउयुद्धउपाई॥१४॥होउसैनदिशचकतरहाते॥
दुहूकेयुधभारीमयभाते॥भीमकरौकोनिवलधाररण॥ताकीसैनहतकीनतिन
नमन॥१५॥नरथरतकीनरथभाजसिधायौ॥पवनपुत्रकेतेजपायौ॥पयरविसु
तधीर्यनतजान्ता॥जोतनरणठाउरहान्ता॥१६॥नसर्जुनभीमसमानरवलतीने॥
पुरुसैसेनमलनसमतिकीने॥तीनोधोधेयमजेयपरहै॥भाजैसैनधीरनहिधर
ही॥१७॥जैवघयारसजामधपरहै॥त्योवृरसैनघातशहियरहै॥दुर्योधनौर
थसेनसभारे॥तिहूसोकौधोसउमनसपारे॥१८॥इहिचारेयेदुपपरजाये॥वुरु
नपधुधतेविस्मनपाये॥नवयुधामचत्रवरनपवृनवर॥उरयोइकवारहिभुज
वलधर॥१९॥वृसनपतनसैसेसरलाडे॥ज्यैांशांभेशिखिशिखातारे॥दुर्योध
नरणवानपुहारे॥पुनसमधनुसरमेकरउरे॥२०॥उतसोजाइतिरथोहित
वृसनपसोवउयधउपजाये॥२०१॥होसता॥वृसनपदुहूकेवारपरुकौयेपदानरण
भारा॥रणभसनसभाजेदोउधीर्यधरनसवार॥२२॥नसर्जुनपार्थजायेभा

मेउतरविचिहारा॥ऊञ्चरविसुतसुतपोतनकामुतेउसुकृतनिरधारा॥१८३॥कर्णसंगठेसात
न्पत्रिनके बलजुतजीता॥तेसातोहतलीयेरणभीमसहावलवंता॥१८४॥चौपई॥इकु
चित्रोतदूसरचित्रकर्मा॥ऊवरनामभिननिनयुधधर्मा॥तिनकोकर्णभ्रातसमजा
नत॥हतुभारीतिनसोजीवतजानत॥तिनकोदिघकररदुतउठाये॥पवनपुत्रतासो
पुगदाये॥भीमसोवाचा॥कौनसमानतुमरदुनउठाये॥योधनकेडहिनाहसुहाये॥१
८५॥रणभुमयुधकीनौरजहेवत॥तोकौरदुतनाहिउचतसवलधर॥सुचरविसुतको
वानवुहारत॥पवनपुत्रमगजकरदरउरत॥१८६॥पवनपुत्रपुनसरपरहारे॥रवि
सुतकारथसवभुमडारे॥करणपदातमयोरणमाही॥दिघकुरउपमरवसोपुगटाही
१८७॥दुर्योधनोवाच॥हेदुरमुखरविसुतकोनतधिन॥फादलेहुमहाबलीकोवरर
ना॥दुर्मुखरविसुतपवदैगये॥निरखभीमसमगमाहहतये॥१८८॥दोहरा॥ताकोर
हपुनकर्णपरडारदेतानुनपार॥सबलपहोरहपुत्रपरपवनपुत्रबलकार॥१८९॥
तावसडेसतपोनकेभयोरणसनमुखआय॥छिनइकुतासोयुद्धकरदीयोपमेलो
कपराय॥१९०॥चौपई॥पवनपुत्रपुनगदापुहारे॥दुरमुखभातरणभुमरतडारे
पुनरविसुतरणभयोपदाता॥दोरगयोनेर्जाहिवउभाता॥१९१॥गर्वदनरणमोके
तैवाये॥भीमसकर्णपरसवलदियोरे॥फिरपरराजावनरविसुतचलझीता॥पवरेभी
मसवलनापरसत॥१९२॥ऊननकर्णजिरथोमेसधरा॥उतनसकानरहेउतुम
मकरा॥पवनपुत्ररणविजेधरगयो॥अउसेननिकरयदूसोसन्मायो॥१९३॥उन
मरमसुगवाइरसातनकर्णता॥करतयुद्धरणभुमनसुजनजीता॥नृपचपेरलानपर

हारे॥पुसपरयुद्रुधरहिवलमारे॥१०४॥मरस्नुवातवसवलपरमयो॥२॥तेसानतेसात
कहिहगहाथो॥श॥केसबैचलातनपरहारे॥सातकजोभुमसोपरकारे॥१०५॥पु
नमरस्नुवातिघघडगनिकारे॥चाहतसातकजोसीसमुतारे॥दिघपदुपतऊ
जैनसोवोले॥स्नुनपेउसुतमसवचनऊमोले॥१०६॥स्रीमजवानोवाच॥दो
हरु॥सातककयादववतोहहिनशस्नुविघालीन॥३॥वमरस्नुवादिघनाहकोऊसध
कदुघातरखीन॥१०७॥नुमताकोऊरहाघतेभजवललेदुधउणा॥स्नऊजैन
मरपरहूरेताकीउोरदिघाघ॥१०८॥कैबोपदे॥मरस्नुवाजाहाघघउउमसणा॥उरउुर
घोतनकालभमरण॥हाथहीनभारीस्नुमनमाने॥जारीदेदेमुरवपुजहाने॥१०९॥
मरस्नुवाउवाच॥हमनिजअमरसोपुद्रुकरतरण॥नुमम्रहिहाघऊरघोऊपरी
जैन॥पोउवधमीतनजगुभाघे॥११०॥चविपुीतकयाहनलाघे॥१११॥पाधेनेधपसो
रललजाई॥घापरविजवउवलीऊहाई॥घानेधमैजतोहसपरहे॥उनहीदेनीमि
घउमाहे॥११२॥ऊघवाम्नुरपतनोहमिघाई॥केचनुरानननेनुमपाई॥इहीम्री
घजरतहेऊरधावो॥धमैवीनचितमोमधरावो॥११३॥ऊजैनोवाच॥नुममान
ऊकेकेमउहाने॥परऊनमुमरमदेघतपाने॥जेउधवाधहोतनुममाहीमनी
कैमेमनीदिघावनदाही॥११४॥जेनुमकोकासीसमुऊरावत॥हमुरेमननहिरिम
उपजावत॥नुमवाकेकैसाम्नुमदीना॥रिउनधुुलावहिरमपरवीना॥११५॥
सेजघोवाच॥घरिनवमाघनमरस्नुवारण॥भुमपरंजसोभुजस्नुमीरविमन
नन॥वरुकररहोपुनउठनमकाघो॥केरवानीदिघनीऊनभाघो॥११६॥

३२ अर्जुन बली की लघुता धोरे॥ मुख ते कहे वचन पुगरोरे॥ बहुरि पुनि अर्जुन सों युधधार
न मनु मेलो पेस र्सो नपु हारत॥१८॥ अर्जुनो वाच॥ तुम रहन को बपरी पुगरा दे॥
अपुने अपर जारि देवि चारे॥ तुम घर महा रघी इक ठानी॥ बलदेव सु अम मंन रह
ता नी॥१८॥ याप रनि मुध मी लजा नो॥ अर्जुन रहि के बपरी पुगरा नो॥ दोहरा॥ पुन
अर्जुन मुख ते कहे सुनो भरम सुव भव॥ नहीं मित्र तुम भई मोहि हरा घते सर पुरजा रु
अर्जुन प॥१८॥ जो वासुर पत की सभा पावो भारी मान॥ या वर तुम को हम दयो दया
धार अभिमान॥१९॥ चौपई॥ सात कता कासी सुकरा न्ना॥ हरि सम अर्जुन बड़े
र हान्ना॥ सातक पुनि बेर गहायो॥ बच नुभि सी कान्ना हर सुनायो॥२०॥ धृतरा
ष्ट्र वाच॥ देस जय हरि गाथ सुनायो॥ मोमन संसय पर सो अथ कायो॥ अर्जुन भर
[illegible] तु बमा रो॥ छिन कर भु ज कर भुम पर डारो॥२१॥ भारमु मीहि तिन तजे परा
ना॥ सातक ताकिर का कटा ना॥ कैसी मा वे रति यारि देव सो यो॥ धर्म डिरे पर घ रु
[illegible]॥२२॥ संजयो वाच॥ हे धृतराष्ट्र सुनो हरि गाथा॥ सातकी बेर पुरातन
[illegible]॥२३॥ दोहरा॥ नप देवक की बर सुता नाम देव की जा हा॥ [illegible] ब बस
देव को देवो [illegible]॥२४॥ भर मुच [illegible] ता या सर दमुन जा को नाम॥ बड़ी त
[illegible]॥२५॥ [illegible] देव [illegible] देत॥
[illegible]॥२६॥ चौपई॥ सर दमुन स बल
[illegible]॥ चाह तन ता का सीस मुकराई॥ चिरथ
[illegible]॥२७॥ सो मद [illegible]॥ जोधा रे देल [illegible]

वाचे॥ नजगके कार्यसकलतजाने॥ शिवसन्मुखवठ्ठतपुत्रजराने॥२१८॥ महादेवता
तपुत्रिरखाने॥ पुत्रजरहोयतासो उचराने॥२१९॥ महादेवोवाच॥ ॐस्मातपुतमका
हसंभारे॥ मेहोसपुत्नीसभजाप उचारे॥ सोमदत्तोवाच॥ हेशिवसुतहोत्रिया
हमारी॥ मेरेहदीयोसदमनमभारी॥ इहिचोहोति जेवेरजहाऊ॥ रामभुमता
सोवेरत्याऊ॥२२०॥ पुनसुतउपजेधामहमारे॥ तिहसुतसोऊदेवेरहमारे॥
शिवदयालहोईरवरदीना॥ ताकेगृहसुतमयोप्रवीना॥२२१॥ सातरु ताका
नामधरायो॥ जोरणवेररिदेवहिरायो॥ इहितेयाकामीसकराना॥ वेरपुरात
नताहतजाना॥२२२॥ पुनसातरुकजेनभीमवलीक्षति॥ येदुपपरदोरभुज
वलसतां॥ हनतजाहजेक्षागेक्षाई॥ जापहुचेयेदुपनिकराई॥२२३॥ दिषदुर
योधनशलकोशवसुतां॥ कुपाचार्यक्षसपानभारदुति॥ कुरनपकेहेरविसुत
सोवेनां॥ सुनोवीरमहरवचसुखदेना॥२२४॥ दुर्योधनोवाच॥ क्षजुंदुसुतयापु
लाधारे॥ येदुपकोहतदिवसमझारे॥ रविहोतेजोनाहहतावे॥ क्षपुनकायकोक्ष
गिनजरावे॥२२५॥ क्षवधाताहिनक्षापरहाना॥ तातेतुमक्षसकेमहाना॥ क्ष
जुन सोयुधकरनरहावो॥ जिहिहिकिहिविधसोरविक्षसतावो॥२२६॥ पुतानिविहीनक्ष
जुनजरमरही॥ हमुरेमनकासंशादरही॥ ताविनउचकरीसेनमझारे॥ कौनसुयोधा
धनुसंभारे॥ यामोनुमवधुविलमुनधरहो॥ हितचितहोसमउद्यमकरहो॥ कौनाच
क्षसवलमसमोरपरकीने॥ कुवलोममनहीमिरयोप्रवीने॥२२८॥ कथयेहीहती
नोवलकारे॥ तिहिसन्मुखधुधुकरेसंभारे॥ तोहहेतसेनामकरावो॥ जिहिहिकोहस ... कौरवा
र्यक्षमनघरावो॥२२९॥ इहीनाहिक्षजेपुत्रजरायो॥

२४३॥ बलस्य कालीजितमस्येवनकोये॥ हरिरुवाच॥ अर्जुनविनुभाष्यास्तोहे॥ हरिरुवाच॥ अर्जुनजेम
न्मुखवज्ञेवे॥ निरहचे नृहिमतकोहृतपावे॥२४४॥ श्रीकृष्ण उवाच॥ पापावदृमृन्नाये॥
विनीधारमरखतेपुरारावे॥ श्रीकृष्ण उवाच॥ ज्ञो ज्ञैसीइहिगाधमहाने॥ मोकोदे
ज्ञेवरहितृवाने॥२४५॥ ममस्तनसीस्मभनपरज्ञोद्धारे॥ नाहिसीसगिरवरेदवारे
नवतिसकोएहीवरदये॥ श्रीकृष्ण उवाच॥ रर्थतम्महिगाये॥४६॥ उपज्ञोसनजेदेवज्ञ
ज्ञरे॥ श्रीकृष्ण उवाच॥ धामममज्ञरे॥ येद्रुपुसतकानामधराये॥ श्रीकृष्ण उवाच॥ नपुरसम
हाये॥४७॥ ज्ञनेलोनीवननहेतपुलीना॥ यानेनुमसोवहतपुवीना॥ ज्ञेसेयाकाये
मकराये॥ गिरेनभुममरवलीहिहतावे॥ नज्ञनुरदेवकेवाहर ज्ञोवे॥ निज्ञोप
नृहाचहिपरवेठाचे॥ ज्ञववहुमरनेभुमपरज्ञारे॥ नामिरभीगिरहनतकोरे॥४८
॥ संज्ञये उवाच॥ सनज्ञर्जुनन्नेस्मास्वेसभारे॥ मेत्रनकीनोम्मरवरहारे॥ श्रीकृ
छत्रीज्ञिहिसंध्याकरहे॥ दोउहाथज्ञेज्ञुलविस्मयरहे॥४९॥ नाज्ञेज्ञुलपरजाय
परायो॥ येद्रुपदेवितृदिखविस्मनाये॥ विस्मरहोयदीनाभमनज्ञारे॥ नासिसभीगि
रयोननकारे॥५०॥ भीमसेनयेद्रुपहनृदेखे॥ अर्जुनभयोरणनामहुनिशेये॥ सु
ननशवदेखमेज्ञहरखाना॥ विजेशवदुचितमाहलघाना॥५१॥ ज्ञोरवस्मन
नमयेविस्मनाने॥ इहिमोस्त्रीस्तज्ञेगुपताने॥ मिरयोदिवसघघघुधुन्नामि
राये॥ दोरज्ञेरकोउन्नहिन्नीसधाये॥५२॥ सकलनेरेनसेन्नानुविसाकोनाक
धनपरीडाननीरननराने॥ धानपाननिद्रुमभस्याहे॥ आनउदेसोपुधज्ञ
नुराहे॥५३॥ धनराज्ञोवाच॥ देसज्ञेयेद्रुपवेपाखे॥ ज्ञेनीनीइनव २ वे धज्ञा

थे॥ सो मन जी चितन व धी स्त्र धर्मा थे॥ सुन दे उतन पर रि पावी ताये॥ २४॥ इति श्री महाभार
ते पुराने द्रोण पर्व मे ये द्रुव ध॥ समाप्तम॥ सं जयोवाच॥ दोहरा॥ ॥ ॥
धर्मर हरि सुत नैन सो ज्ञान के रे भई नहि हिं जे महान॥ सुन कउ अर्जुन सपन पजेर [illegible] देहे
रे सोका ने॥ १॥ इ री हे सभ नु म गैर पा जो जो वि जे हमार॥ नुम वि नु दू सर उ [illegible] जे दे
खाना॥ २॥ इ हिं हे सभ नु म गैर पा जो जो वि जे हमार॥ तुम बिनु दूसर [illegible]
से न्या हमुरा॥ ३॥ चौपई॥ उ न कूरन पन न व द्वुचिं ताये॥ रिस करि द्रोण सो कीर दूग
रा ये॥ दुर्योधन ने॥ बाच॥ तुम से ये वे वरे दिषा वे॥ पंउ सत ये दु च को हत जाते॥ तुमल
सीपत नु मी हनु धार नल रे है॥ केतर हित नु म उ न सो धर रहे॥ र मरे कै से योधमरे र
णा॥ जो हिं विनु मुह जी व ल ज के न गण॥ ४॥ हम तनि मदि नु यु ध मा द वीता वहि॥
नुम पुध जव र र हते ल धा व हि॥ ल षी य त नु म री उ न सो वा त॥ ए को रे म चव दुव उ
ज्ञा न॥ चान र कुर के त कु व लु ध र हे॥ नुम पर स व लम न र ण पर हे॥ द्रोण वाच॥
नुम उल व धा रे न प भो रे॥ जा र त हे नहि रि अर्जन न जो रे॥ ६॥ स च व च न र म व प
म उ चा रे॥ सो सु ना य नु म रि दे न धा ये॥ नुम द्रोण न तनहि हि शो न धराई॥ सव लज गा
न के दे वो ज रा ई॥ ७॥ त्रि प दे स र म पर नु म धर हे॥ अपुने रि दे हि चा र न्धर रहे
के रो वि चा र न्या य जी य मा ही॥ ८॥ मकौ र का हू को मारी॥ ९॥ भी ष्म से यो धे व ल
वे सो॥ सिध झी व ले र ते र ण ते ह॥ अर्जुन ने न व लु गा धि क न धार त॥ सिधे झी
ज्ञा के ना म उ चा र त॥ १०॥ ह मु रे स भ यो धे व ल भा रे॥ उ न यो रे ही व ल ह न उ
रे॥ ज्ञा नो उ न रे ध र्म स्व राई॥ ज ह नै स व लु व रे र ण जाई॥ उ न सो युधु पा ने
त र जा ये॥ नु म का हू के व च न स न्या ये॥ प प रु स ण ता त सा प न र हा

ई॥ उचतयु ध्वरणभमसहाई॥ निजप्रानन नरपान न धरहे॥ वडु संग्रामसमर
ण करहे॥ रहे द्रुगरजगनाम तुमाहे॥ वोल उठो रविसुत तनकाहे॥ १३॥ करणै
गाच्या॥ हेनपकोनन्याय नुमकीना॥ दिजसेनि रहचितनक रथोप्रवीना॥ दिजनु
हिरिनकेसेसेवनुधारे॥ कररसीसेनाम्रिपाज्योंजारे॥ १४॥ ठैसेठैसे स्वादरचाने॥
शत्रुनकेवठयोधहताने॥ विजेहायकाढूकेनाही॥ नाहदेस्वकाढूपा माही॥ सं
जयोवाच्य॥ यापुजारकोहिबसपरवचना॥ उठदोरेकोररवउस्चना॥ हिमभत
दिजनेसेमेयुधकीने॥ घनेयोधरणभुमहतलीने॥ १५॥ समपांडुवदोरेडकारे॥
दिजनेसेनस्वयुद्धसंभारे॥ नपसुरसेनसमनकेडारो॥ दिजसोपुढकीनक्ष
नगडो॥ १६॥ ज्योंपतंगदीपकप्रुजारे॥ त्योंयोधाधरप्रानतजारे॥ दिजसरवल
नाहिधनखरनाने॥ कररसधुजसमकेकरेमहाने॥ १७॥ सररसेनकासीसक
रायो॥ वान्नवलेयंमकेहपवायो॥ नपबुलेगसेभीमललररर॥ पवनपुत्र
कोलीलोहन॥ १८॥ रविसुतदेरभीमपयस्मायो॥ भुजवलसशकतप्रहारकरायो
निरथभीमदोउरायमेरारे॥ उभीलोरशकतलेलघोरे॥ १९॥ भीमकहीवेपुढ
रिपालला॥ रहेसमानदोउचिरकाला॥ दुमुरवकरणकापध धुरायो॥ भयोभीम
ठेसनकरवस्मायो॥ २०॥ भीमनृपतापतीलजाई॥ पनोसुयमपुरविस्तुनला
थो॥ कैरवानदिपवउभपघायो॥ भयेसधीरूचितधीरनसायो॥ २१॥ रछीन
पोउवरजैतभारे॥ वोलेसमुरणजयजयकारे॥ घरोनककचसोसस्वपा मल
रनरण॥ दुहूवरेसंग्रामरणधन॥ डीहपघानदिजवानचलावे॥ घरोन
मवरपनेरयेउठावे॥ दिजपरउरेवलअधिकाये॥ दिजसरवलकरभमगि

४०

गयो॥२३॥ दिजनतनताकी च्योरन लाई॥ भीमपुत्र भयो रिसमोपाई॥ बहुप्रकार
माया परकासे॥ छिन मो गिर समदेही भासे॥२४॥ छिन वपु स्याम स्वेत छिन
माही॥ करतो छिन ही छिन पीत दिखाही॥ छिन मसर स्व संगतन सुर भयाने॥ छि
न एको तन न रण दिखाने॥२५॥ दिजसुत सो संग्राम संभारे॥ करत भ मर एक ही
ल कारे॥ दुर्योधन तो वाच॥ मनो सभे नृप कौरव बिदसेना॥ रतनवर्मा के शल
त्रिगर्त ने ना॥२६॥ दुसासन जो वृदु सेध वलानी॥ सकल धरम संग धारे भारी
सात समस्त गज संग लेनावे॥ घटोतकच सो रण भ मत ताबो॥२७॥ दोहरा॥
रथ पाचाधिक कोटि योधित भीम पुत्र वलभार॥ सम्मुख आमेका धनुष कर तार
जाको घन सार॥२८॥ दिजसुत दूसर धनुष धर घटोत्कच सो युध लीन॥
घटोतकच के जो सम सर तर र तेजनात नही कीन॥२९॥ भीमपुत्र ताकार
वकी घो पदात र सामाह॥ … दुगन … छिन मार॥३०॥
…पद॥ पुन दिजसुत सो युधु उपजायो॥ तजन्म सपदात द्रतक न तन पायो॥
रिसदिद … कीछती मजारे॥ … सर गयो वेधनि कारे॥३१॥ दोहरा वेध
…धर नधसायो॥ दिजसुत … सावल … सायो॥ … पिके मेतेज सगा मा॥ तो
भीड़ … जानाम॥३२॥ पुन … तभो … मेना॥ रतकी नीधर
युधु … पैना॥ दिखधर … भीमसर र॥ … दो रे समु वलधर॥
३३॥ … भीम सो मद तयुध …॥ करत भये रण भुम भारीसत ना॥ सो मदत
… ॥ भीम … ॥३४॥ दिख …
… भीमसर … रण भुम … ॥ रिसक … भीम

प्रहारभौ॥ ताहू लीनऊ कोकीन्ही संहारी॥ ३५॥ इति वाहुलीक वधः॥ ॥ चौपई॥ वाहुलीक का घात निहारि
धायो॥ वेस मद्दोरथ वेइ कराये॥ मारू न दुंदु मारू न हस न रव कराये॥ सभु मिलि भीम के सन्मुख आ
ये॥ ३६॥ क्रूर तन भीम रोष भुजबल धरा॥ गदा शत संस्मोह न ये घने नर॥ या तन गदा भीम की ला
गे॥ त्यागत जगत यम पुर अर्जुन जाते॥ ३७॥ सैन्य अर्जुन अंत भीम हतन कीने॥ दिष्ट विप्र सेन गये
भगा युद्ध प्रवीने॥ भीम धार वलु तार [illegible]यो॥ जाम सर्गि सीन युधिष्ठिर धायो॥ ३८॥ नादि न धर्म
जजो हतन कीने॥ हरि रही जाने जगण तप्रवीने॥ जिहि दिशी यत तहर अंत प्रवाहा॥ मुख मुख ध
मै कीउ पना हारा॥ ३९॥ तवे द्रोण ब्रह्मास्त्र संभारो॥ धर्मजजे दिष्ट हत मन धारयो॥ दिष्ट ध
मे ज ब्रह्मास्त्र संभारे॥ सन्मुख दिजजे मयो सधारे॥ ४०॥ धर्मजजे दाह न अर्जुन व आ
मजंग अस्त्र तपो न गदाधर॥ धर्मज की रक्षा दोऊ करही॥ कुरु की सैन घनी संघर ही॥ ४१॥
दिजवाने विप्रण ज्यों अरद्धारत॥ अर्जुन भीम करत दोऊ आरत॥ दिष्ट दुर्योधन वचन उचा
रे मने॥ कौरव सुत मन वचन महाने॥ ४२॥ तु म अर्जुन कौ सकौ हताई॥ नम्यो अरो युधिष्ठि
त पाई॥ अश्वत्थामा वाच॥ मुहि सुरपति दीयो वानहि ताई॥ विष्णान परही अर्जुन तपायो॥ अर्जुन
अयोध ताके वल नहि माने॥ अर्जुन परद्धारत तहा माने॥ ४३॥ अश्वत्थामो वाच॥ दोहरा॥
नु म अर्जुन के हतन की करही विधि या पुगराय॥ इन्द्र पुत्र वल अधिक अति निरकौ हत नन्ह
राय॥ ४४॥ दुर्योधनो वाच॥ हे दिजसुत तनुम करणो के वल पारिखा नेताह॥ जे घाते जीय अ
वही रहे तेता रहि छिन माह॥ ४५॥ चौपई॥ करणौ द्रौणि अस्त्र रथ पाचाये परा॥ अरतु मनमोर भ
रो मन अगधर धर॥ संजयोवाच॥ दोरयो रवि सुत रिस उपजाये॥ जहे अर्जुन सो युद्ध मचा
ये॥ ४६॥ जैसे सुरू अस्त्र रण संग्रामा॥ तैसे सहीन कीन महाना॥ पांडुव सो युद्ध करणो उपा
यो॥ ना पर पर ही ते जमहायो॥ ४७॥ वलभुज करणो वान पर हरही॥ उन की सैना घनी संहर
रही॥ सभ पांडुव मिल सर वरषा रही॥ सभ के वान करण वल भागहि॥ ४८॥ वहु करहीं पा
उवलता हा॥ करणौ डोर निज धाउत ना हा॥ ज्यों गिर अपुनी डोर न त्यागे॥ सोहे सुतन रण

८१

पुधर्म्मनरोत्तमः॥४५॥ गजस्य रथस्य सारथिमिहारत॥ अश्वपादचक्रीगणतनधारत॥ वेउस
तोकीसेनमरु॥ ऋतिवतुरोरवरीतावारे॥४२॥ कुरुनन्दनरविसृतकीउपनाऋति॥ अश्वसया
मेसोक्रहीपुगाटनत॥ अश्वपामाकहेहेकुरुनन्दनवर॥ रविसृतवलऋतिधोरेरणधर॥४१॥
यामोऽर्जुनवलयुधधारे॥ रविसुतरथत्रेऋमेहतउरे॥ कर्णद्रोरसपवेरथपरस्वर॥ गये
भारतणतेधीर्येहर॥४४॥ कर्णऽसारकुरुसेनानिहारे॥ समुभाडेनिजधीरनिवारे॥ दुर्योधनउ
वाच॥ देलोकेजोकर्णभजाये॥ नमपरनहीकोउऋानपराये॥४३॥ कहामयोतुमकोकिंउभा
ऽ॥ हमवाडेहेरणऋनरतेऽ॥ देखोऽर्जुनपराक्रमधाधारे॥ दिनदिनवैसमवेरनिवारे॥४४॥
कुरुनन्दनवचनसुनाये॥ कुरुनन्दनवदोउपगाये॥४४॥ उभयोवाच॥ द्रोरस॥ हेदिज
कुरुनन्दनवचनसुनाये॥ कुरुनन्दनवचनसुनाये॥ कोऽर्जुनसरऐसनकुखेरोउनसमेऽवरोऽ॥४६॥ ता
केऽर्जुनसन्मुखेहमधारहिसंगाम॥ तातेऽहरिमलरमेरविगरपरेसमुझामु॥४७॥ चौपई॥
दरीवनेरमयुद्धकरावहि॥ हनुरोवेवाभानुपरावहि॥ अवहीकिउनहिकरेउपाव॥ मंत
पाधेगीरचितनपथतावा॥४८॥ पुनकुरुनन्दनसोकहे हेदिजसतवर॥ सुनोम्पममवचनधा
नधरा नवलोहमुरीदेरिप्रान॥ हितचितऋरसोतेरेमहान॥४॥ धनुविद्यातुमतेऋ
धिकावे॥ हेऽर्जुनवहेमनवधानेघातेरमरेगुणनवधाने॥ निजसंग्रामकीऽधा
ऽने॥५०॥ कुरुनन्दवाच॥ हेदिजमतनुमहोसमुझाता॥ तमतेधपीनहिरुधवाता॥
देवनहेधर्मजकीसेन॥ धरेसमारतेजुझतिपेन॥५१॥ धएदुवतारहकरोवे॥ तुमतेऋ
धावलुनधनरे॥ दिधर्महरिसिउपजेमनभाती॥ ऽर्जुनसन्मुखजाहुवलाती॥५२॥ से
नाकीरुधातुमधारो॥ मनकोउसवलपरेऋरभारो॥ घातेभीतुमनहिवरजारो॥ कर्णविनिर
चेरनहिदेलखावे॥ तुमहितचितमसेनामेनकररे॥ तातरउनतेवलऋतिधरहे॥५३॥
दोहरा॥ वारवारऽर्जुनसवलहमुनीसेनवराप॥ हनेरमारेयोधवरतुमरहेमोनधराप
५४॥ ऽहरापरधनलरतहोकियातुमनेजीघमाह॥ पातेविजहीलरमरेऋरसनमुख

वलवाह॥१४॥ऋस्वस्थामेवाच॥चौपई॥हेकुरनपतुमसाचवषाने॥उनसोहमरेहेतमहाने॥
पयनृहिपितनुमसोहितुभाषी॥युधतेनृहिवर्जनप्रथमाषी॥१६॥वर्जेवर्जेनृहिसमयमपाने॥
उहतेईहालोज्ञापदुच्चाने॥हमनुमरोहिनसाविनवदूलहै॥रणभुमप्रानपारेधरहै॥१७॥जी
नसाकीनजरयोसजरानामनुमजानतहोएकमनमानाम॥गर्वेतजनकादूनविचरहो॥मसेवु
रेकौदोसुउचरहो॥१८॥संजयोवाच॥जैसेकहिदिजपुत्रताकुरण॥पांडुवानसोकहेपुगर
मन॥ऋस्वस्थामोवाच॥नुमसभसरमोपरपरहारो॥मुहिषाभनतोरुधुजविचारो॥१९॥
पांडुवानसमनसरवर्षांछाति॥कीजेदिजसतपररणभुमसत॥दिजसतसनुजधुजाहजना
यो॥ऋपुनहोरतेपजुनहहलायो॥२०॥पुनदिजसतसरतीष्ठपुहारो॥रतहीजीअरसेनकापा
रो॥१५॥षदुसूपद्रच्योनिरधायो॥दिनसतसोरणभुमपुजरायो॥२१॥षदुम्नोवाच॥देवुधरी
नवालरणमाही॥दीननसोबियावलुदिषराही॥मोसोभजनवलरणपुगरारो॥निजवल
पुधानीरधारो॥२२॥संजयोवाच॥भाषतद्रुपदपुत्रसरजोरे॥दिजसतदिषपुनसदेउचारे
२३॥दोहरा॥ऋस्वस्थामोवाच॥जीदकीननुमनिजबललताथेहमरेपास॥निरचेजानोजी
वनिजयमपुरलहोनिवास॥२४॥भाषतसरपरसरपुहरषदुसूतीवो॥ऋस्वस्थामोरर
रथुसहिदिजसतभुजबलधोरा॥२५॥चौपई॥द्रुपदपुत्रसिवानपुहारे॥ऋररेवानन
रतीनिवारे॥रकुभीतरपदुचननसोपायो॥हरषतदिजसोवचपुगरायो॥२६॥षदुन
म्नोवाच॥नुमरोकुदूकेभिछकदिजवर॥दुहलानतुममयेउररमर॥जौरवानकौरथकरत
हो॥पंउसुतनसोवैरधरतहो॥२७॥वेरद्यासभाषेपुगराई॥जोदिजनिजविपानजकाई॥
शस्त्रधरेरहरदेसुसेभारे॥तासहतेनहिपापुउचारे॥२८॥तातेतोहहतेमुहिपापा॥कोउनल
गसचवरहेजामापा॥प्रथमेनृहिपितुकोहनउरो॥पाछेनुमरेप्रानविकारो॥२९॥संजयो
वाच॥भाषतद्रुपदकेउसपरानेचरेदुहुमजामहाने॥निरयनिरथसरनभविसमा

पै॥ कैदेई द्युद्ध न दिठे सुनायो॥८०॥ नव वर्ष दुसरण के असधुजमना॥ धन बध ज्ञादि जकीन मरहि
दन॥ पुनवाणे नवसअरकी सैना॥ दई भगाय रण करनि हचै ना॥८१॥ धनदु मने के सुभशस्त्र व
र॥ दिराधि जसे घव जायो धुन धर॥ इतिउ तदौर तदि जगरवायो॥ सुभ कै रवनि रष तदरघायो॥८२
पांडव सैन सहत विस्माने॥ धर्मज भीमदो ऊभ्राप दुचाने॥ इनि कृतनप सण द्रोण वलाने॥ दौ
र नसाये नहादि घाये॥८३॥ दुदू उरवह युद्ध महाने॥ हती सैन नगपतीन वधाने॥ चिगरतदेस
अरमालव देसे॥ हती सैन सुत धर्मन रेसे॥८४॥ भीमसैन जो सैन हतीरना॥ ताकौ गणतन
कि सस्यकी तना॥ सधर पुवाह चले रण भारी॥ वग ज्यों चीले ले हुउ दारी॥ अर्जुन हाथे जो हत
होये॥ हरि विनु गण नस्सकावत कोये॥८५॥ विना तेगण जंअ जैन सरवला॥ पुनै फिर तरण
दीसे घायल॥८६॥ योधन के जो शस्त्र गिनने॥ जितरि तदीसे तं उभराने॥ इसे पुकार द्रोण
वलुकीने॥ दरसनये॥ धकीये तुं गपु कीने॥८७॥ द्विजजि द्विऊर परत वलुधारे॥ सन्मुख वकौ
ऊन सके संभारे॥ केकै पंचाल की सैना॥ हती द्रोण जिरह अंतन सदैना॥८८॥ नाम भीमुद
हन हो अर्जुन॥ सैन समज्ञन को धीर धार घन॥ अर्जुन भीम की उरदि घाये॥ दोर परे भुजवल
नपाये॥८९॥ अरसैना वहु जरी सहोरे॥ धर्मज सो हरि कहे उचारे॥ श्रीभगवानोवाच॥ द्रोण
कि वरतु मम तयुध करे हो॥ दूरदर्शी न जरयुरण धरहो॥९०॥ द्विज को पुण तु हि जीवन गहही
घाने वढुभ यमो मन नरहही॥ अरस नहोर्धि दिजतोर गहहि॥ पुरन पकी नर रहे से जानै॥९१॥
का लहूप दमुत दिजे हतनाई॥ घाकी भित यारय यरताई॥ अर्जुन नरदि जके मतजानो॥ हम
रे वचन मा च सुनपावो॥९२॥ नुमति न हमरे जीवन कैसे॥ मरतारि नना रज गजे से॥ नवनु
मस्वथ फिरे रणमाही॥ फिर हरधि द्विजमित जवपाही॥९३॥ श्रीपद्र्पति केवा कसनाये॥ द्रोण
कि वरधर्म जननगाये॥९४॥ दोहरा॥ तदि हनिजस कौध्यार अर्जुत पुसपर उधुर्न दपान॥ पु
रपर भस्तु पुरा दहे सव दुपधन पधान॥९५॥ चौपई॥ करत तरनयोधे चं जपाने॥ योलसने

रहेशवदुपधाने॥मसात्कृमपारवडुज्वलनशाई॥अरेयुद्धवडुधीरधराई॥५॥सरनमयुध
केदेषनहारे॥वैदेनररणज्ञनकप्रकारे॥सोंहीज्ञस्मरचंद्रदिसपातेधर॥देषेदीपप्रज्वलत
हाथकर॥६॥सरज्ञसरनकीजोतज्ञपारे॥लषीयनदिनहीपुरारदिषारे॥दसदसदीपद
कडकरषवारे॥इकइकधुजपरजरेपुजारे॥७॥दसदसगजपरदोदोज्ञसपर॥करतसर
रणमयुद्धवर॥सरधोरेभषनतनभारे॥रविससतारणसनचमकारे॥८॥षरोदुश
कतचपलाकीजोते॥परहरजीयमोधारउदोते॥कुरसेनाकेसीविधधारी॥दिनसंगकीये
वडयुद्धवलारी॥९॥वलीविराटचित्रसेनदुसासन॥दीर्घदीर्घवानररनज्ञरहन॥ताम
ज्ञगदिनकेशलकीना॥दरनहादेवभयोप्रवीना॥१०॥षनेयोधज्ञडोमयेभारे॥वहुस
रेपाछेवलधारे॥१०२॥देहरा॥पांडुवानकीडोरतेधष्टदुम्नवलवान॥भयोदुणकेसन्मु
रवजाकोतेजमहान॥१०३॥ज्ञार्जुनरविसतसन्मुखभीमसेनकुरभप॥धरधरसंगगयो
घषनेकीयेसन्मानजसनप॥१०४॥चोपई॥प्रथमद्रोणपरदोरपरायो॥प्रसपरभारयुद्धदि
षरायो॥कौरवदोरपरेधर्मजपर॥परयुद्धभारेतादिनवर॥१०५॥लषीयनसमुरतमयेमन
रण॥दुदुहिगकोनरहेजीवतजन॥दिषसहदेवदिनसन्मुखधायो॥नसिसुतनाकोमडोर
जायो॥१०६॥सहदेवनगोजायुद्धमयेकर्नत॥पवनपुत्रदिषदोरपरेतत॥नकुलशकुनसो
रणमलरही॥सिखंडीसन्मुखशल्यवलधररही॥धर्मसुतरेदुणदिषावे॥चित्रचारतजी
वतजीहिपावे॥१०७॥तवज्ञर्जुनकोदिषसन्मुखज्ञायो॥षनेयुद्धरणभमपुरायो॥ज्ञसुर
उल्लवसोदिषदोरायो॥ज्ञर्जुनसोसंग्रामधरायो॥१०८॥धर्मजदुणपुनसन्मुखधायो॥
करतभयेरणमयुधुदोष॥जरासिंधसुतसहदेवनाम॥दुसासनरणमोलरतज्ञका
मा॥१०९॥दुहूंधोरेपुसपरछितभारे॥कोतसहदेववलसापरहारे॥दुसासनकोज्ञसधुजा
करार्ड॥मेघापदातज्ञरवडुमुपाई॥११०॥तवकपहदउगसहदेववलाता॥चाहतज्ञरमि

५३

रसरवडुजात॥ तारभ्रात दिघदोरपरा मे॥ निज भ्रात के पघ धरा मे॥११॥ तिन पर भीरल स
वलपता थे॥ दुसा समन के सहदेव भजा थे॥ ति के संघ सहदेव वजा थे॥ पांडवान सुन हरषव षा
थे॥११२॥ दोहरा॥ तानि सरथ रथ जग्रहि ग्रस्वैं झस्व पदात॥ नाना शस्त्र प्रहार ही वरे युद्ध
ग्रसित ग्रस्यात॥११३॥ हार्दव धर्मज स्रोलरे प्रसपर धनषु करात॥ धर्मज वउ पधु धार वल
भाज्योर तो मरान॥११४॥ चौपई॥ पवन पुत्र के पाछे जाथे॥ भयो ठाढ वडु डोर दि थाये॥ भ
र भ्रवा सनदोर तन ग्राथे॥ भीमसेन षडु पुद्रम ताये॥११५॥ धुजा धनष दुहू प्रसपर का
टे॥ रणभुम मो भाजी वलुट्टाटे॥ दोउ समान रदेर णमाहीं॥ निवल सवल न दिप्रो उदि
षाई॥११६॥ घोरतर च क्रो दिज सुतदो उ स्रे॥ कर तपु द्र प्रसपर वल परे॥ भीमपुत्र
वलवान प्रहारयो॥ द्विजसुत को सरथ्या कर ठुल्यो॥११७॥ दिघ कोरव हाहाय पुकारे॥ ग्रा
पदु चौदिज के निकटारे॥ ग्रस्याम के वडु धीरथ धरावै॥ इतिउत की जा पाउ गटावै॥११८॥
दक्षनढूरतर थ्या सरथ धरता॥ पुन्र द्विज सुत सुध पाई निजमन॥ हो सवधान पुन वान
प्रहारे॥ घोरतरन सो की पोनि रसुधमारे॥११९॥ चिर तनक रह्यो रणमो रथ्याना॥ द्वि
ज दिज पलत्रटार र स्मान्ना॥ कुरुन प दि रहयो चितमारी॥ दोर भीमसुत उरनिहारी॥
१२०॥ इति ते दुर्योधन दौरायो॥ दुहूरण भुमस्यंदन धरायो॥ प्रसपर धनष कारर टकै
ने॥ दुहू वेर दुहू नो तन नली मे॥१२१॥ भीम गदा कर कुरुन पपरडोरे॥ स्नतर मारकर रणढु
दिघारे॥ दुहू दोर वलवान प्रहारे॥ कुरुन पकी रदाहित धारे॥१२२॥ दोहरा॥ तव सहस्व
मणकी गदाली नी भीम प्रहार॥ द्विष कुरुन पर पतेकु ध्यो उठ्यो वडु वेगम भार॥१२३॥ स्रा
र रकम परते रवे जावे डोकुरुम भपा॥ उदमार रथ परपरी चुररस्टकै कंजन पा॥१२४॥ चौप
ई॥ स्रणस्रणि स्रण कुस्य धुजस्रणरथा॥ उदमाम की मिल्यो भुमनथा॥ कुरुन पको भागत
दिषत थे॥ हस्तन भीम उनसे उच्च तथे॥१२५॥ भीमो चाचा॥ को सी विधि धोधेन भजा ही॥ जि

हि कुरु न्त्रप भागे रणमाही ॥ कंउ व देव देय पय पग्राये ॥ कोस्मी मकी उपम मसाये ॥ १२६ ॥ सहदेव दु
ण पर ज्ञाय परानना ॥ दि ज स्रो व उ संग्राम धरानना ॥ द्विष रविसुत व लज्ञाय परानना ॥ कीये सर
देव रण युध महानना ॥ १२७ ॥ कर्ण प्रहार कीये रें सर २ र ॥ सहदेव धनुष कटो गिरे भुम पर ॥ सहदे
व धनु युद्ध सर कर धाल्यो ॥ कर्ण उर वल वान प्रहाल्यो ॥ १२८ ॥ रविसुत भारी वलु ग्राधिकाने ॥
सहदेव सर हिरदे छुय मन से जाने ॥ रथ धुज सहदेव की हतलीने ॥ रच्यो पदातरण महुपुरी
ने ॥ १२९ ॥ वउ धीर्य धरण कत प्रहारी ॥ रविसुत ते चित्र सुमन विचारी ॥ सहदेव रथ चक्र उ
ठाये ॥ सीस भुमाय पर हस्यो महाये ॥ १३० ॥ कर्ण चक्र तुरत दुक कर डाल्यो ॥ सहदेव ते भीर्य
न तजाल्यो ॥ पुनि सहदेव के कर जो ज्ञावे ॥ रिस धर [illegible] डारच लावे ॥ १३१ ॥ रविसुत योधा
श्रधिक महानना ॥ सहदेव कधनु वल तन लघानना ॥ सहदेव निहश [illegible] निरस्थ व रा ॥ हाउ
चित चिंता निरन्धर ॥ १३२ ॥ जानत भयो रविसुत [illegible] भारे ॥ ताको वचन युद्ध हमारे ॥
८ भाषमं यो हि [illegible] वल वानना ॥ मोर पुत्र इन सो न प्रमानना ॥ १३३ ॥ रविसुत हस तासो
पुकारो ॥ कहे तात सुन वचन हमारे ॥ कौंता च ॥ तुम वाल कहो उ वाल दिखाये ॥ तासो
धारो युद्ध हि साधे ॥ १३४ ॥ वउ यो के सन्मुख मत जावो ॥ जो जावो निज प्रान न तावो ॥ हम
तुहि वालु जानके भुम रसा ॥ धाउ देत हैं ना हि कर हों हनन ॥ १३५ ॥ ज्ञो रयो ध ये हो व न को ई ॥ हन
उर तन ता के रण सो ई ॥ तो हि मात कुंती सन ते वंती ॥ मो सो कीन वि नी कत कंती ॥ १३६ ॥ हम
तासु तनु मम न रण मारे ॥ ता ते ना हहतो वीचारो ॥ हर षु जा हु निज धाम मझारे ॥ पुनि कहे सम
न्ति कहे तासु चारे ॥ १३७ ॥ सं ज यो वाच ॥ दोहरा ॥ रविसुत के इहि वचन सुन सहदेव मल जु
धारा ॥ निज पर वहु धिर कार धर उ यो चित चिंत न ग्रपार ॥ १३८ ॥ भाषत ज व इहि वे र व उजे
न उ हो रण मा ह ॥ लउ पाप मो को वउ घातें ध रे ना ह ॥ १३९ ॥ छो पई ॥ कह त दुपद रथ उ
पर जाये ॥ चउ वै ठो सहदेव लजाये ॥ पुनि विराट कुमार शल्य व उ म पा ॥ करे युद्ध पर युद्ध
ग्रनूप ॥ १४० ॥ रथ विराट के ग्रस्स मार रथ सण ॥ कान पुहार रण की ये श क्ल हनन ॥ सताना
जीवे वेगा ॥ भानवरा ॥ दिष देर यो व उ ने ज श क्ल पर ॥ १४१ ॥ शल्य के ग्रस्स मार रथ सण हाने

शल्यमपनतैर्देशैरपरान्ते॥ घञ्चैवान्नकीन्नेपुबहारवत्ला॥ परैस्थकन्नृतिस्कंतरोणघत्ला॥४९॥ह
स्तरउत्सैवसम्मअर्जुनसंमुखं॥ धरतमथेसंग्रामनृग्रधिकरथा॥ जोमसम्वेम्अर्जुनपरद्धोरे॥ ते
अर्जुनमत्यग्ररतदुपारे॥१४३॥ पुनरर्जुनरवानन्वत्लाये॥ अरक्राधनुसरसहतवसये
ऋमसमणरथुमस्ताथमित्लाये॥ धनुधृजासमकेरेमहाये॥१४४॥ सरपस्सरपरहारकैये
रणः॥ जयोउत्सवसमांगविमननमन॥ भयोलोपवद्रूहिटनपाये॥ दिवकुरसेनमजीमयथा
ये॥१४५॥ देरहः॥ कर्णपुत्रोवृषसेनवरष्टद्युवत्लवानः॥ सावनानपरहरकेद्रुपदपुत्र
वत्लघानन॥१४६॥ ततोधनीवृषसेनस्कीरिसमरकीनवहार॥ धृष्टद्युसकौदेहिमाजायधं
सेसरमार॥१४७॥ चौपई॥ रथद्रूपरभयेदेउवीररण॥ बसपरस्सरहेरेजचलघण॥ दुहूवेसर
रणमसमभराजी॥ लडोसरस्वनधृजगततनमानी॥१४८॥ दिवन्सवद्रुपदसुतवधुरिदेघर
गंवस्त्सनवपरकैयेसरपरहर॥ दिवव्रिषसेनतिघवानयुद्धां॥ द्रुपदभपद्धाधनुअरडोरे॥१
४९॥ द्रुपदभपधनस्मोरराने॥ अधमदयोअरथुवत्लठाने॥ रिसव्रिषसेनपरहरसरवत्ल
अनि॥ द्रुपदमपवकोकौघोरणमरधत॥१५०॥ तासारघरलेरघुकोदेः सेनसहतभागम
यजाडे॥ अधीरेनमस्मालवुदाये॥ दीपउारभुनभागमिधाये॥१५१॥ गिरगिरपरेनुशस्तुसे
भारे॥ पाछेमुररोउनाहनिदारे॥ कर्णपुत्रकोउपनअपारे॥ दुहूसेनमोकेरेमुचारे॥१५२
जौवद्रुपदकोवर्णपुत्रवर॥ जाधपतोवहुकल्लधर्मजपर॥ दोहरा॥ दुस्सासनचित्रसेनधर्मोधार
वरणसंग्राम॥ तेसरभालवहुतासंधकेकैयेपरहरवल्लधाम॥१५३॥ अरकोदेहिभजीरथ
रमामवटकौचोरिचोरयरकेदस्सान॥ चित्रसेनधरिसबसरवहुतजेअरपरतेजमहान॥१५४
चौपई॥ दुस्सासनभीमभयोरथपरपरजति॥ अंसुसारथहतकौयेअरवेततां॥१५५॥ मेजयोव
च॥ देउसमानवीररणलरहीं॥ सुधिवरउनकद्युनाहरिदिवरहीं॥ अवरपामिसिंद्वीकेसवमा
देउलरररगमभुनरलधामा॥१५६॥ अंतसिंहदीवेउायुद्धधर॥ जयोभागमित्रधीरजततज
रकोसिमधईकोभावतामरिथाये॥ पेन्वालसेनसभटाईनसाये॥१५७॥ अगडोभागजाजायसे
घडे॥ पाछेदोररथाज्ञनवेडी॥ तवद्रुपदपुत्रजौयमारविचोमी॥ इहिधाडेनहीमोरवत्ला

मे॥५५८॥ विसृजंतमुरस्वीनोसंग्रामा॥ गरजेदोकुरुणांसिंहबलाधाना॥ कृपाचार्यकोधनुषमतोई
कोपधारस्वपशरतचलाई॥१५५॥ तेभीद्रुपदपुत्रकरद्रुगी॥ कृपाचार्यदिषबडेसुधारी॥
तानिजडैसेयुधुर्जतिकरी॥ भागतभागतोपतुसृततलीनेहरी॥१६०॥ आपनपराक्रिफनही
आयो॥ तजोहापतहीहतपायो॥ पुनद्रोणसरतजक्षतिभारी॥ धृष्टद्युम्नकोधनुकरडारी॥
१६१॥ धृष्टद्युम्नधनुलैगरहाहै॥ होस्कंचेतहीरिमतसिमरायो॥ कुरनपपरतिषबानपुर
रे॥ अरकाधनुषुकरयोततकारे॥१६२॥ नकुलशकुपरसपरबडुवाना॥ परहारेदुदुबड
समाना॥ नतशकुबलसबलपरायो॥ नकुलछतीसरवेधधरायो॥१६३॥ धनदकुनकु
लसरधाहोई॥ पुनसधपायपरुष्यारणसोई॥ सात्वतानशालपरपरहारे॥ धनजेघुजस्म
हतभुमडारे॥१६४॥ नकुलशकुपरविजेधरायो॥ आगेजायोजभिकहरगायो॥१६५॥ दोहरा॥
बहुरसिषंडीकोरणेकृपाचार्यदिषरायो॥ दोरपरोवडुवेगधरधनजैरणगरजाय॥१६६॥
चौपई॥ कृपाचार्यसरवरषाधारे॥ सिषंधप्योरणमंडारे॥ बहुरसिषंडीधारतजाने॥ गयो
भागसिजनिबलपधाने॥१६७॥ दिषकौरवसभदोरपराने॥ सिखंडीदिदहिरनसजाने
हतहतीरणभुमवहुहोई॥ धृष्टद्युम्नदिषपरुच्योसोई॥१६८॥ पंधेतेस्यातकचलआयो॥
रविसुततासोपृथउपजायो॥ सातकजेसेवानप्रहारे॥ तेसेहीरविसुतेतजारे॥१६९॥ सात
रविसुततमभीअगिनशस्त्रसभारत॥ सातकछपरततानचलायो॥
अगिनशस्त्रपरहारत॥ रविसुतभीअगिनशस्त्रसभारत॥ सातकछपरततानचलायो॥
छपरतहीरविसतेतजायो॥१७०॥ दिषपहुच्योत्रिबसेनरसानी॥ सातकपरशरनतकीप
रहारी॥ सातकसरअग्नतीधचलायो॥ सोकुरुगासुतदेहधसायो॥१७१॥ जिगेकुमारस
रधाघाई॥ लषीयतकरीजयमलोगगनाई॥ सुतकेदिषहीधनतरकने॥ सातकपर
कुपसरवरषाने॥१७२॥ चारहतसुततकावेरगहावे॥ सातकबलरणसरवरषावे॥ रविसुत
काधनकाटगिरावा॥ रविसुतऊनधनुषपकरावा॥१७३॥ पुनत्रिबसेनपायसुध
भागी॥ पिदुसणसरवधारअपायी॥ सातकसोदोउयुद्धकरतअति॥ जाकोपेषसरस्ना
पहुच्योतत॥१७४॥ भागीयुद्धपरेतिहमाही॥ येजनहतेजगतकछुनाही॥ डोरडोरगज

हतेपत ने॥ रथु जस्म पाय कगणतन पाने॥१७॥ तब अर्जुन देधनषु शब्द सुन॥ गोविंस्तुत
श्रवण कध परीभि नकधुन॥ अर्जुन धनत्रास्म चरं को॥ कैरवान्वित धीजे टो॥१८॥ तहो
अर्जुन्न क्रा कटन वन्नी श्रव॥ कुरन्न पसो भाषे वव सन तवा॥ कैर्ण मच्च॥ दोहरा॥ स्नानक अरन्न प
सेव सो मोरप वेसंग्राम॥ अर्जुन हमु भीसेन जेसुघारे वलधाम॥१७॥ तु अर्जुन वेसन्मुरव
जाको विस्नुत जाय॥ इहिमह देव श्रभमंन सम नताते कध अधिकाय॥१८॥ कुरन्न पोवाच॥
चौपई॥ पांडुवान कीसेन मजारे॥ इहि देती नवलीस्मति भारे॥ सातक जरासिधसतभारी॥ नी
सरधपदु मुवल कारी॥२०॥ नीजो अव र्म हि सनम स्व श्रये॥ निहुको रत उरे वलु पाये॥
नव अर्जुन को सुगम हतावे॥ अव अर्जुन ज्ञाति दूर दिखावे॥१८॥ तब दुर्योधन शकुन्न सु
नाये॥ ता सो वचन नरहे पुगराये॥ दुसमरस्व गजस्सो दुरसा सन॥ दीर्घबाहु दुर्मुख दुर्ध
षन॥१८१॥ ते ते अर्जुन को मग जाये॥ भारी युद्ध सो वलु पाये॥ सुनत शकुन्न वउ सैन
सभारे॥ दोसो पवन्न वेगा वलु धारे॥ अर्जुन को मग रोके र हाये॥ वर्ष वाल समम सरव रथाये॥ सा
तक शंविम्रु तस सो संग्रामा॥ दोसो अर्जुन ते जग्ज कामा॥ जारे षेव उयुद्ध पराये॥ अर्जुन को मग
रोरथ गज ना॥ योधन ते सैन्य म अस पारे॥ चले श्रेणा पर वाहु पजारे॥१८३॥ सातक स्र पर हार
करत सूति॥ को र सुभेन ते योध की ये हता॥ दुसमर कुरन्न पपर उरे॥ दिख कुरन्न पद मवान
युहारे॥१८४॥ दुरमोपरे युद्ध निरपारे॥ निशि दिख सकल लडो विस्मारे॥ कर सभ डरे से युद्धमया
ने॥ हम ख्याडो सतहू नादिखाने॥१८५॥ भीवान सातक परउ रे॥ धमषधु जाअरके रउ रे
असु सारथ र घक्री येपदाता॥ पपदात दो रथो अमस्याता॥१८६॥ हुत वर्मा केर थे चउ रे॥
उ त सातक वलु भारधुराये॥ कौरवान की सैन मजारे॥ पसो व्याघ्र ज्यों तेत्र म पारे॥ गत रथ
अस्व सर स्व हततकीने॥ पपक को गगतीरिकटलीने॥१८७॥ दोहरा॥ तब कुरन्न पुरथ तेडि
तेदे षेषो धअपारे॥ दोरपरे च हूउरते न पकोहित वलु धार॥१८८॥ अर्जुन पर सभ श्र पावे दो र
ली नच हूउरा॥ सर वरषा रेवरष सम स रणभूम सो वलघोर॥१८९॥ चौपई॥ अर्जुन पर उर्जे
हथाई॥ निरखी येते उ धरन सम काई॥ घनेसी सकरवरभुमउरे॥ घनेहाय गभुजा विठो

रे॥१९॥ पायकपरस्रसुगजरथपरवल॥ रथपरगजडारतरणकेयल॥ पुनन्वकुलस्रलोकक
देउस्नरेवल॥ करतप्रसपरयुधसन्मुखयल॥१९॥ शस्त्रलोमकउरतेवानन्चलाये॥ शकुन
देषपहुच्योतहास्राये॥ अर्जुनशकुनकाधनषुकटाये॥ पुनरथुहनमनडारिदिषाये॥ स्य
शकुनस्नलोकमरथवेगाये॥ देकवानरथोहिमहाये॥ अर्जुनसमकेवलपतीस्राये॥
लरेमरेरोहिताये भजाये॥१९॥ इनिधष्टद्युम्नतैवानप्रहारे॥ द्रोणदोहिधितकीने भारे॥ दि
जरिसधष्टद्युम्नकातनुवर॥ धितकीनोस्नरसातप्रहरधर॥१९४॥ पंचवानसूतडुपदप्रहा
रे॥ दिजरथकेस्नसहतभुमडोरे॥ दिजभीवानतीधप्रहरकर॥ धष्टद्युम्नस्नसहतकीनेर
रा॥१९५॥ धष्टद्युम्नरथस्नानचडाये॥ दिजतेदूसरउरसिधाये॥ तहांजायपरदुर्योधहताने
द्रुपदपुत्रवलतेजमहाने॥१९६॥ दुर्योधनानिरषतरिसधारे॥ शविकेस्नतोमकहतउचा
रे॥ दुर्योधनोवाच॥ मोहितुहिस्नमरवस्रअर्जुनरेवल॥ येदुष्टकोहतकीनरणेयल॥१९७॥
स्रोरथनेममयोधहताने॥ स्नकस्रकेलहमरहेदिषाने॥ केतेहमुरेभागहताने॥ तुमनि
जजीयकीकहोमहाने॥१९८॥ येतुमहितसोयुद्धनधरहो॥ मोहैसेनभाजीनिरषरहो॥
हमीनिजभुतनकोसंगधारो॥ अर्जुनसोजाहोयुद्धसपारो॥१९९॥ जोनरषहोउस्मृते
रपुजरवर॥ स्नवहमणरहेविनतीधरधर॥ तुमसेनामुहिभजतदिषाये॥ हरषतहोम
होसाचुसुनाये॥२००॥ द्रोणकर्णकोहदपुगहाये॥ चपकीवुधपरहसहसकाये॥ रिसकतके
धनदेउमहाने॥ दोरपरेधरतेजुभयाने॥२०१॥ प्रज्वलतदीपसमदेवेवुझाई॥ स्नुनसुन
शवदुल्लोहिस्नारीहहताई॥ रेनकस्रधरसंगामनमहाने॥ स्नपुनीविगानाचछुनलषाने॥२०२॥
पतीरोरदुहसेनमंजारे॥ कर्णद्रोणकेवलमथमारे॥२०३॥ श्रीभगवानोवाच॥ दोहरा॥ रोविस
नजउतीकेरणकाहींनरथतनाहातातेतुहिमुहिरवचनस्नुनरहतोस्नजमरणमाहि॥२०४॥
डीहसमभषगपुर्वीनरणपारसमस्रवरनकोड़॥ घेरानरकचपासोयुधकरेमाघापरधरसोड़॥२०५॥

५६

चोपदि ॥ यदा तत्र कच्च क्षत्रस्य मायायोधे ॥ तस्मात्कौरवेयु युद्धवत्स भारे ॥ संजय उवाच ॥ अर्जुनं हरिरेवं च वचनं स
न्मयो ॥ यदा तत्र च को भावसमन्वये ॥ २६ ॥ अर्जुन उवाच ॥ तेषु मा तस्य तपवनवलारी ॥ यत्ते वरउप
जेस्य तमारी ॥ तावे नु मम जवलज्ञातिधरहो ॥ कर्णस्य न्यवजायुद्धसमरहो ॥ २७ ॥ निस्कं संधार
नमच रक्षो कामा ॥ तातेनु मधरहो संग्रामा ॥ सर्वक्षत्रस्य निज संडाधनो वा ॥ रणभूमक्षत्रपरस
वलपनो वा ॥ २८ ॥ यदा तत्र च वचनं स्म ततततकारे ॥ उपजाने क्षत्रस्य ज्ञाति रूपमयोरे ॥ धार्त्र
स्वसभक्षत्रस्य रक्षणं ते ॥ दृष्टान्ते दोरे मद्वमते ॥ २९ ॥ कृष्णसेनामे जायपदाने ॥ पदोरोरस्सम
क्षत्रस्य रक्षपाने ॥ अर्जुनं क्षत्रस्य रघनते सन्धिकाये ॥ रविसतसन्मुखभये दृष्टाये ॥ ३० ॥ कारू
रोस्य धनुर्धनरा तो ॥ रथेन लेखको युद्धकरायें ॥ दुर्योधनो वाच ॥ देहुस्स मम रविपुत्र वलोरे
वलेन तच्च मोधरहे युधभारे ॥ ३१ ॥ संजयो वाच ॥ उत्नेव स ता कौ उर पठायो ॥ यदा तत्र च
सोसंस्कामम मचायो ॥ भीमपुत्र भजवस्य ज्ञाति ज्ञानता ॥ उत्नेव स को रणकौयोपदाता ॥ ३२ ॥
मृत्युधृहुमाहयरायो ॥ चिरतत दुहुते कौनररायो ॥ मखेन ज्योदो अयुद्धकराही ॥ मम लात
परहारधराही ॥ ३३ ॥ उत्नेव स को स्मृत भीम उवाई ॥ भूमपदक्कास्यो वलंज्ञातिपाई ॥ लात
नसो ज्ञाति मरवत्रकरयो ॥ उत्नेव स पुत्र उठभजवलुकरयो ॥ ३४ ॥ लोपमयोकतहूनोदि
याई ॥ पुन पुत्र ज्ञान पदोग ज्ञाई ॥ यदा तत्र च सो ज्ञहि भनपरज्ञोरे ॥ लात पुहारकरतोदुष्टोर
३५ ॥ भीमपुत्र क्षपज्ञापधरुये ॥ उत्नेव स परदो सो वलुपाये ॥ उत्नेव स पौकरसीसह
पदाहि ॥ कृदनरणभुमरहमहसर्वोहरहि ॥ ३६ ॥ हस्तहस्तकुरन्नपपयजाई ॥ कौरव यदा तत्र
च मुखपुत्रराई ॥ ३७ ॥ वैशंपायन उवाच ॥ दोहराय वैदो मोहमयो मुन्यो ज्ञाको उन्नपपपज्ञा
य ॥ भरविजामोभतनही कहरकुपुणरायु ॥ ३८ ॥ न्यायेलसममसीसुर्योहरमस्यायेहेभर
दृढो विधर्गेवस्यतसीसुकरल्याकोशकामेरा ॥ ३९ ॥ धौरकौहरूपमयान्नज्ञातिकौकौपु
गरा ॥ कौरतन्नूदतमन्नरणज्योरविसुतानिकरान्न ॥ ४० ॥ चोपदि ॥ रविसुत कौदमसान

प्रहारैः ॥ पुनश्चैसीमायापुरगहारे ॥ चक्राश्मनिकेतुपमहाये ॥ दुद्रुहायगहिर्मीसम्भ्रमाये ॥२२२॥
कर्णोत्तोरवद्रुतेजश्चलायो ॥ रविसुतनिरथतमसाहिवरायो ॥ पुनरविसुतधरवसुप्रधकाने
घटोत्कचश्चक्षोभितकीनमहाने ॥२२३॥ नघसमानभीताकीदेह ॥ समविदहीननीदेषावैतेह
पुनरविसुतदेवास्त्रसंभारे ॥ शरकोहतोऽरिदेवीश्वासो ॥२२४॥ अभीमपुत्रदेवास्त्रदिषाने ॥
मडोकटयोबलवानमहाने ॥ वासाकर्णोकेकटकटशरतमभीनपुत्रश्चैसम्वलुधारत ॥२२५
पवरविसुतकोसवलविचारे ॥ राक्षसानीमायापुरगहारे ॥ कवहूएकसीमधरक्षावन ॥ कवहूसतस्स
दृष्टिदिषावत ॥२२६॥ रेतुसुरवद्रुतरहसमाने ॥ गजदावलसमभीतभ्याने ॥ मनुखवगर्जतेतेज
महाने ॥ राक्षसमायाशक्तिपुरगहाने ॥ लघीयतजगक्षोमधनकरही ॥ गजरथचतुचतुदोरतपर
ही ॥२२७॥ कबूकस्वकबूहोतपदाता ॥ कवीसिंहकवीव्याघ्रगाता ॥ कवहूचालेसवलतमसमाने ॥
कवीनेघवपुधरवरषाने ॥२२८॥ तबपरविसुतपरधारे ॥ रविसुतसोयुद्धसंभारे ॥ त
टरविसुतविस्मानहोपवजाति ॥ सिमरेदेवीदेववड्डेसत ॥२२९॥ कर्णसमरणदेवास्त्रसंभारे ॥ अर
मायासभुकीननिवारे ॥ पुनश्चैसीसरवर्षवसर्दे ॥ सरीपजरमोलीयोपमाई ॥२३१॥ ज्योपंथी
पिंजरमोपरई ॥ सोघटोत्कचपीद्रुगद्रुफरही ॥ पुनघटोत्कचमायाठानी ॥ दृसयोहासक्र
रारमहानी ॥२३२॥ अस्त्रकजरउपजायेभारे ॥ गजउफरासिहनअस्सवारे ॥ त्रिहमव्याघ्रसह
रेचउाये ॥ शस्त्रभयनेसमपहिराये ॥२३३॥ रविसुतसोभारीयुधधारे ॥ धनुषकर्णकोकीन
दुफारे ॥ अवरधनुषरविसुतकरधारे ॥ वानप्रहारनकोपप्रहारे ॥२३४॥ गजउफररणयेघटो
तकच ॥ उपजायेयोनिजमायारच ॥ तेसभसरवलहतनकराये ॥ जितेदेनसुतभीनदेषा
ये ॥२३५॥ तिसघटोतकचशवकतप्रहारे ॥ धारेशक्तिवतुतेजादिषारे ॥ धोतुसहाथअचशक्ति
भारी ॥ सोरमदीपनीनिषसारी ॥२३६॥ तेघटोतकचवलेप्रहारी ॥ रविसुतदेतकरअमडो
त भी ॥ वैकेराफरफतेहूघोवरा ॥ निजसचापराषोरचनाधरा ॥२३७॥ पतपतकततनवरघुपर
नाये ॥ अस्त्रसुसारथधुअसवलजराये ॥ कर्णसुदूसररथेचउाये ॥ घटोत्कचपरतवदोरपरा

४० यो॥२२॥ देहरा॥ कर्णोबलीसुतभीमनपराजानवर्षंत्रतिकीन॥ पुनधारीमायात्रतरभीमपुत्र
पुत्रीन॥२३॥ गंधर्वनर्दहि उपजतमयोस्सदर अचेधाम॥ फूलेफूलमगंधत्रतिचहुंदिस
वनेत्ररानन॥२४॥ चौपई॥ तामेत्रतित्रन्नपत्रतिऊचा॥ मंदरवन्योस्तेत्रूरस्सचा॥ तामे
त्रसुरत्रलायुधनामा॥ कुसनपसोभाषेवलधामा॥२५॥ त्रलायुधोवाच॥ पांडुवानमेहि
भातहताने॥ हिडंवनामतानापुत्रतराने॥ हमैहैउनकीरक्षपाने॥ तातेकहेतुमेपरजाने॥
२६॥ घेतुमकहेउनसोमैनाघन॥ धारपुत्रतहाकरेमरन॥ तुमरैहितकारणमिधधा
ये॥ त्रुपुनआतकेवेरानिजाये॥२७॥ दुर्योधनसुनहरषउचारे॥ करोसिधसमकारजसा
रे॥ कर्णसहतसगामसमरहा॥ भुजवलधरयाकोहतकरहा॥२८॥ दोरयोभीमजसतानि
रखाने॥ त्रायोसुतकौमछहिताजे॥ त्रलायुधत्रसस्केसन्मुखत्रायो॥ पवनपुत्रकेयुद्ध
उपजायो॥ घेपुत्रसुरतारहेकेसजा॥ पचमरोहिवेधेसभअंगा॥ पुनवहुमररासपरजूरे
नेउनदेषमजाहहजरजुरे॥२९॥ रिसकभीमवउगदाचलाई॥ तेभीत्रसुरकरीवलुपाई॥
पुर्तीनतेगदात्रसरपरहारी॥ पवनपुत्रहिपकरभुमडारी॥३०॥ त्रलायुधसंगत्रसुर
कीनिभाराम॥ दोरपवरेसमएरेखाये॥ त्रलायुधपवनपुत्रपरत्रायो॥ पांडुवानपरसभेपटा
ये॥३१॥ भीमसैनत्रसरवलुवउपाये॥ दिपहीरत्रर्जुनसोपुजराये॥ श्रीभगवानोवाच॥
भीमसैनपरभीरपराने॥ चलोवेजताकेनिकटाने॥३२॥ संजयोवाच॥ दोहरा॥ त्रर्जुन
श्रष्टदुम्नकुलउनमेजासहदेव॥ द्रुपदसुताकेसुतवलीदोरतेजत्रमेव॥३३॥ त्रलायु
धत्रसुरवलभीमकेत्रसुरत्रसरथहान॥ पहातमपोरणमसमोपवनपुत्रवलवा
न॥३४॥ चौपई॥ रिसवहोतकचौदोरपराना॥ त्रलायुधसोजरयुद्धमहाना॥ त्रर्जुनत्रमान
दहयुद्धकराये॥ त्रसभीमत्रसुरवहुवलुपाये॥३५॥ त्रलायुधत्रसुरकारकेभमरना॥ हा
थपकरदोमेवलसतछिना॥ कुरुनपकेजाकीनपुराणमा॥ कैद्योहुमरडीहिमेरत्रवामा॥
३६॥ दुर्योधनकेतिनरथारवला॥ मपहुंतीत्रसैनापगतला॥ भीमपुत्रकेतेजीरहाये

कैरवान भारी भय धाये ॥२५४॥ पुनि घन ज्यों गर्जे तव लखाना ॥ परे अपिर दोर मदाना ॥ छि
नलु पायधि न प्रगर दिखाई ॥ माया वीर ऋस वल भरी ॥२५५॥ परहर ऋी नी गरु तलु पाये
रथ तज कूदो ऋत दिखाये ॥ वीस धनु धपरपंत रचाने ॥ शरु तरचाई च तर मदाने ॥२५६
घदुश रुतको ऋश्व न जनाये ॥ ज्यो रसमे दिव रोप उठाये ॥ भीम पुत्र दिव च ठ्यो ऋ को ऋ शे ॥
नपतप धान परहर प्रकाशे ॥२५७॥ ऋन ऋमंत रोशा स्व प्रहारत ॥ कुरु सैना ऋी नीऋ तजा
तुरा ॥ द्रुजन परतथा सो युधु धारे ॥ धारहि स्व नन उपाय दिखारहि ॥२५८॥ जितन्नि तहाहा
कार उठाना ॥ कुरु सैना भयधरे मदाना ॥ रविसुत विन को उवलन धरावे ॥ भीम पुत्र सो यु
द्ध मचावे ॥२५९॥ दुर्योधनोवाच ॥ हे रविसुत इन रन उठ सन दीने ॥ मोह सैन न समझीन ऋधीने
तुम धापर सम शस्त्र चलाये ॥ इहि तम चरव धुश्र मन दिखाये ॥२६०॥ ऋवरै से इहि धानु परा
वै ॥ कछु उपाउ द्रिस्ले न हीझावै ॥ ऋ सौ वाच ॥ स्वर पति द्रर वश ऋ तम हिदी चे ॥ जिहि ड्रोरेहतु
परे प्रवीने ॥ पप ऋर्जुन रोहत नहिताये ॥ गघत हो ते शऋ तलु पाये ॥२६१॥ दुर्योधनोवाच ॥
इहि गऋस्यु ये हत न पराई ॥ सभ सैना मम हानि दिखाई ॥ जिहि शिहरया हिध रोर गघाना ॥ मे
रो हम रेश्वम ऋुरितशाता ॥२६२॥ रविसुत न पके वचन सुनाये ॥ ऋाहु शऋ तव उठायजाह
ये ॥ कुरमे उतऋरतोरत जानी ॥ ऋर की माया समऋल प्रजानी ॥२६३॥ दोहरा ॥ हनमाया सभु
रूस्वरवीला ऋी घातीमारह ॥ पीठ वेध वाहरमिनि ऋसशि रोम मरवड़ वाह ॥२६४॥ ताज नेसैसे
शिरबाभ ममनु शिरसिंडा नुहाय ॥ परत निहार तसकल दिघरहे ऋधिक विस्माय ॥२६५॥ चौ
पई ॥ रोर रवसऋल भयेहरषाने ॥ पाडुवान रोवि चित विंताने ॥ शिरत भीम सुत नसकल हता
ये ॥ मनो बज्रु नलऋ डुलु पाये ॥२६६॥ इतिघटोतकचवध ॥ चौपई ॥ भीम पुत्र ऋी मरनीह
वाये ॥ पाडुवान रोचितविस्माये ॥ हरिपद दुपत मुख वचन उचारे ॥ ऋ हे सुनो सुतपंडु सु चारे ॥
घटोत्कच नहत दिव मतचिंताने ॥ ऋर्जुन रच्यो रिदे लखपावे ॥ इहि शऋ मजर्जुन परहारत
निह चेऋर्जुन रोहतधारत ॥ ऋर्जुन नसिर तेर सी ऋलाये ॥ धरोरह घचिन तचितनिसदाये ॥

सदेहे हरि रगाघव कहु प्रगटाये॥ सुनत करदि दुति दाहरख पग लाये॥ श्रीभगवानोवाच॥ दोहरा॥ जन्म्यो
कुंड नल कवच सम गश विस्त तें जु महान॥ तिहि संजोय कुंडल गुण कोउ न सम केव हान॥ ५॥ स्व
रथ तमा भीघ तन धरत ईस संजोय उतारय॥ सच्च क शव ततासें दईजिर ला जोन रहाय॥ ५॥
चौपई॥ अर्जुन हत तन हेत चित न धारे॥ राघव तरविस्त तन शक त छिपा रे॥ ते घरे तन कचव रयसु
मी॥ कौ योरा नवल शक न तन कपाली महि॥ घरे तनकच कोमतमचिंता धारे॥ अर्जुन ते उत्तदिय र
रथ सुभारे॥ जैतो इम तनु मरे देन कपारे॥ जगसिध समय काल संहारे॥ ७॥ सो हीजा नो कर्ण र
ताये॥ इम तनुमसो करि सच्चु प्रगटाये॥ कुंडल संजोय जामे गुण आगर॥ तेले गयो सुर पति
सुखसागर॥ ८॥ मैत्रत शकत जो तेभास्यागी॥ कवच याहत नस जामन उमागी॥ घरे तनक
चोमृत अर्जुन जीवारे॥ जिउ अहे चिंत हरखसच्चारे॥ ९॥ धृतराष्ट्रोवाच॥ दोहरा॥ हे संजे
कैसी शकत नघन कुष्ण जान॥ अर्जुन हत तु केहेत वर जामो वेर महान॥ १०॥ घरे तन कचपर
कि उपर रसी रविस्त तें जु कपार॥ रहम लाल धन राष्ट्र को संजय करत उचार॥ ११॥ संजये
वाच॥ सुरत पद सासन शक्त नवल सर दुग्ग तें आदि॥ सम ही जान न यो र देया हिवे तमि
र जादि मवय जो घा शक्त न अर्जुन जीवन माके रन्ता हय रहा॥ हरि माया कैसो धरी सम ही दई वि
सार॥ १२॥ चौपई॥ न वहरि माया कैसी धरी॥ सम के मन डोरि हग थ्या विसमरी॥ घरे तनक चके व
उ शस्त्र दिखाये॥ सम भीत रमो कहीत दाये॥ १४॥ रविसुत को भी गई भुलाई॥ हरि की माया नार
न पाई॥ नवीन शक्त तही न पर रोरे॥ हरि माया मसे तजी तभारे॥ १५॥ कोउ वसु नकुम न तह
ते व न्या॥ रथी रहे धारे चित सेन्या॥ घरे तन कच मृत को चित नि वारे॥ हेसम विधान लीये घ
सु समारे॥ १६॥ तीत रे न रन तार हत मारे॥ जब घाती सीरही तदारे॥ घरे घो धकाल कजीत
भो॥ जा जुम मृत्यु तल नहीं सम कहि दिखारे॥ १७॥ नकुल अर्जुन वउ शव दु उचारो॥ सुजो सभी स
रे वलका रे॥ दिव मरे न युधु नारा वि हाने॥ युध तेरा घारिसी न रहाने॥ १८॥ धन नुम ध
धन नुमरे वलवाना॥ जिव की के से चिर गारा॥ धि नी वि लमा पवे दु निरधारे॥ सोके

[illegible]

ॐ सकाम ही॥४४॥ संजयो वाच॥ तब सम भयो उठ बड मठ है॥ हरि सो कहे रथ हांन॥ हे यदुपति तुम से न मो
दोष बली बलवान॥४५॥ जब लग इह जीवत रहे॥ रण मैं सैना ना हि॥ विजै हमारी भ मन रण पथ
कबहु न दिसा हि॥४६॥ चौपई॥ अर्जुन कहि जन कुल सेन मम मरो हो॥ विजै हमारी वढ नदि होहे॥ ख्य उपाउ जो
जे तन तकाल॥ यो ते हत ते होइ दोष विसाल॥४७॥ तदपि न हस्ते मैं हरि विजै मम मन ना॥ मम तन तब च हरि
वाले श्वर हन॥ श्री भगवानो वाच॥ निस्चे दिज नके बल अधिका ने॥ गुन सौ विद्या ते जु मह
न्ने॥४८॥ कन्हु धार जो रहो रवे॥ के सन्मुख तास मर यहो वे॥ शस्त्र होत ना हत न ससे के॥ स
र जो सरल घयत न रे जो॥४९॥ शस्त्र हीन दिज जो दिष्णौ॥ तदपि न हस्चे जा नो हतपावै॥
कहे उपाउ हम इकु पुगरावो॥ जाते दिज रण शस्त्र तजावै॥५०॥ धर्म जुध चक्र मस नृप इस वारे॥ मुख
ते कहे उच्च पुगरावे॥ इहि उपाव विन हत्यो न जाये॥ जाते हत होवे सुत माये॥ रथ तजै सेव च
न समनाई॥ कहे धर्म जमुख ते पुगराई॥५१॥ धर्मजो वाच॥ दोहरा॥ सम भैसे न सम भ्रात स
ग ये पायो नि जहान॥ तो भी वचन असत्य के केरो न मुख पुगरान॥५२॥ पुन हरि कृष्ण जु कसो
रसी कहे होइ कुश्वर उपाय॥ गज अश्वत्थामा नाम जिहि हते तो तार वचनु लाय॥५३॥ चौपई॥
देस मालवे का नृप भारी॥ पुरमा पनामु जिहि केहे उच्चारी॥ ता को गज अश्वत्थामा नामा॥ ता
को हतु सुनरो बलधामा॥५४॥ संजयो वाच॥ सुनतन पवन सुत दौर परायो॥ तनी धन गज
बल हान न मरायो॥ द्रौणाचार्य जे निकर सिधायो॥ ऊच शाबद्ध कर यो सी सों निवायो॥५५॥ भी
मो वाच॥ अश्वत्थामा रणाभ मर हताये॥ सुनतन द्रौणा जिज सुतन लखपायो॥ देख भीम गर वे ती के
ने ना॥ मन जो विचार धारे निहचै ना॥५६॥ जा जी भी मृषा न पुगरावे॥ को पधार दो न्यान ति को रे
पुछ धर्म जी से नृप ना॥ अश्व मि से न संहार महान॥५७॥ दस सस हस्त गज दस हो नुरंगा॥ प
रथ भी सम सहस्त्र उपंगा॥ पंचाल देस को हो ध महाने॥ इहि सम दिज रण भ मरहता ने॥५८॥ पु
न धप रतेस र च घ घ रायो॥ चार हत सम को धान करायो॥ दिव अमसु स्याद दर के पाये॥ द्रौण

५

वल्मीकि केो पमरा ने॥ ६७॥ सुरविषइ कठ द्रोणपथजाये॥ मुखभाखे हरि जवरदाये॥ सरीरिष
उवाच॥ उचतनाहि रिजको ईहरे गेहा॥ हे तो ऋने वजी वध रज्ञो हा॥ वालरिव झूतपसीतप
भारे॥ साठ सहस्र संवत्सरजी हृधारे॥ ६१॥ विनहरि भजनना हवध चाही॥ निसदिन हरि रे
भजनरहाई॥ नेम सम दुःखनि वरच लखाये॥ मुघ ते भाषतव चपुगटाये॥ ६२॥ वाल्मीकि वो
वाच॥ दोहरा॥ हिजस तहरि ते नहि उगे परे ऋसं सभार॥ वृक्ष ऋव स्या तपस मे करहो पापु
ऋपार॥ ६३॥ सा नुकाल तुम प्राण तजजा वतहो यमधाम॥ नाहउ चत जीय ईशके रहेतो वेल
विहरकाम॥ ६४॥ चौपई॥ सम्रु उर हारिध्यान लगावो॥ ऋवर उर कहरि दान पावो॥ पुनहि
तनी कहि विहार दिघयो॥ विन सुन दुपद न कोउ दिएयो॥ ६५॥ वहारषि जनम व नस नाय
पुनि देघ सुन दुपदहि रवा ये॥ जोहरि वहि विपुस वे पहि वा नी॥ तजो यु ध भजन सार गपानी॥ ६६॥
भीमव च न पुनहि तजी कहायो॥ उहि भी म ऋस पान हतायो॥ ऋ याति चार मनहतो पराई॥
पशोऋव धर्म जनमे जाई॥ धर्म जरम रामिधसदो वे॥ मोसो ऋव नाहपु ऋरोवे॥ ६७॥ सजेपे
वन्ह॥ दोहरा॥ पश्च तहि जवर दूर तेध र्म जसो पुगटाय॥ भीम मेनेरसी कहे कहतुसा चसन
या॥ ६८॥ मुनहरि ऋ वो उवमन लवदे धर्म जसो वे न॥ कहे तुम ऋस प्यामार हसो उपजावे स
ह वैन॥ ६९॥ धर्म जो वाच॥ चौपई॥ ऋवरच नगर सो नउ चारे॥ होय सहे पवहि पुगरपु
करे॥ ७०॥ श्री भगवानोवाच॥ धर्म रव ऋव रहरि वितायो॥ दिजनु हिसे सभु दई घवाये॥
ऋ डो देशोदि जवेव सऋति॥ वरे भाषते भीरनने हे मत॥ ७१॥ ऋचारे कऋ उ चारे॥ दस पैरस
भकाजनु मारे॥ यम राधेते जगतु घुड़ावे॥ ऋरसीपान नरे पावे॥ ७२॥ धर्म जम सुनपहि वे
नन माने॥ हिम सुनपवन नवदह तम हाने॥ ७३॥ भीमो वाच॥ उनवहो तुम पापु गरो॥
विचारत पामा हितु मारे॥ ऋम पामना मृग जमो ह रसान॥ करे ऋस पामारसो नरा
ना॥ ७४॥ भीमैवेनसुनहरि उचरमे ऋति नी कोई हिम भ न घणाने॥ तारहऋस मसमा चडीह

येन्वा॥ नज्ञविल्लेरभाषोस्रखवैदना॥२९॥ नवधर्मजउत्वे शवद्रुउचोर॥ कहीजस्यपांमहत्योसुरवना
रे॥ नरज्ञपवागज्ञरणहृतपाये॥ पामोमर्मभेदुनहीकाये॥ ३०॥ संजयोवाच॥ अहीधर्मजस्यपा
महृतायो॥ द्रोणाचार्यईहि वचनसुनायो॥ जबकहीनरज्ञपवागज्ञहाये॥ नरहीसमणसमस
षवज्ञामे॥ ३१॥ सेघनधुनकधुसुननपाये॥ इहीस्यन्यो जस्यपामहृतायो॥ धर्मजनेईहव
चनसुनाये॥ पर्यद्रोणमनोंचितमहाये॥ ३२॥ चितमचितविचारदिजकीना॥ चिरंजीवमम
सुनहृतलीना॥ तिनदेहतेपापुउपजाही॥ पुनसुरशिषियुधिष्टिरेवजोंही॥ ३३॥ धिनदुकाद
जनीयंचितवाधारे॥ देखाधृष्टद्युम्नबलभारे॥ सस्त्रखटाङ्गधनुखवानधर॥ दिजताररथके
सकीयेहतसर॥ ३४॥ द्रुपदजग्निवानपरहारयो॥ द्रोणसरवलेमणकरडारयो॥ धृष्ट
द्युम्नधरके॥ रजहाने॥ हसतहसततसरतजेमहाने॥ ३५॥ तेभीधनुषद्रोणकरडारयो॥ द्रुप
पत्रपुनशस्त्रप्रहारयो॥ धृष्टद्युम्नजोशस्त्रचित्ताले॥ भजवलधरदिजताहिकटाले॥ ३६॥ धृष्ट
द्युम्नरिसजगदानजाई॥ तेभीदिजवरकाटगिराई॥ द्रुपदपुत्रजतिकोपतपायो॥ रथतेकूदयम
तेजहिकायो॥ ३७॥ भारधैजुरेनाकरमाही॥ रकततेत्रभयरूपदिखाही॥ दिजकीओरसिंह
ज्योंजायो॥ दिजकोरिदेत्रासुउहिरायो॥ ३८॥ हुइभयभीतदिजवानप्रहारे॥ द्रुपदपुत्रसमुर
रभमडारे॥ लडपोनइकुसभुग्रुपापराही॥ सरनिरखावततनभविसमही॥ ३९॥ जवरस
कलयुधरेखनहारे॥ कटेधनधरवरद्रुपदकुमारे॥ द्रोणाचार्यउतरनिहारे॥ पतेदोरभजव
लजानिभगारे॥ ४०॥ निरखवलैवरसरपरहारे॥ इकतेमयोसहस्त्रदिखारे॥ दोरराधृष्टद्युम्न
तेषउजपरलनोसभीसरजाइ॥ हकसहस्त्रभयोषरउगुदिजकहेमुखपुजराइ॥ ४१॥ द्रोणा
वान्धनुदिखेसेहतोपवालकरणमाह॥ ईहिओहिसरधारधनुषपरकोरसन्मुखवल
वाहा॥ ४२॥ दिजमातवयारवकीचारे॥ दिजधृष्टद्युम्नकोहतेवलाते॥ हाकतरपुनताछिनतर
ज्ञायो॥ ४३॥ पुसपरमरपरहारजपायो॥ कीनसंग्रामदुहूमिर
ज्ञायो॥ द्रोणसन्मुखयुधउपजायो॥

३॥ स्वछ स्वरथर थयु धुमाहे॥ पाथरूपायके सो संग्राम॥ लरहि प्रसपरसलके धानाय
३९॥ इति त्रिजै नउत केणवलानी॥ दुहूं मो युद्ध परे जानि भारी॥ इन दुहू निनदो ऊसैनय
कने॥ भस्व प्रहार न सके नहाने॥ ४४॥ ऊसे धारे वल्ल युध भारे॥ रूपु नप गन्नहीप रत
विचारे॥ जो ज्ञाव सन्मुख हतु करही॥ सतपिन भ्रात भ्रात हत परही॥ ४५॥ दुर्यो धन जो दोने
सेन्या॥ देदे गारके हेमु खवैन्या॥ करी रेन्न हरि जग सम्रुख दायक॥ ना मो इन गदे युध दुख
दायक॥ ४६॥ रेनदिव सके युद्ध पारे॥ रूपु वाह चले जनि भारे॥ रथ रसिंध लु रथेजी द
धाने॥ जैसे भये रणयुद्ध भयाने॥ ४७॥ अर्जुन द्रोणदो ऊ युध भारे॥ नकुल दुर्यो धन सो व
लकारे॥ भीम सहदेव दो ऊर वस्तुत वर॥ करत संग्राम भार रण धीर॥ ४८॥ जैसे भये सं
ग्राम न हाने॥ नर संग्राम यासम नदिषाने॥ सुर असुर रण कीये कदाही॥ इन के
युध की सम्र धा नाही॥ ४९॥ सी सहाथ वगाके रे प्राने॥ तुंगतुं गागिरपरत महाने॥ धनु खष
उगु गादन् पणरूतजानि॥ जित कितपरे दिषाह रणसता॥ ५०॥ गज रथ जस्व वल ष वेर
नाने॥ ग्रोगिर परे पुन उठन सकाने॥ नकुल नपदाहन नकुल रवलानी॥ लरे मु जाके वल
धरमानी॥ ५१॥ परसर कीये जो वान भयपर॥ लजो धतीको ऊर निरस धर॥ चित्तेन
कुल सर जोर प्रहारे॥ दुसासन दोरपरे निहि वारे॥ ५२॥ नकुल दुसासन के संग्रामा॥
परे भरण दो ऊवल ग्रामा॥ कुरुनपलो निरसधनि रषारे॥ लेज धेम्यार थीरसोनि
कारे॥ ५३॥ नकुल वान परहार करायो॥ दुसासन जासार थीहतायो॥ दुसासन भीव
कुसर परहारे॥ कीये प्रसपर युद्ध अधारे॥ ५४॥ दिषसहदेव वल वान चलाये॥ दुसासन
नरथु के जास्व हतघ्ये॥ दुसासन दुहू सो युद्ध करावत॥ रिथक समझर भयनधरावत
॥ ५५॥ जाय सकुल नवल वान प्रहारे॥ रथ सहदेव के जस्व हतडारे॥ सहदेव नकुलदा
ऊडकर थमाहे॥ करन युद्ध उन सो वल वाहे॥ ५६॥ कुरु भीम के युद्ध जानि॥ पवूद्रा
रनपार निरखाते॥ भीम जान सभु क्रिये परा नाही॥ सहि सनमजो कदेवल वाहीं॥ ५७॥

रविसुत जे सर वैरि प्रहारे॥ ते भीम के तन सर मारे॥ अर्थ भीम के रथ ले जाये॥ भुज
नु रे ग कर का रि दिखाये॥ २१॥ भीम उर सभ रूसे निरखवे॥ रिस कर भीम कीनी गदपर
रख॥ दिखरांव सतानि जगदा प्रहारे॥ भीम गदा गहि ते जु निवारे॥ १९॥ करन गदा रथ भी
म पर ताने॥ करि धुजा रण भमगिराने॥ पवन पुत्र रिस वान चलाये॥ करणी धनुष चला
ये वल रूपाये॥ २०॥ दुर्जन धनुष बान न बरषा॥ अर्जुन धनु गांडीव समाना॥ रविसुत
कर जर बान प्रहारे॥ करत रथ के अस मार न मारे॥ २१॥ भीम पदातन भयो रण माही॥ कर
न प्रहारे तन सर वल वाही॥ ध्वज दुर्जन निरधन दोनों ये॥ निज रथ उपर लीयो चढाये॥ २२॥
पुनि अर्जुन द्रोण के युद्ध महाने॥ मन दो उसे हल रे कोपाने॥ अर्जुन इंद्र वान
परहारत॥ दिजभी इंद्र बान निहारत॥ २३॥ पुनि अर्जुन वरुण सु प्रहारे॥ दिजभी वरुण सु
ही डारे॥ परस परम ते जो सर पाये॥ परहारत अर्जुन वल रूपाये॥ २४॥ दिज भी ताहू के सम
सम वाना॥ अर्जुन उर प्रहरत महा नाना॥ तवदि जदि अर्जुन के वल जाना॥ उपमउ
चार की नरण भूमत तन॥ २५॥ द्रोण वाच॥ तुहि वल को रम जीको जाने॥ तुहि वलकी
को उपम प्रमाने॥ संजयो वाच॥ अर्जुन द्रोण के पग दिखाये॥ सरको ले जय कारम
हाये॥ २६॥ सुरेत वाच॥ जै से नृप की नेयु धरमा मा॥ दे बरम कत हुन जन काम॥ जे
षिन ब्रह्मा युद्ध करायो॥ दो उ चिर काल समान रहायो॥ २७॥ ते से ही नृप दोउ सम
माना॥ २८॥ रणमोकी ये से उभाम करका मा॥ द्रोण बुद्धि विद्या अधिकायो॥ वल नित्य के अनुग्र
जुन बढु गायो॥ २९॥ याते दो उ समान ते चार ही॥ दनु दव गन दु हू अधिक की
चार ही॥ संजयो वाच॥ तव दिज वर ब्रह्मास्त्र सं भारे॥ धनुषधर अर्जुन उर नि व
रे॥ ३०॥ निरखन देव सकल रुपाने॥ ब्रह्म पर क रम ख ते प्रगटाने॥ जो अर्जुन उर नि ह
न करे प्रहारे॥ सकल जगत कंपेसं हारे॥ ३१॥ अर्जुन भी व्रह्मास्त्र प्रगटाना॥ दु
हू की ये परस्पर ते जम हा ना॥ दोउ वान प्रसपर हरि सा ने॥ धनन्यो उठे रार र म प

माने॥२०॥ घन ज्यों शब्द स्न नप्राणत जाये॥ गजक्म सवार गजन्या गसिधाये॥ दुहू ते
निकसी ऋग्निऋ पारे॥ गजरथ कुस पाय कतिन जारे॥ २१॥ चपल ते जदोऊ नमे
च उये॥ व्रस्ल लोक इहि जाय समाये॥ कर्ण जेनद्रोण विरतक संग्रामा॥ करत भये
रण दोऊ बलधामा॥ २२॥ जैसे युद्ध विजिन हूनस ुनाये॥ जैसे इन्द्र दुहू पुगरदिखाये
दुसासन द्रुपद पुत्र वरवाना॥ परहार तक्रन गंतन महाना॥ २३॥ धृष्टद्युम्न बरवा
न प्रहारे॥ ऋस्रसारथ कार केहतडारे॥ दुसासन निजबल हीन जनाये॥ च उये
शकुन केरथपर जाये॥ २४॥ रथ दौराय रणम मस्याने॥ उयेदोऊ दिषदि जकुपजागे
सभ दोरेको रव निरषाने॥ हार्दक ऋरर तवर्म स्जाने॥ २५॥ द्रुपद पुत्र सोयुधु
उपजाये॥ नकुल सहदेव दोऊ पहुचाये॥ धृष्टद्युम्न द्रोण के सन्मुख॥ करत भये
रणम मदोऊ रुष॥ दिषदोस्थो सातक बलकारे॥ द्रुपद पुत्र कीरक्षा चितारे॥ सात
क को दौर तनिरषाये॥ दुर्योधन तासो पुगराये॥ २६॥ दुर्योधन तो बाच्य॥ हे सातक
तुम बाल सखाये॥ खेलत थे प्रसपर हितपाये॥ अब तुम काहे लाजन धरहो॥ हम सो हेम्स
न्मुख रण लरहो॥ २७॥ सातको वाच्य॥ लरका पन की बात गिहाई॥ ज्यों तुम पंडुवरण क स
गाई॥ तुम इन सो हितु का हनिवारे॥ रथ परथा सऋ व प्रसपर धारे॥ २८॥ दोर गास
न्मुख सातक के रण द्रोण युद्ध वरुकी नपुन्न दिष भीम पराक्रमी पहुच्यो युद्ध पुत्री न॥ २९॥
चौपई॥ कुरुन्नप सातक धनुषकरा ना॥ द्रोण युद्ध सातक सो गारे॥ करे भीमन सो युद्ध
क्रनगारे॥ सातक के सन्मुख दुर्योधन॥ करे दोऊ प्रसपर ऋनिरण घन॥ ३०॥ कुरुन्नप
सातक धनुष कटाना॥ सात ऋत्वरधनु हाथ गहाना॥ सातक भजरल सरपरहारे॥
कुरुन्नप क्रोधन करम कोरे॥ सातक रण मोसबल प्रगायो॥ दुर्योधन को निबल करायो
कुरुन्नप निबल रणभुमवे गयो॥ ३१॥ पुन कुरुन्नप
निजबल सभ आये॥ सातक सो धारे युध भारे॥ कर्ण देषत तक्राप ढुकाये॥ सातक पर

५१ सरम घवसाथे॥ ४५॥ पवन पुत्र सातक के हित धरा॥ कही बात चर गार विसतर॥ भी
म सैन भज वलुरण धारे॥ करर सघन चक्र तोर भमडोरे॥ करणबली रथ चक्र विहीना
देराघोर पुकारि तिपरवीना॥ ४६॥ दोहरा॥ रविसुत रथ रण चक्र विनदेरत चपल
समान॥ निरषत सभ विसमान हुइ कीर उपम पुगरान॥ ४७॥ ये गुन वलर विपु
त्रमोकर वर दूसेरो नारा॥ चक्र हीन रथ भनरणदेग वतन लवा है॥ ४८॥ चौपई॥ त
व धर्म जनै सी निरषाने॥ मुखते कहे व चन पुगराने॥ युधिष्टरो वाच॥ रविसुत सो
सुरपवनलरेरण॥ जानत हो रविसुत भजवलु पूण॥ ४९॥ दोहर भीमकी रहा करहे॥
व तुम समम करसे॥ घर है॥ धर्म जपचसुनदौरे सेरे॥ चदूडोर वलते जभरपे॥ ५०
पंचाल देसचसरवला री॥ भये द्रुपद सनमरवभारी॥ द्रोण धारवल्लुवने हताये॥
ज़िहिविहत रकतही द्विष्टाये॥ ५१॥ सेराजदे सचे योधवलीरी॥ कहीतो॥ हुह कीये यु
ध कीतिवलहीसत॥ दिजसरवलकरर थहन डारये॥ भये पदातपयायुधनानि
वारये॥ ५२॥ भीमदेषनि जर थेचतुराये॥ कहे वचननता सो पुगराये॥ भीमो वाच॥
हे धष्टदुम्न दिव तकहि भये॥ दिज को हत तेरा तुर रथारे॥ ५३॥ दोहरा॥ सत्तिचे
त्रदिज सोल गे हमदे संगत मारा॥ सुतन भीमकेवचद्रुपदसुत कोध युत रण भारा॥ ५४॥
देवा सुपरहरर केगुरसिषदो करणमार॥ उमपरम गलडाहु स्ही दिषसम उपमा गा
र॥ ५५॥ चौपई॥ नव्रष्टदुम्न दिजसुतेत जाये॥ पते मे न पुरकी वलुपाये॥ दसेघनेचे
धेरणमारही॥ निन कीडा नपरतवधुनाही॥ ५६॥ द्रोण कोप सरकीन पुराये॥ द्रुपदपुत्र
कीधनीनकारे॥ द्रुपद पुत्र न व मर रधपाये॥ दोरपरोरणमनतदाये॥ ५७॥ निजरथहि
जरथके निकर धर॥ मुखते व च नकहे दिज सो वर॥ भीमो वाच॥ हे दिजे चरनमहा
पुरसाकी॥ कीये जपतप सम तेजहि भारी॥ ५८॥ कच्छ हिरपरनु मरहता धारे॥ कहे न
कालजपुनेजानिचारे॥ ये सुतहे तौह रोह ता वा॥ धर्मजभीन हमारा सजाये॥ ५९

ऽथ विशिरनमित्रं तनुमर्हसि माधव ॥ उवाच तं केशवं हरिध्वजा समन्वरे ॥ संजय उवाच ॥ द्रिसमं स धर
योविचार सुपुत्र मम ॥ मोहयुद्धवजैः समभुवुधजन ॥ ६७ ॥ समर्क्तहिमितनुहनिसर पद्र चा
नी ॥ सुरजनशिषिजनर्की सुधर्मानी ॥ पुनधर्मजसतशीलसम्पादे ॥ अहो मो सो सस्मुधाम
हतारे ॥ ६९ ॥ स्तवितन्मुहिहजीव नाविहिकामा ॥ रथते उतरपन्थोशिषिनामा ॥ इति वचउके
शवदउवाचा ॥ कर्ण रूपासो कहीपुकारे ॥ ७० ॥ द्रोण उवाच ॥ अवपोडुवकी विजेपरेरण ॥ जिन
सोहमरणयुद्धकोरघपा ॥ सुधिकवुरी उनसोहमकीने ॥ कौरवानकेदेनपुत्रीने ॥ ७१ ॥ मो
कोहेदो अएवसमाने ॥ स्वहमजानजीयपुद्धतजाने ॥ तुमनीतुमजानोजेवारे ॥ उन
सोरणसंजवानन्निवाहे ॥ ७२ ॥ संजय उवाच ॥ पाभाषतदिजशस्त्रुतजाने ॥ वेदोरणयोजास
नधारे ॥ दाहनोजवामउरधराये ॥ वामवरनदाहनउरलाये ॥ ७३ ॥ येच सास सम
दिमोक्साने ॥ दसमेघारजायठहिराने ॥ पुनरसमघारकोभेदुजराये ॥ निजसजानरवि
समर्दिघराये ॥ ७४ ॥ द्रोणप्राणकीजोतसपारे ॥ पांचतादहेजाननहारे ॥ पुत्रमरहमरप
धर्मजभपा ॥ अर्जुन अस्त्रोअस्त्र सुधामअसनपा ॥ ७५ ॥ नपोन्वोविनादिसेनदेखी ॥ रहेवि
रतजरविनिजरतवशेषी ॥ चिरपाछेरविमाहसमाई ॥ द्रोणप्राणकीज्वालमहाई ॥ ७६ ॥
धृष्टद्युम्नतवरवउतानिकारे ॥ धायानेशिष्यतदिजकीनपुहारे ॥ धर्मजअर्जुनसमभुवरजाने ॥
अचशवदुमुखनेपुत्रहाये ॥ ७७ ॥ धर्मजोवाच ॥ हनशस्त्रसाजहरिध्वानलजाये ॥ निज
धारनदेप्राणनजाये ॥ निरतनअपरनिहिरवउतपुहासो ॥ विपाजसाउपजाबेतीचारे ॥ ७८ ॥
संजयोवाच ॥ धृष्टद्युम्नकापितुउनमारो ॥ तेवेरहियादिजसंहारो ॥ पितावेरजवचन
सुनाये ॥ निरतनकेदिजकासीसमुकराये ॥ ७९ ॥ धर्मजदोरतहाहाहाहूं ॥ मुखउचराये
वचनपुत्रहरमुहू ॥ ८० ॥ धर्मजोवाच ॥ हनसम हुकोविद्यादीने ॥ यासमदूसरनाहपुत्रीने
जैसेबिद्धक्षत्रसध्याधुद्धकसा ॥ रणभुमकीयेसकलयोधावसा ॥ तेअवजैसे पुधधरजीन
महाने ॥ रथधरदेहिसेमासउठाने ॥ योउसवर्धकेयोधवलारी ॥ यासमवलनसमेरणधारी

२४॥ त्रिय छाव स्यइन कैसी सीकी ॥ युकु झवस्य नहि लषी वृजीने ॥ जवनिजइ ष्ष इनश
स्त्रुतजायेम तववरप्राण मरलोक सिधाये ॥ ४४॥ जातरके जोयाहहताव त ॥ कोविरला
सन्मावदहि गवत ॥ हेद्रुपदपुत्र नुमनीकन कीने ॥ धंमसी सवसोपरवीने ॥ २६॥ २
पुनि हमनु मैर मुख नल गावै ॥ ऋति ऋपराधी नोहि जनावै ॥ ४९ दु ग्रादिजसी सदिघाये
लेउधो कुरनपके नि कराये ॥ ३३॥ धसो सीसधृष्टद्युम्न केरजाके ॥ मुख तेक है वचनऊ
चराके ॥ ४४ दु ग्रावाच ॥ दोहरा ॥ जिहि वलजारव वर हित तनुम देषो ताकासी स ॥ याही वि
धि समको करे जानो निश्चै वीस ॥ ३५॥ इति श्री द्रोणाचार्य वधः ॥ चौपई ॥ द्रोणवली कासी
स कटायो ॥ कोरवनिच तपीर तजायो ॥ कुरनप पथ सभ भागे भोरे ॥ पांडुव दिषस कलेह
कीरे ॥ ८॥ भीम कच्छधिक सभ ते हरषाने ॥ धृष्टद्युम्न के अंगन लसमाने ॥ ताके हाथ सीस हित
तभारे ॥ कसतप वन पुत्र वलकारे ॥ ९॥ भीम उवाच ॥ दोहरा ॥ याही विध जव हत पररसि
सु तले जुझवार ॥ पुन नमकोडहोसके समो ऋधिक हूँ सुचित धार ॥ ९॥ जे समंदर दीप
दिन न्यो पुरसे नदि धान ॥ पीत वदन सभ हीभये पुतरी काठ समान ॥ ८३॥ चौपई ॥
प्रसपर रनदे सभी वृभरायो ॥ जिहि भीष्म द्रोण से वली रनधायो ॥ जानो सभ ही मिरत क
होयो ॥ ता सो भर सभ दुनहि कोये ॥ २४॥ कुरनप पदपाचार्य कृत वरमा ॥ शकुन दुसास
न श्रालपुधृत रमा ॥ ऋसे लोक सुस मो ऋावरयोध घन ॥ द्रोणपोकारदन्ता हवि मनमन
४५॥ तेवत क्रेडुतार मुखनेवचा ॥ दिजवि न ऋव सभ मेरे रणसचा ॥ तवऋमस्व थामऋ
पधुभरे ॥ पिता मरण की सुधन हीधारे ॥ २६॥ ऋस्वथामो वाच ॥ हेकुरुनप धरि केने
वाना ॥ रण भूम न जसमो घेवडु गाता ॥ मोहि पिताकी मेसवलु कीने ॥ ऋरकी सेन घनी हत
लीने ॥ २७॥ भा डाजा त हे पांडु व भारे ॥ मुहि पितु को वलते जुद्दिघारे ॥ येकै मेसहो दुस सब
रे ॥ भरेभ मरण सभे संहारे ॥ ९८॥ तवे ऋान हो नि ऊदेसमाने ॥ नमति उ ऋमेर ताेत जानि
सुमवन्दि जरऋा मरण सुनायो ॥ दिजम नमन तागो सुरछायो ॥ २९॥ दुर्योधन सो

चौ॥ दोहरा॥ दिज सुत नृप हि पिन हत भयो॥ नृप मद्रो कधु सध नाह॥ पांडु वा न करन पट ऋति करवेो
सीस रण माह॥ ५०॥ बाको सुत गादी करे हे धर्म पुत्र वर नाम॥ तिन कृष्ण सारथा दई करे पार हते अ
स्थाम॥ ५१॥ चौपई॥ नृप हि पिन नृप मन राम रण सुनायो॥ धार ओ करण सम्हत जायो॥ तिन हि श
स्त्रु दि खडु पद पुत्र नता॥ करपट धार करि दिली न सीस सत॥ धर्म पुत्र तिन हि जग पुत्र कहायो॥ ते तै
से वकप री दुष्ण पायो॥ नृप हि पिन मरण ह मऊ जानि चिंता कीन्ही॥ कधु उपाव न हीं दुदेल था कीन्ही॥ ५२॥
पाते ह मसी से न लखानी॥ रथ कही न ऋधिक भय मानी॥ कुरु नृप के या वचन सुनायो॥ पुन
शिर वरे भूमारी पायो॥ ५३॥ मरण तन कहि दिज सुत पितु सो के॥ चिर तन करयो म रथा तेके॥ पुन
सविधान होत ते पाने॥ म रख ते भाषे वचपु गदाने॥ ५४॥ कसत्य पामे वाच॥ कहंत सम से म र
ण न गमाही॥ विन जगदीश रहे को नाही॥ मोहि पिता वरु पुष्ट करायो॥ तजे प्राण गति भार
धरायो॥ ५५॥ अश्वत्थामा हत ताको वेर गहावे॥ द्रुपद पुत्र को रण हतावे॥ से न सहत ताको हत
ओरे॥ द्रोण पुत्र तव निज प्रगटो रे॥ ५६॥ जव लग प्राण महि देहि म ऊरे॥ कहे या पुष्ट करण भु
म सो भारे॥ सभ पांडव मुहि हाथ पराही॥ करो वेर रण जगु दिखराही॥ ५७॥ जो पितु ते
पायो वर वान॥ नारायण स्त्र जिहि नाम वखान॥ ताम करपु हार कर रुऋरस कल प्रहारे॥ श्री
यदुपति को निहि सुध धारे॥ ५८॥ संजयोवाच॥ भाषत को पे वान प्रहारयो॥ रोवत रे
वे धन षट कारयो॥ पांडव दिज का श वदुस नाई॥ कसत्थाम धन बल खव रुभय पाई॥
६०॥ द्रोण समान होय प्रसप रभाषे॥ द्रोण पुत्र के वरु भय गाषे॥ इहि ऋसत्थाम पितु शोक धरा
ये॥ कोऊ वताके सन्मुख जाये॥ ६१॥ श्री यदुपति सभ हो इकठाने॥ भाषे म रख ते वच
न महाने॥ यदु कृष्ण जाति वुकी ऊनाई॥ ऊहो सीस दिज को लकराई॥ ६२॥ जो सभ कारु
रे जा न कपाते॥ हम रेहि तन रण शस्त्र तजा रे॥ द्रुपद पुत्र निहि शस्त्र दिखाने॥ ऊरे सीस
ताका कप हाने॥ ६३॥ हम यदुकुल के मुख न लगाही॥ उ कौन को पसा तकनि हि माही॥
सात को वाचा॥ यदुकुल को नाहत जावे॥ ऊरे वान जति ऋ दीलखावे॥ जदा हाय जर

५५

उ

सेनेभारत॥ द्रुपदपुत्रलीयोधगुसंभारत॥१४॥ दोहरा॥ यदुपतधर्मजपवनसुततीनोउठे
सजान॥ दुहूंकोलीयोधृष्टद्युमनबसमतसतरमरेमहान॥१५॥ दिजसुतपांडवहतनकोप
रहारथोवलवान॥ चलतसहसदिषानसरऽस्त्रगिनतेजुधजरान॥१६॥ चौपई॥ पुनर
उज्वालसमानदिषाई॥ भमरातेजरवितुल्यमहाई॥ सैनानिकरऽस्त्रायेसरभारे॥ रथ
ऽस्त्रसुतजनऽस्त्रनगनततप्रजारे॥१७॥ पांडवोवाच॥ हमरीगतिदिहूंहभ्रंतदिषाई॥ दधितर
जोपदजलहिङुवाई॥ भीमप्रतिनानाड्रोणसेहारे॥ ऽस्त्रवरषेनेचउथोघहताने॥१८॥ द्रोण
सषामारमकोहतउरहि॥ नीरुमरेजलसोजिनमऽरहि॥ तबजगयोंऽस्त्रवजुनामिट
जावे॥ नातरउद्भुतलनउपजावे॥१९॥ ऽदेजगतपांडवबलवाने॥ ऽस्त्रस्वधामेवलरणे
हताने॥ सातककोनपलीयोतुलाये॥ द्रुपदपुत्रनासंगसहाये॥२०॥ दोनोमोधर्मज
मराने॥ जिनदेसैनमजाद्रुमहाने॥ रोरवोऽस्त्रजिनजारनसकाई॥ हमसमजरहैऽस्त्र
गिनजगाई॥२१॥ अर्जुनोवाच॥ दोहरा॥ ऽदेजरहेऽस्त्रजिनतुमकरहेपरहरवान॥ ऽस्त्र
सरज्वालीनवलनेमिरहेहितमहान॥२२॥ ऽस्त्रजैनवलीधनधवउयतजा
ना॥ सीतानेज्वालनउगिसमनेजमहान॥२३॥ चौपई॥ ऽस्त्रजैनज्वालमहाने॥ चौ वानकी
पई॥ दिजरेवानकीज्वालगिराने॥ ऽस्त्रनज्वालाघरतदिषाने॥ सबयदुपतिदिषमु
रवउचगाने॥२४॥ नवदृष्टिऽस्त्रजिनमिरेजानेसत॥ रथतेउतरपरेसभवलज्ञाता॥ वृष्ण
चर्ढहरेहेरजोरे॥ करोविनीरहताचतऽस्त्रनिउरे॥२५॥ नवईहज्वालमिटेऽस्त्रतभानी॥ ना
तरसभमकेऽरेमहानी॥२६॥ भीमोवाच॥ तदासायधाऽस्त्रजिननिवररहे॥ देथोसभुजेसबनु
धरहे॥ भावबदेरथोगदाउवाघे॥ उघोज्वाललेनिकरमहाये॥२७॥ दिजसरज्वालऽस्त्रवि
भवरनासो॥ वभीमपरतेजुऽस्त्रभनसो॥ पितेभीनुसरनाहसकायो॥ भीततनामिरहेमो
नरहायो॥२८॥ भीमभवानोचान॥ जोरमकरेनेउनमकरहे॥ वृष्णचर्धेऽस्त्रपुनेतनध
रहे॥ वउसनरहिनेवानसुनाये॥ वृष्णचर्ढभपरथिरतजाये॥२९॥ द्रोणायधरेजरज्वाल

महाये॥दोऊकरजोरेसीसनिवाये॥कीन्होविनेतवज्वालनिराये॥भईगोतमसभूहर्षपुनाये॥१२०॥दिज
सुतादिषकुलनंदपेउचारे॥विनहरिकोईहिज्वालनिवारे॥१२१॥दोहरा॥हरिविनहमरेवान
कोकौनमिरावैज्वाल॥प्रभुनीलीलाहरिधरेमेटधरीनतकाल॥१२२॥कुरूनंदनपठएहीम
रहेहदिजकेरोपुकार॥दूसरवेरेनपरदूरोगअधोदिजवरवलभार॥१२३॥चौपई॥दुर्योधनने
हूवारउचारयो॥दिजसुनतवदूरोसरनपुकारयो॥संजयोवाच॥हेराजनदिजसरकीज्वा
ला॥जारीधूहनसैनानिशाला॥सरकीअगिनिसोनदिखराये॥कुरूनंदपदिजसुतसोउचा
राये॥१२४॥दुर्योधनोवाच॥तोहिपिताकेनूणसजारे॥यासुसानसरधनेउचारे॥जिह
नेजोहिअरसैनसंहारत॥सुभपरसवलपुवलवलभारत॥१२५॥जाधदिजसुतपिनतूण
गहाई॥चारतनकुलनंदपपठलेजाई॥धरदुनूपनदिएपराने॥अज्ञावतनमनमुखमम्मुहा
हाने॥१२६॥दिजदिपकुंधतवानपुकारो॥चलेपुदहूनोअतिभारे॥धरदुननूजोवान
पुकारही॥दिजसुतनसमीहदुरदोकरही॥१२७॥अश्वतद्धाणसुतसवलपराये॥अस्ररथ
कोऊसमाधघाये॥वानपुकारदोहिधितकीने॥भयोदुपदसुतहोयअधीने॥दिष
सातकदिजसनमुखआये॥संजामभारदुहूरणउपजाये॥१२८॥सातकवलीअधिकवे
लुपाये॥दिजकेअस्वसारथीहताये॥पुनसरववुधनसाहरलजाये॥अरकीधातीवे
धदिखाये॥दिजसुतसरधितमनवहाये॥कुरूनंदपठएतातेदोराये॥१२९॥दुसासन
त्रिहिसंगसहाये॥त्रिहिसंगसैनघनीसुतपाये॥तीनोसातकसोयुधधरही॥वानव
र्षसातकपरकरही॥१३०॥दोहरा॥सातकवदुसैनाहनीघायलकरीअपार॥अस
मापुनपायसुधदोरायोपुनभार॥१३१॥रथविहीनदिजकोनिरषसातकसौउचा
र॥अज्ञाअमेतुहिपितुमयोतारहनहतोसुचार॥१३२॥सातकसोंदिजपुत्रमोपरेपुष्टभ
यमान॥दिजसुतकेपुनसारथीसातककरतेसमहान॥१३३॥संजयोवाच॥इहिविधिदुन

स

ऊँ मैं न मो सात न क पघोवलारा॥ दसहू स्वगजद्दतुपरे तै सहस्वरघुभारा॥१३५॥ पंचाससदस
पापकहे तेसातनकसमवलुलीना॥ तामेदिजस्सतपापसधस न्ह रखभयेप्रवीना॥१३६॥चौ॥
पुनसातनकजौदितस्सुतमाही॥ परेसंग्रामनगालतनकछुनाही॥ तीस्सवानदिजस्सुतपरहारे॥
पंचवानकर्णसुनवलभारे॥१३७॥ दिजसरतैकर्णसुनपरडारे॥ दसयदुपतिकीउरप्रहा
रे॥ पंचवानभीमकीउरे॥ नकुलसहदेवपरदोवलधारे॥१३८॥ धनीसैनदिजस्सुतह
नकीने॥ वहुयोधानामीहतलीने॥ हर्षसहनदिजस्संघवजायो॥ कर्णनसातनसणको
पायो॥१३९॥ चारतदिजस्सुतसोयुधधारहि॥ धर्मजवर्जोवलतिहवारहि॥ धर्मजोवाच॥
कर्णकेहीपाकसितुहाना॥ याकोनाहहनोवलवाना॥१४०॥ मतजगयुगरहेनिरहसंगी
नातेहसेनहतोवलजानी॥ सुनकर्णसुनधर्मजकेवैना॥ दिजस्सुतसोभयोप्रिगनैना॥१४१॥
कर्णसुनोवाच॥ हेदिजसुतमगुरपुत्रहमारे॥ याते धनुतेहारराभारे॥ नातरनिजदेयतजो
रहे॥ पद्मनकासुनजानविचरेहो॥१४२॥ हमभीतुमकोनिजसिवजाने॥ धनुतेहार
लभसमहाने॥ नातसुनवलसैनसणजारे॥ रणतेहावलप्रगटविचारे॥१४३॥ कर्णसुन
उच्चार॥ तुमसोहेदिजतेसैकरहे॥ यामेदसुधिनविल्मुनधरहे॥ कुमस्थामोवाच॥ तु
ममोहिवचनसाचनहीमाने॥ हमकपनीजानेनपधाने॥१४४॥ पूर्वेजयोवाच॥ त
वहकदिजस्सुतकानप्रहारयो॥ रहुदिनामुजिरहमनउच्चारयो॥ मेतनसरतेकडिनलि
कासी॥ भानसमानजोततवभासी॥१४५॥ छिनछिनवधेससमनदिखाने॥ सरदेवत
नभमोपुडाराने॥ पांडुवसैनतनीजीघकाम॥ सभुमाघेरहिकालप्रकास॥१४६॥
जेपासरले जीवनजाने॥ नितमसमानकारनलपावै॥ दिकर्णसुनकुलसपरो॥ पांडे
भीवडुमाल निकरो॥१४७॥ दिजकेसरकालेजनिवारे॥ परेजापवुलसैनसकरे॥ गजसत
सुपाषकरपसहवधूरहन॥ करेरादहुससैनसमूहन॥१४८॥ पांडुवसैनभईहरखारे॥ विजे

संबवाज्ञेयुनभारे॥१४४॥ दोहरा॥ दिजसत्तंचिततरिसकृपुनधनयचज्ञायोवान॥ इहिमोपुगोरे
व्यासपुनकहेमुखतेपुगरान्मा॥१४५॥ व्यासोवाच॥ कहाकरत्तदोपुत्रद्दिजपरोसकलेजुग
घातं॥ दोधूहनन्नुहियकुतेभईसेनमस्मातं॥१४६॥ चौपई॥ दकुधूहनन्नुमपोछवसेना॥ ह
तुकौन्नीहेदिजसुभदेना॥ दकधूहनअर्जुनसेहारी॥ तुरसैनाजिजवानप्रहारी॥१४७॥
येवाहोहरहोअर्जुनपर॥ सवलपरोरणमोभुजवलधर॥ इहिकवहूनहिदेख्यसजान्या॥
मोहवाकसचजानमहाना॥१४८॥ येनुमवानसरस्वपुहारो॥ अर्जुनपरकधुम्रमननवि
चारे॥ अवरजतकेलोकरताही॥ त्रिपयापतुहिस्मीसलजाही॥१४९॥ दिजसुतसन
तव्यासकेवचवर॥ पुत्रंचधनषकोतारधमोधर॥ हायजोरवहूमदनकरायो॥ चित
चितधरमोनरहायो॥१५०॥ वहूरव्यासअर्जुनपयआयो॥ मुखतेभाखेवचनमहायो॥
व्यासोवाच॥ तुमभीष्मद्रोणसेवलीहताये॥ मनजरवावोरिदेमहाये॥ जवतुमनरन्नाराय
णवपुधर॥ गिरवद्रीमोकीनेतपवर॥१५१॥ छिअजामीससस्त्रवर्षतपुकीने॥ दकपगभागहि
वाउपुवीने॥ तायहिफलुइहियुद्धसंभारे॥ भीष्मद्रोणसेवलीहतारे॥१५२॥ रविसम्तकोभ
रतोवलानी॥ इहिनिहचाराघोजीयमानी॥ जातरऊोसमर्थजगमाही॥ दजरेसम्मुखवजहि
वलवाही॥१५३॥ संजयोवाच॥ इमपुनीविजेजीयतेज्ञानो॥ मनोनिवसनाकधुगर्वपछाने॥
दोहरा॥ सुनकअर्जुननवचव्यासकेरधुनजदोउकरजोर॥ व्यासचर्णपरमायधरविनतीकी
नेअतिओर॥१६०॥ ज्ञानीकर्णईपाकौनिजवलगर्वनिवार॥ दसमलालहरिकौकृपाज्ञा
सौनिजपरभार॥१६१॥ घामोरहितलोपतभयो संध्यापतीदिसान॥ दोउसैनारणमनत
जगयेनिजनिजडस्यान॥१६२॥ द्रोणपर्वपूर्णभयोपंचदिवससंग्राम॥ भारीयुद्ध
धरयोधरणगयेशिवपुरीमहान॥१६३॥ दसदिनयुद्धभीष्मकरेपांचद्रोणवलवान॥ र॥
पर्दूहिदिनकौरथ्याकहिलदमलालप्रगरार॥१६४॥ पदेसन्नेयापर्वकेवलुसनरमतउप

५७

नाथ॥ त्रिविध त्रिविध कष्ट हैं जगत नर हमलाल सुखपाय॥ रहमलाल भाषा करी यथा बुद्धि पुराण

थ॥ अधिक उनदिन मो हर पर हंसो न उनी नहाय॥ १६६॥ रहमलाल यागं पनो धस्यो

नानुपुराण॥ व माधीन ल ज्ञान होइ मेरो नाम नहाय॥ इति श्री महाभारते पुराणे द्रो

णपर्वणि पंचदश दिवस युद्ध समाप्तं॥ शुभमस्तु॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ॐ श्री गणेशाय नमः॥ अथ कर्णपर्व भाषा लिख्यते॥ दोहरा॥ सरस्वत्यै गजानना

न उर हरि गवरी सुत गननाय॥ रहमलाल तिहि के पद भाषा कीन बनाय॥ १॥ कर्णपर्व ६

अरु मनकथ्या करेता हरबद्यान॥ यथा बुद्धि नर बुध जनो श्रवण करे धरध्यान॥ २॥ द्रो

णचार्य जब रन भयो महा बली बलमहा॥ कौरवान की सेन सभ दीन चिंत न कीसल॥ ३॥ चौ

पई॥ सकलसेन चित चित न विचारे॥ निज जीवनकी आस उतारे॥ द्रोणाचार्य से बली

हताये॥ अब को जोर रणगरा रहाये॥ ४॥ इहि विचार सो रचिंता ने॥ दुर्योधन धर धीरव

घाने॥ दुर्योधन वाचा॥ देवल गाने नुनमम् हित॥ कोउ जाक न भारस चेता॥ ५॥ द्रोण

हते तौ चिंत न धरहे॥ कर्ण बली की उर निरवरहै॥ सर्व शस्त्र अस्त्र को ज्ञाता॥ रणअमोर

बलकी यो विख्याता॥ ६॥ तापर अस सभ रो सभा भारी॥ राघतेश निज हरि दे रिचारी॥ वसुसेना

सो चतुरवध धारे॥ निरस्वा करे निबल कर डारे॥ ७॥ कर विचार देख्यो जीय माहे॥ हमेरी

रस्मे रबल सवाही॥ हम भी उन ऐदू नेबलारी॥ अभ मन नमेयो धेबलभारी॥ ८॥ पुनघरे

रन चक्रनी तवल कीये॥ हि हुव उरते जन मुडभीरे॥ चतुरस्र रमारण वलकारे॥ माथाकी

दिया व्रिहस्पारे॥ ९॥ ऐसा साया धार्मी हतान्या॥ अवर पुष्ठी करयाकरे सुजाना॥ भीमसे

न जावलीकरहादु॥ दमसर सब अज मनवलबाही॥ १०॥ बईबार ताका बलसेरेया॥ पुजर

लीन बलकीयो रणमे सेया॥ इहि निरस्वा धीरे मन न माही॥ दुहूसेन यास न कोउ न्याहो॥

११॥ चतुरगई बलबुद्ध सररण॥ धीर्घ वान उदार पानसुण॥ ताहि सेन पति करोहि साने

हतेश्वरेतुकौरव्येबलवाने॥१४॥ दोहरा॥ दुर्योधनस्त्वसंवचक्रहेपुत्रस्तसमाजेमाह॥ स्युनत
कर्णागारजमयोमारवाहपरवाह॥१३॥ अरिहवड्ड उच्चैशब्दसोमभीमस्तेनोमृहिवेना॥ रणमोप
रोभजानवलकरोशत्रुनिहचैवना॥१४॥ समहीतमदेघोषरेकहाकरोछिनमाह॥ समभि
शत्रुजानोमृत्येभेदुमर्मकध्वनाह॥१५॥ संजयोवाच॥ संजेर्योहृधृतराष्ट्रेसुनोमपवल
कारथकर्णपृच्छदेदेवनकरोसमभिदनतेक्षतिभारा॥१६॥ चोपई॥ द्रोणगुरुभीष्मसीपतामा
अर्जुनहाथमयेवलधामा॥ बहुकरणभातीवलवाहा॥ हतेरलेक्षर्जुननरनाह॥१७॥
कर्णकर्णधृतराष्ट्रस्तनायो॥ चिततातिस्योधरनमुरछायो॥ समभीजान्योमरतकहोये॥
नारीपुत्रवदेवदुखरोये॥१८॥ वहुविरलापपरस्योतिहिकाये॥ कहणनकहावेकोपुत्रायो॥ वि
दरक्षादस्तनस्तनसमभरोये॥ निहस्मधपस्योनिर्घवोरोये॥१९॥ धिकरकगुलावदीजनेकर
रहे॥ हायहायवहुशब्ददउचरहे॥ सुनवहुशब्दमरछात्याडे॥ संजेमोद्धृतराष्ट्र
डे॥२०॥ धृतराष्ट्रोवाच॥ भीष्मद्रोणकर्णासेमारे॥ दुर्योधनकीकहाअवारे॥ जानतहोवीर
भीहतहूयो॥ उतहीकेक्षाडेलरमयो॥२१॥ संजयोवाच॥ संजेकहतनिंतमनतकरेह॥ दुर्यो
धनजीवतनिवनधरेह॥ कृष्णक्षिरसवसंजेकोदीने॥ तवधृतराष्ट्रपीछेलीने॥२२॥ पुनर
धृतसंजेकोवेना॥ वहीचितधृतराष्ट्रकेचेना॥ द्रोणपृच्छमोजाजोमारो॥ पुत्रदनमकहो
स्यारेन्यारे॥२३॥ संजयोवाच॥ पृथमशकुनजोमलवाधी॥ हसयोभीमसेनवलसाधी
शेजलमरीतिहिस्वोणवलारी॥ कृष्णोभीमसमभदुर्वेनिवारी॥२४॥ वेणनहाडलीकसत
सरे॥ क्षवर्गविकणमहावलमेरे॥ दुर्मुखदुसाहियोधसुतेताहा॥ हतेभीमरणाकरवडु
रोहा॥२५॥ पुनवीवदुर्योधजितहपृच्छकहान्ती॥ कहेनपरतमहाभयमान्ती॥ सरपतसनकर्जु
नवलभारे॥ तातिमारथोरणकृत्यारे॥२६॥ दुर्योधनसतलक्ष्मनसुरा॥ हतोभयमगद
केरूरा॥ दुसासननिकरभजवलुक्षधराना॥ क्षवरक्रहदवलवडुवलवानाभार॥२७॥ सर्जि

५८

तमप्रपन्नावीजंबला२॥ इहैवमृत्युस्तेस्ममम त्वयुद्धसात्॥ मगदंतमपपन्नामसवेस॥ मास्योऽस्त्र
जैनवेजोद्देनेस॥ ३०॥ दोहरा॥ सोमदन्तमप्तम्भवाभानीबलाञ्जिहिवाह॥ तेमोरेसातमवली
वडुनेनरणमाह॥ ३१॥ पुनरनमंऽनदशक्तस्य तद्हतकौन्तेसहदेव॥ ऋवरघनेबलविक्र
मीरणमोमरघेऽस्मेव॥ ३२॥ एवमुक्त्वाऽलेवसवऽनुस्यरञ्जलायुधमायात्पपा॥ दोजोबलीपु
केनवरोनवज्रदेतेऽग्नन्व॥ ३३॥ अवरस्यतेनमरोहतेस्यरथोरणवलुधार॥ जीहस्यजोव
जेनहेषधोभिनभिन्नविसा॥ ३४॥ इतिश्रीमहाभारतेपुराणेकर्णपर्वणिदुर्योधनवचो
योधरणमट्ठहतेनामसप्तपमोध्यायः॥ ५७॥ धृतराष्ट्रउवाच॥ चौपई॥ देसंजेमृहिंडेतरवला
ऐमारेसरमहाऽग्नन्यारे॥ नामस्यनतञ्जिहिचितचितावहि॥ ऋाधिवशोवसोरिदा
तपावहि॥ १॥ संजयोवाच॥ हेधृतराष्ट्रपोऽहवउरे॥ जोहनुभयेरणबलघोरे॥ तिनके
नामसुनोधरध्याना॥ जिनोकीनवलुतेजमहाना॥ २॥ प्रथमेकृतभोजबलसरा॥
सर्वजिनरणमोयधकुरुस॥ दुहुयुद्धरणभजवलकीने॥ तेदोनोभीषमंहततीने॥ ३॥ पु
नवैरारद्रुपदवलभारे॥ दोउअगमोररणमोऽग्नन्यारे॥ विकर्णअवस्याद्रोणहताने॥ रण
मेयाममतेजुनरगाने॥ ४॥ पुनअर्जुनमुतऽस्मभमतजामा॥ जिनकीनेरणवलुसं
ग्रामा॥ चेकानहसैनमोजाये॥ वहुस्यरेवलुधारहताये॥ ५॥ येदुष्कर्णादुर्योधनसरे
द्वितऽस्मस्यद्यामावलीकरे॥ ऋवरदुसासनजनितनमुतमहो॥ डीहघटइकेठेमयेऽस्र
भंडो॥ ६॥ सध्याजसभजोसिसुनाहततीना॥ कर्णीतऽसचर्यकरञुनिनकीना॥ धृष्टदे
सपुरजितनवलवाने॥ दुसामसनहततरल्लीयेभयाने॥ ७॥ भोजराजवडुसरस्यमगाहा॥
सपदाधारहेसवलवाहा॥ द्रोणपुत्रऽस्मसुपामास्सरे॥ हसेयुद्धकरवडुवंलुधेरे॥ ८॥ ऋवर
सरमेरहनेऽस्मडेला॥ जाकीतणनजपावतऽस्मेता॥ मृतमसवधृतराष्ट्रविसमाने॥ संजेसे
मलवचनवधाने॥ धृतराष्ट्रउवाच॥ दोहरा॥ तोहनामवडुनीतिलेजोरणमंमहताव॥

भीषम द्रोण अस करण सुन मो हरि दातप ताना ॥१०॥ इक भी इन ते जीव तार हैं तम जा वल भार
नि जन सत सभ वोध वस हत जीव त अस सञ पार ॥११॥ इनि पांडव सैन तो धह तन नाम
स रख्या ॥ चाम रछेद ॥ अब मतो का कापरम रो सा की जीये वड जान ॥ जानो सभी निरत
अपरे दुर्योधनादि सु जान ॥ चोव रे रधाइ नो की रणमाहि धीर्य धार ॥ सन्मुख घरो रेम
रो के व धन हपरन विचार ॥१२॥ अब कहो जिहि विध म ये यो धे ज्यों कीन युद्ध प्रकार ॥
संजेस न न धन रष वच उत्र रके ध्याविस तार ॥१३॥ संजयो वाच ॥ जब द्रोणह नुहे ये
वली धीर्य दृीयो सभ स्याता ॥ दुर्योधनादि चिंता न चित भये जीवन सभ भाता ॥ कर मंत्र
इक हे करण कोको ये सैन पत व उमान ॥ वहु उपम धार सम म तरे भार वलु गुन ज्ञा
न ॥ जव करण सेनापत भयो सभ धीर धर हरखान ॥ वादे मु जा वल ते ज चित न चित सया
ग सभु गर ज्ञान ॥१४॥ सव सम न को मुख ते वचन भाषत करण सर वड ते ज महि प्रथम
ही दिह कहाया मान्यो वम पञ्चमे ज ॥ भीष्म पितामा द्रोणचार्य त्रिह्रे ते शिहि दोइ ॥ काहे क
र ते हे ये दुरगम मो अस रो सन्मुख होइ ॥१५॥ इन की सव स्या त्रिह्रे यो वन भुजा वल
सोइ ॥ नुम न्मा ह मान्यो वचन हमरा रण हता ते दोइ ॥ याते व आख मु भयो अस व सम
को विचारे सोइ ॥ अब व हस मोवे नाहि शत्रु पिरे फुलत सोइ ॥१६॥ मे एक साही शत्रु ह
त सभ पम पुरी पहुचाता ॥ प्रथम मीहि जो वचन मानत अस वज हते पछुतान ॥ तैसे सेव
चन सुव करण हरख्यो दुर्योधन मम ॥ उर ते सिहासन ज्ञार वेठायो वली अति अनप ॥१७॥
कीनी पुत्र कना करण कौ वलता हि उपम उचार ॥ माण्या चिवायो न प सभे वड सर वीर ही
चार ॥ सभ जे अस र सन्मुख घरे ये हीन वचन उचार ॥ अब तो हप रभ ओही भरोसा मेर
हो दुख भार ॥१८॥ निवे लव करे सभ ऊरे के निज धार प्राक्रम बाहवल निज उपम सन
द रख्यो करण शिहि मो सम मावे नार ॥ वड व्ही दीने सेन क्रो बस्त्र अनेक प्रकार ॥ अजर थ अ

੫੯

ਮਸੁਖਪਾਲਕੀ ਸੈਕਰੋਨਿਵਲੀ ਉਦਾਸ ॥੧੫॥ ਉਠ ਚਲੇ ਰਣ ਜੀਤਿ ਚਾਰ ਘੋਰੇ ਚੜ ਤੁਰੰਗੀ ਹਿਤ ਸ੍ਵੇਤ ॥
ਖੁਜ ਸ੍ਵੇਤ ਸਾਜ ਸ੍ਵੇਤ ਸੋਭਤ ਸ੍ਵੇਤ ਨਗਹਿ ਸ੍ਵੇਤ ॥ ਜਾ ਜਾ ਕਰੀ ਰਣ ਸੰਖ ਬਾਜੇ ਸ੍ਵਰਗ
ਭੈਮਾਰ ॥ ਕੀਚੋ ਮਸਤ ਕਰ ਜਪਰ ਚਲ ਰਣ ਧੀਰ ਸੈਨਾ ਧਾਰ ॥੧੬॥ ਮਰਦ ਹੋਰ ਨਿਜ ਠਾਢ ਭਯੋ
ਦੁਤ ਹੋਰ ਸਾਕੁਨ ਕੁਚਾਰ ॥ ਭਯੋ ਸੀਸ ਜਮ ਧਾਮਾ ਵਲੀ ਜੀਵ ਯੇ ਦੁਖ ਸਤ ਨਿਹਿ ਵਾਰ ॥ ਭਯੋ
ਪੀੜ ਚੜੇ ਜਹਿ ਦੁਰਯੋਧਨ ਮਧ ਦਿ ਦੁਰਗ ਧੀਰ ॥ ਸਭ ਹੀ ਖੇਲ ਏ ਡਿਹਿ ਵਿਧੇ ਜਪ ਨ ਜਪਨ ਦੇ
ਰਸੁਧੀਰ ॥੧੭॥ ਦੋਹਰਾ ॥ ਦਾਹ ਨ ਦਤ ਰਮੀ ਵਲੀ ਰਪਾਚਾਰ ਵਾਸੇਗ ॥ ਪਛ ਹੋਰ ਠਾਢ ਭਯੋ
ਸਕੁਸ ਦ੍ਰਿਹਿ ਨਿਹਿ ਭੰਗ ॥੧੮॥ ਛੰਦ ॥ ਮਰਦ ਹੋਰ ਹਿ ਨਿਜ ਕਰੋ ਚਖੁ ਭਯੋ ਸਕੁਨ ਦੋਹ
ਛਲ ॥ ਜਮ ਧਾਮਾ ਕੀਯੋ ਸੀਸ ਜੀਵ ਯੇ ਦੁਖ ਸਤ ਚੜੇ ਨਲ ॥ ਦੁਰਯੋਧਨ ਦਿਗ ਪੀੜ ਤਤ ਚ
ਰਮਾ ਦਾਹ ਨ ਦਿਗ ॥ ਰਪਾਚਾਰ ਵਾਸੰਗ ਸਕੁਨ ਕੀਯੋ ਪਛ ਚਮਲ ਦ੍ਰਿਗ ॥ ਡਿਹਿ ਭਾਂਤ ਸੈ
ਨਾ ਚਲਤ ਬਾਜੇ ਘੁਲ ਜਾਯ ਸਭ ॥ ਕਰੋ ਸਰ ਚੜ੍ਹੇ ਵਲੀ ਰਮ ਸਾਲ ਦ੍ਰਿਤਿ ਮਾਰਛ
ਵਾ ॥੧੯॥ ਦੋਹਰਾ ॥ ਮਸਤ ਕਰ ਸਜੇ ਸੈਨ ਸਭ ਕਰੋ ਸਵਾਜ ਚਜਾਯ ॥ ਕਰੋ ਵੀਰ ਰਣ ਕੋ ਚ
ਲ੍ਯੋ ਸੈਨ ਜੁਧ ਵਿਸੰਗ ਲਾਯ ॥੨੦॥ ਡਿਹਿ ਬ੍ਰਿਤਾਂਤ ਸੁਨ ਧਰਮਸੁਤ ਸਰਧਾ ਨਸੁਤ ਸੋ ਵਚਨ
ਕਹੋ ਦੇਖ ਸੈਨ ਕੀਯੋ ਕਰੋ ਚਢ ਨਿਜ ਸੈਨ ॥੨੧॥ ਮੋਹਿ ਮਰੋ ਸੋ ਤੋਹ ਪਰ ਵੀਰ ਸਨਮੁਖ
ਹੋਡ ॥ ਉਤਰ ਦੇਵਾ ਕਰੋ ਕੋ ਤੁਮ ਵਿਨ ਜਪਰ ਨ ਕੋਡ ॥੨੨॥ ਜੋ ਜੋਗਾ ਚਾ ॥ ਹਨ ਪਾਵਤ ਨਿ
ਸਾਨਨ ਕਰ ਹੇ ॥ ਕਹਨ ਕਹਾ ਨਿਜ ਦੁਗਮ ਧਰ ਹੋ ॥ ਕਰੋ ਮੋਹ ਨੀਕੇ ਪਹਿਚਾਨੇ ॥ ਕਰੋ ਯੁ
ਧ ਰਣ ਧਮਹਿ ਸਮਾਨੇ ॥੨੩॥ ਕਰੋ ਰਵਾਨ ਕੀ ਸੈਚ ਉਦੇ ਨੇ ॥ ਜੇ ਉਮਿਤ ਸਮੇ ਦੀਪ ਕੀ ਜੋਨੇ ॥
ਤੇ ਕਰੋ ਸਰ ਨਾਮ ਹੈ ॥ ਪਾਪਾਛੇ ਦੁਸਰ ਕੋ ਨਾਹੀ ॥੨੪॥ ਹੇ ਨੋ ਕਰੋ ਕੋ ਭੁਜ ਬਲ ਧਾਰੇ ॥ ਹੋ
ਰਸ ਦੂਲ ਸਮ ਕਾਜ ਰਮਾਰੇ ॥ ਜੋ ਨ ਵੀਰ ਚੁਧ ਵਲ ਚਰਯੋ ॥ ਚੇ ਦੁਜਾ ਹ ਸੈਨੋ ਨਿਜ ਧਰਯੋ ॥
੨੫॥ ਨਿਜ ਭਯੋ ਦਾਹ ਨ ਧਨੁ ਸਭਾਰੇ ॥ ਧ ਰਦੁਸ੍ਤ ਵਾਮਾਂਗ ਚਲਾਰੇ ॥ ਮਧ ਧਸਨ ਨੇ ਜਸ
ਪਾਯ ॥ ਦ੍ਰੂਪਦ ਪੁਤ੍ਰ ਦੋਉ ਸੰਗ ਜਨਾਯ ॥੨੬॥ ਧ ਰਦੁਸ੍ਤ ਨੇ ਜ ਚਲ ਧਾਰੇ ॥ ਚਹੂੰ ਦਿਸ ਰਖਾਕ

रतन्नृपारे॥ पाछेनकुलसहदेवसुजाने॥ द्रुपदसुतासुतसंगभयाने॥ ३१॥ शवदकीयेव
उरणमोजाई॥ अवररथसेनन्नाचहीपाई॥ ऊचेशवदकुकहतवुगराये॥ रथ्युदोरायध
६ लिनिकराये॥ ३२॥ पांडुवानकीसेनासारी॥ सभकोसैहोसुनोवलभारी॥ जाकोसरनी
रवउजाने॥ ननोधिनमाहिसनमुखरणठाने॥ ३३॥ परेवचनईहिअर्जुनकाना॥ दोर
योरथतेजमहाना॥ होसनमुखदुहूधनुषटंकारे॥ कीयेवुसपरवानप्रहारे॥ ३४॥ दोऊ
सेनभारीवलतेजा॥ ऊसीवानवललरधअसमेजा॥ दोऊअनोरसूरेवलवाही॥ डारनमये
दोऊरणमाही॥ ३५॥ तंहअर्जुनकोधाउ॥ पांडुवसैनपरयोरिसमाउ॥ डीठदियाअ
र्जुनरथुदौराये॥ कौरवसैनपरयोवलुपाये॥ ३६॥ पांडुवसैनअर्जुनपरये॥ दोरभी
मसनमुखमुखधरये॥ योधसानकरणकोआडे॥ दोरतयोभुजवलजननराडे॥ ३७॥ जुध
सभीमदकीनप्रहारे॥ सोनाहीयमरोहसिधारे॥ नपवंगालेकावलभारे॥ डाजदुराथध
दुचोनिहिवारे॥ ३८॥ निरथभीमकुधोउपराही॥ डाजपरचढेवेटोछिनमाही॥ डाजपर
दुहूधुकीनभयाने॥ लरतलरतभुमपरऊछपाने॥ ३९॥ भीमसेनकोरिदेमऊरे॥ उनभु
जवलकीयोवानप्रहारे॥ छिनइकभीमसरथआपाये॥ डीहमोनपुनिजगजचउन्नाये
४०॥ दोहरा॥ पुनसचेतहोपवनसुतदेषोसैनननिहार॥ वामअंगगजपरचढ्योगोरम
रवलकारअपार॥ चूप्दतसापरजाचढ्यो तोकास्हामीमार॥ नेऊगजअंगालेमपचढ्योउरदे
गयोभारअपार॥ ४१॥ डोनेचढेदुहूभुजावलपरहारेदोऊवान॥ करतभयानेतेजअतिरणभुम
मोहिभयान॥ ४२॥ भुजगछेद॥ चढ्योभीमजिहिगजजीगयोतानषाये॥ परनपुत्रदोसो
गदानिजउठाये॥ कुपनहोवुहामेलगीकुंभगजके॥ गिरयोधर्नेमनगिरगिरयोमाथर
जके॥ ४३॥ गिरयोनिरथराजारिदेकोपधारे॥ रवडुगुकाहमारोगयोभीमरोरे॥ डाहामाथ
सुतपवनमासीसतोरे॥ परशिधमदुहूदिसवडेशवदघोरे॥ ४४॥ पवनपुत्रवलकोकहाउ
पभकोजेअसभीमरमयोअपारिदतानामसीजे॥ जैसेमनिरथदोरोवलीअसुथामा॥ कीयो

६०

युद्धमानौ रणे बलसंधामा॥ दोःउद्धतौ ततो धनुर्धरवानध्वारे॥ बलावतदोःहस्तारेर
कारे॥४३॥ दोहरणा॥ वानपुत्रोरेवर्ध ज्येष्ठदेनो सरक्षं जीता॥ ज्योविरतामृर इंद्रसेयु
द्धमरेते उरीता॥४४॥ वशं पापनो वाचा॥ दुर्योधनसुतधर्मपरदैर पेणयमसार॥
बहुतेजसी पंडुसुतमयोसन्मुखबलभार॥४५॥ ध्वष्टद्युम्नभजबलीसोरूपाचा
र्यपरवीन॥ स्ततनतसनारा शकुनेहो सनमुखबलकीना॥४६॥ पंचार्गीनद्दाप्र
क्तोसातकपादवभार॥ विकर्णनकुलदोनो बलीलरेरहकाररहकार॥४७॥ पायन
पायरसोलरतक्रमसुकृसरयुरथनाल॥ कुंजररकुंजरपरसपरमचोयुद्धविकरा
ल॥४८॥ छिंदा॥ छुरेतेजवानं॥ कटुकेकमानं॥ रिसकरूस्तुपाणं॥ लसकेछिपाणं॥
४९॥ परसपरपुहारं॥ हतेहतउचारं॥ सटासरसउरं॥ तज्ञातज्ञतज्ञारं॥५०॥ च
हूदिसपुकारं॥ नांनि जपरविचारं॥ कज्ञाकडकज्ञारं॥ तज्ञातज्ञपकज्ञारं॥५१॥ भयो
रणमपारं॥ नसुधकोसभारं॥ विचारंउपारं॥ कहांकोविचारं॥५२॥ दोहरा॥ पचांग
ंगीसातकतेकरेमयानेयुद्ध॥ करकरउरतधनुधृतिहिसातरभुजबलक्रुद्ध॥
५३॥ सोहिहैरतेभीकरतरिसकतवानशूनेत॥ उरपुहारनिकसुधकेरपाचोसरमह
त॥५४॥ भजगाध्यहु॥ निबबलीयादवरजुगपेनकारहयो॥ बहुभ्रातसनताताहसीसु
तारयो॥ सोभ्रातकेदुखजरेरूपिनि भ्रातो॥ मुमघकोधदौरवलीद्रउत्रलोको॥५५॥
महारससातकिदेक्रोधधारयो॥ घनेयुद्धदस्तसैारपरतउरमारयो॥ रहेतीन उन्नीन
रथवउयुद्धकीने॥ दोतोहपुत्रकर्णनरिदेकोपलीने॥५६॥ पुत्रशंवृनककाबलीजा
हना॥ ताबुकोधदौरतमयोरेजधाना॥ बलीनिहसोनाप्नीजारिविचवृसेना॥ मन
मुकहाँपुत्ररेसलेवानपैना॥५७॥ उग्रयुगडिनकेतेजमोसरपचाल॥ गिरेसारथीसी
रकाभूमसुककाल॥ बहुयोक्रूरसारथीतेजभारे॥ रिसकवानकोतीनताकोउरारे॥
५८॥ सरीरतेजोनिहसधभयोभिवृसेना॥ भिन्नसधसमारेकीयोयुद्धपैना॥ चलेसा

चहुदूऊरतेवर्षमेहा॥रिसकरिसकमारेदोऊ योधजेहा॥६३॥रिसकउतभुजबलतेउ
ऊछितकरी॥ ववेवानतातजीव द्वीयेसरकरी॥करसोमेंऊताकाजिरयोमनऊपायो॥
चित्रनामाभ्रातदिघकोपघायो॥६४॥महावीरकेमनमरोदैरऊपायो॥मयेभ्रातजि
हितीनशोकानतपायो॥वडेवेगसो वीरकोकोपवाना॥भुहारेभुजाबलप्रबलहो
दिघाना॥६५॥इतिधर्मसूतसूतसो वृतिविधनामा॥ऊनभुजभीरदिघदोरऊपायो
कामा॥धनुषचित्रकातोरयोवानऊगी॥चित्रसेनपुनशाकतभारीसंभारी॥६६॥सोक
तसर्णकीनराजरेरंगरंगा॥भुजाबलप्रहारीनिरखराजुमंगा॥वलीवीरमगमोदोऊ
हूककीनी॥वहूचित्रभारीगदाहाथलीनी॥६७॥गदावलहत्योसारथीरथुसमेत
परोकूदिदिघवीरभुमपरसचेत॥शकतरिसकनिजकीरकोपचलाई॥तरीचित्रस
गमाहूपहूचनपाई॥६८॥नेऊशकतजोहिवीरकोभजपुहारी॥लजीधनककोपहिलीयो
धनुसभारी॥रिदेचित्रकेवानतीछनपुहारयो॥गिरेभूमपटवीरघमपुलीसधार
यो॥६९॥दोहरा॥सेचारपंचमनिरखपुत्रविचित्रसनामा॥निरभानकनजोकम
दोरपरेवलधामा॥७०॥वानपुहारेपरसपरकीनेयुद्धअपार॥करेगयेघनदुहूकेकरी
चि घेकेइवार॥७१॥दोहरविचित्रपराक्रमछितगेवार॥वैचेवडुवलभुजासो॥गिरयोधरनवडे
भार॥७२॥वीरदुखतनिजरखउगासोजारेजपुनेकेस॥धूरतेदोरयोभारगुननारपोके
पोपुवेश॥७३॥भुजंगछंद॥गदातानिहिरणनेउठालीनभारी॥उसेकीगदाउसीकेतनपु
हारी॥गयोधामयमकेविचित्रतनलारी॥७४॥निरखसैनसूतपहुकीहरखुधारहि॥
उपमसीरलीचारकारेउचारहि॥हतीऊरदिजऊमचपामारिसाजे॥पुहारतपवनपु
त्रकोतीनवाने॥७५॥पवनपुत्रचारहतधनुषुनिजसंभारे॥नपावतसमानु[illegible]
तसरपुहारे॥वहूरसिपुसनवानदसऊनजाने॥पवनपुत्रकीऊरपुहारेमहाने॥७६॥

[illegible]

गुनेह संहारत॥ जिरे मरे सरे व उ भारत॥८५॥ सनन समु ज कजीयु हरू हानी॥ जान वर
नीअ नि भय मानी॥ सुनेह केहेतेअ जैन वलवाह॥ कीये पुाक न भानीरमारह॥८९॥
नमते देव पुहप वरषाही॥ धंन धंन अर्जुन उ सुपाही॥ देव शाव द उ चेउ चरा ते॥ इ
हि सो लरे म रोइ हि भंनते॥ ९१॥ सुन अकाशवानी अससुधामा॥ सहनन समनो दै नेव
लधामा॥ अर्जुन के सन्मुख वनि जरथु धरा॥ उचरत वलपनेम र खव चघरा॥ ९२॥ अस
घामो वाच॥ दोहरा॥ तुहि गुरसुत दिज वरण हे मांगत हे अधु दे दिअ अर्जुन करजो
रे कहयो जो न्वो हे सो ले हु॥ ९३॥ वाम रच्छंद॥ हम दो उ एकाए क पुसपर सरहेरण भुम
माह॥ नाहपरे को उ हुमरानि जवल पुधापाह॥ अर्जुन निरघत उदे कीयो कीर
हमका जापाइ॥ सन्मुख भयो दिजपुत्र के सर धनु धु हाथ उठाइ॥ ९४॥ सं जेक ह
नध तरा असोरण माह रण काएक॥ दो उ लरे सरे वलध परे च लतवान अनेक॥ शत
अर्धद स उपर केर व हु वान ते अअपार॥ दिज सु त प्रहारे कहम को वेध हु सुत को भ
रा॥ ९५॥ अर्जुन दिदेषि दिज धनु धुकरयो तीछ वान चलाय॥ दिज सुत रिस कर कहु सर पु
हारे अवर धनु धुउठाय॥ वहु मंत्रप उ डकू वान मारे दिदि रूप लगजिर जाय॥ नर रानादि हि
परे नहि उन गैर दिषाय॥ ९६॥ अछ गंगअ अर्जुन के भिदे सेजो यछो लर्चरारा॥ पूले पल
ससमान ज्यों नन दी से नेसे ठार॥ छिन एरम रछ पाय पुन क्षीर हम अजापाय॥ पठ मं
त्र शक तपु हास्त्री जो वा नते अअधिकाय॥ ९७॥ मारे सभी सर दिपु के की यो ते अअधिक
भपान॥ अर्जुन वलाजी सभो कारे अपुन ते ज दिखान॥ ९८॥ अवरमा लल गाअर्जुन हि सध
की यो दिज को प्रता॥ जयो ध्या उदू सर डो अअर्जुन रण अपर कर तून॥ ९९॥ सुध पायो दिज
सत पाष्ठ परयो उचरत घ रार हु वीर॥ अर्जुन सन तदो गाय रघु सन्मुख भयो रण धीर॥
युधु परस्न देख्यो नहि मन्यो जो भयो कैसी भांत॥ दो उ रण अमो रकडो रयो धेर लीमि सिहक

६२ ना॥९९॥ बहु कोप अर्जुन बान मारे अस्वथामा माथ॥ सुध मल धिन अपुन थे चक्र
ढ पे चली बलाद जे साथ॥ उव बानं निज स्योर कत उर ना चल्यो बड पर वाह॥ छोत
रन बोध्यो द्रोण सुत चौर बडु बल्य वाह॥ ८॥ बान बानर सकार सब बुहारे गीर अर्जु
न उंग॥ सर ने जर थु पाछे हस्यो दि जनु धोस्त रम ठोर॥ स्त्री लस्मन बदो राय रथ अ
गेको थे बलभार॥ सरथु रे अर्जुन के करे मन वर्षे साव नसार॥ ८१॥ हस्य सारथी
रथ चक्र को नेमि लगाये भ्रमसा थ॥ रथ हीन दिज तज गये सरा विचार वे दह गाथ॥
पुन दोर सन सब्रज हा तहा गये अर्जुन सर॥ निज सोप रो वडु थु धमूयान बथे
सभी बल पर॥ ८१॥ बिनस थे वी हन हो थु कृस्या गेव तुं दे बल बी॥ बहु हते कुंती सुत
बेसे घो रहे ते रण धीर॥ सुध पाय दुर्यो धन रते बडु सर सेन भयान॥ अर्जुन अ
धिक बल गजो सो बहुत हने सर रम हान॥ ८३॥ घायल न सा को दोर रण भुम पर परे ल
रे भय वा॥ नान तन बधस मा नचकर रउ रतं दुदेख अपार॥ उत पाय सुध सत द्रोण
दो सो धार बेग समी र॥ पुन अपय बल युत भयो सन्मुख निरष अर्जुन बीर॥ दीयो त्याग
उन को बहुर बल युत गयो सन्मुख हो य॥ सर वर्षे कर रतार थु त्नुपायो द्विग नपर ईसो
ड॥ ८४॥ दे हर॥ अस्वथामा नि जवान बल कारे सकल चाल॥ पुन बहु सर स्त्री कृस
के पर रहे सकल॥ ८५॥ स्त्री कृष्ण अर्जुन सर हतद्व रल्यो नि जवान॥ रथ समेत
भये लोप स्त्री ते अर्जुन दिष्टि सब आन॥ ८६॥ छंद॥ रिसकर ते लोध बान पर हारे दि जस्
नके सभ अंग गये सस्त्र धर्म भद्र दूहू ते रे को उपज पाछे ना हूहूटे उतर थु बेग
लेके दो उभ पर बलभार कहे॥ दिव दौरे अर्जुन सन्मुख रहे त्यारे बडु युद्ध करे॥ ८७॥
अर्जुन बर सु अन्य बहुतोर बडु घाय लरण भ मन मे॥ जन्तु भफरे बहु रण हुटे अस
गे तपाय कनु मे॥ पुन अस्वथामा करि अर्जुन कायु पंचो दिपा सर न सको॥ युक्त

भैए रण मो एउ सरे जातसभे दनको हितको ॥१०८॥ हेय पथ मनदे उसर पाच मचरे हो इरहे दुहे
ओरे ॥ इहि मो हुं दउठी सीन भाखी पोउवान सैना दोरे ॥ श्री कृस्न सहत अर्जुन सुनदो रे दे
बोयहि मत धार व ली ॥ भज वल भार भयार युद्ध करपं तु सलो की सैन मली ॥ को उध रेन धी
रतिन स्याठो जो सन्मुख हो युद्ध करे ॥ अर्जुन को दिखि वान पुहारे यादि रथ श्री कृस्न धरे ॥
१०९॥ दोहरा ॥ अर्जुन एक वान वल धनु धसहत सभ वान ॥ काटे तेज पादि रथ लुपे तहे जावर
धनवान ॥११०॥ कोप कोपसर डार ही दिख अर्जुन वल वीर ॥ विवान सभु सर ठोटे मेदी स
रकी पीर ॥१११॥ चामर छंद ॥ पुनर कुवान छो रपर हास्यो ॥ कोटो ता कासी सरलो ॥ हंउ जा
मतागत को पहुइ सन्मुख जायो सो कमने ॥ अर्जुन ऊर श्री कृस्न सन्मुख वान पुहारे आन
यो रे ॥ दिख सरपात सतसर परहारे वउदे उहाथ तिहि कर डारे ॥११२॥ दूसर वान पुहार सी
स धरै बोयो जने पुहार रो यो ॥ भजी सैन उन की रण भूमि है दिख अर्जुन रथ पुथाम लीयो ॥
पुन सन सपूल जहा धरे यो जधि मभयान युद्ध परयो ॥ शीत उत वर्ष मई वान न की वल
अर्जुन तव कोप धरयो ॥११३॥ काट केव गहा पथ किस के कर डारे वरु पान ली यो ॥ लार लर
मरे सभी सन सव कजी वन पन पो छन दीये ॥११४॥ छंद ॥ भयो युद्ध जसा ॥ कहे कोन तेसा ॥
गजे कुंभ फूटे ॥ रक्त धार छूटे ॥११५॥ रणो भूम सोहै ॥ परी मार छूहे ॥ भभ केत घाय को लं ॥ के व
धे कलो लं ॥११६॥ वकी हृव कसमानं ॥ रिसवभन भयानं ॥ यो गन हा थपपर ॥ पी वत भर भ
र र कत र ॥११७॥ ची ली लि ली लि ला ही ॥ दर यंत मास खाही ॥ इतिहि उत स्रिगालं ॥ सूचे सरमा
लं ॥११८॥ श्री कृस्न देवे ॥ विस्साचि तरि से वे ॥ अर्जुन चिता ने ॥ भजा व नवधानं ॥११९॥ दोहरा
अर्जुन सो मुख ते व च न भाषत कृस्न सुलेष ॥ दुर्योधन को उठ कर के देव ले जान व सेष ॥१२०॥
जा के हित सरि सीस ये जिन की से ध्यान ॥ देव तचि त कल मन परे सो स्यो मोर तन हार ॥१२१॥
रथ पुच लाय सुत धर्म सो सभ कही रण की गाथ ॥ कृस्न लाल सर तम धो धर्म पुत्र भभ माथ ॥

१२२॥न्नामरथंद्दा॥तामउजीसेदेसवनन्नपदोरवदुखलवाहा॥तीहनामप्रजारवरप्रसरझजीतझ
तिरणमाहा॥स्वन्मुखवमणेजेहायजेवउपद्रवरतमराना॥नावलभगानीजैरवाजीसेन्नगध
वमयान्ना॥१२३॥जैतेवलीवउप्राकनीधरधीरस्नन्मखवेहोया॥वडुयद्रवमरहीलरतमरहीग
धेसुरपुरस्वोड़॥जैसेनिरथीपरभजेवलीजस्यामपडुच्चोजाय॥तिस्नैविनधरेजोधीरर
णमुखवेतेवमेरेप्रगटाया॥१२४॥जम्मयामेवाच्चाहेमपनमवडस्वरवलन्नपसैनस्यहतहता
न॥तेसीविजेविनहूनजीनीजस्नाजुकोदिनस्नान॥जवरमेमेस्नेयुदरणीजीहदेवस
भुहरथाह॥ईहस्नन्नतहीसरवरप्रहान्योडेणस्तीदुस्नाहा॥१२५॥जैवानउरेधनखस्नोजि
हितेजवस्यान्नजाय॥जमस्वारचारोतानसोदीयेधरनस्नायमिलाय॥नपीगरतरथुते
धनुसंभारेवानजीनप्रहारा॥जान्योधनुथुदिजहाधतेगिरपरेधरनमजार॥लीयोजवर
धनखुसंभारदिजसतजेधचितेरिस्वजान॥वडुवानउरेमरेदुजदुबमजीहमपमहान
नवडुणस्नतवणिस्नुजीनप्रहारमजोस्नाय॥धूरतमईवधीजधिजजियाजेहातजीगाय
१२६॥उनपवनजस्नुप्रहाररजरवेजल्दवथीमहान्ना॥दिजसतीनरथसरजैरउजान्योजेध
चितजधिजान्ना॥जमसारथीरथुताहवेधनुसरतच्चरनजीना॥मरवतेशवदउचारत
भयेवडउच्चनतेजप्रवीन॥१२७॥जमसयामेवाच्च॥जोजवरवलुजयुरोयपुनयुधुक
रेमेमिलमय॥ईहस्नुनउवायेधनखुकरगज्योमुयोधस्वरूप॥जेवानीदिजसतजेप्र
हारेमडारिदीरथजराना॥दुहूवानवलरथुताहजोदेउजास्वभारहताना॥१२८॥सरतीसरे
जरसीस्नताजाजिरेमपरजाना॥जऊउजीसेदेमवजन्नपस्नुरलोजमेप्रगटाना॥तजमस
वपुतघस्नीसहनवमेजवतारजहेत॥मुखवमलभाखतमुनोवुतीनेदस्निनिवलवेत॥१२९॥
स्नीपहमुउवाच्च॥दोहरा॥मुनधमैनहीदुर्मीपरेरधुलीजीयेमधताहा॥महावलमेरेज
लिसेयुधुजरतथानरनाहा॥१३०॥जैसानहोवेहतेताजेजजीभुजवलभार॥ईहवचनमुन

चिंता न करि अर्जुन उर हंत मुख पुगदार ॥ १३ ॥ अर्जुनोवाच ॥ दोहरा ॥ घर घर ज्ञान न लहार प्रभु तुम तें अध जन धाप
पा ॥ ज्यों कीर्ति मुख तें धर्म की अहो अधर्म हि पुगटाय ॥ १३ ॥ स्त्री कृष्ण उवाच ॥ चामर छंद ॥ सहस नरन सुख ते
अधोमुख नहीं वली मत पंडु ॥ मत धर्म वड वल लक्ष्मी सो यथ धपरे वड वल वंड ॥ अप वरप रस रस पार व
ल वड मैं न सो रण माहि ॥ हनुमान करि सुधा मा वली वड तेज वड वल वाहि ॥ १३४ ॥ जो डा जन तुरंग
पदा तर सुहृत भये ते अवचार ॥ दिज पुत्र करि सुधा मा वली के हाथ ते करि पुत्र वड पर कार ॥ १३५
अर्जुनोवाच ॥ चौपई ॥ देई शापु नृप पुरुषो ब्रह्म दियाल ॥ रघु को तरले च लोक पाल ॥ जह
धर्म सुत प्रान हमारे ॥ करेयु द्रुम भुज वल अति भारे ॥ १३६ ॥ सुन श्री कृष्ण कहि न माही ॥
जा पहु चे पंडु सुत जिहि ठाई ॥ अर्जुन को दिघ से नामारी ॥ धर्म पुत्र वड ज्ञान सुचारी ॥
१३७ ॥ भये रघु धीर वड पाये ॥ डाये प्रान मानो तन आये ॥ उतेक रण इति धर्म जयो धा ॥ क
रेयु प्रभु पर वड वोधा ॥ १३८ ॥ रघुर घु करि सुसुम गजु गज साथा ॥ पाय कपाय कसो वल
हाथा ॥ वान शक तमु गदर गदमारे ॥ सशल रव उगुल पान आपारे ॥ १३९ ॥ पाप त्रिसल ध
रके अति पेने ॥ त्रिदल अपार सर वड नैने ॥ इकवार हि सभ दोरवलारी ॥ प्रम पर भयो प्रहा
रभयारी ॥ १४० ॥ जैसे सोयु द्रुम भयो रण माही ॥ पले काल करा डामद्दि गपा ही ॥ सरे अमित हते ति
हरांये ॥ कोडा ए सके अनुकछु नाये ॥ पांच पुत्र द्रोपदी के सूरे ॥ वडी मे नवडु वल सो परे ॥
दिज सुत के पुत्र क मर एा माही ॥ निहि सुध भयो सिसो वल वाही ॥ १४२ ॥ रघे उार रघ वाही उ
रेल गये धर्म पुत्रा निकराते ॥ धिर क गुल व कर अधिक उपाव ॥ भये सविधान रो ध तन
करावा ॥ १४३ ॥ धर्म पुत्र रघु जोर मजाये ॥ दीये धाल रोहि नु अधिक आये ॥ पुन धर दुप्रीस वही
साथा ॥ धर्म पुत्र अर्जुन क भ माथा ॥ जोर घ नेन पस रभ याने ॥ कोप धार दौरे इक ठाने ॥
उतेक रणि दिज सुत वडु सूरे ॥ य द्रुमी न भारी वल पूरे ॥ १४५ ॥ धन्ने भपदुहु उर हताये ॥ जिन
की डा पा त अनुन ही पाये ॥ डाजरघ करि सुके तुंग महाने ॥ भये रण भ मप हारसमाने ॥ १४६

२४ दिवनमस्य वर्ष शवद उद्धते॥ विस्मयोद्यमकेदमुखपुगराये॥ धंन धं न कहेदेऊ वलाते॥ भाषत
सर्वपुरुषश्रपाते॥ ४४॥ दुर्योधनस्तत्रज्ञाज्ञातीने॥ स्वतोवीरमहिरवचनश्रधीने॥ ज्ञाजुध
ष्टदुझवलकाती॥ हतेमोहवलस्यरज्ञपाती॥ ४६॥ नुमसभभपगजोच्च उज्ञाते॥ रणमोता
कोघेरहतावा॥ होडवचगजेच्च उन्नपभाते॥ धष्टदुम्नकीउरस्सिधारे॥ ४४॥ नद्यधष्टदुम्न
वसभाते॥ चहूउरडीहशम्भुपुत्रहाते॥ ज्ञिहिउरोहदौरतवलवाना॥ कृरज्ञातन्नपसेनमहा
ना॥ ४५॥ घत्रमयडोहविधहतवीने॥ रिमवेभपश्रधिकवलुलीने॥ ५१॥ दोह॥ हयोम्पा
रथीवीरज्ञावान्नपुत्रहारपुत्रहार॥ विनामारथीरथचवुञ्जलरतसभारसभारथ५२॥ जज्ञरथ
योज्ञावतीनिवरगदारवउगपरहार॥ कादततोरतभजावलधारेनेजश्रपार॥ ५३॥ चाम
रधुंद॥ उरपतनज्ञावोनिवरकोदूरीहपुत्रदानीहवान॥ विनुज्ञम्बश्ररविनुसारथीर
थचवुपावीरीरमान॥ ज्ञमवीररथवेदनुभवेसरवर्षमेघसमान॥ पडूचननदेवे
कारवोनिज्ञनिवरवलुश्रधिकान॥ सुधपावसातकवलीयादवसहदेवनकुले
सेठ॥ सुतपाचसरेद्रौपदीकेवरसिंघउज्ञभेठ॥ पडुचेवलीताकेनिवरस्यज्ञोरज्ञ
मीज्ञीहभार॥ तापरच्चउपोवीरकोपुनपरोयकुभयार॥ ५४॥ उदेनदुर्योधननिवलभ
देचहूउयेयनवेधाम॥ निज्ञीनरवदोत्योभयोसम्मुखयष्टुज्ञीनज्ञकान॥ भपतवं
जालेदेसवा॥ गजेच्चउपोपटुच्चोजाड॥ महावलीसातकेकोनिरवगढोवानधन्
पचूजाड॥ ५५॥ सातकीनिरवदरसरपुत्रदास्पोलजपोताहोजाड॥ गजमहलीगरयो
धनपरतवमरछावउपाड॥ ताकोउजायेलेगयेरणभमतेदोगन॥ सविधानदे
मडाडनेउतीहघवदरतमरवपुगदान॥ ५६॥ भपोवान्च॥ लेजातहोमोकोवदाति
ययोमीहिगजभार॥ सभुजाघवीहिगजकोरज्ञाम्पाचउपोन्नपवलवान॥ दोग
धपुनसातकवलीवेसम्मुरवमुरवधार॥ सहदेवादिपदौगेनजहिसम्मुखभयोवल

पासे

मार॥१५७॥पुनदोरनकुलपराक्रमीवजैतनअन्नजहितसाथ॥डीहसरवडेदैंउरैंयुद्धरलकीगाथ॥
अऊभयोमीहभ्रातकेउननकुलकेभिरखाइ॥सतवानपरहारेखलीदमनाकेनकुलदिखाइ॥
१५८॥दैंअमेमिरथस्ततनाहदोतेमरायवरजिहिनामु॥सन्मुखभयोजानकुलकेभजवलीयोध
अकाम॥दिखकोपधनखचरायसरकीयोनकुलववलेपुहार॥जानजैपोनाओरेदेमोगयोवेधपीठ
मार॥१५९॥डारपरोतजतेगयोयमपुरमपमतकेप्रान॥दिखपुत्रशोकपारन्नपीरसकीन
युद्धमहान॥गजचडेनाकेसंगामरेके२२णमोषेत॥दिखनकुलहतकीनेवलेनपक्षाढगजे
समेत॥१६०॥चढुसेनहतकीनीरोरहतीभगीभयमान॥वढुदूरमाररतगयेपाछेमिसमरन
दवान॥भाषातगयेजहाकणदुसासननवडेवलदेउवीर॥दिखदोरदुसासननापरोवडुयो
धतेजगंभीर॥१६१॥छैमरपुहारीनिरखपंडुसतमातवानचलाय॥मारेमगीहीववानपं
चधनुषतुराय॥लाजेनसरकाहूतनेकारेमगेदोउवीर॥वडुक्रोधदुसासनपुहारेतीनवा
नगंभीर॥१६२॥जालेगतीधसारथीतनपरेभमतलस्थान॥सहदेवदिखकोपोतमाधिवध
नघनचउपोवान॥लाजतदुसासननमरथागिरपरोरथहीमार॥दिखसारथीलेगयेरणते
काहरथवलवार॥१६३॥पुननकुलसन्मुखकर्णकोजिहिसाथसेनाभार॥मुखतेकच
नीनिहिठरकहतज्ञानिमुनोमरज्ञपार॥नकुलोवाच॥तुहिपापडिसभहोहिरतसभ
योधनमरेपाप॥उभीसपरथाभ्रातरेमोमतनदेखोवाप॥१६४॥मीहकोरवोरहतहोन
सदिनघातकरतीवलास॥दीयोमेतअर्मजीहोहरहतुयमपुरीसर्वनिवास॥तातेहन
तेहोतोहिकोधूरेसकलजीपदुंत॥इहेसपरथावीचतेहितवडेआनिअनतगनत॥१६५॥
मन्यहसंयोकर्णवलीरणमुखकहतमदहजमभाइ॥रणयुद्धठौरजुगायकीमीहशीघनिज
वलपाइ॥करनूतकरपाछेकट्योजामहायोपावेठौर॥मीहभाषपरहारेकुपेसरमाढदसक
देहसौर॥१६६॥दिखनकुलतिरसमानीअधिककीयेवाननवलपरहार॥सन्मुखपुहारेवा

६५
नरविमलतनकुलवानकुमार॥पुनक्रोधकर्णप्रहारमरातिहिधनुषदोउकमीन॥तिहिसम
वरस्तरवलकरेशोलसमजोयपुद्धप्रवीन॥१६०॥सरतीसरेरघुसारथीहतभयोरथकु
मार॥वलवानकर्णकांसारथीपुनधनुषकाटेभार॥धनुअनवरअररमोकर्णधारेध
नुषतांहिकटान॥दोरेहतेरघुतोरउारेधुजाकारदिवान॥१६८॥रथहीनरणवल
नकुलदेवोकर्णसन्मुखवेदोउ॥वडुविधिअरमोधारस्तरादिसकरिसकतसोउ॥दिव
कर्णताकेहाथहीमोकरेवानप्रहार॥पुनक्रोरवानप्रहारवलसधहीनकीनकु
मार॥१६९॥रणभमततजभाउयोनकुलपाछेकर्णभयऊान॥निजधनुषताकेउारे
उारयोधेचलीनमहान॥निजनिकटजानउचारमुखतेवचनभाषतसरा॥वलउ
सोपरउारवानथेतुमवालरिदिभरपर॥१७०॥दोहरा॥ध्यातुतहांजोप्रणकरेवहूरको
रजासाथ॥रणवरोड्युद्धनकरेसाचजाननहिहाथ॥१७१॥वालकदेखनहंसको न
जावोअपुनेधाम॥तोहिकिवाईयुद्धसेवडेयोकोहेकाम॥१७२॥इमिदिनकुंतीकरहा
थामोहिविनीप्रभारात॥मीहस्पतहतनहिकीजीयेममसनकीयोवधान॥१७३॥मैं
कछऊनविनतुहिसलेकोहतुनकरेप्रणएहि॥कहुधनुषुताउारेतेदीयोधाऊवल
ऊदि॥१७४॥न्वामरथंध्याम्रतधर्मपघअयोनकललजतहोइरहीवरोड॥न्यानिस्य
वडुधीधिदयोउनतिकरीहिनुहोइ॥युधिष्ठिरेवाचाभयरादकर्णस्तरप्राक्मीतुमकरा
वालकजान॥धनधनताकेहोयसन्मुखकीनयुद्धमहान॥१७५॥सेजयोवाचा॥उ
देनकुलकोधाउकेकर्णडयोधक्दुक्रकीउरा॥जाकीनतासोयुद्धवहूपरहरतवान
अडेरा॥हतभयेसहस्रपराक्रमीउजरधनुरंगपदात॥रणभममासहिरकतमजा
२२ कीनमीचवरात॥१७६॥दिमदूमतीधंप्रसतसोपाउवाकीउरा॥कहोसामजास
युयुकवलयुतयुद्धमोत्रमितिघोरे॥स्रतप्राकुनतासोलरतसरकीनधमईश्रपार॥जि

हिपुगरनामसमेलोक सरामजपुत्रकेनभार॥१२॥दुरजोधनवसलेकेधनु धृष्टतराष्ट्रसुतगयो हा
न॥पुनदूसरेसरसारथीहतुकीनतेजमहान॥सरतीसरेकाटीधुजा धृष्टपुत्रसभार॥सतन
कुलनामसमेलोकपुत्रसपरपाचकीनप्रहार॥१३॥हतुभयेचारोअस्वरथकेहीनरथकी
योतबहि॥उनकोपवानप्रहारकासोरथुतुरंगअगदाहि॥दोउहीनरथगयेअपुनअपु
नेस्यानयुद्धवलान॥संजेअदेधृतराष्ट्रसोरणसाधुसकलउचार॥१४॥सोरठा॥जयोयु
युत्सकीउरघप्रदुस्ववउप्राकम॥परेयुद्धअतिघोरसरहरखकाइरडरे॥१५॥दोहरा
दुर्योधनकाभ्रातसुनसतकमोडिहिनामु॥सतानीकसतनकुलनकालरतमयेनिह
काम॥१६१॥चौपई॥सतानीकवरवानप्रहारे॥काटीतासधुजावलभारे॥वहुरसारथी
मारिगिरायो॥वानववललरचत्ररगयो॥१६२॥सतकमोवलडारासभारे॥दोकोअरसन
मुखवलभारे॥रथसमेतसारथीहनहने॥ताकोभीरथहीनकीनरने॥१६३॥दोउपद
भारेहेखडगनतानकरा॥रेपुसपरयुद्धमहावर॥हूहेखड्गतवयुद्धतजाने॥मरहे
ज्योपुसपरलपराने॥१६४॥सतानीककंतरवलुपायो॥सतकमोकोनिवलहरायो॥
सतकमोनिवलारनहोये॥दिर्घानिजभ्रातरथुचढ्यो सोये॥१६५॥श्रुतसोमभीमक
सुतवलुधारयो॥अरेशकुनसोयुद्धअपारे॥दोउमहारहिकाटेवरवान॥अनेनशकुनर
थभयोनिवलान॥१६६॥दोहरा॥दुर्योधनसुनसेनवहुपरदीनीततकाल॥अर्जु
नकेसनमुखभईपरोयुद्धअतिभार॥१६७॥चौपई॥दुर्योधनकीसेनवलारी॥लीयो
घेरअर्जुनवलभारी॥जेसेसमघनमहलपावे॥अर्जुनरथुत्योदृष्टनआवे॥१६८
रथभुमसरवर्षासममेहा॥दुहूतौरपरहरवलदेहा॥दृष्टनआवहवलुअधिकसभारे॥
काशमीरकानृपहतडारे॥१६९॥सोमदत्तनिरिहनामवषानो॥जोहिकीनेरणतेज
महानो॥श्रेसरजवरहनेवउतेजा॥पर्वतकानृपहत्सोअसमेजा॥१७०॥चंद्रदेवता

६६ हृष्टो नानाम निरघ्नात्तितिहिरि स्योऽस्त्रकानाम्॥ भ्रातृशोकेन ननमाहिवसाई॥ द्रोणस्य सुघु
शतवत उवाङ्॥१९१॥ नाम तांहि समतसेन प्रमानाम्॥ जस्ये क्रोधसमतेजसमानाम्॥१९२
दोरगा॥ श्रीयद्रुपतकौ भुजांदिव्यवउवलसमकतप्रहारा॥ रघुहाकनकौ राघ तेष्वधीगरा
ईभारा॥१९३॥ दिव्यस्त्रजुनकोऽधतमयोभजरवलघा न्तप्रहारा॥ कारसी समरभ मागिरोन
मघनलाजीवारा॥१९४॥ धृष्टद्युम्न॥ पुनर्धर्मसुतकौ डेरा॥ कर्जुनगयोवलघोरा॥ दिव्यहरषु
प्रसपरेहाइ॥ मिलकौन शाघवरोड॥१९५॥ धृष्टद्युम्नस्तपौना॥ स्यात कमथा नकौ
ना॥ कर्जुनकरदतातिहिसंगा॥ कैसे सेकरों नहिभिंता॥१९६॥ सुतधर्मसंगतनुमरद्वा॥ इति
उतेमनापदातहे॥ अधृपदेभीरजुकाइ॥ कोऽउपदेव्हर्मानिकरदाइ॥१९७॥ ततकाल
कोध्यधाइ॥ इरमोनशकाकाइ॥ सुतधर्मभुजवलपरा॥ मीरसवेजीवनसरा॥१९८
मोहठायेकम्जुनवीरा॥ वहतेजुरणमनतधीरा॥ सन्मुखदुर्योधनजाइ॥ जरेयुद्धव
लक्रुधिकाइ॥१९९॥ परस्पराइदुःसुवान॥ वहुसैनकौनमथान॥ गजकुंभहरत्नगत
रथ्यनस्यदातकभंनना॥२००॥ चनुरंडासैनहतान॥ कीयेतुंगोगरो समानानम॥ रणभस
मजुवेत्रना॥ भईकीचनीचकंडोना॥२०१॥ रथमनतरढूलादिषानम॥ कर्जुनरघ्योवि
सनान॥ सिरशिलासमनद्रुमान॥ रथतसेचरनपान॥२०२॥ दोहरा॥ दुर्योधनकौ
सैनिरघमनमोफीनीविचारा॥ धर्मपुत्रपरजापरयोचपलास मनवलकारा॥२०३॥ प
रेपहदोउसैननमोप्रलेकाललेरूप॥ कपुनपराक्रीरिद्रुपपरगिरगिरपरवहुभूपा॥
२०४॥ चौपई॥ दुर्योधनवरवानचलाये॥ हत्योसारथीतेजदिषाये॥ देषइंद्रुसुत
कोधतवानमा॥ परस्परकरराधनषुकराजा॥२०५॥ पुनदुसरसरधुजाकराऐ॥ वा
रंगसुचहूसरेदता ने॥ कवरपंच सरकौनप्रहारे॥ जोरोधर्मदुर्योधनभारा॥२०६
रथ्यपाच्याथैकसुघामा॥ दिवदौरेवलरूपकाम॥ इसेनकुलभीमसहदेवा॥ स

भीनिरषत द्रोरेग्र जु भेवा ॥२०॥ धर्मतात नकी ज्ञा ज्ञा हे तेग ॥ जाते यु द्ध कर्ण चितचिते
दुर्योधन को ज्ञानवला ॥ अर्जुन प्रति ज्ञ यो न कुल सु चारी ॥२०८॥ सकल निरंत
न भ्रात सो भाष्यो ॥ सुन अर्जुन द्रोसो रिस राष्यो ॥ कौरवि सैन योकार तच लपो ॥
म जो रुद्र दल बन गज पग दलयो ॥२०९॥ सपे अनेक भट अगनंता ॥ दिष उच्चरा
सो कर्ण मद हंता ॥ कर्ण वाच ॥ रेमत उरे धीर मन त्साजो ॥ वसु सभा रसं ग्रो मेलाजो ॥२
१०॥ अर्जुन को यम के जहिद्वाको ॥ याको भरम भेद नहीं मानो ॥ ग्र सकोरि द्रोस्था
वाहत वाना ॥ पूले कालकी ज्ञागिन समाना ॥२११॥ भाजी युद्ध प्रसपर कीने ॥ पं
डवसैन भई वलहीने ॥ सकल दिवस नो युद्ध ज्ञ सभयो ॥ दिनमणि छिपत मह
होगयो ॥१२॥ धृष्टद्युम्न सिषंडी भ्राता ॥ दुहूनकी सैन भई वडु घाता ॥ धनराजे
वाच ॥ हे संजे मो को सम न ज्ञावे ॥ भिंन भिंन उर रग्गा य सुनावे ॥२१३॥ अर्जुनवी
रवली वउवाह ॥ इते कर्ण भुज ते उज्ञगाहा ॥ सकल दिवस युद्ध इन कीना ॥
मनोवृतरसुर इंद्रप्रवीना ॥२१४॥ संजयोवाच ॥ दोहरा ॥ कहि संजे धृतराष्ट्र
सो कहे ह्वाव हूर विसतार ॥ घोरे हो मो कहत है सुनो श्रवन नृप भार ॥२१५॥ उ
वधर्म पुत्र तु हितातत को कीयो रण भुनर प्रहीन ॥ कर्णो रूपम्चार्यनि रख द्रोरेमन
परवीन ॥२१६॥ पुन ज्ञ सम प्या मा सूर वडे प्रगत्यो रण मो ज्ञा इ ॥ दुर्योधन को
तत छिन लीयो चिवर षेच उडाइ ॥२१७॥ चौपई ॥ रथ च उदु दुर्योधन रल वाना ॥
बोल्यो सुरव मन कर्ण सुजाना ॥ दुर्योधनो वाच ॥ तुम अर्जुन केस न्मुरव जावो
ज्ञ पन भुजा नृवली दषरावो ॥२१८॥ निज धर्म जुके सन्मुरव जाये ॥ भुजा वलेव
रवान चलाये ॥ ज्ञ पुन सा स्थी को सत पंउ ॥ कहो वेठा रथ हांके ज्ञ ध ड ॥२१९

६२

इति सुत पंडु उते दुर्योधन ॥ दुहूं मो वडु युद्ध संयोधन ॥ दुहू ओर वर बहि वडु बाना ॥ जिरि
नहि पावत गनत प्रमाना ॥ २२ ॥ दुर्योधन तीछन सर लाये ॥ धर्मपुत्र साधन बकटा
ये ॥ धनुष कवच सुत पंडु सम्हारे ॥ ततछिन ते वर बान प्रहारे ॥ २३ ॥ अस्र योधन रथ धुज
कटाई ॥ तीन बान धाती मो लाई ॥ फिर सु दुर्योधन अज्ञान धनु लीने ॥ भज बल बान प्रहा
रण कीने ॥ २४ ॥ पुन सुत धर्म धनु कक्खर झारयो ॥ दुर्योधन रिस साकत प्रहारयो ॥ फि
व धर्मज न मग मो कट झारी ॥ तीन टूक भई शाकत भयानी ॥ २५ ॥ फिर सुत धर्म क्रोध सो
परयो ॥ धरे ध्यान हरि को अनुचद्रयो ॥ २६ ॥ दुर्योधन के रिदे मझारे ॥ कीयो प्रहार
बान बल भारे ॥ सुध बिहीन रथ मो मुरझायो ॥ निरख सार थीर येम रायो ॥ २७ ॥ ले
ऊख्यो रण की भम नसायो ॥ भयो सुचेत मर्जाद खरि संजायो ॥ पुन दुरायर खु सन्मुख
आयो ॥ गद प्रहार वडु ते जिदिशायो ॥ फिर सुत धर्म ते ज्ञानि भारी ॥ शाकत प्रहार गदा
कट झारी ॥ दूसर लाई रिदे मझारे ॥ पुन दुर्योधन सुधन सम्भारे ॥ २९ ॥ अकार संजोड
रिदे मो पैठी ॥ रथ ते गिरे विसुध वडु ऐंठी ॥ निज रथ धर दपेरा रतवर्मा ॥ लीयो उठा
य न्नप के दुख वर्मा ॥ ३० ॥ निज रथ डार रण मम नत जायो ॥ ले गयो वीर अस सुधनिर
धायो ॥ ऊली दुसासन नसैन कवंता ॥ पुकरा ने जिरि ते ज मर्दता ॥ ३१ ॥ पांडु बानन सै
नीद धायो ॥ भई भयभीत न त्रास वडु पायो ॥ जातु वधन कुम जन रथ धायो ॥ तीछन
अरस अस्र वटेकार सो ॥ ३२ ॥ वान चरबं कीनी जहि दिशि बंता ॥ रन्नी सैन चत्तुरंग अनंता
स्ताडे. मग नहीं रहो जं अस्रौवे ॥ मज्जा रक्तमारि धम झावे ॥ ३३ ॥ ईहू मो दुर्योधन सो धाना
सन बो अक्ख अनु सर्वाडमाना ॥ दुसासन भीता के संगगयो ॥ रण भूम ज्ञापर गम भयो
॥ ३४ ॥ अरडक तै सैन्या ॥ कवचारी ॥ दो रोके क्रोध परसं ता री ॥ ३५ ॥ दोहरा ॥ दुर्योधन रोदेख

अर्जुन बान चलाए ॥ एकहु बान बल धनु करसो दृस रथ जाम पार ॥२३४॥ पुनि रथ पै के अस्व हत
करे रण मो अस्व बल लीना ॥ भीषम अर्जुन पर रोरि दे बहुर प्रहार एक कीना ॥२३५॥ अस्व पाम
हैंसी निरख अर्जुन बान ननि जवान ॥ कीन हृदे दो मर्दि मोहै सो बल दिखलाना ॥२३६॥
चौपई ॥ अर्जुन क्रोध रमत अगनि तैं लैना ॥ कीयो प्रहार सर अर्जुन दुख दैना ॥ धनुष धुजा
अस्व रथ के मारे ॥ कृपाचार्य निरख्यो बल भारे ॥२३७॥ कृपाचार्य कै रथ धनु मारो ॥ की
यो दुहू कर अर्जुन सर मारो ॥ बहुर दुस्सासन आ धनु तोरे ॥ दो सो करण बली की तोरे ॥२३८॥
करण युद्ध सात तक याद बसो ॥ दिख अर्जुन कोको धपरसो ॥ सात तक कोदिख समन्यु रथ आयो
अर्जुन सो बड युद्ध मचायो ॥२३९॥ तीन बान अर्जुन छीत छोरे ॥ भीम अर्जुन रथ दुपाति दिग
मारे ॥ दिख सात तक याद ब बल रूपा ॥ नकुल सहदेव मिथ्ये अस्व नृपा ॥२४०॥ पुत्र द्रोपदी
के अस्व न्यारे ॥ अस्व पन अस पुनि सम सस्त्र प्रहारे ॥ सम भ इक बार करण पर डार हि ॥ भिम भांत
निरख बल कर धार हि ॥२४१॥ मद मातंग जिम बिंद चलावै ॥ तिम भीम तब करण हिहर तपावै ॥
करण मन छिड़ हि सम भुचौ परे ॥ जिहि जिहि जात तहि तहि घेरे ॥२४२॥ चपल तास मन रण भुम
बल धीरा ॥ सम भ के शस्त्र कटे रण धीरा ॥ यों भि जीनि करत करण के आवै ॥ जाद प्रहार भम सा
मिन लावै ॥२४३॥ रथ तोरे अस्व मन रदन कीने ॥ मेले धर्न पद्दाल अगधीने ॥ बान नकी
वर्षा अस करही ॥ बिना बान रथ द्रिष्ट न परही ॥२४४॥ भयो क्रोध अर्जुन निरख हि
पुत्र पर बान वर्ष बरखा ही ॥ दुहु कर अस पन्द्र प्रकासा ॥ मर पट भयो धर्न अकासा ॥
२४५॥ दोहरा ॥ करण दुस्सासन शकुन को दुर्योधन इक ठान ॥ मरदते वचन कहत प्र
गट सुनो सरव बल वान ॥२४६॥ दुर्योधनो वाच ॥ यो तुम सदिन संग्राम कियहा ॥ स
भम पातु बचली दिखावत भीष्म द्रोण मार हतु होये ॥ जिहि बिन मुहि मन चिंत वि
जोये ॥ तुमने को रे हने बलारी ॥ हम सैन घनी सिहारी ॥ मीह उपाव करो द्रिष्ट न
आवै ॥ यातें हम री विजे दिखावै ॥२४७॥ सुन करण भुज पर भुज मारे ॥ व द्रोण बदम रख

६८

करतउचारे॥ कौंनवाच्यान्हाजुके दिवसपंडकेपूता॥ मोहिहायतेगयेअधूता॥ २४७॥ मि
टैरैनजदिनप्रगटावै॥ देषोकहावल्लरणद्रिसावै॥ सघलमद्रहरिप्रणप्रगटारे॥ ना
सपंडसुतसभहतजोरे॥ २५०॥ श्रीपदुपतिसहततमजोहि॥ परेवलेहमरेप्रणएहि॥ ये
नहतेजीवतनाहिऊचो॥ धत्रीधर्मरसोदिघरावे॥ २५१॥ मोहवचननीनरसंससेजाने
यामेमनभेदनहीजाने॥ फालसीसकजुनभिदहारे॥ सेमीहसीसकरेप्रगटारे॥
२५२॥ तुमसभरहोअनंदतहाई॥ देषकालाछियारणप्रगटाही॥ सकलसभासून
भईअनंदता॥ अपुनअपुनठायेन्तपपगवेदता॥ २५३॥ भईप्रभाततवरसरउदाहा॥
सप्रारसदिनप्रगटदिषान्ना॥ करस्नानसंध्यादिककर्मा॥ शस्त्रपरमयेसभयुधधर्म
२५४॥ सन्नाधसजाधगरफूलनमाला॥ वजेसंषदोउओरविशाला॥ सभयोधेप्रसप
रनीनारे॥ वन्येअजुनवजन्मसंभारे॥ २५५॥ दोहरा॥ सन्मुखसरेभजावलगरजे
भरेगुमान॥ अभेदकवचतनधारके कौणवर्जनप्रगटान॥ २५६॥ दुर्योधनसोप्र
गटकरकहतसवचनवहुक्रोध॥ २५७॥ छंद॥ योकहततेरमानिन्नि॥ सोधरोनिहचो
चित॥ हतेसकलसुतपंडुअरणमो करोअरषहु॥ २५८॥ जोनाहिहतोचिजप्र
ण॥ तजजाउयमतेषान्न॥ जोविजेहोइहमार॥ अपदरसदेखोभार॥ २५९॥ न्ना
नरतुमारेनप॥ पुननारदेषोभप॥ होविदातुमसोचलो॥ रणमाहिअरदलमलो
२६०॥ सुरपतिसुतपरवीन॥ जिहिवलअसरदलकीन॥ पुनपरसरामहिहाथ
अरक्षपादीयोसुरनाथ॥ २६१॥ तेअवनघरमोधार॥ यमदग्निसुतवलभार॥
दशवेसह्रसकबार॥ षत्रीकीयेसंहार॥ २६२॥ भुमहीनषत्रीकीन॥ करदाप
पुनसीहदीन॥ दुहूसेनमाहरकदोर॥ पासमनरुाटौर॥ २६३॥ भंडोडीवतेवहुतेज
नीहधनुषजा॥ नअसमेज॥ डाहीधनुषतेदिनआजु॥ करजाहिअरभाजु॥ २६४
मेरहा॥ अजुनदेधनमाहियातेगुन्नअधिकानहि॥ कालोकारतनारक्षावरी

सकेशस्त्रुवला॥२६५॥पुनअर्जुनकोयोरअर्जुनकेमाही॥उनवडपरेयासपुतरदिषाही॥वा
नहीनरवधवहूनहीहहोई॥जेयोधरतेवडतेपुनसोई॥२६६॥तीसरसहमसारसारथीसि
ह॥कैसमर्थरणमोजीतेतिहि॥मोहिसारथीहोइचतुरअति॥हौहमुहिवचनसाधु
जानोचित॥२६७॥हौंउअर्जुनवलुरोनकरहीं॥पोदैसेलधनीनिजधरहीं॥सम
समानमोहिसारथीहोता॥पंडुसुतोनहीरहतउदोता॥२६८॥अज्ञाजुधसीतरइहीपु
मादा॥मोसोवचरथोरणअवादा॥नारप्रचमोदिवसमोहिहायो॥अर्जुनजातमि
लतमहीसायो॥२६९॥अववभीनाहतजोलधकरही॥होवडभागतोमुहिहतधरही॥
योतेवहोइकुमंचडचारो॥जोहिअर्जुनहतुहोइसुरवारो॥२७०॥शुभमोहिसारथी
होई॥वृहन्नवीनहमसमसोई॥विनाशकुरूसरनदिपावे॥पोमीरहमसमभ
घसुनावे॥२७१॥जोहीकिहकेरोशत्रुपरवोधा॥मुहिसारथहोहितौचितसोधा॥
समभकोनिचलावेरोरणमाही॥मेरुभांउयामोकछुनाही॥२७२॥शत्रुधामदुर्योध
नजाये॥ताहामयोहेतुअधिकाये॥शत्रुनिरपतीमनुहारे॥हमसतहमतउच
रतहिसुभारे॥२७३॥दुर्योधनोवाच॥दोहरा॥पंडुसुतोकीसेननमोमीरसहमसमअ
ना॥नीहदेष्योनाहीसमकोमनंवचक्रमजीयजान॥२७४॥मोहिसेनमोदूसरोते
समंसरवरनहोइ॥मीयदुपतितेभीवडाजानतहोहितुतोह॥२७५॥उदवछंद॥
विनीहमारीमानीये॥अरुवरचितअज्ञानीये॥सुपासपारउतरे॥सनाथमोह
कोकरे॥मीरहमरेसमानहे॥सवक्षितिविचमहानहे॥महानतेमहानहे॥सवरण
वचधरानहे॥२७७॥चडेसमरथकर्णके॥संभारअस्त्रसरणके॥भुजानवलुधरेन
को॥सथानवलुअरेनके॥२७८॥सभारथपेजोहके॥हतेसकलअरहितके॥सु
पंडुकेसुतानको॥हमरेभूमिनिदानको॥२७९॥दोहरा॥यौंसुरअसुरमनयुद्धमोशि
वकेरथेमहान॥चतुराननभयोसारथीपुरतरजगतवषान॥२८०॥तैंचतुराननन

कहन सुमन तु मगन सब देवहीन॥ होइ कर्ण रथ सारथी करे श्री त्रिनि जदीन॥ २५२॥ प्रथ
मे मोहि प्रणाम कीया था पांडु सुत तो को जीत मन वांटे सभ देस कउर वार लेहु न वमीत॥
२५३॥ भीषम पिता मा द्रोण गुरु अरु कृपाचार्य अरु मुनि॥ कउरु सुयोधन शल्य दुर्योधन भ्रात सभु
न पावहु दल सन॥ २५४॥ मुये तीन रहे शेष छे मुये सुत होइ पुत्र राय॥ भीषम द्रोण अरु
ये द्रुपद रण मो चलु दिख राय॥ २५५॥ चौपई॥ अरु जे होवे विजे हमारी॥ अरु भाग छे
हि तनि चित धारी॥ यो उपकारी न जसी सविचारे॥ मरणं तन अशनु न्याहि विसारे॥
२५६॥ हम मम भीनु मरी उमा ज्ञामा ही॥ रहे सदा कष्ट शं सा नाही॥ हम मरी से न आधिक
रतु होई॥ यो तीर रहे भीत भय सोई॥ २५७॥ तुम अरु करण पर उमा सहमारी॥ तुहि प्रसा
द होय विजे सचारी॥ तुम को सो करण रुदे होवे॥ हितचित होरण जाय वरे वो॥ २५८
॥ कौन जु सन्मुख तु मरे होवे॥ तु मरे बल सभ दल पर वरावे॥ कर्ण एक लाजो रण
जावे॥ अर्जुन से सउम न चावे॥ २५९॥ श्री यदुपति हाथ रथु अर्जुन॥ हम से च
तधारे व तुबलु रण॥ जो दतु होइ कर्ण रण माही॥ मोरि भेरा सपुन द्सर नाही॥ २६०
॥ करो विनती मदा उडरु करे॥ करो यदु कर गुणमा ह भया ने॥ सुचने शल्य को धवरी
मा॥ उठ वाहा मुख करत प्रवीन॥ २६१॥ श्लोक॥ बोला चारे दुर्योधन मोहि नहीं सा॥ होसी
न्याह ज्ञावर को उन सा॥ पांडु वत जनु मरे गोहि ज्ञा यो॥ मजमो कपट तुमा रदिखायो
२६२॥ ईदि देडु नो के चढी य तम भपा॥ जो तुम प्रकार करो वोज्ञा रुपा॥ हो मार्य कर्ण सारथी
न वहो॥ मरे लाज देव रूप सम भरी॥ कहा कर्ण सम मउ च लु नाही॥ ताकार पुह
को कर्ण माही॥ २६३॥ दोहरा॥ पहु सुत न को रतु करो सेन सहत रण माह॥ तो मर पे
मो न्याम मोहि उसार सउत्तप लराह॥ २६४॥ धाम धाडे नोहि उर तेयो व सुयाभ जमोर
कोये यु द्विन रथं सचित नहीं उनमा न्यो तोहि॥ नमस्कार करे तो हिम्मव जा वतरी
निज धाम॥ जाय सभा मे देस मोरि करे होइ प्रकार निहि काम॥ २६५॥ चौपई॥ उ केसभा

तेईहिवचभावतो॥चस्योवेगकोधुचितनगाषत॥दुर्योधनवहुन्यपभातामन॥पाछेदे
रयोहोईविमनमन॥२८६॥निमरहोइवहुविनतीधोरे॥वचनाषिमपुनमुखप्र
गटोरे॥दुर्योधनोवाच॥हमजानेदोऊसैनमऊरे॥नाहिसंवरसोऊत्तहिसमभा
रे॥२८७॥२८७॥तोहिजानस्रीरहमसमाने॥अपुनरथहितवचनवषाने॥अली
स्मारथीजोतुमहेहोवत॥वहुतुमरावहुपनकहाषोवत॥२८८॥तुहिप्रसादिजयदे
तहमारी॥जानतोरदेतोहिउपकारी॥योतेइक्कुशीतहमसुसुनावो॥कोऽस्वव
एहितसोप्रगटोवो॥२८९॥योकेसुनेहर्षउपजतमन॥मानोजोमुहिवचनु
हूदेगन॥दू॰॥दोहरा॥एकदिवपिनुकोनिरखरहमयेसभामऊरा॥मार्कंडे
दरसनदीयोजिहिहितपुसमतेभार॥दू॰१॥स्वरूलसभाउठपजलगीरिषिमन
नुभयोप्रशंसन॥स्वरूसुरनकेयुहृवडोरिषिकहेप्रगटरवचंमन॥दू॰२॥स्मारं
डेउवाच॥स्वरूरतपतारकैदेतसोकहियेवडयुक्तिशंत॥हूतयोभारवलअसु
रकोजिहितैसुतवेत॥दू॰३॥चौपई॥वडापुत्रुमारोच्वसुन्नामा॥मघसुतना
मकुलाच्ववषान्ना॥मदनमालल्लघुन्नामप्रमान्नो॥तीनोवडभजवलीपच्या
न्नो॥दू॰४॥पितुकेसयेभयेदीन्वारो॥शेलतंधमादनतपुधारो॥धानपानतज
पवनअहारी॥निराहारनतपुपालेव्रतधारी॥दू॰५॥चिरकालतपुकरतर
हाके॥भयेप्रगटब्रह्मसरषाये॥हेपुत्रंनमुखवचनउच्चारे॥मोडोवर
जोइष्टतुमारे॥दू॰६॥तुमरोतपुपरसोंहोरह्या॥वरदेवोहितातेहमकहा॥सुनन
वचनवोलेसमसरनपति॥जोदयालवरदेहुविमलमत॥दू॰७॥हमकोस्वालु
नरावहूउंमसही॥सुनततवचनवचतुराननहमसही॥योजगउकाजोकसुरदेव
नरम॥उंचर्वेअसमपसरहिनरपिशाच्ववर॥दू॰८॥जालपाशतेवचेनकोऊ॥जो

२०

रघुधारी तउ गमो होउ॥३०९॥ इहि विधि विनाशे जोर जो भाखे॥ पर्णकुटी सांचु चितन
धो भजन सुर पुमारव द्रुर प्रगराने॥ सो गत है वसे जे ऊस ज्ञाने॥ तीनो होवे न
गर विशाला॥ करदी जे यो भये दयाला॥ अपुन अपुन नगर हि नृप होवहि॥
भुजवल तुअधिक प्रगट कर जो वहि॥ जिहि इछत हि नगर लि जावे॥ मन भावेत
हि ठाहर होवे॥३१०॥ तीनो न्यारे न्यारे रहे॥ मिले न कबू पुस परस्पर कहे॥ वर्ष सहं
स पोछ इकु एक॥ मिले वहुर होइ सी विवेका॥३११॥ मरत हमारी जेसी क
रहे॥ मरे एक रहे ही चित धरे हे॥ एके वा न वि हू जो मारे॥ तिहि कर दी जे काल
हमारे॥३१२॥ अस्वर का हू विधि नाहि हमी मरा॥ इहि वर हम को दे दुष्ट पाकरा॥
न पान अस्त्र अनुरख ते वस्रा की है॥ भये छपना धिन्ने रल्मुल सी न्ने है॥३१३॥ अस्र
सुर पाय वर मई ते दपी है॥ सकल त्रिते तु सनाय पय धोतरि है॥ मयी देन सुन
विल्मुल न की ने॥ तीनो नगर सा ज नि हि दीने॥३१४॥ स्वर्ग भीत भी यो जन
नतनी॥ स्वर्ण सनी प स्वर्ण विधि सजनी॥ की यो मारा चतादि हे भपा॥ कर छ
रत जु कर तन अन्य पा॥३१७॥ इह सर नगरन नन की भीना॥ मही लो कसा ज्यो भ
भरीना॥ ते तुला च की अश्राज्ञा माही॥ मयी देत करदी न तदा ही॥३१८॥ ता नुभ
न लीसर त नव नासे॥ मयी देन पुर सज्या विशाले॥ मदन माल ता मो नृपुधा
मो॥ भई है त जुन भार संभारो॥३१९॥ बेनृप कन्सुरे पुर त्रै कीने॥ वपुभ्या
न वहु भुज वल लीने॥ जाइ पर नाजिहि देस नमाऊ रे॥ नर अंतर हतप रतहु
खोरे॥३२०॥ सुरन नगर पुर अगिन पु जारता॥ सकल देसउ न करे दुरवारत॥ श ठन
नसंहि जु सन्मुख जाई॥ धरहे मो न हरि शरि देस साई॥३२१॥ घर घर ज्ञान
हारत निरं घन॥ अंकर कर सम सकल दुरव भंयन॥ अगणी पीर निवार नहे ते॥

करह्णा ज्ञाय मकरो सुचेते॥२२१॥ तिहि पुर माहि मिरतक बहु ञाती॥ सयेकदस्म रञसनगंमञ
पाती॥ भयेऽति दुखीअस्सरभयभीता॥ निशदिन चिंता रहमन चीता॥२२२॥ मारीच
अस्सुरक्षसतहरनामा॥ मनमोहन विचार अज्ञ काजा॥ यहि उपाव तत छिनहि कीजे॥
नातर सकल देस महि छीजे॥२२४॥ वेद कहत ध्यान हरि धात्यो॥ कुटंब समेत सभ
भोग बिसाल्यो॥ भयेतपुर ब्रह्मा परकाश्यो॥ बरं बूहम रखवचन सुभाश्यो॥२२५॥ अस
सुर हाथ जोरे उचराना॥ मांगत हैं। बर देहु महाना॥ अससुरे बाच॥ हमरे पुरे माह
तीनो सर॥ सुधा पूर करदेहु सरोवर॥२२६॥ ब्रह्मा तायाऽसुभ मख भाष्यो॥ तीनो
सर त्रिपुर महि प्रकाश्यो॥ मृतक अस्सर तिन मो डारहि॥ परसत जल जीवत वल भा
रहि॥२२७॥ निरभय अति दुख देत जगत को॥ तपसी रिषि मुनयती भगत को॥ सभ
को हनत उदर निज भरत॥ पापी अस्सुर पाप की सरत॥ सुरपुर अरु कुबेर बर्ण पु
र॥ कहेरे विधंस बहु दुखी भये सुर॥२२८॥ सुरनर तपी सर्व इक ठाने॥ सुरपति संग
चले सिसकाने॥ घने घ्र अस्सुरे बहु कारे॥ अस सुर सुर बहु कीन दुखारे॥२२९॥ सु
रपति विमल गयो रण त्यागे॥ भागत गयो चतुरानन आगे॥ सुरपते बाच॥ अस सुर
नको नु मम सबल धात्यो॥ जिन केबल सभ जगत दुखात्यो॥२३०॥ अस सुर जीतन
जीने जाही॥ तीन लोक दुख शोक धराही॥ जो नहि कीजे याहि उपाऊ॥ नष्ट होइ सभ
जगत निदाऊ॥२३१॥ ब्रह्मा वाच॥ नपुर विरया नहीं परत याहि को॥ सरखा अस्सुर वर
दीयो ताहि को॥ तुमरे हित उन कोष पकर है॥ मोहि कोउ न वर दीयो चित रहो॥२३२॥
एके वान तिहू को वेघे॥ कहो कौन समरथ या भेदे॥ देषत हो याहि दे विचारे॥ शिव स
मथीया सम गुन धारे॥२३३॥ ब्रह्मा सुरपति संग सभ देवा॥ शिव के गये कीन बहु से
वा॥ ध्याने स्थित शिव डिगरे केलाशा॥ वेठो सम मोहार धर ध्यासा॥२३४॥ सुर शंभ उप
मविध नाना॥ चिरं काल कीनी मन माना॥ तज समाधि शिव नैन उघारे॥ चतु

७१ गनन सरपतीसंभारे॥३३५॥इंद्रादिकसभसुरसिरन्यावै॥बडेशवदमुखकीर्तिगावै॥सुन
तशंभुमुखतेउचरानै॥मोहिउपमकाहेप्रगटानै॥३३६॥मोहितेहिंजिहिसमेउपायो॥
घटघटसभजीयमाहिसमायो॥ताहिउपमकीजेवनकरवै॥मेरेरोगदुखसुखउपजा
वै॥३३७॥शिवसंगसकलविष्णुदरसायो॥जाकांतनकिनहूपायो॥ऐसेनकभांतउ
पमामुखधारो॥करेऐसेवरितचितसभधारे॥३३८॥विष्णुदयालरूपाकरबोले॥करोस्त्र
वणमुहिवचनअमोले॥३३९॥विष्णउवाच॥चतुराननअसमेरोवरदीना॥त्रिहूंकी
म्रितुसुणकपुरीना॥विहितीनोइकठेनहीहोई॥मरनबठनइकठाप्रगटोही॥३४०॥
येत्रिलोकसभइकठाहोई॥विनाशंभुहतसकेनकोई॥विष्णुवचनसुनशंभुउचार
रत॥सकलसभाउरेमुखधारत॥३४१॥महादेवोवाच॥दोहरा॥त्रिहुलोकनमोवस
नेदेअसुरअभयवलुभार॥पतालमर्तस्वर्गमोभिंनीभननिरधार॥३४२॥इक
ठेहोवहिनाहकवीशिकिहिहनहेदेइकवान॥योनमरेजगकोरहतेदोऊविधकठनम
हान॥३४३॥तुमरेहितदेवोनिजवलअब॥तुमगहिकरोयुद्धउनसोतव॥मुहिवल
जीतेअसुरभयानै॥जगमोसुखउपजेमनमानै॥३४४॥ब्रह्मादिकसुनसुरसभबोले
सत्तोइशमुहिवचनअमोले॥ब्रह्मोवाच॥दोहरा॥तोहितेजुकोसमरउठाये॥निजसं
हारेसत्तसुखजाये॥३४५॥शिवोवाच॥दोहरा॥जोवोअसुरेसनमुखदुखनहीसहातु
मार॥रहेस्वमित्रचितहोइसभमननतेचिंतविसार॥३४६॥चौपई॥कमलापतिनिज
वलुवद्दुदीना॥रूपमाननहेशंकरलीना॥पुनब्रह्मावलुदीयोअपार॥इंद्रादिकदेवो
वलुभार॥३४७॥सभहूतेवलुशिवशंकरले॥मुखतेबोलेवचनरूपाले॥महादेवोवाच
मोहिप्रानेदेरथेलिआवो॥धनषुवानवइतेजसगावो॥३४८॥ब्रह्मादिकसुनशि
वकेवचना॥रचिविताधारीवडरचना॥ऊंडिनतेजतेचापुसवारो॥विष्णतेजतेवा
नविचारो॥३४९॥धर्मतेजकरपवनवेगकर॥कीयेचक्रदोऊचंद्रदिवाकर॥चारो

वेदचनुअस्वसुहायो॥वेदआर्थयवतीघटीवनायो॥मेषटौरसमउउगनकीने॥याकेरथको
वलीदृढचीने॥३५०॥जारसुमेररथधुजासुहाई॥गगनछत्रकीठौरदिषाई॥वर्षमास
रथुकामगुवरयो॥यमकीठाउँररथुतेप्रगटरयो॥३५१॥असरथचढशिवकीनपयाना
ऐपउठेदैलोकभयाना॥भयोसारथीचतुराननहिता॥जिहिशिवभाषतलेजावततित
शिलवलभारीहररथचलायो॥होइथकतमगठाढरहायो॥असवलुलाइरहेथकरहे
मारीवलुकुचसकतसदे॥३५३॥नाहिवडेयातेअसवनकुचा॥भयेथकतमगवेठनकी
रुचा॥वेदआर्थयोछटीमहावा॥विस्मतेजुतातेप्रगटावा॥३५४॥त्रिषभनपधरमुखतेवो
ले॥मोपरचढोकरोयुधुभोले॥निरषत्रिषभशिवकीनपयाना॥त्रिषपदकूटशिववले
मयाना॥३५५॥तातेत्रिषभोवेपगछेदा॥प्रगटदिषावतभाषतवेदा॥धिनअकाशधिन
धर्नमञरे॥धिनपयालतलेजातसुचारे॥३५६॥दोरतअसुरसन्मुखजावै॥जहचाहत
तरहीहतपावे॥तीनोभ्रातअसुरनिवलाने॥भयेएकठेसन्मुखआने॥३५७॥कीयेपु
ठीजहंसतनुनपइये॥नाहिहिंसतनुविधियागनतीकहीये॥क्रोधहोइवानुपरहायो॥तेऊवा
नीत्रिदुकोभिदजाय्यो॥३५८॥वानतेजजारतकीयेधारे॥तीनोसुरपुरप्रवलप्रजारे॥असुस
रोकेभयतेजगधूटो॥लडोचलेशिववेभ्रमहूटो॥३५९॥वहुउपमाकरशंभीरजाये॥
सुरशिवसेठावैलाशीसधाये॥यथायोगशिवभेटादीने॥कीयेविदाअक्लादिप्रवीने॥
३६०॥हर्षहर्षसुरनिजनिजथाने॥गयेमुखतेशिवउपमवषाने॥दुर्योधनकीयेडीहडीन
हमसा॥पुनमुखतेशनसेपरकाशा॥३६१॥शंभसारथीब्रह्माहोयो॥रहेवडुउपनुतिहरि
यासोपो॥येतुमकरोसारथीहोवो॥हमरेमनतेचितासोवो॥३६२॥यातेतोहिवडाकरजा
ने॥वउथोसेअतिवडुपथाने॥जिहिव्रह्मासुररथाकीने॥त्योंहमतेतुमकरोप्रवीने॥
ओभारगुनवडुवलकारी॥परमसुनामाजिहिसिष्याधारी॥विशपएकवारेपरकीने॥जिहिन
जीसहष्ठाथएकीने॥३६३॥जिहिहितविद्याकरीसिषाई॥सुरुअतपुनपरजगताई॥

२२

तौं हिय माहि मर्म हि आरसं हरे॥ हम सुरेमन नर्क में चितनि बांधे॥ ३६४॥ सुनत स्रप स्रुमा नीड हिवात भा दु
र्योधन सों कही हपुगदा ता॥ ३६६॥ शल्यो वाच॥ दोहरा॥ तुम मेरे हित यों कहीं कुरेम मत कछु वार ही वार॥
एकु वचन मेरि मान्नी ये कहें तो हप गदा रा॥ ३६७॥ तुम जानो भी सुहम को समझे नसार थसे
र॥ कवन घतननता को हते जिहि स्महाय हीं रेहो इ॥ ३६८॥ छंदु॥ तु हि हेतन पइ कुवात॥ नीके
केरा व ख्यात॥ जो कर्णरण हत परे॥ पुन कोन सन्मुख लरे॥ ३६९॥ स तपंडु सोर णमें डु॥ सदे
वा नते जनरु अर्थ॥ नव सभोकादत है हो इ॥ जीव तन त्याग जो कोइ॥ ३७०॥ अब यवादई गति भार
अर्जुन परे संहार॥ व लवर्णी पडु सुत न मरे॥ दिखि हम रिस मन धरे॥ ३७१॥ सभ काके रंस
हार॥ करि कर्ण को वीचार॥ मानो हमारे वेन॥ दुरयो धन सउपजे चेन॥ तजपांडु का सो वैर॥
काहे कु पथ धरपेर॥ हम जाइ उन सो कहें॥ सभ दुख मन के दहें॥ ३७२॥ मी हिक हामो रेनाह
इहि गुन करु उनमाह॥ तुम को पुस परमेल॥ सभ भात धारो खेल॥ ३७३॥ करे रो आध उतरा
ज॥ निज देस मैं नसमाज॥ इहि वेर दुख को मल॥ तज देहु न रुअन कूल॥ ३७४॥ त्याग सु
रवी जीत हो इ॥ जग मो विराजे सोइ॥ सभ भ्रात सुख सो रहो॥ सभ पुत्र जासु सदीव सहो॥ ३७५॥
दुर्योधनो वाच॥ दोहरा॥ धनु धधारके मान सुत जव धारे रणमाह॥ कौ समर्थ ठाढा रहे पंडु
सुतो भटा जाह॥ ३७६॥ तुम पुनर छ करण के हो वो वली गंभीर॥ जानो दिघ भुज जाह के पंडु
पुत्र तज धीर॥ ३७७॥ श ल्यो वाच॥ जो कर नीर हमस भु कहै अश्व ठोडय तुमार॥ जो नीय जाने
सो करे मर्म रे प अग्नि भार॥ ३७८॥ चौपई॥ तुम मेरो हित निज जीव न त्यागो॥ तुम मेरे संग र है आनु
रागो॥ इहि कहि स सुख हरि कर धोरे॥ गये कर्णा के रथ नि कट रे॥ निरख कर्ण रथ ते तत्काल उठ
कर पूर्ण नमस्कार छबिर कीयो॥ ३७९॥ कर्णोवाच॥ दुर्योधन हित तुं हिर थ ऊपर॥ रोइ स्मारथी
ते वन रहे वर॥ करे मात्र तुम सो पुगरायो॥ मो हित वचन न हीये रो को यो॥ ३८०॥ कर्णो वाच॥ ज्यो वृ
ल्म शिव सारथी होया॥ ज्यों कृष्ण धनु जंन दु सुख खोया॥ स्यो तुम मो पर कर्णा धारे॥ मोहि स्मार थी
भये सकारे॥ ३८१॥ यो तुम करु हो नीके सो इ जाने॥ अव र उप वि पास के रथ आने॥ श॥ सुस्मार थी हो

रवहावा॥ कणिवलीरघुमह्मसुहावा॥३८४॥ दुंदभमेरशंखवरणवाजा॥ कररउवलुसाजेसभु
साजा॥ कहैंणिवाचा॥ रघुमहिहोंकतहोलिजावे॥ जिदिधाइंदुपुत्रदिमावे॥ ३८३॥ धर्मपुत्रसो
मोहनकाजा॥ भीमननकुलसोनाहिसमाजा॥ अर्जुनहतेसर्वमरजानहीं॥ वाविनुकोरणध
नरहाही॥३८४॥ शल्योवाचा॥ सुनोकणितुमवउवलवाना॥ तुमतेअधिकधनंजेजाना॥
कहोसुकहो जबलोनहीदेखा॥ जबदेखोतबपरेपरेखा॥३८५॥ शल्यरघुहाकयेपवनवेग
करा॥ दुर्योधनदौरयोपाछेवरा॥ अर्जुनमितसेनसंगसमरलसरे॥ अच्युतअच्युतरणपुर
परे॥३८६॥ वउउतपातचलतनगमये॥ रघुकेअसवहिडहिभनगये॥ अस्तीगरेनभ
तेभूमऊपरा॥ नाहिलखीयतकोउरतहैवरा॥३८७॥ निरखकर्णशल्यसोपुछारावे॥ मोको
नाहिसमनऊकछुअनावे॥ कोउरतडहिअसमोहिपरा॥ जानतहैंअपसगनमाअरवरा॥ ३
८८॥ रणतेअर्जुनजीवतआवे॥ हिरदाअपशगनदिउहिवरावे॥ जगदीस्वरयो
इखाकरही॥ सोइहोइकर्मनअनुसरही॥३८९॥ चलोवेगकछुविलमुनधरहो॥ अर्जु
नकेसन्मुखरथुकरहो॥ समनुमकेधातेसंगलीना॥ कोरछहमुतीपरलीना॥ ३९०
कैरानकपट ईरषात्यागे॥ मोहिरछीहतसोअनरागे॥ जोमननमेंकछुकपटरवसावे॥
तिह्चवेधोरनरककोजावे॥ ४००॥ शल्योवाच॥ तुमजोकहेअर्जुनकोमारो॥ डीहवच
नोहिनिसफविचारो॥ तोसेअर्जुनरहतुनहीहोइ॥ योतुमलाखयतनकरसोई॥ ४०१॥ इ
हिकहिरथुहाकतवउतेजे॥ पांडुवानकीसेनअमेजे॥ कर्णदेखराजोजिमगंगा नायअ
तिवडुअसरपुहमनुमगना॥४०२॥ कर्णोवाच॥ पांडुवानकीसेनपुतेहो॥ रेसरथोतुमर
होनिरमयहो॥ मोकेनाहिकामनकाहूसो॥ साचवचनहमुरेधरमनमो॥ ४०३॥ मोहिभयकछु
हृदैनहीधारो॥ विनअर्जुननहीकमहमारो॥ जहअर्जुननरहमोहिदिखावो॥ योमं
कोमेसोतेअपावो॥४०४॥ ताजरपुअसवअगेतअपारो॥ उवकावरजोइछतुमारो॥ क

२३ रवचनसुनतदुर्योधन॥सुनसुनहर्षसरधारता॥४५॥वहुरकर्णमुखवतेद्रगरा ना॥सुनो
शस्त्रहमकेरावधाना॥अपुनावलजैरिदेरिचारो॥अवरअेाऊंनिजसमनननिहारो॥४६
अर्जुनवचहासरपतिजोऊाोवे॥निरखमोहिमुजवलीरसपावे॥श्लोकावाच॥व्रिषमहन
केऊकाजननअनोवे॥अरवादिुगहीअर्जुनीद्रुणोवे॥४७॥जाननदेतुहिरहेनधीरा॥जेतेव
चतुहिभाखवीरा॥४८॥ताससुणिउवाच॥दोहरा॥समझेअपुनापवादीपिमुखतेकहतउचा
रा॥तुमरेमनअर्जुननसवललघुवलजीधरमारा॥जोमरहस्यपीरहमसमझअर्जुनस्वास्म
हेस॥तोनमोहिसमवलधरेजाोब्रिदेअशंसा॥४९॥चौपई॥तुमअर्जुनजोवहुवलव
हो॥प्रथमवडाईअपुनीलहो॥तोहिरिदेमोडहि वडहार॥नजनहोइजलन्हावेनारा॥५१
मिरनवभाजननअंनपाकका॥सदाअहारेकरपुनीतवर॥सुतावहनमाताअरदारा॥
समराविपतुमडानीकुलसार॥५११॥मातुलभ्रातभ्रातकेताता॥इकडेपिरहिरहचितराता
केपावनमदमासकदरहे॥रिदेहर्षकंधलाजननकरहे॥५१२॥जावतानिरतकरतस्व
भुजारे॥स्वानिरलजुमरवउचरतभारे॥सुनसुनपुरषकअधिकहरखावे॥याइनपरनि
जवडाअदावे॥५१३॥याभतउकेअर्जुनकीशोभा॥वरोमोइवनेदेविनुछोभा॥येकहु
हाथपरेअहिअर्जुन॥देखोडेहमरेवलभुजरन॥५१४॥निजसहायतुमकोसंताली
ना॥तुमनहीतजेअपरपरवीना॥मोहिवि ऊबोबचनदुखतकीहे॥उरपावोनिश्चे
जीनीयहि॥५१५॥उतरपोरथतेजीघ ऊबे॥अससनहोदयाकोफलपावे॥पुथमेसी
सतोहिउरडारो॥कपरकेवचनसुननहीचितजारो॥५१६॥श्लोकोवाच॥सोरठा॥सवनव
चनपरेवमुकेसुखरवजानीये॥हमजीयभरभरोसअर्जुनकेहितोहिवल॥५१७॥
जोसदस्तुतीहमारेधेतोअर्जुनसमनाहि॥सवनवचनहीहिजानीयेसुनोसरवलवाह
५१८॥चौपई॥कर्णोवाच॥वहुभजनहाएकटेहोई॥देसदेसयोधेइकहोही॥वलसेशो

भेद सुनकी नहा॥ एक एक प्रकाशो भाम हा॥११५॥ नोहि देसकी चले जु बाता॥ चिंदा करे सकल वषा
ता॥ मरहि है अंत बीतहि मासा॥ धरे केत पुन ज्ञान प्रकासा॥४१६॥ विवचारी नारी है सोई॥ परपु
रुष न सो वरते जोई॥ याकी तेनि जत के कहावे॥ ज्ञाति निर्लज मरलाज न जावे॥४१७॥ शालो
वाच॥ दोहरा॥ क्रारह सपृषि रत तज्ञो कर्ता सुनो धरध्यान॥ याहि गायधे सम न जके अर्जुन व ली
प छान॥४२२॥ एक वैश्य वेधा मसो उपजे पुत्र ऋपार॥ ताहि उचिर्स निन तका गुरु जाय करे
ज्ञाहार॥४२३॥ चौपई॥ जब वहि षावी है भोजन न वालक॥ तबही ज्ञावे का गवि शालक॥ भोज
न ताको देवे हित धर॥ षाइ षाइ गर्व ऋपु ने पर॥४२४॥ ऋषि ब्राह्मण गर्व कर सर्व निघन्न नाहि कथ
जात गना षाइ जूवनी च मानो पंथ पवरा तको॥ एक समसे वैश्य सुत काज गये भाजी दुत देवसुन धा
म का गज घो प्रभात को॥ देख्यो सो पुत्र न भये हमोहि तव हुत गहे जाइ मोल ल्याये भोजन ज्ञान दी
नो तात को॥ भाष्यो तिन सुनयो कागए जु दीसे पर्षी वाग तो ह नस मान को उहा सीली नो जात
को॥४२५॥ दोहरा॥ हासी तिनकी नहि हुई सर्व कागा ज्ञान॥ अवो गर्व सन केवचन के पक्षा
पको ज्ञान॥४२६॥ याही ते बुधवान जो नीचन आदर देत॥ अवरमान है प्राप को चितमो व
हु गर्व नि॥४२७॥ सवैया॥ होइ पुत्रन च ल्यो तक वायसु जाइ सपर्न है सच्छि डाये मजाय कहीति
नसो यहि वात जो ऊ नु मम मोहे ऊनाय कहाये॥ सो ऊब ताय दे वो मुझ को तु मज्ञा जु जितो उस
को बलु पाये॥ हासप रे मिलके सभ हंस दिषो यहि काग क्रिये वे नसुनाये॥४२८॥ दोहरा॥ स
भा ही च ते हंस ड उ ऊ दे वचन विशाल॥ छिमे हंस निज विदया नु हि दई हो यद याल॥४
२९॥ चौपई॥ नाय स रम को हंस पछाने॥ स्वेत का गन्ना ही मुहि जाने॥ वक भी स्वेत होत हे
कागा॥ सो भी ना हस सुनो वड भागा॥४३०॥ दोहरा॥ जो मै चा हो गगन को ऊंचे तल को न त को
ल॥ नुहि जीतन नम्र हि हंस गम हे सु नहो हे सवि शाल॥४३१॥ सव तरा तज्ञाव त मोहि कोभे
द न जानो कोइ॥ तिनो वीव्र जो के ऊंहे सो भाषत हो तोहि॥४३२॥ छपै॥ क्रा व हीन उडी न स

डीन चतुर्थ महा डीन पछाने ॥ पंचम मैं है पर डीन सचौ हिरदे तुम जानो ॥ अब डीन कह हत है ता
हि जु उड्डुत कर ऊपर जावै ॥ उड्डीन उड्डारी सो इत ले है गमन न करावै ॥ सु डीन उड्डारी सो इ
उड़त पंख न नाहि हेलत ही ॥ पर डीन उड्डारी जान इहै पर सो पर नाहि मेलत ही ॥ ४३३ ॥ दोहरा ॥
महा डीन यहि जानिये निरत समान फिराय ॥ गतागत महा जो सुरै ए हैं बडी याते सम न आय ॥ ४
३४ ॥ अरिल्ल ॥ भाष्यो है तुहि सांच न झूठ उचार हो ॥ हम जानत है एक कागद हर बारयो ॥
कहे हंस न कंवधी ताहि हंस चलत है न है ॥ देवाय सहम राम स्वामी इहि पर लीन है ॥ ४३५ ॥ भुजं
गछंदु ॥ उडे काग हंसे दोऊ बल समानो ॥ गयो हंस कागा डोल इक उड़ानी ॥ रहो काग पाछे
बहो पाछु पावे ॥ कहूं बैठ जावत कहूं उठ सिधावै ॥ ४३६ ॥ चौपई ॥ सम वाय सी मिल कही
इहि बाता ॥ हम रा स्वामी है बलज्ञाता ॥ निर्जीव पासो नि घल करायो ॥ गयो भाजी रिदय
दुडरपायो ॥ ४३७ ॥ कैसे मैं हंस सु नै जु ववचना ॥ आयो वेग सु हत बहुर रचना ॥ तेरो संसधनो
दोनो जाई ॥ परे पार सो कैसे कहाई ॥ ४३८ ॥ दोहरा ॥ सिंध माहि दोनो गये हंस बलीज्ञाति
ज्ञाता ॥ थके काग नाहि उडु सके जल में डोते घाता ॥ ४३९ ॥ चौपई ॥ कहे हंस तव वच पुगराये
मैं डान तमो यहि कवच न कहा यो ॥ अब हून लेके ऊपर ज्ञावो ॥ कैदूं याहि तले छपजा वो ॥ ४४० ॥ दोह
रा ॥ दुबत देख याहि नीरमो सी जेमे ही निकार ॥ फल लखा डो कुम मान का सांचो कहे उचार ॥
४४१ ॥ चौपई ॥ है खडग जन्म ज्ञान पछो जानो ॥ नि जस मान नना ही को मानो ॥ अब रा घो मुह
हंस प्रतीजा ॥ करे बचन न राय सक जानि दीजा ॥ ४४२ ॥ दोहरा ॥ सुने सच न जव कहा डरे ली जो पी
ह चतुराय ॥ लेख्या पोत तका लीतिहि जहं स मजका डवे वाय ॥ ४४३ ॥ चौपई ॥ ज्ञान ताहि ज्ञास
पावन करयो ॥ हे सज्ञा पुने धाना सिधरयो ॥ चस्यो काडस पुने ओर माही ॥ करे डर्ग सो जी
तन नाही ॥ ४४४ ॥ दोहरा ॥ वाय समसम है वर्णी तू अर्जुन है स समाना ॥ तव लक भाषत वच
न र दु जव कही लागत वान ॥ ४४५ ॥ सु जयो ताचा ॥ चौपई ॥ अर्जुन कहे वचन कृसन सो ॥

कहे उतंम वव्रुक्ष परजु ववेक॥ दुर्योधन साजी निज सैन्या॥ धर्मपुत्र अजपुनी सुखदैन्या॥४५८
युधिष्ठिरोवाच॥ अर्जुन प्रति॥ अर्जुन कर्ण के सन्मुख होवो॥ इति उतिष्ठिन कहूं नाहर घेरोवो
तुहि विनु दूसर नाहि निहारो॥ घाको कर्ण सन्मुख धारो॥४५९॥ अर्जुन कर्ण धारे रिसजाजा॥
कहे घात वल सभेउ जाजा॥ तांते नु मकत हूं नाहि जावो॥ धिन कुंता के नाहर तजावो॥ भीम
सुमुख दुर्योधन होवो॥ गदा धार रण जाइ बरोवो॥ नकुल वीर त्रिगर्त सैने लरे॥ रणभुम सभार वा
हवलु करे॥४४५॥ सहदेव शकुन सो जाय संभारे॥ रण मंडे वहु वान प्रहारे॥ सच भार वा
हवल सेसा॥ जो भोगत धेऊ नित वउ देसा॥४६०॥ ते हत कीये कर्ण वलवाही॥ धर्मपुत्र की
सैन्ना माही॥ गज अरक्षा स्वपदातक अंतना॥ रण हत भये तहे कोकंता॥४६१॥ धतके
तच्चंदे रीमपा॥ जापर शोतापर वलरूपा॥ सहेस सरमा तह हतकीन्या॥ कर्णवली सुतसं
गवुवीना॥४६२॥ द्रुपदपुत्र दोनो वहु सूरे॥ अमित सैन संगाम जव लपरे॥ पंचाली
सुतसंग सहाये॥ दोर कर्ण के सन्मुख आये॥४६३॥ सैन घात दिध वहु रिसकाने॥ भारेशो
कर्णिदे ठहिरागे॥ दोसुत रविसुत के हतकीने॥ द्रुपदसुता वउ वल रणलीने॥४६४॥ पु
त्रणशोक कर्णी जीय धायो॥ धृष्टदुम्न को रण हंकायो॥ परो पुत्र अजित प्रवल भ्यानक॥
निर्छ धर्मसुत स्यो अजचानक॥४६५॥ धृष्टदुम्न संगे शिषंडी भ्राता॥ दोउ अजमोर रण
अजित वउसाता॥ धर्मपुत्र संग सातक शोभा॥ नकुल सहदेव वलीवल शोभा॥४६६
पचगंगी सरेवउ तेजा॥ अजोर घनी सैन्ना निहिमेजा॥ डीहस्यम डकवे वान प्रहारत॥
कर्णी उतरभुज वलकसमारता॥४६७॥ रर दुर्योधन घनी सैन संग॥ रणभुम नयुक्र करे उम
गउसंग॥ कहे देवहरन मोन्नाही आवत॥ जिन देषो तिन ही वहि यावत॥४६८॥ सुखसे
ननामु कर्णी कोपता॥ जयो भीम सन्मुख अवधता॥ धनुष भीम का कटो दुहूका॥ गि
रोधरण जो काफसरका॥४६९॥ मातवानपुन उंरमयारे॥ पवनपुत्र की उर प्रहारे॥

रि सत्रु भीम नरू क्योा वलवंडे॥ वसली ये जो निहर धनजि हिदंडे॥४७॥ सद सर क्रोध भार पर हारे
सर धाये असर सुधन सभारे॥ निरसि सुधादि षत जे ठौर कर्ण की॥ जाये भीम मन दूछल रन
की॥४७१॥ साठ हैजार दस तीन पैन सर॥ कर्ण ठौर कीने वल पर हर॥ कर्ण पुत्र सतसेन वला
री॥ निरखत कीन क्रोध मन भारी॥४७२॥ रव ठग पुर हार भीम पर कीने॥ निरखत क्रोध भीम
जोयल लीने॥ कीन पुहार क्रोध युत दस सर॥ धनब सार धीर पुकार योवर॥४७३॥ चारे
सर धर के दत ठोरे॥ ... रके सभै अंग ठाभि दकारे॥ पुन कर सी सुधर न लपटाने॥ रूपाचार
ज तव मी दिखाने॥४७४॥ बान वर्ष भीम पर कर ही॥ सरपर सर छिन विल्मुन धर ही॥ जि
जवानो वल भीम पुरीने॥ दुहूं ने धन घदू ... कीने॥४७५॥ तब दुसासन ... तउठा
यो॥ पहुच्यो निकट भीम के आयो॥ कीन पुहार ... तिवल अधिकाने॥ पवन पुत्र लष फूल
समाने॥४७६॥ जदापि दुहू ... कराई॥ पवन पुत्र रण वल अधिकाई॥ पुन तै सर पर
हार भयाने॥ मूर्छ कीयो रण माहर महाने॥४७७॥ ... भीम पर दौरे॥ निर्ष भीम
... मन जमे चौरे॥ रथ ते गिरे धरन पर आये॥ तेजु भीम के सदन सकाये॥४७८॥ रवि सुत
दिख आये रिसधावत॥ भीम ठौर ति बान चलावत॥ पवन पुत्र जो बान चलावत॥ रवि
सुत ते मन जमो ... पावत॥ दस ... सात तीन ... सर सम॥ कर्ण भीम पर तजे धनुष
धर॥ दो उसरे रण बान पुहारे॥ ... पुसपर ... पार ही॥४७९॥ रवि सुत सुत
... सेन चलाये॥ नकुल ठौर पंच बान पुहारे॥ ... तेई सब बान वर॥ ... सेन सर
त पर हरे क्रोध धर॥४८०॥ वृषसेन कर्ण सुत सात ... संग॥ ... तय ... तेज अभं
ग॥ रथ ... सार ... समेता॥ कीये चुर ... सात ... चेता॥४८१॥ धन ... ति
रसे ... तुरे॥ ... सर तिष उर माहि पुहारे॥ वृषसेन मर ... छिन ... रहो॥ ... गच
मै ... रथो॥४८२॥ ... रथ ... सात ... दौर यो॥ क्रोध ... अधिक माने होवोर

[illegible]

४५॥ सवल्लसेन मोऽग्नि प्रकाशी॥ मंदबुधार्यन गेतवि ज्ञाप्री॥ तवसातऊमे धरास्तुपर
हारयो॥ वर्धमे घतेऽग्निर्निवारयो॥४५॥ सातवको समसरसाराहू॥ उपमभारमुखतेउ
चराहू॥ विलऊर्जु न ऊरनुमगनभारे॥ ऽग्निनाशते कोननिवारे॥४५॥ वादूरऊरोऽस्तु
नासस माखो॥ धर्मपुत्र चेतनवसमाखो॥ द्विधधर्मजव उशऊत उडायो॥ ऊरी ऊंरपरद्रूल
रिसायो॥४५॥ ऊंमगंगेदूकऊरायो॥ पुनधर्मजमरपोचचलायो॥ चलेऊंतनपेखेप्रबा
हा॥ रिसवभयोव बुधोधऊगाहा॥४५॥ मसरप्रहारधुजधर्नीनिषेधयुता॥ ऊरधरनडोरेव
लरविसुत॥ गदप्रहाररघुचुरऊरकीनो॥ गिरोधरनधर्मजहेड छीनो॥४५॥ ऊंगानते
नपतनमारे॥ चलेरऊऊरनगतभारे॥ धर्मजंवुतधेसरवलाभी॥ लीयोचरायरथपरतत
कारी॥४५॥ चाहतरणभुमतेसेजारे॥ नपउचरानासरजसुभावे॥ सुधिरेटोवाचमरण
भुमतेमुहिऊदालिजाको॥ धर्मजनमोहिलजाको॥४५॥ दोहरा॥ निरखतनपको
निवलऊंनवरणेउरऊरयाग॥ दोरायऊस्वकेसेगयेमननमोचितस्भाग॥४५॥ ऊंरे
दोरपाछेपरयो जानतदीनोभूप॥ डीचावेतोरभुजाचलमुखवचवरतऊरूप॥४५॥ जो
नृमहोतेसरवलरणभुमत्यागतनाहू॥ भनपनिसंगरणमांउनृपरकीरतमहिजाह॥४५॥
सोरठा॥ नाहरताउतोहिजिहिचाहेनिरभयरहो॥ धाउयोजाननतमोहिऊंऊर्जुनन
मवरपरत॥४५॥ चौपई॥ पुत्रममातसोहनपुणकीने॥ विनुऊर्जुननतुहिसुतपरकी
ने॥ ऊंरसिसकोनाहरतारु॥ इहिपुणमिमरसोहिमुक्ताउ॥४५॥ पुनमुहिदधनिज
सरनभायो॥ इहीसमाधिनमोहिदुरायो॥ इहिविदहिकर्धर्मजलोन्यागा॥ गयोइहर्निज
सेनसुभागा॥४५॥ ऊरोरवसेनमचलहरयाजी॥ मुखमुखउपमगऊंकीवाजी॥४५॥ यु
धिष्ठिरावा॥ धर्मजधृदुमसोभायता॥ सुनोचीरनुमरहीवनुरावता॥ भयोऊर्जुनमो
सोधिनृन्यारा॥ मोपरऊंपरयेऊरभारा॥४५॥ नृमतजडायेदहारुदूवाना॥ जारहऊह
नउपजनदुरऊंगा॥ सुनतसऊलवधुउत्रनऊंवे॥ दोरपसोपलविसनभावे॥४५॥

सन्मुखवकर्णायुद्धविवहारो॥ऊरेएतदेदेवलभारे॥जवहोवचनकर्णाधनुर्धरंसज्जो॥क्रेपवरतसमभेतन्न
भारे॥५१॥ऊर्णाएकलादिवदुर्योधन॥परोदेस्संगत्सेनमारगुन॥ताहिभीमसेनाक्षियोमगमाहि
तुमलयुद्धवरयोतोहिमाही॥५२॥निरखतकर्णाशल्लसोबोला॥भीमनिनऊररयुद्धकठिनमोला॥
सनतशल्लरथुहाऊचलायो॥सन्मुखभीमसेनजाहिहिगयो॥५३॥निजपाथवसोऊरतपोनसुत
मोहिकर्णासंगयुद्धकोधयुत॥हेतोताहिऊमेनोहिहतोवे॥शंतारिदेहमेरेतत॥ऊर्ठो॥५४॥इरिस्संदे
सनुमनिजतनमनहो॥ऊहोजासातनऊधएदुमकोन॥नपक्षोहिगतजवहूनजावो॥इकुप
गमगभीताहिमजातो॥५५॥नपविनमहिजीवनोनिहिकाजा॥ऊरोरधछाइतन्वितसोऊस
जा॥ऊसजेनधुजाऊर्णाकहूदूरे॥जोरधसवेकरतवलमरे॥भीमभिमरतलोविदाकरायो॥जा
नतेजवहुकर्णादिशायो॥५६॥शल्लोवान्वे॥शल्लभीनसतसोउचरावत॥देधभीमनिशिहिछव
मेऊसावत॥तुमहोवासविधानवलाती॥सतवोस्योरविसुतवलमाती॥५७॥कुश॥ऊर्णावान्वे
भीमसेनरोवलकोजानो॥हेसरस्वनिजसमनहीमानो॥समहोप्रीथपतिजेऊरहे॥
जीयतेनाहरहतूप्रणधरहू॥५८॥ऊसजेनीविनकुंतीजेतंरना॥रतनऊरोरणमोऊसरवं
उन्ना॥पंडुपुत्रनिजवलसेगहो॥ऊहेउधाहूरतना॥रऊराऊ॥५९॥जोनपकोजाहिरदोयोधा
उरण॥भीमसेनकोसोहीजानमन॥तवभीमगरज्योरणऊप्रायो॥देखसमभाडोरस्योनऊ
यो॥परदाएकुकर्णारणमोरहगयो॥दोरभीमकेसन्मुखभयो॥भीमसेनतेजानपुहारो॥भा
नुजनिजसरवलकरडोरे॥६०॥ऊतनकडोरभीमकोलायो॥पवनपुत्रतेमजीहिकुरायो॥
शिहिपुकारवहवानकरानेदोऊडोरधमेकोऊनमाने॥६१॥ऊनतभीमकर्णाकोडोरसे॥
जीवोपरदारवानुवलघोरहि॥निरस्युधरोरथमोऽगिरपरयो॥शल्लहाऊरथुसातेषरयो॥
पर१॥दोहरा॥जवधनराष्टसेसीसुनीकर्णासरधापाय॥भीमसेनकेहाथतेरणभूमग
योतजाय॥६२॥चिंतनऊमेस्वासभरैरोवेदुर्जनमरनीर॥संजैसोभाषतवन्वनविरवल
ततनजधीर॥६३॥धतराष्टवान्वा॥जानततहोमुहिस्युतोकेरजरस्योनहीमाया॥कर्णा

११ मारे छत्या गारण गये भीमसे हाथा॥ ५३२॥ चौपई॥ शस्त्र हाकर रथुरण ले गये॥ दुर्योधन तब कि
या मन लये॥ संजयोवाच॥ दुर्योधन निरखत चित तत चित॥ आपन से न सो कहत सनो हित॥
५३३॥ दुर्योधनोवाच॥ कर्ण भीमसेन रन रखा न्हा॥ ता की रछ करो विधनाना॥ मत कोउ आर
नि हि सुधे सभारे॥ कैसे पर रण मो हनत जारे॥ ५३४॥ बात कमो हि विजे की आसा॥ बाविनाति
क सजा रमो हि स्वासा॥ योधे पच मनरछे सवारा॥ दौर पर रण भुज वल भारा॥ निरखत भीम न
गदा पर हारे॥ दुर्योधन के भ्रात तेह मारे॥ ५३५॥ कौरभ्रात दिखशो कधार ज्ञार॥ पहुचे भीम नि
कभुज वल धुरा मदगा रण कत त्रिसल रव उग्र सर॥ करपहार भीमन डेरे वर॥ ५३६॥ भीम क्रोध
कर गदा पुहारे॥ दुर्योधन के भ्रात तेह मारे॥ तीन भ्रात तव लकैंन रिसाये॥ भीम संग संग्राम उठा
ये॥ ५३७॥ भीम गदा वल तीनो मारे॥ रथ समेत चूर कर कर डारे॥ इहि मो कर्ण वली सवि धान॥
वहु रिस कत तव न भीम दिखान॥ ५३८॥ रथ दौर पक्रोध गरजाना॥ गयो भीम सन्मुख वलवा
न॥ दोउ वीर हेहि सिंह समाने॥ रण भुम कर रन युद्ध मय माने॥ इति भीम उत कर्ण वलानी॥ वाम पु
हारे ज्ञान कर पुकारी॥ कर्ण क्रोध ज्यों सर्प महाना॥ कादुत स्वासन कर धक भय माना॥ ५३९॥ वि
कैसा नीन जधन पुसमारयो॥ गांडीव नामृ जिहि तेज उचारयो॥ वान पुहार करत वहु भुजव
ल॥ ५४०॥ भीम रथ सद तवान तल॥ ५४१॥ भीम संग्राम भेव धत मयो॥ तेभी पद पाछे न ही
दयो॥ व तु मवद रण मो हार जावत॥ होत व धर जो ख्रवण स्नावता॥ ५४२॥ ज्ञार कांधन सु भी
म कर दुहायो॥ रविसुत धिन धनु कान न समारयो॥ पवन पुत्र वहु विरछ उपारे॥ कर्ण डोर भु
ज वल लै प्रहारे॥ ५४३॥ रविसुत निरखज्ञा वतन रहारे॥ त्रिण वत करर कैसे वल तोरे॥ पव
न पुत्र रिस वान चला वत॥ मेघ धारजे सीदिखरा वत॥ ५४४॥ एक वान खल वेध संजोया॥ च
ष क्रोध लमर गयो समो हा॥ सो वेसक रम म नत लख्यो ई॥ गयो वेग वरु वदीमि रा ई॥ ५४६॥ पान्च
वान कीये मम करो॥ पवे रहा भीम करी दिखारे॥ देर व से न भई भय माना॥ भीम करे सम
रे वलहाना॥ ५४७॥ छिनदपु कर्ण वेद गी विडारा॥ कीयो धाम पाप वलु वोरा॥ रथि रकार के

योधुनक्रूरस्तो॥ दिग्धघुहरेरेविशपचसरस्तो॥५५३॥ पवनपुत्रकेदेहि समन्मायेः॥ तेजुनवाहररेदेन
द्विषाये॥ चाहतभीमसेनो धनुषुउठावत॥ रथोपतननरवलुनहीपावत॥५५४॥ विरवलभ
मधनवेढाये॥ पितुरोसिमरक्रधक्रवलुपाये॥ उठो हाथमोगदासभारे॥ मरयुतजवेरोभु
जवलभारे॥५५५॥ क्रणसंगायेसरभ्याने॥ भयेभीमकेसन्मुखक्राने॥ जाकोभीमगदापरहा
रता॥ तेऊसरथमपुरीसिधारता॥५५६॥ पढेभीमसन्मुखवुरभये॥ मत्तमतंगभयानक्रभेव
ज़िहिज़िहिहतेभीमको जाये॥ तेमहिमननतेथिवं नमिटाये॥५५७॥ जोघोभीमसन्मुखजोवे
गदावलेभमसा यमिलावे॥ सहतमहावतगजकेसवारा॥ गदावलेद्रोवतसमुधारा॥५५
रघुपदातक्रमसगाए ननक्राई॥ येसंख्यातिनकीमहीसातसे॥ येहनेभीमचतुभुजेगदादे॥
भीमसेनकोअधुनकहाई॥ क्रोरथहनेभीमवलुपाई॥५५९॥ क्रणमोनडाडरसामाही॥
स्वरचाहतनपराने॥ पाछेलोपसरतजेभयाने॥५६०॥ अपरयुद्धकरभीमेमारे॥ वर्जेतवर
गाज्रधर्मविचारे॥ द्रोपेलोपसोधनुषुउठावत॥ कर्णताहिहतसरेकुपावत॥५६१॥ मुरवञुग
हायकरतवडुसरा॥ धर्मतेजडिउघुणकोपूरा॥ मोनेनिवान्चा॥ अपरयुद्धसरेन्तहिरहती॥ हो स
न्मुखनिजवलेसभरही॥५६२॥ याकोभुजानाहवलुहोई॥ अपरयुद्धचाहतहेसोई॥ रतनसेक
जोक्रपनभुजेवल॥ सेकरहोरणभमक्रूसवलछल॥५६३॥ दुर्योधनशिहसमजोपावता॥ अयेक
परतापलानिरघावता॥ डीहमोशकनसेताइकसोरथ॥ पंचासरएकफूलतगजउनमनत॥५६४॥
पेरभीमसोयुद्धभयारे॥ शस्त्रपुहारतसभदुक्तमारे॥ भीमसखेजनहीणक्रघहोवे॥ पवनवेगसेमको
उठावे॥ नीरगदाडेगजरथलावत॥ मिलतमनसमैवितुलपावत॥ कवुनभागगयेकोक्रोरहता
येः॥ पवनपुत्ररणमोवलुपाये॥५६७॥ कत्रीमित्रदिग भीमसेनवल॥ अपरउपमज्योंगतिमल
जल॥ पांडुवानकेहर्षकपारे॥ जिजेवाजनवाजेअतिभारे॥५६८॥ कर्णवान्चा॥ भीमगदाक्रजेन
केताने॥ तिनमोहिकाहूसहन्नसकाने॥ दुहुकोच्छाजरणेरतकरह॥ निजसेनाकेत्रासीन
वरहु॥५६९॥ शकुनभजोदुर्योधनदेखा॥ चेततसोप्याक्षधिकवशेषा॥ निजजुतेजनरजेक्रीत

७८ मतवारे॥ तिहि रेखा र लीन न तत कोरे॥५८४॥ तिन सो वचन कहत हित भाये॥ धृतराष्ट्र सुत ति
स कान ह्वाये॥ दुर्योधन बोले वाचा॥ सुनो सर मुहि कृष्ण व ब्रगराचा॥ ह्नमरे मोहि तु मव उस रवु
पाये॥५८५॥ या पर इच्छा हो तन तु मारे मते उदे तह मोहि तु चित धारे॥ इह विधि व सकण बोल मु
हि कानु॥ जो हो भीम के जा यन भा जा॥५८६॥ उन इस लेमु हि सेन कह तानी॥ मारत है
ज जन्तु द रस समानी॥ ऐसोर सात सो सन तारि सा ये॥ ज ज कस वार भीम पय ज्ञाये॥५८७
भीम्रीन र घा जिहि ज दाब्र हार त॥ स्याम सह तचुर कर र र ज्ञार ता॥ सब लह ते रण को न
र हायो॥ वीर बेद वा ज्ञण स मन ज नाये॥५८८॥ ते म हस्व स रे स जो इसन॥ श स्त्र पर दो रे
रिसाय मन॥ वीर ज दर्भ न ज सी स भ्रमाये॥ सुर न पर ज्ञा री व लु लाये॥५८९॥ जिहि रला
जे पुन उठ न हो ई॥ यम पुर जात ज ड त त ज सो ई॥ सभे खात ज पुन वीर ज्ञाधि कव ला॥ क
ौ वली चे ड यो सन्मुख चल॥५९०॥ तिहि सम कर्ण ध मं ज सो लर ही॥ दनी से न व दु व उ
व लु कर ही॥ सहत सारथी व उ व लभ ज॥ कौरे धर्म ज के धनु ष घु ज॥५९१॥ निर ख भीम को
न्ये तन जायो॥ वर व डु ते तु भीम पर ज्ञायो॥ चलत पवन व उ धर उ उर ही॥ छ बो भा न र
धु दिस न पर ही॥५९२॥ हो हरा॥ राजा मती त्यो दि व स यु द्ध मये डहि भांत॥ जो व कर्जुन
जे डा य को क र त नी र व घात॥५९३॥ दुर्योधन के व उ व ली भ म स मर मा ड्या ह ॥ तिन
सो युध अर्जुन की ये ना हि ज्ञ तु क थुता र॥५९४॥ धर्म ज हो र यो भा न सुन जिहि भ ज व ल
[illegible] ध का इस ज्ञा ई व सर सु त इ दु के व हो नी र स मन ज इ॥५९५॥ मत ह त ले व धा र व ल पा छे ते
लि या हो इस सन का अर्जुन ता व लकर त प द्व मघा न क सो इ॥५९६॥ चो प इ॥ शो घ ना ज ते वान
नु पा यो॥ धार धन घ ज्ञा र से न न च ला यो॥ सर्व ब्रु ज र सभ मे न म ज्ञारे॥ सर यो को उ सह त
कर डा रे॥५९७॥ सुसर मा दि व ज र उ स्वु पुहार त॥ ब्रुज र ज र उ ज्ञा ह व ली ये ज्ञ डार न॥ अर्जुन
स भ के सस्व ट डार त॥ निर ख सुसर्मा रिस न न धारत॥५९८॥ अर्जुन को ते वा च व लाये
स व धा नो छि न म र छ पा ये॥ रिस व तं इ दु वान पर हा रो॥ ते ज जा सु सम भान उचारो॥

५८॥ योधसहस्रस्त्रअस्वश्चसवारे॥ द्रैसहस्रगजस्यंदनधारे॥ शीघ्रहनुमयेसेरस्तमुमाठे॥ कार्जे
नुविजेकरीअन्नगडे॥ ५८॥ शंखुवजायोशवदुमयाना॥ दुर्योधनसनबुधिसमाना॥
स्रर्यस्तुतपयदूतपठायो॥ सकलाव्रितोनुतासससमजायो॥ ५५१॥ सुचनतअर्णतवववलुवहु
कीनेॽ॥ भीमजेरसरपरहरदीने॥ रथसमेतस्वारथीहतायो॥ कर्णहीनरथुदेषतजायो॥
गयोतहादुर्योधनमपा॥ मयोइवचस्वरवलाल्पा॥ कर्णदुर्योधनअरगमस्तुयामा॥ कृपाचा
र्यशकुनदुखनामा॥ ५५२॥ अर्जुनवेसभुसन्मुखहोये॥ वानपुहारतइवठषगोये॥ कर
जैनदेषनिजधनरंकासो॥ ममवरतअरसरस्तोरपुहासो॥ ५५३॥ सिंघजीकृपाचार्य
दीतोरे॥ तीछनसरघाडेवलघोरे॥ कृपाचार्यदिषमजोहिवटाने॥ संघजीरिसधारीअ
पिकाने॥ ५५४॥ कृपाचार्यतवगदाकोपकरि॥ दहुंसंघजीकीधातीसन॥ रथतेकूदप
रोभुममभारी॥ द्रुपदपुत्रतेगदाविनवारी॥ ५५५॥ दोहरा॥ चारोअरस्तुरथसारथीधुजासहत
मयेचूर॥ अरसवलुरणमोकीयोकृपाचार्यवलसूर॥ ५५६॥ चतुर्थंडअवरजोधुरनिदो
सोपायवहोइ॥ कृपाचार्यरेयुद्धीहतचाहतपदुचेसोइ॥ ५५७॥ कृपाचार्यरेवानवलपहुच
नमवेवीर॥ कराडेपगनउवासवेमाडोसरवीमीर॥ ५५८॥ छंद॥ षपदुद्योनिरषान॥ नि
जभ्रातनिकरगमान॥ कृतवर्मामजेरकाइ॥ वउयुद्धकीयेमचाइ॥ ५६०॥ अरजनवली
वलमेर॥ नषसंगद्यारेसर॥ चहेसोस्वोरवसेन॥ लीयोघेरसरतमेन॥ ५६१॥ सुतधर्म
पहुचोअराइ॥ संगभीमनकुलसहाइ॥ सहदेवसोवहुसेन॥ पहुचेसवलसुखदेन॥ ५६२
कर्णनंबलीअरसेन॥ रणमाहकीनअचेन॥ वहुहनीवहुभगजाई॥ रणभमस्याजतभ
कुं॥ ५६३॥ निरष्योदुर्योधनभूपा॥ अर्जुनपुनिभयोअनूप॥ नृपकीनकृपाअपार॥ सुख
धंनधंनउचार॥ ५६४॥ पुनधरकेतुमहान॥ सुतद्रुपदेअरदिषान॥ जानेअरतोहिनिव
लाहु॥ तवकालपहुच्योआइ॥ ५६५॥ जोसरपुहारणकीन॥ दिषकृपाचार्यपुकीन॥ सुन

दुपदसैदीयोस्याडा॥तेसरपुरहरवडभाग॥६७॥रपुधहमेतनुरान॥उनपाहिरपसीयोहाना॥र
पसीनदेनोहोइ॥रणजीतपुप्रषेरोइ॥६८॥रूपाचार्यवानपुहार॥जरसीससरदोदुफार॥भ
मधहवेनुगिरान॥तयेईहिकोतरुप्रान॥६९॥तिननसेनभतीभयान॥सतजरासिंधदिषान
सहदेवजोकोनाम॥वडसरमावलधाम॥७०॥सरवलेस्वारपमार॥सैयेतीनकेओरप्रहार॥
अरउरलतेवरवान॥तिहिसधभयोभुमसान॥७१॥रूपाचार्यडोरहिदेव॥अस्यानकुप्यो
वशेष॥भजवलेधरनउठाइ॥तिजरयेलीयोचराइ॥७२॥सहदेवसनमुखहोइ॥यधवर
तभजवलदेइ॥सहदेवबानपुहार॥तिहिसारथीलीयोमार॥७३॥परहरोपुनतिषवान॥
दिजसुतलीयोमुरझान॥सुतधर्मदिषहरषात॥मरवंनधनउचरात॥७४॥सभवदे
हि उनदिहोइ॥जरासिंधसुतदेजोइ॥पितुनामजीवतलीन॥अस्यामनरछदीन॥६
॥सुतधर्मवेपजामाय॥धरविनीजस्वेदेगाय॥हमदाससमहेतोर॥नहीजाजरमसोहोइ
नहिरुपावरमहिसीस॥जरनाशहोरहजानीश॥तिजपडेसीसउठाइ॥धर्मजलीयोजार
लाइ॥७५॥दोहरा॥धहदुमरतवर्मसोकीनेपुरजपार॥धर्मजवेसनमुखभयोअसु
थामारिसभार॥७६॥सरवरषाकैसौकरीदिजसुतधर्मजओर॥सरविनुवधुहसेनहो
जुरिरहिवानवडोर॥७७॥वीधहरेवाच॥अस्यामेपुनि॥चौपई॥तुहिपितनेहमसि
थापाई॥तुमनातारमनारभलाई॥पुनतुमरादिजजनमुपधानो॥याते रधुनवहो
जोयमाने॥सयाजोनहोइडीहिदेहमारे॥तुमकोहमनतनलावोवारे॥तुममोसोवडुकरी
सुराई॥तुमनवडाईहमननजाई॥७८॥अवलोपिमाभईवडुतेरी॥देवतहोतुहिवलुईत
वेरी॥डीहिकोहिधर्मजरवउगुनिचारे॥दिजसुतवेसनमुखरंकारे॥७९॥असयामेवडुस
रपरहारे॥धर्मजवेजेडासभुमिदडारे॥स्यानवनिरषसातसेउपर॥दिजसुतपरपरहा
रेवलसर॥८०॥धर्मजरवउगवीनपरहारे॥दिजसुतवेरथनरटहारे॥दुपदसुतावेसुत

पुनअ कहायो॥ अ सथ्यामेको वलदिखरायो॥ ६२३॥ संजयोवाच॥ वाइ लवकरएको रणमाही॥ तौभी
दिजन सतउरपे नाही॥ तरउपार इक हाथ पुहास्यो॥ धर्मं जरखउगुह्रक दुअरवरउास्यो॥ ६२४॥
रिसधर्मं जउर धनुषाली नो॥ अरजुन उरध्यान वहुकी नो॥ तानपुहार हाथ अरवेधे॥
उरजीवाकी नेसर छेदे॥ ६२५॥ जैसी देखअणि वलभारे॥ दोरपरे अरसे नन रुडारे॥ जित
परईति तकाल स्वलपा॥ हनत से नयमते जअन्तपा॥ ६२६॥ देखचंदेरी सैन्या संडाा॥ क
रे अहीधिक वलरणअभंगा॥ मसा तकरत तवमां संडासो है॥ भुजवल लगा नपुहार रतरे है॥ ६
२७॥ कृपाचार्य सोहम रोवादा॥ परे भसमरण नहिमिर्यो दा॥ दुर्योधन देभ्रात तनसापा॥
पंचाली सुत धारे माया॥ नपवचसनत मान सभली नो॥ ज्ञोहिविघर सोतिसर्वविध
कीनो॥ ६२८॥ दोहरा॥ अर्जुन सन्मुख वरणी जेगरज्यो जेहरसार॥ ग अरुघो है भानसुत
देखोनेनो निहार॥ ६२९॥ अरजुन वचजे जीवते अर्जुन वान समार॥ निरचे भोगो मही
तुमभवनवचन अनजीयधार॥ ६३०॥ दुर्योधनोवाच॥ चौपई॥ दुर्योधन सैन्या सो भाषत
ये ज्ञातिरि सवकारि है मोराघत॥ हे सरयो मृहि वचन रिदेधरा॥ जोरे सुनो अरसपुत्र नवर
र॥ ६३१॥ पंडुवान रुपसैना माही॥ भुजवल सभार दूसरो नाही॥ जिहिंहिंहि अर्जुन को हत
करहो॥ अणिसंग हो सभवल धरहो॥ ६३२॥ अर्जुन हते सकल हत होई॥ हमरे मनका सींच
ताबोई॥ नपकी आज्ञा पाय सैन तव॥ सहंस चौवीसरथ चहुँदो रे सभ॥ ६३३॥ देस देस
के नपवल भारे॥ भयेअरन उसमुरथो मझारे॥ हनहन माघर होरी गावत॥ उरसरे जो
रथ तल अवत॥ ६३४॥ जिहि परजाइ सैन्यरूपा नो॥ अर्जुन रुहन पुनि वचन रघाने
रेपद पति नप आज्ञा जैसे॥ हतो अरणीको जैसे तैसे॥ ६३५॥ योइन जे सन्मुख नही जाऊ॥
मोहि सेन हत होउर पाऊ॥ सैन्या सैन हमन्न हाथ रोगो॥ एकाकी हि भानल रोगो॥ ६३६
अर्जुन दूइन को जाऊ मारो॥ धिन मोजीतो बिसमन धारो॥ सन श्रीलहमयो वे सभमस क्या

उपजपाल्हसंहाररणजा ॥ ६३ ॥ पवननवेहाओर घर्जागरा ॥ ज्ञाहसेजुरविसेजउजाग ॥ देवदत्त
जवशंखवजायो ॥ सुनतसैनहूंडरडभयपायो ॥ ६३ ॥ मोहिनामदवानपरहाल्यो ॥ हजरसैनमर
मरधकरड्डाल्यो ॥ अस्वथामाजरदानप्रहारो ॥ समसवधनेशस्त्रसभारो ॥ ६४ ॥ रिसक
नस्कल्लस्सररणमाह ॥ गर्जतभयेस्कल्लबल्लवाह ॥ अर्जुनसन्मुखवानप्रहारे ॥ मेघ
धारसावनछवकारे ॥ ६५ ॥ युद्धभयानकीयेअर्जुनसेयमहरनदेहिपाछेपगरणसो ॥
निरघरजीअर्जुनविनुसैना ॥ दौरपरेतामोदुखदेना ॥ ६६ ॥ द्रुपदसुताकेसुतजेहि
ठाहर ॥ भुजबल्लकीनसकल्लजाकाहर ॥ हनीसैनजिहिगननतनजाओ ॥ कोस
नमुखजोरीहरावे ॥ ६७ ॥ द्रुपदसुताकेसुतबलहारे ॥ रणतजभाजेरिदेउतारे ॥ धर्म
पत्रकीसैनामाहि ॥ पुनजापरेकोतोबलवाही ॥ ६८ ॥ त्रिगणवतसैनकोरणघाता ॥
घहेदिवसमधसरनजाता ॥ सांवेउरदसपांडुवभूपा ॥ जाहिभ्रातनलनामुअनूपा
६४ ॥ अस्सुथामेकोरतोसवकाये ॥ रिसकरतादिजसुतघडउग्रचलाये ॥ नलकेप्राणगयेयु
मलोका ॥ दौघादिजसुतमुखवरहतमलोका ॥ ६६ ॥ दिजसुतोवाच ॥ दोहरा ॥ रोकरहो
मगमेहिकौअपवलकीयोन्हीविचार ॥ तातेजायोयमलोककोस्याजगततकार ॥ ६७ ॥
रविसुतजोसुतपोनकायुधभयेकीतिभार ॥ पचकतभयेदोउभटरणभानजनयोउचार ॥
६८ ॥ कसैवाच ॥ सुनोभीमसाचेकहोजोनहोतपुणमोर ॥ वाहनलाजोनिमधस्नु
हतलेवोरणतेतारि ॥ ६४ ॥ डोहडोहनजगयोभीमकोअवरडोरवलमर ॥ भीमगदागहि
अबरदिसदोउभयेपुणपर ॥ ६५ ॥ चोपई ॥ घदुम्रसघेहीभ्राता ॥ तीसरसताजीव
वडुजाता ॥ भानुजसोरणयुद्धमचायो ॥ दुर्योधनोदवदोरतजायो ॥ ६५१ ॥ शकोजोवण
उशरदिवगये ॥ दुर्योधनमुखतेपुगराये ॥ दुर्योधनोवाच ॥ तुमदोउयुद्धवलीमहिसेना ॥
श्रुमनकरेभाषोकीहिसेना ॥ ६७२ ॥ जीवेराजभोगसुखमानी ॥ रणमोमहासर्वोसाधि

कामी॥ दोहा॥ बात सभी की जीय जाने॥ जिह नहि लरत सरर बल वाने॥ ६५३॥ सुनत तच्छन नरपति स
कल सराही॥ धंन धंन मुख ते प्रगटाही॥ अस सुधा मो वाच॥ हम सम को आनि जीत समता इहि॥
होइ हृदै थिर न दुर्योधन जिहि॥ ६५४॥ स्वामी रहै मिरत न जानि पावे॥ जी रन थम सुचि तम्हरे पुर
जावे॥ ता ते मोहि वीच्यार ही चाहयो॥ ६५५॥ दुमत्र सो कछ रनचि तारयो॥ ६५५॥ पांडव मैं न मारह
बल भारे॥ जा रथ न तपु इक करन हंकारे॥ हमारा हित ता कउ पर सो रत न करे॥ गई मान न यों भये र
पुधर॥ ६५६॥ ता ते मोहि प्रण यो सभा स्यो दतो तम्हि सभ माहि उचारयो॥ जो लो नाहि हते
न उचारे॥ निज तन तें संजोय उतारे॥ ६५७॥ सौगंध वाच॥ हम नहि प्रण धारयो जी पुमा
हा॥ इह तो कछ जोग जून बल बाही॥ जी तो नहि रण ते नहि आवे॥ तजो प्राण प्रण प्रभु मेन
नी वाचो॥ ६५८॥ इन के प्रण सुत सभ उचरा ने मम रैनि मारे तिह प्रण ठाने॥ अर्जुन दुर्यो
धंन से न महाना॥ चले पुत्र हित बजत निशाना॥ ६५९॥ पांडु के सनी दिष सन मुख
सी॥ करे प्रसपर युध बीराई॥ कर्ण सरदे रजि हि परदे॥ दल दल नयो धनु गवदुकर दे६
दृने दंतो अरस मंदि प्रण ही॥ स्यन्दरे गज कछु गन तन न पाही॥ सन ता न धर चले सन गाहा॥ मजु
सी च कछु धिकरण माहा॥ ६६०॥ भाग अधिकरण ते मघ भारे॥ अधिरथ पेन दर तसंभा भये हि
वसन नस नष्ट प्रण भिगाने॥ सरद उचार तव परेय धाने॥ ६६१॥ जै सी दिक जन नचि ताने॥ सी
पदुपति सो कर तव षाने॥ अर्जुन वाच॥ धनि जिसे नाउ नहि हारे॥ रही चहि धीरक हिरी
चारे॥ ६६२॥ धर्म तान रथ धुजा महाने॥ दुगन पर तजि हि तो र गमाने॥ रथ मे नाते ओन
रिषा वो॥ करा भयो योने चिंतावो॥ मोहि रघु हा करा ले धारे॥ जराध मैं सु तके जी चारे॥ ६६४
सी पदुपति रघु हाक चलायो॥ वेग पवन ते अधिर धनायो॥ वदु परते आवत रथ आडो॥
बहु सुन प्रा वद रण भमत ज भाडो॥ जर धर्मज तन हर रघु घल्यारे॥ नपको जिर रछो रण बल
भारे॥ ६६५॥ दोहा॥ कल्प मुनी के श्राप ते ज्यों कुल न सगार इक वार॥ त्यों कर्णायु छद्मे अवार

तेही सनरण भय कारा ॥ ६६६ ॥ श्री पदु पति सुत पंडु को दिख रावत तके है वैना ॥ दुर्योधन कोल
ते ते इहि सभ कुश धन सुख दैन म ६६७ ॥ इहि मो देष्यो कर्ण को करत सेन रण घात ॥ ज्यों ग
ज बन मैं सिंह मो पिरे कै चमी च है जात ॥ ६६८ ॥ भुजंग प्रयात छंद ॥ दो ऊ बीर सूरे भुजा बल स
भारे ॥ धनु धरे दुम न मान तजे रण मो हंकारे ॥ निरषत कर्ण दौंयो वने सर प्रहारे ॥ कौ ने सेनन
पकी रणैं चत दुखारे ॥ धरे कौन धीर्य के है काल रूपा ॥ भजे मग्न सूत भया न कुपन
पा ॥ कर्ण वाच ॥ इही वेले सुत पंडु जा रहे तनि सदिन ॥ दिखो मो हिं कुशा ते न कुशा बत कोह
रन ॥ ६६९ ॥ इही भांत उचरत दस्मत भारे ॥ निरखु दुपद सुत कर्ण दा कोप जारे ॥ रिस कै धंच
धनु घालि यो सर प्रहारे ॥ लज्यो कर्ण को दिख की यो रण समारे ॥ ६७० ॥ रिस कर नृ ण ते वाण इ
बु वड्डु निकास्यो ॥ धनु दुमु कीउ रमुज वल प्रहारयो ॥ करे ताम रथ सुं जो रहे सवान कोरे
बला बेले चीर दिषी रस सुतारे ॥ ६७१ ॥ धनु दुत्र पुन कुमान धनु वान लायो ॥ ते ने सा ठ
इस कर्ण मन जाही दटायो ॥ दुहूवी रहे रथ्य मरतल लेलो पाने ॥ शाद्व वे धसर व लदि प्रहार
समया ने ॥ ६७२ ॥ कर्ण रिस कलायो धनु पुनि षवाने ॥ पुजारनाम कुश चढ़ जा ने प्रमा
ने ॥ कर्ण हा धसरनि रख सातर उरान ॥ करे घात धनु दुमु सर र रसभया ना ॥ ६७३ ॥
वडे ने ज र व दुवान साल तर प्रहारे ॥ कर्ण हा धते मारस हूत धनु कराले ॥ रिस कर कर्ण धि स्माद
सा तवनि हारे ॥ दो ऊ रहे ह सन्मुख दपरे प्रकृत आरे ॥ ६७४ ॥ सु ने नो दिषायो कहा रह पुत्र सेसे ॥
जा यो कुम स्व धामा व न न रे ग जैसे ॥ दुपद पुत्र रे कुंज रहे धीन हारत ॥ दर्ष धि है धर्म दर पुत्र
मुखते उचारत ॥ ६७५ ॥ इस स्वधामो वाच ॥ धरा होदुन ममो हि पितु घात को ना ॥ पितर
हो यौनि रभय न रहे मोहि चीना ॥ तेज्ञाना हि जीव तम भुजा बलनु समारे ॥ करत वान परर
मे जिहि बलु कुपा रे ॥ ६७६ ॥ धनुदुमु कुशा ते बडे पुत्र कीना ॥ कर त व दूभय बान स्र
मत नृप धीने ॥ तउ सर हनमा को सन्मुख दकारत ॥ वचन नो इ उचारना जिर ता उचा

रता॥६३३॥ धनपुत्रान मोहि हाथ न हिउ ताहे रही॥ ततो दुरजोधन ताको नैसे कही॥ पिता तेरउ धिकये धरे
वलु भुजा निजा॥ रहो मोहि सन्मुख रण युद्ध कोस जा॥६३४॥ कहत कान के ते नहीं ये वल प्रहार रण॥ कै
यो पुत्र दिजन का कीयो संजोया विदारण॥ रिस करु पुत्र दिजना हि सरप रजो चा॥ दुहू तेन दीसत
जो कुमर विहीना॥६३५॥ धनधर युधु जा दुहू के चरहो ये॥ रसो भारथ गोपिर न मनो सिंह
दोये॥ चुप तपुत्र दिजन खड़ग अरसी सझास्यो॥ खड़ग दुपद पुत्र का वले कर उतास्यो॥६३६॥
पुनः खड़ग गहि दुपद सुत ओर दौरा॥ सरवा कहमो दिष दे रज्ञायो कटोरा॥ अरजुन वान
प्रहार वल दिज सुत भ मजि गइ॥ वहुर उठो कर चाप गहि पुनकीनो सर छाइ॥६३७॥
दिज सुत को सर छनि रथ रण की भ मनि निकार॥ वादर ले डायो सारथी सो मधर्म कीचा
र॥६३८॥ चोपई॥ एक न हूर तपुन सुधघारे॥ निज तनन वान निकारे भारे॥ पासु धार
वल गयो भन रें न॥ हंकारेयो जा सन्मुख अरजुन॥६३९॥ परे युद्ध दुहू मो उनि छोरे भयो
कोक छुनही दे घन ते उो रे सह न स रवा भुज वलु वहु पायो॥ दिज सुत को रण मो मुरछायो
रीघवान भुजन लपु हारो॥ क्रुर रक डाई दे उ वार भ यारे॥ वहुर वलु कर न हाथ नाहि रल
हो॥ धके सारथी ओ सुनही चलही॥६४०॥ केसे कै दिष रविसुत पुडराना॥ अरजुन सो
रण मंडु भयाना॥ दिज सुत को निज रथ चढ़ायो॥ ले सयो सारथी रण भ मत जायो॥६
४१॥ श्री भगवानोवाच॥ हे अरजुन दुर्योधन भय॥ धर्म जसो युद्ध करतजन नपा॥ चलु
धर्म जके रण सुध लेवै॥ दुर्योधन को वडु भय देवै॥६४२॥ भीसम निरथ के रण ओर दिज सु
ता॥ चले जात दोउ एक रथ युत॥ रोक सम न ग भारे युधष्ठर ने॥ सब भीसम तारे दिज भयमाने
म चुमित्र वडु शोभ उचरही॥ पवन पुत्र की उपमा करही॥ कर्ण को पद रहा स्यो वान मास
रतसारथी कीयो रण हाना॥६४३॥ परयो वृद भीम पर आयो॥ दोर क्रोध कर गदा उठायो॥
सधैर्य ...

८२ रा॥ पुर रोवा नर नारि सुत जन लघोरा॥ सबंधु द्रौपदी भार रण भाग्यो॥ ध्रुपद द्रौपदि चढे कूप जागे
हे॥ कृष्ण भाननि हिरदे चउ ऊपये॥ लेउ ये रघुरण भम न जाये॥ पांडव सैन भार भय घा
यो॥ कहू न नधीर ये नर हां ये॥ अर्जुन निरख सकल सैना पुरी॥ उचर तन भयो कम्प जरि मुस
मतकरी॥ ॥ अर्जुन वाच॥ दोहरा॥ कादर भागी जात हैं जीवत रण भुम त्याग
झे तर्ण शुर तन ले रहे रोक्त्र सजु न मरे भाग॥ २६ अभये तुम युद्ध न कसु देवो सब नर ह
मार॥ सम करो सन धीर्य भयो उपजा्यो बल भार॥ २७॥ सलूछंद॥ सुन बचन अर्जुन
बलीका सम भये रिदे भई श्रीन॥ यह देह भयेश बहु सम हर रथ चिन्तर्तलीन॥ २८॥ तांछिन
न तुल सहदेव की नि वल्लाय रण महान॥ निरखंत हरि दे ताय पर युक्त अर्जुन पट्यो का
न॥ २९॥ चिरकाल की नेय द्रुभारी ज्रिहिन ज्ञा व तपार॥ कार्य वषान्यो कर्णसो सुधम प
सो जुभार॥ सुन कर्ण दुर्योधन निरख तब सुख भयो तत्काल॥ दिख मर्प भाषत बचन
मख ते सुन्यो बुद्धि विशाल॥ ३०॥ सुनते पान्डव रथ ध्रुपद मन महि सैन सभर तकीन॥
तुम मोन धोर रह तहो अधुनार बहु तन बुधीन॥ सुन कर्ण दुर्योधन बचन मख ते उचा
रे बैन॥ कर हो जु रण मो जाय कृष्ण देखो पुकार सुखदै न॥ ३१॥ सम करो रतार उर्जहि नजा
ऊं ज्ञान पांडव सैन॥ उहि धनुष गहि हय मसु पवन कर शर त्राण दो सो लेन॥ जिहि भव पर जा
पर तन ब लवहु सैन कर तसंहार॥ नहीं अर्जुन ये रण भुम हरता ये जनम ये ठुरार॥ ३२॥ सु
न पवन को भ्रम सर पुहारे कीये निहि सुध धीरम ले ग ये सार थ रथु तहां ज हाथ ब्रह्म सुध
॥ भ्रीष्म मदिष सुत ते उचा सो कर्ण इह विलुको न॥ सुत पोनको मर षछु की ये रत नी ष
श न पुत्री न॥ ३३॥ लेऊ वानर है जे परम सता महिदि ये करता धारा॥ जिहि ते जरलछ जी
हता न्ये हि ध्यान रह कवा र॥ अर्जुनो वाच॥ धर्म जन निरखे परते हे मि ताकृष्णविकर्णहि
जी ये॥ सुत ये न ज न कपस ध सभा रो हर ब उपजे हे ये॥ ३४॥ भीमो वाच॥ ये जंतुर्जव

समुद्रे हेगे रण समत तज गयो भाज ॥ तुम सदीनि हारो मन पको मुहि दरशण साथ समाज ॥ भीम स्नेस अर्जुन
हाकर रघु गये युधिष्ठिर मंप ॥ देखा रेणि निरसमधम भयो सर शेते जमार ज्ञानप ॥ ७ ॥ १ ॥ दिष उतर रघु ते दुह न
पको यत नत सा थ जुगाइ ॥ दिष्ठत भयो विरतं ननु तव मुख कहत तन पसु धपाइ ॥ युधिष्ठिर गाच ॥ तुमरि वन न
को मुहि हर गवसा कयो करणि सन्मुख होइ ॥ उत न वान वल नहि हर्ष यो निरसम धर घधु जाकर सोइ ॥ ७ ॥ २ ॥
तुम कहो ज्ञावत कहा ते किहि भांत रणि हतान ॥ ते से भये संग्राम रण सो से कहे पुग टान ॥ अर्जुनो
वाच ॥ तुम कन न लग रव ते निकसयो वच हत परे करणि महान ॥ गनि न दीस तम सन्मुख मुहि तनम
हे भयान ॥ ७ ॥ ३ ॥ मन युद्ध दिन सुत से भयेज्ञ न संतरण भुम नाहि ॥ सन पोनी निहसुध ज्ञो यो रवि सु
त भार वल्गु निहि वाह ॥ मुहि निकर ज्ञायो त्याग रण ते तो हसं सकधु नाहि ॥ तुम को निहारो सो षंत
उपजी हरघु भयो मन नमाहि ॥ ७ ॥ ४ ॥ युधिष्ठिरोवाच ॥ तुम भीम धाउ करणि सन्मुख नाहनी करि विचार
कहा करणि करा सुत पो न बल नव छ नाहि नीर सचार ॥ जान्यो दुरे तु मकरणि सो ज्ञव भात को त जदीन
दे दुध न घ ज्ञ व भीर दम को तुम रघु सभार प्रवीन ॥ ७ ॥ ५ ॥ भीर दन भज रवलु धरहते गीर पुत्र कोरण
माहि ॥ हो सार थी तुम रघु चलो वायु हो वत नाहि ॥ ज्ञ जे न मन जनि क्रो धसो क पा लक रत
ज्ञ रान ॥ गयो रव उग करवी न्वारयो चित रनो न पके प्रान ॥ ७ ॥ ६ ॥ यदु पत्नो वाच ॥ रिपा भयो तु
म सीव कृष्ण को जो भात सन्मुख हो य ॥ चो हो जुन पके प्राण हर हो पापु ब ह हेते महि ॥ नहि ह व तुम कल ज
गजान नही व उभात व च न सुनाइ ॥ ज्ञ लि भाग ज्ञ पुने जानी य तजे रो सु चि तुर रथाइ ॥ ७ ॥ ७ ॥
ज्ञ जुनो वाच ॥ मन कर दत कर ते ते जो धनु धार ते ता को प्रान ॥ ताते दनत हो भात को चित ज भगात
मोरदि षान ॥ ऋहि पाप ते जेन रक जा उनी क जान्यो जीय ॥ नही सको जो कहे धनुषु त्या गो उव
तव रवर ही य ॥ ७ ॥ ८ ॥ श्रीभगवानोवाच ॥ धनजीत हिय गुरु अर्जुन वच न ये इहि धरो चित नाहि ॥ स
उभ्रात भ्रात मारे पाप उचे रे वेद तमहि वताह ॥ पनु मात कर रव उभ्रात मारहि घोर नर के वाम ॥ व दु
दूर पाचे दोहि को वड्ढ यो न भुम ज्ञ न्यास ॥ ७ ॥ ९ ॥ चौपई ॥ ज्ञ जान धारयो ते हसु कर ही ॥ ते न र घोर

८३

नरकनेपरहीं ॥ येभाजनचरकेपरहारे ॥ परेनरकवहुदेहिकमनजारे ॥ १०॥ श्रामकृपा
उजेमसरनीऊआवै ॥ ताहिहरतेवहुयोन तपावै ॥ पितामातभ्राताहतपापा ॥ इहसभतेउग्र
तिभारसंतापा ॥ ११ ॥ धमीतीपितुसमतुहिभ्राता ॥ सिषगुरजानेजीयवाता ॥ वेदशा
ज्ञसिरपरतुममानो ॥ ऐरोमेवनतपकीजीयजानो ॥ १२ ॥ श्रीयदुपतिअरणामंजोरे ॥
उज्जुनकोदेसिषकहपोरे ॥ मानवकेचहीयेसमठाई ॥ विवहारसनसमसतुगराई ॥ १३
परमेश्वरसेसचपयारा ॥ कवहूनदेइसचतेन्यारा ॥ समचवचनकोउजोभाषे ॥ वहु
पापुनसजगुताकोराषे ॥ १४ ॥ सचकेहकोऊहतुपरही ॥ तिहिघोसचनीऊनीहवरही ॥
उसचभाषतकोमुकतेहे ॥ नीहिरधुपापकेदउचोरेहे ॥ १५ ॥ नारिउवनहे तको
उनर ॥ वचनउसचवनायकदेवर ॥ उमनकेदुषतेहिहेदेहे ॥ जोनुकेदमानतेउसे
हे ॥ १६ ॥ धनकेहेपुननाहिदेतनहीपापा ॥ देतनपुगराहीसंतापा ॥ पुनकाहूजीहधन
केउगषे ॥ दूसरवस्तीताहिउहिभाषे ॥ १७ ॥ वाधनकुंरिदेविलमुनलावे ॥ केरादेउ
पडाहाथवेधावे ॥ वोलउठ उपुकापछुडावे ॥ नाहिदेपुमिमतपुगरावे ॥ १८ ॥ ऐसी
टेरउसच नीकउनीत ॥ मानवमरतवचेजिहिरीवत ॥ १९ ॥ दोहरा ॥ पितुमाताअरभ्रा
तकोजेवहुपुनजीयधार ॥ ऐसेवनीवेउनतेउपजेजमदुसंसार ॥ २० ॥ पालेइदुईनहासतुहि
पुगरउचारेमीन ॥ ध्यानदुआरकवननर तेरहेवधारेचीन ॥ २१ ॥ चोपई ॥ इदुपापीमानव
हनउारन ॥ पररतसनाहिपापविचारन ॥ तेऊंनरमारजघरउरही ॥ तेकुनाहिपापनतेउ
रही ॥ २२ ॥ सनीपताकोसेवाउननम ॥ जोउजारतनीउतेमानन ॥ इरचितरहोइसेवउदुषी
॥ उरनहिनेउविधपरणीने ॥ २३ ॥ जनमतेउतरेताहिविवाना ॥ चतुविवानतेहुदसिधान
॥ नेसेरूपनुहिपितासमाने ॥ ऐरोसेवाहतुचितमनमाने ॥ उवहूनपसोवेरनकरहे ॥
हमुरेवचनमाचजीयधरहे ॥ जारमारहेतेहिउरावे ॥ घरमीस जडाजसुउपजावे ॥ २४ ॥

श्रीकृष्णवचनस्र नला जततसूजेन ॥ बोदतनषेधर्न कंपततन ॥ अर्जुनोवाच ॥ दोउवातनहि
रुवनवनाई ॥ महोपुगदस्रुनहोयदुराई ॥ २२ ॥ महि पुण जो महे धनपुतजा वे ॥ नाहिहतोन
हीतजो सुनावो ॥ सुनर उभ्रात जु पितके समनसर ॥ नाको हतु चेत्यो जिजमनधर ॥ २३ ॥ महा
करो दोउ पापभार ञाति ॥ यों उतरेत्यों के होविमलमत ॥ श्रीभगवानोवाच ॥ धर्मजह षमिदे
दोउ पापा ॥ शोषनरहतदोउ संतापा ॥ २४ ॥ हितो करणी को भजवलुपाये ॥ धर्म जमनहि हरषु
उपजाये ॥ तोहि पापसकलेमिटजा वहि ॥ जगमोव उर्म रतिउपजा वहि ॥ २५ ॥ कर्म जेनस्र
नधर्मजपगला गा ॥ धिमाकरा रतमयो सभागा ॥ जो रहा पपदर्सी सुनि वाये ॥ विनी धार
मखवेत उचरायो ॥ अर्जुनोवाच ॥ हे नपक्षपुनव झाई देखो ॥ मो को निजनल घुभ्रातापेखो ॥ पि
तसो पुत्र कहे लघु वेना ॥ करेने हुक्म गा रसुखदैना ॥ २६ ॥ धिमा करो डहिपापुहमारा ॥ तुम
देहि धार्म हितउपकारा ॥ होइ हर्ष मनुहिक्षमाजादीजे ॥ निजजमरवर्णी पानुलघलीजे ॥ २७ ॥
नमरे हर्षवदे वलुमोहा ॥ रणक्षररतो करोजवरोहा ॥ हतोकर्णी को नमपुण हुया ॥ मनवच
कनजानोनही दूया ॥ २८ ॥ जो नहतो जानो सो कीजे ॥ क्षमाजादेहु विस्मृत उदीजे ॥ पुनह
रिधर्मजसो उचरायो ॥ मरवेत कहतवचन समजाये ॥ २९ ॥ श्रीभगवानोवाच ॥ लघुकी वा
नवउनचिचाहीहा ॥ अपुनवझाई उररनिहारहीहा ॥ अर्जुन स्रुतसमनानसमदासा ॥ जानतथे
रोरुपापरखासा ॥ ३० ॥ युधिष्ठिर उवाच ॥ देव ॥ देभगवनमहिमनइहीदासोसमसुहि भ्रात
जैपक्षानेसोई करोक्षवउपज्यो भयक्षमाना ॥ ३१ ॥ चौपई ॥ इहिजगुस्वउसमानापधाजो ॥
रहतनक्षाहुमगननमानजो ॥ जिहिरनानिनइहिवाधवमारे ॥ तेमी होवतनाहहमारे ॥ ३२ ॥
दहीलरहिहर ॥ मोउहिमोह ॥ हमवनजाइकरेतपयोग ॥ जो चितक्षावे सो ऋषधारहि ॥
नामवाराम्रुखेतपुरानहिह ॥ ३३ ॥ नाहिहिस्रवा जगमो कोई ॥ क्षमपुनक्षपुनसुरवीहतसम
होइ ॥ ककोचितनीमोकोनजदीजे ॥ हिउपकारदासजोपदीजे ॥ ३४ ॥ श्रीधद्रुषेनोवाच ॥ सुन

८५॥ कौनाहिवनेपरिहवाता॥वारवारकरहोप्रगटाता॥नपकुनेरजीयकेसुखआसा॥करहेस
कलजगतकानासा॥७३॥तुमतजेदेहुसकलप्रगटाही॥धर्मजलदेखोनिवलानिजकाही॥
उरपतदीयोत्यागसमकाजा॥प्रथमोविचारकीयोसमाजा॥७४॥मुखमुखक्रपजसवदे
तुमारा॥कुलकलंकलागोअतिभारा॥इहप्रकारवहुविधसमनायो॥धर्मजसोभीषमसमझ
ायो॥७५॥सखावहनजीतुमननहीमानो॥देहोशापजीवजीयजानो॥हमजावसेवारवा
माही॥सुनउरयोधर्मजवलवाही॥७६॥भगवनतोहवचनअतिभारे॥फेर्नस्यावोनुर
सखकारे॥नपपक्जनजेनकोहरिलाये॥लगतपडेमुखतेप्रगटाये॥७७॥अर्जुनेनोवा
चा॥इहसभमनतुमहरोउपजायो॥दुर्योधनसोदूतमचायो॥जेनहीबेलतौडउम्रनृपा
वत॥किरिहकारणइहजगतहतावत॥७८॥क्रापुनकीयाविचारतनाही॥रोसुकरतेहो
कैसेरननाई॥७९॥धर्मजोवाच॥अर्जुनसवचवचननुमभाखे॥तुमरेसुनमोहिपावेला
खो॥८०॥बहुतप्रहारकरेतोमोहिसीस॥निजप्रणपरेपुत्रसुरेस॥पापीहतेपापुनही
होई॥मोसमपापीअवरनकोई॥८१॥मोहतोकरहोउपकारा॥नातरतपुकरहोवनभा
रा॥इहकहिउठचलयोवनमपा॥दोरगह्योभीषमकोक्रनपा॥८२॥अर्जुनकोतासे
वहुदीयो॥पनुसनमुखवोलैवडुधीयो॥पापमोदोसभपकोधारे॥तेसभइहमाइघकीचारे॥८३॥
कोपतनदोनीमोहोई॥सोनविचारकरेजिनकोई॥तुमसुमजानोगुनस्यागर॥जोरिविचा
रवेखोवलक्रातर॥८४॥दुर्योधनरोकपरक्रपारे॥रविहादसवनतपुधारे॥तीर्थवरत
दक्रीनरदुपाये॥सरपतिचतुरननदुपाये॥८५॥भीषमाभीजीहवचनक्रमोरे॥दीयोतुमको
समहवचसघोरे॥जीहवलकेघातसमकरहो॥दसुगजसरवीनकरेघरहो॥८६॥तजीसलं
वउठकरहतासो॥निजसेनावेवासमिरावो॥पुनअर्जुननपरेपगह्यारे॥भीषदुपतिमु
खवचनउचारे॥८७॥भीमगवानोवाच॥तोहिपापनधर्मकाराये॥तातेदउकरहोप्रगटाये॥

दुर्योधन के पुत्र उचार्यो ॥ अर्जुन को रत है रण माही ॥ जो न हतो मरकत वो नाही ॥ ५२ ॥ तो र
नेरह रहे मरिहि पुत्र रण धाते ॥

कर्ण हते विनु रोसु न जाई ॥ ये सो यतन न करो सुखदाई ॥ ५३ ॥ अर्जुनोवाच ॥ हे नृप काज जकर्ण पुत्र
धास्यो ॥ कर्ण कहा चमू हि देश निहारो ॥ जो न हतो निज मरे पुद्धक ॥ ५४ ॥ इहि पुत्र मोहि भयो मनव
चक्र ॥ हम कर करुणा कीये पुत्र कोऊ ॥ तेऊ बहु भाग परजिहि होऊ ॥ सुन धर्म जनि जङ्गल
गाये ॥ मुख चस्यो मिरहा युधिष्ठिर यो ॥ ५५ ॥ निज सारथ दारक हे को ॥ तासो मुख स्रीकृष्ण उ
चारे ॥ कर्ण भुजा बल बहु अति धारे ॥ तासं अर्जुन युद्ध समारे ॥ ५६ ॥ दो ॥ अस सस्यो रथ के जो नीके
जाने ॥ ताहि हल्यो हो विलम्ब न ठाने ॥ ५७ ॥ दोहरा ॥ सुरपति सैं शिव दर्श चित नमस्व ञमञ्जु जो है
ना ॥ ते समार अर्जुन वली रथ जाम्च ज्यो पुष्ठीन ॥ ५८ ॥ धर्मजादि सस्यो सभी दीन जससस
पारम कहे ज्ञा ञर्जुन करे रविसुत को सिहार ॥ ५९ ॥ छंदु ॥ व तुम रते ऋषपारा ॥ रण चल्यो स
कल संभार ॥ पवन वीहत पाछे पीछे ॥ प्रभ रवग सुदाहन दीठ ॥ ६० ॥ स्रीभगवानोवाच ॥ हे
सरखेव कहो पुत्र गहान ॥ निज विजे जौ पसत जान ॥ प्रभ मस गान जिहि हिके हिपाय ॥ उचरंत यदप
तराया ॥ ६१ ॥ तो हि हलपा जो नरचु होइ ॥ हम मुरे रिदे द्वि उसोइ ॥ पुन चल्यो रथे रहकार ॥ हिय करत
लोकपार ॥ ६२ ॥ दृह क्रोध पुत्र ज्ञाति भार ॥ जिहि पत्र सेवे मुरार ॥ युद्ध परहि ऋधि भयान
सभ्रदिवस ते भयमान ॥ ६३ ॥ इरु दुहन ते हतु होइ ॥ या माहि शंस न कोइ ॥ स्रीसहन मुख उ
चरान ॥ अर्जुन सुनो धर ध्यान ॥ ६४ ॥ सुरञ समर जोध वदेव ॥ जलाय धरा ध्रम जेव ॥ इन
सभो ते युद्ध करो ॥ क्यो भयान करो ॥ ६५ ॥ कुरुकुल से जोइ सभ गा ॥ सुरपति न लेत जुमाग ॥
सम मोर हतो रसहेस ॥ करस करत क्कर रविध्वंस ॥ ६६ ॥ शिव इंदु व्र लोक ञादि ॥ हन नाहि सकन
सबादि ॥ सुरपति रिदेखी च्यार ॥ नुम परक सो उपकार ॥ ६७ ॥ ते भी वली पहिचान ॥ रणपरे
युद्धभयान ॥ नुम सो ऋद्धिक स्तुध रे ॥ प्रभ ते भेर रघकरे ॥ ६८ ॥ ता को हने वलुलाइ ॥ जगजेगे
दम उपजाइ ॥ जैदिवस षो उसमाहि ॥ नरबण हते बलवाहा ॥ ६९ ॥ तिहि हे समे रण अर्जु ॥ के
धर्म ऋद्धिक युद्ध समाज ॥ इहौ दिवस युद्ध भयान ॥ असमाजे सगम कृति जान ॥ ७० ॥ नुम सभ्यो युद्ध
नुम शत्रु होउ पहीन ॥ इरु होइ हरतु दुहमाहि ॥ करे स्मा च्चु शंस मानाहि ॥ ७१ ॥ ये कर्ण रहत होइ ॥

पाछे नहीं से साको इ॥ रण माहि धीर्य धरे॥ तुहि सम न कर खेहो लरे॥२२॥ कैरव मूर्ख सभ जान॥ भिन मती
सरम हान॥ जो करणि कर खड़े हराय॥ ती हि सम कल मैं न हह ताय॥२३॥ रण मोज अधिक बल पाइ सभ जु
ब लेकर्णि हनाइ॥ भो गे दुर्योधन मही॥ हनउ गर समाची सही॥ ताते भजा बल धार॥ रण करम्यु सम
पार॥२४॥ श्री रहम तेस न बैन॥ विस्मान भयो सज नैन॥ सभ देहि सेद उपान॥ माना की यो
स्नान॥२५॥ श्री रहम दीन दयाल॥ तन दीयो हो इ क्रपाल॥ बहु तेज हर्षित चल्यो॥ कुरसेन
चितु कल मल्यो॥ उतते कर्ण बहु सर॥ जिम गजन बल तम धर॥२६॥ धृष्टद्युम्न लीयो से
न॥ तीहि हव से भई उन्नै चैन॥ देष तन मारत वान॥ मन दया दोन प छान॥२७॥ इति श्री म
हाभारते पुराणे कर्णपर्वणि कर्ण अर्जुन युधिष्ठर रण समागमनं द्वितीयो ध्यायः॥२॥
धृतराष्ट्रोवाच॥ दोहरा॥ कहु संजे जब रण पुते दोउ सुर महान॥ किहि विध पवन रते भये
कहो सकल बख्यान॥१॥ संजय उवाच॥ दोउ सुरवीर बे यह बहु को करसे ऊचार॥ पो राही कर
बेक हस्तो भुवन न पधार॥२॥ त्रिछंद॥ ज्यावत नहास्यो कर्ण को॥ अर्जुन जल्यो सोधीन
हर थहा॥ दोउ परी हिज हि बल भारा॥ बहु मैन हो तस हार॥ उभदो उ मैन धीर्य त्याग॥ क
हू बेष हू गये भाग॥ दोउ अर्द्धे रण भुमस रथ पुराहो इ ज्ञको पर॥ दोउ सि हस्मा रदि षान॥
सम सज्जा सैन भटान॥ तीयो कर्णि बल जुध का न॥ यम ते जल पदि षान॥ अर्जुन नि
रखभ पमान॥ सुत धर्म ठोरदि षान॥ मुख ते कह्यो करि जोर॥ देदयाल जीवन मोर॥ ६॥
जो ते म सु मिलहो ज्ञाइ॥ नातरो दषो पमराह॥ तन सो मिल न डीह वारा॥ पुनी मस ल नर
र करि कर तार॥ अर्जुनहि चल्यो से ज अपार॥ रवि पुत्र को निरधार॥ सुतदि भुम न बल वान॥
मन सु ख कर्णि उर जान॥ दोहरा॥ दिष दो रदि ज्ञ सरप वे॥ तासो घु ह ज्ञात व हु क तो मिल के दुर्यो
धन भूप॥ तिहि चि त्र सैन सुडात॥ ५॥ सह देव शकुन सेर न॥ सह तान्ही करेसो तब रम
सुजन कुल कोविद सैन॥ भये प ह रण उलात पेन॥ ६॥ दोहरा॥ उतमोजा सुत मान सो
हु सासन से सुत ये न॥ सात क दुर्योधन सु सुख कर तोष सर सैन॥ ११॥ कर्ण पुत्र

निरखबलु सभी सराहे ताहि ॥ उतमौजा कासार थी शकुन हतो बलवाहि ॥११॥ पुन युगतान पुरह
रहे की नो धनुष दुखेउ ॥ उतमौजा क्रोध तम यो धारे बल ऊरदेउ ॥१२॥ चौपई ॥ रूप उतमौजा
बान पुरहारे ॥ अस्व सारथी सहत बिदारे ॥ शकुन क्रोध अरधन पुरहारायो ॥ उतमौजे भिस्व खड
गु चलायो ॥१३॥ शकुन सुत सीस काटे तन काला ॥ जिरोधने जिहि ते ज बिशाला ॥ रविसुत
निरख दूर ते बाना ॥ उतमौजा प्रति तज्यो मपाना ॥१४॥ अस्व सहत मथो रथु चूरना ॥ उतमौजा
कोप्यो बल पूरना ॥ कृद स्वषंडी रथ चतु रैठा ॥ यमसवपुर खडग हाथ मे लै बैठा ॥ कृपाचार्य दुहू स
न्मुख आयो ॥ तीन बान दुहू ऊर चलायो ॥ दुहूं रिस कर बेले रथ धोरे ॥ दनुजो रेमुमपुन रघु ते
रे ॥१७॥ कृपाचार्य कोदिय अस्सु धाना ॥ लीयो चराइ निज रथ बलधामा ॥ भीमसंग दुर्योध
न युद्ध ॥ कीन प्रसपर अतिव उक्रुध ॥१८॥ दुर्योधन की सैन बलाता ॥ लीयो घेर सुतपवनात
थानी ॥ सकल देहि वेध्यो सर संगा ॥ चल्यो क्रोध धरनी निहमंगा ॥१९॥ लेग यो सारथी रण
रथु त्याडो ॥ होइ न सको दुर्योधन आडो ॥ दुर्योधन अर्जुन पुत सुन्यो ॥ मन मो रचार रमाथा
धुन्यो ॥२०॥ सुसर्मा सो मरख वचन उचारन्यो ॥ तिहि ब्रुसराच तुरपधान्यो ॥ दुर्योधनोवाच
अर्जुन पुत्र कैसा चार आयो ॥ जाहि सुने मोहि दिदा तपायो ॥२१॥ कौरव बली एक ो न मसैने ॥
जिहि बल होइ शत्रु निहिचै ने ॥ जो अर्जुन पुत्र पर न होई ॥ रेरे घातु रविसुत को सो दूर
रमपुनी कीहि उपर धरो भरोसा ॥ नाहि दुरवीज गदू सर मो म्सा ॥ ता ते कै हानु मे पुत्र गरायो ॥ रेहा
वहीं दिन अर्जुन सहायो ॥२२॥ अर्जुन रोष्यो अरको यो ॥ कर्ण निकर पहुचन न हीं पायो ॥ अर्जुन घि
से न तनु मरे सं जादे बोग ॥ बहु उप कार तनुमा नासे बो ॥२४॥ दोहरा ॥ सुमत अर्जुन सन्मुख वर होअसि
हले सम मैन ॥ तरहि जो वेरण एक बालासु उभकरे निहचैन ॥२५॥ सुनत सुसर्मा सैन युतजि
हिवध अर्जुनते ॥ जयो अर्जुन के सन्मुख वे धारे ते ज महं त ॥२६॥ बोलन उचेश बद रु
दूरव सुन्मुख मो सोल रोदि बरा बोब लमर ॥२७॥ चौपई ॥ सुसर्मा के
ल है अर्जुन बल सरबा ॥ हो सन्मुख मो मोल रोदि

वचसुनतइंदुसुत॥ श्रीयदुपतिसोंकहतेहेतयुत॥ २५॥ अर्जुनोवाच॥ हेयदुपतिकहूंअन
जोंवे॥ सुसमीहकारहिपुजटोंवे॥ हेयदुपतिसुनरहनसकाऊं॥ नीकयाहिसोयुद्धमचाऊं॥
२६॥ सुसअर्जुनवलभारे॥ इकइकरथीउरपुहारे॥ ३०॥ सुरनसहसभचूरनकीने॥
योधेरुगावेयुद्धपुदीने॥ पुनसरीत्रिशमेघधीधारे॥ गजरजसपायकलीनसंहारे॥ ३०॥ दु
र्योधनकीदृसुनसधपाये॥ दौरपरेसंगभ्रातसहाये॥ मद्रवेरअर्जुनकोलीने॥ सावु
नसमसरवर्षाकीने॥ अर्जुनपरेउरजिंहिजाई॥ तेऊंमैननजधीरमजाई॥ जोअर्जु
नसोंसन्मुखलरयो॥ वचोनकोऊकालमुखपरयो॥ ३१॥ तवहीनौसैगजमतवारे॥ जि
हिपरसरेवेअसवारे॥ सभोंमिलेछेदननेहीने॥ मदअभद्दमदमोसपुनीने॥ ३२॥ दु
र्योधनकीअज्ञामाने॥ अर्जुनकेसन्मुखअगमाने॥ सरजोरखउगसकतत्रिसला॥ अग
नवानचपलासमतूला॥ ३३॥ एसेवारसभोपरहरहीं॥ इदुपुवविधनीकसभरहीं॥ जोदु
र्योधनवसोवानपुहारे॥ सभगजरणभुजवलरनडारे॥ अरीसरनसभमिलपगपरे॥ रवि
सुलसहतरिसवरवुधरे॥ ३४॥ यदुसुपरदौरेसरे॥ दवमतानीकसतसोमवलपरे॥ ३५॥
दोरवरीतेसन्मुखआये॥ भुजवलवर्षवानवरषाये॥ अरीवलीवलवानपुहारे॥ सभसैध
वधिनेकरडारे॥ ३६॥ सेसरथयदुसुतोलाये॥ पुनरथसातकअस्वहताये॥ पुनविहि
नामपचधाडीमारयो॥ ताहिपितादिखशोकेजारयो॥ ३७॥ विस्वकसोजिहिनामवखाने॥ क
रोपुत्रकोदिखीरसहुतने॥ अरसेनजिहिनामउचारयो॥ त्यागपुत्रायमलेकसिधारयो॥ ३८॥ अर्जु
नतवेरजाहिदरवतहेयो॥ रदाकरीमुनशोकपरेयो॥ विसकतवानपुहारयोरविसुत॥ दोऊ
करअरवेकरेकोधयुत॥ ३९॥ दूसरसरकारयोतिहिसीस॥ दिवकोपोसातकयदुईश॥
सातकजावनिरखभाऽनसुना॥ कीयेपुहारवानरणवलपुत॥ ४०॥ यदुसुनिजसरतेऊ
वानेकवलधारेसगामाहिकरातो॥ अवरतीनसररीवमुतउरे॥ कीयेपुहारसुतदुपदकेदोरे॥

४३॥ रविसुत कुं पत्र अर धनुष कराये ॥ दिष सत सोम कै धु उपजाये ॥ पुनि दो कृष्ण तिको ध
धारमन ॥ मातुल रथ ताके रचा हस न ॥ ४४॥ कर्ण वाम बल ताहि हताये ॥ करयो सी सभु
मभार गिनाये ॥ सकल सैन दिष ताहि के पाइ ॥ अर उते रसत र बंधु वाई ॥ ४५॥ इति सतसो
म वधः ॥ दोहरा ॥ धृष्टद्युम्न द्रोण निरष पांडु वान कौ सैन ॥ हा हाकार शबद उठे लोको रव
न कौ चैन ॥ ४६॥ श्री यदुपति सुत इंद्र को कहत सु वचन प्रकार ॥ तुम इहां रवि सुत सैन
तुहि कौ नौ संग्राम संहार ॥ ४७॥ चौपई ॥ धृष्टद्युम्न से यो धरत हो ई ॥ रवि सुत सन समर वको
न वरे ई ॥ कर्ण बली वहु भुज बल धारे ॥ सकल सैन को त्रिण जैं जारे ॥ ४८॥ चलो वेग
धि न विलंब न दीजे ॥ अपन सैन को रक्षा कीजे ॥ अर्जुन सो वाच ॥ श्री यदुपति के वचन
सुन तवर ॥ दोहरा ॥ अर्जुन कृष्ण कौ धधरा ॥ ४९॥ जां जीव धनुष को नोरन ताहे ॥ सुन कृष्ण से
न कौ पीम यभारे ॥ कर्ण दो रसन मुख हेकाम्यो ॥ दुहूंस मोर एयु द्ध सं भारयो ॥ ५०॥ छंद ॥ दु
दुहू उर स्मर रथा न ॥ मनो मेघ धार महा न ॥ दिष द्रुपद पुत्र सु जान ॥ चय सर संग म हान
५१॥ उतर्मो जप्रथम रथान ॥ पुनयु धामन्य विकान ॥ ती सरस्स ह यो यन मे ज ॥ दे रे इन दर
बल ते ज ॥ ५२॥ अर्जुन न जो सुत भानग ॥ द न उरद्रु पदसुचो लन्ना ॥ इनसभी सरथान ॥
कलीन घधार समान ॥ ५३॥ रवि नचि नचि ते मन माहि ॥ जे कर्ण ने हताल ॥ सर कर्ण
के मीभीर ॥ न ही पदु च सा के ॥ ५४॥ उहू केके रथ भार ॥ स ए सार थी धन मार ॥ क
हू सेन की नौ घात ॥ जिहि जनु न्या हिदि षात ॥ ५५॥ रविसुत त जै वहु वान ॥ कृच शव दृ
पुग ता न ॥ कर्ण वाच ॥ कहो जाहु उ नु म भा ग ॥ मृहि हाय रण ते ला ग ॥ जा नो नुमोरे
प्राण ॥ यम लोक ताहि वसान ॥ ५६॥ इहि कहि चढुकी उरा ॥ परहरे वान कठोर ॥ चित क
रे वहु भ्रम दीन ॥ दिष द्रुपद सुत पर वीन ॥ ५७॥ दोहरा ॥ इरघली ये चाउ ॥ सिर दवला विमल
भ ज गाउ ॥ यातन प हू च्यो कराइ ॥ युध परे कृति भ्रम धकाई ॥ ५८॥ सा तक जादा कृल पाइ
सर कर्ण न ताहि कराइ ॥ पुन कर्ण उर रव ला ग ॥ क धृत की न सर पर हार ॥ ५९॥ दोसा दु

८२ र्योधन देखा॥ भई क्रोध ज्वाल नैन रेखा॥ सात कहे नेम सन्मान॥ धर क्रोध करमन ग्लान॥ १६॥
भान जु दुर्योधन देह॥ देरे नु सन्मुख देहाइ॥ ईहि नर रख भी समहान॥ नतत काल पहु
च्यो ज्ञान॥ १७॥ वरर हरे रके ते वान॥ वउ ज्ञर दुर्योधन ज्ञान॥ दोर तदुसासन ज्ञाय॥ प
ररर वरे व लुपाय॥ १८॥ सुत पवन मार पहान॥ दिव भीम क्रोप महान॥ वल गदा पर
हर कीन॥ ज्ञर सार थीर घुधीन॥ १९॥ उठ गयो दुसासन सर धमस हरपुर मेल को
मरा॥ दुस सद स्वधन घघु मान॥ ज्ञाप सोधर तल ज्ञान॥ २०॥ धर रहर तनिक सत
प्रान॥ भये अस्याचरन हान॥ सुत पवन भुज वल पुत्रेसो॥ दिव दूदर धते पसो॥ वल भु
ज्ञाली न उठाइ॥ सभसो कहत गाराइ॥ भीमो वाच॥ दोहरा॥ ध्यान धार देखो सभी तु
मेव दो पुगाराइ॥ जाको वल मुहि हाथ तू ताको ले दुध उठाइ॥ २१॥ अनातर यों को दत उठे रो
सउ ज्ञर ज्ञपुन ज्ञान॥ करी सप्रपने करो द्रुपद सुता दुख हान॥ २२॥ चौपई॥ दोसा
सन की पतीन ज्ञारे॥ धरे चरन सुत पवन वलो रे॥ खउग कहार कर सीस उतारो॥
अधर पर रक्त जुल मुख डारो॥ २३॥ नत चत भेजा वडु श वदु उचारे॥ यासम स्वाद कहु
ज्ञ वर न धारे॥ सर सम स्वाद कै सो घद दुख हरना॥ जौर गांस ता पीर देते दरना॥ २४॥ क्रे
स करि दिपि रक्त जुल भरे॥ पवन पुत्र पुन मुख मो धरे॥ निज पुराणको कीनो निरवाहा॥
पवन पुत्र जिर ते ज्ञ ज्ञ गाहा॥ २५॥ कुरु सेन्या ते कौन वलारे॥ ज्ञा जेप गधारे वल भ
रे॥ निरखस वल रोवकुरु सेन्या॥ पांडवान के मन वडु चैना॥ २६॥ दुर्योधन सेना भ
य भाजी॥ भ्रम्यु धार डुरा वदु भजे डुरा रो॥ भाजत मुख ते वेन उचर ही॥ नहि मानव जो
रन नसा दूरहि॥ २७॥ ईहि को उ ज्ञ सुर भ मनके रूपा॥ यासो हम का हि हिलरे ज्ञन पा॥ चि
त्र सेन दुसासन भ्राता॥ भ्रात समान दोरे वडु जाता॥ २८॥ युधाम न्यो तहि सन्मुख हरोये॥
वरे युसपर युधरण सोधे॥ सारथी युधा मन चकामा रयो॥ चित्र सेन वल वान प्रहार
यो॥ २९॥ युधामंन नु प वान प्रहारो॥ चित्र सेन की मीव मजारो॥ लरत वान रघुते भ

गिरपरयो॥ बहुरसचेतनहोइसोलरयो॥ ७४॥ युधामंनजैसावलहारयो॥ भीमसेनवहुरोअभ्यासो
चित्रसेनकोवानप्रहारे॥ कारसीसभभीमसाधमिलाये॥ ७६॥ रुधरपरउजैतमुरवअग्रोडे॥
मधानशावदउचरतवहुभाजे॥ जागृदुसासनवलुप्रगटावे॥ द्रुपदसुताकेसगहसावे॥
७७॥ पुनकोहेजोधनकेपाछे॥ वधउरेचलतसहावतआछे॥ इहिभाषतपुनदुर्योधनसो
वचनकहपुनउचेधुनसो॥ ७८॥ इनतुहिहितवउअपरकरायो॥ है उनहीलेवोयादिषु
डायो॥ तुमरेहितइनमुहिदुखदीने॥ मोहिजलडुवायोतुहिहितचीने॥ ७९॥ तोहिहेतला
षामंदरदै॥ चाहेहमुराजेरअपरवै॥ पुनतुहिहितहमकोविषदीने॥ दूतअंधेरमवहुर
तुमकीने॥ ८०॥ इनअरअपरमुहिसवेहरायो॥ अतीनमानभारसमुपायो॥ द्रुपदसुता
कोसभामंआरे॥ खैचवेसलयेदुखभारे॥ ८१॥ वनवनभ्रमहमवहुभयपायो॥ तेदुख
अज्ञानुचितेतीनकसायो॥ निसदिनइहिदुखरहतमोहमन॥ अवअवतोरअतदुसासनअ
चवन॥ ८२॥ अवपरणभइइछहमारी॥ अजोहोइसहोइसधारी॥ अअवइअदछअव
ररहीमोमन॥ तुहिउलचरनअरेभमरन॥ ८३॥ द्रुपदसुताकोवहुरनभाषो॥ वेवउ
रूपरइहिअमलाषो॥ दोसासननसोवेरगहायो॥ अवरखोतोहिअअप्रगटायो॥ ८४॥
इहिकहिलधरपरअरहायो॥ चलतभीमहरषतवहुमायो॥ दुर्योधनदिष्वदुरंपायो॥
इहिभयानअपरभीमअलायो॥ ८५॥ इतिश्रीमहाभारतेपुराणेअणपर्वणोदुसासनव
धः॥ भीमोवाच॥ चौपई॥ श्रीयदुपतिअजैनसोजायो॥ भीमअखोविरततुसुनायो॥ सु
नतभीमवचसभहरषाई॥ दिषमुखदायवहुहासउठाई॥ १॥ सोरठा॥ दुसासनकेयो
भ्रातसुनतभ्रातकेशोकचित॥ क्रोधनदिदेमहातलरवोचादेभीमसो॥ २॥ दोहरा॥ श्री
तशोकदोरतभयेइहितेवाहतवान॥ निरखभीमकोपोअधवकअद्भुतअअतसमान॥
३॥ चौपई॥ धनुसभारअस्वस्योपवनसुत॥ होतवषवाननकीइतिउत॥ वानभीम
जिहिलाअतजाये॥ स्याअप्राणपमसेनाकसिधाये॥ ४॥ दसोवीररणभुमहतलीने॥ पव

२२ नपुत्रवदुग्राक्रमकीने॥ दुर्योधनकौमेनादिबाधे॥ ग्रईभागसनकपुनरहावे॥४॥ रविसुत
सुनाकेयोनिरचारे॥ कीनखडुगुंसिरभीमप्रहारे॥ भीमसीमतेरक्रवहावे॥ जनरुर
बैगिरतेनिकसावे॥५॥ इतहनकुलप्रिबसेनहकारे॥ दुहूंप्रसपरहृपुधुभारे॥ परव
रथाडेमी दुहूंकीने॥ सावनमेघसारथवल्लीने॥६॥ दुहूंकेघातसरतलेलुकाये॥ सरवि
नकरनाकुबदुराये॥ पटुनवपत्यो अर्जुनतिरछाये॥ अपुनभातजीरछाहितावे॥ सा
तकसहनरेनजापरये॥ धाकेतेजुभारज्ञानिवरये॥७॥ दोहरा॥ तुयमकर्णसुतापितामे
अर्जुनहारणसींह॥ परहारतमयोतेजवरतीबबानवलवाह॥९॥ चौपई॥ कर्णपुत्रहृद्यम
रसातकतन्न॥ पुनदोउप्रहारेसरतनअर्जुन॥ पवनपुत्रकेसातप्रहारे॥ हृदसमीप
दुपनिहितजुरे॥१०॥ अर्जुनेनिरबकेधृष्टजीतकीना॥ बानप्रहारतमयोपुनीनातव
त्रिबसेनबेदोनोहाथा॥ अरडुरेभमदुहूसरसाथा॥ गिरयोधरनसभूसेतभजानी॥
कर्णदेखसुतसिरभयमानी॥ तात्रिबसेनवध॥ कर्णपुत्रवध॥ दोहरा॥ रविसुतवि
जतनमरणदिखशोकदरचिताना॥ अर्जुनसोमुखतेकहतसुनमेवचनसुजा
न॥१२॥ कर्णवाच॥ सुतविनहमकोसुखकहामरोसितारोतोहि॥ अर्जुनदुहूतेमेरेउ
भुसब्रसक्रवचमोहि॥१४॥ चौपई॥ श्रीयदुपतिअर्जुनसेभाषे॥ वलुसंभारमनपुत्रअ
भिलाषे॥ श्रीभगवानोवाच॥ श्र हेसारथीरविसुतकेरा॥ मेघधारसमसंकरेअर्जुसरा॥
१५॥ कृष्णदुहूतेज्ञादितिहारो॥ पवेरीनवलकथनाहविचारो॥ सकलसेनजोरथागृहर
केउरम॥ सोभगजाहिविहारकर्णसर॥१६॥ इहिविधसेनतोकोसीतभागी॥ करोयुद्धरनवलसभा
गी॥ कर्णसारथनाकाअरहोई॥ नाहिविधि सिनदुजुसुकोई॥१७॥ अर्जुनोवाच॥ दयालतो
हितनलधीनजाने॥ सोईहोजोतुममनमाने॥ अलपकरमेकरमेकरतोला॥ कर्णचनामी
अपहरनकरमतोला॥१८॥ अर्जुनजूनज्ञाकालीनरालम॥ घरघरधापकसंभप्रीतपा
लम॥ सोतुमसावधानमोहीरथपर॥ ससरमदाइस्मरेहितचितधर॥१९॥ कोनजगतहि

हि को ऽहुरणा ऽ॥ नु म नी च पाञ्च पारलषा ऽ॥ विल्लसुत्सा ग न्धी र थे च ला डो॥ रथि स्सु त के सन्न्सु
खठ हि रा डो॥ २०॥ मं ये सन्न्सुख र वि स्सु त नि र षा ये॥ ऽदेऽञ जु न सो नु ख प्रु ग रा ये॥ ऽ ऐ ग
वाच॥ नी ऽ कौ न र्मा हि र शे नु दी ने॥ हूऽन ते षु र प नो प्रु वी ने॥ २१॥ नि ज व ल प्री ष ले हु
रणा म्हा ही॥ हू म त नु य यु द्ध ऽ रे व ल वा ही॥ दु हूः स्स र र ण शं र ख व जा ये॥ वि व से ना स्स न व ऽ
म य षा ये॥ २२॥ प्यर हि र ऽंपमा न भ म हो ई॥ नभे लो भा व द प र र द्यो मो ऽ ई॥ दु हू सै न ऽे स्र
र यु द्ध त ज॥ नि र ष त षो रे दु ह न ऽे व ल स ज॥ २३॥ स ऽ ल से न सं यु त दु र्यो ध न॥ पा घे
षे र वि स्सु त ऽे ठा ऽे र ण॥ ई ति ही भी म न नु ल स ह दे वा॥ ध प्र दु ऽऽ दो नि र भे वा॥ २४॥ इ
हि स भु ञ्ज जु न पा षे ष रे॥ दे ष त दु हु ऽे स र प र ह रे॥ ता स स ञ्ज जु न ऽो र म ये जो॥ प्रु ग र ऽ
चा र ऽ ह त सं जे से॥ २५॥ सं ज यो वा च॥ गि र ऽ्मो म ही स्स ल त ऽ र त र व र॥ स्सु र पी त ऽ व
रं वे दु मा दु ति ष र॥ दु र्यो ध न ऽो र्नी हि जो भ ये॥ ता हि ना स स्स न हो स नु द ये॥ २६॥ न र र व
ग ऽे ऽो र य ष ऽे ऽो भ ना॥ ई ह दु र्यो ध न प ष्य व षा ना॥ च तु रा न नो शि व ण ऽ सं हा स न॥
न भो नि हा र त दु हू ऽे यु धु र न॥ स्स ऽ ल दे व ता सो च तु रा न न॥ ऽ च रा व त म्र ख व च न षा
न गु ना॥ २७॥ प्रु स्ला वा च॥ दो ह रा॥ र वि स्सु त ऽ स्सु त ई दु सो नु स जो ऽ हो प्रु ग रा इ॥ नु से रे
यु ध स ग रे ज ग त व ऽ भ य ष य हो जा इ॥ २८॥ घो ज ग का च हो भ ला न जो यु द्ध स्सु ख का र॥
ना न र प्रु सो दि षा इ जी स भ जी व न दु ख भा र॥ २९॥ चो प ई॥ ऽ ज्जु न ऽ णि दो ऽ स स भु ज व ल
नि न सो जा इ ऽ हो वु धि न र म ल॥ भ ला वो घ ज ग का यु धु न्सा डो॥ मि ला प्रु स प री ह नु ञ्ञ
न रा डो॥ ३०॥ नु म रे यु द्ध ज ग त ष य प र ही॥ स्सु र न र ञ स्सु र भा र म य ज र ही॥ स्सु न स्सु र प ति
च तु रा न न ल च न ना॥ मु ख ते प्रु ग र ऽ ह त व ऽ र च न ना॥ ३१॥ स्सु र प तो वा च॥ ऽञ सो स्सु र
प ति मु ख वो ल ना॥ नु म ये ऽ ञ्ञा डो ऽ ह त ऽ मो ल ना॥ र वि स्सु त ऽो ञ जु न ह त हे र ण॥ ऽे रा जु
स्सु त पे ऽ म्सु दि त म न॥ ऽ व स म नु ल्य दु हू व ल व र हो॥ न ही ल षी य न ऽे से चि त ध र हो॥
३२॥ प्रु स्ला वा च॥ र हो र्यी मि चि ता न ज म न ने॥ ऽे त जी न भा षी ञ जु न ऽे॥ जी हि र घ्य प र षी र

हमसु हावत॥ कवन जगत जेता ताहि हतावत॥ ३३॥ हरखत इंद्र वजाये वाजे॥ सुरपुर मंगल च्या
रसु हाजे॥ मसंजयो वाच॥ रण मो शल्ल कर्ण सो भाषत॥ पुण पुरषा साचित राषत॥ ३४॥ क
र्ण वाच॥ कृष्ण जस मोहि रथ रथा करहो॥ कर उपकार पुण पुरन धरहो॥ जैसे सोऊ तेज जग
तरहावे॥ मुख मुख तेहि कीरत जग गावै॥ ३५॥ दोहरा॥ इति कृष्ण जैन सुग्रीव हम सो भाषत
वचन रसाल॥ तुम मनु रव भाष्यो कर्ण बलता तेस जोर पाल॥ ३६॥ सुग्रीव रथ जस सुर थाक
रो कर्ण न पहुंच नपाइ॥ कृष्ण हु सो नही उरत होनु मरे हे तु दिखाइ॥ ३७॥ सुग्रीव हमो वाच॥
चौपई॥ हम नी उर स्वामि चित धरहो॥ कहो वचन सा चो जी यवर हो॥ तज कृष्ण का समान
भ मकृष्णा वे॥ फेर धनं व ठु भय उपजावे॥ ३८॥ दोउ मिलन कर्ण पछ जे करही॥ कर्ण हाथ र
हि परन नवर ही॥ कृष्ण जैन सु न हरषात कृष्ण धिर कृष्णति॥ भये मन मुख दोउ मन नो मन न
न॥ ३९॥ पुण मकर्ण दस वान पुरारे॥ दिल कृष्ण जै न दस हीमु रवता रे॥ गांडीव धनु धकर्ण जे
न के हाथा॥ कर्ण विजै धनं तेज कृष्ण गाथा॥ तीक्षन सर पर सर पर हारे॥ दोउ वीर भुजब
लु च हुधारे॥ ४०॥ दोहरा॥ कर्ण वान कृष्ण जै नक रत कृष्ण जै नके सत भान॥ दोउ पुसपर सा
रही पकु नला गत कृष्णा न॥ ४१॥ चिरकाल न कर जैसे भयो गविसत चित रिस कान॥ कृष्ण
सुधारो धनु पर पर सरा मदी यो वान॥ ४२॥ चौपई॥ कृष्ण जै न भी पुसा ते वान॥ सीये
ने ऊसर धन दहि रिवान॥ दोउ वीर पुसा सु पुहारे॥ दोउ सर मग पुसपर व लधारे॥ ४३॥
दुहू तीन कसत कृष्ण जिन मया ना॥ चहुं कृष्ण का पा दोउ सम भा ना॥ सर्प कृष्ण निरण भम
भ कहु॥ कहि हरि पर मोहि जर जाइ॥ भीम निकर पार्थ कृष्ण ये॥ रथ वचु नमु रव ते पुजा रा
ये॥ ४४॥ भीम सो वाच॥ मुनि जो व हत व उकृष्ण सुर हत ताये॥ ने च लक हो कहो ला पाये॥ कर्ण व
ले घर कथे कृष्णा जतु म॥ हत न च म कौ नि जकृष्ण रकी रण भुम॥ ४५॥ जे जाने तु मते न हो इ हत
था॥ दुदे हु मिहा रवि म सम त॥ भी व हनु उवाच॥ सुग्रीव दु पतित व मुख उस्वरा ना॥ गाक
न हरत न को भ म सु ना ना॥ ४६॥ पुथम कर पन न वचन पुहो॥ न व नु म का छे ते सर डो॥ ४८॥

अर्जुनो वाच॥ नुमरहातेनिरधेमहिवलअ्नी॥ पार्थे रहो मरहोजगतसभ॥ इदिमाधनव्र
स्मा स्वुहाथ जाहि॥ निरुसावनवउ अ्नि चलतजिहि॥४॥ परहासो अर्जुनतेवाना
निरधरुणि निसकयो अधिका ना॥ मनिजमरवलअ अर्जुनको वाना॥ काटयो जगमो
तेजुभयाना॥५॥ भीमो वाच॥ नुमकैजेसोवाना हिपरहारता॥ भानपुत्रजिहि मगकर
उारता॥ परहरमरोकारनहीमाके॥ मनअर्जुनरंजासोचापे॥५॥ वनेवानाजिस
जिसपरहारता॥ तेभीरविसुतमगकरडारता॥ पनअअर्जुनवदुसरधाडेरथ वरेवर
णि परहारअपनसरा॥५॥ कुपअर्जुनजेवानधनुषधरा॥ परहारेकुरसैनउारवर
चारजाइफलवेतनलाजे॥ द्रोदूरुणिकेसनकोदाजे॥५॥ जीवसुतकासीसरुदाये॥ सुत
निरधभीमअ्नि वउहरधाये॥ केतरुपुनकुमसैनदिखाये॥ परहारे अर्जुनवलपा
ये॥५॥ जिहिवलरुमीसंहारसैनवहु॥ जजरोजचारसोचारे जमसलहु॥ आवस
हस्त्रपदातसंहारसो॥ रथसहस्त्रचुररुररुरडारसो॥५॥ कुलसैनासभहोडरुवारे॥
दुर्योधनसोरुहतपुकारे॥ संजयोवाच॥ अर्जुनम्हिसैना सभनासी॥ नुहिवल
कोविधा भयेवलासी॥ सुनतरुणिवदयो चितकोधा॥ वानप्रहारतरणवउयोधा॥
५॥ अ्नीमतवानवर्धीरणकीने॥ पांडवसैनरुमीवलहीने॥ निरधधर्मसुतनि
हिवाअ्नायो॥ नाकोअ्नावतरुणिदिखायो॥५॥ अ्नीमतवानधनधरइरुवारे॥ रवीसु
तअर्जुनउारप्रहारे॥ सोपरुरयोवानतसअर्जुन॥ वदुरमारुपरहारेपररहम
५॥ अर्जुनभीमउारवदुमपा॥ रणाधितकीयेभजवलेअनपा॥ वदुदतभयेधने
उरभाजे॥ पित्रपुत्रसनकोपितुत्याजे॥५॥ अर्जुनभीवदुडारेवाना॥ सरविनुअथु
नहीदिनहिष्टाना॥ रुदेरुणी सभवानभयाये॥ निरधइंदुसुतनिसमनधाये॥६०॥
कोरवसैनरुमीवदुघाता॥ जाकीउपानन्नपरवधाना॥ रुणिअंगनपांडवकीसैना॥
सुत

आयो ॥ ३ ॥ न कुवंउ अेधार दिषायो ॥ अन्त सर्व ज्ञान पहिचान्यो ॥ २ विस्मृत को मरव वन वषा
न्यो ॥ २ ॥ ॥ श्लोक ॥ वाच्य ॥ नाहि वात ये तू मध नधा रोम नी कै निहार पा को पर हारो ॥ कहे के
ए जो होइ स होई ॥ अर्जुन हते मो हहितु सोई ॥ ३ ॥ दिष अर्जुन की धी वपु हार्यो ॥ सर्व
वान स्री कहम निहार्यो ॥ २ ॥ यले अस्व भ म सा पा विठा यो ॥ अधार धुंम नाहि धसायो ॥ २ भ
अर्जुनासिर ते मकर सुहाव त ॥ न ग न म ठत व उ जर त जग व त ॥ अर्जुना सिर ते उच
ते जग्र्यो त ॥ सर्प वा नग यो नित लक्ष्मत ॥ ४ ॥ जो त्रु आ स्र पति कोदी यो ॥ पुन अर्जुन
नि जा पन ते ली यो ॥ दुर्यो दिन जो की दपर धरही ॥ त तछिनम स्म होइ जर वरई ॥ ८ ॥ स
र नर गए अंध वंते जो उ ॥ ताहि जो तदिष सके न लो उ ॥ ते उम क रसर वले उजा ना ॥ भ
यो म स्म जिहि जो उमहा ना ॥ ९ ॥ सर्प लख्यो अर्जुन हत पर यो ॥ मात मो कमिर स रखु न
धर यो ॥ अर्जुन दिष व उ त्रास सभार्यो ॥ म कर मगा इ ज्ञा नासिर धार्यो ॥ १० ॥ वहुर सर प
अर्जुन को देषा ॥ सावधान अर्जुन को पेषा ॥ पुन वपु कान रविस्मृत निषेग मोहे ॥ जा इ प
रे म न न शोक नाहि जिहि ॥ ११ ॥ स्व व ल मार रविस्मृत सो भाष्यो ॥ मो को कान तोर मन लाष्यो
मोहि अर्जुन को व उ अर जाने ॥ अरो पहार धीर चित ठाने ॥ १२ ॥ कहे घात अर्जुन को जा
यो ॥ मेरे हितो हि चित नाम रजायो ॥ कैसी वाच मकोन कह दिया का जनु मारा ॥ मो को कहत व
न इहि वारा ॥ १३ ॥ सर्प वाच ॥ हैं हैं सर्प वान नहि जाने ॥ नि ज स म ना न अर्जुन अर
माने ॥ मुहि जा यो पुन हम्लीमा ता ॥ कौनी ह तु कीयो व उ उ तपाता ॥ १४ ॥ पा ते अ वर
वे रकिया होई ॥ माता दुरव निसदि नव्हिंत सोई ॥ नी कै निहार मो हपर हारो ॥ अर्जुन
को हत हो वी च्या रो ॥ १५ ॥ जैसे ताहि मुदर मुहि जारा ॥ तैसे स्मी स कलै सम धारा ॥ सो
वाच ॥ जो हम तोहि सर्प पहिचानता ॥ अर्जुन तो रपु हार नवानता ॥ १६ ॥ नि जअर
यो हवे व ले हता उ ॥ पुन भुजा व लुरण दिषरा उ ॥ अर्जुन जैसे लषइ कठा वहि ॥
की पर दुपति सम सर सो दिषा वहि ॥ १७ ॥ सभको हतो भुजा व लु पायो ॥ तुहि स्न पुर तोहि चि

८१

नीद्र भायो जाहु जहां मन इछ नु मोभ्रमि जवलनि जञ्ञा रहते मुचाो ॥ ९ ॥ सुनत बाला ऊ
र्णे के वचन ॥ रत भयो तव उन्है सीरचना ॥ बाण रूप तूणते चलयो ॥ मातशोक जिहि चित ऊ
लमलयो ॥ १९ ॥ श्री यदुपति सभ जानन हारे ॥ दघ अर्जुन सो वचन उचारे ॥ श्री भगवानो
वाच ॥ इसे रूप जानो नहि वाना ॥ वान रूप सावन रिस वाना ॥ २० ॥ बांउ वचन ते इहि कयोव
चा ॥ इहि सो मात हती जानो सचा ॥ मात दुःख मन माहि रसायो ॥ भयो वान वपु आइ पलटायो
॥ तूण मो परयो सरहु ॥ चाहत तनु मको करो रण छय ॥ इहि सरपतु हिमु उर जरायो ॥ ए
न जाने रविपुत्र चलायो ॥ २१ ॥ जब जान्यो तब कर्ण त्याग ॥ उपरन भई धारत वड भाग ॥ मान
हि पदवी ओ कर्ण पदे जावत ॥ मातशोक निसदिन तपतावत ॥ २२ ॥ ताते तुम या को हतब
रहो ॥ अपन भजा बलु भार सभ रहो ॥ अर्जुन सुन छे वान प्रहारो ॥ भये खर हूके सरप भ्र
म भारे ॥ २३ ॥ हुके दो अर्जुन की ओरे ॥ बहु विध कैने वलजीत घोरे ॥ तो खवान परहरत
कोघोतव ॥ धरनी गिरा इधर के नेम सभ ॥ २४ ॥ दसम सरजिहि मद परपर लागे ॥ कैयेपु हार क
र्णो वड भाटे ॥ इहि सरवोदि सर परहारो ॥ अरवे वा न मगो र रंडारे ॥ २५ ॥ पुन दो वान क
र्ण तन लागे ॥ चलेर ततकर नेअ नराटे ॥ कर्ण रिसकर दस वान प्रहर तन ॥ छेदे सउन
कोयेतन अर्जुन ॥ २६ ॥ अर्जुन कर्ण वान को रे सभ ॥ पुन इक सर पर हरकी नोत वाया
ऊन कर्ण मरथ पाइ ॥ दिखअर्जुन सर कंोर न लाई ॥ २७ ॥ श्री भगवानो वाच ॥ कंउ तुम
वान प्रहारत नाही ॥ इहि को सर पुन हायन पाही ॥ जिहि अरमेरे सोई विध की जे ॥ नाह
दोसु सिभु तमुन लीजे ॥ २८ ॥ श्री यदुपति को आज्ञा माने ॥ कैयेपु हार अर्जुन बहु वाने ॥
अन्व सारथी सर वर साये ॥ बहु सर भान जरे तन लाये ॥ २९ ॥ सर पर सर पेठ अरे तन
केउ नकं जांद वातन वानि चिनु ॥ चिर बल भयो तब शल्प दिखायो ॥ रविसुत के मरव जलु धि
र सायो ॥ ३० ॥ मर्दन भुजा दिखकी नर मुरा स्यो ॥ रविसुत उर पुन घनु खसमायो ॥ रुख वान
अर्जुन पर करही ॥ ते सभ घर हन सरतो कर ढहरही ॥ अर्जुन कर्ण उर जेडारत ॥ भानुज र

रक्षि ज्ञसरपरहारत॥१०४॥सोरहा॥मडोऽस्तोवेवान्विरतऽमै सेपुधमयो॥होऽवीरवत्स
वानरऽहमलालहरवसमन॥१०५॥दोहरा॥ऋजुनऽाहयोतीवमरचाहतऽरेपुहार॥र
पुरविसतऽरेरथानिमर उवयोशवदज्ञीतिभार॥१०६॥वानीभईऋकाशतेउचशवदपर
काश॥हेमुमरथवेचऋर्णहरिवेशापऋन्यास॥१०७॥छंद॥वानीभईऋाकाश॥वहुउचश
वदपुकाश॥हेमुमरथकोचऋ॥ऽमल्लेदुर्ज्योधनऋ॥१०८॥नवरघेमगहान॥इति
२ उतनदेवेजान॥इहिसुनधतराष्ट्रभय॥संजैसोहिहितऽन्नप॥१०९॥धतराष्ट्रोवाच॥ऽ
होधरनहिउरपधराहयो॥इहिभेदसधनलयो॥संजयोवाच॥इकीदनऽामहान॥ऽयो
वनऽवेरऽजान॥११०॥भिगुनिरथवानपुहार॥पाछेपनेनिरधार॥भिगुजयोवानव
वनऽवेरऽजान॥१११॥वनवत्सरिखिनपुभार॥सतशीलतेजऽपार॥तिर
चाइ॥रिखिवत्सवेधयोजाइ॥११२॥वनवत्सरिनपुरतचरतऽमंड॥११२॥तिहिवत्सलाजावान॥यमपुरगयो
जाइवत्ससंग॥वनीफूरतचरतऽभंड॥११२॥तिहिवत्सलाजावान॥यमपुरगयो
तजप्रान॥जवरिखिपहूच्योऽान॥मृतवत्सदिखतपतान॥११३॥जिहिवत्समरिहतऽ
रयो॥तिहिहिसराप उचरयो॥जवयुद्धज्ञितवउपरे॥रथतोहिभुमगहिधरे॥११४॥डै
सेगहेनतजाइ॥यवोरऽरेउपाइ॥सुनऽौरथतऽाइ॥रजोरसीमनिवाइ॥११५॥
दुगवरतनीरऽापार॥पगलगतवारंवार॥वहुविनीतिरिखिसोधार॥होदीनऽरतउचार
॥११६॥कर्णोवाच॥इहिपापमोहरिखिमाइ॥रिखिसवैज्ञानदिखाइ॥ऽनजानमोसोभयो
लघुजाइवत्ससमेत॥योदुग्धदेतसमेत॥देवोछिमाऽरशाप
सुमशापवउम्हहिदयो॥११७॥लघुजाइवत्ससमेत॥योदुग्धदेतसमेत॥देवोछिमाऽरशाप
नपतेनमोहऽमाप॥११८॥रिखिवाच॥मुहिशापुजानऽमोर॥नहिमिटेरऽरोर॥
सुनऽर्णमयोचितान॥रथऽर्णधनमहान॥११९॥ऽर्णोवाच॥रथमोहवेजचलाइ॥वै
मरवोऽरऽाइ॥सुनमाऽज्ञितिपरवीन॥वहुपतनरथसोकीन॥१२०॥सोधरनध
उनहि॥होथवनमरवउचराहि॥शल्लोवाच॥देहराऽर्णनोहिरथपसरवोचलतनपत
नहमारथथतमयोवलवुद्धऽरवधनहोपरतरिचार॥१२२॥ऽर्णनिरवउचरनमपोह
नहमारथथकतमयो

घराघ परमारा॥ऊर्णा कालकलाअग मकी थे महीर षु गदे हमारा॥१२१॥ धुंद्रा रमकी च रम्भ जो
ऊरे र्भ तांहि फलम्रमे ईरवरे॥सुनाद्रुव दकी न दुखारा॥ गहे केशकी नं दुखारा॥ समान जारा॥१२२
सुनपेदु धर्म स्वरूप॥ सरवकार ऊर्भ ऊन पा॥ मोंह भ्रांत बुद्ध पुरी ना॥ अरु अपर की न अधीन
१२३॥ कोर व अपर की थान॥ हम नाहि संग रहा न॥ निज भ्रांत दीने धाड॥ परसं ग चित की
ये जाहु॥१२४॥ देह रा॥ दुर्यो धन संग हो डे के की ये हमर अपर अपारा॥ सर्व सुर र धर्मा ते व
न की ये दुखारा॥१२५॥ ते विस्ये भेसे परे की ये अमे जे नी चा॥ निहि पापो अजा अफल पुजरा ने
र णमी चा॥१२६॥ धुंद्र॥ अर्जुन दिव्यास्तु न भान ना॥ चितं चित धार म हाना॥ न ही अरतसर
पर हारा॥ निरखत अधिक चिता रा॥१२७॥ तरव सनि निज र थ्य देव॥ जान्यो जुप स्पाव शेप॥ दे
वान की न प्रहारा॥ श्री रहन उतर नि हारा॥१२८॥ पुन स्यात अर्जुन उतर॥ नत कार दीने
धोर भ अर्जुन स तार हि वान॥ रवि पुत्र उतर चला न॥१२९॥ सुत भान सर्व कटा न॥ अ
र्जुन चिर घीर सका न॥ ब्रह्मास्त्र तव परहस्यो॥ निज धन धमज व लधस्यो॥१३०॥ मर्दातं अ
तीनि ज धन वान॥ परहरत योध महा न॥ दुहू केर वान प्रहारा॥ जीहते जस्पमित अस
पार॥१३१॥ मत मो त्रस पर वान॥ मिल की नशा व दम यान॥ व हुमांहि नकी न बुझाय॥
मर स्यो मन असुझाय॥१३२॥ जरम घेदो उ जवधारा॥ नवीन रे धर नम ऊरम पुन वान
प्रकीन॥ लाज तबु ने च समेता॥ सरकाट उसो पुन॥१३३॥ अर्जुन नि रखगुन ज्ञाना॥ भा
सो धनु षवल वान॥ नव र्णा वे हल पाड़॥ रथ च कको ल हत जाड़॥१३४॥ व लअर तजे उप
टाड़॥ थअरेखा व दूव लला ड़॥ चित चित अर ग्रस धवाड़॥ वलु अरत च कहलाड़॥१३५॥
च अस्या धधर वे पाड़॥ मिल साय स्रावे धाड़॥१३६॥ श्री कहन उवाच॥ सुनइं दुसुत हि
न स्याथ॥ ईस मनक्ता वेहाथ॥ श्री कहन ज्ञा जा पाड़॥ व लुअधिक अर्जुन ला ड़॥१३७॥
पाथे जुधि वते वान॥ त तकाल धनुष चढुान॥ दिव्य अर्णा रथत जहीन॥ जीहे उपरस

ओप्रवीना॥१२॥ दुजमथेह्मास्त पर॥ मुखरुहतम्वि नु दुरवचरा॥ ऊँवाचा॥ स्नदं त्रुमनमुहि
वैन॥ मनहरेधनमरवेन॥१३॥ रघउवदलेवोभार॥ नररमेवाच प्रहार॥ हमवेभेवे ताकूप॥
रघुक स्मोधर्ने ज्ञनप॥ ओधर्ममोपरवान॥ मरहोदुरवीनीहिप्रान॥१४॥ दोहरा॥ सनज्ञजुन
वन्वदीन ताज्ञारयोवानीनिधंग॥ मेयावचन श्रीरहमसोदेवोरिदेज्ञमेग॥१४॥१४॥
श्रीरहमुउवाच मणीप्रति॥ मणीनीकसाचोमहोनवनहीओयोविचार॥ द्रुपदसुताओहिवे
समेज्ञानीसभामझार॥१४॥ ज्ञपुनपरायेलाघजनेवेठेनपज्ञोरेम॥ मरीविपनपाउ
वसरहतनवमहाधर्मज्ञभेग॥१४॥ पुनवालमज्ञभमेनओयहिज्ञवस्यकुना॥ तुमड
मेठेहोमहारथहतयोयुधमरार॥१४॥ नवेविचारोधर्मतुमज्ञवमरहोपुनपा॥ दपा
नज्ञानीरिदेमोनिरधएम्लावार॥१४॥ मजयोवाचा॥ चौपई॥ ज्ञभमेननामसतइंद्रसुना
येगजरउउयोकोधाडिनिउपायो॥ म्रपंद्रुजप्रवज्ञनिपरमसे॥ पीतवणींमयोदेहिमेधासे॥१६
ओपवाननिधधमुबचउयो॥ निरधमर्णनिजसरधनलायो॥ मनतौ नवाम्नदुरूपरहरे॥
वडुतेजदुहूनमचउकोरे॥१४॥ चहुरमरथलेनसकमायो॥ पुउपरावनचहूवलुलायो॥ उ
परननमाओबहुवलवाना॥ ज्ञपुनकालज्ञासमजीयजाना॥१६॥ नवज्ञजुनउसो
वरवाना॥ नामुमेघमरप्रलेमसमाना॥ भानजदिघपरनासुप्रहारे॥ मइमर्वरउमेधनि
वारे॥१४॥ पुनज्ञजुनज्ञनास्ववलाये॥ मज्ञामसमज्वालमुमाये॥ निबञणी वर
वारे॥१४॥ पुनज्ञजुनज्ञनाम्रवलाये॥१५॥ इसहीभांतदुसपरवाने॥ जीनदूहर
एमुप्रहारो॥ नवालतेज्ञउनिवाये॥१५॥ धारघ
एपुफमयाने॥ मणीवानसुरपतिमोपायो॥ मरुन्दमजिहिनामरहायो॥१५॥
नघनीरूपानेमनमसररोलेमवदमयाने॥ नमज्ञवामधारनचिताम नमडहि
मरमरेघानुज्ञजुननन॥१५॥ मणीप्रहारमरनडिहिवाना॥ ज्ञनमवानुजिहिनामव
घानाम॥ रविसुतनज्योलओज्ञजुनकेजायोवेथवउतेजज्ञरतनके॥ ३मनीनमुमार
वाडमरवर॥ निहिमधरधनेजिसोभमपर॥ रविसुतपुनरघुउपरावनके॥ वल्सा
वतनरीउपरमरतमो॥१६॥ श्रीजिरथरमेरतमयहाथम॥ ज्ञजुनदेहिमलेहितमा

ना॥ सचा धान छिन क्षेमै निबेरा॥ रथ चढ़ उपुन कीये वा न पहोरो॥१५४॥ कोट सिराई धुजा कटी
रविसुत भी धुजा कटी अर्जुन की॥ भयो करण निज रथ उपरावन॥ उपरन सके भयो चिंतावं
न॥१५५॥ श्रीभगवानोवाच॥ अर्जुन प्रति॥ जब लौ रविसुत रथ उपरावता॥ तब ते भविलमुत
ऊ समो दिया वतम ऊहि रूव सर पुन हा धन ऊ गो वे भ हत न सक जे रथ उपरा वे॥१५६॥ श्रीन
र हरको ऊ नापा पाये॥ हाथ ऊ रथ उ सी मुनि ना घे॥ बड़े ते ज सर नी बड़ हासो॥ रविसुत सीस
ल तात क रऊ सो॥१५७॥ सीस हीन देहि रविसुत की॥ देरत राघर व उ गयु धदुत की॥ बदन भ
न सम भ ऊ लत उ का थे॥ मिली ऊ इ रविसा थ ऊ का थे॥१५८॥ कौरव सेन सकल दिश भाऊ॥
जित जित परभी र म गत ऊ॥ सुयोधन गये तब रण भूमि त्याज्यो॥ सकल जु धीर ध्रुह ऊ तभाज्यो॥
दुर्योधन ते लकै गये कुरु सभ॥ बदुन करत त्रछु सुन न सकत तन॥ रविसुत कीम सर पर इकदो
हे॥ दुहू मैन न के स्वेत गये॥१६०॥ धुन धुनासिर मीचे सभ हाथा॥ उचर उचर रविसुत कीगा
था॥ पथु नो बके हे वीर कर्णासे॥ किहि जग दीसे धीर धरन से॥१६१॥ कवि उवाच॥ दोहरा॥
धंन सर रविसुत बली छत्री धर्म निवाह॥ जगत त्याग सुरपुर गयो रहम लाल यस पाइ
॥१६२॥ दुपुत्र कर्ण निभुज बली पुन भी रहन सहाइ॥ ते भी रविसुत नाहि उरत की ने युद्ध
अघाइ॥१६३॥ इति श्री महाभारते पुराणे कर्ण पर्वणे कर्णवध॥ ३॥ अथ नराइ उवाच॥ दोह
रा॥ कर्ण धन राइ सन परे भ सम सुर फाइ॥ धाये चित निज सुत को का कालप हूचे ऊ
ऊ॥ रद न करत पछत वचन क हूं सं जेपुग रान॥ कर्णमु ये ते भी पाभ ये म ह से ना की रा
न॥ कवि उवाच॥ चौपई॥ कर्ण मुये हर्षी सभ सेना॥ जाजे बाज जब जे सुर बदे ना॥ पांडव दधु
न ब ठु दर्ध उच्चार हि॥ सर्व हि सर्वहि उत सब मे गल धारहि॥ उधन्नु रि सुत की सेना कलला नी॥
श्रीका तर चित मे गा दिया नी॥ सभ मजा न त मन लौह उ कौ चारे॥ रविसुत तो तो ये जी पहूचारे॥१॥
कासन वपज्ञ अर्जुन ज बझा वे॥ नी हि दे सतरो सन्मुख जा वे॥ अब सभ सै न ना ला लमुर व पसी
से वे न प सिधि न व पल दुरी॥ तिन रविसुत को से ना गवै॥ को अर्जुन ले सन्मुख आवै॥ चि
न्ते नव समनीय प्राप्त नी चित ना॥ सहित से न उर के पो वे मिता॥ दो॥ नह ह म ध पावेन ता भ जा है

नरवरनगजिरपरतदिखाही॥ गजरथअस्वनजनभगेसरवता॥ ताहिसभारपतीधनजेसता॥ ॥र
बिसतरिनसेनयों भाजी॥ जैसेबबरबिनु नाउबिलाजी॥ दुर्योधन [illegible]॥ जिहारे॥ हक
चस्योरथुबेगकरारे॥ ८॥ दुर्योधनोवाच॥ शल्यधुनिमोहिदेनुगशिसुनजीयजीदीना॥
ताहिबेरनहीतजोगुबीना॥ नतदेताइथकेरथुमेरा॥ बिनाकर्णमम जीवनथोरा॥
९॥ अर्जुनबलुजैसानहीकरही॥ भाजेचलेपाछेनहीपरही॥ सत्ये सने मुहिरथेच
लावो॥ बडाबेगनहीमोहिदिखावो॥ १०॥ अश्वधजामजवीदबसरहायो॥ तबदुर्योधनजी
वहिरायो॥ समकुरवेशइकठेहोआयो॥ दुर्योधनआगनुसुनपायो॥ ११॥ कर्णकर्णकहि
सभरदनोवे॥ हाइहाइबहुशबदुसुनोवे॥ अधिकशोकचितधरदुर्योधन॥ गेरनमुख
नेशबदुकहतपुन॥ दुर्योधनोवाच॥ अर्जुन श्रीयदुपतिहमरे अरमजिहिहतुकीना
कर्णसरवरा॥ मोहिनामिबजिहिदीनेप्रान॥ ताहिबेरनाहितजोमहाना॥ १२॥ सहस्र
पचीसपाइअधनधा॥ सौगजिनबडुयोधेभजवलभा॥ री॥ जिहिकेवानन्नीबिरथेजाही॥
पितजैसीभातशोकमनमाही॥ १३॥ तिनोबुलाइकहतमुखभपा॥ सुनोसरमहिबच
नअनूपा॥ अर्जुन श्रीरहमरेविस्नतको॥ स्नाहनुकोजेसंदरदुनको॥ १४॥ बिजैपाइ
निहिचिंतधरो॥ तुमरणहनकरहोबहुदेवो॥ तुमसमभकोदेखोबडदेसो॥ राधोसदा
नुमेनपभेसे॥ १५॥ दुर्योधनदेरेतबहरथता॥ भीमधनुदुमगनाबना॥ सरकीवर्षा
भीमपरकीनी॥ अर्जुनहतनइथमनलीनी॥ १६॥ भीमधनुदुमूरिसदोऊ॥ बानपु
हारकरतमथेसोऊ॥ बीसतीसइकवारगिराही॥ रहेशेषमिलमेउकाही॥ १७॥ अर
जुनभीमधनुदुवला॥ हमसोपुहुकरेतीनोमिल॥ सुतनभीमकोधनकरतिमथे
निजमनमाहिबिचारनकरेयो॥ १८॥ गदाहाथगहिदोरतपरही॥ साठपचासघात
बलकरही॥ सरपावाच॥ दुर्योधनसोजोकहिआयेन॥ तेकारजहमसोनसिधायो॥ २०
आधेतेहमआधिकहताने॥ अरपनिकरजावेसमभयाने॥ दसमहस्रहमरहेजुशेषा

५८ अवरहनेवउयुद्धनिमेघा॥२१॥पञ्चीमसहस्त्रमोरवरज्ञाये॥५०दुमसोयुद्धम
चाये॥५५दुमनसमकोहतलीना॥भीमसहस्त्रदसकेषपञ्जीना॥२२॥शकुन
नकुलकोसैनमकारे॥ज्ञाइपरेसरवर्षाधारे॥सैननकुलकोआधिकरताने॥अम
मुनदेओनिहिनिरखाने॥२३॥आपदुर्योधनरथनदेकारा॥सननशकुनभाजेमा
मपकारा॥अआगेशकुनपाछेतेसैना॥भाजेजाहनेमुखनहीवैना॥२४॥दुर्योधन
दिखशकुनसैनपरि॥उचेशबदकहतेरिसकरतजरि॥दुर्योधनोवाच॥दोहरा॥
कहामयोनुमकेउभजेक्रहाजाहुवलहंडु॥वनीगरकेदरनदीमोनाहितजेसतपं
डु॥२५॥भाजमरेतनरकेपरेलरमरहेमरलोक॥येजीतीतेराजसखुभोगेहिदे
असोक॥२६॥चौपई॥दुर्योधनवचसमसननमान्यो॥करविचारमननीकेजान्यो
धारधीरस्थितउकराये॥दुर्योधनसोमुखपुकराये॥२७॥सैनोवाच॥हेनपकेमत
मदीनवचननृहि॥जोमनधीरजनहीडिरदेमाहि॥तुमरहेभ्रन्दीन्होचितननधारो॥कृत
वैरलेवेकीचारो॥२८॥जोलोप्राणचरणभूमधारो॥वैरयुद्धमनवलजनगारो॥सम
केहनेमनरणजाये॥नुमनीहिसिरपरराहेसहाये॥२९॥जोहिडुरोनिहियाजापरहीं॥
मरकसरनेभीनरडउरहीं॥पचालिभीष्मद्रोणहताये॥करमनमुसरलोकसिधाये
नोभीवधजीवजमाजा॥जोनुमजीवनतेहोसिरताजा॥जिसेवधावेनपतेउअरा
जिमेहोहवलनेउवलपरा॥३०॥नृपिपुत्रपपेउमतेहतावे॥अपुनेवैरलहैनतजा
वे॥दुर्योधनसुनसैनवचनवर॥कछुकधीरधारीतिहकरवसर॥३१॥डहिमोअर्जु
नीनकरमाऊ॥मतसैनकुजनगेनमहाई॥जोनरभागतहमपुधुकरहीं॥भजे
निरथपाछेनहिवरहीं॥३२॥जेववराविजेस्योमिददिप्राये॥धरेनधीरभाजेजेननजा
ये॥सोभाजोदुर्योधनमेसना॥दविस्माइकरसमुखवैना॥३३॥दुर्योधनोवाच॥
मेनासोनपमुखउचराये॥करहेनकहानुमकरहारकरागेअधिगनृहिवनुधिगवचन

नमा॥ तेधिगनुमसोहिन तेधारे॥ ७॥ डीहै विधन चदुर्योधनमा॥ कोऊन सवननाहि
सुनराखु॥ भाजेजाहनाहमर देखे॥ दुर्योधन कोहस्यामी रोघ॥ ३६॥ असवसमदेषदु
र्योधन तेलये॥ जाकाहिदाचिंतम लमलये॥ माल्मसह नदुर्योधनचिंतन॥ सुनकन
उहेषरावेजितल्कित॥ १७॥ गोवेदुगमरस्वासमभतावहि॥ करमीजनताहाडसुनाव
हि॥ कूकूगवदुषाडलकरहीरण॥ मनपेहुनउचनाहिवेदधुना॥ १८॥ वदुनिरनक
भमऊपरपवे॥ मनुच्चिवेरचित्रलिखधरे॥ काहूहाषकेरेकाडूपडा॥ वरमकोऊन
उफाहूपुणेनपवेधर॥ १९॥ भारभीररषगजनलक्रमये॥ नुरेकेतापुनउठनम
कायेगवदुपितभ्रातसीसवरकेचहि॥ दुर्योधनदिरखचिंतनविडोवहि॥ २०॥ गलेकच
हेनपईहतुमकोसमभपापा॥ देखोजेनेरलसंतापा॥ काहूवचनताहिनुममानन
सिष्ककेरतिसमत्रूजानता॥ २१॥ पिनुकरमातभ्रातहितकारी॥ दिजवररवेडुजानगु
नभारी॥ तिमदिननुहिअपरानीसंता॥ देतसिष्कहेकारज्ञमंग॥ २२॥ तिनकौमि
छनीसतुमजानी॥ तारेफलज्ञवलेदुविनानी॥ स्नीपदुपतसेतुमसेभाषत॥ नाहि
वचननुमसवननराषत॥ २३॥ दुर्यो॰ उनाहिउपजेछनमाने॥ जोहितेहरिहोकोध
सिधारे॥ दोरर॥ सकलजगतनुहिपापकररहतुमयेरण॥ भुमकाडा॥ कुलउपराथे
कापुण्णजेनाराषमिरेनकाड॥ २४॥ चौपई॥ कुरसैनासभीनरसोचेतुमन॥ २५॥ म
घमानंजाधिकोवहवलमन॥ जपसमोचितवंतउचाहि॥ नहिजीवनतिमडीह
जीचाहिहि॥ २६॥ जोहवनुधारकीसेमारे॥ तेहमकोहितजेमयाये॥ केतेकेहेडीहि
निममोहजीवन॥ मर्यहिदवसाकिवरेचिंतमन॥ २७॥ मलपुजीवनजाहिनिह
हवापरहे॥ ताकोवनेरहाचितधरही॥ मानपानकिनदूनहीकौना॥ निजानिज
वहजानसमलीनाम॥ २८॥ पोउवाननकीसैनासडारी॥ जाउनरहीसनेदनजाती
रविसुनहनअनेदनवहेयाम॥ गाजूणकामननेमधपाये॥ २९॥ श्रीहरिउवाच॥

[illegible]

२६ वेके पउते तेसर रमन नव लहोइ ॥ कोटकोट रूप घोमेरही सरपुर भोगेसोइ ॥ ७२ ॥ वृणी वर्वरणी
भकोवउते सजेचितनलाइ ॥ अहमलालसरपुरगमेअर वोधतफलपाइ ॥ ७३ ॥ अहमरु
हमसुखमोरहेअरघनस्यामसुगार ॥ अनजेतउसकीमिले सरणीब्रसअपार ॥ ७४ ॥
इतिश्री महाभारतेपुराणेवर्णी परवलेवर्णीदुसामनवधः ॥ समाप्तम् शुभमस्तु वेत ॥

१ॐ श्री गणेशाय नमः ॥ अथ शलपर्व लिख्यते ॥ धवैयंदु ॥
दोरजामसतपगवेदस वेदेवनपुणमावो ॥ शलपर्व कैसाथावुगटअरमाधसुनावो ॥
सुनतनवदेअन्देदअधिरवलभुजउपजोवै ॥ जानपुगरहोरिदेजगतमोवहूपसु
पावे ॥ मघवनारनगजवदनजोतअमितनिरमलसुचित ॥ शोमतहाथवुठारश
भरहमलालपुणमतसहूत ॥ ॥ दोहरा ॥ नीलवर्णीशोभाअधिकशोमतहाथवु
दार ॥ धोमेविघनविनासनेसवेजगतसुखकार ॥ २ ॥ धतराष्ट्रपधतनचनसुन
मजेससुखदाइ ॥ दराजनमथोमोरसतविचुरगिसनवउकाइ ॥ ३ ॥ सजयोवाच ॥
पुनीधनसवलीनिशांचताभरवउमोका ॥ नैननीदपाईनधिनहाहाकरणी
तिथोग ॥ ४ ॥ दोहरा ॥ दोइघरीजवनिसरहीमेतस्वीनीविचार ॥ भीषमद्रोणकरणी
कैअसुसानाहिरसमार ॥ ५ ॥ जोमाधवसोवरतवीहिरहिदसहाइ ॥ मेरिहोताका
अजोवाहिसेनपतिधोरमनेउदोतहा ॥ ओवडोजानगनीसोसमामजरो ॥ इहिस
चारवीनोनीहिरवोरो ॥ विजाणलक्षरवोनाही ॥ वनगजनीसतावलवाही ॥ ७ ॥ नामी
वहाथपूपरवीन ॥ ८ ॥ इहिविनअनवदलदुगसीना ॥ सनदुर्योधनशलवेगयो
तिनकीधकदिनधारनमयोम ॥ इहिसनहमेरसनपुरलोहीं ॥ विनीधारमरवेन
उवगत ॥ मोहिमेनपतिहेहुसजान ॥ नीवेरथीमेनवीरदरो ॥ मजेबलमम

तेऽस्त्राणि रथं रथे ॥ ६ ॥ इति सन्नद्धसेद्धस्तव नपरे सोऽसा ॥ ज्ञात्वा गुर्वी सरानवंद्धयोऽसा ॥ सूतनंतर
से वृधजन दुर्योधनः ॥ अऊचे नृन तजेग ज्जस्तास्समन ॥ १० ॥ भीष्म माशेषवर्णाद्वृतनाना ॥
पुनरेण ज्ञात्वा द्रोणमहात्मा ॥ बहुरंग जजीवास्मसन न जहीगजे नरवशाल्लसे नर्वतिसज
हीम ॥ ११ ॥ द्रोहरसा ॥ भीष्मश्च हतयोद्रोणद्दतपुनरशमत्वर्णाहेतनान ॥ तेषां उ व वलजी नजीवास्मा
वद्दवलवानन ॥ १२ ॥ जयो द्रुतनीनरथतगाहे सत्वनानरवीरणाऽन ॥ त्यो दुर्योधन मनन्वहं
नहोवे जीतहमारा ॥ १३ ॥ चोपद्भिः दुर्योधन पुत्रसेनस वारी ॥ दूसरदिव्या जोहदिद्दिहद्दित्तुश्च
रीमज्ञा जोकीयोपल्लवउसराना ॥ निजमयोम द्रुमपदहउदना ॥ १४ ॥ तवर्माज्ञश्च ज्ञावृत
धलजोह्वा ॥ वपांचार्यज्ञसुषामसनेदा ॥ रविसुतजेसुतवउवल्लवानी ॥ त्रिजगरनसे
नयोधेमजमारी ॥ १५ ॥ धारसंजारणमाहिसिद्धायेः दुर्योधनवउरनउपजायो ॥ डीर
दिवपाउवानीनिजसैना ॥ चारवाहृकीनीसुरवेदेना ॥ १६ ॥ धृतराष्ट्रवाचा ॥ दोऊसे
नज्ञपालसंधहना ॥ केतीरहीरहेतीमईहतुरना ॥ पुत्रमेडीरमोसौपुरजराये ॥ वदर
युद्धवश्यानउचारो ॥ १७ ॥ संजयोवाच ॥ दुर्योधनसैनडजादसधहना ॥ रहोसोध
जोवणहेतन ॥ सरदस्वइस्वादसरयुपुजरायो ॥ दससरसुसेस्यानजजायो ॥ १८ ॥
दोलपज्ञसचेवोरपदाता ॥ पांचेअर्ण्हेदैवश्यानना ॥ अवरसकल्लरणमोहतहो
वेमभीषमद्रोणा वर्णायुधमोयो ॥ १९ ॥ पांडुनसेनसानधृहने तेमपुजरारोसुनमपञ्च
वनदे ॥ नरसरस्वरथजजमरसवेसा ॥ दससरस्वऊसवहैगसंसा ॥ २० ॥ एकजोर
पायनरहेशेषा ॥ अवरसकलदतमधेवशेषा ॥ दुहूओर राजेरणवाजा ॥ वानपुर
रेषद्भवडुसाजा ॥ २१ ॥ जसवारसोऊजनसवानयरधुमोरधुनससोनसुभा
रा ॥ पायरनसोपायनयुधवानेपरणभुमरजानिभयानोद्रुणेजेम ॥ २२ ॥ जजेवे
भवारनरहोरे ॥ मनीजरसेजहूरभुनमारे ॥ भन्नेपुहारपुसपरनरहीगजंगमा

मारत मसरि नकुल भुमड़ारवा॥मईर दोऊ सरव धारि कपारहि॥ नकुल वा नकस मंते ज
प्रहा मो॥सतसे नारि दाव धअरड़ारथो॥६॥ गिरे सतसेन धर्म परकापो॥ दुसर भात
को पकति पाये॥ भात शोक वहु वान चलाई॥ कैधो पदात नकुल रण पाई॥७॥ सत
सोमहुं पदं सुत निरघत ईह॥ दोर वरे नन कपिउ रिस कि जिहि॥८॥ दोहरा॥ रवि
सुत सुत दिष नकुल को कैधो वहु वान प्रहार॥ उथो वचाइ वहु सर मक पुन वान वल
पाइ॥९॥ वहु रवि सुत वरत सो मरण नकुलनि रधा रिस लीन॥ वृद शत्रु केरथ चहयो
भुज वल करहत लीन॥१०॥ वचित्र सेन उसीस करण भुमन दो तोड़ा॥ कुरसेना
निरघत भजी धीरज सके न धार॥११॥ चैापई॥ शल्ल दोर सेन ताके तापाठो॥ धाये दोये
दोर वड़ भाउेा॥ वल सभार दैार धर्म जसो जाये॥ कैधो पुत्र जिहि उरण नकाये॥१२॥ दुहु
उेार वहु सैन रहताये॥ उथे सुरपुर सनमुख उऊये॥ शल्ल धनध उस मार तवान॥
हनी सैन कीये तुग मरान॥१३॥ भीमनन उलस हदेव सवलकर॥ द्रुपद सुत ताके
पुत्र सरवर॥ सात रथ पद्रु वको देषे॥ वली सिवे जी उेार हि पेखे॥१४॥ दसदस सर
इन सम कोलाये॥ शल्ल सैन पति वलु छाधवाये॥ उजरथ कस पदातन वहुमारे॥
पांडुव सैन त्रसी भयभारे॥१५॥ तजी धीरर रण भुमते उरे॥ धर्मज केजा पाछे परे॥ त
वदिष शल्ल धर्मज सैन ताघर॥ मरहि त्रिपुरकी नीरवधा सर॥१६॥ धर्मज जीव घसथल
मारहि॥ लीेछ वान परहरवल वाहि॥ लजत वान धर्मज मुरछाना॥ भीमनकुल स
हदेव दिखाना॥१७॥ दोर शल्ल परपहुचे धाये॥ निरघ शल्ल सर पावच ताये॥ भीम
उेार दीह पाचो वाना॥ दस दस नकुलसह देव दिखाना॥१८॥ नव दिख रपा चार्थ उस
सघा मा॥ शत्रु नकस सोऊ तनवर्ंम मरहाना॥ भीमसन नमुखेर्इ हि सभकसाये॥ कैधे
वहु पद्रुगान वनहि उाये॥१९॥ दुर्योधन भात जुरहेव शोधा॥ शल्ल रथ परतेनिर

५८

[illegible]

[illegible]

५५

श्चकरही ॥ दुर्योधनसोमसन्मुखल्लरही ॥ ४८ ॥ दुर्योधनवचः श्रुत्वा मद्रराजो ॥ वेजतानन्त
रदाविदांश्रेष्ठ ॥ मन्त्ररथ्यपाथवीरशूरस्य सो ॥ देवपांडवावद्भुरिमधे श्रेष्ठ ॥ ४९ ॥ इत्थवारेसभु
वानवृहारतं ॥ दुर्योधनकीउतीर्गंहद्वारतं ॥ दुर्योधनसरतन्ते लुपाथो ॥ सरशिरेहीनकोर
न्नोद्रुणयो ॥ ५० ॥ मद्रपात्रवर्यद्रतत्वर्मशकुन्यधृतं ॥ चोथ्या दुर्योधनकृपारदृतं ॥ ५१ ॥ दुम
ञ्जीहदन्योद्रुणको ॥ ञ्जीहसंयगमवद्वीशलतश्रेणसो ॥ ५२ ॥ निजगरवेरल्लेह्याकोह
तर्भिरेशोरु तवर्मीहमन्नतेसत ॥ वथसदस्वेवेरथ्यसवारा ॥ कृष्णेनसोमद्रुयो
धृधुमारा ॥ ५३ ॥ वर्णधृष्टेनरेदेजमेघा ॥ वदृहतकीथेकृष्णेनवउभेवा ॥ मजुर्लीचरजतरण
माही ॥ ५४ ॥ हन्तहन्तसरेवलजरही ॥ सन्मुखमरेभागनदीमरही ॥ हन्तोदनाहनहन
नउद्वावे ॥ वर्मिनकोरशवदनमनावे ॥ ५५ ॥ कृष्णेनयुधभड्मेनजुषाना ॥ केनज
वेविनुणवविधाता ॥ शल्यत्वा नधर्मंजकोमारे ॥ दिवधर्मजचोदहिसरद्रोरे ॥ ५६ ॥ देह
शल्यकी स्थनरणत्ती ॥ देसार्थशल्यजेसरमरी ॥ चेदुमेवरधिसनदोउसारथ्य ॥ कीने
त्रिनभागीरणभारथ ॥ शल्यनिरथकोप्योरणमाही ॥ सेनचदेगीसंगचलाही ॥ ५७ ॥ पा
वीसवानभीमपरद्वारे ॥ दकृदहुनबुलसहदेवे ॥ धरे ॥ धेदनवेदतदनकोस्याये ॥ के
उत्त्वाहरणद्रोहुसमाये ॥ ५८ ॥ रथकोरवधनधनउवारी ॥ शल्यकीभारीउपमउचा
री ॥ भीमकेदुणचर्मकेपाछे ॥ शल्यपुष्टकीनेकर्णनिराछे ॥ ५९ ॥ ईदरणमधोनकृ
सुन्योमन्त्रा ॥ वरेशल्यकैसीविधपृथुरन ॥ तवसुतधर्मीरिसवानप्रहारे ॥ मवधारे
भागीथवकोरे ॥ ६० ॥ शल्यमरेसावनघनछायो ॥ सरविनकुवरनीदुजीदुसायो
सातनभीमनकुलसहदेव ॥ कृष्णवद्रोद्दीवेत्रिशिमेवा ॥ ६१ ॥ शल्यकेरसंभुवानव
लावहि ॥ तारमारमुखशवदमनावहि ॥ शल्यनिजवानरलेपरद्वारे ॥ सातवानस
रदेवनमन सावे ॥ ६२ ॥ भीमपोपुमारथजनधनपुत्रदायो ॥ जोहधनकोस्थधिर्कीरसमा

ये॥ शालकी उर वा न वर खा वन॥ विसर ता हि स्पार ख को मार न॥ १४॥ धर्म जरनाठ सरे
शालदेहा॥ छितकी नी रणमोवल सेहा॥ वर्थ वा न वहु शलपरधोरे॥ वानही वनही
होर दिखारे॥ १३॥ नघसिधरकतपर शल कोतन॥ की जोधर्म पुत्र भ जरलरन॥ शत्रु
रिसव धनव रवे सोभपका॥ जरमसुरव दायवस्परव स्वरपरा॥ १५॥ धर्म जरिख तकाथ
नतोरे॥ क्षरसोपायोसरर वलघोरे॥ १६॥ सातव शलस नमुरव हायो॥ पुत्रकरे रण
मारव रेथे॥ १६॥ सोरठा॥ शालहिवा न पुहारस्पान कलयोध न वपुन॥ पुनचेसे
रमार भीमन पुलसहदेवत न॥ १६॥ दोहरा॥ सातवहिखके योक्षिक क्षरनिखे
करलीना॥ धर्म जदूसर उरते शव्य तपुहारणकीन॥ १७॥ छंद॥ पालवलीपुत्रकरा
ल॥ रणमो वरथो विरकाल॥ पंडुवजूकरे पुहार॥ तेकरतो छिले निवार॥ १८॥ शलसी
नसरवरथान॥ भयोपरनभमजान॥ रथुकाहदि गनहीपरे॥ मनवदसरे सेरे
क्षसथामक्ष जुनसेरा॥ रणपुत्रवरतक्ष भगा॥ सुतइंदुकी सभमान॥ छितवनीदि
जवक्षमान॥ २०॥ क्ष जुनरि समवरवान॥ परहरत रणवलवान॥ निहिलिदोनेकी
रपरे॥ धमसोम कोप पुधरे॥ २१॥ कौरविसमलइस वान॥ दिनपुत्र क्ष जाधरान॥
परहरे क्षजुन उर॥ जो परतहाथ वरोर॥ २२॥ सरसत नरव उगपथान॥ दिखसवे
ननरे पान॥ भी भसदे शापचार॥ तहे अर्थ पुत्र क्षपार॥ २३॥ युधशलवे निरखान॥
सर्वे वितमनतेरार॥ क्ष जुनलि निरखरि समरान॥ रणक्षरिवान वलान॥ २४॥ उ
णमार कौरव सेन॥ परजरनहीसतसेन॥ पुनक्षोरमरपर हार॥ दोमरस्वरण
क्षसवार॥ २५॥ रथसहत णरेवान॥ हतवेरलेभथान॥ रथोस्रोणतेजुक्षपार॥
रेजानपायल भार॥ २६॥ दिनपुत्र चितरिसवेत॥ वडुनेजुधारमहेत॥ श्रीरलनके
दसवान॥ क्षजुनेरा दसजान॥ २७॥ परहरेदि जमुनकीर॥ हस वरतक्ष निरपाधीश॥

I

१११ कर्णे जो वा च ॥ नृशिंपितामह जग्रदेव ॥ जो हृदई सिंघक्रमेव ॥ नृमपृथमसरप
रहरे ॥ नृहिरहने क्र घनहीपरे ॥ ७ ॥ नृहिकी नक्षतमृहि देष ॥ जानो जुरिदेवमोष
नवररतईहवचभाष ॥ रत्नारिसव क्र जैनराघ ॥ ७ ॥ धृजधनषुध्छिनेकराज ॥ र
घसहतसारथ्यहान ॥ दिजपुत्रविरषु उठाइ ॥ परहरोभजवलुपाइ ॥ ८ ॥ क्रजे
नीरसवक्रसकीन ॥ कीथसातहुवपुत्री ॥ ३ बाचीदजसनदेहि ॥ ध्छिनकीन
वडुरणनेहा ॥ ९ ॥ धृष्टद्युम्नजोवडुसर ॥ संजमैनवहुवलपर ॥ दिजपुत्रसन्मुख
न्नाइ ॥ कौरयुद्धरणक्षीधनाइ ॥ १० ॥ वलभुजावानपुहार ॥ वडुयोधइकुलीके
मार ॥ भयोरहघदिजसतभार ॥ केहेरदमलालसवार ॥ ११ ॥ देरसरा ॥ दुर्योधन
दिजपुत्रकोरणनरलाजान ॥ क्रापहुको वडुमैनसोधारेयुद्धनहान ॥ १२ ॥ धृ
नेको ष्टद्युम्नक्रघनमयो दुर्योधनवडुसर ॥ सत्रुहिसरपरहरवेरभारतेजवलमर ॥
१३ ॥ छत्रहुमनदृपदरणवलुधा ॥ हतकौरयोधभार ॥ राहुरउग्रहेवरु वानमक
रु शवतेतेजहरनान ॥ १४ ॥ ससमचपलदोरतवीर ॥ धृष्टद्युम्नहेरणधीर ॥ दुहृसे
नीरसघुधुरे ॥ जिलितनुनीरहवध्वपरे ॥ १५ ॥ शलपाडुवाकीसेन ॥ मरहृन
करीनिरचेन ॥ ससभुभजीहोइमपार ॥ रवकौघमसार ॥ १६ ॥ सनपवन उच्च उ
चार ॥ समसोरुसोपुत्रारा ॥ भीमोवाचे ॥ रेभानमित्रहेसर ॥ रेमपभुजवलपर
१७ ॥ कौरभजोत्याजोधीरमवडुपहतेजजोभीर ॥ नृमघरेदेषोक्राजु ॥ हुमभरे
युद्धसमाजु ॥ १८ ॥ सनसर्वधीर्थमयो ॥ मघमारमन तेजयोक्रजैनीनरवर
नवमे ॥ कौरयुद्धरणमोपमे ॥ १९ ॥ सातनमहारवलधार ॥ मृरतशलसन्मुखकार
शलनीघवानचेसान ॥ सातरकौउरमपान ॥ २० ॥ सृनपदुमातलउरा ॥ परहरन
वानकेरा ॥ शलनेपहनरेवान ॥ उरनक्राधिरमघमान ॥ २१ ॥ केउवमघे

विस्मानि ॥ कुरुसे नचिंत हरषाने ॥ युधिष्ठिर उवाच ॥ हे भ्रात नुमं मुहि सुझाने ॥ बल कीनरण
युधिष्ठिराने ॥ ९४ ॥ तुम करीसे हतु करे ॥ जिहि बलन संघारे ॥ दनयो दुस्सासन सार
जिहि मारि हि बलुनिहिं पारे ॥ ९५ ॥ तुमकर सरव उहत कीने ॥ नहीं कंत जास पुजीने ॥
कौरु सरमा वडु नाम ॥ हमनाहि हत्यो करकाम ॥ ९६ ॥ अब युद्ध परनंभयो ॥ डारि हंश
समोम नरह्यो ॥ तातें करे परकाश ॥ सुन हे रिदे अब करकाश ॥ ९७ ॥ मीह डछपलणि के
रे ॥ युध शल्ल तुमंनि रवरे ॥ हम लगे तारे संग ॥ नुम रहो मो नउभंग ॥ ९८ ॥ शल्य
कौरवे रसं हारा ॥ करते मुहि बलभारा ॥ सुन भ्रात सभु विस्माइ ॥ मर बेते कहत पुराइ ॥
भ्रातो वाच ॥ दोहरा ॥ नृहि करजाते नाहि फिरे हमरे मन तु पुणभार ॥ अर्जुन करे अधि बलु दुग
परे देषो रिदे विचार ॥ १०० ॥ धर्म जउचउ योश ल्लपरई हि विधसैन नवनाइ ॥ करजो हरयो
घव न सत गदा हाथ करि हरगइ ॥ १०१ ॥ सात क नकुल दाहनदि मान करजति वउ तेजुदिषाइ ॥
रण वाज नवाजे सकल चउ से रररषाइ ॥ १०२ ॥ सोरठा ॥ भट दुस्सरदे वाम कंग
देउ सरमे ॥ अर्जुन वलेकरमे करपाछे नपके र रतनरछ ॥ १०३ ॥ चौपई ॥ धर्म जश ल्लके
सन्मुख हेयो ॥ परे पुत्र जिहि जलनन करोयो ॥ धर्म जकरत वान परहारे ॥ करतन शल
मजामोवल भारे ॥ १०४ ॥ दुर्योधन सन्मुख सुत पोना ॥ सातक शकत संगायुध कोन
भीम धुजा दुर्योधन काटी ॥ सम सार्थी रथुमेलयो माटी ॥ १०५ ॥ भीम देशन करे दुर्यो
धन ॥ मुष्ट पुरास्की न करि क्रेत न ॥ मयो विस्मुध तव भीम दिषायो ॥ निह रथ सारथी
मारि गिरायो ॥ १०६ ॥ सरुपाचार्य पर तव मार दिषाने ॥ परेदौ रव उपुरु मचाने ॥ अर्जुन का
नंधन पतेउ रता ॥ कौरवान की सेन संहारत ॥ १०७ ॥ रणमो षास क्रैसा चलु पायो ॥ ध
मैं जराय पुन रसनायो ॥ के तेपडर रपु पाछे रटायो ॥ रिषम तर धर्म को पवं पायो ॥ १०८ ॥

१०१ हंसवाणाभ्यामाग्निकिरणागरा॥ एतन्मैमेनरन्नकीनउज्ञाजरा॥ कौरवैसैन्यरणेसंपन्नौ॥ ष
रहरयरकेषभयमानौ॥१०५॥ शल्यधर्मजयुसपरहेकोरे॥ शस्त्रुमस्त्रुनानापरमारे॥ दु
ह्रेकेतनछिन्नमयेषुकाणा॥ मानोवननमेपुलेपलासा॥११०॥ शल्यन्नपधनुकासोवदु
गारा॥ नोसेधर्मजकेस्वपुजारा॥ क्रोधसहनसरकैनपुहारे॥ शल्यकाधनुकासोननका
रे॥१११॥ धोरेरघुसारथीसमेते॥ हनेरणेधर्मजवल्गुचेते॥ शल्यकेरथानिजरेजोछेनर॥
तेरनुकीयेयुधिष्ठररलधरा॥११२॥ एकवाणनालागेशल्यकेतन॥ निजसम्मोगणशल्यम
ले॥ तिमनमन॥ उस्त्रयामादेरेनिरवाये॥ शल्यकेनिजरथलीयोचढुाये॥११३॥ च
ढुयो शल्यरथुके रमजाये॥ गाननचर्षकैनीकृष्णिकाये॥ पांडुवसैनमजीभयपाये॥ भीमयु
निरखदैरोवलूपाये॥११४॥ पंचालदेसकैसैनमर्दाजिहि॥ शल्यकेघातीतेधीरलति
हि॥ शल्यकेघायलादिरुदुर्योधन॥ निजसैनाकोकीनमतेधन॥११५॥ दुर्योधनोस
च॥ शल्यकेरथानरेभारडरा॥ मनकेउहलेनाहरणधलुच॥ शल्यानिजरजावहुचे
सरा॥ निरखतशल्यमयेवलपरे॥११६॥ परहारेनासरनपडोरे॥ दिखधर्मजकेपाव
लवारे॥ वेलकवानकेपपरहारे॥ शल्यकेरणमरछतरजोरे॥११७॥ पुनसविधान
जानपरहारन॥ मेसरधर्मजकरमहजुरन॥ दुहकेधनखंडेरणमाही॥ पुनउहेके
रनलगालनराही॥११८॥ रथपश्चारधुरसोभयका॥ जानेडोहसनधर्मरुपका॥ पुन
शल्यवपस्थलवानना॥ धर्मजकोडुरेभंगमाना॥११९॥ निरखभीमसरतीनपुहारे॥ म
धेस्वधीरशल्यधीरनिकोरे॥ भीमसुवारासरकीनपुहारे॥ शल्यसजेउडुवकेरनरजोरे
१२०॥ रिसकशल्यकरसवदुगाहना॥ देरेभीमसेडोरवलवानना॥ धपदुमसहदेवकैद
घाये॥ दुपरस्तनासुतसेडमसहाये॥१२१॥ भीमसजादारईशल्यरथदुजापरा॥ दरहरतोग

मेधा धरन्नपरा॥ शिविकोरवमन्नमोच्चितानो॥ पवनपुत्रके तेजमन्हाने॥ १८॥ डोनारजाहानाहीश
लवरमानीयधर्मे जरथ देशेभपजानी॥ कृजुर्नाविरथतरथुंदोराये॥ कृष्णाइपदूच्यो विलमु
तजाये॥ २१॥ श्रीभगवानोवाच॥ दोहना॥ जानतेहाशानके वलेजीअनिहारततो॥ शिव
लुसभाररणमोहतोस्तनधर्मेजवचमोहि॥ २३॥ सुनतमपजाहशातजाहीजीसुर
देवमरमेचनपरहररनीधर्मेजतेजक्रमेव॥ २४॥ शानचमेजाठोधरोशारनवेधर
रनाहि॥ धानीक्षदरथसजाइंगिरोभमम्रधाइ॥ २६॥ नारजान्न्कारजाधनेमप
रजनिकसानगरथतेमहीतलक्षापरोकेनपुण्यमस्तजान॥ २७॥ चौपई॥ दुहूहाथ
परणमकरायो॥ धर्मपुत्रकौउरदियायो॥ त्याशेपुण्यशानवठुसरे॥ सभजानतजीव
नवलमरे॥ २८॥ शानकामयडेसाच्चितधारत॥ मिरनकोजीवतकीचारत॥ ठेसाभ
पशानकामनधरहौ॥ कृवहीउरशानहृनुकरहौ॥ २९॥ धर्मजकुरसेनापरदो॥
निरवतमठेमनोभवेवोरे॥ कुरसेनाजितिजिनवजुपायो॥ ठेभाजजनशानहतायो॥
१३०॥ पाछेमरको उन्नहितभत॥ जिरेसठोरेपुनउठनहीपावत॥ ठेशस्वपकेपि
रधायो॥ सन्मुखवरोयपुछमचायो॥ १३१॥ इति श्रीमहाभारतेपुराणेसत्यपर्वणि शानवध
ममाप्तम॥ दोहरा॥ शानभानलघुभातजापुनवहूवलीपधान॥ सनमुखहोयोसेन
केशसतरथररसजानम॥ १॥ चौपई॥ कनभानलघुवितिलनजान॥ वचिवकूरतिहि
नामुवधीना॥ भानजोकेमनमाहिविचारो॥ धर्मजठेसन्मुखहंकारो॥ २॥ भयेयुद्धव
कुनाहरनायो॥ ठेसमरतरणभमनमपायो॥ कुरसेनामनजासनजाइं॥ रणभुमतज
भाठेमयछाइं॥ ३॥ पाननपाछेपरोहताये॥ केदेहायतिसनाहनजोठे॥ ठेसीदहर
देनवलभपा॥ सानत्रसोमुरनरोऊनपा॥ ४॥ नि मजीधजा सत्याजारणमेहुत॥ वानपु
हारेतेजअबंहुना॥ उसोदुहूरतानाहधनसानत॥ रथसुरजमारथीस्पाहनत॥ ५॥ होपर

१०२ नदाईकरणमारी॥करनयुद्धन्नाहिधीरतजाही॥शल्यपाधेदुर्योधनसेना॥दिवक्रधीरमु
खकदेनवेना॥१४॥दुर्योधनारिसरणमेजरोरमदोरवेराजौक्रमासतजारे॥हाईवदिवदु
र्योधनक्रावा॥कमलपूर्तजेमेनिगमावा॥७॥रणकेवाजेवदुरवजायो॥दिवधर्मज
रणभूममोक्राया॥दुर्योधनसेयुद्धमचायो॥४॥स्तवमोसोरवदनउगरायो॥कौयोप
दानरणमाहिदघासे॥पुनरवरसरकपाचायेपरा॥कौयेपरहूरसतधर्मेशत्रुहीर॥४
द्रोणपुत्रदिवंदारतकाो॥रूनवर्मोनिजरथचडायो॥शल्यहतेपंडुतसभक्रायो॥
धर्मेजरजपजमीसनिवायो॥१॥क्रनरभानमुखउपमउचारे॥धंनधंनचहूदि
सपुजारे॥कैसीविजेनुमहीनेहोई॥शलसेवलीहनेरणसोई॥११॥तवशलसेना
धीरसाये॥रणभूमसेतजततधनभाजे॥१२॥दुर्योधनसभरेहोक्राजे॥मोरसी
योचितीचनदाजे॥क्रवशवरधीरेवचन्ना॥सनसेनसोकीनवडरचना॥
दुर्योधनोवाच॥चिजस्वामीकेवेरसागरन॥भजेजातहीवहाजांतरस॥१३॥ना
सेकहोतुजरपरकासा॥जक्रपजसुमरेधनरहीनिवासा॥सवासभरोसन्नाहिदि
जपलदसा॥तवेकेउननजोटेसन्मुख॥१४॥दुर्योधनकेवहैसेनमन॥धीरपायउ
पजौनलजीतिसन॥चिजस्वामीकाशोचाधारजीत॥रिसकावनदोरेतावलजन॥दुर्यो
धनभयोतकुकमसवारे॥शल्यसेनानिजसेगजधारे॥सरवारथुसोसातवरधानी
पदलकीवथुजाणनजानी॥१५॥ईसक्रर्जुनसएपुत्रमतीजे॥सरवधोवेरिस
तनभीजेभक्रर्जुनसरविरथेनपराहे॥जाइलवेभूमिसलनतदाहे॥१७॥शत्रुने
साचा॥दुर्योधनपुत्रि॥हेनपसेनइजोथमोरे॥जोक्रर्जुनकेसन्मुखधारे॥तवहोमं
तेजातेजएहोई॥तरोक्रवणपुनधारेसोई॥१८॥सभसेनाकेइचठीधारहि॥जा
इपरक्ररसेनमजोरे॥सनदुर्योधनकेसेनतुलाई॥णकुनमेमानतदकोई॥

हाहाहामृत्युवशंवदु उ चार्थे॥ परे दोरुरणमवमनवारे॥ १९॥ दोहतंग॥ जितिहमवतान्वानीहत्योमहग
योदेहुवतांडः॥ नातरसमभक्तोहतनुके रेकाहि हमशाचसुनाइ॥ २०॥ कृ जुनस्यंगमसुनद्रौपदी
नि नवेसनमुक्त्रसाइ॥ वानपुत्रांरेभृजावलविरघाणकमनजाइ॥ २१॥ चोपई॥ हतनीसेनदु
र्योधनदेवेयजानीररीनक्षमसवशेषे॥ कृष्णउसहस्रवसररपुत्याते॥ गुणस्तुतिनहूमो
पाडोग॥ वृदमममभाडेमयभारे॥ रहीनधीरमहूतिहिवारे॥ २२॥ भीमनिदारधर्मसुतकृष्ण
जे॥ योरहाथभाषतक्षनराडो॥ २३॥ भीमोवाच॥ कृष्णजादीजेडनेरतांऊ॥ पिनहत
केरोवल्मुनीहिलाऊ॥ नपक्षाजादीनीहरघतचितां॥ दोरपरेसुतपवनहतनीहिता॥
२४॥ सदाहाथज्योसिंहगजनवन॥ त्योंदोत्योंसुतपवनमुदतमन॥ दुर्योधनसनभीम
कृष्णमन॥ कोधमयोमुखकहतवचनमन॥ २५॥ दुर्योधनोवाच॥ भीमरूंशलकेहत
होयो॥ कृष्णवनडकलागरवतसेयो॥ जानेदुर्योधनवल्महासो॥ ऊर्णीशलयोधावहुमासो
सेरमधुतिहिप्राणनिकारो॥ हमुरेवचनसाचजीयधारो॥ सुनतापिरेचहूंदसबलस
रे॥ मधुपवनसुतहथतपरे॥ २६॥ सकलप्रहाररुष्णसुकारी॥ सावनधनसमवर
घाकरही॥ गदाप्रहारभीमजववरही॥ केतेमुमसोचरनपरही॥ २७॥ कृष्णजुनोनरघ
एकसाभूतां॥ कृष्णपदूचोरणमुमववुगतां॥ वानवर्षकीनीकृष्णनपारे॥ दुर्योधनजीसे
नोसरहरे॥ २८॥ दुर्योधनोदिघगजदोगयो॥ निजसरनकेवचप्रजदायो॥ दुर्योधनोवा
चा॥ पांडुवसेनाघारहानी॥ हनोधिनककरहोमननमानी॥ ३०॥ जीतेकरेराजस
सरवभोजोमरेस्वडेरसभोजसयोगा॥ जोभाजेकररजानननदेरै॥ प्राणजाहवडमनसो
लेहे॥ ३१॥ जीवनकृष्णमामननतेत्याडो॥ स्वकीजामननामन्नुकृष्णनुराडो॥ करेयद्धरणभम
मजहे॥ भिरहवेकररजीतेमुखसमारे॥ ३२॥ रथकृष्णसवारसात्यसोसरा॥ बलसंयुक्तगा
सुभवरूरा॥ वार कृष्णडोसमरथदुर्योधन॥ परोदोरकृष्णरसेनामिसकनननम॥ ३३॥

१०३

सात्वनामयवननकोराजा॥ परोपंडुसैन्यावद्रुमाजा॥ गजपरचढेउसैनसंगमारी॥ रथ
टुगपुहारचढ्सैनसंहारी॥ ३४॥ जहपरपरेतहांसंहारत॥ धमन्वरूपरणमेदिख
रावत॥ पाडुवकीसभसैनहतांई॥ दिखसातमपदृष्टिोरणझाई॥ ३५॥ गजपुहारगजने
उमराया॥ धरोधरनवद्रुगजेगिराया॥ सात्यकीसदमरवडगपुहारे॥ धर्माजिराखेसा
तकमारे॥ ३६॥ इतिसात्यकधमनदेसकन्यवध॥ दोहरा॥ रूतवर्मादिखसात्यहतसैनस
हतवलकार॥ दोरपरेभुजवलनुस्रधिकतवसातकीदृषरार॥ ३७॥ कृतवर्मावेसन्मुखे
सातकवलमुखधार॥ छनेयुद्धपुसपरकोयेजाकाजतनपार॥ ३८॥ चौपई॥ धष्टद्युम्न
दुर्योधनसन्मुख॥ करतयुद्धरणमाहिभारसख॥ दुर्योधनशरधनुषकराया॥ वान
वलेरणभुमवलपाया॥ ३९॥ धष्टद्युम्नरिसगदापुहारे॥ दुर्योधनपरकीननिवारे॥
दुर्योधननिजगदासपधर॥ धष्टद्युम्नपरदोरपरेवर॥ ४०॥ दुद्रुवेलाघोजदासुहावे
रणमोमन्यहोउसिहरिदिखावे॥ दोउसैनमरकर्णकरहीं॥ लक्षपुनलक्षपुनमजवलेसभ
रही॥ ४१॥ दुर्योधनतहांवलवदुमयो॥ धष्टद्युम्नजेतहिंउठायो॥ देखद्रोपदीसुतसे
पान्चाल॥ परेदोरदुर्योधनकाजे॥ ४२॥ परेयुद्धवडुभांतमयानक॥ सकलीनरवदे
रहेझाचानक॥ रूपान्चालरणमोवलुपायो॥ सवलकीयेद्रुआतादिखायो॥ ४३॥ पांडुसैनसे
नीचरथदोरानी॥ रूपान्चालपरपडुचीजानी॥ रणभुममसारझाधिरुपुधारे॥ रू
पान्चालजनैसन्नीसधारे॥ ४४॥ कुरुसैनावहुभईसिहारन॥ दुर्योनमचोरिदविदारन॥
चित्रसेनवचनकीझासन्नीजिहिमन॥ दोरपरेरिसततनवंश्विनगन॥ ४५॥ झर्जुनभी
ममहदेवसरवर॥ करेतानवधांजिहिरवनधर॥ युधिष्ठरकाचा॥ देसरथातुमचूम
मिरधागो॥ सवदुगहायडकनितीखसभारो॥ ४६॥ परीदोरझारसैनमकोरे॥ परंतरे
कानरमारे॥ धर्मजज्ञानमानदोरेसम॥ खडगचर्मधारेरणमातव॥ ४७॥ चित्र
रथसंग्रामरवलभारी॥ खडगराधदोरेभुतमारी॥ रूपान्चालवेयासन्मुखवनन॥

मंगधारवद्भवल्लीसेनसमम॥४६॥धर्मपुत्रंत्रेगानप्रहारे॥ कृपाचार्यनहीसहेसभारे॥ न्यप
कैसन्मुखन्नाहररहायो॥ ततवर्मापद्भ्योदिषरायो॥४७॥ वद्भुसयुधिष्ठिररहनेचारसर॥
रथक्रमधुजसारथीशिरेधरा॥ अथोपदातलतवर्मसरवर॥ ततस्सयामादिषक्रायो
कौधधरा॥४८॥ स्वपुत्रेरथवरलीयोच्चरायो॥ तेगयोवाररररणेतजायो॥ कृपाचार्यसे
पुत्रदुर्योधन॥ दृष्टैसेगतोहिसेनाधन॥४९॥ सातसहस्रसरररथक्रमसवारोघ
नेयोधहतकौधेवनभारे॥ द्रुपदपुत्रदोऽवलवान॥ कृपाचार्यसोयुद्धमचान॥५०॥
रणवलधरऊरसेनभगाने॥ दुहूआनऔसेवलठाने॥ घनेकाधिकररहेगोघमगा
ये॥ तहमलालओहपुगररदिषाये॥५१॥ अर्जुनभीमसवलवदुपरे॥ दुर्योधनकेव
लपररहे॥ दिषदुर्योधनाच्चिनऊपाये॥ भगीसेनसमसरवलारे॥५२॥ डीतभीमरा
भारतेपुराणेशल्यपर्वणिदुर्योधनवलहरननामसप्तम॥७॥ संजयोवाच॥ दोहरा॥
नृहिसनतऊरसतपठकेकौनकाजसेराम॥ ऊडोऊवहसाँहिवसमेनाहमये
निहिकाम॥१॥ भागतसेनामहदेहदुर्योधनमऊमाहा॥ रिसवधारपाछेमसे
संजवदुसरदिषारा॥२॥ दससहस्रअसवारकौतिनकीयोमंत्रविचार॥ कृपाचा
र्यदिजपुत्रपुनस्ततवर्मावलभार॥३॥ दुर्योधनोवाच॥ तुमअर्जुनकामगुणहि
न्निजभुजवलसेसभार॥ न्नहिहथ्थाडोईतिउतगमेपतेयुद्धऊजतिभार॥४॥ न्चोपई॥
नुमअर्जुनकेसन्मुखहोवो॥ शत्रुनभीमकोरोकरवरोवो॥ तवधर्मजकोरणसं
हारे॥ ओररवद्भयुद्धनिवलकरहारे॥५॥ तवदुर्योधनज्योकरौकीनतव॥ न्चेउयुद्ध
दिनसाजसेनसव॥ वकऊपणगन्नोदुष्प्रमोपरहौ॥ दुजतेनीरउमउवद्भहररहौ॥
६॥ वाजवजाऊनशवदउठावहि॥ चौसाँसमपरवद्भहिलकावहि॥ उलरतिमान
परेभूमभारे॥ सूकरकाकवढ्ढशवदउचारे॥७॥ कृपाचार्यउवाच॥ हेनपऊहिऊप

२४ शशान न जी के ॥ जिरथ धुरे धीर्य महि जी के ॥ जानत है जी केउ रमे सो रहा ॥ नाहि नी मधा
रे रण ते रहा ॥८॥ दुर्योधन उवाच ॥ होद जवर तु हि उ तुम जानत ॥ समु तन सत न सम भु की नर
मान ॥ जो सम जो शशन विचार हि भटो इस हो इ दृही जब धार हि ॥५॥ जो रम
में न न सभीत जावे ॥ जप शर च शर न को उ ठि दिन व सावे ॥ जीते इछा पर
ह मारी ॥ सन्मुख म रे लें रशति भारी ॥६॥ धपाचार्य त र चले जो सेन सन्न ॥ धर्म पु
त्र जावत देखा रन ॥ सात न को मुरक जो मेरी नाम ॥ दारुन हीर सज्जे नपरवीन ॥
॥७॥ भीम वामन ज गके धाये ॥ निज धर्म जसे मद्र सभा ये ॥ धृष्टद्युम्न सिखंडी जा
दा ॥ व ते सर से गव ले जवादा ॥१॥ दोहरा ॥ देउ सेन सन्मुख भई धूर न लागे
ना ॥ व तु ग जन न त छ र के तादार ॥ रण भुम म भई भयान ॥१॥ ३ ॥ पवन पुत्र रत म ले को भुज
व ल दीये भ जाइ ॥ व हु सेन्या ता की ह नीव हम लात पु जाइ ॥४॥ जुन अरी दल
पुत्र पुत्र भये विर काल ॥ दु हू समर हु र व हु से न ह न रण भुम दिसे करा ल ॥५॥
के न स व ल ज जे न प रे भ ये च र त ज स या म ॥ रुप चार्य सात न ले दो उ र हे सम
न संग्राम ॥१६॥ चौपई ॥ दुर्योधन न धर्म ज दो उ भ पा ॥ तु स पर पु द्ध क र त ज्ञा न पा ॥
व राय द्ध दु हू भ प न मा ही ॥ चले इ वि वा न न भ दे व दि षा ही ॥१॥ ज त व उ शा व दु
अ चे उ चा रे ॥ दु हू भ प न की उ प म नि चा रे ॥ ज त धर्म सु त की से न व र ॥ परी स
व ल च हू ओ र पु द्ध क र ॥२॥ दुर्योधन ज र श कु न स र व र ॥ व रे दो र च हु से ना उ प
र ॥ चु नी से न र ण मा र ह ह ता ई ॥१४॥ व नी भा ज ड ई व हु भय पा ई ॥१५॥ धृष्टधुम्न से
चा हे स र दे व तु न र से मा ना ॥ पं च स र ह स्व र प तीन प र त ॥ २ ॥ सम्मुख शकुन
जो हि व लु धा रे च से पु द्ध र ण मा हि व ला रे ॥ अ प मा ना ने च ले जो स र दे व ॥ जो भ
पा न न से न ज से वा ॥ श कु न स र दे व मा र पु ध भा रे ॥ रण भुम मे नाहि जा त वि चा रे ॥

पकड उपमवरनी नहीं जाई॥ बहुयो तेज्ञान बडी दिखाई॥ ७६॥ तब शकुनी नि रवलन रसमाही॥ सहदेव स
वलहे यो रणमाही॥ ४७॥ पहु मद्र कुल सैन मझारी॥ परे दौर वहु ते जन भगमारी॥ त्रेसह हस्त पाय धर
ते कीना॥ दिग्वकुल सैन नरे सुबहुलीना॥ ४८॥ रिसकर धरि पंडु सैन मझारे॥ यममम स जापरे
मयारे॥ सरगदरवडगप्रहार प्रहारे॥ सस्त्र धार मुष्टकर युध धारे॥ ४९॥ मुष्टकला नचपेर प्रहारे॥
धातीसो धातीवल मारे॥ ब्रमपर केहरयुद्ध नत जावे॥ तजे देहि प्रान नानिकसावे॥ ५०॥ स
त्रिकुर नमो हनु की नो॥ दुहु ओर ज्ञानि बहु युधुली नो॥ बरर राइ मन मके पानी॥ शकुन दलयो
सहदेव तजानी॥ ५१॥ दुर्योधन कोसु रवनी दिखायो॥ सो प सैन मो वचपु गरायो॥ शकुनो
वाचा॥ सुनो वीर समसो ब्रगटारो॥ धरो भवरण कहि सोचपुकारो॥ ५२॥ दुर्योधन नहि व
उमुरव भोउमा॥ सवलस्मार बलविध संयोजो॥ रुवर मसो डहि कौ नैपरयो॥ जैयो पलीमि
त्र तउच्चरयो॥ ५३॥ प्राणयार रभरजो रणत्याडो॥ ज्ञानि बहु पापु मोहित चलाडो॥ प्राणदे
हिमोसदनरहारी॥ छिनपलयम केहाथ परा ही॥ ५४॥ सातेनी कतजे रणप्रासना॥ त
जे स्वर्ग भोगे सुखुनाना॥ यो नर स्वामी काजे रुष्णावे॥ जग तसु जस सुरपुर सुरव पावे॥
५५॥ सोरठा॥ शकुनि वचन सम मान जाइ परे सुत दुपद पर॥ भ सपर युद्ध मया नरण
भम कल समयाके॥ ५६॥ दोहरा॥ दुहु सैन के सुर मे हनु ही ये ज्ञान नत॥ नाच तापरत
कबंध बहु मम कत धाइ मरेहत॥ ५७॥ शकुनि सैन घोर रहीं ते भीलीनी घेर॥ चाहत स
म को हनु करे पंडु पुत्रनि हि वेर॥ ५८॥ दुर्योधन सो जोर है सरवली वलवान॥ नि सु सो दो
रपरे रलो युद्धधरे बहु भांत॥ ५९॥ चौपई॥ चकत भये दोउ सुरवलानी॥ उरन सकाके
मन बल भागी॥ शकुनि वाचा॥ है नप नाहि सैना जुर हाने॥ जब लग प्राण रयुद्ध मया
ने॥ ६०॥ रूप सैन दीजे मुहि साथा॥ धर्मज सो जामेलो हाथा॥ जे हनु हो इ ज्ञान सपुरवे
मुहि॥ मनु नि जप्राणत्यागधरे मोहि॥ ६१॥ दुर्योधन वाचा॥ हे सुसो नाहि इहि क्रम लीन
वि जे ज्ञान सधरि पर रीना॥ गज बोर सम सभागर राउ॥ सम के देउ विस्मुन धराउ॥

५१ रू॰अपंउवसैनरहीकसुधोरी॥सेभीघकतरहीरणतोरी॥करवलहतलेवोरणमाही॥छ
वैरेसुउनपुवऊवनपराही॥३५॥सेनाउवाच॥हेनपडीरहिनिरचेजीघधारे॥जेलठपा
णनयुद्धीवसारे॥धनुषवाजनरवउडंपूरेहोरै॥प्राणछासनतजउरणसरे॥३६॥छजैनदिष
वदुर्पतिपुत्रिवोले॥हेजगतारणईशछमोले॥छबदसदिवसयुद्धविवहारे॥कबनरे
वरपरसुचारे॥४०॥हनेजाहसभचितधोवे॥कोरपायुधपलीहारे॥डीहछघदुर्योधनजे
लाडे॥जाछवेसारनभुननहीत्यागे॥४१॥भीष्मद्रोणकर्णसमसरे॥तोरिलपामारेवलयरे॥
पुनदुर्योधनशल्यउवधायो॥जोहिरणमोवलुछधिकदिखायो॥४२॥तेभनेतोहिलपारतलीना
छावधशकुनलरनमतहीना॥छवलोविजैछसमनतजावे॥दुर्योधनमतहीनदि
खावे॥४३॥उवनुमउधेवसीठहोताके॥नहिमानोसभमुखीहिकहिषाके॥भीष्मद्रोणरु
पानेछादा॥कीहहारेछवपायोस्वादा॥४४॥जोमाननतोरेउहोवनघाना॥हतेकेरजीघव
उउनपाना॥४रोरपारनरोवेनतधिना॥मीहवलरतनपरेनमरेविनु॥४५॥श्रीभग
वानोवाच॥हेछमुनदनवउछविती॥वउखमरनहोवेमतहीने॥धनराजूकेरत
रमरही॥रणभुमसन्मुखवउर्गतिधरही॥४६॥वउयोकाङनकहीपरायो॥देसराज
नोहिशापजरायो॥डीरकौहिमोरहमरथुरायो॥दुनुपारनहीपावतजाको॥४७॥जोउ
वधनुषछजैनकरधारे॥करसैन्यामोवानपुररारे॥चपलासमभीहिउरपरावतना॥घ
नेमारधमपवपवावतमा॥४८॥सन्मुखलेरमरथुनाहिपरावे॥प्राणतनकनहिपुद्धतजा
वे॥धरदुर्मसिवहीडर्कहिरा॥सतानीकसतनकुलदुतीहिरा॥जरासिंधपुत्रसहदेवा॥
छोनिवउसररणवलउनमेवा॥करसैन्योकेरणनिवलाई॥कररेभपानयुद्धवलगाई॥
४९॥दुर्योधनसमरलरदुनुतन॥वेधसेनाइपावलकेजोरन॥५०॥दुर्मुखदिपक्रोधउपायो
नारसरेछमचारनाय॥५१॥वद्युमुबहारसारथीमारा॥रथभमनजरपलीनविदारा॥
पुनदुर्योधनकेतनलायो॥निसलेहाडतनधीरतजायो॥५२॥नदुछसमउपोरथभन

ण्यागे॥ ज्ञा को दा उन्न ऊतदूलागे॥ चेसहस्व गजरहे जुशेघ॥ शकुनसंगपुनच्च देऊशे
घायपङ्॥ प्रकृजनदिघधान्नवानपुहारता॥ गजमाते वहुरणमुमसमारता॥ पक्सन्नपुत्रहन
ऊरतपदाता॥ गदासाघवड्गजमदमाता॥ ५४॥ जिहिगजऊरनगदापरहारो॥ भुमसे
मिलतस्वनेऊसवारो॥ ५५॥ तदुस धर्मजसहदेवा॥ नकुलसहतवडेतेनऊमेवा॥ ५६॥
गजदहतऊरतोपरतरणमाहो॥ समुगजदतेनशेघरहाहो॥ दोहरा॥ ऊसुथामातूतव
मेसूनजूपाचार्यवलवाह॥ दुर्योधनदिगजोहिपसो हुउघेरणमाह॥ ५७॥ कीन
पुसघरमेचडनजहाहोइतहाहोइ॥ मोहिजीऊयुधऊरमरेजीवनमखुनहीहोइ॥
५८॥ चौपई॥ इहिकोहिचलेरणयुधकेहिता॥ शकुनपदेदिगमयेहर्षचिता॥ पांडुव
दिघतिहिदिघाखेलागे॥ इहिमखपीतवर्णताजागे॥ ५९॥ सुमतेऊखिऊशकुनतज
धीरा॥ भाषतवचनभारमयपीरा॥ शकुनेवाच॥ प्राणतजहमयुद्धकीयेरण॥ इन
घऊरहेहायपगऊऔमन॥ ६०॥ ऊसस्थामोवाच॥ सोईसूरसोजगऊनुऊरे॥ पु
णतजीजिहियुद्धमझारे॥ तुमकोचाहिउचतयहिवाता॥ जोमरवतेऊरहावघाता॥
६१॥ इहिसोभीमगदाऊरधारे॥ ऊपदुस्चोइनपरवलमारे॥ दुर्योधनभ्रातोहेस
न्मुख॥ ऊौनोपवनपुत्रसोयुधऊख॥ ६२॥ वानेवर्षभीमपरऊरही॥ रणभुमनीरपु
द्धवउधरही॥ भीमवलेऊतेहतली ने॥ वेतेऊतनवेघतकीने॥ ६३॥ ससमोच
मुभ्रातदुर्योधना॥ भ्रातशोकतपउरोज्ञारमना॥ खडगपुहारकीनवलमारे॥ ऊ
मरयुसलसार्यहतडारे॥ ६४॥ चाहतवडगुभीमपरडारे॥ हाघउठायोवलऊत
मारे॥ भीमखडगुताहीवपुहारे॥ सीससीगसोधरनीतलडारे॥ ६५॥ ऊन्य ऊनि समसों
वध॥ दुर्योधनभ्राता॥ दोहरा॥ दुर्योधनऊनिजऊरजोदेघससरमाभ्रात॥ दोर
पड्रेणभुमवलीवर्षासरवरघात॥ ॥ भीमगदाऊहिसन्मुखदेहोइतेऊसंभार॥

वसमहस्वपायकरहनेअमरथगजसमवारा॥२॥चौपई॥हर्षिपरस्परमोसभपंडुसुता॥
षेलेहसेअनेकमुदतदुता॥नमकौउरवानकसमारता॥आवतपकरलेतहरषारतमधु
दुर्योधनदिषिमनकतभारी॥अपुनमरनजान्योदुखकारी॥इसहीभांतकरेवलकारी
कौरवसेनमसकलहतहारी॥४॥शकुनअलोकदोऊवडुसुरे॥सन्मुखभीमभयेवलपर
रे॥वधवानकीनीसनमेहा॥निर्षभीमकोप्योवहदेहा॥५॥दुहूंदेधनषकरदेपरहर
षजान्योउतपाता॥६॥पुत्रशोकुननमाहिरमायो॥तेवनशकुनहाहापुगरायो॥न्यार
नयुद्धभीमसोधारे॥सहदेवभयोसन्मुखविनिहितारे॥७॥शकुनकोपवलगदापुहा
मी॥सहदेवनिरषमनमोकरहारी॥पुनरसवानशकुनपरडारे॥देऊहाथरणम
यकारभयोअभवानीमपंडुपुत्रहिरदेहरषानी॥८॥दीनशकुनअलोकवध॥चौप
ई॥कुलसेनाहिषशोकभराई॥सहदेववलीपरदेरतआई॥तजेनभीमसहदेव
दिषाने॥शकुनरतेरणयुद्धभयाने॥९॥एकादसषूरनकुरुसेना॥निननेरहेचा
रसुदेना॥अवररतेरणमयुधधारे॥उयेसवडसन्मुखडातिभारे॥१०॥रहेचा
रनिननामपुकारे॥दुर्योधनपुनदिनसुतभारो॥रूपाचार्यसतवर्मसहना॥ड
हिचारोरहेशेषसुजाना॥११॥तवमोकृपाचार्यउसमथामा॥डीरतीजोइकदेव
नथामा॥दुर्योधनइकलासहूत्यागा॥शोकपरवद्धरोमनआगा॥१२॥समेकरहतसु
चोभपानाआर्थदिवसनवरदीविशाला॥तासमगदाहाथदुर्योधनना॥निप
सगचेगारहतनभुमरना॥१३॥हसभीताकेउतनिकासे॥सातवकसोहिरदे
वउत्रासे॥चारतमोरथवरेनजाता॥तवआपुगरेव्यासघउगाना॥१४॥सातय

धा

सो मुहि हरि धाको रे॥ परउपकार बास परतीरे॥ ब्यास कहे सा तक मुहि हुँये॥ २१॥ पांडु वा
ते व हुव हुये॥ १२॥ सात धूरन सोइ न मैं जाये॥ २२॥ हेरे ष पुगटे सरब दाये॥ दस सहस
रथ सन ज्ञस वारा॥ पचास सहस ज्ञस बलभारा॥ नव सहस सात मैं उपरा॥ २३॥ हे
षमद माते कुंजर॥ एकु लाष तेए कु सहेसा॥ २४॥ हेषे षयो धि निरदंस॥ १६॥ सात के ते जव
हू मम कतायो॥ दुर्योधन के जिन सर गमायो॥ गदा हाथ ज्ञस पांडु गहे रहो॥ वलत
चितनि राग रथ रहो॥ २५॥ हमतासो ज्ञपुनी सभु गाथा॥ करी सकल सभु प रीज्ञ काथा
दुर्योधन चितातें चितमारे॥ मोहन परिच्चा न्यो तिहि वारे॥ २७॥ कहो करहु ज्ञवतारि हमा
षत॥ ऋधिक शोक चितन मधु न लषावत॥ हम यत नै ज्ञपुना ज्ञापुल षायो॥ परिस्वान्यो
मुहि ज्ञगल गायो॥ सदन कौ न हम रेग रलाडो॥ तव हम करे सचन ज्ञन राडो॥ २८॥ सं
जयो वाचा॥ कहाँ सिर तनु मनन सुना वता॥ कहत मे तनु मश त लषावता॥ ईहत कस
मापहू न्यो ज्ञाई॥ ज्ञवक हो जा हुकहे पुगटाई॥ २१॥ दुर्योधनो वाचा॥ कहन सुनन को
समा ना हि ज्ञब॥ होन हार के राष गाथ सभ॥ चित करेहै जल पर ताल॥ तामो लापरहे
तन काला॥ जल का मे तनी करहम जाले॥ जलत लवै ठे षमन हरी माने॥ लो यो दुर्योध
न जल माही॥ धमत तालमो सरो दिषाही॥ २४॥ संजयोवाच॥ हेरत पत नो हूरत दुर्योध
न॥ जीव न रहो ज्ञव रमारे रण॥ एक युधिष्ठर पांडु वा संगा॥ रहन सरा उन संग ज्ञभंगा॥ र
॥ इन करो नो विनु सकल हरताने॥ पांडु वानके युध्म महाने॥ युधि स्ल धर्म सुनसो उचर
ना॥ मो हि विद दे ज्ञस रजा ने॥ २६॥ धनगहु के जिन कर सिधा रो॥ सको रा रापिनु कीक
रवा यो॥ भयो विदान गविद रमिलायो॥ सकल गाथ कहि ताहि सुनायो॥ २७॥ होर गम
सभ भ्रातनन गाह तन रण दुर्योधन जल लोप॥ सुन सभ गाथ युधिष्ठिर सो कर तोविदर
निर हो कोप॥ २८॥ विदरो वाच॥ सुमम तजा होपि तु निकर मत ईस गाथ सुनाइ॥ सतम

९०

रैसुन ज्ञाइ सर रोग अञ्च धिक जीय पाइ ॥ २५ ॥ चौपई ॥ हम जाना सो अकेहै वन्याई । जीव न रहै
ना हम र जाई ॥ जाघो विदुर धृतराष्ट्र निकट तब ॥ रोवत उठी तब न्याइ जात सब ॥ कुंती धृत
राष्ट्र त्या जी सुधर्म सनेह ई । रोवत सब केले संग तन पावहि ॥ पुरजन नारि हाहा इ पुकार त
चितन उमे स्वामी सम नाव न ॥ २५ ॥ विदुर मगत सत्य सन्ने वन ॥ व्रत हेरि सब लक्ष्मी धीरे न ॥
धृतराष्ट्र व धुधी ऐपाई ॥ संजे मोह धृतस समझाई ॥ २६ ॥ धृतराष्ट्रो वाच ॥ शल्ल शकुन
जवरण रत ने हो ॥ सभ मारे नाहन रहो को ॥ रूपाचार्य रत वर्म सत्य सधामा ॥ अहू के
हाकरत मये व लधामा ॥ २७ ॥ संजयोवाच ॥ दुर्योधन ज्ञवग दाधार कर ॥ रण स्या जो ज
व उधोचित नारा ॥ चिरधतालउभी रलू पायो ॥ तीनो यो जर रहे नरी का हो ॥ २८ ॥ पुनपं
डुसुत घोड़ नप्च रत रहा नो । दुर्योधन नाह र्न्नाडु सा नो ॥ जान्यो वसी होर रह तह हो यो ॥ यानेहि
ग न्च परत ई सो यो ॥ २९ ॥ हृष्ट रसम नाचे जाचहि ॥ यदुपति जी मुख उपमव धावहि ॥ दि
उस नस पाचार्य रत वर्म ॥ तीनो घोजत दि जवरधर्म ॥ ३० ॥ घोजा फिरे अतहू न्नादेखा नो ॥
सजे केम सग मर्यादा मित्र ना नो ॥ संजे सोइ न सभ सुधपाई ॥ तीनो उठे ना सो न करा ही ॥ ३१
अति वडु उन्चे ग वद पुकारे । दुर्योधन दुर्योधन पुकारे ॥ हेन्नपव तिलो पे जल समाही ॥
रम जीवन है नृहि न्निर घारी ॥ ३२ ॥ जल लेन्नि उसो नाहर स्रघाने ॥ न्निजश त्रुन सो युद्ध म
चाये ॥ सुम सम नेच हुभ पव हावत ॥ ईरि ने जग उपरा सत्व हावत ॥ ३३ ॥ नजी विलव जल
ने न्नि उस्या वे ॥ पांडुवा न्न से युद्ध म चाये ॥ कुर मे न्ना भीर हरि स्नाते घाती ॥ रन लेवा रण
क रव न्लु घो ती ॥ ३४ ॥ मर हि मुक त जीते यसु पाये ॥ धर्मन न्नप रन संजे हि सा ये ॥ सुन दुर्यो
धन उन्चे वानी ॥ जल ने तोल उ ठे कुरु भ मा नी ॥ ३५ ॥ तुम जीव न ज्ञानो सभ जीव न ॥ अब न
वार अरव क रो ठो रव त ॥ कुन जय जय पेंडु सुत के रा घा ॥ का नवर राइ धार सुना घा ॥ अब अस
या मो वान्न ॥ धन पुन्नी डेर रे घ र्न्नाह उ रहे ॥ हम लो न्निर धीर जी य धर रहे ॥ नरापरे हम

ती को जाई ॥ सुहि स मन्मुख को रखरा रहाई ॥ ५३ ॥ यो सह हसु पांडु व से होई ॥ सुहि स मन्मुख नाहि स को खरे
ई ॥ धर धीर ज लते नि रस्ता वे ॥ दुर्योधन पलु नहीं विलम्ब लगावे ॥ ५४ ॥ असं जयो वाचा ॥ दोह
रा ॥ दुकुव धकता ताल पर जलु पीवत ण कंत ॥ डीहि संवादु उन सम असुने गाय कहा दिका रकं
त ॥ ५५ ॥ चिंत चिंत वत डीहि स हो धर्म पुत्र सो जाइ ॥ रहै मान हे मोह पर र पत्र रे सुम दाइ ॥
५६ ॥ मो को देवे दर्शव दुदार दरवं उण होइ ॥ जाने ऊ पुने भागव हुव छुदु हरखो सोइ ॥ ५७
चौपई ॥ धर्म ज न चहाँ दिस दृष्टे उन हारे ॥ पदे सर जिहि भुज वल भारे ॥ कादू लै न सी दु लीज
यो ॥ विसमा ने कथु सम ऊन पायो ॥ ५८ ॥ पांडु व मन न वी चार विचारे ॥ दुर्योधन जीवत
चित धारे ॥ जिहि कारने भयो ज गत विनाशा ॥ ते जीवत रह्यो वह उपहासा ॥ ५९ ॥ पुन ऊ
त्रसे ना कर वावै ॥ हम को ज्ञान वद उ ग्रन उपजावै ॥ इही माहि वृहि व छल ज्ञा वा ॥ धर्म ज
को दिठ सी सुनि वावा ॥ ६० ॥ कान भीम रे लाग सुनावै ॥ सुनो वीर नु मरचन न रमावै ॥ व
छ को वाचा ॥ ताल डं भीर मार दुर्योधन ॥ लोप रह्यो हम कहें सत्रु मन ॥ ६१ ॥ ऊस वा ना
का म भसंवादा ॥ व छ कह सो ऊंत ऊर ज्ञा दा ॥ सुन तभीम रह तज्ञानि हो यो ॥ धर्म पुत्र प
हि जाइ ठरो यो ॥ ६२ ॥ भी मो वाच ॥ जिहि नमिल्ल न पचिंता धारो ॥ ता को सुध पाई वीचारो ॥ अ
मरचन सुन सभु हर रखा ने ॥ वीर हम ज्ञा दस भुमच प्रगटा ने ॥ ६३ ॥ दोहरा ॥ व छ कसु स ते
जो सुनी भीमसेन सभ भुगा वा ॥ पुगरान्नी हर हे मरल स्ववण करत हि तस्या वा ॥ ६४ ॥ तव धि
न ज्ञाये ताल पर ऊसु या मानि रथा न ॥ रपा चार्य रत व मर्म सो पुसपर जीन रथान ॥ ६५ ॥ चौ
पई ॥ दुर्योधन जो संगम्र हावत ॥ उच्च त मोहि रल सुधु उपजावत ॥ दुर्योधन ज ल माहि
लुपाना ॥ हम कत दे हि कार्य ग्राना ॥ ६६ ॥ तिन स्वामी का को दिठ गवे ॥ कि हि ऊ ज्ञा डो प्रा
न तजावै ॥ तो ते तीनो भागलु पाने ॥ व कुग्रीव ऊस व्यद्दिखाने ॥ तिन जानि ज रव चन रह
त व्हित वाहु ॥ ऊर शोच ती नो मिल ठाढे ॥ ६७ ॥ धर्म जो वाच ॥ द्वैय दुपति देखो दुर्योधन ॥

५२ जलमेसोपरथेन जभ्रमरन॥मेत्रयेनचकारजलेस्तुपाना॥जानेहेक्रिनहूनदिघाना॥५४॥न
हीजानन तजोच्चदेजकासे॥कदेरथनिहिदंडुपुकासे॥जयेरभांतजायतननकरावे॥सो
भीजीवतनाहिरहावे॥८५॥श्रीजनमेउवाच॥जेमेकपरतुमसोइनकीने॥तुमभीतेसेक
रोबुदीने॥जिहिविधमरेशत्रुनिहिकीजे॥तइनताईकोजाननदीजे॥८६॥योवलकोधस्वे
दिजनरवे॥पवपालसीधोराजरुक्मनरवे॥त्योंहीतुमनिजशत्रुहताजे॥भोजोभोरराजसुख
पावे॥८७॥युधिष्टरोवाच॥हेदुर्योधनकाहेलुपाने॥छिहिनमित्रनमजगतुहताने॥म्प
थकाहिकीनाहिस्सनावता॥निजमममानहिसहूनलथावता॥८८॥ज्योंज्ञाफेरणकी
येसंग्रामा॥तैसेस्नवधारोसँहकानोंनाहि उचततुमकोईहवाना॥लोपरहोजलव
उतपाना॥८९॥जलतलसोपमीनसमाने॥योतेरहुउपहासदिघाने॥सभामाहि
तुमेवरहतनवा॥श्रीरहमपंडुपुत्रसहतसभ॥९०॥हतजोरणमोवलवाहीने
वचजवकिहिहोरपराही॥याहीवलपरतुमगरवावता॥सतेसरसोजेमरजावता॥
९१॥वारहिवचवचकेदेवनाये॥समससमधइछपरेजगमये॥जेकछुवलनिजसोज
लवाहर॥कराषकतहोहवकारर॥९२॥धर्मजतेवचसमनदुर्योधन॥जलतेवोलउ
ठोरिससनमन॥दुर्योधनोवाच॥जलतेतोस्योसचोवचनमहि॥रसरेमननरी
नेकृपामनुहि॥९३॥सोपररणहिनकरेउकाया॥रथसारथमीरसघेविनाया॥थ
कसघरसेरसभुजशा॥छिननिवारभूमलरोसभंगा॥९४॥करवहीजलतेवाहर
रकावे॥देखोकेसवलुदिघरावे॥तुमभीधिननिजभुमेनिवारे॥नालमोहितुरयु
दगिनावोरे॥९५॥युधिष्टरोवाच॥दोहरा॥हमसोई हिमोध्रुममिरेजोतुमसमोपद्दोहा॥जे
तोमिरथवधरभुमेमिरोवेमोइ॥९६॥जलतलवाहरनभूममिरेरजहोमाचपुगटाइ॥
जैसेवचकाइरवेहेतुमसोन्याहिसराइ॥९७॥दुर्योधनउवाच॥छंद॥डोहराजभू

तनसंगा॥ ते नाहि रहे सभं गा॥ मा तु लव ढे गुरभाता॥ सभ रहे नेर णज्ञ तस्याता॥ ३ ॥ ज्ञव
राजु विसे दिघा उ॥ जो हि वच नसा न्चु सना उ॥ तु मरा जभो गा न भोगा॥ सुध रो विध मे
घोहम॥ ४ ॥ सण भ्रात भोंडो राजा॥ हित वेशनि जसंगमसाजा॥ मोको कथन कहे॥ ईरि
सान्चु हिर देल है॥ ५ ॥ तुम हहीं संभारो देस॥ निह शचु हो घ नरेस॥ नाहि रा ज को न है ज्ञा
स॥ कहे सान्चु न कर न्यास॥ ६ ॥ ज्ञ व त पुकरोव न जा इ॥ म ता ध्या लज्ञ संग ल जा इ॥ ध
मै जो वा न्च॥ ईहि सन उच न तु हि भार॥ जो करो मु खे उ चारा॥ ७ ॥ तु मसम न ते व उ भ पा॥ व
लवु धते जज्ञ न प॥ सम क ज्ञ व द न प ई हि भं ता॥ मुख ते न उचरे घाता॥ ८ ॥ नरहीन दीन
जे हा इ॥ व च व रह त जै से सो इ॥ ज्ञ पुदा जु पं डु त धर हि॥ तो भी न धी घिर श हि॥ ९ ॥ ज्ञ पुनी
व उ ई देघ॥ नी के रि दे मो पे घ॥ ज्ञ व दे ते हो नहि हरा जु॥ सभ दे स ज्ञ र सम सा जु॥ १० ॥ तु मरा
के हा उपकार॥ देघ रि देवी चारा॥ ते दि व स को रा सु चे ता॥ ह रच र न भ म न न हीं दे त॥ ११ ॥ रम
पां च मां ग त गा म॥ तु म नाहि दे त ज्ञ का म॥ जो दे त स उपकार॥ रमरि दे रा घत धार॥ १२ ॥
ध त रा श्ट्रे वा च॥ दो ह रा॥ मो हि पु त्र ग र्वे भ यो सु न ध र्म ज के बे न॥ के सो धा रे गा मो न ज स क
हो पुग स सु खदेन॥ १३ ॥ सु ज यो वा च॥ सो र ठा॥ सु न ध र्म ज के वे न तो हि पु त्र जस क ते ले
को धं प र व उ नै न वा र वा र प र मा र व त॥ १४ ॥ दु र्यो ध नो वा च॥ चौ पई॥ है ध र्म ज तु म म
न ही चा रे॥ मी त भ्रा त न हीं र स्यो सु चा रे॥ ग जर घ र सु प दा त न र हा ने॥ चि न ग द शा स्त्रे
न र हो स जा ने॥ १५ ॥ ज स ते नि क स का र प र च उ रू॥ जै नगर सु ब ल र ण मो घ र रू॥ नहि
स जा इ ध न सु न हि वा ना॥ कहू सा न्च स न भ प सु जा ना॥ ध र्म यु द्ध जो मो सो धा रे॥ ज स ते
नि क सा वा वी चा रे॥ तु म सो र ण क र दा ग हि रा षा॥ क रे यु द्ध र ण हम रे सा षा॥ १६ ॥ म हत र ण
गु न व हू सर ज्ञा वे॥ ड र भा न र र ण यु द्ध म चा वे॥ न र र ण मो व लु मो हि नि हा रे॥ प रे ष मी
गु रु मो हि तु मा रे॥ १७ ॥ अ प र सा ध जो नहि ह नु चा रे॥ नहि नि क सो ज स ते सु न पा वो॥

१०५ युधिष्टर बाच्‍॥ धंन धंन न्रप बुद्ध तुमारी॥ जो तुम साची मुखे बा उचारी॥ ८४॥ ताते सपुत्र
रे हम कैसे॥ जो तुम कही धर्म ते हम तैसे॥ एक तात कलेस रण माही॥ दूसर जसु अवर परे को उ
नाही॥ ८५॥ जो तुम जीतो रण जस भारी॥ पूरन होइ जसु जग तन तुमारी॥ पुनले काल सो उप
म तुमारी॥ परे है जग मो जसु प्रति भारी॥ ८६॥ दुर्योधनो बाच्‍॥ हम न पदातन तुम हो जस सवा
र॥ कैसे बन है युध बिहारा॥ हो समान जो सरूप तन जावे॥ कैसो निबल रण छितु रि
सजावे॥ ८७॥ जैसा तुम बहो तिन बही हम कर रही॥ हो पदातन रण भुम युध धर रही॥ पांच भ्रा
तर मझ जो को भाखा॥ ले रे तोहि सो जीत यदि दुरा घो॥ ८८॥ इहि उकार धर्मज जो भाखत॥
दुर्योधन जल तल न सोजत॥ धर्मजो बाच्‍॥ हे दयाल करुणामय स्वामी॥ घट घट
व्यापक अंतरजामी॥ देषो दुर्योधन जल माही॥ कीहो निकसे बच उदर भरा ही॥ ८९
श्रीकृष्ण उबाच्‍॥ हे धर्मज जो तुहि मन कस भावे॥ दुर्योधन जल ते निकसावे॥ कहो
भीम को जल बीनि निकारे॥ एकु नि मध कर दीन चिन्तु धारे॥ ९०॥ दोहरा॥ कहो भीम को
भेमस जहम उतारत॥ दुर्योधन को काढै तो जल ते निकारि दिहि जावत॥ ९१॥ सन चतभीमर
चेत्र चरद हो सभा बचन कहो रमरे कप ते जल ते निकस भई बात जो तिउर॥ ९२॥ चौपई॥ बा
ते से ... पटानी॥ जल ते न ही निकसत जानी॥ जो तुम कही तिन हम मानी॥ पुन
कि उन ही निकसत ... भमानी॥ ९३॥ यो बाहो रहो जल तल लेलो पा॥ तोर समुर मन उप जे
कोपा॥ पर जड़ जल बल जग हिस्याबो॥ तोहि प्राण काहे चन तजावो॥ ९४॥ इहि ओहि निज
भज परभुज मारतो॥ अति तउ कवे प्रावद पुचार ता॥ दुर्योधन बल दिखे हम ारे॥ जो हि
भय ते जल मा हि लुपा रे॥ ९५॥ जो इहि बसु नो कि उजर बावता॥ करा बचन जो तुहि न
सुरा बत॥ दुर्योधन दुष मस हन सकायो॥ जल ते समीप काल तु पुकारायो॥ ९६॥ दुर्योधनो बा
च्‍॥ निर्भीत हम सुत पै न बल ता भी॥ देषो हम रेम ज बल भारी॥ इहि कोह गदा हाथ निकसा यो॥

क्रोधपरीचितारिसज्ञाधिकारिणो॥५३॥ निशम्य सकलं नृपस्य हृष्ट उच्चराज्ञः॥५॥ सद्यस्य धृष्टद्युम्न
पुत्रज्ञाहृी॥ देवोऽयं वचसेषि वज्ञापवता॥ दुर्योधनस्य तस्य दारिसु उपज्ञापवता॥५४॥ दुर्योधन उ
वाच॥ नृमेरेहास ज्ञेयामनपातीनर॥ हमेवमेधिन मोज्ञो वमर॥ ज्ञात्वो नृमसमम कोऽहं
करं रहो॥ हासैठाररदुर्नेपुत्ररररहो॥५५॥ डोहं कृहिगदाहा यथमरूपा॥ ज्ञातो ये दोरागे हि ह
धर्मज्ञभूपा॥ पंडुपुत्रादिषमरस्व उच्चरतान्ना॥५६॥ श्रीधर्मपुत्रे दिव्यागमरासना॥५७॥ धर्मज्ञोसा
चा॥ शस्त्रुऋस्त्रुयुधवेजोचाहो॥ लेदूर्इहाते शंकृतज्ञावो॥ कररज्ञाज्ञाद्दुर्योधनकृतोऽस॥श
स्त्रुकृ॥ शस्त्रुरोषसलगाडो॥५९॥ स्वर्णमाज्ञंसंज्ञोडमहावर॥ दुर्योधनधाशीनिज्ञतन
परा॥ परस्संज्ञोडमरवते उच्चरतान्ना॥ मनहोरमरे वचनस्मज्ञाना॥६०॥ दुर्योधनोवा
चा॥ वज्रकृतस्मरेसंगस्मरे॥ युधिष्ठिरस्ते हरे सावलपरे॥ जेनुमडकडेदेसमभ्राता॥ मोर
हृतोधिनमोसतवाता॥६१॥ युधिष्ठिरोवाच॥ ऋववज्रयोऽवचनस्मज्ञातो॥ सवरीच्चार
कीयोनलघावे॥ घरमहारथीएवडेहोये॥ ऋभमनवालक्षवेरथोसोये॥६२॥ देषवा
लमनदयानधाशी॥ हस्तीनोनृमवज्ञऋनवारी॥ दुर्योधनमृखमोन्नरहायो॥ कृष्णन
उच्चारतवचनारिसायो॥६३॥ धर्मज्ञोवाचा॥ रेश्रीरहमजतस्मृखदायक॥ कृषराग
त्रिभुवनकेनायक॥ दुर्योधनसोरहमयुधधारे॥ गदासमभारोकेज्ञाधारे॥६४॥ श्रीरहम
उवाच॥ गदायुद्धनृमेतनहीकोई॥ ऋरेभीमसोनरहैसोई॥ नृमसमर्थनहीयोनपुत्ररहन
पारनसोपारन ह्रेरेधिन॥६५॥ नवभीमउपमसभहनउच्चरायो॥६६॥ श्रीरहमसादृभा
शहिनुठानी॥ भीमवरलसातककरलायो॥ पुनतेकेहाथन्हमउच्चरायो॥६७॥ मातनके
वाचा॥ धननृहिमातपिताजिहिजायो॥ पुत्रपुतापतेज्ञज्ञपायो॥ मन्ननिजउपम
भीमरहवतज्ञानि॥ धर्मज्ञकेगहेचरनविमलमता॥६८॥ श्रीरहमचरनपरसीमनिज
योमेकृशिघचलयोयुधचायो॥६९॥ देहरा॥ गदाहाथलरहतचलतदुर्योधननिर
हा॥ वादिनकेऋवसेहुपललकेहासाचुपुत्रगरान॥७०॥ जिहिदिनलाभामदरमोऋ

११

डिनदई उग्रगदाइ॥ विषुदीनीबोरे जलहि दूतपुंचकराइ॥११०॥ तयोदसवर्ष मोहि हार
वनमैमदीनोचदुभानि॥ तामेफलजेदे हूतुहूतो उपजे मनशांत॥१११॥ दुर्योधनोवा
च॥ चौपई॥ सरेमुखतेनाहि उचारे॥ भजबलुरणमोप्रगटदिषारे॥ जिह्वाबंधमजा
मकताबो॥ जोकरमाकोतेउदिषावो॥११४॥ दोऊवीरमनकोमाधिकोरसाने॥ चारहत
केयुद्धमयमाने॥ इहिमोहलधरहमभातवर॥ तीर्थयात्राकरआवोघर॥११५॥ कृष्ण
प्रगटेरणमनमजोरे॥ भीमहमकछादिसभूदिषदरषारे॥ हलधरचेरनेवमलउठ
लागे॥ धर्मजादिपांडुकेसन्नुरागे॥११६॥ धर्मजोवाच॥ वलभद्रप्रति॥ नीकसमनेतुम
आगमकीने॥ निरषोदुहूवेयुद्धप्रवीने॥ दोउसिषतुमरेयुधधारे॥ निजबलप्रस
परप्रीछितिचारे॥११७॥ भीमदुर्योधनदोउपनकआये॥ हलधरकेचरनोलपटाये॥ हम
भातकीआज्ञालीने॥ सवधानयुद्धदेतप्रवीने॥११८॥ इकुइकुगदादुहूपरहारी॥ ली
नबुलाइहलधरततकारी॥ हलधरोवाच॥ दोहरा॥ ज्ञान तेहोतुमदुहू तेरवमेरेरण
माह॥ चलोजाइकुरुषेत्रमोकरेहोयुद्धमहाह॥११९॥ मेरेसरकुरुषेत्रमोसरप्रगटावेगा
सुमस्तनकछेकुरुषेत्रतवहलधरवचनप्रकाश॥१२०॥ चौपई॥ भीमदुर्योधनगदा
संभारे॥ प्रसपरधारेयुद्धमचारे॥ रणवाजेतवबजेनदाई॥ चमेदेवकोतकनिरषाई॥
१२१॥ दुहुमभवदभेरभमकारहि॥ तुमेघोनकछाधिकप्रकारहि॥ गनेचजातिहिकमाने
कवाजेतवमवाजेरणभूमवउठधुनसोसम॥१२२॥ भीमसंजोइकप्रबलनखाधी॥ तेसे
दुर्योधनबलकाधी॥ निजनिजगदाप्रीषदेऊकरही॥ मिरपरपेरनमउरप्रहरही॥
१२३॥ हेतजेपुपुनोगरतसभारहि॥ कहनेकप्रकारगदापरहारहि॥ गारजेकानेव
उपावदुउढावहि॥ इसीभातिनिजबलुदिषावहि॥१२४॥ दोहरा॥ प्रसपरबलुकरही॥
घनज्यौंगाजेगाजेरणपरही॥ गदाप्रहारप्रसपरकीना॥ केऊउठीभूनकउभयलीना॥१२
॥ कोनकेगड्ढीनभमारे लीने॥ रजउडुभानलोपुकरीने॥ वनकेजीवभउठेवकन्याठे॥ जा

तेपुत्रलेकालदिन जाऊं॥१३१॥ तैचमरदसमुवैठरहेनरा॥देठनमाऊंजनविभा॥तैउर॥भीम
सैनधमैजनवधक्राधी॥हाथजोरमरवभाषमनाथो॥१३२॥भीमेतोवाचा॥धहिउतपातया
हतेजानो॥दुर्योधनकाकालुपधानो॥जोतुमसमसधारेवनमाही॥जारकोदलकव
सरवउपजाही॥जेतेकपरहमसोइनसैना॥मननमोधारोमवलपुत्रसेना॥१३३॥दोह
रा॥जगदोषीकाषधरजोरहयुधरेसभजोधा॥हिसहैदोरसनमरवमधोदोऊंमैरवनही
धा॥१३४॥गदापृहारतभीमजोदुर्योधनलैलजाइ॥कुदतवेठरचावहीवपलातेजुदिषाइ
१३५॥दुर्योधनजोपरहरेभीमवचावततासहि॥अर्धजामलजाइहीविधमयोधपुनिरवाह
१३६॥चौपई॥सभुनिरवतहिरयुद्धविवहारा॥दुर्योधनमुखवचपुगारा॥दुर्योध
नोवचा॥भीमहमभ्रातसर्वेगुनघरना॥सेनसहाइजसंतेचरना॥१३७॥देषोके
ऊकपरनहिधारे॥एकाएकुलरेपुलपारे॥ताते भीयदुपतजारजुनाहलधरनकु
लसहदेवससेरन॥१३८॥सातरधरुदुहुभिषेडी॥जनवरयुद्धजातावरवेडी॥सभु
वेठेहलधरचौके॥हलधरमधमालजोमेरे॥१३९॥दुर्योधनजारभीममहावर॥
पुसपधरवरेगदाकेपरहर॥दुर्योधनजैसावलुकेना॥सभदिषमयेचिंतचितसी
ना॥१४०॥पवनपुत्रभीवहूवलुजरहो॥दुर्योधनजपुजाघिजसमरसी॥भीमवली
दिषजदासभा॥रामकूददुर्योधनकीनचिताली॥१४१॥लदातधनेवरहरजपानी॥दुर
योधनदेठजासुजीवमानी॥वहुरभीमवलगदापुहारे॥दुर्योधनचाहसधररेडो
रे॥१४२॥निहसधानिरषभीमुतनजारको॥वाज्ञादरजाइसमरसो॥दुर्योधनजव
पुनसवधाना॥देरषोभीमधारवलजाना॥१४३॥वहुरगदादुर्योधनकेतना॥जीन
पुजारसतधोनवेसेरन॥भमतेवेडोजरगदाचितवारे॥पुनःभीमरसमिरसोमारे॥१४
॥दुर्योधनजेवधसमलमो॥लदाऊर्धमुखपरेधरतलमो॥दिषसभहर्षदासपुत
राने॥दुर्योधनमितनेपरजाने॥१४५॥नरषिनउठतभीमपरहोरे॥गदाहाथम

१११ नुमनुमनतेवोरो॥ भीमसेनजेतेगदासंभ्रमाई॥कूदगयोलागतननहिपाई॥१४६॥भीमोवाच
दोहा॥ वलुनुहिजिहिपरगारवोवो॥ जोकधकेजोरनुकरदिघरोवो॥बहुरभीमकीभुजासल
हिम॥गदाप्रहारसेदुर्योधनोंसिम॥१४७॥अंकपतेवेठगयोधरमाही॥पुनवलगदाप्रहार
करतही॥भीमसेनकौंखतीलागी॥दुहूकरभारभीमभुमपागी॥१४८॥उठेभीमनसिम
गदाप्रहारे॥दुहूकरभारकरभुमपरडारे॥दुहूंकेवलेमनकेपावै॥धनाछिनजोवडु
त्रासदिखावे॥१४९॥मंनेजोदुहूनजेहुकहुवेहोथे॥जिरगिरपरेधनंतनसोथे॥देख
नहारसकलविस्माने॥दुहूकेवलधनधनप्रगटाने॥१५०॥उदाशवदनमदेवसुना
वे॥सोभीमुखधनधनप्रगटावे॥पुण्यवर्षदुहूउपरकरही॥सुरनरगणजयकारउ
चरही॥१५१॥दुहूकीदेहितेरकतवहीरन॥नपसिघरधरचलयोसकलेतन॥लखे
नपरतदुहूतेजोरहू॥कोनभीमदुर्योधनकोहे॥१५२॥अर्जुनामसेलसमयधुनीने॥
धकनमयदेउयुद्धप्रवीने॥उदाधाउदुहयुद्धचितवारेस॥निजनिजमसतेरुधर
उसारे॥१५३॥सवेलोकनिर्घनतविसमाने॥दुहूवीरकेयुद्धमहाने॥युधिष्ठिरवाच
देखिरहमनकाटनहारे॥रमसेवहसावप्रगटारे॥१५४॥इनदोनो॰ मेकोव
लवान॥कोनसवलकोनेवलहान॥जीतेकोनकोनरणहारे॥वदेउगरमोहिक
र॥१५५॥श्रीभगवानोवाच॥उदायुद्धसतिचतुराई॥मोरिमदुर्योधनसंमप
वनपुत्रनाहिं॥वलभारमलअपारमाही॥भीमतुल्यदुर्योधननाहीं॥१५६॥दुर्यो
धनक्रीतवलींदिखावे॥भीमसेनकोरणनिवलावे॥तवहीजीतपोनसुतधोरे॥
एकुकामजोमनमेआरे॥१५७॥अर्जुनोवाच॥कोनसरजीतजिहिहोई॥तजोसवपु
ऊतमोइ॥१५८॥श्रीभगवानोवाच॥दोहरा॥ ज्ञातिवधकीजदतमोदुपदसुताहूदु
रारा॥तवदुर्योधनजंघामुखकथमवचनप्रगटार॥१५९॥अर्जुनोवाचरमेरेउरपरसे
कहेतमसुखमोउ॥कहनभीमनप्रगटायोजांकोरिरिवदुष्टोका॥१६०॥उदासाथच

रनकरो तुहि दूसर रण माहि ॥ कस कसा पदु चो तेसमा जो तेरे व लवाहि ॥१६१॥ चौपई ॥ त्यागे गद
ऊरू पर हारे ॥ चूर न करे हिल्यु न हीं धारे ॥ जीते भीम शत्रु हत होई ॥ याविन अवर उपाव न
कोई ॥१६२॥ जगत सुर जोइ कुड स्नु होई ॥ याविनु और उपाव न कोई ॥ दुर्योधन सो लरे
सोई ॥ तेसी दुर्योधन न जितावै ॥ तब उसतारहि रो दिखावै ॥१६३॥ धर्मपुत्र के ऐसे वचन
कीना ॥ तासो इकु इकु लरे प्रवीना ॥ धर्म जब वचन मोरन हीं साचे ॥ ताते भीम मन चइ रे
ताके ॥१६४॥ तेरोरह वर्ष तुम सम भइ सकाजे ॥ दुर्योधन युध गदा सिखाने ॥ ऊरू भंग वि
न रहतु न हि होई ॥ कोर उपाव करे जे कोई ॥१६५॥ सुनत अर्जुन हि दृग भीम उचारा ॥
करी से न अस करो सर वर ॥ सुपुन उ ऊपर निज कर मारी ॥ ऐसे न अर्जुन हि तक
भीमा ॥१६६॥ निर्भ भीम गदि माहि व साचे ॥ दोरपरो रण मो व लु पाये ॥ कव दूवा मरु व
दारुन अंग ॥ अब उपाय पि रे अंग ॥१६७॥ दुर्योधन पर पर तन हाया ॥ अति व
चिन्न बल दूद तहाया ॥ दुर्योधन भुज बल गद मारी ॥ भुजन सल भीम मनि रघारी ॥१६८
॥ दुर्योधन के सी सपोन सत ॥ गदा प्रहार कीन सम बल सत ॥ दुर्योधन दिष की
नी निवारी ॥ पवन बल गदा कीन परहारी ॥१६९॥ सुध तज भीम मरण भुम मरु छीना ॥
दुर्योधन दिष भिरत अज्ञाना ॥ सं जयो वाच ॥ एक गदा जो कौ रव प्रहारत ॥ पवन पुत्र
के प्रान निकारत ॥१७०॥ दोहरा ॥ हर्ष दुर्योधन गदा निज की नस जा प्रहार ॥ वक्र
शत दुउ चर तम यो रत्यो पवन सुत मार ॥१७१॥ दुर्योधनो वाच ॥ सच जीर हजा नो
सो लरे रोह मरे सन्मुख होइ ॥ उठो विलम्ब न हि कीजीये भार परा कम जो इ ॥१७२॥ चौपई
दुर्योधन वच न भीम के कान ॥ सहन सके यो हो यो सवधान ॥ धर्मादि सुन सभाके
ता ने ॥ अर्जुन जी यष्ठ ह उप जाने ॥१७३॥ भीम गदा गहि पुन उकसाये ॥ दुर्योधन
के दश दिखाये ॥ दुर्योधन जब भीम न निहारो ॥ मंद हास मुख वचन उचारो ॥१७४
कोर दृगु दिखायो ॥ दुर्योधन

१०६ अवतैलो जीवतत्र वह्यो वलागी ॥ द्दम जान्यो भई मृत्नि तिहारी ॥ इंडि सको हि गदा वले पर हारी ॥ ८ तत
छिन भीमनि जंघ आर पर डारी ॥ ९७ ॥ दुहूं गदा मिल झनि झनि कारी ॥ झति तेजी ति झति तेज
भयारी ॥ दुर्योधन कूदत उपराही ॥ भीम सौमसतें ऊंचा जाही ॥ ९८ ॥ छिन दाहन छिन वा
म सु हावत ॥ चाहत गदवल भीम हतावत ॥ अर्जुन भीम सैन चित धारे ॥ दुर्योधन के उ
रु निहारे ॥ ९९ ॥ जव कूद्यो दुर्योधन भारी ॥ भीम गदावल उरु प्रहारी ॥ लगी ऊरु स्यों स
भ चूरन कीने ॥ भूमतल पर तरफे ज्यों मीने ॥ १०० ॥ दुर्योधन देहि हिं सेसे कंपत ॥ मन
पारद थरथर थरदंपत ॥ हाहाकार नभ ते उगराना ॥ दुंदुभ शंख वजे भय माना ॥ १०१ ॥
सभ वाजे वडे धुन घुरराने ॥ विनाव जाये शवद उडाने ॥ दिन भो उडुगन भये प्रकाशा ॥
टूट टूट भूम परत अकाशा ॥ १०२ ॥ खग मृग बोल उठे भय कारे ॥ चीले भूमत अकाश म
झारे ॥ सुरसभ निज निज धाम सिधाने ॥ तरवर कंत वृंद घन भम न पराने ॥ १०३ ॥ दर्ये
भीम कूदत दोरावता ॥ गदा अकाश ओर हरावता ॥ मतमतंग ज्यों रण कोउ पेलता ॥ दो
रजी पर तड तड़ि उते पेलता ॥ १०४ ॥ सोरठा ॥ दुर्योधन के माथ पवन पुत्र वल पग धरो ॥
मुख उच्चरात वत माथ अपन कर्म फल ले टुत्त नल ॥ १०५ ॥ चौपई ॥ अधर्म अधर्म कर्म
तुम कीने ॥ तिन के फल अब के दुपु चीने ॥ हम निज धर्म माहं जु रहाने ॥ ता के फल उ
भनिज पराने ॥ १०६ ॥ तुम द्रोपदी को दीये भार अमन ॥ या के और न कछु हो भार अमन ॥ उ
मो स्वकी नीन रज सिधारे ॥ ते दुख निज अव मन तें टारे ॥ १०७ ॥ इहि कहि पौन पुत्र
वलभारे ॥ दुर्योधन सिर लात प्रहारे ॥ धर्मपुत्र दिय नीरज नमानी ॥ तन छिन भीमनि
करि क्रम मानी ॥ १०८ ॥ द्रुड चोप ट भीम मुख मारे ॥ मुखे ते धिगु धिगु कहत पुकारे ॥ यु
धिष्टरे च भ्या ॥ कौन धर्म वल जान तुम कीना ॥ हिंद्र पजस जग वर्दे पु चीना ॥ १०९ ॥ न
कद स पुरुन को भ पा ॥ म्हिं हिम्भा नाजिरि ते जुक्र न पा ॥ पुभ माहि रण टो डस हों चा ॥ नामे

मनिमे नही सो वे॥ सकल जगत महि रूप जस भाषे॥ वुले काले लो निंदा राषे॥ १८८॥ दोहरा॥
इह प्रकार नृप धर्म सुत तव चव हूं कीन उचार॥ अवन करना रसुत पीन के दीनी मुख पुग टार
१८९॥ अर्जुन को वचन षोद रूर करता को भजन न लगाइ॥ निज जग चो दुर्योधन निकट दिगंमे
नी रहु राइ॥ १९०॥ छंद॥ नृप हाथ हाथ गहाइ॥ भूमि तस द्विजाहि पराइ॥ मुख कहत मृ
प उचार॥ हे भ्रात तनु मव लभार॥ १९१॥ हम तोहि जान न भूप॥ हत सेव करत अनूप॥
नृप कीन हम सो द्रोह॥ वन वन भ्रमाये मोह॥ १९२॥ वांछत नृपाभिसेव॥ हित सो करे
ज्ञान भेव॥ पंच ग्राम याचन कीन॥ नृप मनाहि दीन प्रवीन॥ १९३॥ नृप मम मोहि को निरहा
ना॥ चितन माहि अधिक रिसात॥ चाहत हमारे प्रान॥ जिहि विधि हिरतो अरजान॥ १९४॥
नव हम अव षप दिषाइ॥ तुम सो कीये युध चाइ॥ युध समे दुख हमार॥ नृप करो करुणा धा
रा॥ १९५॥ को उदास हम मेरे नाहि॥ नृप मेरे बु निज जीय माहि॥ अव वैसो निहारो भार॥ नृप हि करो मे
व अपार॥ १९६॥ सुत पीन के विधि कार॥ जिहि कीन कर्म विचार॥ कहा वेरि देश सकरे॥ सुत
पीन को हत नृप धरे॥ १९७॥ नृप छिन छिन चित निर्दरे॥ वड धीर हिरदे धरे॥ फल नृप कर्म नृप का मन धरे
विरथ नवव हूप रो॥ सुर रैसा कभो जो भोग॥ वडु सुर भोग न जोग॥ १९८॥ नृप धर्म निज
निरवाहि मन उच ले ज जु करमाहि॥ मुहि भार कम पुगटान॥ होर हैं चितन चितता न भा॥ १९९॥
नुरिप तजे जोन रनारा॥ मुहि धरे रूप जस भार॥ यो विध अनेक वषान॥ सुत धर्म कीन
पिकान्ना॥ २००॥ अवै चो लहुन अजामि न रूपार॥ सुत धर्म धर्म अवतार॥ इहि भीम करम निहा
रा॥ तव उ कथो हल धर भार॥ २०१॥ वहु कोप उचरत वैन॥ सुत पहु भुम सरव देन॥ इहि करम
नीच नृ कीन॥ इहि भार रूप जस लीन॥ २०२॥ दोहरा॥ वलभद्र उवाच॥ गदा युध करटके त
लेन नाहि पर हार प्रमाम॥ नृप धाव लो याहि कपट रण दुर्योधन करहान॥ २०३॥ ताते नृप सम भ
को रतो कप सीमन चीचार॥ इहि रहि हल निज भमु उको कोधव हुधार॥ २०४॥ कोपई

११३ हलधर उ को रा थ रहलु धारे॥ पांडु वान सों युद्ध बिचारे॥ पांडव दिष भा उभय भीता॥ पाछे हल
धर को पर तचीता॥ ९५॥ श्री हरि मन जान्यो मन माही॥ ईहि सम को हत है बल वाही॥ दोर भा
त को जंग लग जाये॥ धूरन्न सा कृत अस बलु लाये॥ ९६॥ हलधर स्वेतस्या न यन स्याम॥
चेदन अगर मिला पीदधा न॥ हलधर मजब लुदस सहस्र गज॥ धूरन्न मद्यो रद्या
सम भव लु समज॥ ९७॥ श्री भगवानो वाच॥ पंडु पुत्र हन रे बहु जानो॥ धर्म पुत्र दिढ धर्म प
छानो॥ इन नही कपर कीया सुन लीजे॥ पाछे चित बिचार सो कीजे॥ ९८॥ दुर्योधन
करे कपर अपारे॥ इन सों सर्व सु लीनो हारे॥ द्रुपद सुता देवी को रूपा॥ तिहि भ्रम दीनो
भार अनूपा॥ ९९॥ पुनक केशा गहि अनूप रस्त्रायो॥ वे द्रुपद सुता सुरव पायो॥ सहनस
कोसु नव बचन भीम इहि॥ त्रुण की चार कीनो सम महि तिहि॥ १००॥ जो अनुई हि चरन
कर हूँ॥ तब बल गम हा रिदेना हि धर हूं॥ ते पुण्य अब इहि पर रन कीना॥ तुम ही न्याउ करो
पर बीना॥ १०१॥ कपर रूप कोर बइन मोरे॥ अब इन को नुमकार त संहारे॥ म हीरा जन कहु
को न सभा रे॥ निज अरि दिमो देषो बीचारे॥ १०२॥ धर्म पुत्र जानी सुख सेपा॥ सत वादी स
त शील अनूपा॥ अैसु धर्मात्मा को मारे॥ कैसे राज दे वो बल भारे॥ जग अपयस कृ ब
गन बहु अगाडे॥ ता ते ठिमा करो बहु भारे॥ १०३॥ हलधरो वाच॥ हेजगपत सत बचन
नु मारे॥ ऐभा छो ते उ सम को मारे॥ ह मोनि रछे इहि वपर कराई॥ मो हि सि छ इन रहत
को दिषाई॥ १०४॥ भीम सार दुर्योधन धामा॥ रहत लाष सेवा सम कामा॥ ता सेकपध म
काम इन कीना॥ ता रे क अस्र सीस पग दीना॥ १०५॥ श्री भगवानो वाच॥ इन को दो स ना
हि इहि माही॥ शिष्य ते बचन न म्रे रदा ही॥ मे ते शिष इन दीन सरापा॥ धामो जा हि भी
मके पापा॥ १०६॥ जिहि सम पांडु व बन म रकावता॥ मे ते शिष दिष भ्रम उपजावता॥ स
को पाउ न कीसु न पाई॥ अपो दुर्योधन निव राई॥ १०७॥ तपसी ध्यान एव द्रु ते जा॥

दुर्योधनसोंकहतक्रममेजा॥ रिषिउवाच॥ पांडवसमभक्तासीसुखदाइक॥ तोरभ्रातकुलतेतोर
सहाइक॥२१७॥ तुमउनकोदेवउभ्रमदीजे॥ पुत्रजौंहत्यावोहोइत्रधीजे॥ उनकेदे
सउनोकोदीजे॥ हममेरेवचनमानजीयलीजे॥२१८॥ तुहिक्रोधज्ञामोरहेज्ञानी॥ उन
सोरोसतनउचतविनानी॥ दुर्योधनरिषिवचनसुनाई॥ कह्योनउत्तसुननमोनरह
ई॥२२०॥ बहुप्रकाररिषिवचनउचारे॥ नपसिरन्याइस्योनिहिहारे॥ रिषिक्रोउरादुष
नींहधारी॥ कह्योकोपरिषितेजुक्रपारी॥२२१॥ रिषिउवाच॥ मोहिवचनकाउत्तनदेवो॥
सीसनिवाइरहेसुनलेवो॥ इहितुहिसीसमीनपतसाषा॥ मरहुनुमरेरणसंचजाषा
॥२२२॥ दोहरा॥ देसरापुरिषिउठगयेयावेवाकप्रमोर॥ दोससनाहसुतपवनकासुनह
लधरबलघोर॥२२३॥ मुलमदेवोवाच॥ देयदुपतनुमकहतहो पंडुसुतधर्मसरूप॥ दुर्योध
नममसन्मुखेकीयेमनवरपरक्रमरूप॥२२४॥ चौपई॥ जोकपटीसतधर्मसरूपे॥ धर्म
सकहोसपरक्रमरूपे॥ तुमरीगतवरणीनहीजाई॥ उलटीरीतमनमाहिवसाई॥२२५
भीमगवानोवाच॥ भीमक्रपुन्यपुण्यपालनमेंहित॥ कीयेयुद्धनरिकहोरोसईति॥ तुम
क्रसक्रोधुनरववदकीना॥ तुहिक्रबकहाभयोपरवीना॥२२६॥ होनहारनहिमिटेवदा
हो॥ तजरहठधीरधरोमननमाही॥ जानक्रवशहलधरबलकारी॥ कछुक्रोधमन
कीनानिवारी॥२२७॥ मुखउचारसचदीयेसरापा॥ कीरहनभ्रातवउनेजक्रमापा॥ हल
धरोवाच॥ पंडुसुतननरकजाहरूपदारे॥ दुर्योधनसरपुतसुखभारे॥२२८॥ इहिकहिकु
पनचडेहलधरखा॥ ततोधनइस्योहारसाकोपघा॥ पंडुसुतनिर्भरहनकेचरनन
परेसकलमयक्राधिवधारमनन॥२२९॥ मुखउचरंतयुगलकरजोरे॥ हेदयालतुमरखकरि
मोरे॥ हलधरसेतुमहीमुकतावे॥ जिहिनेधरनरुटनदिखावे॥२३०॥ दोहरा॥ जानेन
वतनयनमुरावधरेहलधरहाथ॥ हमकोकछुनहिषहमसवेतुमरीशरणमाथ

२३१॥ पुन धर्म जु चरन लगाभी मषि माथे पाव॥ इहि मंत्र लाल हरर दाज हिय हि लागे
से ताप॥ २३२॥ चौपई॥ पुनि सभ दुर्योधन निकराने॥ वेदे दु गते नीर हुराने॥ दुर्यो
धन फ्रीर हम उरनि हारे॥ सर्व ते सहत वचन ति हवारे॥ २३३॥ दुर्योधन वाच॥
हे फ्रीर हम सभ अपद तुमारे॥ पं उस तो जो कीन न्यारे॥ व चम मिर खंड आगे धारे॥
अर्जुन लोपत बान प्रहारे॥ २३४॥ भीष्म प्रिय छकी यो रण घाता॥ कहो या ते वड्डा श्या
उतपाता॥ पुन गुर विप्र त्रि द्रुगुर रन॥ द्रोणाचार्य अरद लच उरन॥ २३५॥ कपरधा
रतासो उचराने॥ अस थामा रण माह हताने॥ पुत्र शोकि दृजा मिरत होयो॥ तव तुम
हतली नो रणासो यो॥ २३६॥ अव तुर कर्ण रण वली विचारे॥ तासो कपर कीये अनि भोरे॥
शिष स्राप तेर खुग स यो भमा॥ हत भ जव लह तली नो तुम॥ २३७॥ कर्ण से न तुम प
वन पुत्र सो॥ मृगह उस चरन कीये रन मो॥ हिस भ पाप तो हय दुराई॥ पं उस तो तेरण
प्रगराई॥ २३८॥ हम पर नीते जो तुम धारे॥ जो तुम भी पावो अनि भोरे॥ २३९॥ श्री
र घ्नो वाच॥ हमु रे जोग न नीक सभ र है॥ पन पापु तुम रिदे न धर है॥ पं उपु त्र भ्र
भ गत तुमारे॥ तिन सो कपर कीये अनपारे॥ २४०॥ प्रथम भीम को तुम विषु दीने॥
पुन जल वोर यो स्नेह पुत्र कीने॥ वहुर मात सम पोच भ्राता॥ लाषा मंदर पठे कपटा
ता॥ २४१॥ निहित का री रथ हरि कातु॥ याही द्रुपद सुता सर द्रव हे॥ पुन रचर अपद हतमो जाते
सर्व सह र की वेद दुर नीते॥ २४२॥ पांडवि तनात सर्व सुरव आगे॥ तुम जाग ल कैत सभा मराठी
अप्रुतनि तिन ते नर हस्त कर॥ निरख तनुम न हरी की न वरेक॥ २४३॥ द्रुपद जाकी ने जग न
गेहा॥ चरजे तोहि सभ नम हस्तु नाचे॥ हरि न हरत जो तोहि सरहाये॥ ताकी मुक तजा हिवि
अपाये॥ २४४॥ पुन वसी वरे रहम तनु मकेहरा॥ जो अस्को सभ वचन सरने हरा॥ पांच गांउ पां
चो के दीजे॥ अपु न्यो के अपुनी करलीजे॥ २४५॥ उदर पर ये हो ते पं उस्तुन॥ वरे से वचनम

सोहितचितयुत॥कहांकिसकोतुमनहींमान्यो॥द्रपाग्रासकथ्युरिदेनद्धान्यो॥२४६॥तुमम
नोइदुसनतपंडुहरतावो॥हतेबिनाचाहनहरखोवो॥ऊभमनचुचालपुत्रलसमतोह॥कपर
धारहतयोरलरोह॥२४७॥महारथीसटइकटकरायो॥घेरमनरललीयोहतायो॥बालुर
कलानाहिनिहारो॥दयानकरीतुमसेन्वपभारो॥२४८॥तेफलक्रवलाछेतुहिंस्राये॥छो
रनकोभाबोप्रगटायो॥कपटीहमकोकपरउचारो॥ऊपुनेगुननहींरिदेविचारो॥२४९
षिदेवनकीसेवनकारी॥नाहिपवेतुमनिविद्याभारी॥वडुयोकाकहांमान्योनाही॥सुन
दुर्योधनमनउचराही॥२५०॥दोहरा॥दुर्योधनोवाच॥जोमपनकोचारीयेसोहमपढे
सज्ञान॥मोहराजकेहरखेजाजनसुपीवनदकेटान॥२५१॥जोहिरथुमाव्योमोहतेसोह
मरायोनाह॥मोसमराजादूसराभयोनहोहहिं घाह॥२५२॥जानतकीनोपापकोतोभे
चाहोजीड॥जैसीमुहिचितनेउपलदेवेजगतधनीड॥२५३॥जवदुर्योधनवचनईर
कीनेमुखप्रगटान॥पुष्पवृष्टिनभतेभईजेधर्वगानसमान॥२५४॥चौपई॥पांडुवदि
घमघेभीतरलेतव॥धारैरथकेपानेसभु॥श्रीकृस्नतवमुखउचरायो॥पंडुसुतोको
माघसुनायो॥२५५॥श्रीभगवानोवाच॥छिहिंकेपावोकोमघधारो॥तुमवडुसरीरदे
जीचारो॥भजवलदेसजीततुमलीने॥परजाकोसुखदेहुप्रवीने॥२५६॥जिहतेजग
घसवदेतुमारो॥पुनभोगोसुरपुरसुखभारो॥तवश्रीकृस्नजिनजसघरजायो॥पाव
जुनजिहिनामकहायो॥२५७॥ऐसेवचजायमुखकेहोउचारे॥श्रीकृस्नधरधारनहा
रेसोजुनधमेजोहितरलमहिप्रान॥तजेपुष्टकरतेजमहान॥२५८॥तिनकोहोवेगत
नूसिनभानी॥भोडोभोगसुकृतोकधकारी॥सुनसभहरषभेहरिवेना॥पंडुसुतोआदेस
मुसेना॥२५९॥दुर्योधनीनिकरकेतकनरथखाडे॥पंडुसुतजयेहर्षचितवाहे॥पुनसभ
सोभीकृस्नसुनायो॥करेवचनमुखतेप्रगटायो॥२६०॥रथतेउतरपरेसमसरे॥जे

तेहोरलभ्रमनवलपरे॥ऋज्ञामानरथतेउतरेसभु॥पुनऋजुनकोऽरहमकदोतबारह
॥उंडीवधनछत्रकुष्पुन्निषंगा॥लेउतरेरथतेतिहमंगा॥धर्मजादिरथुतेउतरा
ये॥श्रीकहमनतवरचर्नीदृषाये॥२६२॥हनवंतवीरत्रजैनधुजतेजता॥जाकेभयसुरन
रसभभाजता॥उधोवूदपाछेत्रसहोये॥श्रीनिपुकाशज्जहरूहउपजोये॥२६३॥तबरथ
समहोयेसमधाता॥रहोनाहीरथकोउपकारा॥निरंतसकलरहेविसमाने॥पश्चतपदु
पतिसोभयमाने॥२६४॥देश्रीकृहमदेवदेवेशर॥सकलजगतकेप्रतिपालकहरि॥भिर
निधकेसीसुग्निउपाई॥सकलजारज्ञिहिभसमाउडाई॥२६५॥श्रीभगवानोवाच॥अर्जुन
धामज्रवकोधुधरोतत॥वानरतस्योनृहिसंहारन्नाहित॥जवतुमविनीअतीदृष्टिज्ञाते॥
वानृषिमायेअग्निनलाते॥२६६॥ अर्जुनयुधपसोरथेतजाये॥हनुमानधुजत्याग
सिधाये॥धनुषुवानजेतुमनउतारत॥तेभीजारवरभस्मउडारत॥२६७॥दोहरा॥दु
र्योधनसेनजलारतहोईरणमाहि॥धर्मजादितिहसभजायेपंडुपतवलवाह॥२६८॥
चौपई॥मकतारलनजमणवदुभाता॥अर्जुनवरदुवदेयेश्रीतिअता॥निरखसकलविस
मेउचराने॥श्रीयदुपतसोनपवहुजाने॥२६९॥युधिष्टरोवाच॥हेजगतारसर्वप्रति
पालक॥धनतरपूसोमिलेतनकालक॥पुनअंधातीनिअरसिधावे॥अपुनकुवजाषि
वोउनपासा॥दुरोमानदेवपरकाशा॥२७०॥निरसरापजीवनररहेको॥तातेप्रथममिले
तुमवासो॥ज्ञिरिविहिउनसोधीर्यधारो॥पुत्रशोकवहुजानवीचारो॥२७१॥जातेदे
रिनमोहसरापा॥सोईविधकरोतेजनमापा॥अर्थवानुमहोदेइसंतापहि॥नहीलग
सकजोमयतारदुजाहि॥२७२॥तुमहोसर्वजगेरउतिहरापा॥धूहनसकेतुहिनेजनमापा
धर्मजनचमनरहमसिधारे॥हमपुरवहुवेगसिधारे॥कजामरजनीकीजानी॥पु

[illegible]

११६ ना॥करतकमनहींहोतबकाशन॥२४॥कृपुनेरिदेवीचारनिहारो॥कैसोरहिसकोदेस
नधारो॥पंडुसुतोमोइरखधीरो॥सबसहरवनमांहिविजारो॥२५॥तेभीतुमकोसुता
समाने॥कृष्णकारसदाहितमाने॥सुतासमानद्रोपदीनारी॥जाहीकेशतेसभामझा
रे॥२७॥समभतपनामेदेहिदिखाने॥तुमनिजदेखोजीयमेज्ञाने॥निरदूषनीनदपाप
सधर्मी॥पंडुपुत्रशुभकारसकर्मी॥२८॥निरदोषीवनवनमरमाये॥शुभचारीतऊधु
मसपनाये॥पंचकामपुनमोदरहाने॥चाहिदेसपकेसममाने॥२९॥देनहर्षशुभ
राजकरावत॥चहिनिसदिनहितसेवधरावत॥मोहिवसीठयांनेउनकीना॥कोन्यम
रेसुदिवचनउतीना॥३०॥तुमदेवतहमसिव्याधारी॥जिरजधुसतनपरताबि
चारी॥दासजनमसमउनजोवीचारहि॥निजकुलजाननकरतबतपारहि॥३१॥तोहि
सनेहोचितनहींआवत॥पंडुसुतकोजिरहिविरहावत॥हतेविनाकोउऔरउपा
वहि॥रखेनांहिसतनतुहिदुखपावहि॥३२॥समभकोकृपुनेप्राणपारे॥कावसजान
दीरघदुसभारे॥३३॥पुनेकृपुसेवलदिवरायो॥तोहिपुत्रदिमांहिदूतायो॥३४॥
तेहिमतोहिनेरेमुनकाहि॥जीजेविधुक्रमतपलनाऊ॥तवभीतुहिमुकवचायुगायोअब
पुनसुतेकोवरतेजायो॥३५॥नहिमाननतनुहिसुतसचकाहोधाररेतुमभाषततोहि
कृमनतनकेनजरलममजानतनमोमानतकिंडरिहकृपणठानता॥३६॥दुर्योधनरेक
मैदिखायो॥दरिदिनसमुभाषतपुजरायो॥कृष्णधर्मविनुनाहिउपाऊ॥मनचाहिदुदरा
वेषोकृमिदराऊ॥३७॥धर्मवेतेतुमरीसतभारी॥तुहिमतप्रीतसमनाशननारी॥तुर
पुत्रमोहेतवचनीचिवकृसमव्रतथानाहिपरेपरकासे॥३८॥तोहिशापसुभजगतज
गये॥पंडुवनकीकहादिखाये॥समाप्त राजनमारीसेसा॥केरवंडसुतहेतोज
मेवा॥३९॥कृधिकसुतेमरहलनरावे॥शुभचारीतुमसुखउपजावे॥ऊधामीस्त्री
नहमनवचनसुन॥रदनउठयोमाधाधुनधुन॥४०॥पुत्रशोकमानिजधारी॥

गंधारीमुखतेब्रुगराराः॥ गंधारी उवाच॥ जीवंजीवं प्रभमहिसंघर्दीजे॥ हौं चहीजान
गंधारीमुखतेप्रुगरारीः॥ पुत्रशोकभारीजीयधारे॥ पंडुसुतोंकोशापुनधारे॥ चाहेथीदे
नथीपरवीजे॥ १०॥ पुत्रशोकभारीजीयधारे॥ पंडुसुतोकोशापुनधारे॥ चाहेथीदे
उभारससरापा॥ पंडुसुतोकोतेजकुमापा॥ ३०॥ मोहिसरापेसमुरतेरोवत॥ वहुञ्ज
मधारतसभसखघावत॥ ऋव जान्यो उनकोनहींदोसा॥ तोपरहमकोभारमरोसा
३०८॥ एवंविनीप्रभसनोहमारी॥ दीनहोइ मुखकहो उचारी॥ मोहिकेतंहीजदिखा
रो॥ चितहसनचितनपरवीचारो॥ ३०४॥ निधकोवस्थसुनशोकेमरही॥ तोहिधीर्य
देवोहितुधरही॥ ३०५॥ श्रीनारायणउवाच॥ दोहरा॥ धृतराष्ट्रकेउरहोरहोसुसजीद
माहा॥ दुर्योधनतेशमगमीपंडुसुतस्रस्नकेराह॥ ३११॥ चोपुत्रसतोकेजीवतेजोसुखतुम
कोहोता॥ सदसुखगुनेतातेधरे पंडुपुत्र उद्योत॥ ३१२॥ दुर्योधनतेऽजदिलेजेनृहिपुत्रहतान
नाकेकेजीवतसकलहजनकीसेवदिखान॥ ३१३॥ चोपई॥ श्रीयदुपतिसेवचनसुनाये॥
गंधारीवडुधीर्यपाये॥ पुनश्रीकृस्नउचारतेवेना॥ गंधारीसोमुरतमेना॥ रहोरेनसमग
नीनुहिपासा॥ रचितमननहोकहोप्रकासा॥ नससधामाइहिचितमेधारे॥ पितमांगो
कसुतपंडुहिमारे॥ जाकोउनकीरक्षाधारे॥ मारीमपतेतामहिउवारे॥ ३१५॥ धृतराष्ट्रो
चा॥ हेश्रीकृस्नतुमतनसंधिनजाचो॥ तोहिसिहिउनकीरक्षकराचो॥ मनसमस्यामा
उमेहतावे॥ जगमेरसुरावेशुउडावे॥ ३१६॥ मुहिसीपुत्रभयोरणघाता॥ देहिजलुपि
उसुतपंडुसजाता॥ जोइस्नेहोविजमतुरहतडारे॥ हमकोप्रमजानेकोमतिभारे॥
३१७॥ सुधिकसुतोतेमोहिपंडुसुता॥ शुभचारीसमरवरूपरसंदुता॥ तोहिरिसिहिउ
नकीरक्षाकीजे॥ मोऊवाधनहीलाभनदीजे॥ ३१८॥ विदाहोइजायेयदुराई॥ धर्म
जसोसभुजायसुनाई॥ धृतराष्ट्रगंधारीसंगा॥ जोसेवाकरीयेनिरभंगा॥ ३१९॥
सुनतधर्मसनहर्षितहोया॥ सकलचिंतशोकचितखोयो॥ ३२०॥ दोहरा॥ दुर्योधन
नेजवउठे पंडुपुत्रसुरजान॥ इहिहेदरपरचरनउतदेहीलधरउवान॥ ३२१॥ उठैवे दृत

११२ ठोनिजदेहितेरकनपुकारहाथ॥ अर्धपागवंधेऊन ट्रिडकरभजबलसाथ॥ ३२४॥ सुपा
चार्यक्रमसपयामा सुतवर्मा लोपेदिषत॥ पंडुसुत गयेउठधामतन दुर्योधन पपडगोये॥
३२३॥ चौपई॥ धर्मज जोरथकैठोरे॥ दुर्योधन के निकरसंचारे॥ गयेभागइनकोनि
रषाये॥ मन में भारी भय उपजाये॥ ३२५॥ इन्हेत्रिदृकीने रुदनकुपारे॥ लोरनधरनस
सकरमारे॥ रोवतनैनी नीरहुरावता॥ कुमसपयामामरवतेपुगटावता॥ ३२६॥ दिजसु
तोवाचा॥ हसुरीयुद्धका हूहरोरली मैं॥ जीव ततजेसुतपंडुपुत्रीने॥ उसहमुरास्वामी
हनुकीना॥ हमदेषतताडे भुमलीना॥ ३२७॥ ईहरकारबहुबचनबघाने॥ दुर्योध
नहितपुरगराने॥ अर्जुनकेसभकोसंहारे॥ पंडुपुत्रसभमेनउबारे॥ ३२८॥ दु
र्योधनोवाच॥ दिजसुतहमनेहिकपनसमानाअमनवचरमलटोतेजमराना॥
रुपाचार्यसतवरमाहे॥ अभजबलभारसबैमोसोऊ॥ ३२९॥ तुमकोजानेहमोसमा
ना॥ तुहिकाजाइनकेमनमाना॥ मरैगोकोइहीसमाभासुत॥ जोकरसकोसुक
रोव मनमत॥ ३३०॥ रतभधारजाइज़ारघावो॥ सेनसहतयमजोरपठावो॥ सी
सभीमकापुहिनिकरावो॥ लेआवोबलविक्रमहावे॥ ३३१॥ ताहनिरषचितचिं
तचिवारो॥ पंरपुत्रनीनिजदेहिप्यारो॥ अैसेकहिदुर्योधनमरो॥ निरसधमये
रमभुनकुमसरो॥ ३३२॥ दोहरा॥ अस्वथामंभयोरुपाचारजउपातो॥ अभीर
नतेयुधकुजादरेजिहिमेनतोहिविसासा॥ ३३३॥ सुदमतोलभयारचीयघाबुद्ध
परकाशा॥ डेंघन उपरदेषबेगनजनवरोनहास॥ ३३४॥ सुनेपरेयापर्वकोगध
रिदेमोध्याना॥ सुदमलालसुरमतनदेरिदिउपजोनेजान॥ ३३५॥ मनकीसभु
बाध्यापुरेसरपुरबहुसरघाइ॥ सुदमलाल जगयमुथिकेसदासर्वसरहाइ॥ ३
३३६॥ इतिश्रीमहाभारतेपुराणेशल्यपर्वणिअर्धदितसगुप्तेशल्यनुमकुतनवधः
दुर्योधनऊरुचरनरामसमाप्तनवमपर्वसमाप्तम॥ ९॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

ॐ परमात्मने नमः ॥ ॐ श्री गणेशाय नमः ॥ अथ सप्तम पर्व लिख्यते ॥ दोहरा ॥ सब रुचा हरन
एकजनगसमदेवन को देव ॥ अहमलाल निहि पदकमल प्रणवो रे तकमेव ॥१॥ छंद ॥ ले
वो दरस जन वदन रदन जिहि एक सहायक ॥ बुधि विद्या ज्ञान मद नम सर्व जगको सुखदाय
क ॥ वर्जे जी लज्ज घट्ट हरन सरन सुरन रगंधर्व मुन ॥ मदन दहन सत ध्याय भयो रेव
अपत जन ॥ भाल चंद निरमल सम न दयासिंधु ज्ञानि हर्षे निन ॥ सुरवदायक निधरु
पदम पद अहमलाल धारत स्मै चित ॥ ३ ॥ दोहरा ॥ अरज ठार पुभ कार के वंद चरन हो
दीन ॥ अहमलाल निहि रूप सो अथा उचार ही नमः ॥ चौपई ॥ महाभारत ज्ञानि वे हो
पुरान ॥ जिहि इतिहास हर्ष की खान ॥ पढे सुने यो जनु हित धारे ॥ मिटे पाप तिन के
ज्ञान विभारे ॥१॥ सम मो एक तु नुमलो चारे ॥ हर्षु जो पर अव हू न हि धारे ॥ दया सर्व जीको प
रगाष ॥ परवाध रस अव हून हि भाषे ॥ आ अहमलाल निह पर मिर नाये ॥ कहो कथा नि
अनुध पुराय ॥ दोहरा ॥ रे नपु हुस सप्तम पर्व नाम उचारे जाहि ॥ ता काव र्जे न करत हो
सुनो धार स्वित चाह ॥ ॥ चौपई ॥ युधिष्ठिर जु निज कसम पाना को दीन ॥ महाबल सरा जा
न जीय से ना कावति कीन ॥१॥ चौपई ॥ कसम पाना भुजबल ज्ञानि भारे ॥ पञ्चार्य के
निज संडा धारे ॥ सरस ब्रह्म निह संगा ॥ तीनो दोरे यो धर्म भंगा ॥ निज सम्यान मो
जाइ निरा रे ॥ कहा जहू न ज्ञायो को निह वा रे ॥ कोर वसेन भई वल हारे ॥ पंडु सुत ता की सेन
वला रे ॥१०॥ कोरवा न की से ना लूरे ॥ जो रो सन्म रव मारे लूरे ॥ सम उउ दूल रे वलु पाई
चारपा न्च रहे दे व वचाई ॥११॥ जिहि विधरहे सपु गर उचारे ॥ अहमलाल ई हि सं भनि
वारे ॥ पांडु वसे ना घी ज्ञानि भारी ॥ घा तीर हीम घी सम मारी ॥१२॥ दुर्योधन ना मा नु घ ज्ञ
निघो रे ॥ लूर तन कल भयो ज्ञानि घोरे ॥ इक इक हाथ घना दु व ज्ञायो ॥ सम्नु सम्नु का अंस
न पाये ॥ भयो दुख प रन सम सरे ॥ रही न इ ध का हू मन न सेरे ॥ डीहि व धलू र नीर भई ॥ ती
को निरखा वि सम न दई ॥१४॥ अर मंत र पुन पर वी चार हि ॥ त कस म पाना भु खेया पुकारे ॥
श्री जे धिहि वि धम सु डी रवा गे रा ॥

१९८ मन्वोभयास्सचूवचनस्मारे॥५५॥दुर्योधनमहिवलीपस्थाने॥कोयोसेनपतिर्हितश्चि
नधारे॥तानेवकेशाय्यधरणजाये॥हेतोपंडवाकोवलपाये॥५६॥केतोदेवोऽस्मपुनेप्राना
परेथ्रस्तस्सदुरवमहाना॥ऽहिनोऽस्मऽज्ञाचर्याद्दिद्वाये॥२२तरवधोधामसुहृद्यो॥५७
रेननीदसमुपधीसोये॥ऽकुउलूकऽकतमकरहोये॥ज्ञाम्रलक्तोवऽाऽस्याच॥
ऽकूऽकूलेऽयोवऽावलवाना॥५८॥जितउतमकरज्ञावेनजन्मावे॥तिउहोऽहिउलूक
नलघावे॥ऽहिदिक्षस्सयामावउसरा॥हरनदुष्कोवचभ्रमनपरा॥५९॥स्सयामो
वाचा॥देवोऽहिस्तवगुमिथ्याकरहो॥केसेहोरमाचितमेधरहो॥वलीगच्चुहोवलूनल
गावे॥ज्योतिस्योरहतेनवेरजन्मावे॥६०॥तेस्महमीनसकंधकंधारी॥परेजाऽस्मसेनमे
ऽसे॥समभकेहतानलवृतजावे॥अपुत्रापितावेरस्यावो॥६१॥धरदुग्रमिवद्भीमोध
जिन्नमासोमहिपितात्रदोवा॥भीष्मसागजिनस्य्रहतानो॥तिनकोहतवोमनरदराघाने॥
६२॥अस्मस्यामानेवन्नसन्नाये॥रुपाचार्यमुस्वतेपुगरोये॥रुपाचार्यउवाच॥नुमज्ञा
नीनीकेज्ञीयजाचो॥दुर्योधनयमथामासिधानो॥६३॥ज्ञावेहितहमस्सभ्रमधोरोग
येजगतयमपुरहिमुखारो॥तोनेधतराष्ट्रपदजाये॥सकलविश्वपाहमकेदेपुगरोये॥६४॥
ज्ञोवदिक्ष्माज्ञाचरोहिताई॥तेहमकोन्नतिजीकम्नहाई॥ऽहिस्वकारवरुञ्चचनसन्नावे॥६५
सयामावेचारिस्महावे॥६६॥अस्मसयामावाचा॥दोहरा॥महिपितुसीमुऽन्नचपरचस्मा
स्यारणभुनमहिशा॥वेनपाऽमंपदहर्षचितसभतेवलीकहाऽ॥महिपितवउदुस्वजीयमो ६३
धरे॥वहरायाऽवेसेऽनर्वरा॥येन्नाजुरेननहीचेरगाहावो॥तामरणसमेतरश्चितद
हावे॥६७॥धोविजेवरोतोहोऽन्नतिनीके॥मरोपरेजीहिचितानीके॥पातेनुमरहमकोवध
नकरा॥धामोमहिचिनुरखेतलहे॥६८॥रमणमुविप्पाकाहिपरे॥स्रमनहकेरेनमारे
वहे॥दहनकोवस्याचदहिपाठकरे॥जपकोतपसंयमनेमधरे॥६९॥मोकोजउमोचउवीरव
हे॥पितुमेरतजाउपराम्नगाहे॥मोहिउपितुवेरगहेननजो॥ऽसमीसजाऽयोसीसतजो॥

ममधामपद्मोनिंद्रासोये॥जान्योऊस्पुनेद्रुवयप्रमयोये॥३॥॥२५॥आचार्यउवाच॥दोहरा॥योनुमकै
सेहीकहेपितावेरचितधार॥जौदमोरेद्रुगसोईयेदिनकेरेवदनिवार॥३५॥मईजुरलामो
हिवसकोरथरपरसमजाता॥सोवतन्नीकेहोरहजेउपजेजोवलुभ्राता॥३६॥चौपई॥प्रात
होइसमभशत्रुसभाये॥शत्रुनकेसन्नमुखमुखधारे॥स्वेयघृतभुजवलकसतिमारे॥विजै
देहिजिसकोकरतारे॥३७॥कपरघृतमोहभलाई॥जगतमांहिजसप्रजसप्रगटाई॥सोवतन
नरेजोनिद्रामाही॥तिहिनजगावेवेदवताही॥३८॥तुमचाहतहोहहैतोसजाने॥फिरिउतरे
डीहपापमहाने॥जिहपापेनरनरकपराही॥तेतुमचितनवतहोमनमाही॥३९॥कृपाचा
र्योवाच॥दोहरा॥तातकहीसोजीकहतिआगेपुरगेहानार॥नरकुजीकमुहिस्वर्गतेपिता
वेरनतजार॥४०॥चौपई॥पितावेरजोहिनरकेपरे॥तेइसतिजीउचितममोधरे॥जोदे
देवोनिजरिदेविचारी॥हिवसशत्रुरणमोवलकारी॥४२॥इतनसकोउनकोवलवाही
यातेडीहउपजीपजीमनमाही॥डीहिवहिउसयामाउठदौरो॥४३॥रघुमोउसमुयामेमन
वोसो॥४४॥भस्त्रधाररघुकोपचलायो॥कृपाचार्यकृतवर्मदिखायो॥डीहिनहीमानेसि
छारमारी॥पाछेतेदौरेहितुधारी॥४५॥सेनपांडवाकेनिकराही॥जापहुंचेवहुवेगरु
ताही॥तादिनधर्मपुत्रवहुत्राता॥विजेपायसंगचारोभ्राता॥४६॥कौरवानकीसेन्यम
ऊरे॥जायेधीरदेवन्हितकारे॥दुपदसुताकेपांचोपुत्ता॥अरुनिवडुयोधमारकरसूता
४७॥पाछेवहुरसरेवलभारी॥पांडुवानकीसेनमऊरी॥विजेपायस्वमित्रचिनहोये॥
वहुदिनजागतसुखभरसोये॥४८॥वहुजतनवहुरसेनकीकीने॥एकोदरगयापरकी
नो॥जैसोरमजाहिपरवेशनहोही॥जेसोयतनकरेजनकोई॥४९॥नकऊसयामा
दरपरजावे॥वहुआचर्यदेखोनिहिडाये॥कोउसैवोदरपरररवारा॥करवेममजिहि
रूपकृपारा॥५०॥चारोदिसचोदननिहिजाती॥मिरहचर्मकरकसीसुधोती॥मिर

११५

गच्छमेकं धेपरधासो॥ तरमोसर्वजनेउठारेसो॥४५॥ सहस्त्रवदनतेसर्वपसारे॥ लेन
कमेजस्तासक्कतिभारे॥ इकइकमुखदे जीभप्रकाशे॥ तेजुगाधिकच्छपला तेभासे॥
दोसहस्त्रविद्रुगतेवठजाला॥ निकसतवेंडु तरेउहिशाला॥ जोसजमुखहोवेजरमरहि
ईहिविधरहेमनकीकरहै॥४६॥ अस्सुणामचिरवतमबभीता॥ भयोप्राणोतचितन्न
निचीता॥ इकाधिनपोधपुजसुधपाये॥ नाचधनबुसोलीयोचउाये॥४७॥ कीयेभु
जबलप्रहारबहुताना॥ ताहपुनघतनइकुनलजाना॥ अस्सुणामाजोवानप्रहारे॥
गहतसर्वपणक्काणधारे॥४८॥ जबनिरखगमयोदूणादिखाई॥ तबदिजस्तनिजश
केतउठाईसवउठवलशकतसर्वपरउरी॥ तबदेगहीसवदनपसारी॥५०॥ पुनअ
स्सुणामाचलअधिकाई॥ रैवचरवइउदोरोरिसघाई॥ गहिलीयोरवउगुसर्वमुखमा
हे॥ उदरउरलीनोदिखराई॥५१॥ अस्सुणामाकरकोकपारे॥ जदाप्रहारीभुजबल
भारे॥ तबभीअहलेकीनीजासा॥ दिजस्ततादिखकेषोचउठासे॥५२॥ चितततमुखअ
कापाकैउरेमकीयोदिजस्तविसमेक्रतिघोरे॥ च्छीरहमच्चतभुजस्तउधारे॥ प
रेवीरकैद्रिष्मकोरे॥५३॥ जान्योजराइहिरधाधारीमकेसेपुर वेझासरमारी॥
पाचार्थकीसिषाभारी॥ चितवनकरेरवीरेचताशे॥५४॥ वउयोकोजावचसमुर
वे॥ नरचेताकोममुवहुसावे॥ अवहमकिहिलेमुखतरिजावे॥ नीरधारत
पईशरिकावो॥५५॥ जवरपालरेपंकरदे वा॥ देवेमहिवहू वलअनभेवा॥ तावल
अपुनेकाधेपरे॥ शत्रोकेनलरणमोच्चरे॥५६॥ डीरच्छितवतईधनइकउनो॥
चहुदिसकीनेनृगमहाने॥ अहिनजराईतेजगभीरा॥ मद्वेठनपुसाधेवीरा॥५७
ईहप्रणादिद्रुइजोयमारवस्माने॥ तासकालोशवकोप्रजारै वे॥ घोनप्रकारहोवेम
नेप्रा॥ जरेअहिनमोधारप्रवेशा॥५८॥ कारकारअपुनेसभकंगा॥ अहिनतार

२० मीश्रेररलाजीलातेचेतेनभया॥कुसयामेकेद्विगेदिषायोजिहिपयपेनरखुगुलया॥
जीरपरद्रिगमखउचराबतमनहोदिज्ञसतमोहिभचन॥तुमनभयेरणमहिमहि
सन्मुखकायरविायाडहिकेररचुन॥२४॥सोयेजीदसखहमतुमसिरपरज्ञायखे
करखडगुलीये॥कोनसप्ताकनेडहिमारीकरोलाजदिषज्ञपुनहीये॥५९दुत्र
कोवेनसनतहीक्रस्वयामा॥उचारकीये॥२५॥त्रिक्रमवस्यगुरुसमहीकादि
ज्ञाको जगसेवकरे॥ताकोतुमहन्को नोकपरहिकै नकपरघातातिवेरोडरि
कोडिरथ९दुत्रयेसिरपरखडगमउचलभारदई॥फूटयोसीसपरोधरनीपरज्ञस
याम्बाकीचितडाई॥२६॥पुनिक्रसयामाध९दुत्रतनज्ञातिवडुपाउपुरारकीये॥च
रनकीयेक्रसयसभजायेपुलनिकसयमपचपये॥तिहहतसगावोहरज्ञायोतव
भोतरविरलापुकरहि॥दिषदिषसभुविसमावेरोवहिरजधुविचारनहीरिदेधरे॥
२७॥९दुत्रकीसेनसनतहीरामकोपगहिदोरपरे॥दिज्ञसतवेसन्मुखहकोरे
भज्ञवलसोवडुयुद्धकरे॥रेनगंधामेकधुनदिषावेतातिहिसमेडरियुद्धपरो॥ज्ञाप
समोलरमयेकुधकजनज्ञातिवडुदिज्ञसनघातकरो॥२८॥ज्ञातिवडुधमउठ
सचामहिरहतारतोवडुशब्दभया॥ज्ञाउठेसतदुपरसतावेमानसमरनाज्ञानप
या॥पंन्चोरोवडुवलीपुत्रिमीशब्दसभारतउठदोरे॥मातावजेरहीनहीनाचेमा
नलशोकज्ञतवदोरे॥३०॥दोहरा॥ब्रतधिरजासमतेवडाधमपत्रजिरताता॥
क्रसयामकेसनमुखसेयेज्ञातिवडुगात॥३१॥खडगउदायोकोपकरउचाकीनो
हाथा॥चाहेमारोवारवलज्ञसयामकेमाथा॥३२॥जिनरघदुलसतरवडुगकीनि
हिवधसयसदीनमाडगमोभमदोहत्याडजोचैोनयमपुरेकी॥३३॥पोनपुत्र
केपुत्रपुत्रमोनुतज्ञारोकामा॥धन्रपुउदायोकोपकडभातेरचितधामा॥३४॥

दिजम्हतदिषवित्रजखउगसोकारयोताकामाथ॥ दूसरधातीको दई मित्योधर्नेकेसाथ॥
८४॥चौपई॥पाछेतेजग जैनस्ततञ्ञायो॥वुततमों जिहिन्तामुकहायो॥दिजम्हतताको
खउगप्रहारे॥कोयोदुहूकडकोधिनतमझारे॥८६॥सहदेवपुत्रपुनित्रितलततनामा॥
कोलवदनतञ्ञापसोञ्ञकामा॥सतान्नीकनकुलजिहिताता॥दोरस्ञायोसुदरगाता॥
८७॥दिजम्हतखउगसोताकासीसा॥कारगिरायोधरनञ्ञनीसा॥दुपदम्हताकेपाचो
स्रता॥हतेविप्रम्हतञ्ञसकरत्नता॥८८॥स्त्रनीसिषंडीजउडीहगाथा॥सोवतञ्ञारो
वउम्रमसाथा॥वडभ्राताकामरणसुनायो॥मगनीसुतातिहिषोकतपायो॥८९॥ह
षितशोरकोपन्चितधारयो॥दोनेवउवलशस्त्रसंभारयो॥जसुथानाकेसननमुख
ञ्ञायो॥कहेकोपवकेवचपुगरायो॥९०॥सिषंडीवाच॥हेदिजपापेपापसरूपा॥नीचकर्म
तुंहिकीनञ्ञनूपा॥मृहिभ्राताकेसनमुखहोयो॥कीयोयुद्धरणमारखरोयो॥९१॥रेनम
हतसकरञ्योञ्ञाई॥सोवतहतोमियाकीनवडाई॥दोहरा॥इहिकहिदोरयोप्राञ्जनीदुप
दपुत्रवउगाता॥ञ्जसथानासोमंडरणकीनोवलञ्जनिञ्ञात॥९२॥सिषंडनजोगारकेलरे
दोनोसरञ्ञमोर॥विरतासरयोइंदुसोकीनोयुद्धकठोर॥९३॥चौपई॥भइतद्रोणसुत
वडुवलुपायो॥हत्योसिषंडीकोतिहिठायो॥योधेवलीसिषंडीमाथा॥सभनरमुथे
धारवलुहाथा॥९४॥हत्योसिखंडीकरवलुभारे॥ताननतेपुगरीडकुनारे॥खपकहा
पमपानरकरुपा॥मरमरपीवततसधरञ्ञनरूपा॥९५॥गजउशटननकेसीसउठायो॥ग
रमोकुरेमालवनायो॥हस्तहासञ्ञारम्भयाने॥फिरेसैनचहूडोरडुगाने॥९६॥ना
चेकूदेञ्ञनितिहरषायो॥सर्वैररूतञ्जचतत्रिपतायो॥चलीपवननरवतेजप्रचंडा॥
नाचतदोरतपिरतकबंधा॥९७॥उठीधूरअधुंदिप्रवनपरही॥भईभयानसैनावहु
डरही॥मतवेगञ्जगरेतिहिठायो॥मतिञ्ञगतनरधुगनतीनाहै॥९८॥प्रलेकालञ्ञा

१२१ गमन्ते दिखायो॥पिता पुत्र मृत पितु न लखायो॥ जो भयान भाजो भय घायो॥ सैन्या ते बाह
रनिकसायो॥ ६९॥ रूपन्वायो तव रथ मो बीरा॥ तिन कौ हत उर तव बड धीरा॥ स्त्र सेय घा
मस्त्रति तिम रति दिखाने॥ ईंधन नृग कीये इकठाने॥ ७०॥ तामे अग्नि जरी परकाशा॥ न्हा
दन हेम्यो धर्म अ काशा॥ तिहि चांदन जो दृष्टि परे॥ रव उग्र प्रहार हू कदो करे॥ ७१॥ बहु
घाइल भूम परे हूं कारे॥ बहु भयान कमुख ते उगरारे॥ श्री हत मृत धर्म मृजाना॥ अ
र्जुन भीम वडे बलवाना॥ ७२॥ जिहि विन जग जु भयो उतपाता॥ हने स्र रह्म रे वड गाता
कुरमें न्चि न मोहि रखपाई॥ ज्ञान उ न विन्ता सैन कुर लाई॥ ७३॥ दोहरा॥ जो इकु उ न ते
स न मो हो व न सल जो भर॥ कौन जुरै सो कर सके हो न हार जन कुर॥ ७४॥ अ नो अ
बरस दिव स मो भयो युध जिति भार॥ सभ ते अधि क भयान अति रैन युध उगरार॥ ७५
मोर अध दु अ दरि दिवस सरे सर ते॥ उग्र स परब उ प्रा क मु धर ते॥ ते उरात हो व न र सामा
ही॥ का के वड उग्र क्रम उगरा ही॥ ७६॥ धीर है नयु धु जैसा हो यो॥ पर अ पुन लखन
पर तके यो॥ उक्त दी च बली न विचार परे॥ दिज पुत्र समान कै घानु करे॥ ७७॥ असरेर
नु है घे भार बली॥ बव हारे मारे उली उली॥ भ्राता सो भ्रात न जान परे॥ अ पम
मे सर सर सब लमरे॥ ७८॥ जब घोर रही निस सर्व रता॥ दिज पुत्रहि रे बी चार किता
म न पा डुव सर सी रहन स्मुने॥ दौर हि चि तमे वड वेर गुने॥ ७९॥ तव मुहि हन अन
बहु न परे॥ अ बनिक सो जत ही नीक करे॥ पंचाली सुत जो घात कीये॥ तिन सीस क
र उठाइ लीये॥ ८०॥ पांचो सिर हाथ उठाइ बली॥ सैन्या न जै दा सो भ ज तम लली॥ दोहरा
सात रक मृन दौरे बली सबु धार व लवान॥ पवन वेग दिज पुत्र जै सन मुरव हो दिन
उग्रान॥ ८१॥ पंडु सुते ता के सु ते ते लीये जात सिर भार॥ सात रक मा सो चान दकु दिज के
रिदे मज्ञार॥ ८२॥ छंद॥ दिज सुत दिषपा दव सा न क को भाग यो अति बडे न जु कीये॥

रूपाचार्य करण वर्मा जी कोदि जमत अपुत्राद शुदी थो॥ वडो शरदम रवैतेउ च रा नोच लो तानी वन
वैर लीया॥ जो पुत्र णकी नाथा हम तुम सो हते शत्रु पुत्र पर रकीया॥ १०३॥ अरुन नपदु र्योधन
पथ जावे सुन तवि जे आनंद धरे॥ भयो जरवेद वसव कोरण मो ते समुहि रदे दूर ऊ रे॥ म
थे निक रदुर्योधन चेजरव जिहि निह सधन पुम जपरे॥ रधरम मो मरव तन करर व
स्वामि तक च हूउ र नक तधरे॥ १४॥ कू कर सि गाल इते उ नैदो र त म जा मो स कर
र करहि॥ नीजो वैरन पडो र निहार त रो वहि दि गव हुनी र हुरहि॥ र दे नम सुन तन प
सीस उठयो देख तकर सो से नकरी॥ कहते आवत हो व लवीरा कहा थ च न मुहिड
गरधरी॥ १०५॥ अरु सथा मो वा चा॥ हे नप द्विज हम रे जी वे के तुम के से र ण म मरि
हो॥ हीयो कहो र पूर नी हज्ञा वो॥ कैसे भारी दुख दिहो॥ पथ अ रकहो हेम पत सुन तरि
दा आनंद मरो॥ दुर्योधन र्ष त उठ वैठो कहो व गर्व हिकम परधरे॥ १०६॥ पाचो सु
त पडुर ते मुहि रणमो से नसर तम जभार वली॥ तिन के सीस कारल्याय हैं दिखा वग
सो ज्यों चप कली॥ सुन दुर्योधन हसह रख्यो उ ठ डा तुम यो सव धान्या॥ उ च सेना मो
मोवेज दिखावो गये ज्ञाण दी जे दान्या॥ ११०॥ इक दुइ कु सी सुन्या रान्या रादि जम तपु गर दि
खाइ दी यो॥ भपस हतवि ग सा इ क नल ज्यों मन मो वहु आनंद लीयो॥ हर्ष हर्ष दे जम सु
त सो भपत बहु दुला मम रव कह त वच न॥ भी म सी सम मुहि जी काँ दे खा वो पर उप का री
भार रच न॥ ११॥ यो दो र रा॥ अस थामे सिर भी म कान पको दे यो दिखाइ॥ उ न उ ठाइ
दुहू हाथ सो पर क यो भ मवेल पाइ॥ ११॥ पूर ग यो सिर हाथ व लदि खन पक सो उ
चा रा॥ का हसी सु डरि भी म का दि जम सु त क हूँ वि चा र॥ १४॥ रे नवीत ग यो ति मर मि स म
इ प्रात उ जी या रा॥ पंडु सुत लो के का हू सिर दि खा दि ख कहे वि चा र॥ १४॥ जो पूरे ला मुहि म जव
ले कहा भी म का सी सु॥ हो व न पुरु ऊ न का र सम दि जम सु त जा न कर नी शा॥ १२॥ चौपई॥

२२२ नी मुनि हारनि सारत जाने॥ पंडु सुतेतो केसु तपाहि न जाने॥ चिंतत तन्न पाहि जसु तसो भाव
यो॥ करा की नो मुहि वेशन राखयो॥१२३॥ दोहरा॥ देस नु मका हे मारे॥ योधे रमे रेवेश
उ जारे॥ पंडु सुत तासो बैर हमारे॥ इरिषो नि ज प्राणेन ते प्यारे॥१२४॥ पाछे राखत रमे स्न
मा॥ दिन सुत की नन नी का कामा॥ करत करत चिंता चिंत वसाई॥ नपाई रवेरो धर
न मुरझाई॥ पांचाली रत वर्मा पासे॥ धर धराइ न पद्दीने स्वासे॥१२५॥ दोहरा॥ प्रिय
म सत्योवडु दर्शन चिंत पुनि दिख भयो॥ चिंतार॥ दर्श शोक की संधमो तजे प्राणनि हवार
१२६॥ वचन नत पस्वी की या या दुर्योधन करदेख॥ दर्श शोक विन प्रान नाहि नीहि निक
से विधरेख॥१२७॥ चौपई॥ जब दुर्योधन त्यागे प्राना॥ तीनो निरख भये चिंताना॥ वह
रोई हिमन की नवि चारा॥ नाहनी गई हार हमारा॥१२८॥ कपि कहा वेस्तु तप पंडु सुत ना
ये जाहमनी चव सुर रखाये॥ कोयुधार का हु हि मोहि प्राना॥ जीत वह सरे वह बलवाना
॥१२९॥ जो हि कारी रम करये निज प्राणनि रवा हु॥ जगत त्याग सुर पुर गयो दुर्योधन
नरनाहु॥१३०॥ तीनो भाजे रथ चढ जीत वडु वेग सभारा॥ पांचाली गर विपु सतु रत
व मैं बलभार॥१३१॥ सव कपर्व दर्श भयो रेन पुछ जीत भारा॥ हमसाला चिंजवु द्रसो
भारवानकी उचारा॥१३२॥ इति श्री महाभारथे पुराणे सव कपर्व णे समाप्तम् शुभमस्तु
सं ॥१०॥ १ ॐ श्री गणेशाय नमः॥ अथ षोडशदीन सौप्तिक पर्व लिख्यते॥ स्वो
रठा॥ दुर्योधन सुत कसम्याम अधिक भयानक युद्ध रा॥ रहीनि शा इकु जामर युद्धेस
यो से जक्षीतिमया॥ सोरठा॥ दोहरा॥ धृत दुख्यो संसार पीध मे पुतर पयज्याइ॥ रेनयु
द्ध सम्याम लोक दे सभी दुराराइ॥ संसार पी उवाच॥ चौपई॥ द्रुपद सुता के पांचो
पुता॥ दिन रहत की नजधि करत तुता॥ धृत दुख्यो सिद्ध ही ससारता॥ रजनि हत सुनी नव
र धारे मन॥३॥ जब रथ नेमारे रता योधे॥ सम्याम की जे कस को धाइ कुसा

नकुदूसरसहदेवा॥जरासिंधसुतनेजग्यमेवनाया॥ईहदेोऊजीवततवचेतलाऐ॥जोरम
कलसरेदिजमोरे॥धर्मजसुनततघानुनिजसैना॥सुधनजगजेधर्मवहुसैना
५॥अर्जुनभीमजोरजेग्यहे॥जान्योअपयसोवैउंराहे॥पतीरवहुरदुनपराने॥
३ सुनयंघातिदोरततहांआये॥६॥हरिसमहूकोधीर्यधारे॥नपमुखजलसुगध
छिरकारे॥चिरपाछेनपुभयेसवधाने॥करसोमैनकीनश्रमजाने॥७॥स्वस्ति
चित्रसमभयेदिषाये॥हरिसोधर्मजपुनवुगराये॥धर्मजोवाच्या॥हेजगदीसजग
तारणहारे॥देसभ्रमनमुहिछिनाछिनजारे॥८॥द्रुपदसुताभारीसतशीला॥चयोदस
वर्षसहीभ्रमलीला॥अवताकेसभभ्रातहतानै॥इनकेशोकमतमरेमहानै॥९॥
श्रीभगवानोवाच्य॥हेनपजोइथाहरिजीकी॥अवशमानजानोजीयनीकी॥नृम
जीवतरहेइहीसुखमानो॥मृतपुनजोरहेहजीयजानो॥१०॥हरिकेवैनसुनतनध
र्मजवर॥कहीनकुलसोजाहुवेगधर॥द्रुपदसुताकोधीर्यधारो॥मोहिनिकटल्यावो
ततकोरे॥११॥मतसनभ्रातकेशोकनिहारे॥मरजावेसततेतीनारे॥गयोनकुल
ज्योंसोधीर्यधरा॥नपपरग्यानीद्रुपदसुतावरा॥१२॥दोहरा॥रथनउठायोद्रोपती
जाकोजोतुनपारा॥धर्मजअर्जुनकोनिरषकीयेसिरकेशअपारा॥१३॥सो॰नुक
रतमुखतेकहतद्रुपदसुतादुखवैना॥त्रयोदसवर्षवनदुखसहेअतिनिमानानि
हचेन॥१४॥चौपई॥अवभमनसोसुतरशोहताये॥जासमदूसरजगनदिखाये॥
जलवसुतपाचमहावलरूपा॥तेभीहूजेनिहारेअपा॥१५॥पुनतुमचारोहोराजसे
भारे॥रिदेहीठकीतभारतुमारे॥द्रुपदसुताकेदुखयुतवैना॥सुनहरिकोधर्मज
वहुसैना॥१६॥कहेद्रोपदीसोसचजाने॥सुनोशीलसतरूपमहाने॥दुपदअप
तुंहिपितासचारे॥जगमोतुमसमअग्याननननारे॥१७॥तुमअङ्गरक्षकतीअरंगधार्मी॥

१२३ तौ जोधर है शील क्रपाला॥ सुत इसे भ्रात न शोक दिखाले॥ मन धारे निज चित चिंता ले॥१
९॥ व द्रिनोधन त्रीधर्म दिखावे॥ गये सुर लोक मन न धार उमाहे॥ ज्ञान जीया समाचित तचिं
ताले॥ उन के सुरम तरि देव सावे॥ १०॥ ये नृम रहन शोक न न तजावे॥ शत्रु न के शिरि
हर्ष उपावे॥ अमन तहिरि के वाकु सुन मये॥ द्रुपद सुता मन न धीर उपाये॥ ११॥ द्रोपदी उ
वाच॥ नृम रे वैन सम्व समुझाने॥ पयइ कुंवन ती के रोवषाने॥ दिजसुत अस अली
नउ न की ने॥ मुहि सुत भ्रात कपर हतली ने॥ १२॥ जो दिजु जीव तजाइ विकाली॥ हमुरे
मन रहे शोक क्रपाली॥ १३॥ दोहरा॥ वहुरु पवन सुत को कहे द्रुपद सुता वरज्ञान॥ नृम
सदक्रम पुने भुज व लेर हत भार गरवान॥ १४॥ जो दिजसुत जीवत रहे मम सुत भ्रात
न मारा॥ मो मन सुख वत्नु मे हो हू मन तव हेो सम्व पुगटार॥ १५॥ चौपई॥ दिजसुत सी
सु कार स्ले ज्ञा वम॥ तब क्रामा को द शुदिषा वो॥ १६॥ धर्म जो वाच॥ अस्थामा दिजव
ंध राव॥ पुन हमुरे गुरु पुत्र कहावे॥ यद्यपि पाप की ये उन भारे॥ हतन न योग नही
दे वरन्नो रे॥ १७॥ निज पाप के फल निज पावे॥ हरि के सौ पो इरि मुहि भावे॥ दिज के
हन ते निहि सुत भ्राता॥ जीवे न्योहि सुनो प्रभ ज्ञाता॥ १८॥ संजयो वाच॥ ज्ञान पर न
प बाच सुन्नायो॥ धीर धार मुख ते पुगरायो॥ न्योहि हरते दिज के व उ ज्ञाना॥ पयइ
क कोरर ह मन रोवषाना॥ १९॥ दिजके माथे मणि उजी क्रारी॥ हेनी तिम यो ज्ञो तनि
वारी॥ निर मणि के फल जग को धामा॥ सवल न्योहि पर मरे महाना॥ २०॥ प्रेत म त
के उ दिजने निवरा॥ क्राड मये ते जु ऊनी तिवरा॥ ओ रघने गुण है मणि माही॥
तातें भाव न तेहा पुगराही॥ २१॥ तासी मणि उतार मुहि दीजे॥ हमुरे मन ते शोक मिरीजे
सुन सभी नर प्न व उदै रयो॥ नकुल सारथी होर धरायो॥ २२॥ न तव धर्म जसो हरि
गरारे॥ अस्थामा गुन भाग धारे॥ तिहि के दोणादी घोइ रू वाना॥ जो हर पर झोरे

हतेमहात्मा॥३२॥परस्परहारणक्रौविविधैर्दिव्यजन्मनो॥रावणस्येवरामस्यहिरण्यपथाने॥मततेऽत्रा
हतेसमहात्मा॥३३॥हमस्तार्जुनस्सणतायचजाने॥भीमसेन
नुभीमपराक्रमेर॥पवनपुत्रक्रोवलेसंहारे॥३३॥हमस्सार्जुनस्सणतापयजाते॥भीमसेन
क्रोरथधरावे॥धर्मजक्रमेहेविस्मयमतली॥ज्ञाइभीमक्रौरथक्रतेज्ञ॥३४॥तुमहोरथसम
दारमारे॥छनकविघनहमृरेतुमरारे॥हरिश्चार्जुनक्रारथुदेशाये॥भीर्मानक्रूरगयेवे
गधरायेम॥३५॥उतत्तरनपसोदिजश्चसप्यामा॥विराहोगयोवरयुधधामा॥स्पाञ्चाये
स्ततवर्मादेऊ॥क्षपुत्रःपुनेजावतभयेसोऊ॥३६॥ङमातरोदिजवरस्तगमाये॥म
जुनकरहरिध्यानलगाये॥व्याससदेवीदिजवरदिशाये॥चारतानिसकौगायस्तनाये॥
३७॥पार्थेस्तावतभीमनिहारो॥तापार्थस्तजैद्रुपसे॥ततधिनधनपरवानचउ
ये॥नेऊवानयेहरिउचराये॥३८॥दोहरा॥अर्जुनसोयद्रुपतिकहेस्तावतहेतिषवा
न॥करेउपावतुमततधिनेमतज्ञेरभीमवलवान॥३९॥अर्जुनरथुतेकूदकरहरि
पगसीसनिवाइ॥देवीदिजवेवाचतेदसदिसगूंजिमहाइ॥४०॥चौपई॥अर्जुनभीम
धर्मजक्रौजोरे॥स्तावतेस्तुतिनेजस्तुतिहोरे॥ज्ञेमगपावेतहिजरावत॥स्तुतिमया
नदसदिसदिसावत॥४१॥अर्जुनधनुधरवानप्रहारो॥स्तुतिवउतेजेस्तुतिनिवा
सो॥प्रमपरदुहूवानकीछागना॥जीवजंतजरमयेमसमगना॥४२॥यामोव्याससनार
दसमणादेऊ॥अर्जुनसोभाषेवचसोऊ॥४३॥व्याससोवाच्च॥तुमक्रौसेतीछेसरपरहरे
जोहरिकेतेजसकलजगजरहे॥तेडापापनुमस्तोस्तुतिभारे॥वहूनमुक्ततावोहरिप्यारे
॥४४॥अर्जुनोवाच्च॥येहमस्तपनोसरनप्रहारहि॥दिजवेवानेतेजप्रजारहि॥ततदोऊ
रिषिदिजमुनकोजाये॥भाखेमरवतेसचप्रगराये॥४५॥व्याससोवाच्च॥तुमनिजजनतेजी
तघपाये॥तिनकौगनतपरतनाहिकाये॥पुनकौसेवानप्रहारो॥ज्ञाकेतेजसकलजगजा
रो॥तिनस्तुतिहिपितासमेता॥निरहेवेपरोनरमसेरेवेता॥४६॥अर्जुनस्यप्रामोवाच्च॥

दोहरा॥ज्ञानप्रकार नहि धपड़ी राघव नक्ही विधनाह॥योंतुमकहो सकरत हो यांते जीय सपु
पाह॥४५॥व्यासोवाच॥तुमने केअर्जुन सो कहे हो चहिरा घनपर बीन॥ हरि अर्जुन सो
कहे दिव्य जवरम्बनअधीन॥४६॥चौपई॥ला जतदि जमा घानी यराये॥ ठाढा भयो मुख
मोन धराये॥ नारद व्यास तनवचन उचारे॥ योंदिज तुम सो की नविगारे॥४७॥दोहरा॥ मम
ए कनिगले जेग ऊउदर नफारे कोई॥ सो पातक जे करे गुरु हतन योगन ही होइ॥४८॥
अहि गुर सुतपुन व्रह्म दिजपुन तुम हो वहु ज्ञान॥तिं उहू हत्यो न वणत है सारव वेदप
रमान॥४९॥चौपई॥सुतोनि वारण हरिहत वान॥ जगहत पापुन से दुमहान॥४८॥ श्र
श्रीभगवानो वाच॥ जो दिज सस तहे मन हरि इन्द्रावे॥ अर्जुन दुहु वानहट ज्ञावे॥ जेमणदि
जे के माथ सराव त॥ काहु दे दिहि हि सभ मन भावत॥५२॥ अश्वथामो वाच॥ पांडु वान
के हतन को मुहि परहा सो वान॥ अभम नजी य के गई वको करे भस्म सच ज्ञान॥५४॥
राघ ले दुख जिन भाग सभ वान हमार अमोर॥ नातर नहे सव कलकुल करे दाहव लघोर
५५॥श्रीभगवानो वाच॥याते अगे रमवर दीना॥ अभम न गर्भ हि सुतहोइ पुरी ना॥
सा वर्ह वल न रा ज सभा रे॥ तो हि वा न के से निहि ज्ञारे॥५६॥ये तुमन हि माने मम व
चना॥ घरो स राप भार जिह रचना॥ जिह के ते ज घन प्रम धारे॥ नातर रह मुरे वा क
सेरा॥५७॥वृषशपाच यनो वाच॥ दिज वर ह रि के वचन मन ना ये॥ दई का ह मणि अर्जुन ति सिस्मा
ये वा वो॥ सवल जन न के जी वर न्याये॥ मे च श कै त अर्जुन दो उ वा न ना॥ की यो विरसा जि
ह ते जमरा घ्ना॥५८॥ मिटी अग्नि नवर री नि र या ये॥ दई म ण अर्जुन को रथा ये॥ रि
जमुनतसा जो रहम स्त्री उन तो मे स नाम सभ मेसधा सो तन रहयो॥६०॥ उ तर घ उकी उ रसि
धा यो॥ तपु मा धन को हि नु उप ज्ञा यो॥ या तपु त्रे नि जपा प मि टा ये॥ तनमे यम करे

अवधविहावे॥६॥दोहरा॥दोउबनिजगहिकोचलेभीछतेगअग्निधारा॥गरनमेरेरि
घद्रोपदीतासोंकरतउचारा॥६२॥भीमोवाच॥कौरवानतुहिजासमेधात्याअनस
न्तिभारा॥तवरमतुमसोकरहेथेमग्नसोवचप्रगटाइ॥६३॥मतम्हिवितावोजीउमोर
मथावैगज्ञाउ॥इकाँदिनइनेकेसीसपइनकीचीयरदनाउ॥६४॥चौपई॥रम
जीवततनुनतुमसुमदीने॥इनकीचीयरोवेमतहीने॥नितकसीसपरकेराखिला
रोगकरेमदुनकौरवकीनारे॥६५॥तवतुमयाउत्रसमुहिदीना॥तुमतेसवकेनहोइ
पुत्रीना॥इवेस्वकार्थवचप्रगटावे॥कौरवानकोहततनसकोवे॥६६॥कसवतुम
तेउवचननविचारो॥निजरछकहरिरूपासंभारो॥हमसमजीवेतोहिसीसपर॥
गहेवैरयोंतुमचाहतवरा॥६७॥निजअरकोसमभ्रातनसमरारण॥हतुकीनेसण
कणवलैघन॥तिनकीचीयसभकेसउपारे॥सदुनुकरतहैअनुनपारे॥६८॥तुम
रेस्ततवपुछदिपाये॥कीर्तिवानसुरलोकसिधाये॥हमअसुधामसोयुधरता
थे॥तासिरतेल्यायेमणिकहाये॥६९॥लेमणचितचितानकरगेरा॥हरिचरनन
परसीसधरावा॥अर्जुनोवाच॥दोहरा॥द्रुपदसुताकेहाथतवपवनपुत्रमणदी
न॥चितत्याउगईशोकचितपञ्चालीपरबीन॥७०॥अर्जुनकोदईद्रोपदीमस्त
तेकहोउच्चारा॥कर्णावाणतुहिसीसतेलीयोजुभकरउतार॥७१॥चौपई॥छत्र
केरथामणनुमधारे॥ज्ञानिशोभापावोसुविचारे॥७२॥अर्जुनोवाच॥थामण
सरनपसीसमुहावे॥धर्मजकोदेवोमहिभावे॥७३॥तेमणधर्मजसीसमुहाई॥र
निसमजोतसमंदिप्याई॥सभेवधाईनपकोदीने॥धर्मजहरिसोंवचेहेअधीने॥
अ॥धर्मजोवाच॥हेयदुपतिदीननसुखदाई॥तुमहीधरोहमुहीहिताई॥तुहि
गुनकहतनपावोपारे॥जैसेसहस्रफणकहेउच्चारे॥७४॥श्रीभगवानोवाच॥

इनतेबंधनभस्मरघोरा ॥ इहिसमभईसब्दपावेसा ॥ ७६ ॥ वैसंपायनेउवाच ॥ दोहरा ॥
दुर्योधनकेहितनकोधतराष्ट्रनसाथ ॥ तिसोसोकजोयथारुग्नितिममतेपरके
माथ ॥ ७७ ॥ तवसंजैधृतराष्ट्रसोंसुखतेउचरेवैन ॥ ईहिशांतहैसभजगतकोमनतत्व
कोचितचैन ॥ ७८ ॥ चौपई ॥ भीषमसुसमकोवडांरहावता ॥ तेभीपरकोतिहिसमुझावता ॥
समकोगुरद्रोणाचार्यवर ॥ तेभीपरकोतिहिसिषाधर ॥ ७९ ॥ वहुरदखसभकेसुखदा
यक ॥ विदुरसहितरहेशांतहितायक ॥ सभुरिषिदिजजोवडेसज्ञाने ॥ सिषावचनर
हाइथकाने ॥ ८० ॥ तुहिसुतकाहुवचनसुनायो ॥ कोयेकर्मतेसाफलपायो ॥ अववर
हेचितमोचिताधरहो ॥ मेटेनहेपनीजनोविचरहो ॥ ८१ ॥ धनयोवनअरतेजभजा
वला ॥ समेरहोवेसमेजानीहरला ॥ दिनदिनआयुरवीत्योजाई ॥ इकदिनयमुगरजे
सिरआई ॥ ८२ ॥ उपजविवनदोऊहरितेजाने ॥ काहूकेकरवंधुनपछाने ॥ विनुहरि
भजनजनमवहुपावे ॥ जेमेंजेमेंकर्मकमावे ॥ ८३ ॥ रिषिसुरमुनसभुकालगरासे ॥
विनाज्ञानईहिसंशनजासे ॥ तुमचितमोचितअकार्यकरहो ॥ धीयधरिदिज्ञान
विचरहो ॥ ८४ ॥ सकलजगतकीइहीगतथिरनरराववेकोइ ॥ निजनिजअवधपु
राथजगजनमरमीहिजोवेसोइ ॥ ८५ ॥ चौपई ॥ तुमकउपुनेसुतहतेदिखाये ॥ धरोन
चितज्ञानसभुजाये ॥ वडुसंग्रामधारमाही ॥ गयेसुरपुरऊंचेपदपाही ॥ ८६ ॥
तुहिवुधज्ञानसभीनभारी ॥ सभकेरिदिमाहिसिषातुमारी ॥ असनकरोतुहिसिषा
धारे ॥ रहोस्वस्थितीयज्ञानविचारे ॥ ८७ ॥ वैशंपायनोवाच ॥ इहिप्रकारवहुवचन
सुनायो ॥ संजैदीनोंधीरमनआयो ॥ पुनअंधाहीवहुनाममंगा ॥ जिनकेपितपति
हतेअभंगा ॥ ८८ ॥ शोकातरसभुअंगाकनारे ॥ रोवतचलेचीरतनफारे ॥ उपरेके
शाथसिरकूटे ॥ जारजारभुममारेछुटे ॥ ८९ ॥ सोरठा ॥ सवाचार्यअसघाम

सु तव मोइ हित नीन हीं ॥ धृतराष्ट्र के धाम कछ जाये रण कौं मन तजु ॥५॥ चौपई ॥ इन्हैं रैन पु
छ्व कीं सब लीं जाय ॥ दृग सुत न कहीं धृतराष्ट्र साय ॥ पंडु सुतों के भय री दिखारे ॥ जायो
सिव दहो दिजन तनकारे ॥६॥ तव हरि धर्मजु भ्रात न संगा ॥ गये धृतराष्ट्र निकट रसमं
ज्गा ॥ संग्रमा तक सहदेवि वल्लारी ॥ जरासिंध सत तन पहित कारी ॥७॥ अथ युत्स सह
तस भुकरा इमि लाने ॥ धर्मजु धृतराष्ट्र चरन गहाने ॥ धृतराष्ट्र नप कों अंग लगाये
कीन लद नाजि हिरक्ष्मनु नपाये ॥८॥ पुन अर्जुन धृतराष्ट्र चरण परा ॥ सीसु धार कही
विनी घनी वशुभनु लसहदेव दोउ चरन पराये ॥ सभन रेन लीकीन महाये ॥१५॥
धृतराष्ट्र उवाच ॥ भीमस काह मोपय नहीं आयो ॥ कैसे समे नाहि दुर्योधनयो ॥ वैशंपाय
नोवाच ॥ हरि सभ घट की जानन हारे ॥ मनहि विचार रचना वरधारे ॥१६॥ मन रहने
भीमको यो वकछाधि किन्हि ता ॥ वल धृतराष्ट्र जि रहि धार नाहि हिकिता ॥ लोहमयी इकु भीम
वनाये ॥ धृतराष्ट्र के निकट रल्याये ॥१७॥ ने अध धृतराष्ट्र गले मिलाने ॥ धृतराष्ट्र को
पधस्यु रकरठाने ॥ कैसे सेवल कैसो क्रोध कीन छमि ॥ जसो सत वैर मुरव रधारचे
लततत ॥१८॥ पुन होम्सर धगिरयो भमनमाही ॥ कीन लदेन छमि तिभार नदाही ॥ सं
जयोवाच ॥ हे धृतराष्ट्र तुम किं उरद नाये ॥ कहो निज जीय की गथ पुजरावो ॥५
धृतराष्ट्र भेवाच ॥ दोहरा ॥ भीमसेन मुहि शोक छमि तिहत्यो छक काथ कारहो ॥ याते रते
रसारस तकिं उरहीं जीवे नारहा ॥१॥ संजयोवाच ॥ चौपई ॥ यो ते निं वितन कारह मधु कीजे
वरोरह धुमहिं रेवनस न्हीजे ॥ हरि घट घट के जानन हारे ॥ मडो तीन्ह शहिरजा पवि
न्वारे ॥१॥ लोह भीम तुहि गरे लजायो ॥ या को वल तुम हाना करायो ॥ पवन पुत्र
ज्ञाने दत भारे ॥ ताहि निकर देह रषे तधारे ॥२॥ भीमसेन तव वचन उच्चारे ॥ सरे
नातनु मव उरमारे ॥ हो तुम कहो निज सी सुकार रके ॥ ठुकार रेदु तुहि स्वरस्न कमलपर

क्रोध

१२६ १३॥सुनधृतराष्ट्रईशकीरचना॥हरिउपमाधरआपतसुचना॥धृतराष्ट्रोवाच॥
मोहिंभीमसचायो॥बहुउपकारमोहितेपायो॥इकुइकुकोपुनसंगलजायो॥अ
देधृतराष्ट्रसबबचनसुनायो॥१०॥जसबतुमहीचरपुत्रहमारे॥पंडुभ्रातकेसुत
कूतिप्यारे॥मोहिसुतेजेअकर्मकरायो॥ताकेफलजसबलहेमहायो॥१८॥दोउदिहकोरि
धृतराष्ट्ररुदनायो॥दिबधर्मजादिसभरुदनउठायो॥श्रीभगवानोवाच॥हेधृ
तराष्ट्रदुर्योधनकसादेअनुहिसुतयेरणहतेजसबादे॥उहुसुतयेडाहिदासनुमाप्रेअ
रेसबतुमरीहितमारे॥१०॥धृतराष्ट्रउवाच॥जसबमोकोइनसमकोउनाहीं॥ध
र्मजसमतेकृष्चिकोदिषाही॥ममसुतजेमहिंबेनसुनावता॥केसेसुमनकोहेपुग
रावता॥१०॥धर्मालभ्रातजेवरबलजाने॥दुर्योधनउनशत्रुसमाने॥१४
दोहरा॥धृतराष्ट्रसोविदाहोधर्मजभाषीज्ञान॥गंधारीकेमिलनहितहरिस
एगबेमहान॥११॥गंधारीपीछेगतरसकलत्रीयातसंग॥रुदमलालजाये
तहांव्यासदेवनिरभंग॥११॥गंधारीनिरषतकेहेव्यासदेवसोंवेन॥ममसुत
कोवेरतमयेसुनोसभेमनिगनेन॥११२॥चौपई॥तुमकेहोतेममसुतहाने॥अ
धउपावनहोकेरमहाने॥व्यासोवाच॥जेरउयोकेबचननमाने॥निरहेबे
जैसेहोमनजाने॥११३॥हमनुहिसुतसोंबहुसमजायो॥गरबतहमरोकह
नसुनायो॥तेहिसुतनमहिंजधिकपिजायो॥तुहिसुतशोककेवचपुगायो॥
११४॥तुमसेंभीबचहमुरेनाहसुनावो॥नकरेताकाफलद्रिणायो॥हतेपरो
जैबननरहावो॥जैसेसेचितगर्वबसावो॥१५॥तुमसेंभीहमतसउचरायो
सोहिसुतबचमुंहिनाहिभ्रवनायो॥निकरेहेडहिप्राणतजोवे॥तुमरेरिदेशोअ
उपजावे॥१६॥गंधानरनाहिरुदनकरावे॥एहसमापुनहाथनजावे॥तेबच

ग॰वतुमकाहिभलाने॥ जेंपाहमनहीनोंसहीप्रगराने॥१०७॥गंधारीउवाच॥ हमभीयाहिनघोजी
घजानत॥उतमवचनाहिपुत्रनमानता॥मातपितावचठेनसचानैमतेनसङ्गतइहीप्रम
पाठे॥१०८॥इशइछङ्गवारिदेजनाइ॥पोसोचलेनकाहिचलाइ॥१०९॥व्यासोवाच॥दो
हरा॥दुर्योधनशतगुनीधर्मजतुमनीमेवा॥करेहेतङ्गनिजानजीपयानहिजानङ्ग
मेवा॥११०॥मतनधधुधारेशापतुमतापरेरासनलेहु॥तुहिपुत्रगनतेसुरवङ्गधङ्नि
हन्वेतुमकोदेह॥१११॥गंधारीउवाच॥चौपई॥ माकोइहिप्राणनेप्यारे॥पयनिजजीय
कीकहेउचारे॥हमरेसुतसभभीमहताये॥इहिदुखुमनमेंदेखोवसाये॥११२॥व्यासो
वाच॥पवनपुत्रतुहिसुतयेराने॥कहेंसाचसनहोवउजाने॥उनसोतुहिसुतसप
धराचित॥देससंपदासभलीनोजितन॥११३॥वर्धत्रयोदससउनक्रमपाये॥नजानेपिरे
वनवनभरमाये॥इहिवचगंधारीसुरव्यासे॥पंडुसुतङ्गोहीरजाइप्रकाशे॥११४॥गंधा
रीकोमहोव्यासतव॥हीरिसगपंडुसुतङ्गायेहसभ॥इनसोमिसोजीकपरकारे॥मत
कधुकरोतीछुप्रगटारे॥११५॥धर्मजजाइगंधारीकेपग॥सीससुधारस्योंचितेकालग
गंधारीनिहिगरेलगाये॥दुर्हृदनङ्गनिकीनमहाये॥११६॥गंधारीउवाच॥दोहरा॥
दुर्योधनकेरुधरकीतुमनेरेमुरवतेगंध॥इहीकहतङ्गिरपरीभनपुत्रेहतेकेफंध॥११७॥
पुनहोइसावधानचितकरेधर्मजनारवेन॥मानयाहितेदोसुकधुनहिहमारसुरवदेन
चाहरेहेदुःसासनहमदेहेकरागाधार॥उदरपोछगकरेहमसभीभार्तानिरधार॥११८॥
चौपई॥दासनसमनहिसेवकरावत॥रहतशंतसभुजगसुखपावत॥तोभीउनइहिग
वनहीमानी॥जवेरुरमरयोदुःसमानी॥११९॥कहूयसोक्लिसादेसुहमारे॥मानातुमहे
जानीवचारे॥१२०॥गंधारीउवाच॥सुतनमोरिउकेरावघाले॥हमससभजानेरिहेमहे
रे॥१२१॥उनमातावेवचनसुनाये॥मातेपलइहिप्रमउपजाये॥ङ्गवहीरहेतुमनहीस
नप्यारे॥मकेसोवहमसाहिनुधारे॥१२२॥पुनङ्गजेनङ्गपवरनगहानो॥ङ्गधकोवेनीमसु

सेपुत्र राने॥ पच न पुत्र तव पग लव राने॥ तव गंधारी कीन वचाने॥१३४॥ गंधारी उवाच॥
तुम ही सध रपी धो की चोरन॥ कुरु न्न पड़े र दुसासन के मे हन॥ भीमो वाच॥ मातारु धरने
र्च जु हमो॥ भर रुंख जलये हीनु रव धमो॥१३५॥ लोकन के भय मान न नेहे ते॥ मरु हो सधर
रुम क्रम चेस चेते॥ नात रर कृन मे हि छत हारी॥ धो की स्यो नु म मो पुत्र दारी॥१३६॥ तव धर्म
गंधारी पग लन॥ मुख ते ते देव च न सु न स्वर्ग॥ धर्म जो वाच॥ माता तु हि शत सुत जुर
मा के ने॥ हते मे हि तृीय जा नु मर हाने॥१३७॥ जो भर रण मो मे हि कही जा॥ अधोर वि सी को
दे सुन दीजे॥१३८॥ दोहरा॥ गंधारी तैहि जो पर वां ध्यो वस्तु र हानु॥ ति चक भर जाति को
ध मो वस्तु उ दायो मान॥१३९॥ इस जुगु री न्तु पच रन न व परी ट्रि ए गंधारी॥ ते अन घ तत
छिन भस्म हुइ सो पभयो निहि वार॥१४०॥ चोपई॥ इहि दिष्ट जुन्न व हु भय मानी॥ धर्मी
भीम पार्थ वल मानी॥ न कुल सह देव भार भय भाजे॥ जाइ धर्म पैं नाम न दाजे॥ गंधारी
ष सभे सुला धो॥ करण च मुख ते पुत्र रायो॥१४१॥ गंधारी उवाच॥ मतउ रवो है पुत्र प्यारे
पाप्मो कथ न देसुन सारे॥ रहो रुधिर जीय घ नि वारो॥ तुम को कथन शापुरु मारो॥१
४२॥ दुपदसुता के गंधारी तव॥ कुलाय लाय उर स्तीन्नी हित सत॥ दुहु रुदन की नो नि
रधारे॥ कुन्ती नयन कहे उचारे॥१४३॥ गंधारी उवाच॥ पुत्री तुम भ मे हि सभाने॥
पुत्र शोक रदेत पनाने॥ मम तुम सुत रण भस हतायो॥ इहि दुख दुहु की रि दे म दायो॥
१४४॥ पत्र हरि इधायो इहि माही॥ कहि उपावेच से वधु नाही॥ उरे शोत हमं दो उ दुखारी
ज गत जानि त्रिरि हि मार विचारी॥१४५॥ तुम को इ ही अ सी सर मारी॥ पुन पा को सुत ते ज
ज पारी॥ तुम जे भ्रम म पायो इहि पाछे॥ का व सरयु भोगो भाने दुजा छे॥१४६॥ दोहरा॥
ध तु सुन न सो पुन कहे गंधारी मुख वेन॥ पर्थ च पोद स वीत है सुन धर्म जु सुखदेन
सोह मात चु ती मती तुम रे वि रहे संताप॥ तिहि दशे न देसु खघ रो विलभ न करो ज मा प॥
१४७॥ चौपई॥ तुम देव कुती श्र पा वे॥ विरहि विधु रे नि त जिन ते रो गावे शपाय नो वाच॥

धर्मजादिपांडुवहरिसा॥सभा॥कुंतीमातकेहेतमिलनतव॥१४८॥कुंतीसुन्योजवकानयेयकान
धककहकैसधरहीनजायै॥निहिसुतमातपरीनिरधारो॥सुतेविंवनचितधरीमहाने
१४९॥इकुइकसुतपगमातलजोहिता॥धर्मजमातसीससउरधरतत॥सावधानमाता
कीनीवर॥कुंतीसमसुतकंठगलयेभर॥१५०॥मातसभीसुतकंठगलजाये॥मुखसिर
चुमतप्रेमननमाये॥इनकेतननतेव्रणरणमाही॥दिषमाताहुगनीरचलाही॥१५१॥
वहुरद्रोपदीजाइमिलानी॥कुंतीकेचरणोंलपटानी॥द्रुपदसुताकेसुतोवियोगो॥कुं
तीरदनाईवहुशोगो॥१५२॥द्रुपदसुताविहवलसधभली॥पुत्रेशोकनदीमनकूली॥
५ सासस्रनोधार्यनकीनन्नाति॥सुतनसुतनसमरोवेजेतेतत॥१५३॥पुनकुंतीसमस
तासमेता॥गंधारीपचगईवहुचेता॥जंकमालकीनीहुगजलढर॥निजनिजपुत्रेशो
केदाउधर॥१५४॥रद्रुनकपारवरेदुगभरभर॥नाप्रलेतपुत्रेशोकेधर॥कुंतीरहेनीर
पुत्रहतकव॥सिप्यासुखुलीनकुलवंधहतेसभ॥१५५॥गंधारीउवाच॥हेकुंतीकाहेत
दनावे॥नुहिसुतजीवरहेसुखपावे॥हमरेसौपुत्रोतेकोउ॥नाहरव्योदेवेसुखजोउ
हमरेधीर्यउरनिहारे॥तुमभीमनतेशोकनिवारे॥१५६॥दोहरा॥पुनव्याससभारर
हमसोगंधारीउचरान॥दुर्योधनजेभमस्तामिरतरूपरोनिमान॥१५७॥चोसोउठा
वेठततेजनिजनहिमरान॥हमरेरचवतुममानहेसाचेकेहेसुजान॥१५८॥सोरठा
धर्मजनहमव्यासगंधारीसणभमरण॥भरतशोकहेसासजोरसभीसंजानारनर
१५९॥चौपई॥हाहाकाररररतसभुनारी॥पतिपुत्रोकेशोकउभपारी॥रोवतसीसकेशउ
परावे॥जापहूचेरणभुमविसमावे॥१६०॥निजनिजपतिपुत्रपितुभ्राते॥लेलेनाम
रोवततननताते॥हूठतदुर्योधननतनपाये॥दिषधर्मजववडुरदनउठाये॥१६१॥गंधारी
मरधगिरपानी॥ज्योमधुलीजलविनमुरझानी॥चिरपायेदोउकरनिजमाथे॥मार
नधिननधिननवउमसाथे॥१६२॥रदनकरतसुखवेतेउचरावतसुतनुहिनिकरवउन

१२८ पदिबरावता॥ शिषपंडुतनकउगनीचतुरस्प्राति॥ तोहिनिकरशोभतसभसमचत॥ येतुधजु
नज्ञानीजगभारे॥ बांधतनवउहितुमगतुमारे॥१६३॥ दोहरा॥ ज्ञाजुतुमारेचहूदिसवै
ठेमानीससाला॥ कथनचलेउपाकसवकहिपरवनभुनमाल॥१६४॥ चौपई॥ दुर्योध
नकीत्रीयशोकातर॥ जधारीसलपतिसिरलेकर॥ मुखसोमुखजोरेंरुदनाने॥ नैन
नीरभरचौरभिजाने॥१६५॥ गंधारीउवाच॥ सुततनुहिजीयजिहिंचंदसरवरा॥ कबून
देषीदुजउघारनरा॥ कवतेउसीसनगानवैठारी॥ तुमविनरोवतदुखकीजारी॥१६६
वैशंपायनोवाच॥ दुर्योधनसतलषमननाम॥ तातनस्यापेडुकउंसकाम॥ कर्जुनस
नभमंनकीदेह॥ तेमिल्यायेदुकसनेरा॥१६७॥ पुनरविसुतकीदेहिमरा॥ नाम॥ पासम
नीरजगवीरपृथान॥ कसोदेहिदुतीदिघरायें॥ केसउपरवदुरुदनउठाये॥१६८॥ कहि
देसुततनुहिसमजगमाही॥ जोरेयांधकवकोनदिषाही॥ भारीरुदनकीनचिंतानेमहि
घसभशवदमपाने॥१६९॥ रोवतगंधारीहेवचना॥ इकदिनदुर्योधवउरचना॥ क
सामानसुहिकाशिवधरहे॥ चिजेरोइसमतीपुजारहे॥१७०॥ इमकहीसुतयासोसुर
लोका॥ शरेहेरुषिपरलीनीरशोका॥ निरच्वेविजेभषतेपाये॥ पातेसभजगसुखदुखपावे॥
१७१॥ इकरिषिमाकेवचनकुमारे॥ कहेरुपासोभुभदेहोरे॥ शिषिउवाच॥ दुर्योधनकं
अचजनकर॥ येतातुमदेषोनिजदुजभर॥१७२॥ कोउशस्वुतिहिकारनसाके॥ उ
लषयोधकेधरझीतताके॥ नवहमसुतसोकहीउचारे॥ होइनिधरतुनिकरहमारे॥
१७३॥ दुजउघारदेषोनमरातन॥ रतनसकेतोकोतोउरण॥ भुमपथकुपीनभीन
दिधारे॥ सकलचगनतनकरदिघरावे॥१७४॥ सुतसभयोनगननचितलाजवसा
देभपूलमानलकरघोतीपाई॥ दादुहोयोदोकरजोरे॥ रुषिमानहोयोकंजनिहोरे॥१७५॥
दोहरा॥ हमउघारदुजनाहितनदेषोदुखलगाइ॥ पुष्पकीरहीदुखहिनहीरगनतल
गीनजाइ॥१७६॥ निमीतोरसनाजीद्दातासोचुरहरकीना॥ रमेसनालहीरकीस्व

न लेषन कोपर वीन॥१७७॥ धर्म न थाध र्मा तामस कल्प जगत सुखकार॥ ताते धामी हिजे ब्रिय व
लु चले हम पार॥१७८॥ चौपई॥ दुसासन शत्रुन के सीस सखे रोई॥ शोक परम अरम रहि जग रोई॥
बैरार नपन की नार शोक धरा॥ रोवे नि जानि जपत सीस नवार॥१७९॥ अरभ्भ रा के मिरधर
व दुदुख॥ द्रुपद सुता दिये न पथे वल मुख॥ नि न की नार शोक धरभारे॥ रोरे व दुदुख के श
षिला रे॥१८०॥ पुन उं धामी हरे बुलाये॥ शोक नाजन मुखते पुगाये॥ उं धामी उठान्च॥ मो स
न ङ्गो हित नंद धरम भारे॥ पंडु सुता के युद्ध ङ्गपारे॥१८१॥ हते घन मोपरे दिषावे॥ या दव कोइ
न्वी हिगार्दु षावे॥ तुम री सैन ङ्ग उं न ङ्ग पारे॥ चाहत युद्ध न हे तभया रे॥१८२॥ चे तुम व
रजित हि उयुध होवत॥ सकल जगत हि उपजे मे विजोरत॥ इहि सम अङ्ग घरे सी सतु नो रे॥
देहो शापु हम तो हि उचारे॥१८३॥ यो तुम मम कुल हानि दिषाये॥ सो नि ज कुल हत ने दे
षु महि राये॥ जैसे हम पर ङ्ग पर्दा विहानी॥ तुम भी या सम कुल होन हानी॥१८४॥ दोहरा॥ उं
धारी ते शापु सुन हसे मुकंद मुरार॥ हम सतन के मुख को मन लते वहमला ल पुगार॥१८५॥
श्री भगवानो वाच॥ मम कुल भी ग वेन सदा दुष्ट न ज्ञाने कोहि॥ ब्रह्म सपुर कलन रमे रेग
जा न न रहे न नमाहि॥१८६॥ चौपई॥ उं धारी का शापु सुनाये॥ धर्म जादि सम हीं नवये
मत उं धारी ते ज्ञानपा॥ हरि को भाव न धरे शरापा॥१८७॥ हरि उं धारी सो पुगाये॥
न्हपे शापु मत धरे मन हाये॥ सो शरीर सको देस न नाई॥ सभ गि वंगार सुत तो हि धराई
१८८॥ नि ज कर रत न ते डारि स्वर्ग पाये॥ कर्म को फल उपजा दिषाये॥ हरि पुशंन ये उन
पर होवत॥ तुम काहे या दुख भ्रम रोवत॥१८९॥ सकल जगत ये हरि उपजाये॥ नि जनि
ज धर्म सभी को लायो॥ दिज को विद्या तपु ब्रहिराने॥ छत्री को युध धर्म धराने॥१९०॥ वैस
धर्म विवहार रचाने॥ सुदु सेव सभ भक्ती चित्त न भावे॥ बुध सभ आर देषु बीचारो॥ नच मद को
शापु न धारे॥१९१॥ तुम रे सत रण भूमय युध धारे॥ उत्तम गत सुरलोक हि दिषावे॥ सो उंम

तनमधुधरोमराषा॥हमभीदेव शापुत्रपानाम१९३भयोतेमवहूनधदेपतसराा॥गंधारीह
रिसोकहेभयमना॥गंधारीउवाच॥हेहरिजवहमतधनउचारै॥तुमभीमनतधुकहे
सचौरे॥१९४॥दोहरा॥कहतगंधारीउठगईहरिधृतराष्ट्रसमीप॥कीयोप्रणामधृतराष्ट्रउठेहे
यदुपतिकुलदीप॥१९५॥वैठेचिरतककतककहेधृतराष्ट्रईशसोवैन॥कहोप्रभमनयेजनह
तेरणभूममोमरगनैनन॥भगवानोवाच॥चौपई॥जेतेयोधहतेरणमाही॥तिनकी
गणनपरतनमधुनाही॥धर्मपुत्रतिहिसंख्याजाने॥यविनदूसरकोनपधाने॥१९६
चौपई॥धृतराष्ट्रकहीहेधर्म जवरा॥तुमहूसंख्याकहोप्रगरधरा॥१९७॥धर्मजउवाच॥
दोहरा॥संख्यायोधनकीकहोयोरणभमरहताना॥कैरोश्रवणधरध्यानचितयेंकातें
परमान॥१९८॥दसशतहोइसहस्रइकुशतसहस्रलषएक॥शतलषतेइककोटहेश
तकोटइकअरवदटेक॥१९९॥इकुअरवदअरसाठषरकोटअरलषएक॥वीससहस्रवन
रगजतुरंगहतेरणमुवचेक॥२००॥चौपई॥पंचदससहस्रइकुशतऔतीनअरु॥हेते
रणेउरुगयेजैअरुनभ॥भीष्मद्रोणरविसुतजैसेअर्जुन॥तिनकेवलेउठयोधनतन॥
२०१॥तिनकीसुधकछुनाहिदिषाई॥कहाभयोकिहिपरेसुजाई॥धृतराष्ट्रउवाच॥सुन
जोसंख्यातेहिउचारी॥एकवर्षमेगनीयेसारी॥२०२॥तुमकैसेईहिसंख्याजानीया
सोकधकरउनतनवषानी॥धर्मजोवाच॥जवहमतीर्थकरतमहाने॥लोमसरिषिमोके
वरदाने॥२०३॥जिहिहयुधमहिहमजाइसुचारी॥संख्यातिनकीजानेसारी॥तारिषिके
वरतेहमजान्यो॥कछुधिकउनभीनाहिवषान्यो॥२०४॥धृतराष्ट्रोवाच॥दोहरा॥हेसुत
कवजानेइनेयोरणभमरहताना॥धर्मजउठठाढोभयोतासुआज्ञामान॥२०५॥संजे
मरथयुधसमपुनधर्ममजानकीषानन॥इंद्रसेनजनपसारथीगयेरणतेइन्थानन॥२०६॥
चौपई॥मत्स्यागअक्षौहणिमितनसुगध॥अरगजकेसारइनिमहिमंद॥तीरेसगध

मैजव छूज्ञानो॥ ईधन इकठे तें गम महा ने॥ १७॥ घेर पग जनन सशेष रहाये॥ भरम रूप पुने सें गच
लाये॥ पाटंबर अंबर वस्त्र अमोले॥ संग च लाये मोल अतोले॥ १८॥ पुष्प दुर्योधन विधस प
गत॥ उठाय वस्त्र धारे जिहि वड दुत॥ पुन ताके सभ जारे भ्रात॥ पुन द्रुपद सुता के सत वर ज्ञा
ता॥ २०॥ दोहरा॥ पुन अभमंन अर द्रोण गुरु कर्ण सघ लम अरु आदि॥ जारे नीक प्रकार से
न पविरा रक्षि हर वादा॥ २१॥ द्रुपद सुत पुत्र न सहत अरथै दुष चर भाय॥ वादु लीक भग दरश
लमर भवा वलधार॥ २११॥ इन तें अदिम पजे नामी॥ जारे नीक भांत नि हकामी॥ य घाये ग
विधसो सभ जाने भ्रात रे वस्त्र सुगंध अपार॥ २१२॥ पाछे जोध्रिन हून पधाने॥ सभ में इन त्र गंध
धिर काने॥ अति वड अग्नि जार सभ जारे॥ रहम लाल धर्म नक्षु भवारे॥ सभ को जार गंग में
जाये॥ मज्जन कीने अंग जल पाये॥ सभ के नाम त्रिलोद क दीने॥ धर्म पुत्र वर ज्ञान प्रवीने॥
२१४॥ कुंती उवाच॥ देस तन कर्ण तो हि वड भ्रात॥ तिल अंजुलि तिहि देहि सभ जात॥ तुम तेव
उ मोहि सतन कर्णा॥ तुम पांचो ता तेल घु तरणा॥ २१५॥ वैशंपायन उवाच॥ धर्म जु कर्ण कीस कोली
गाथा॥ माना ते प्रश्न हि न साथा॥ कुंती अदरंग न ते ते सात॥ कर्ण गाथ जहि पुन र उचारी॥
२१६॥ दोहरा॥ रथि न स्वाग म कर्ण क कर्ण जनम जलपात॥ आदि अंत ते वत्र सभ सत
सो कुंती मान॥ २१७॥ चौपई॥ कर्ण सपुन सभ हूं तिहि वारे॥ हम अव हून हीस नीसु चारे॥ घेर
म ज्ञानंत भ्रात हमारा॥ नाहि रन तनव मयो कमु भारा॥ २१८॥ तासे युद्ध नाहि हम करते॥
तिहि सन मुख वश युन युदरते॥ धर्म जो वाच॥ हम कुंती सुत नाहि न जानत॥ ये जानत क
दे भ्रम हानत॥ २२०॥ कशावत पुत्र हम जानत नाही॥ कुंती सुत नहि सुन्यो कदाही॥ जीवत
कर्ण घे हमसु धपावत॥ काहे तासो युध उपजावत॥ २२१॥ हम तेव ज्ञारा जुनि हि देवता॥
सेवकान यो हम सभ सेवत॥ २२२॥ श्री भगवानोवाच॥ दोहरा॥ हम सभ जानत थे स
कल कहि कर्णा सो जाइ॥ पांडुव हैं तुहि भ्रात लघु कुंती तुमरी माइ॥ २२३॥ ते सभ ते सेवा
करें सेवकान सो होइ॥ राज छत्र तुहि सीस पर कुल सब लित सभ कोइ॥ २२४॥ चौपई॥ कर्ण
नेकई हि वेनन माने॥ दुर्योधन काहि तो दृढ ठाने॥ धर्म जो वाच॥ हे हरि ये तुम ते कह

३ वाने॥ परतमाथमुहि स्रवणमफारे॥२२५॥ कृतहून ताको सम सर करते॥ तासन्मुख शस्त्र
न प्रहरते॥२२६॥ श्रीभगवानोवाच॥ येकर्णमाथहमनुहिसमफावैते॥ विरथे परतकाज
नृहिस्माते॥ येनृहिदेस राजधनुसारा॥ देतेतऊ नमानतभारा॥२२७॥ दुर्योधनसो नाहि
फिरावत॥ तुमरे काज समभविग्ररपरावत॥ सघधारऊ अर्जुन उचरायो॥ तासन्मुख जब ह
म मुख पायो॥२२८॥ कैपत शिदिजीय चिन परावत॥ को विचारशिदि मोन सकावत॥ इस व
निरच्चे जान्यो वडुभाता॥ योहानतकेपतमममगाता॥२२९॥ हरि उवाच॥ जयेस मेन्नव
िथावीचारो॥ याकाचे धूर्नाहि उपचारो॥ सुन के धर्मजभ्रातन नाचित त॥ कर्णनामवदु
धन हयेतत॥२३०॥ कर्णपुत्र येशबर हाने॥ कीयेति नोके तेजमहाने॥ कर्णभित्रदासी
न्नरदासा॥ तिन सो हेतन्नधवपरकाशा॥२३१॥ वृषवेतनामरविसुतकोपूत॥ वो
उस घर्षकीन्हा युसपूत॥ इक वउदेसुड च्यान्नंनगंता॥ ताको दीयेधर्मजन्नरहेता॥२
३२॥ निजपुत्र नसो हेतुन्नपारे॥ तिन सो धारतनन पशुमचारे॥ अर्जुन सो कहीइस सि
षाचो॥ जामुखकुमुविघाहितपावे॥२३३॥ सुभरणवासकर्णकेवाले॥ वडुस्तासनमन
कीनन्नमोले॥ सुभेरथि उपजायो भारी॥ धर्मजकर्णकीनन्नपारी॥२३४॥ दोहरा॥ ध
र्मजकी इक वीयवडी वदुपुत्रनकी मांइ॥ पुत्रनजेइकन्नहसो भर्नीमभ्रीनमाइ॥२३५॥
सभ सो हेतु न्नधवधरत धर्मपुत्र उजाना॥ स्त्रीपर्व पर्णभयो रहम तास न्नवेव जाना॥
२३६॥ सोरठा॥ पढे सुने चितलाइ जगजस होवे न्नधिकतिहि॥ अंतसुरपुरी जाइ सभ
न्नधतापमिटाइके॥ इति श्री महाभारते पुराणे ... स्त्रीपर्वसमाप्तम॥ ११॥ इति
श्रीमहाभारते पुराणे ... स्त्रीपर्व समाप्तं॥ ॥ ॐ॥ श्रीगणेशाय नमः॥
अथ राजधर्मकथापर्व लिख्यते॥ दोहरा॥ रणभेमिरनचकजारसभ गंगाम जुनकी चेम
धतराष्ट्र पयगयेसभ धर्मजादि सुखकारम॥१॥ गांधारी धतराष्ट्र सन्नचिवन करत न्न
निकैन॥ तिससो सजेचलचक रतजाको बुधमगत॥२॥ संजयो वाच॥ न्नचेोपदेश॥ तुम
भीम जनावागउजाने॥ होनहार पिनहुनमिरानो॥ धतराष्ट्र गांधारी घने पुरसन्नी

मजुनहेतकौगयेउंगकीय॥१०॥कमासतरउंगरहाने॥डीतउततेऊंगवेभपमहाने॥ ५
तरापूकोमनहारकरावैभधर्मजसोजयकारधरावै॥११॥छिऊंरतपसीदजइकहोई॥
उंगातरऊंगवेइकठोही॥सभमिलधर्मजसोपुगटाने॥तांहिविजैदईशमहाने
॥१२॥मतजानोभुजवलेहतायै॥हरिविनकोनहिविजैधरायै॥भीषमद्रोणकरणसेसरे॥
येतुमहतेरणवलभरे॥१३॥तुमतेवडेयोधजेऊंगवत॥उनसोसनमुखहोनसकावे
त॥इहिसभजानुरूपाजगदीसे॥तांहिविजैरणमईजुतीसे॥१४॥धर्मजोवाच॥हमनी
केजानेमनमाही॥हरिविनकोऊसविजैदिषाही॥श्रीपदुपतिमुहिस्यतमहाई॥जीहह
मकोईहिविजैदिखाई॥अर्जुनभीमनकुलसहदेवा॥सुनचउपदेहरिवचनऊंगभेवा॥
जानतेथेनिजवलरणभारे॥विसमानेचितचितऊपारे॥सुनचउपदेवचनऊंगभेवा॥
जानततेथेनिजवलरणभारे॥विसमानेचितचितऊपारे॥१५॥अर्जुनसभतेऊधकरि
स्यायो॥जोरिरणभुमपोरषवडुपायो॥जोडीवधनघतेपररहरवाना॥मारेघेरणयोध
महाना॥१६॥रिसकतमुखतेवचनउचारो॥सुनोसमीनपकहाप्रगटारो॥१७॥अर्जुन
वाचा॥दोहरा॥रणभुमममोहमधारवलकरियेसभशत्रुसंहार॥१८॥श्रीहरिहमविनुकोर
कानामुनकीनउचार॥१९॥चौपई॥तवजरासिंधकोसुनसहदेवा॥बोलतभयोसिसका
इऊंभेवा॥धर्मजइकुनपसल्लहताना॥श्रीरभपहमहतेमहाना॥२०॥अनिजनाके
इऊंभेवा॥धर्मजइकुनपसल्लहतान्ना॥विजैरहमेंनामरघाने॥सहनसाके
येविजैउचारता॥तामोरहमकोरिसनसुधारत॥विजैरहमेंनामरघाने
येविजैउचारत॥तामोरहमकोरिसनसुधारत॥धर्मजसोहरिमधातनकोले॥श्रीभग
रमदूरवमराने॥२२॥इहिकहिउठसभातेचाले॥धर्मजसोहरिमहातनकाले॥श्रीभग
सानोवाच॥हेधर्मजसुहिभ्रातशोकधर॥उठजावतेरेसभातापाउगकर॥२४॥भगवानोवाच॥हेनप
हरिरमयोकीत्योभावी॥करोसुकरोनिजनिजकभमसाजी॥श्रीभगवानोवाच॥हेनप
हरिरमयोकीत्योभावी॥करोसुकरोनिजनिजऊंभसाजी॥२६॥इनभीरणभुमवडुवलकीनेभऊं
तुमवडुकरणधारे॥मोहनामकहिविजैउचारे॥२६॥इनभीरणभुमवडुवलकीनेभऊं
तुमवडुकरणधारे॥

पुनत्राणप्यारेनहीलीनें॥तोहिसंगवउहैतुधरायें॥चनरचनमारीस्त्रमेंसरायें॥४॥आइनके
चितचिंतानननउरहै॥कहितवउमानइनेरेधरहै॥धर्मजहरिकेवचनसुनायें॥लीये
बुलायचित्रजनिकटवहायें॥५॥रूपावचनतिनकोमुखवोलें॥तुमहोहमेरेप्राणअमो
लें॥तुमयेहमेरेसंगअमधारे॥मततजानोहमदीयेविसारे॥१॥जैसेवलतुमरणभुमरी
ने॥सकवहूनविसरेमोहिपुवीने॥पयतुमभीजानोजीयमाहें॥हरिकरुणविनुवधुगत
हें॥२॥भीष्मद्रोणरविसुतवलभारे॥जिरिसनमुखकोवलननहकारे॥येसरपतिभीसं
गपरावत॥महादेवसोयुधमंधरावत॥३॥शल्यसारयोधेहममारे॥विजेनामअपुनेन
उचारे॥हरिकोप्रसादयाजनजानो॥विजेतुमारमईसमनजानो॥४॥जैनभीमोवाच॥न
पभोगमोहमभीजानें॥वकउपुनेचितमोइहिठानें॥हरिकरुणतेसरसापाये॥रणभु
महमनवउयोधपचाये॥५॥प्राणप्यारहमनारकरयें॥येवलकोनजगतउचरायें॥
श्रीभगवानोवाच॥हेधर्मजनृहिभ्रातपुनीने॥येयोधेइनरणहतकीने॥६॥कारूस्तव
माहिनीहदेषे॥इनकेवलपयअधिकविशेषे॥मनतकाहूकालेयाविचारे॥नपइहरी
नीरिदेमोधारे॥७॥धर्मजउवाच॥चाकैसेहेइहिहमेरेभ्राता॥निजनिजनामपुरिदेपुरा
रात॥सोतेमुरिनपशल्यरतान॥मोहिनामकहोहिजैमहरान॥८॥यातेहरिकेनाम
उचारी॥यातेरेमुनकाहउचारी॥इनभ्रातोजोहमसोधारी॥सभजाननतेहिदेविचारी॥
इनविनुमेरेतसकलमहाने॥९॥चेशपायनोवाच॥याचि
वकहूनपवचनउचारे॥पयअजैनरोसुनिनिवारे॥१०॥धर्मजहरिसोपुरारानें॥सुचे
जगनपतितेजुमहाने॥११॥दोहरा॥याचुधमोजोहरिकमैहमनेरेहेतसहाइ॥तेसेवार्ता
धारेइनकेरोसमिटाइ॥१२॥कसनहेडइनकेहिदेरहेरोसुत्रमभारे॥हमेलोगइहेर
गथमन उपजेनिरकपारा॥१३॥श्रीभगवानोवाच॥चौपई॥हेनपइहितुमनीकेवि

सारी॥ च स्यो जिहि हस्तो सर्व गत्र पभारी॥ ताहि सीस ते पछे जाणे॥ ज्यों की त्यों वहि देहि समझा
वेग॥ ३१॥ अपो वाच॥ जो सर्व जगि जिहि हस्तो स जाने॥ कहु विस घार या गाय महाने॥ श्री भ
गवानो वाच॥ जिहि सम हम तु मकै रव से ने॥ गये सन्मुख युधहि तव लुपेने॥ ३२॥ दे
स देस सम जगत मझारी॥ भई प्रगट गय युद्ध तुमारी॥ सर्व जनन रेस लंका निकट वर॥
सन्मुख आये देष न युधहि तधर॥ ३३॥ वर्ष च तुर दस जा उवला री॥ तीन वान नकर धनु
ष संभारी॥ सभा तुमारी ठाउ होई॥ मुख ते वच न कहत मिस सोई॥ ३४॥ मिसो वाच॥
ह्य दुपत कव युध पराई॥ देष नकी मुहि दधम हाई॥ श्री भगवानो वाच॥ भारत सो तु
मरा क्रिया कामा॥ कहो प्रगट देसि सवल धामा॥ ३५॥ सर्व जो वाच॥ लेक समीप मम रा ज
सचारी॥ युधु सन्मुख आये हो दधिता री॥ देष पद्म के कोतल सारे॥ करो इछा निज पर सचारे॥ ३६
का की सैना माहि रहा वे॥ नाकी ऊर ए पद्म गांवे॥ ३७ मदो हर॥ मिसो वाच॥ दुहूं सैना ते जो
जीते रण॥ ता सो मेरिय युध कहो सा च भण॥ सैन सहत ता कोर तठारे॥ निज भुजवल
करि प्रगट प्रकारे॥ ३८॥ श्री भगवानो वाच॥ तुम इक मिस प्रगन मैन नसैजा॥ कोप सु सोर
तो अभंगा॥ मिसो वाच॥ इहीं धनख अरइही वानो वर॥ हतो सकल अरसा भुज बल ध
रा॥ ३९॥ एकु वानु धनु धार प्रहारो॥ सकल जगत के जीय संहारो॥ अर एक वानु कहु
का हच ला वो॥ को ऊ न तु जीवत नदि षावो॥ ४०॥ श्री भगवानो वाच॥ जो कैसे वलु देन
हमा हरी॥ देहु पुरि छ र म को प्रगरा हरी॥ तव जानो सच्च वाक तुमारे॥ जो उछ च वर्ष आंत तु
म प्रगरा रोरे॥ ४१॥ मिसो वाच॥ देहीरथे पुरि छा मम लेवो॥ हिं गुल तत न कछा न मोहिदेवो
हीर म गाई हिंगुल तिहि दीनो॥ पुमसला ये उनसर हि पुरी नो॥ ४२॥ मुख ते वोले च ख न
सचारी॥ देहीरदेवो पुरि छ हमा तो॥ सभा तुमारी वान प्रहारो॥ सम कें अंग वे ध प्रगरारे
४३॥ कैसे स करि हि उनसर पर हारो॥ कीन बहुर च न तहा निरधारो॥ सभा माहि यो यो वे ठा
रोहिं गुल अंग सम कंठ दिखारो॥ ४४॥ जिहि हो जोहि पाया कीमित सा ई॥ हिं गुल अंग ल

१३२ गयो ज्ञाता हो॥ तब हरि निजतन को दिखायो॥ हिंगुल कंज गकह नहीं पायो॥४४॥ पग उ
ठाइ जब नीचे निहारे॥ पग तल हिंगुल कंज कदि धारे॥ तिसी ठौर हरि मित्र तुठहि राई॥
दिघ विस्मान भये य दुराई॥४६॥ भय युत हरि सौं चारकराई॥ याको बल नहीं संख धरा
ई॥ हम बउ अभय करयु छकरावे॥ पं उस्त तन की विजे धरावे॥ निहचे इह सभ को हतउ
रे॥ वध उपाव की जे ततकारे॥४७॥ श्री भगवानो वाच॥ हे बल वीर तु हि बल निरधारे॥
उपमतो हि न हि सके उचारे॥ जैसे दे सुर मन तु मारे॥ तैसे हो वो दान मझारे॥४८॥ तुम
ही सम सर करे न को ऊ॥ सर्व जगत ये दुहो सो ऊ॥ अब कछ पुनी दात व्य उचरावे॥ थों की
सभु भाष धरावे॥४९॥ सिसो वाच॥ दोहरा॥ एक अतहो दात व्य जो जो अब आवे मन पाह॥ जो
मांगे सो ऊदे तहो क्षिर तन करा षो नाह॥५०॥ श्री भगवानो वाच॥ जो तुम कहे से दान पतिमां
गन है सो दध्यार॥ दीजे निस्यन धारी ये जी जे व उ ठपकार॥५१॥ सिसो वाच॥ चौपई॥ मां
गो हरि ये जो इछ तु मारे॥ तज्ञ विलंब देहो ततकारे॥ श्री भगवानो वाच॥ मोहि मनोर्थ प
रो की जे॥ कपुन्न सी सुकार मो हि दी जे॥५२॥ वैशंपायनो वाच॥ सुन हरि वे न कहे हो सम
वचन॥ हरि मो हि द्यो धार वडुरचन॥ सीस कार ये तो हि न दे वो॥ निज भुज तज्ञ व उ
ऊप जसु लेवो॥५३॥ युध्द देव नको इछ हमारी॥ सिध ले घझायो मनु भारी॥ कौतक
देष सीस कर दे वो॥ भेद भर्म या मो नहीं लेवो॥५४॥ श्री भगवानो वाच॥ यो युध्द देषण की
इछा सभ कहो रचन कैसे परकासे॥ तन बिहीन तु हि सीस करज्ञा॥ युध कौतक देषो स
मैथा॥५५॥ सिसो वाच॥ हे हरि ईहि थो इछ हमारे॥ जे उचा होत उकरो सुचारे॥ तब हरि
निहि सज्ञी वन दीने॥ कहे धानु रख माहु धरा परवीने॥ चकर चलाइ सी सुतिहि कारे॥ चउ
रर पर धरयो अभडारे॥५६॥ वैशंपायनो वाच॥ दोहरा॥ इह सभ जायु सुनाइ के धर्म ज
सो भगवान॥ कहे तिसी दिन तैं नरादे षे सी सु मरान॥५७॥ नोर्प भा तये कहत हैं निज
प्रभु जौ व उचार॥ जा दिस या नाउ असे ने कहे साच प जग रा रा॥५८॥ चौपई॥ वा ते कथ न रहे

लुपायेअ ज्यों की त्यों ही सभी दिखायो॥ हरि धर्म जज्ञ रस भी सिधायो॥ जहां सीस तहां जाय पहुंचा
ने॥५९॥ तासों कही तुम सभी दिखाये॥ जिहि बलु रण कीन महा येअ प्रगट धार के हू मीसु ना
वे॥ ज्यों की त्यों तुम नाह सु पावे॥६०॥ मिसो वाच॥ या भारत मो यो नरघारी॥ प्रगट के हू तेहो
सुनो सन्चारी॥ सकल गाथ का तत्व उचारो॥ घोरी कहि तुम संसनि वारो॥६१॥ तीनो ग
घया युद्ध मऊरे भवरी दुष्ट हमरी भ्रम चारो॥ पुन चौथी गाथ कस्सु वरन कोऊ॥ जाहि कोई
तुहि अंस सेषो ऊ॥६२॥ अप्रुप्पमन्दिया भारत माही॥ हरि को चकु जिहि ते जग गाही॥ फिरत
रण चपला ते अगर॥ भारत सम भये सीस उजागर॥६३॥ सकल जगत की नो तिरिषा
ता॥ अश्ववर शस्त्र की कोऊ न वाता॥ दूसर द्रुपद सुता योगन वत॥ करषप्पर धर्म फिरत
वे गजज्ञाति॥६४॥ चक्र याहि को सीस कटावे॥ ईह षप्पर धर सधर गहरावे॥ भस्म खप्पर
पीवत जिन जल॥ जैसे दही जन पीवे पल पल॥६५॥ तीसर रूप भगदत्त दिखायो॥ गा
ज्ञा लडु ते जस्याति पायो॥ कर्ण जैन परदो रत बल भारे॥ अर्जुन भी बल धन पुस भारे
वान पुहार कीन भुज बल ज्ञाति॥ कीयो दुहू का वर गज रण भुमसत॥ गज दुहू रभगद
ज्ञनि हारे॥ यों भर स्यो जाय घन बल भारे॥६७॥ दोहरा॥ कैसे पाय्यो जाय घन बल भुम परसी
गिरन न दीना॥ सधर नाहिं निकसन दीयो जो घन बलु ज्ञाति कीना॥६८॥ जो घन
व लंदे रात रण युद्ध करत बल ताहि॥ अर्ध जाम पाछे गिरयो ता बल सरया नाहि॥६९॥
चौपई॥ इहि तीनो हमरे लोनि हारी॥ अश्व वर उपम योगेन्न दिषारी॥ सुनंन सीस ते सच
नअधिकवरा॥ होय विस्म समरे मोन धरू॥७०॥ धर्म जसाच वच्चन जीय जाने॥ स
मरी रचरण लडे हि तुम माने॥ पुर हरि सीस के वदन हाय धरा॥ सजीवन काहु तीन
रचना कहा॥७१॥ फिरत के होइ सीस मुर ऊभ्यो॥ दिष ही सु पाधार प्रगरायो॥ कीभग
वा नो चान्चा॥ याके तन पर सीस धरायो॥ जारे क्षगिन बडु हि तन रूप रायो॥ ताहि जार रिधि
तपर जा वरा॥ बेले तहां ते संग नारद धरी॥७२॥ धर्म जो वाच॥ हे नारद मुन जान क्षपा

३३ २॥ हम वहु विजे लई हरि वारे॥ प्रथम मान को उसवनें देखे॥ एकौ चितन मुहि दिदेव शेखै॥ ७३॥
भीषम द्रोण कृपादि महि मोहि मारे॥ जिनविन राजन कोउ न सचारे॥ कर्ण भ्रात जो वडो हमारा॥ ता
हि हते ते भ्रम गति भारा॥ ७४॥ जो पर्वे हम लषत भ्रात वरा॥ ता सन्मुख वीर कि उलर त न शस्त्र धर
न व जो वत हम भ्रात न जान्यो॥ सुन माता सो वडु भ्रम मान्यो॥ ७५॥ जीवत कर्ण मम मरि
दि भ्रिगा वत॥ ई हरि शव तें को सुत जो जरावत॥ भ्रुव नसम मडई हरि दान करत है॥ सभ ने वल
ज्ञाति ते जय धरत है॥ ७६॥ दोहा॥ ह नपसुत यामका सुतन नाही॥ पय कुंती का सुतन जनाही॥ हरि
की सवल लषत ई हवाता॥ किवे न कर ते तिहि रण घाता॥ ७७॥ जो हम को वहिर न तवलाती॥
हम सन्मुख न रही हो तस चारी॥ ई हि थ्या हमरा वडभ्रात वरा॥ करत राज हम रहत सेव धर
७८॥ नारद वाच॥ कुंती का अथु दो सुन हि कही न तुम सो ते हि गकर्ण जन्म ते हगागारी
की ने मंतर ते हि॥ ७९॥ दोहा॥ भारत परे जित जित विध ज्ञ नमाहा॥ परे सप धी क
ती विनदूसन को न दिया र॥ ८०॥ चौपई॥ सकल सके रा ई हि मंतर विचारो॥ कर्ण ज
न्म ई ह ही दर्श उवारो॥ कुंती मन मंत्री य को न दिया वे॥ कर्ण ज्ञा हके उदर समावे॥ सकल
सुरे मिल जो रे राध्या॥ कुंती सुत जन्मे वल साध्या॥ भारते ज सरम तज्ञ न ज्ञाता॥
सकल पृथु का की यो विधाता॥ ८१॥ तन कुंती को दुर्वासा वरा॥ मंत्र सिखायो व उक रणाक
रा॥ या मंतर वल जिस सुरा धो॥ तिस ही देवते कार्य साधो॥ ८२॥ कुंती प्रीष्मा मंत्र देत ज
व॥ दो॥ तम ई रवि के सन्मुख तव॥ पठो मंत्र रवि मन पय कन्या यो॥ कुंती के सन्मुख ठह
रायो॥ ८३॥ रवि के अमृत कर्ण उपावा॥ रवि सुत ता ते नाम करावा॥ घा हि कु घा पोथ
सभ भाषी॥ श्री व्यास सभ ज्ञ उन के साषी॥ ८४॥ जन्मत लाज ज्ञ जन जी य धारे॥ दुरा
वा सकुं ड ता मन ज्ञा रे॥ ज्ञान तें रा घ ई हि वाल कुल ज्ञायो॥ तिन प्रति पाल्यो है तु व धायो
८५॥ या ते कुंती नार सुनावत॥ निज चित मो राषत गुपतावत॥ जे तुम सुन पावंत
ई हि नाना॥ कि उ हो वत भारत ज संग्राता॥ ८६॥ नारद सुत कथ माता तुमारी॥ हरि इ

पापीयाहिमरूरी॥ बहुभयोजवकर्णावलाती॥ केरेको तुमसमकूतेभारी॥ ८३॥ दुर्योधनसो
हितुउपजानन॥ हस्तिनपुरमेहृष्णाइवसानन॥ अर्जुनभीमसो वैरधरतअति॥ दुर्यो
धनेपपथरहतसत॥ ८४॥ भीमसमानधरतभुजबहुवल॥ अर्जुनसमविद्याशस्त्र
वल॥ बुद्धदयादातासुरपतिसम॥ जगरक्षकसमईशहरततम॥ राजनीतअर्जुनसे
नसमारत॥ हरिरहीसनसमकोपुतिपारत॥ तुमहरिस्वणअरभ्रातलोहवर॥ जोग
नगाषतहेहाइकरेधरम॥ ८५॥ तेसमगुनइकठकर्णमरूरी॥ अधकअधिकलषीयनवी
चारी॥ तातेतुमसमसोवलुधारत॥ कहेसाचकछुअधिकदियारत॥ ८६॥ दोहरा॥ प्र
थमेहीतवआयेया दुर्योधननिकरान॥ सिष्याहितगयेद्रोणकेरविसुततेजम
हान॥ ८७॥ चौपई॥ ब्रह्मास्त्रतोदिजकोचहीये॥ तुमदिजनाहजुतोहमसिषईये॥
कर्णोवाच॥ अर्जुनकोतुमकहाहमसिषाई॥ ताहिजन्मभीदिजनकहाई॥ द्रोणोवाच
अर्जुनरहतसदादिजसमाने॥ तुमरीरुततासमनमहाने॥ पुनअर्जुनतुम
कोपुतिपारयो॥ तोहीपताविनहूनादिषारयो॥ यातेतुमकोनाहसिषावे॥ ब्रह्मास्त्र
केयोगनपावे॥ दिजकेवचसुनकरिसकर्णवर॥ परसरामकेगयोवेगधर॥ ८८॥
दिजकहाइब्रह्मास्त्रलीनो॥ औरघनीविद्यागुनदीनो॥ परसरामपयरहतच
लावी॥ करतसेवगुरकीअतिभावी॥ ८९॥ यहतजधर्वेनसोयुधधारत॥ विद्यावल
सभकोरनडारत॥ इकदिनधनुअरुवानगहाये॥ अहेरकहेतहिंगयोमहाये॥
९०॥ मृगकोकीनोवानप्रहारे॥ मृग[illegible]यो कूदसरभयोविहारे॥ रिषिकोधेनुरा
चरततहिवन॥ सरलाग्योमरगतेजुततहितन॥ ९१॥ सरजानजोरविपुलविहारे॥
धामहितजीयमारअपारे॥ रिषिकेजाइविनीचहुकीनो॥ अउसरस्वेकहीलेहुप्रवी

बे॥११॥ देखे देव दुन्धक्कापारसचारी॥ मनतसराप धरहै रिषिभारी॥ रिषिरविसुतकावचननमान्यो
केपकरि धिकनखतेपुगरान्यो॥१०१॥ रिषि उवाच॥ हेरविसुतनुमजवरणज्ञानो॥ निजकक्करसो
वउपुद्भमचावो॥ तवभमनतुहिरथचक्रउरहौं॥ उघमकोरकोरो ननतजावें॥१०२॥ अस्सुननतक
रीवदूविनीउचारी॥ रिषिकेसोमन्दीहिवचमुरेनभारी॥ मोरशापुहमराजीयजानेमकी
हूविधेनमुरेपछानो॥१०३॥ वैशंपायनोवाच॥ दोहरा॥ याहकथाविस्यारसोपाछेवर्ननन
कीनी॥ जेमुन्तराकोकेयुद्धमोसोतुमसुनीवुवीन्य॥१०४॥ चिरतकगुनकीसेतमोरहोवक
रीवलवान॥ परसरामकेशत्रुहनउरतभममजतान॥१०५॥ चौपई॥ परसरामनताकोव
लुदेख॥ सर्वहोतमनमाहविशेख॥ बहुप्रकारकीविद्यावान॥ जोराघतेनिजमाहमह
न॥१०६॥ इंद्रविसुतकेहितचितधारे॥ परसरामकोवरजनहितभारे॥ इककदिनपर
सरामव्रतधारयो॥ आनकहूमगमोपगउठयो॥१०७॥ घकतभयोमगमोवरतेकरा॥ बे
ठ्योरिषिछाइतृछतरा॥ करणऊरूपरसीसधरायो॥ पोठयोपरसरामसुखसायो॥
१०८॥ सुरसर्पकारूपधारतव॥ केरन्चरनरविसुतकेवउछव॥ करणपगहितेरकत
वहानी॥ रच्योमोनरविपुत्रमहानी॥१०९॥ मनतगुरुजागउठेइहविचारे॥ याहविच्चार
सर्पनहीमारा॥ वउभ्रमसहोगरुकेदेहै॥ पुनपरसरामजवभयोसचेत॥११०॥ क
रितउरदसभयोविस्मानै॥ जिहचरननतेरकतवहानै॥ परसरामकीद्रिष्टमझारी
परोसर्पवउकलेपसारी॥१११॥ परसरामकेभयकरिअतिभारे॥ धरोनिजसपकसुरतन
कोरा॥११२॥ परसरामोवाच॥ कोनतकारउस्योइहिचाल॥ कहुव्रितंतनुशपुनातनकाल
असुरोवाच॥ भृगजरिषिकीवरनारनिहारे॥ गहिलीनीहमवलअतिभारे॥११३॥ रिषि
हमसोवहुविनीउचारी॥ नारहनजीहमगर्वस्रपायो॥ जुपरिषिमोहशापतिहदीनो॥

होइ सर्प के वपु मत हीने ॥११४॥ रिषि शाप परिहर मकछु हिय धारी ॥ देती फेरि जीव हिय भ्रम भारी
तव हम नीरिषि सों विनीय षानी ॥ कही रिषि सों तुम ज्ञान महानी ॥११५॥ तोर शाप ते अव मु
कता वो ॥ वहुरि देहि अपुनी अव पावो ॥ रिषि उवाच ॥ जव तुहि परसराम दृग लावे ॥ तव
तो को निज वपु फिर आवे ॥११६॥ याते हम तुहि दर्शन हेते ॥ फिरे सदा ज्ञान चित चे
ते ॥ कर्ण सो हि भ्राता हतु कीनो ॥ ताते भ्रात वैर हम लीनो ॥११७॥ ज्यों ज्यों हम या पग ला
र तव ला ॥ त्यों त्यों इन ठाहीं मोन मन भूम थला ॥ ऐसी विधि हम इन ते अठाये ॥ ज्यो उ
पाउ कछु नाहिं दिषाये ॥११८॥ सुर नर असुर करे ये यतनना ॥ याहि नीक होय न कीउ
तन्ना ॥ ऐसे सर्प कहे जव वचना ॥ परसराम सुनि विस्मयो रचना ॥११९॥ दोहरा ॥
परसराम कछु हिय वचन सुनि रवि सुत प्रति पुकारान ॥ किउ न हत्यो तुम सर्प को विद्या व
ले सर ज्ञान ॥१२०॥ निहचे हम या को रहनत जाग उठत गुरुदेव ॥ येर महि तिन चित से
कर्म कृपा परत सम सेवा ॥१२१॥ परसराम ो वाच ॥ चौपई ॥ तुम कछु अपुना दिज वर्न सुना
ये ॥ तुम दिज नाह मोहि लषपाये ॥ दिज मे ऐसी शांत न पायीये ॥ अपुना वर्न
साच्च प्रगटाइये ॥१२२॥ कर्ण उवाच ॥ ऐसा ची पधी गुरुदेवा ॥ मो कोर विसतज्ञा
न कछु भेवा ॥ विद्या हित दिज वर्न कहाये ॥ राधे कछु अपुना वर्न छपाये ॥१२३॥ गुरु
उवाच ॥ कपट धार तुम विद्या लीने ॥ सकल तेज मोहि सिज वस कीने ॥ ये विद्या दि
ज लषेन कोउ ॥ ते विद्या हम सो ठाही सोउ ॥१२४॥ साते देवो तोहि शाप वर ॥ याते
तेहि काल निश्चय धर ॥ जो विद्या तुम मम से पाई ॥ किसर ज्ञा हि तुहि शिदि न रहाई ॥
१२५॥ दोहरा ॥ कर्ण उवाच ॥ चरे काल हित सेव धर हम वर विद्या लीन ॥ हे गुरु
म ऐसी क्यों अनत शाप मुहि दीना ॥१२६॥ परसराम उवाच ॥ ये मम मुख निक
स्या वचन अन्यथा न होइ ॥ तोहि दीन तादे कछु निव धार तो उच्चताइ ॥१२७॥ चौ

१३५ ०६॥ थथो धेज गमो बलभारे॥ तुहिसन्मरवयुध सबेन धारे॥ समकोनि बलावोरणमाही
तुहि बलसम जगसोऊबगाही॥ ५१२॥ कअर्जुन तो हिम्मत वर॥ तेनुमसोयुधकरे ते
ऊधरम॥ कर्ण उवाच॥ रे गुरुसिखा हिकारणअर्जुनवर॥ मो परसबलपरे रणधीधर॥ १२९॥
परसरामो वाच॥ तुम उनपर सदई रथधारे॥ देवो जेभुज बलसमभारे॥ मो प्रणजिहि
र्जीते बलनिहारे॥ तातजसिखकबहू नहीधारे॥ १३०॥ इहिसुनकर्णविनीतजतिधा
रे॥ येगुरु करे शापुनि रवारे॥ परसराम कोहिमुरेन शापा॥ येरमभाखोप्रथमजसमा
पा॥ १३१॥ वैशंपायनोवाच॥ पुनचिरजालधरनिकररहाना॥ गुरुविद्याईऔर
महाना॥ ते सबअर्जुनपेशस्त्रअमोले॥ दीये रविसुतकोरणपाऊतोले॥ १३२॥ विदा
होइ रविसुत गुरसे वर॥ आयो हस्तिनपुर सुखकर नप घर॥ दुर्योधन देखत हरखायो॥
मिले हेत भारीप्रगटायो॥ १३३॥ नाना विधके वस्त्र दीये तत॥ राजसाज सभ सौंपदीये
सतावि जभातातक रताहतुलायो॥ सभु तेऊधरमानु तिन पायो॥ १३४॥ नपचित
ताहि विवादु करावे॥ दोर ठौर दिजहि तेपठावे॥ सुंदर चतुर शीलगुन भारे॥ तिरि
नी मिघलूँ छे वरनारे॥ १३५॥ एक आइ नपसो उचरानी॥ हस्तिकेसी के न्या निरखानी
कुलगामपती सुतापियारी॥ तेसमजगनपरॊभसुभ सारी॥ १३६॥ जरासिंध अरनप
बहुसाला॥ रचा मत्र्योरव हुनपमसपाला॥ औरघने नपतेऊपारे॥ ताहिदु
ध्वरावधि वितसारे॥ १३७॥ तातेपितासुस्वयंवरधारे॥ इहि सभ नपतहाँ गये सुचा
रे॥ स्वन दुर्योधन भीष्मसंगा॥ द्रोणाचार्य संग लीयो अभंगा॥ १३८॥ रविसुत केो
सदाधरतन काला॥ गये पवन केवेग विशाला॥ स्वयंवर मे प्रापतभयेजाये॥ दुर्यो
धनजोहिते जुजमाये॥ १३९॥ दोहरा॥ वाहरनिकसी नपसुतापूलमालाज
हहाथ॥ दुर्योधनकोद्रुगपरी सपअधिकसमथात॥ १४०॥ दुर्योधनचाहतीरदे

मेरोमरणकोव्याह॥स्वयंवरमोकुन्यायफिरेवस्योदेषेनिजचाह॥१४१॥चौपई॥दुर्योधननिजोरे
देषिचाली॥मतकेकुटीऔरवरेईहनाली॥उठ्योवेगकेन्यागहिलीनी॥देषनसबलडारथ
दीनी॥१४२॥रथुदोराइगयोवलभारी॥दूसरजिहिसंगभयोवलारी॥जरासंधआदेसभु
मपा॥उठेकोपाहितयोधस्यनृपा॥४३॥दुर्योधनसोकहाइमिलाने॥सबलेनृपमजवलग
जाने॥दुर्योधनभुपनकोदेष॥भयोचिंतातुरसिदेविशेष॥१४४॥भीष्मद्रोणदूररहाने॥
ज्ञापहुचेकरतेजुमहाने॥हमदोउईहरवहुभुपवल्लैरानि॥हमकोकहतलेजाहुसुता
सत॥१४५॥कर्णउवाच॥हेनृपयातेमतनचिंतावो॥म्हारेन्याकोतुमलेजावो॥हमभुपन
युद्धसभारे॥सबकेबलभुजवलेनिचारे॥१४६॥ईहसर्वेहिरविसुतठाउरहाना॥जरासि
धसोयुधउपजाना॥सरुष्टसोशकतनवउयोधगिराये॥कर्णजरासंधतेजमदाये॥१४७॥
दुहुकेरथअस्वहतहोये॥वर्छवानदुहूकेतनपोये॥रथतेकूददोउसरवलागी॥होप
दातकीनेयुधभारी॥१४८॥मल्लनियोपुरसपरलपटाने॥दोउवीरभुजवलअधकाने
जरासिंधवहुमल्लप्रहारे॥रविसुतकीदेहकीनदुखारे॥१४९॥रविसुतरिसकभुजभु
जवलस्राति॥लाईजरासिंधकेतनसत॥तरउठौछातीसमभारे॥लषीयतहो
नदुहूकतिहिवारे॥१५०॥दोउटूकतेइकजराकरायो॥डीहविस्तारपाछेपुरगरायो॥पू
रनलसोजरासिंधकोतन॥देषजरासंधभयोविमनमन॥१५१॥रविसुतकाउस
निवलुनिरषाये॥हर्षधारमुखतेपुरगराये॥जरासिंधोवाच॥धनधनतुहिवलु
धेधमहाने॥तुहिवलसमसरमकोनदिषाने॥१५२॥करेपरसपरमित्राचारा॥
हमतुममोनहीनीकस्रषारा॥दुहूकीनपुरसपरकंठकमाला॥युद्धत्यागकीयो
देतविशाला॥१५३॥सबमल्लदेषतवहुविसमाने॥जोहिजरासिंधकेवलपती
पाने॥हमरावलतासोपतीयाने॥जियाचाले॥युद्धइछत्यागीततकाले॥१५४

१३६ जरासिंधोवाच॥ दोहरा॥ ममसुतवस्यमईविरधजुन्नितनुमर्मुहिमसुतो समान॥ आपुनराजनतिहि
देतहोरे श्रंगिवसतवलचान॥१५५॥ श्रीवाच॥ तुमसुरवुधरजीवतरहेहो रहो राजसुरवकारा॥
पितु जीवतनकैसेपुत्रकहो शोभतराजसुचार॥१५६॥ जरासिंधोवाच॥ चौपई॥ येतुममोहिराज
नजहाहो॥ कहवररहतहो सुरवणधरावो॥ मालवदेसईहाँनिकटारो॥ ताकोनपजितसेन
सुचारो॥१५७॥ मोतोसुमदेवेसजवलरहीता॥ तासोहमुराजधुनचलेसत॥ इवतुममोहिपि
ताकरवोले॥ ताहिहितनोनिजवलेसुतोले॥१५८॥ ताहिदेसनुमराजकमाओ॥ हमराहिदा
रुधपरावै॥१५९॥ दोहरा॥ जरासिंधधरेवचनसनरविसुतलीनेमान॥ मागधदेसपुच्य
मजगे जरासिंधकेयान॥१६०॥ जरासिंधरविपुत्रकौ दीयेराजरपीनाहिपार॥ साजसह
तवहुकुमसदीयेनगेजेरेनिहिपार॥१६१॥ आपुनेसतसहदेवकों अमितसेनजितिहिसं
गा॥ चलोसाथताकेदीयेचलेयोधनिहसंगा॥१६२॥ वर्गोराजसजितसेनसुनपठेयोध
सनगंता॥ निजसुतसेनापतिकीयोजोमजवलुनिहसंता॥१६३॥ चौपई॥ रविसुतासो
रउपधरीनो॥ सेनसहततामोरहतलीनो॥ जितसेनपुत्रजामरणसुनायो॥ चढयो
कोपसजेसेनसहायो॥१६४॥ परेयुद्धदुहूनोअतिभारो॥ दुहिसुरदेवसुचारो॥ तो
सरदिनपाछेरविसुतवरा॥ ताकोवलनिवलायोरणधरा॥१६५॥ सीसताहिपुनकटभन
उरेरा॥ निरखसरेजयकारउचारो॥ रविसुतकीवडुउपमउचरही॥ पुष्पवृष्टिनभते
झरिकरही॥१६६॥ जरासिंधमनरहकापारी॥ आगोआयोहितुचितधारी॥ निजरा
जहितेचढारवरहेजनि॥ चेतरदीयेरजोकोहितमति॥१६७॥ रविसुतनिजवसधारदे
सवरा॥ हसनापुरकोचल्योरेतधरा॥ दुर्योधनसेआईमिल्लाना॥ कुरनपदेषतअतिह
रषाना॥१६८॥ ताससमकारवेउरेऊनितवला॥ राघनकोरवानसोवडवला॥ श्रीपदुपीत
रीहिपक्षधरायो॥ कौरवानपरवदौरसायो॥१६९॥ पांडवकौरवानकापक्षधरा॥ क

रेकहमसोयुधभुजवलवंरा॥याहिगायविसनारजपारे॥कहतनपरनयाहिकोपारे॥१०॥
याजुधमोरविसनजसकीने॥सुरगंधर्वरणकीयेजधीने॥हरिकोसेनसहतनिवला
यो॥कर्णतेजचवूदिसपुगटायो॥११॥चारदिसाकेनपनिवलाये॥त्याग्येधनकछग
णतनपाये॥सकलेनपनिजसंगलिआवा॥कुतनपआकीयोयजसहावा॥१२॥
जरजुनभीमनकुलसहदेवा॥येधनुडनदूलीयोजमेवा॥डनचदूभातनलीयेजमे
वा॥तिनकीगणतीनाहीकेवा॥१३॥डनचहुभातोमकलवरवमहि॥तेडनडकले
एकमासमहि॥येविस्यारईहिसयापुगरासे॥वहेतवधनजनिरंचवकतासे॥१४॥दोरन
नारदकर्णकेवलकेहेधनजसोपुगराने॥पुनभाषतगुणताहिकेकेहेनपरतमहान
१५॥चोपई॥रविसुतवलकीजकथकहानी॥जेतीकहेनातेजधिकानी॥दोरवजर
रनुमरेयोधेजति॥समतेयुध्रजरथवलरविसुत॥१६॥येनुमनलधपावतनिजसो
ना॥नहिउपजतनपुसपरउतपाता॥हरिकीडयाथीहेवे॥सकलदानमारभुमधोवे॥१
७ ७॥यातेकरलीनुमसोवाता॥कहीनपुगटधारनुहिमाता॥१७॥दोहरा॥डयेवसीठहेंजिहि
समेकहमकोरवापाह॥कुंतीसहतडकेतवहिहरिसभुगयकहीताह॥१८॥श्रीकृष्णउ
वाच॥रविसुतहैभ्रातनहिपांडुवजानवशेष॥वलोराजदेवेनुजेकरेसेवनिरशेष॥१९॥
हरिकुंतीसगगीकहिपयकेरविसुतमानेनाहि॥पुनकआईउनकोरिदेतोसोपुगरलवाहि॥२
०॥तिरदवेसुननुमराजुतनदेतकर्णकोहेत॥दुर्योधनकोदेतवहुमितभावचितचेत॥२
१॥चोपई॥राजुकरनदुर्योधनभुमपरभनुमसेवकानसमरहतसेवधरा॥नमसोदुर्योध
नलघपेने॥उचरतसभसोजरतनेवेने॥२२॥नुमरेक्षमहरिदिषनसकावत॥याते
डहिजायनुहिसमझावत॥आवउपदुजवरणडकडाने॥नवर्णविसुतरतमयोमहा
ने॥२३॥जातरकेजगताहिहतावता॥जासोसुगसुरलरनसकावता॥धर्मजोवाच

१३२ अरउपद्रवमोहिसुनावो॥यतिहतोकर्णपुत्रगराबे॥९४॥नारदोवाच॥प्रथमेपरसरा
मकोशापा॥हसोवानमक्रोतेउक्रूपानभदूसरशिषकेशापुत्रमोरे॥रथकोचक्रभु
मगोद्योककोरे॥९६॥तीसरसंजोइकुंडलसणसुरपति॥लेगयोमांगइनदोयेउतार
तता॥चौथभीषमनीकनतासो॥करहतरहतसदलबलवाको॥स्वनसमनकर्णअग्र
थिवशिरसकावत॥विमनहोकृतलजुपावत॥पंचमकुंतीसोप्रणधारयो॥हतोन
नतुहिमनपुत्रउचार्यो॥९५॥पृथकरतानिजपुत्रोमभारत॥नारदईहरणमोस
भमारत॥षष्टमनमेरथकहरिवर॥विजैनुमारीचारतहिनुधर॥९७॥सप्तमशल्य
सारथीताकी॥तुमसोहूतेवचनवरयाकी॥कर्जेनवलतकेसदासराहत॥रविसुतव
लकोलघुगरावत॥९८॥विमनहोतकर्णमलवचसुन॥रजलसायेउजनज्योस
रतजगुन॥अष्टमजबभूमचक्रगह्यो॥तादणहितरथुतेनलकायो॥९९॥तब
कर्जुननिजसमपथजे॥हतसीचोरणवेनवषाने॥नातरकोतिहिसकहरवज्ञा
वत॥जेमझावतभारीकनपावत॥१००॥वैशंपायनोवाच॥फुनधर्मजनारदवे
चन॥सदनमाहउचरतवडुरवन॥१०१॥धर्मजोवाच॥कुंतीमोसोलोपधरान
उवतकर्णनकवहूलषाना॥तातेकहेकोपधरवेजीया॥भेदछपादधरसकेनको
नेया॥१०२॥यहतिनारीजगमारेशापदेउभेदचितधरनसकाही॥जोनस्वनुरवर
नुहवशने॥कपूजायुधरीपकोनसुनानो॥१०३॥वैशंपायनोवाच॥ईहकहिनारद
ज्ञानमहावर॥गयोनवीउरिपैनचेउधर॥पाछेधर्मजभ्रातवुलाये॥धृतराष्ट्र
रहमदेउनिकटसदाये॥१०४॥द्रुपदसुताकुंतीवेदारी॥धर्मजकहेचवनप्रग
टारी॥धर्मजोवाच॥कर्णभ्रातनिजदहमजहताये॥जपुनमीसवउवापुलगाये॥
१०५॥मोहिहनीमवृषमभुजीवहताने॥भीषमद्रोणशल्यादमहाने॥यातेमोमनक्षत

किं तौवे॥ कोउ पाउ मोको नहि दिषावे॥१८॥ चित उच्चार अति भयो हमारा॥ कहे तब राजन
हि कुल परवारा॥ जगत धार धारे संन्यासं॥ मन ते तजी राज की आसं॥ वेद कुं जमे
तप सामसाधो॥ मरण दिवस लगाई शरणा राधो॥ अर्जुन उवाच॥ ऐ योग वचन न
पका हि उचर हो॥ जैसी विजे पाइ न समर हो॥२०॥ दोहरा॥ तप सा चाहै सिंद्ध उरि
देन पको तप वरन्याइ॥ दूसर तप या सम नही कहीं वेद प्रगटाइ॥२२॥ कहे राज
वरन्याइ धर पर जाको सुख देहु॥ लोक माहि उपजे सुजस परलोके सुख लेहु
२३॥ चोपई॥ न्याउ धारये राजकुमारो॥ सहस्र अगुनात पते फलु पावो॥ धर्मराइ
जब लेष ठाकुर॥ निजु निज कर्म कीये सो सहे॥२४॥ भूपत ते प्रछे इ कन्याये॥ इह
वर कर्म केउ न पुछाये॥ ये तप की तुम इधा धारो॥ सम को उ करसो वीचारो॥
न्याउ तप स्यो को उकरे॥ जि हि पर इश दया निधरे॥ भीमो वाच॥ जो तप ग्रा स्मारि देतु
मोरे॥ काहे हते कुल के जो जग सारे॥२६॥ जब वन ती तब कारन कीने॥ जगु हता
इ अब तपु चित लीने॥ को न बुध सभ जगत हता ये॥ चार ते होत प कुं जबहूं ये॥
२८॥ कुंती उवाच॥ हे सुत जैसी विजे दिषाये॥ किंउ इहि वचन कहो प्रगटाये॥
पुज्य लत दो पपि त्रण के कीने॥ जगत मा हि भारी जसु लीने॥२९॥ जो सोये पित की दे
र रहाये॥ पर जाको सुख बुध रोम हाये॥ पाछे कहीं सु कहीं सु चारी॥ पुनः जैसे मत र
होस चारी॥३०॥ दोहरा॥ वहुर न कुल समद देव वर द्रुपद सुता वर ज्ञान॥ व दुधी यदी
धे भ पको निज निज बुध प्रमान॥३१॥ यदुपति व्यास विदुर भगत ज्ञान वर सत जो
ज्ञान॥ सब अर्जुन वो स्याप्रगट रत कहा कहे न रन्ता ह॥३२॥ चोपई॥ सुन सुन स
धर्म जने वेना॥ राजज्ञा स त्यागो मन न गने ना॥ श्री भगवानो वाच॥ हे धर्मजनु हि पि
ता पिता मा॥ राज कुर सर रेसु रघुधामा॥३३॥ ज्ञान तुहि भा ता रज ते उज्ञा ये॥ सभ

१३९ ऊररहाले विजेदिषायो॥सभजुगगतुमरीऊजासधरावै॥रहेसुखी वडुउज्ञानदपावे॥तु
मजैसेसमकहतेनसुहावे॥अरेराजेसुखजसुउपजावे॥२१३॥व्यासोवाच॥हेधर्म
जहमवडेतुमारे॥हितसोसुनेहोवेनहमारे॥धर्मजेसुनकरहैसेसेवचना॥वो
लतभयोविनयवडुरचना॥२१४॥धर्मजेउवाच॥दोहरा॥तुमरेवचमोहिसीस
परवहोसुलेवोमान॥तुमहोहमरीठोरवडुतुमीविननाहीज्ञान॥२१५॥हरि
सहव्यासधृतराष्ट्रसोकहेवचनसमझाइ॥तुमधर्मजकोज्ञानसुतासवाध
रेमहाइ॥२१६॥धर्मजेकरधृतराष्ट्रगहिवडोहितभाषतवैन॥हमतुहिपितके
भ्रातवडुसुनहोमरतमैन॥२१७॥धृतराष्ट्रोवाच॥चौपई॥हरिऊरव्यासयेवच
नउचारे॥हितसोमानोराजसुचारे॥मजुनकरशुभवस्वधरोतन॥चेठारहि
तुहिराजेसिधासन॥२१८॥धृतराष्ट्रसरधोमजाना॥नारदादिरिषितपीमहाना॥
ऊगाजेसमजुनकरवाये॥राजवस्त्रनपऊलजाये॥२१९॥ऊजेनभीमुन
कुलसहदेवा॥मजुनकरपहरेवस्त्रऊमेवा॥मोतनमालगारसभीसुहाये॥
नानारतनमभषनऊलाये॥२२०॥ऊमितसुअंधधरीहरषारे॥भयेइकत्र
नपगुनीऊपारे॥पंडुतिरिषीगुनीऊतिभारे॥इकतानेसुरसभामझारे॥२
२१॥सकलमपवडुधनवेठाये॥यथायोग्यठोरसुहाये॥दुदभशंखमेरम
भकारे॥घनतेऊधव[illegible]गटारे॥२२२॥दोहरा॥दुर्योधनकेरतेतेजोध
नवस्त्रऊपार॥सभमेजाइतहाधरेथेभयेनुगऊतिभार॥२२३॥स्वर्गनि
वासनननगजरतधस्योसभामेऊान॥पितापितामायाहिहरवेठतथे
सभमान॥२२४॥चौपई॥सभामधिसिहासनधारे॥महदेवमहूरतनीक
निहारे॥मोतनकविचिधामाहचवनुरकजाति॥यासमऊवरनादुरुपरेरवि॥२२५

श्रीयदुपतिऊधरव्याससुजाने॥धर्मजकेकरगहेमहाने॥धृतराष्ट्रविदरपुनदूसरहाया॥ऊद्यो
मपकावउहितस्सायाया॥२२५॥सिंघासनपरऊनविठायो॥सुरपतिसमनपरूपादेखायो
समबोलेवउधुनजयकारे॥भयेहरखसुरमुनिरिखिसारे॥२२६॥भीमऊदिभातासुभ्रा
तासुनमुरवचरेहूरजीयभारी॥सकलेनपआभयेऊधीने॥सीसनिवाइविनीऊति
कीने॥२२७॥दोहरा॥रिखितपसीपंडुतगुनीनपपजेवउहेत॥मानऊधनवस्तुदीये
दछनारहीनकेत॥२२८॥जोजीयऊसोदेतासमेराउरेऊतेऊमादि॥समनोधेवउदर्वदे
धर्मजकुलमरयादि॥२२९॥चौपई॥कईसहस्त्रगजमदमतवारे॥रथनगजरेऊ
सुगननतनधारे॥वस्तुमोलजिहिकरनसकाही॥सुरपालऊनेऊजिहिशोभादि
खाही॥२३०॥श्रीयदुपतिकेभेरधरेवर॥धर्मपुत्रवउहेनृरिदेधर॥धृतराष्ट्रव्यास
केभेरमहाने॥धर्मजदईरिदेहरखाने॥२३१॥व्याससुएकुमणलईउठायो॥ऊअवर
ऊधूनहिलीयोमहायो॥पुनयुयुत्सधृतराष्ट्रवर॥योपुयमलयोधर्मजसोहितुके
र॥२३२॥दुर्योधनादिसभभ्रातनजाये॥मिल्यापांडुनासोहितुपाये॥तापरवउन
पऊरगामाधारी॥दीयोवहूद्रवताहरखधारी॥२३४॥स्मातऊसहदेवजरासिंधको
सुत॥तिनकोवहूधनदीयोप्रेमयुत॥सभराजाकोऊजरऊसुवर॥सिघास
नदीयेयथायोगऊर॥२३५॥ताहूसभालोऊजोडाजे॥वउधनदीयोहर्षचितवाढे
रेऊरावसमद्रिपनराही॥काहूकेवधुइधनरहाई॥२३६॥धनवस्तुयेनृगऊपा
रे॥दीयेलुटाइनपचितहरखधारे॥२३७॥दोहरा॥पुनधर्मजधृतराष्ट्रकेसन्मुख
ठाडेसुचार॥जोरयुगलकरऊहेमुखहमहेदाससुमार॥२३८॥तुमरीआज्ञापाइ
हमराजसिंघासनलीन॥नातरतुमहेभपरउहमनुहिदासऊधीन॥२३९॥
चौपई॥राजतेजुसभभूपुनाजाने॥हमकोदाससमसमपरखाने॥

२५ हमरुरोराजनुहिआज्ञामानें॥तुमहोहमरेतातमहानें॥२४०॥सुनधतराष्ट्रध
मेंजेवेना॥रुद्रनरुरतेवालतनिहचेना॥२४१॥धतराष्ट्रोवाच॥हेसुततुमविन
कोजनहमारे॥राघतहोमुंहिमानसचारे॥राजधत्रतीहमीससुहावें॥हमरोमन
हरपेउपाजावे॥२४२॥जगपतितुमपरहोहुदयाला॥राजुभोगभोगोचिरकाला
सुनधर्मजुसमभसन्मुखहोये॥रहतेवेनसुनेहसमभकोये॥२४३॥धर्मजोवाच॥
येतुममोपरकरुणाधारी॥यापतेहोमुहिमपसचारी॥मोहिहरखुईहिमाहविचा
रे॥धतराष्ट्रआज्ञाप्रीतिपारे॥२४४॥हमदेहोलाचेदाससमानें॥करोसोईजोआज्ञा
ज्ञाठाने॥नृपवचसुनतसभीवरमानें॥दईनमीससभहनहरखाने॥२४५॥
श्रीभगवानोवाच॥हेनृपदमसुनवचननुमारे॥हरखानेहैसभीसचारे॥जैं
धतराष्ट्रकेमानधरायें॥जगपतितेफललेहुमहाये॥२४६॥करोराजुभुनपरतु
मसुकृता॥तुमरेराजप्रजारहेसरवचिता॥२४७॥दोहरा॥पुनहरिरनृपसोंमेचकर
भीमनेजीकीना॥सभोदिसोपरजाहिकोआज्ञाजन्वेलप्रवीना॥२४८॥मंत्रीयाप्ये
विदरकोजासोंमंत्रगहाइ॥करेकाजसभराजकेरुहमलालववलपाइ॥२४९॥चो
पई॥सेजकोभडारीकीना॥निजइछासोदेहुप्रवीना॥सेनसभारनजकुलध
रायो॥रथदूरकरेउच्चरायो॥२५०॥जिहिराखेकोऊदूरनकरहीं॥करेदूरतिसकोइ
नधरहीं॥नकुलेनकोसेनाधिपथापे॥तिहिआज्ञाजारहेसेनउमापे॥२५१॥सुख
लेसेनन्नाआज्ञामाहीं॥जुद्धापठेतितहसैचहूजाईं॥जुसकोऊशत्रुवलीनिरघा
कारसतेचलिजातरगहत्यावे॥२५२॥दिजोरिथाकीपजाभारी॥धसोधोमजीहि·
सुनञाधकारी॥सहदेवयोतकीयाहिमलामतो॥निसवासरनृपनिकर
रहतसतो॥२५३॥समकीजायनृपसोप्रगटोरे॥उन्नरप्रतिसभ

कैनविचारो॥निजनिजकार्यसभसवधाने॥योधापेसतधर्मसहाने॥२५४॥दोहरा॥से
जेविदरयुधुतसकोधर्मजअछैयाबुलाइ॥तुमतीनोधृतराष्ट्रपयरहोदिनरैनहितलाइ॥
२५५॥हेसंजैहमयाहितेतोहिभजुगमेजीन॥राघतधृतराष्ट्रऊधचतुमसोहेतप्रवीन॥
२५६॥चौपई॥सवैउवजोएकेवारा॥चाहेतातनदेहमभचारा॥मुहिपछैविनदेहुसजा
ने॥मोहिहरखइहिमाहमहाने॥२५७॥आज्ञाभंगतातजेकरहो॥हमराहोसपुनहर
तुमधरहो॥मातगंधारीसंगमुहितातना॥पुत्रशोकधारेअतिदुखाताना॥२५८॥निस
दिनतिनकोहरखतधारे॥जिहिविधिहिउनकीचिंतनिवारो॥सोघवातकीएकोवा
ता॥हमरोहर्षधरहेसरखताता॥२५९॥हमभीतातकीआज्ञापायो॥करोराजअकहोमा
चरसनायो॥पुनधर्मजनिजभ्राततनसोवरा॥अहेवचनसुखहेतउधवअधरा॥स
र्वचतुदेसतुममुहिहेतो॥वनवनभरकेवउष्णमचेतो॥मोहहेतवहुशत्रुहतायो
जिहिसनमुखकोऊसकेनजायो॥२६०॥प्रानप्यारनहीकरेमोहिहिता॥सोऊकी
नतुममुहिआज्ञाजित॥अवजगदीसराजमुहिदीना॥तातेहमप्रणकीयोप्रवी
ना॥२६१॥ईहसखुराजनतुमतेसभजानो॥भेदमर्मसचवअनहीमानो॥अव
तुमयोआज्ञामुहिधारो॥नीहिविलंवकरहोसविचारो॥२६२॥उनपवचसुनत
हर्षसभभ्राता॥दईआज्ञासिघनृपकोअतहरषाता॥अहेहेनृपजिहदरघुतमाचो॥ह
मुनीवाधामोईसचारे॥२६३॥धर्मजउवाचा॥एहीमाहहर्षमुहिजानो॥अव
मोहिनिजनिजइर्षवघानो॥भीमोवाचा॥हेनृपजोतुमभयेदयाला॥भाषतेरे
निजइर्षविशाला॥२६४॥दुर्योधनकेसदरवरधामा॥सोमुहिदेहुमपक्षमरा
मा॥दामजसनतविलमुनहीकीनो॥अहेभीमसमोकीनप्रवीनो॥२६५॥हर्षतभी

मऊयोत नकाल॥ दुर्योधन केगेह विशाल॥ मंदुर देष रखो विसमाने॥ या समभिन
हुद्रिष्ट नआने॥ २६॥ वेन नधाम जराइ जराये॥ याजो ते निसति मर भिराये॥ त
ह दीपवली कोऊ नवाता॥ नजाच मषाह जो तक्ष तज्ञाता॥ २६॥ धन अंग तत हाते
नि कसाना॥ योकारून पनाह दिषान॥ मो तीहोनगंग तन पाये॥ शस्त्र अस्त्र की
ऊरन आये॥ २६॥ दासी के तक सहस्र रूपवर॥ सभगन चतुर शोभ ज्ञान गनधर
पवन पुत्र दिषभयो रहेअति॥ अरवअर्जुन की गाथ सुनो सत॥ २०॥ सोरठा॥ दु
दुसासन केधाम अर्जुनमा गेभपमो॥ त तछिन भप्र अकाम दीये हर्ष शिदिधार
अति॥ दोहरा॥ दुसासन केधाम सभ धन शस्त्र अरची र॥ अर्जुन लीने हर्ष चि
तसुनो नकुल कीवीर॥ २०॥ चौपई॥ नकुल शकुन केधाम सभारे॥ गऊ गेह सर
देषि चारे॥ अवरधाम जो शेषरहाने॥ यथा योग दीये हर्ष महाने॥ २४॥ तीन पुत्र
विसतके पाछे॥ बालक अवस्था संदर अति आछे॥ मातन सग नपलीयेवुलाये॥
अपुन निकट राषि हितपाये॥ २३॥ निजपुत्र नतेंहि तुअति आदर॥ केरे भप
तिनसो उजीआदर॥ दुर्योधन जीवत जारे स॥ राषत यावलपुत्र दिने सभ॥ २४
ते उदे सति नवो नपवदेने॥ अश्व अरू धकउन ते मीकीने॥ अर्जुन सो क होभ
पहेनुधर॥ विषा शस्त्र सिषाउ इन को वर॥ २५॥ वैशंपायनो वाच॥ इहि कायवर
धर्मपुत्र वर॥ गयो तरा जहा वैठे चपरा॥ हरिमंदर कै शोभ अपार॥ कहीन जाइ
कथ अंग नून धारे॥ २६॥ इक पुत्री चीधाम मंऊरे॥ अति मयान कीजि हिलपढ
रे॥ धर्मज देषभयो विसमाने॥ वड्डभय पायो तेज महाने॥ २७॥ भयभीतार
शिनिकट जायो जवा॥ अदर भाउ हरिना हकीयो तव॥ आगे नपजव हरिपग जा

वन॥२७॥अब हरि नाहि उत्तेजन पकराजो॥चौपई॥तन की अनुराग तो॥तो भी हरि न दुख नाहि उचा
रे॥देखम पमाप तावि समारे॥अध्याय धर्म जउवाच॥हरि हम केसो न क्षी विग्यानी केनो॥जहरनुम
वो लेनाहि प्रवीने॥वेशंपायनो वाच॥इहि सुनहरि उठ क्षपन सभी पा॥वैठ्यो उचर
तजगदीपा॥२९॥श्रीभगवानो वाच॥दोहरा॥भीषम की चिंता गसै या हमरे मनको
इ॥ताते सुधनिजदे हि कीर हम के रहीन काइ॥३०॥जंगम तवउस रमाया समदू
सरनाहि॥परस राम जै से वलीप तीया ने वल वाहि॥३१॥चौपई॥जिहि सब न्यरवजे
जमो नाहि कोउ॥व रो हाइ सा के रण सो उ॥वृद्धता हि की करा उचर ये॥या सम कोपं
उतनाहि दवरीये॥३२॥तातपु हि वतपसीप चहारे॥जिन कीप जा सभ जगुधारे॥
ते अव सरासि हजापो दाये॥ पचे देहि वउक्ष दिवाये॥३३॥हम निज सुधतासुध
विसरानी॥इहि चिंता मोहि हारदि ठाहिरानी॥सुनत भूप हरि ते इहि वेना॥कीनो उम
उरदन जलनैना॥३४॥श्रीभगवानो वाच॥हेनृप तो केन मर चलो अब॥पूछले
हु सब ताते सभ॥परथ पर ज्ञु भीषम पघाये॥कीयेप्रणाम निर तक्षीन भये॥३५॥
हे नृप ऋपाचार्य सभ ज्ञाता॥या तें पठे तो हि सभ भ्राता॥उन मो सो इह विनी उचार॥
करे युद्ध उनमो सो भारी॥३६॥मत ता पर सधु रो सधरावो॥निजगुरु जान सभी सम
करावो॥धर्म जो वाच॥या मो दो स कि सर को नाही॥युध की गायर हीय धमाही॥३७
ऋपाचार्य वड गुरु हमारा॥तासो किया अब वैर विचारा॥अब सुधामा मोहि गुरु को पर ता॥
मम सतहते जा धरम करत ना॥अवर घने मन मधोध सिंहारे॥तासो भी नहि वैर हमा
रे॥ऋपाचार्य गुरु सो कि ग्राम करने॥जिहि मोहि दई विद्या सरदहना॥३८॥वैशंपा
यनो वाच॥ऋपाचार्य हरि लीयो बुलाये॥नृप बुलाय लीये भये हरषाये॥भीषम सो हरि
दसि धाने॥गये बुरुषेत हरि देह रषाने॥३९॥श्रीभगवानो वाच॥दोहरा॥पंचतात

सुरेश्वत्रमोपरसरामवलवाना॥छत्रीकुलानघेरमोएसोपरकीयेभंजनताना॥२९१॥चौपई
देखोमैवरकीयेनिदछत्रायना॥सुननत्रपएधतदेनाराय ना॥धर्मजोवाचा॥उदेश्रम
नेलोधछत्रीमारी॥सवलदेसकीयेनिजवसभारी॥२९२॥कश्यपमिरराजछत्रधरा॥नि
जतपसाधतमयोइकतवरा॥पुननेवेसोतिनतेमुमराजू॥ वेराधछत्रीयनहायसमाजू॥२
९३॥उदिहन्निनातमोसोपुगराते॥त्रभवनपतिप्रभकर्णधारे॥श्रीभगवानोवाच॥ब्रह्मासत
कासुतकश्यपवरा॥त्रिदिदजवर्णप्रगटहेमुमपरा॥२९४॥राजकाजउनसुकलविसारे
साधततपुदिनरेनसुचारे॥मुमपरवापलओज्ञातिहोवना॥तसकरलगेउवपरथोव
ना॥२९५॥वरपारपंथकरहीउतपाता॥करेउपदोमजनेवलघाता॥पापपरमुमको
हरहोई॥होउसधीनकश्यपवयरोई॥२९६॥कश्यपमुमकोदीनीनिहारी॥कहेवेनम
रवसोपुगरारी॥कश्यपोवाच॥हेमुमजोतुहिरधाधारत॥परसरामममारेकरभारत
तोहिरछशवकोनकरोवे॥कोउसमानहीदुष्टपरोवे॥जोभाषोसोतुमकोदेऊ॥याते
तुमराकपनिरेहू॥२९७॥होहिसंघारपापकेकरही॥यातेमत्रभुमजातिपरही॥२९८
भूमोवाच॥दोहरा॥परसरामममभहतकरेहमरेरछकभार॥तिनकेरधरहमरीउस
वेइहिमुहिमनभ्रमभार॥२९९॥केतकतिनतेलोपकरहमराखेनिजमाहू॥मे
सकुवरकेसनरखरापुरतेहवसवाह॥३००॥चौपई॥परसरामकेमयजातिभारे॥
रहेलोपतिनजरकपतिनकारे॥पुनतुमतिनवुलाइनपधावो॥केरधरहमरीवल
मावो॥३०१॥जहारस्तहेमुपकीहमोचोदेहुतनाइ॥त्यागोतिनकोविलमतजकर
तुमरछहिताइ॥३०२॥एमपवडुनाहकोपरसरामहतकीना॥उरजनामसुततहि
केवडुनपुधरेपुत्रीना॥३०३॥चौपई॥सबनसुवनजरासेछत्रपदेग॥तहावसेधरगवि
नमयमोरेगरहुस्यतिसवाइसपरकीना॥ताताजामतासुततपलीना॥३०४॥अमम

तपीके धेन चरावत॥ कालखेप ना करवी तावत॥ तीसर मांत भीइ ही भांते॥ जां इ चरावत है
ऊन तिऊन ते॥ ३४॥ चौथो नाम विदर वन रेसा॥ जं जा तह रहे तप वर भेसा॥ खान प्र
स्थ रहे जा वन माही॥ चितभय भाती रहे तहाही॥ ३५॥ पंचम वंतु उनाम वढु भए पा॥
ते भीत हार रहत तप रूपा॥ षष्ठम भरत न सने भिन्नत नामा॥ इहि दो ऊ रहे तु रखे ऊस दा
मा॥ ३६॥ सप्तम प्रियव्रत नाम उचारो॥ सागर तेर रहे प्रगरासो॥ इहि ऊठा वढ
न पकी ऊनसा॥ वसे लोप नुम ल्या उजन संसा॥ ३७॥ वहु रीत नो को राजु वहावे॥ क
रे रख भी इहि तुम जस पावे॥ ३८॥ वेशंपायनो वाच॥ दोहरा॥ चतुर पम नके वचन सु
न कीयो गमन ततकाल॥ ॥ हूउ तस्यापी ति तिनो को धारे मु मुछित भार॥ ३९॥ ऊठो
को द्दइ वां रभु ऊठा ठो भई धनरेसा॥ दुष्ट हान उन ससर ख धरे ध्यांत मुहर रोदन सा॥ ४०॥
चौपई॥ तिन की संत तत भई ऊ सपोरे॥ छत्री कुल जग मो वल भारे॥ इहि इतिहास श्रीर हम
सुनायो॥ धर्म जस सुन तन ऊन धवस रख पायो॥ ४१॥ भीषम के पग जाइ परा ने॥ यदुपति
हित सो वच प्रगराने॥ ४२॥ श्रीभगवानोवाच॥ हे भीषम तुम सम जग नाही॥ दूसर
कौन ही दिष्ट दिखाही॥ तुम सम विद्या को जग जाने॥ धोतु मकार कर जनकौ नम हाने॥
मात तात तुम तेहर रख तऊ ति॥ दीनो तो हि ऊन सीस ऊन धवस त॥ ऊव तु हि सम ना चित र
भयो ऊ नायो॥ सर पुर भो गो भोग महा यो॥ ४३॥ धर्म जो है तुहि सत सम भचारी॥ राषत हे चि
त चितऊ पारी॥ संग्राम मा हजो जीय हता ने॥ तिन के रख धर भुन मरी महाने॥ ४४॥ इही
चित धर्म जग हि दिधारे॥ धारे सिख्या ज्ञिहि चित निवारे॥ मो पर वउ उपकार करा वे॥ जि
हि विहि नम की चित गवा वे॥ ४५॥ तुम को पुन घना उपजा वे॥ पर जाको व उसर ख प्रग
रावे॥ इहि कहि हरि भीषम के चरना॥ सीस धार रहे जग दुख हरना॥ ४६॥ दूग उघार भी
षम निरख काल॥ हरि हद जनि रख्या सुछवि शाला॥ देषदेष पुनीत गमी चायो॥ भयो मन सो

४२

सो चन महाये ॥ ३१ ॥ श्री भगवानोवाच ॥ भीषम ते हरि ध्यान मझाे रे ॥ हरि विन कौरन या हिआ रे
चल्यु आवते सन करे ग्राहि मारी ॥ श्रातव हुरज्ञा देति सै ठाही ॥ ३२ ॥ पश्च भीषम ते वंद रहमे
रा ॥ धर्म जु सन्यासे सन कीन वर ॥ श्रात मलपुन जाइ महाने ॥ भीषम के चरन नलपरा
ने ॥ ३३ ॥ युधिष्ठिर उवाच ॥ भीषम दुखाये ॥ हरि को चीन पूछ महाये ॥ श्री भगवानोवाच ॥
हे भीषम तुहि भार सक्नाई ॥ सकल जगत माहि प्रगटाई ॥ ३४ ॥ धरम चा सदि मन तुमही ज्ञान गु
र है तो धर्म निरहचे मन मो धरा ॥ धर्म जन तुहि सकलताविन्नी करत है ॥ तुम पर मार मे सुधरत है ॥
३५ ॥ सकल जगत तुमते फल पाये ॥ युधिष्ठिर या गुन सीन मन मह ह्याये ॥ क पको भीषम सिखा
धाने ॥ प्रथुक्तोस न सुभ व्यवहार चारो ॥ ३६ ॥ भीषम उवाच ॥ दोहरा ॥ या सम हरि के वच
न वि तुचीव ना हो उवात ॥ ता लगी मोहि शरत जहि धरो सिख जगतात ॥ ३७ ॥
श्री भगवानोवाच ॥ संतन वचन सभ भजन ने हे ये उचरे नभसार ॥ तुम संतन ते होवडे
तुहि वच जगउपकारा ॥ ३८ ॥ चौपई ॥ तुम रेवच ये हित सुनाये ॥ निहचे मो थमुथ
ने गत पाये ॥ तुमते मिथ्या पाड प्रकासे ॥ ते चरधारे भार विलासे ॥ ३९ ॥ तुम को ताके
न वहु लाहो ॥ चले जगत ते उविध ज्ञनु रागो ॥ भीषम हरि के वेन सुनाये ॥ हरि युहे य
मुख ते प्रकाशये ॥ ४० ॥ भीषम वाच ॥ प्रथम हि सम मे मुहि दुसरन्चारा ॥ बिन हरि व जनन नहि
चरन्वारा ॥ वारवार मुहि इहो उचरहे ॥ करे तु मरे हित ब्रवणी धर है ॥ ४१ ॥ पोहि मोहे
न ज्ञाधि व बधाने ॥ रसन रिके हीवर तु जोय जाने ॥ जो नर उदरी प्रातव लाहि ॥ हरि के
सिमरं रहे तु विशाला हि ॥ ४२ ॥ भना वे फल धारे व उभोगा ॥ ज गमे सु जसुभोग परलो
गा ॥ भ जन धार पुनि निज निउहारा ॥ करे निज कुरे वविवहारा ॥ ४३ ॥ निरहकार जे
न हो इ महाचितन ॥ एक का जे धर्म रहे सदा हित ॥ जव जाने को उकार जनो हो ॥ करे भ
जन जगत उ श्रम पाही ॥ ४४ ॥ समकार जने सुर भूम जन वरा ॥ कार जकरे भजे मुख हरि

हरि॥निरहंकारजोनरहोवहिहै॥हरिकाशत्रुवहजातिसुखहिहै॥३३५॥जगमोभीनिदा
निसुधारे॥जोकरतनतजवहैविकारे॥यद्यपिपरारभधनिजहाँवहि॥तद्यपिका पा
रजकोनतजावहि॥३३६॥दोहरा॥परारवधनिजजानसमभकारजमरतरहाइ॥
क्षमनहोइजगकाजततजैवैठरहैमगधाइ॥३३७॥परापुरातनजगतमोकरत
रहेसमकाजा॥भजनदयाचितमोधरेतजैनकाजसमाजा॥३३८॥चौपई॥पित
पुरुषीजोचलतीआई॥ताकोकवहूनदीहितजाई॥पुत्रमननपोकेकाजसुनी
जे॥सतवादीनपहोइससीजे॥३३९॥झूठकिसीसोमलानकरहै॥समतेअध
रमनृपकोलरहै॥नृपजोकरेसकलतेऊकरही॥पुत्रजापापपुंनेनृपमरही॥र
क्षादानुकरतनिसदिनरहेनृपवरा॥ज्योंजलनिकसेरूपकज्ञधकधरा॥ज्योंज्यों
निकसेजलमीनोक्षति॥विननिकसेहोवेदुर्गंधत॥३४०॥भपनक्रोधशांत
समधारे॥ठौरठौरतिनसोपुगरारे॥ठोरकोपकेकोपकरतहै॥शांतठौरवत
शांतरहतहै॥३४१॥ऐसदकोपकरेनरहावे॥समजननमयघरजाइभगावे॥
ऐसदशांतधरेदुर्जेनजन॥दीहिरूपपरजाकोहननहन॥३४२॥सदाकोपये
शांतधरेजो॥निरहंकारजइस्थिननहोतको॥जोवहिनृपलघयतनउठावे॥
तिहिराजहिभयचितननजावे॥३४३॥दोहरा॥जोदिजघत्रीहतनकोक्षत्रेश
स्त्रुसमभार॥धर्मयुद्धताकेनहीकोऊपापपरचार॥३४४॥दिजदोषीनिदरन
पनजगजुमदेवनहार॥ताहिनिकारेदेसतेपापनलागेजार॥३४५॥चौप
ई॥नृपतेऊकरेप्रजासुखपाई॥हितचितदेहिकसीपसमहाई॥प्रजाकसी
सन्नपतेजुवधावे॥तातेनृपपुजपालकहोवे॥३४६॥जिहिनृपतेपरजा
दुखधरहै॥निरन्चेपुरीकासीसउवरहै॥तातेनृपकातेजघरावे॥शत्रुए

१५३ रेमय भारदिखावै ॥३४॥ सिवा सम न रूप को धुनाही ॥ दिखव उसेन तासर के पाही ॥ सम
जनन जनि जननि जराधचार चित ॥३५॥ रछा हित चहुं दिस कोट बनावै ॥ निरभय होति
रिमा रहवसावै ॥ एक कोट जल बरग कहाही ॥ जलपर तीखाई पुगराही ॥३६॥ दूसर
कोट भमर बरग कहावै ॥ जल बिहीन खाई पुगरावै ॥ तीसर कोप अवर्षोस कोटा ॥ कंटक ते
जाहि लगे न चोटा ॥३७॥ चौथा भीत कोट उचोहीता ॥ नरचेव डीउर रहे सुभ
मता ॥ पचई हस्त भीर रतते हैं तन बलगा ॥ रछ करत रहे योधे जबलता ॥३८॥ पंचम से
न कोट सोह जाने ॥ सम भेते श्री परिदे पहिचाने ॥ उवर कोटनि ज घान रहाई ॥ से
न कोटनि न सुजान तजाई ॥३९॥ तातें सेन को सूध कवरा ॥ केरे रछन रूप की हित
चित धर ॥ जिहि कि हिव केरें सेन प्रतपाला ॥ धन दे रूपा धर हेत विशाला ॥४०॥
जाकी सेन हरख अति होई ॥ तापर सबल परे नहीं कोई ॥ सम की चित धरे अप
न चित ॥ सबल चित लखी सुधराधि हित ॥४१॥ मदरा पान सदा न करावे ॥ जि
ह मद ते सुध बुध बिसरावे ॥ जगर छकीहि तन रूप उपजाने ॥ केरे रछ सम की हि
त माने ॥४२॥ चार वात धान रूप मोथो ॥ निरचे ताकाते जब होवे ॥ प्रथम नरवे
ले दृत भूनपा ॥ दूसर पर त्रीय चहे न भूपा ॥४३॥ तीसर जग की रछ करे हित
चौथा परधन रिदे न बाछता ॥ सम के देस सुतो सम मानो ॥ धरे हेत जग रछ मरहा
ना ॥४४॥ भूतन सो अति रूपन करही ॥ रूपनाम सम के रिदे धरही ॥ सह
चित नित सदिन जीय धारे ॥ पुजा सेन दो उआधवा निहारे ॥४५॥ देस जारहन
काउ धन भमासी ॥ रेम पवे रिदे मन आसी ॥ धिउधम तज शात नाहीं ॥ तेज धरे को
रस कलदि खावै ॥४६॥ भात नीत सत गुर ताके ऊ ॥ दीनन को दुख दायक होऊ
ऊ ॥ ताके हृद धरे न तजाना ॥ रूप को पापुन रछ लखावे ॥४७॥ मन चहे सब

बधजन संगे॥ करे भक्त जीव सच्चित्त अंगे॥ कृपन मे दस मसो न वहाने॥ करे पुजा रजि हृदु धजनना
ने॥ ३६०॥ दिन प्रति पंच कार्य न्रप साधे॥ ज्ञावसज्ञा नहि तचित नज्ञाराधे॥ पुष्यमई शकाम जन
कराई॥ दूसर दान करे हरराई॥ ३६२॥ दिज प्राह्न नजधीन जधीजना॥ समझो दे वे ज्ञप
नुशकत धनना॥ तीसर सम जी पृछे वाता॥ करे न्याउ नहि रहे मदमाता॥ ३६३॥ चौपई॥ चौ
थो कथा कीरतन नित सने॥ पुन चरचा यो जनन वडुगने॥ पंचम त्रीय सो भोजन गावे
पघइक समे न ज्ञाधिक सहावे॥ ३६४॥ निजु निज कथय सभे लजाई॥ परकार्य नहीं सा हदि
बाही॥ दिन को खट कार्य प्रजारावे॥ देवे लेवे पठे पढावे॥ ३६५॥ करे कर्म छै सार हि करावे॥ ज्ञ
वध्य त्रीके कर्म सम नावे॥ छत्री के त्रय कर्म प्रकाशे॥ पढे दान देवे सप्रकासे॥ ३६६॥ तीसर
घजु करे न कराई॥ दान न लेहि न काहि पढाई॥ वैश्य यजु करे न कराई॥ वैश्य कर्म विव
हार करे सत॥ खेती चोड वाधे न से वरत॥ ३६७॥ सूदर सकल की सेवा माही॥ नत पुररदे
याते सुख पाही॥ एंउ तम नीच तुरज्ञानी जन॥ वेदावे निज निकट नेह दन॥ ३६८॥ ति
नके वचन रिदे द्रिढ राखे॥ उवर धीर वच मुख ते भाखे॥ हरि निज जोतन रूपो मो गाखी॥ स्हे
सुखी जग तन की पाखी॥ ३६९॥ ताते न्रप प्रभु चार सहावे॥ न्याय सुनीत सभे सुख पावे॥
शत्रु हनन के उद्यम माही॥ रहे दिन रैन विसारे नाही॥ ३७०॥ धार्म संदोष वहे जो भूपा॥ हो
इन छत्रा राज कर्म न्रपा॥ मित्र भाव गुरु वंधन देखे॥ करे दंड जैसा अपराध पेखे॥ ३७१॥ दोहरा॥
जिह ज्ञाने निज तेवली धरे प्रीत तिह साथ॥ ज्ञपुन समाज मै रिदे रही ताहदिसा सेहाय मइ
७२॥ जो याते लघु होइ न्रप सघु विचार नहि जाइ॥ मन तर हु व धके देहि दुख चले उपाव नज
इ॥ ३७३॥ ज्ञा जे होइ सो काल पर भ पन डारे काम॥ कहि भीष्म धर्म जस नो रइम लालस
स्वधाम॥ चौपई॥ मैं न्रासु धन पनी रे राखे॥ शत्रु देस पर रपरे सन्राखे॥ ज्ञारसे देसल्लट
धन ले ही॥ ज्ञस्म जाइ वउुव लुउप जेही॥ ३७४॥ धने पुछदे वे होरजिन जन॥ तिम

परमपतरहेदयालघन॥जिनज्ञानयुधनाहिनिहारे॥प्रथमयुधिष्ठिरहुरेकुरारे॥३८॥तापर
नपुनाहिरोसुकरोहे॥चहीयेताकोधीरधरावे॥योंयोंदेखियुद्धमहाने॥त्योंत्योंचितदृढहोइहउ
नाने॥३९॥जिहिदेखेहोइहदबद्धसंग्रामा॥रणतेमजेमयभीतमहाना॥ताकोमानतकाल
उतारे॥दोरदेखतनपमयीरदिधारे॥४०॥नपसुधशत्रुणकीकृतिधारे॥४१॥समान
देखसंग्राममसभारे॥भुजबलधरतिनकोहतकरे॥तेनपभारीसुखवड्गदरे॥ज्ञायुध
मोधोरेजाई॥सेनपठावैवलसमधकाई॥भुजबलसैनपठावैवलकर॥आपनजावे
वेरेदृढप्रियरा॥सेनमजेतवसुगमउपावा॥नपभाजेकछुनाहचलावा॥४२॥जेअरस
कलीसेनहतायो॥निजजीयतजावेइकलायो॥तोभीताहरहतनसधसेवे॥मतपुनइ
कछसैनश्रमदेवे॥४३॥जिहिकिहिअरकीसेनमजूरे॥फोरकलोरेवलयुधभारे॥प्रथ
मदानपुनभेदवधाने॥इनतेरहेंदंडतवठाने॥४४॥दोहरा॥घेरेभीछुसैनधर्मस
तजामाघतहोतार॥चहुभाघनकीगाथमोशकतरहीनहीमोह॥४५॥हमरीसिख्या
धारचितनकेरोराजसुखकारा॥श्रमसंकटबधनापरेसभवचनवीचारा॥४६॥सुनध
मेउकजोरकरदृढताद्रुगनतेनीर॥मुखगदगदभाघतरमनुहिदासमसदीर॥४८॥चोप
ई॥करुणाधरतुमसिख्यादीने॥सोनिजरिदेधरादृढपरवीने॥इहिविचारकरसमझुक
रे॥धाविनइतिउतोचौपजानीहिधरे॥४७॥भीष्मउवाच॥धनधर्मजधनतुहिपितुमा
तेपसदाधरेहीरतुहिकुशलाते॥अवरमुनीजेनपकेकर्मा॥सुखदुखजानोनिजदेहिथ
र्मा॥४८॥जोनिरजदीनदुखपावे॥तिहिपापेनपतेजघरावे॥जनदुखदाईअरवटपा
रे॥चोरदृढपरहरनपसुचोरे॥४९॥तिनकोरतेनदयाविचारे॥दयाधरेसमकामीवगोरे
॥तिनकोहतेवदेनपतेजा॥सभमेमनभयपरेअमेजा॥५०॥नपसतवादेअसबनवो
लो॥जोकरतीनेउकहेअसोलो॥जिनकेजसअरशोभजगतवर॥दोहा॥दियाधरगुनीत

दीन्हराम॥२८४॥ जो जन्न हरि मारग दिखरावै॥ जग सुखदाइ प्रभु भगति दिढ़ाई॥ तिन्ह की संख्या हित चित लीनी
त्रै॥ या जग सुख पर ल्याये सी ऊंग॥२८५॥ तिन्ह पद स्वरूप प्रकटे न प्रभासी॥ ऊपरि हरि कीरति धराधार हरखासी
३८५॥ दोहरा॥ हेत पनिहर चेजा ने होरा राज दूत ते भार॥ जो हिन्न पकी पर जास रवी ताको ते जुग्ग पात्र
३८६॥ न्याय घनीत घाम प कोता के इहि दे ऊ होइ॥ न्याइ नीत ते हीन न प ज्ञ प जस ज्ञ पद हि ठो
ड॥३८७॥ जो से लहि मा चल ज्ञ चल हे त्यो ही चही ये भए॥ जो गिर मो सम कछु रहे सो न प ष
धरे ज्ञ न प॥३८८॥ चौपई॥ सुन शुभ वच न रिदे वीचारे॥ शुभ ले मा ने ज्ञ प्रभु भाव सारे॥ ऊ
ठी साख न कहु सुनी ये॥ ऐसनी ये ता रिदे न जु नी ये॥३८९॥ दोहरा॥ नि ज्ञ थी ज
न के वचन सुन मा ने भए॥ मत ज्ञ न्याउ होइ सी पर करे ज्ञ न्याउ न भए॥३९०॥
चारे वर्ण नप की सभा सभ की सुध दे ज्ञान॥ मली बुरी दृष्टि सुनी करे सचल पुरान॥
चौपई॥ निसदिन न पुराण मन माही॥ पुजा सेन चित ज्ञ धर दिषा ही॥ यो हित निज
कुंर व सो धारे॥ सो पर जा सो हितु प्रत पारे॥३९१॥ भए न के हे दो ऊ भ्रात रे॥ एक लषी
पुन पुजा स चारे॥ ये धनु रषी पर कर रहे॥ पर जा सो कछु धन नाहि गहे॥३९२॥ जग
धक भी र दिघ लरे भए वर॥ ज्ञ सन करे सभु ले हि [illegible] न कर॥ या ते को ऊ जन प्रभ
न्हि पावे॥ ते ऊ ले हि न पनिंदन भावे॥३९४॥ ये दिज दिज विद्या न सिघावे॥ ता हित ना ऊ
पुरु मोन सु हो वे॥ जह पुर भए न्याय घ विनु होई॥ ता पुरु व से न हरष तको ई॥३९५॥
दोहरा॥ राजु ही न वहु भए पानि हि ची या चाल के राज॥ नाहि व सी ये वेद हि के या व सौ
के सम चाज॥३९६॥ जिर त जची या त्या ग के दा सो धाम व साइ॥ रहन न दी जे देस मो
वेद करे हे पु ग टा इ॥३९७॥ चतुर सु चारी ज्ञान मय यो न रदे हे भए॥ देस सु नाम सो ये ति
से सुख रहे प्रजा ज्ञ नप॥३९८॥ चौपई॥ पुन तिन की सुध ले हि महा ना॥ मन को ऊ रहे
दुरवी चिंता ना॥ बेठ सभा नप तिनो सराहे॥ पुन सभ ही चालो ने रा है॥३९९॥ धेउ न

२८५ सोको ऊचु नीचि निहारे ॥३॥ मेरे देउ तिन पर कुरबाणे ॥ दिघ सम भु वध होइ भय माने ॥ जप को भार तेजसी
जा नै ॥४॥१०॥ दीन हीन जे सुरी मसाने ॥ जे भा कि करि तिन की पूत पाई ॥ जप निजा रिदा उदार ध
रोवै ॥ जिन्हि हिरदै चेदार दर्स रहा वै ॥४॥ अस्रोहन तारि देदपान की जे ॥ सर्ब समान सतु जानी
जे ॥ जिउ चतु सर्ब रूप रालपु होई ॥ तिहि विषु सोधै रन ही कोई ॥४॥८॥ जिन्हि हिरदै अगर को धा
ते करि रोवै ॥ जो रम सयो रापाप न धरा वै ॥ रपको सचु दन तम्प न कोई ॥ दुस रस्कार यव रहोन लो
ई ॥५॥ सोरे सापाप करि रावे ॥ जरमीघ माई हि रैन उच्चारे ॥ धर्म पादि सम द्रिगजल जुरे ॥ रपा चा
थे सजे रुझ रसा तरु ॥ पुन स्त्री रहमस्त धर्म रस पात रु ॥५॥ रदेन कै न मन माहि विचारे ॥
औसे जानी हिरदै सुमारे ॥ पर्मै रन रोवि दासि धाये ॥ सुपुने सुपुने धामे साये ॥६॥१॥ दोहरा
पुतन भई हरि मन पसमल ऊँचो रच डे सम भसा जु ॥ उ येमीघ बेदर सोहितजाई जन को ये माथ ॥
॥ धर्म जनत वहो ऊँ जार रुर पध तह स्वरज्ञा न ॥ अवि न पभ जन परम ये पुगरे ते जस
हान ॥८२॥ भीघ्र उ राच्या ॥ प्रथमे सन पुर हे समे सम हे सत विउ हा रम सत ते सम भी जी
वना सत विहीन नाविचारा ॥४१॥ सव धस न युगकी ॥ सताई लाघ रस बाई जस हेस ॥
मये विलीन स न युग जुडसं सा ॥ चामर छंद ॥ पत सधवि ता योचे तारे न लाजे पाप ॥
सुरगिधि तपस्वर दिजन मया ने देघ वउ संतापु ॥ जालडोचे रहा ते सेगोदे डेत वहु विधधा
राम घ भीत कोपत वे न गद गद व हेम सपुगदारा ॥४५॥ सेरोचा चा ॥ सागे से सी भई
सन युग जो पुगार भई सुनाजु ॥ तसरस रहरत है उ वपर ह मधेरे दिष ई हका जा ॥ दात सर
ल ज कु वातु हो वे रम वडो तुहि जा न ॥ सुनी बेरमारी वेन ती के जे उपाउ मरा न ॥४॥
आपुन सभी सुर उ येवि रमप घपर णाम वर्दु विधकी न ॥ यो वचन वनु रान न न वघ
वे करि है प्रिया पुरी न ॥ विरमु उवाचा ॥ सुन न वचन सुरोसे विरमजे तर धान न गाही सम
॥ उप मोपुर घुहरि उ दरते या लीमि टसम भवाध ॥ तान्ना मुपरजा पति धरी करि ही विरमु

ताहि उचारा॥ तुम जो सभ भोरो भ्रम न को सभ मेरो धरे हरखारा॥ पुरखो वाच॥ हम ते नाहि व देख
न इहि मुहि परा वे गो सु॥ क्षा जा करो तो तपु करो वडु ते जगो हि व न वा सु॥४५॥ पुनी व
हम करदी यो पुरख को ता के उदर ते क्षा न॥ उपज्यो पुरख ता उदर ते स नल त सु ता क
जा मु॥ स त क त ते उपज्यो सुस त करद मसते जम हान॥ ता ते उपज्यो भुज व ली या ना
मु उमगा सु जान॥ भयो उमगते व रक्ष नल ना मा प्रगट त पक्षो रुप॥ तिस क तेतप
की या वना व रवि हम ते जक्ष न रूप॥४६॥ ज व क्ष न ल तप की या व ना क हीं वि हम सो प्र
ग टाइ॥ करे वि हम ताम्यो मुख व वचन तुम सु जो ते जम हाइ॥ वि हम उवाच॥ तुम प्र
गट भये जगत रक्षहित सुख धरो जगत क्षमा य॥ जो ना हि मानो वचन रमेरे देहु तो द
सराप॥४७॥ दोहरा॥ क्षन लोवाच॥ तुम मेरे भय धरो जभ मन ग हो इसु विनी हमार॥
करोग जर हे भेस नप की जे करणा भार॥४८॥ विहम उवाच॥ चौपई॥ गज धार भुम
भार उतारो॥ सकल जगत को सुख प्रतिपारो॥ जो जो जगदु ख दे व नहारो॥ तिन को हते
भुजा बल भारो॥ निज इच्छा धर भेस रहावो॥ जग जस पर लो क सुख पावो॥४९॥
वैशंपायनोवाच॥ क्षन लभ्य वको भेस धार जग॥ सभ को लायो क्ष पुन क्ष पुन मग
भयो सुरवी जग रहे पुरखो॥ का हूं परलो उभ मन धरायो॥५०॥ वे नना मक्ष नल
ते भयो॥ क्षन ल ज गत त ज सु र पुर गयो॥ पुन वेन भय भुज व ले सभ भारे॥ भार ते ज
लीयो जगत मका रे॥५१॥ निज कर ता घायो गर वा व ता॥ जगमो क्ष पुनो ना म ज
पाव ता॥ सभ को टरि सिम रन व र जायो॥ क्ष पुना जपु तपु जग व रतायो॥ द्विज रिषि
प उतन प रस्व र ज्ञा ने॥ सिमृति सु की रि दे न माने॥ ता की क्ष जा को उन मो रे॥ यो
मो रेनि स्र हते र कोरे॥५२॥ घने हते नृपगर व क्ष पारे॥ सभ पर सवल प रो च ल भो
रे॥ कल जुग की का हून न जायो॥ रे रे प्राण ना क्षो धवि सायो॥५३॥ पुन जग मो वडु द

१४६

सुउपजावै॥बलहीनोपरबहुबलठानै॥परदुखहरेहापाजिहिपरहीं॥हतेदीनकोजोव
लधरहीं॥४३॥कामक्रोधमदलोभउपजावै॥अंधधुंधजगमाहिफिरावै॥स्वपदिनज
गतभयोअज्ञानिकारातुरा॥भयेदुखीजेतेसुरपातरा॥४४॥शिवतपसीपंडतवरज्ञाने
वडभ्रमदिखहिरध्यानलगावै॥चतुरानानसंगबहुतपुधारे॥दीनहोइहरिगने
उरपुकारे॥४५॥तबआकाशतेबानीभई॥वाकीमतअज्ञानपायतेगई॥अबतुमजो
हुसागरकेतीरा॥जहांसोयेपरब्रह्मसुधीरा॥४६॥बहुगुनउसतितिहरिकीगा
वै॥अपुनगमनाबतापदपावै॥सुनअकाशबानीशिवजये॥सागरतटज्ञापु
ग्रभये॥४७॥बहुउसतुतिहरिकीपुगटरहीं॥हरिकेचरनीहितमरदनकरहीं॥४८
पाछेदरसा॥मरदनकरहरिजागेतेपुगटभये॥नरसिप॥तन्नताकुसमताहिद्रुगसि
रबडुभेभाअनरूप॥४९॥बसीमानकअसथलततनपादबडुपजेत्रासु॥शिवताको
लेजाइहिवनकरोसेवेनपरका॥५१॥शिवउवाच॥भीलमलेछजहाररहतजहारहे
वटपार॥तिनकहीसोनमजावसोदमरेवचानिरधार॥५२॥बहुरशिवोकरदाहना
मलोइशवाकोरहेना॥दसरपुरबपुगटभयोशम्भुसंजोइसमेत॥५३॥चौपई॥अव
निसदरशोबनअबसथवर॥ततनसंजोइबडुगुशोभकर॥धनपुवानअरशक
तसहावता॥देदपावमुरवसुरउपजावता॥५४॥बहुविधगनविद्यापरवीना॥दे
बदिजाकोभयोअधीना॥जोरहाथशिवदिजकेअडो॥दीनहोइठाढ़ाअनुराग
५५॥कहेसुरवसेवियाज्ञाधरेहैं॥करोसोइजोतुमपुगटरहे॥तबअकाशमोदे
बतुन्ह्वारे॥तोहिनामपुत्रिधकोसुन्चारे॥५६॥राजधारपरजासुखठानो॥दुर
नकोनित्तमुजबलहानो॥जकाकेहरिकोसेवामाहीं॥ततपुरबहोअधसमुख
पाहीं॥५७॥तुमअज्ञाजानेउनमोरे॥सभपरसबलपरोबलघोर॥काहूसो

चित वैर न धर हो ॥ पुजार खवडु हित पुति पर हो ॥ ४४ ॥ गरव न कज्ञा जो गिरदे म कारे ॥
दीन पर हो दया उपकारे ॥ सन दि ज्ञा रिषि जो सुर के सच व रा ॥ मुख व च उ चर यो रिदे पे
म धर ॥ ४५ ॥ प्रियो वाच ॥ सुनी सकल जो रिषो उचारी ॥ के हो दिज्ञा रिषि जो इथ
नु मारी ॥ रिषि उवाच ॥ हम सो पुण धारो वडु ज्ञाने ॥ हीर ज्ञा ज्ञा वर धरो महा ने ॥ ४
६ ॥ मरल पुंयंत जग जो पुति पारो ॥ सभ जो वलु धर हो सरव भारो ॥ ज्यो तुम री ज्ञा
ज्ञा त्यो कर हो ॥ ज्ञा पन इध इसु वे न उचर हो ॥ ४७ ॥ तुम न वडु करण मो पर धारे
ज्ञा मो सो वधु पाप निहारे ॥ वर ज्ञा मो हिवि ले व न कर हो ॥ रिषि दि ज्ञा धीन मे
के ज्ञी पधर हो ॥ ४८ ॥ जो रिषि दिज व डु पापी ज्ञाने ॥ ता पर भी निज देहु न ठाने
ज्ञा रदिज न को ज्ञा ज्ञा धारे ॥ करा हि देहु सव ध तपु जारा रे ॥ ४९ ॥ ता को देहु करे
तुम ज्ञाने ॥ हम दिज पर निज देउ न ठाने ॥ ५० ॥ वे शंपायनो वाच ॥ दोहरा ॥ प्रि
थ न प व डु वुध श्र को ज्ञा पुना ने ती की न ॥ वाल खिल रिषि ज्ञान मय मंजीध
रे पुवीन ॥ ५१ ॥ जरत को यो नि ज यो तकी विध्या ज्ञा सज्ञ पार ॥ सो रहा म सो रे
दि ये पधा यो गवी चार ॥ ५२ ॥ चौपई ॥ रिषि दिज सर मनि ज्ञाति हर षाने ॥ न
प की उस्तति कर हित ताने ॥ पुन मा गधज्ञ रस तच तु रज्ञाति ॥ प्रिथ की उस्तति
करे विमल मत ॥ ५३ ॥ सदा म प की उप म उचारे ॥ हर खन वहु विधध सपुगरार
है ॥ वेदी ज न सम दो उथ रोई ॥ प्रिथ न पके यस पुजारे सो ई ॥ ५४ ॥ निज यस सु
नरा ज्ञा हरखाने ॥ वडु हुलास ज्ञा पुने मन पाने ॥ दिज रिषि दे हिज्ञ मी सन प को
वर ॥ विदा हो इ गये ज्ञा पुन ज्ञा पन घर ॥ ५५ ॥ प्रिथ भुमदेष उच नीच ज्ञाति ॥ ज्ञा प
रथ व ठ गिर ज्ञा केप सत ॥ धन धव लेगिर दूर कराये ॥ उच दूर कर नीच भराये ॥
४ प धा भु म सम मान हो ना र सव तु ये ॥ नप सम्यु रव कर जो र ज्ञा नये ॥ जो रे राथ मत

४७ तेउचराती॥मुहिऊचनीचढासरनरहानी॥४५७॥बहुरबरण नरसूपधरायै
मघोभपवेसनमुखकहायो॥जोबहुमऊतहीरेदीधमाही॥कीनेजपवेभेरत
हाही॥४५८॥जपवकथुनिजइष्टलीयेउठाई॥कोरवरणकोदीयेहितताई॥पुन
सभैराद्रिदर्शदिषरायो॥जपवेविचवरमरववुजरायो॥४५९॥सुमेरेवांच
मोकेवेवनमयहीरकेना॥स्वछतकेचनलेहुप्रवीना॥पुनकुबेरखउहेत
धरायो॥जपवेभाघतमखउचरायो॥४६०॥दोहरा॥जपजेताधनइष्टतुम
मोसोलेहुमजाइ॥रोभड्डारीईशकाहमुरेसनीनकाइ॥४६१॥पुत्थजपभनके
धारमनसनीयेनगरअररगाम॥वारदशकेमेत्रगरीहवसेलावस्तरवधाम॥
४६२॥चौपई॥जाडेसभुजगरहतनगहतन॥जपकीनेताहेतवसुधन॥
सभीवसुतनधारसहायो॥वाहीरजरतालीयेबुलायो॥४६३॥भमतेऊन
उपावनहारे॥कीनेजपभजवलीजपारे॥जाडेपकलदलपचअहारत॥पुत्थ
वेराजकअनाजउवारत॥४६४॥पाइजनाजपुष्मयेगाता॥त्रिषभधारहल
केनउतपाता॥त्रिजीनजविवहारसभेचलायो॥कोउविवहारीकोउयोधा
जायो॥४६५॥होरहोरपुत्थजपपायेवर॥परजाकोसवदेहिन्यायधर॥जन
वभानतेराखुउपायो॥जजरधजसमृजसवारदिषायो॥४६६॥एतीसेनाइ
कठीकीने॥जाकोजनतीजारप्रवीने॥पुत्थवेराजोत्रिधनीरहेहोई॥रहेसे
वस्थयोधनसभकोई॥४६७॥राजअरशोवदुसालराजीतहि॥पहुचसवतन
देदहिद्दरवीहि॥दससहसवसमतचीतायो॥तासराजभयेसुखजीधरायो॥४
६८॥चौपरचुडलवरपारभगाने॥तहिरजरहीहुजपकाने॥सुहदसोवसेज
जसहरकोमे॥होरसेजपुभारतनिहपारो॥४६९॥स्वछतगमनेकरतपुत्थभया

चतुरंगमैचाधारअनपा॥ त्रिनपकेवउते जअपारे॥ जलसोवूउतको नदिखारे॥४७०॥ अंजन
सतारा उपजावैवरा॥ गऊरूपधरनीको दुहके॥ प्रथनपकेत वरा जमऊरे॥ बोवत वीजवि
नाहलधारे॥ ताअन्याइअनीत दिखाई॥ भुमपरवीजनउपजत नाई॥४७१॥ दोहरा॥
दुखदुकालपरयो रहत पर जा अति भ्रममाहि॥ प्रथ्व प्रथनपके रा जमोदुरवीको ऊजन
नाहा॥४७२॥ नारस्वरूपी महीसो प्रिथमुखवकहो उचारा॥ बीजजके येतो महि मोहमरेपि
तानिरधारा॥४७३॥ तेअवकोहोवी जसभुनातरहत हो तो महि॥ असमानतवभमहेभगी
देखनपरोहा॥४७४॥ चौपई॥ भ्रमनभ्रपके कोधमयाने॥ भईभाग आस्मनमाने॥ ध
नषवानुनपहाथगहाये॥ पाछेदोरेतेनमहाये॥४७५॥ धसीधरनपातालमझारे॥
नपुभीपाछेजातवलारे॥ जिहिभुमजाइतहानपुजावे॥ भुमकाहरभईअतिभयपावे
दोरतचहीअकाशउडारतता॥ नपभी उडनमचहोतपकेसता॥ जापदचो भुमकहे न
करापा॥ बानधनषपरधरो दिखाहा॥ चाहतभुमपरवानप्रहारे॥ भुमानिरखतकंपी
भयभारे॥ भाग नकी कहूँ ठोर न देखे॥ जोरहाथ होदीनवशेषे॥४७६॥ भुमसमेतन
पतलेउतारे॥ तबभुमसोमुखवचन उचारे॥ काहवीजजोमसपितुवोये॥ अवस्न
माघतहोमघुकोये॥४७७॥ भुमलोवाचा॥ दोहरा॥ धारगऊ कालपहो अवानुमरेपाहि
दोहलेहु नपमोहिके जोदधिहे मुऊ माह॥४८०॥ चौपई॥ ऊ गाइरूपभ्रमतवधारयो॥
हे माचलागिरवछरूपदिखारयो॥ गिरसुमेरनरभपमहाने॥ ऊ गाइदोहवहुदूधदि
वाने॥४८१॥ प्रिथनपभुमपरहलेपिराये॥ सभदूधभुममाहिगाये॥ उसीदूधते
वेलीभई॥ उपजेअंनचित्रमिरजाई॥४८२॥ प्रिथमनरूषीमोदूधपरावे॥ होइप्रपत्रु
ऊैनउपजावे॥ नपतेउऊअंनजगतकोदीया॥ याघायेभयेजीवनजीया॥४८३॥ या

५८ नशेषरहेपुनवीजानै॥वदूरउसीतेफलउपजानै॥पुष्यन्पभसदुहजगुठीहसथो॥ता
नैपथवीनामकहायो॥४५॥दुहिन्पक्षरषजीहैजेते॥पुथवीक्रंसउपजेहैतेते॥तास
राजुकोऊनाहदूसीजन्॥पुजासवीक्षितिरहतहरषमननां॥४६॥विप्रनेकेवहुमान
धरावता॥सकलजनोतेक्षधकजनावता॥वेशंपायनोवाच॥भीषमरक्षीयोईतहा
सा॥पुनधर्मजकहेज्ञानप्रकाशा॥धर्मजोवाच॥थोसभमननुषशोभजगमाही॥ते
सेहीनपीदुष्पराही॥कारणमकवीदुराक्षरसमकंशता॥वोलणचलणसमसमेक्रमंगा
॥४८॥भमपचकीमनतेसेभारी॥क्षोरनकीवुधतेक्षधिकारी॥येकाईनपसोवनकसोवोक्ष
वरनरासोकहनसरावे॥४८॥भीष्मउवाच॥पृथमभयोजनवमपप्रिथतनक्षाज्ञाजगमा
हि॥थोरोहीचालेजगतकोमानेकोजाहि॥४९॥वरनपईमक्षराधचितहरिपषमसी
पुकार॥योनपयायोमोहिप्रभदेवोतेजक्षपार॥५०॥चौपई॥पृथनपकीहरिभेविनीसुना
यो॥क्षपनेजाकुरवृधक्षपुनीवर॥भपसाथधाईकसमाकरा॥५१॥सकलधरणीहि
साऊसमानी॥भयोभपकोतेजमहानी॥नपकानामसकलवेहीयो॥परंक्षधिकके
पमथभीयो॥५२॥वृक्षभपकेसमतेभारी॥कोउनपदूजसकेवुधारी॥नपकीक्ष
रहिनेचितमाने॥क्षतिवउचाभीरदेमोवाने॥५३॥भपक्षपनसलंजगवसकीने
परजाकेभारीसुखदीने॥हरषतनपदीरिच्याकुलगायो॥हरिकोउपमकरीउचरायो॥
भयेवाच॥हेहरितुमज्योहमरेरातेजा॥कीयोसकलपरसुधिकक्षमेजा॥त्योंहरीज्यों
कोउरेषमपा॥तिनमोएहरिरहेक्षनपा॥५५॥रहेपुजाभपनेकसाधीने॥नपकी
सेवमोरहेपुसीने॥नपकीविनीमानहरिलीनी॥नपयोकहीतेउहरिकीनी॥५४
॥थोरेजयोंपुथवेभालेया॥तिउसभभपनसोकधोउपाले॥हरिकोजानन

वोकैभाला॥ याते सेवे जगतु विशाला॥४८॥ उसी जो न चलते सभु दरही॥ नप मनमुख
होवत घर रहरही॥ नपको याते सरपु गरानी॥ ते माचत है सुने हितानी॥४९॥ याशिष
तपसी पेड्ड तज्ञ रज्ञानी॥ तपे ताप्र जपुत पुज्ञ धरानी॥ नपु धारत जव दे हित पावे॥ तप
केफल सरलो ग सिधावे॥५०॥ इंद्र समीप मान न वढ पावे॥ वसे हरथ वढ उ सरबु उपजा
ये॥ जनक्ष वधात नोकी पटी होई॥ सरपुर ते निकसत है सोई॥५१॥ ताको उउगनन तप
धराये॥ गिर समेर पर देहि गिराये॥ ताइस्या न जी ज्ञो धवी ताये॥ नप फल भोगे भमन
महाये॥५२॥ जैसे सतपुते सेनपते जा॥ प्रजापाल से वेसर वसे जा॥ सरते नप देवे जग माही॥
याते नपको सरपु गराही॥५३॥ तिहि सम मसरते सेको उक्ते॥ सो उकते जो वढ्ढ तपु धरे॥ या
तेजो धारे नप सेवा॥ पावे सरव क्षनडं तक्ष भेवा॥ जो जनु नपकी सेवा निंदा करे॥ ते नन
ज्ञधक भार क्षम धरे॥५४॥ आदेहरा॥ वहुर युधिष्टर तानसो पूछत चेन रिसाला॥ जैसे सरदे
प्रज्ञा सरवी तेज्ञ वचव होइ पाल॥५५॥ नगर नाम कैसे रहे वर्धमाना विन होइ॥ जैसे सेन
पवरते जगन रक्ष्याल कहे विध सोइ॥५६॥ चौपई॥ नृपनको चहीये जो साजा॥ जैसे सीव
सेनाकै रवो नविध गरे॥५७॥ दामेगी मंत्री
धहेश नसमाजा॥ दुष्टजनो सेवै सेरहे॥ किरहु सो वैरहे तकिर ध्यारे॥ किरसो ज्ञप्र
सोझिहि भातना॥ वरते नपसो कहु मोहितातना॥ धर्मजयोर कैधन नपराधे॥ वेनक्ष सच्चन नवव
नीरध समारे॥५८॥ भीक्ष्म उवाच॥ धरे स्याइस न होवढ्ढ भारो॥५९॥ दासम कोदेवे
द्धमाहो॥ जोकछु मघभोजन पक्षाडो॥ नितुमि चनकी निंद नचे॥ एकवार
पुलाविन जगाई॥ डारवु नाहि निजरि देवसाई॥ करे सोई परजा सरवु पावे॥ धरेन
स्त्रावनवर धरे॥६०॥ नितुम्भित नचे मानन वधावे॥ पुनाभाग प्रजा तेले वो॥ अच
लेमिनपरि देनभावे॥ समभ्लो दानपर दयावसावे॥ मधरवेन सदमुरव पुगतरे
कजाहूपो वढ्ढक्षमदेवे॥६१॥ वरपार चोरते रथाधारे॥

५५ ऋधमकंजसभंड्रारनपावै॥जालच्चलजगवहतनेसनावै॥५९९॥सभजनजीतभूपसोभ
रै॥नृपकज्ञाज्ञाहितचितमनधरै॥वहुतेजनृपकोजतभारी॥पुजादेयजासीसक्तपा
री॥५९८॥त्रेसैजघकाहूवेदेखे॥तेसेदेउधरेनवशेषे॥नीतदेखदेउनृपधारे॥तज
सनकरेजितसर्वस्नरे॥सर्वसुरैवसनिरधनहोई॥मांगनचहेजगीहजीहसो
ई॥५९९॥दोहरा॥जोपूछोजयवेकोरतकी॥सुनोध्यानधरमप॥जीतऊंचागहवाधी
ये यामोजलुकुरानृप॥६००॥दुवइजनाजुशत्राहिसभुतासोकरेभूप॥रखवारेच
हुंदिसरहेसधधारतवलमरा॥६०१॥चौपई॥नृपकामयसभकेमनमाही॥रहेसदा
धनमेलेनाही॥नेजीमंत्रीसभभयधारे॥करेमपवेकार्यभारे॥६०२॥तिसहूसोवहु
दासनकेरै॥रथीवेलघतावुगटरै॥राजकाजनृपमेदमपवर॥तिसेदीहीजोरहजा
नकधवघर॥६०३॥सनवादीसतशीलयुगतजन॥हीस्वेपहिस्वानेचिरमलम
न॥तिनकोसीपेजपुनेका जा॥तीनधरेउनसोवडुराजा॥६०४॥तिनसोभीकछु
जेफजघरदेखे॥करदेउनीहिजनधिकवशेषे॥सभजिहवुरेमपवेभयजाति॥उर
पनकारजकरतररैमत॥६०५॥भूपनिकरजोसदारहहीमें॥तिसजनकोईरलव्छ
मुरवे॥तेजजसजनपसोनहैभाव॥पछीविनामोनमसरवराव॥६०६॥नृपपूछे
उत्तरगुतिकरहीं॥नावनगरवरवपुरिदेनधरहीं॥थोरभावकावालनहेजाति॥
तिनसोमपदेनुधारेसत॥६०७॥जोजनहोरहोरभरमावे॥तिसेमपराषतनसहा
वे॥६०८॥दोहरा॥धर्मपुत्रसुनवैनदहिपुनपछनवरजान॥अरोतातनहेसेदिजेन
पगाविचिकरान॥६०९॥भीषमउवाच॥चौपई॥दिजनेलछनसनचनपजानी॥
होहदयालनपशीलमरानी॥वेदपाठहीरहितेचतुरजाति॥बतसंयमदोरहधरे
पवित्रमना॥६१०॥जोनकथहापजवाछनपरे॥दिजवरताहमाजसनवकेरे॥दिज

इकु भाग सुरे ओहि तदेवे॥ दूसर भाग पित्र न सो सेवे॥५४॥ तीसर भाग ग्यानि निधान ठौ घीउ
न॥ तिन को पोषे हेतु धारमन॥ तीन भाग जे शेष रहावे॥ निज कुटुंब को वरतन वा
ते॥५५॥ धृतीस दा देत मधुर रहे॥ निज मांगन को इष्ट न गहे॥ हरि का भजन नीर
देव रघारे॥ वचन कासु सच न जाहि पुगदारे॥५६॥ न पर क्रोध शत्रु हुतन सम दाने॥ ओ
रम धून जाहि कीन प्रमाने॥ पर धन पर त्रिय चोर ल्यावे जे पाठे॥ दीन न सो क्रम दे हि ज्ञान ते॥
रस धून जाहि कीन प्रमाने॥ परतेदा न जाहि याहि सम माने॥५७॥ धृती रण भुम
तिन को न पावि जरा रपाहि वाने॥ हते दान जाहि या हि सम माने॥
प्राण तजावे॥ होनि नहि पाप कर्म परपद पावे॥५८॥ जाहि को रतपु सच सम माने॥ ता
ते सत ब्रात धर्म महावे॥ वे शप क्रम विष्णु मुनो न रेसे॥ हरि मंदर हित धरपर वेशे॥
५६॥ विप्रो दे वे दान नहि ताई॥ जाऊं घर नाथ प्रीत महाई॥ ब्रह्म भाग दधि दे जे को दे
वे॥ इकु भाग विप्रो को सेवे॥६०॥ ग्या तीत न को दे वे इकु भागा॥ रहे शेष सो गहे को
नगा॥ निज कुटुंब सो मिल भुंचावे॥ सूद्र कर्म सुनो धे पुगरावे॥६१॥ त्रिहुं व
सी की सेवा धारे॥ ब्रह्म धृती वेश प उचारे॥ सेवा दिव ता हरि पुरा वे॥ सूद्र को प्रीत
पाल धरावे॥६३॥ ईहि ग्रहस्त वे क्रम प्रकासे॥ ब्रह्म चरन चारी सुन जग न्यासे॥
५४॥ दो हरा॥ वन चारी वन मो वसे वेद मलेच्छुन छाड़ु॥ सत तु ष तीर्थ डथे तन
फल ख्याचाड़॥६५॥ ब्रह्म वमि ध्याहि तउठे जावे नगर मजार॥ वित्र न चले जो हि
माग चले ले वे भीख सचार॥६६॥ चौपई॥ जैसे विप्र न को ले भिख्या॥ जाहि न हो वे
मसी मिथ्या॥ काम क्रोध लोभ जिहि त्यागा॥ सत तन प्रीत लधीर ग्यान तिन रागा॥६
जो का धीदि न को पुगरावे॥ तिन मो न तपु रहे सदा थे॥ प्राच पावित्रा निज सम न
माही॥ सद्रु तिल सम सरसे दुराही॥६८॥ जव तान कान पुन त हो य प्रो ग्य ग्यान॥ ज हा हल
धीस भार ले हस्त॥ सत ते म्लो पदि जानि जव न जाई॥ कोरे ई श का भजन न महाई॥६९

रहे पदि दृष्टा लाभ सं तृष्णा ॥ कवहू न होई ने स्पर रस पा ॥ तके समे करे रिजु भोजन
पुनरा वन हो कथ ध्रुवा जे जन ॥ ४४ ॥ पर धन को न हरे हा घ डाहा वे ॥ तांडू सो न ही वे
र जे ना वे ॥ वर त सी तो रिजु जे को न्न स्हा वे ॥ तप मो ली न र हे सु रव पावे ॥ ४५ ॥ ध्व
जे भ प्र तजे सो पव सम भा नि जु व न मा हि लजा वे तप ध्व ॥ वे श प स दुभा इ ही वि
धव रै ॥ ते सो पव सम भा नि ज त पुध रे ॥ ४६ ॥ तप वेद धर्म रा जु ह री जा ने ॥ धाते पुजा स
रही हि त मा ने ॥ देस गाह न कर ग्र सचु हा तव ता ॥ इह ही सर्प तप के मन भावता ॥ ४७
॥ देस सेन जु वेद उ स्ह सिता चित ॥ स केत धरे म पच्छे जु पाहित ॥ मन त को रा जु धार
तन जा वे ॥ जु ग जु स पर लो वेस रव पावे ॥ ४८ ॥ सत तप हो इन जु कुल तके ॥ आ
राजु घा डं देव व र सो ई ॥ निस सोपा नि जु व न मो जा ई ॥ र है इश को ध्यानु लग
ई ॥ ४९ ॥ वे ढ वं त जपु तपु हित धारै ॥ निस दिन हरि को उपम उचारे ॥ तर
भी नि जु मा गन न्ही ह जा ई ॥ कर व री ते ले भी घ म जा ई ॥ ५० ॥ जे को उ दु सर
से गन रा खे ॥ कव श्र जा न मुख मि ठा भा खे ॥ खे ज दि धर्म सो नि र वल होई
मा डा न जा ही दे जो ड हि सो ई ॥ ५१ ॥ दि जु को स जे स ब वि व हा रा ॥ मर मो मो त न
कुरसन वारा ॥ जु न जन को मि त्र सो ले खा वे ॥ ति न्ह ति न पुन पाप भरा वे ॥ ५२ ॥ या
से ते ग्रि व उतन मु न्ही ॥ वेर व तु भा खे सो स न्ही ॥ तप को तप ते रा न ग्या वि व रा ॥ प
ले पु जा न्या इ नी त धर ॥ ५३ ॥ तप ते स स्व गन्ना फलु पावे ॥ ना ते व वून रा ज
त जा वे ॥ रा जु स मा न ज्ञा स धु न्ना है ॥ स जो ज्ञो र इ कु व या स न्ना ही ॥ ५४ ॥ दो र
॥ मा न धा न तप न्या इ वर जो ने य जु ग ने ता ॥ वि द मा नि ल न की वा र न्चि त जा व
के धन जे न ॥ ५५ ॥ विद मु इ दु के स पहे ज्ञा वे न प के पार ॥ वि द मु पुरी मो र र त जो
स भ जन जु सं डा नि र वार ॥ ५६ ॥ चौ पई ॥ मा न धा ता स र न भेद पा यो ॥ उ को जो र र

रहाउ रहाथे॥ बहु गुन नाम की नेहि तचित धरा॥ बिसम हर्ष कैषो वेदान्त पवरा॥ ५५३॥ वेद
वे ठन्त पस्वरपत भाथे॥ तुहि मिन नवि हमे मिलन उसम लाथे॥ हमनाहीसके जुवि
हमे मिलावे॥ तुहि उसम लाथ उसचर्य दिखावे॥ ५५४॥ मानधातो वाच॥ हम भी जा
नत हैं इही वाता॥ विहमे मिलन नकठ नजाति उत्ता ता॥ सिध साधन ने ध्यान म
उरै॥ विहमे नस्व प्रमोद शुदिखावै॥ ५५५॥ पपहम चिर काले जग माही॥ कैपरा
जउसमलाथ न काई॥ उदैउसताले जग वसकी ने॥ सभी सुरकी मो सो पर धी ने॥ ५५
६॥ तिन के फल जि हमाहू उसरा धो॥ देष विहमनि जद धासा धो॥ उसा उगो वड
भवन्याइवर॥ विहम पृ सी जोग थे बड़ु फल धर॥ तेसे ही उन ही मो जाये॥ वसो वि
हमकी पुरी मही थे॥ ५५७॥ स्वरप तो वाच॥ न पम धुंजैसो रन न राज समाने॥ पुन
दान जग तन वर हि महाने॥ करे लाष तप यज करे रा॥ इनि ते राजं पुन कहानि उरा॥
५५८॥ हते दृष्ट जग जो स्वरव धारे॥ परमार्थ निज पुण्यात जारे॥ ता के राज स्वर्गी
सम होगा॥ दे हि उसी सचि तर हर्ष उसशोका॥ ५५९॥ पु जाउस सी सन्न पते जुव
धावे॥ पर ले तो स्वर्गी या जग सुख पावे॥ तपु वन धारे ये गत पावे॥ रिषि मुन
पं उत जो फल उपजावे॥ ५६०॥ सिंघा सन ने वे ठन्त पते फल॥ मह हम गुना उ
न ल हो भस न वल॥ ता ते नुम मत रा जुता जो॥ हरिसि मुत पर स्वार्थ लाजो॥ ५६
मान धा तो वाच॥ दोहरा॥ उसम न तम पत मरे रव चन सुन तप दीदि शांत॥ करिव
रसु नो मम वेनती हे स्वरपति वरं कौ ता॥ ५६२॥ को ऊ को ऊ देस के उस र वली मो सो
जिते न जाह॥ मधु उ पा उति न ज कहे हो पर ो स व लव ल वाह॥ ५६३॥ चौपई॥ पु
थमे कोत देस के भप॥ पुन जो धार रे जग दुख रूपा॥ का स कार इत्यादि रुथे ते॥
चे मी कर मग लूटे ते ते॥ ५६४॥ हो जग पर भ्रम दिष न स का वे॥ सुन न सुन कउसउ

[illegible]

दुरवी जन न धरे जु तिन की सेव ॥ ता सम दान न को जग तस नस तध न ऊभे ता ॥५८०॥ ऊर्ध्वीज
न को देह सब छुत जे न का ही न राम ॥ ताहि पुन की सरव्या होवे नाह पुरा श ॥५८१॥ चौपई
ये ऊ खी को करे निरासा ॥ सकल पुन तिह होइ विनासा ॥ मपस दा र सुदे तार हे ॥ वेदा
माह पुराण रही ह कहे ॥५८२॥ पितपिता मजो कर ते ऊ ये ॥ ते ऊ कार्य जपु ने मन न भाये ॥
जैयो नृप को निज जी उपाया ॥ सो ही रे हे सभु संसारा ॥५८३॥ जे नृप दीन जनन को तोषे ॥
शिबि दधीच पुत ते मन न पोषे ॥ ते नृप को स्वर जान जानी ॥ तिसकी उपम न परे वखानी ॥
युधिष्ठर उवाच ॥ दोहरा ॥ नृप पुनतन की कथा कही तात सम कहु ॥ अब पर जा की धरम मन ने
हो नीको रख्या इ ॥५८४॥ सोरठा ॥ पुजा कस सी सकल अपार सब दादे तर रहे नृप को ॥ उपजा वे सब भू
र वर्धमान हो ऊझार क्ल ॥५८५॥ दोहरा ॥ नृप ऊजी तजि ह न गर मो तहा न रसी ये जाइ ॥
श्री धारा जजहा दे खीये ते भी दी ह न जाइ ॥५८६॥ चौपई ॥ जहा होइ वालक ऊरा राजु ॥ तहा न
हीव सी ये सुरव सा जुं ॥ जे ऊ बस्य तहा वसरो वने ॥ हरि राम जन धरे व हु मने ॥५८७॥ हा
प जो र वहु दे ऊ स सी मा ॥ वाल नृप हो नि ऊझ नी साम ॥ नृप की ऊजा ताहि न चिर माने ॥ न
प को ई सस मा न जाने ॥५८८॥ सतकी वरतनन नृप सो धरे ॥ ते पर जा भारी सुरव भोगे
सी पर जा को नृप देहि ॥ तिन पर धोर रघा व शे शो ॥५८९॥ नृप ही न ये पर जा होई ॥ इस कीद
न भी सुरव रहे न को ई ॥ दुष्ट जनन तिन के सुत दारा ॥ डाहि ले वे धन ते वल भारा ॥५९०॥ धा
ही ते वल भू पउ पाये ॥ सो रे जगत की रख्या हि ताये ॥ नृप में अ पही न जो को ऊ ॥ पदुख न ही दे
सा के वल सो ऊ ॥५९१॥ वहु मी ने लघु मी ने खाई ॥ ति उ सम पर जा सु नि ज दुख पाई ॥ नृ
प कहू ऊ ले म ध सोरह ही ॥ जो चिन ता वे सो ई कर ही ॥५९२॥ पुत्र मे नृप रा जउ व जग ताप
र ना हे ॥ व उदु र सुरे हा इ पु जा नि र वा हे ॥ जग व उ भी मे दुरवा तर हो ई ॥ मनु ने ऊजा डो जा इ रव
हो ई ॥ ता सो दी न रहो इ उचरा ने ॥ वरो मनी मांहि रख्यम रहा ने ॥५९३॥ दोहरा ॥ मुनी उवाच

सुमसुरज्ञाईसोभरेमञमोरघनहोइ॥ येनमसोधारेमलीवुधीदिखावेसोई॥५५॥चौ
पई॥ उनरहीहमवुणधरेपुनतातेहमननसुराइ॥ जोतीरवेतीकरेहमदसभासभे
चाइ॥५९॥दो॰चौपई॥घरदानपुनजोकीने॥ चौथाभागतोहहितदीने॥सुरपत
जोसरकोसमसुराई॥ सोतुमसेहुमुंहिमपसदाई॥५८॥दो॰॥घामोहमराजाधिराहथ
ज्ञीरि॥सनमनविनीमानलीजीसत॥ सुनउनकानपभयोवलभारे॥ तुम्हर
छउननीहितनुधारे॥५९॥दो॰॥देवसभीतमनत्रिभुवनकीपति॥ भयोदयालचितति
नवरहरवत॥ चोधनदंद्रगगननेवरसे॥ उपजाविफलखेतीसरसे॥५६॥ सुननदेरा
जसभीसुखभारे॥ कोउनकापरदुखधारे॥ मोतीहीरेदुवजपारे॥ नजकोभेरधरे
रखारे॥६०॥नपीचितदरवतीतनसोहोई॥ हमहसवरतकपावरसोई॥ पुजाअसी
सेनवकोतेजे॥ चरतजातस्तुतिभारजमेजे॥६१॥ चिरकालेमहिराजकराये॥ निज
सुखभोगपुजासुखपाये॥ जगनस्याजसुरलोकीसधाना॥ पुनजगमपहीनश्रमु
ठाना॥६२॥ पुजनदानहोमसमलोपे॥ पुगटेजगमेवडुकोपे॥ मवहीजगुवहीच
रकाला॥ रहेदुखीअतिअभयाविशाला॥६३॥ चिरकाजेतावुलतेभए॥ देसुसभा
रनमयोअनपा॥ सुमनचामनताकापुगटाना॥ स्याउनीतयुततेजमहाना॥ बुदस्पति
सोतिनपथयोजाई॥ पदवैसेपरजासुखपाये॥६४॥ बुहसपतोताचा॥ हेनपपुजासु
खनपदेहाथा॥ जोनपशीलसबदेसाथा॥ स्याइनीतरिदेसचभारा॥ तिहचेजग
सुखधरेऽपारा॥६५॥ नपवेमयकोतिमनदुरवोवै॥ स्योतहोइपरजासुखपावे
धोनेमपवुशोनरहाई॥ तापरहरिकीरुपासदाई॥६६॥ योनपरिदेअनीतउपावे
ताकीपुजाभारदुखपावे॥ सवलानिवजनाधमहोरसेवे॥ पुजादुखीहोवउसमरेव
वे॥६७॥दोहरा॥ धर्मअनीतपुजादुखीनपस्नीतसुखपाइ॥ जेवेहमपनसनु

समनत महोतसव सबु प्रगटाइ॥६०॥ ओअंबिम सदैहि सरब जगत तज पुन्ाते जव धाइभीते
उहीइहि रूप जगत मो सभ जनके सुखदाइ॥६१॥ चौपई॥ ज्यों जल हीन मीन तरफावै
सोत्र रूपविन पर जादु खुपावै॥ रूपविन दुंद उपाध जगातनिता॥ यज्ञ होम जप तप
नहीं तक्रिता॥६२॥ यज्ञ होम बिन देवन कैसे॥ भभो मरे लोग सुमन करहै॥ जे जन रूपकी
उपम उचारे॥ लोक पुलोक दुहू सुख धारे॥६३॥ रूपज्ञानिंद करनर जोस धावै॥ रूप
निंदक सुख कबहू न पावै॥ पंच रूप रूपके जीव ज्ञानो॥ पुथमहि वाकरत पपधा
नो॥६३॥ दूसर ज्ञानि निरूप रूप गावै॥ तीसर यमका रूप वतावै॥ चतुर्थ रूप रूपका
म्रित ज्ञानो॥ पंचम रूप कुवेर बखानो॥६४॥ पंचो ही जगके सुख देते॥ धारत हैं रूप
ज्ञान सचेते॥ भान रूप धर जग सुख लेवे॥ सकल जगत को बहु सुख देवे॥६५॥ ...
डिन रूप धर दुख न दाहे॥ पुजपसो कसरव धरे अगाहे॥ यमके रूप होश त्रुसंघारे॥ ...रे
हननीरदि दया न धारे॥६६॥ मित्र रूप धर अभ्र न देखे॥ ...घ देखन हम्रि रहे वशेषै॥
रूप कुवेरके जब रूप होई॥ सभ पर कुर ...धर है सोई॥ रूपकी मतसो जाहू कीमना॥ पटु
चन साके ज्ञानो शहिमनना॥६७॥ दोहरा॥ जे जन रूपनिंदा सुने करे न दूसर कोइम
ताहि तेघन कुंचनहीं पुन ...धिरातिस होइ॥६८॥ यह तें न समके धिघ कारन हू नाको करेउ
चार॥ जे धिघ कारन करसके वरजे ताहि सचार॥६९॥ उर ज्ञाते न समझे ... पुगरे वेदम
तरा॥ उर न जाइ सुन हू मुवन समहे नर र दुखभार॥७०॥ रूपनिंदा ते जग दुरदी प्रसोवे
...॥७१॥ चौपई॥ रूपनिंदा ... पुगट
... धारे हैं नव धाइ॥ ...॥ रूप की ... धारे॥
...॥ रूप की ... ॥ ... धारे॥
...॥ रूप के ... परम पुगट ...
रूप की ... चोरी॥७३॥ ...

१३ दूसर नाम देव उचरही ॥ नाम सती सर भूपत धरही ॥ ६२ ॥ चौथा नाम नृपत परकाशे ॥ पंच
म नाम छत्रपति भाशे ॥ षष्ठम नाम समर्थ वषाना ॥ सप्तम नाम देवपति जाना ॥ ६३ ॥ रा
जा नाम याग्गन पुगारो ॥ सभ कोदे वे दुखकपा रो ॥ देव नाम याग्गन ते परयो ॥ करणाकर सभ
को सुखधरयो ॥ ६४ ॥ भूप नाम याग्गन पुगारयो ॥ या मो दुष्टजन रहन न पायो ॥ नृप ना
म याग्गन परकासे ॥ सभ राजनको धरे विलासे ॥ ६५ ॥ नाम छत्रपति या ते कहे ॥ या ते दुसमा
रम यज्ञ के ॥ समर्थ नाम याग्गन पुगारा ही ॥ जिह सम आन दूसर नहि आही ॥ ६६ ॥ नाम देस
पति या ते की ना ॥ सभ जग की सुधि धरे प्रवीना ॥ जिह्नि नपय ईह सभ भगन है वे ॥ निहचे
सभ जग के दुख षोवे ॥ ६७ ॥ ये निजमान न वधायो चहे ॥ धर्मशील सव्रन्न पसो रहे ॥ नृपु
न पुन्न पकारे न हिधरही ॥ नृप के कार्य हित चित करही ॥ ६८ ॥ नृप पुनी इधा सकल त्यागे
न पद इधा सो हित सो लागे ॥ नृपका ज्ञा ये माने नाही ॥ जग कृपय सकृ ज्ञा डो सम पाही ॥
६९ ॥ भूपति निकट सत भाषत रहे ॥ निहचे मानन वडाई लहे ॥ भूप हर्ष होता को माना ॥ स
भेत कृधिकधरे वहु ज्ञाना ॥ ७० ॥ नृप सेवा ते वहु फल पावे ॥ नृप की सेव न विरथी जा
वे ॥ नृप या को मत शील निहारे ॥ सभ के ज्ञा डोना हि विचारे ॥ ७१ ॥ वे दस भा मो ता हि
सरा है ॥ वहु हेत चित ता को चाहे ॥ या जन को वहु ज्ञान निहारे ॥ नृप कार्य हित चित सो
धारे ॥ ७२ ॥ सत वादी नृप का ज्ञा माही ॥ रहे सदा वहु हेत लगा ही ॥ कैसे जन नृप के निक
टा वे ॥ सदा रहे वैठे वहु माने ॥ ७३ ॥ ये मच्छ कहे नृप सो गिनती धा ॥ ते कवषप नृप के रे
कपा करा ॥ सुने सम मान ता हकी चाहे ॥ वचन रूपायुत ता हु उचारे ॥ दोहरा ॥ जप तप संयम
धारे ते धाण त्यागहुदेव ॥ नृप समनी तरा ज हित करत है वेदेव कहे मेव ॥ ७४ ॥ भली वुरी सु
ध जग न की नृप राखे सु विचार ॥ भात न कृप न पुरे कृती रत न दीषे भार ॥ ७५ ॥ उंदेव
नृप की लघुता ई ॥ ते करबहुनी ह सरदी कृपा ई ॥ या पर को पम प को हा ई ॥ ता को राख नृसा के

कोई॥नृप पुर जाके ध्यान करावै॥बिना प्रान निमित काधि ज्यावै॥नृप हीते जग सरबी रहाई॥नृप ही
ते जग शोभा दिखाई॥६४॥नृप हीते जग धर्म सु साधे॥नृप हीते जग ईश अराधे॥नृप हीते
जग भार वडाई॥नृप हीते जग कीरत पाई॥नृप हीते निरबल बल पावै॥जो अधिक सौ दुख दे
न सकावै॥६५॥दोहरा॥बहु प्रजा शोभा दे ज्ञा शाखा जैसे नृप को भाइ॥मान बडी किया ज्ञा बी
ये सु नृप धर्म जम्यो तुल्लाइ॥६६॥बडी ज्ञा रजा मपकी सभ हीचा देहेत॥तिहि पर होइ उ
शंन ही रक्षा पुन जो तांचित तचेता॥६७॥चौपई॥येन्नप जैसे कर्म कमावै॥सकल जगत ते
उ धर्म धरावै॥तिन के पाछे भूप सुनायो॥करे कर्म ते उ जस से महायो॥सुर पुर जाइ सकल य
स भोगै॥जिम सको यस्य उतरे इहि लोगै॥लखीयत जीवत है न मरे है॥जिन के कर्म न ज
गत धरे है॥६८॥बृहस्पतो वाच॥बृहस्पति जब नृप के इहि कर्म॥कहे सम तैसो व
र धरमा॥सुन तस मत तनपर मन उतारो॥राजन सन तन उपर धारे॥६९॥तिउ विचा
र चित राजन त्यागो॥उर्वी हि उर्वी की भिख्या स्रम लागो॥राजन मांहि दी जे वड दाना॥भिक्षुक
कहते देत निमाना॥७०॥नप ते राजनु नीकर जान्यो॥नीत न्याइ को राजनु पछान्यो॥दो
हरा॥ताते क्षत्री हम भये नम मरी करणा देख॥कवर हु ज्यों वरतो जगत धरनि जन दया
वशेष॥धर्म जो वाच॥चौपई॥जिहविध होइ प्रशंन जगतपति॥जिहिविध सरबी र
हे परजा सत॥जिहविध महिर वशा होवे देशा॥जिहविधि निरबल धरे न रेशा॥७१॥जिहि
विध सबल परे शत्रु न पर॥जिहिविध सभ की सुध ले को वर॥जिहिविध चारो वरन
रहावे॥निज निज धर्मो लाग सुहावे॥७२॥जिहविध निज कुटंब की वरतन॥जिह
विध सैन सभार धरे धन॥भिंन भिंन सभ मोहि सुनावो॥सो पर वउ उपकार धरावो
॥भीष्म उवाच॥नृप प्रथम जीते स्रप नोमनु॥विषे वास नाम निरमल होत नां॥तीहि
काजे हरि प्रशंन न होई॥ब्रह्मन की जे कायें सोई॥७३॥जिउ दारा सुत आपन प

धानो॥ त्यौंही प्रभु वेदि दमो ज्ञानो॥ तिन पर होन न दीजे कोप्रभु॥ न्याइ समेक्षर मित्र एक सम
६५३॥ जिन क्षम पुना मन्न वस न ही कीना॥ जैसे रेव साक्षि पाकरे प्रवीना॥ मन कोगप्रशत्रु म
नमानो॥ करविचार ताको वस ज्ञानो॥ ६५४॥ मन वश कीये ते जु होइ भारी॥ शत्रु एपर
परहो वलकारी॥ ठौर ठौर वस से न रहावे॥ कोर क्षत्रु रति हलीन वनावे॥ ६५५॥ सेना
सभ कीर हाथारे॥ सैनन सु प्रतु मन लेहु सचारे॥ क्षम नहोइ तुम सु धन संभारे॥ वीहभा
ऊनि रथ तक्षर भारे॥ शत्रु तो हि देस न परक्षावे॥ दंड विदंड देस कर जावे॥ ६५६॥ दोह
रा॥ नगर चौपफेरे काग दुम ताकी सुधन पुलेहि॥ याकी धाइ सुजं धक्षति किसे न कार
न देहि॥ ६५७॥ चौपई॥ नरवल जन येदीन कमाधीने॥ देस नकोप्रभ मकोपर वीने॥ न
पजरवर कूक्षघर वजावे॥ चहुंदिस ते सुध लेत र हावे॥ ६५८॥ क्षम न होइ कोऊ क्षर दोरथे
परे सवल तुहि मान्य मिरथे॥ तव तुम ते कुछ होन सकावे॥ पछ तावा पाछे रहि जावे॥
६५९॥ दोहरा॥ जहार हे चहुं दिशा की सुध राखे वरमप॥ सुधी हित भेजो चतुर जन जिन
मो वुद्धि अनूप॥ ६६०॥ कुसुम कुचील दिषावहीं उचरे तोतर वात॥ वाहर मुगध जनाव
हीं रहै न तरच तुर क्षति ज्ञात॥ ६६१॥ उशन सीत रहे एक सम त्रिषा भषन जनाइ॥ व
केना हमार ग चलत ते सुध यो ग दिषाइ॥ ६६२॥ चौपई॥ ऐसे जन चतुर ठौर पठावे
देस देस की सुध पहुंचावे॥ भली वुरी सभ की सुध त्यावे॥ तुम से भाष सभ ही पुगटावे॥
सोपुनाह कथ्यो रि देव सो वे॥ यो कीस्यो सभ भाष सुनावे॥ जे जीमंत्री वरन तन की सभ॥
पुगटावे तुम सो भाषत तन वा॥ ६६३॥ भ्रात पुत्र न मेरे हित धरही॥ सुध सभ कीगत नृह
पुगट रहो॥ नगर माह जो वरते वाता॥ ते सभ तुम सो कर विष्याता॥ ६६४॥ निशिदिन
नपसी की सुध सारी॥ यो की नि उउचरा हस चारी॥ हार पट एमो जो वरताही॥ ते स
भ सुध पहुंचे नृहि क्षाई॥ उन ते भी जो गूढो ज्ञाने॥ ता हवै नम्र मन स च न माने॥ ६६६

दोहरा॥ वे जन कैसे सचाही ये रूठ रहत न सुध परा॥ समुझे अज्ञ हिये जीय की सन धर्म जगुन परा॥ ६६॥
चौपई॥ जो सुध पावे पुन ताहि विचारे॥ करे उपाव अधु विलम्ब न धारे॥ ये का हू न पपरचइ जा
वे॥ तासे ना की सुध को पावे॥ ६६॥ बुद्धि जन्ना सो मंत्री भिचारो॥ अरि भिचार पुन गिरि मो धारो॥
ये अरु बल अति भारो जानो॥ तासो मित्र भाव प्रगटानो॥ ६९॥ अब पुन भेद बुध जन के अज्ञाने
ना कीजे प्रगट रमपकअन्तराठे॥ सैंधपि जे चतुर सयाने॥ तासो भी रहे मंत्र सजाने॥ ६७॥ अब
वापंडत सम गुन परखना॥ तिनके मंत्र लेहु अरु रखना॥ नेजी मंत्री ये बुध भारे॥ तिन सो की
जे मंत्र विचारे॥ अरु पुन भेद जो सम को भासे॥ प्रगट परे लघु ताप रहासे॥ ६८॥ दोहरा॥ व
लीश बुजि जिहि जानी ये तासो नेह सनेह॥ जु नरि घायामो अधिक चतुर रचन वरते
हा॥ ६७१॥ जिहि हिधि हिह धारे शांत सुख राघ तुमारे मान॥ अस वसीठ सो हित सदा राखो विदे
सुजान॥ ६७२॥ चौपई॥ जे अक्षर को मल जितेन होई॥ पुरुष प्रगट किये उमोई॥ वसीठ स
हीहि तसो न सुनावे॥ चाहत दे सम प्रगट जोवे॥ ६७४॥ अवश्य जान यधु के तान रेशा
रेहे व उाई अरु तुहि देशा॥ पुरुष समे पर जाको दरशत॥ मधुर वचन जिन उंदर रखता॥
जो अज्ञा मिले तिह धीर्य धारे॥ अरु पुन ताकरे शुभ वेन उचारे॥ चोडर वत नु मको न मि
लाये॥ देउ करे ताको वलु पाये॥ ६७६॥ वित समान धन लेवो पता॥ चित ते अधिक न
नीक सपता॥ ६७७॥ दोहरा॥ मीत भात सुत वेध ते अचय वा मंत्री तोह॥ ये इन ते को उ
पुजाको दुखदाई जन होइ॥ ६७८॥ प्रथमे वर जे उनको जो वर जेन रहोइ॥ धन जस है
उनके लूट ले पुन कैसी न कराइ॥ ६७९॥ चौपई॥ ये के उनप न पके अति हिज्ञावे॥ व
उ अदर सो ताहि मिलावे॥ यथा योग तिहि मान रखावे॥ भाली हित तासो उपजावे॥
६८०॥ जन वश त्रो सो युक्षप रावे॥ अपत निज प्रथमे न ही जावे॥ पवडेसे न जिहि भुजव
लभारे॥ उनके सन जी पकरे सुभारे॥ ६८१॥ ये जाने अरु उहू बल धारे॥ निज सेना

वलहीनदिखावै॥ औरसेननतानिकटपठावै॥ याहिदेषताकोवलजावै॥६८३॥ येजानेकअर
सवलनवलीजाति॥ नवनपचडेधारतेजसत॥ करसंगमौनजकरैभगावै॥ ताकोदेस
जपनवसपावै॥६८४॥ युद्धमाहियेलूटेमारे॥ निनपररोषदयाअपारे॥ अरकुलतेया
कोअभजाने॥ ताहिदेसदेवेहितमाने॥ न्यायसुनीतसमेसरवदे॥ अरसनहोइलूटर
रलेवै॥६८५॥ दोहरा॥ अरयेलेतापुजासोअर्धताहिसोलेइ॥ वसेसुखीअमतजहरष
नपकोआसिषदेइ॥६८६॥ चौपई॥ दुखकाहूपरहोननदेई॥ सकलदेसकीसुधन
पलेई॥ सतोसमानप्रजाकोजाने॥ सुखउपजावैभयसुजाने॥६८७॥ अवनपपुत्र
कीवरतनसुनो॥ प्रथमशास्त्रविद्यावरगुनो॥ पुनशस्त्रनकीविद्यामाही॥ होइप्रवीन
भारवलवाही॥६८८॥ रिदेसत्रुअरमीलअनपा॥ दिसातेपहरषतसुखरूपा॥ सुजन
संगदृढयनतेन्यारे॥ न्यायसुनीतकोजाननहारे॥६८९॥ वोलेघोरवाचालनहोई॥ म
देजूयाकेविघनपोई॥ परनारनकोहेतनधरई॥ वहुधामानसदाचीचरही॥६९०॥ पि
तकेभयराषेजीयमाही॥ रूपादिकसभडौरदिखाही॥६९१॥ दोहरा॥ देउविदेउवाधनरतन
कोपतेजअभचार॥ हरिभीरहेनपकेसदाठौरठौरनिरधार॥६९२॥ जैसेदेवेभपवरन्या
इनीतसोजान॥ तेसेकरेनलोभधरदोषअदोषवान॥६९३॥ ईश्वरतेवहुभयरिदेनहि
अन्यायकराइ॥ तेनपवरयसलोहिजगपरलोकसुषपाइ॥६९४॥ चौपई॥ तिनकीउ
उपनकरेसभुकोई॥ न्यायनीतजिहिनपकेहोई॥ प्रजासुखचिनजसुखविचारी॥ प्रजा
दुखीदशनिजअभधारे॥६९५॥ दुखकाहूपरहोननदीजे॥ सभदेसनकीसुधहित
लीजे॥ सतोसमानप्रजाकोजाने॥ सुखउपजाइहेतुजातिठानै॥६९६॥ दोहरा॥ जै
सेदेषेवरेनपन्यायनीतवीचार॥ अयोगनकतहूधारही हरिसभयजीयधार॥
६९७॥ चौपई॥ न्यायनीतयानपकेहोई॥ ताकायसपुत्रदेसभकोई॥ ज्यौंरविनेजजग

काजसवारे॥ त्यों नृप जग पर करुणा धारे॥ १६४॥ जिन्ह खलको वल नृप हरि कीन्हो॥ फेरि सु जगकी
पर दीने॥ जैसे सा तेज भूप का चहीये॥ याते भय सम भूपत लहीये॥ १६५॥ और भंगया केउर
पेक्खीता॥ कसमय त्याग सम सोरहीये लगा॥ दुरजनी से न दंड कानृ धना॥ च न दंड जि सनृदे
न पवरा॥ १६६॥ दुरजनते दूरि किस कोकीजे॥ कानृ बांधक धिक दुखदीजे॥ जैसे तैसे जस
दुष्ट कैमुं॥ तैसे तैस दंड धरा है॥ कानृ कोदे दे सन्निरुहै॥ कानृ हते तानापाइ वीचारो॥ १६७॥ दोह
रा॥ दंड करे अघ देव नृप पुनि अधु दोस लगाइ॥ वेद पुरानेनि सिषो धरि हैमलाल पुगटा
इ॥ १६८॥ पांतस्तु नीत पवित्र नृप दुष्ट सुध्रम्म जानु॥ धर्म विचार करायके ओरे रहे जित हर्षम
हान॥ १६९॥ चौपई॥ जैसे नृप का दरसन पाये॥ हरखे प्रजा उपमय सरसाये॥ प्रजा सकल निहि
त सुखिन वसावै॥ सुखी रहै कोउ दुख न दिखावै॥ १७०॥ नृप रवि सम ससम कोसु खुदेहीं॥ नि दिन
सीस ते जु वडुले हीं॥ निज कुटंब सो हरखे भाखे मान हेत नित केलकमलाखे॥ धर्मी पुरषु ये
न गर रहाई॥ तिन सो सुखधरहित उपजावै॥ और कुटेर कोर निज धारे॥ जावन कलत
जहां कररन दिखारे॥ १७१॥ युध के साज सुनोर है पर्णो जिहि ते होइ॥ शत्रु वलरन रनकेरभ
वसकै सी सोइ॥ नृप वावली कृसो वरताला॥ रहे कोट मोन्नप वरज्वाला॥ १७२॥ याते परजाको
भ्रम जावे॥ ते काचे नृप नाहि हित तावै॥ साते ठोर सब धान रहे जे॥ कहूं निंत नहि धारे नृपु
ते॥ १७३॥ नृप सम भंडार दूसर से नाम सुध॥ चीती ये क्रम स्वगजरपकी सुध वुधा चो पेहितवा
धवसध धरही॥ भली वृर्जी तिन की निवि चरही॥ १७४॥ पंचम दंड ते जो धन आवै॥ करे दा
न भंडार नपावै॥ धर्म न जगर की सुधहितले वे॥ दीन हीन को धीर्य देवे॥ १७५॥ सप्रमह
नेतुर पतर है॥ ते उकरे ही रहु रख तल हे॥ जीव न कुसुम सपो रही जाने॥ दान उपकार द
मनुमाने॥ हे नृप जे कसम वरत नरहे॥ निरचे चिंतन्ना रहि तलहे॥ १७६॥ दोहरा॥ उरक्षा
नृपधान धरमन वीचार रकगाइ॥ याते परजा धारसु सुख दे हित सी समनराइ॥ १७७॥ नृपके

याईविनकमैको नाहिंमहेपुगराना॥ जपुतपुसंयमनेमव्रतिनाहीन्याइसमान॥२१॥छ्ठा
केज्ञाननपुमोरहेसंमतसहस्रवीताइ॥ तेऊनन्याइसमानहैनपकेतपुवरन्याइ॥२२॥चौ
पई॥ वृधवलनपुजीयवशचरहाँवै॥ ज्ञानिवहुपुनिनउनसोलावै॥ वुद्धंभीरनपसवै
जाना॥ समझुनपुणितेजमहाना॥२३॥ धर्मजोवाच॥ निजधर्मकात्यागकरायै॥ येपर
धर्मकाजहणधरायै॥ तातनाहिंगयकहोउचारे॥ तुमविनकौनशंसनिरवारे॥२४॥ भी
षमोवाच॥ हेनपसभविधधीयधरहो॥ सभगयसुनविचारमनकरहो॥ जपकर्मीतस
करवरपारा॥ दंडुदेडुतिनकोइतिभारा॥२५॥ चारोधर्मकरेनिजकर्मा॥ नाहिगहावेको
परधर्मा॥ येपरधर्मरताकोउदीसे॥ ताहिदंडुनपुधरेजगीसे॥२६॥ येनपुदंडुताहिन
हीदेवे॥ तिहचेपापजाननवउलेवे॥ सनयुगमोजनसत्तभावेसभु॥ परदुखपापनकरत
कोउनव॥२७॥ सुंदरतुरुपुरुनरज्ञानी॥ कोकाहूआधीननजानी॥ रोगसोगइति
करीदघावत॥ तेजुभारइति शकतरषावत॥२८॥ नपुसचारदंडुजिहिदेवे॥ जगपा
पीकोउंदुखनलेवे॥ कलयुगहीमोअघोडुषणने॥ नपकन्याईभयेमहाने॥ दंडुविदंडु
घातेविस्तारे॥ उजादुखीनपुभीभयभारे॥ नपधर्मजतुमहोवडुज्ञाना॥ सतयुगसम
वरतनधकेमहाना॥२९॥ दंडुजिसीकोलेतानाही॥ सोईकरोजिहिजगयसुपाही॥ य
ह्मकह्मायुरवधेनुमारी॥ जगकोउपजावोसुखभारी॥३०॥ धर्मजोवाच॥ दोहरा॥ मु
कतहोर्डजिहिनरकतेमउगुप्राप्तहोइ॥ तातरुपाकरमोहिकोपुगटावोविधसोइ॥३२
भीष्मउवाच॥ दानदयातपतेजधिक हितचितकरेसभार॥ निश्चयताहिकोरहोमखपु
नननरीपकरोसन्वार॥३३॥ चौपई॥ चितककठोरननरीधगेनरेषा॥ परदुखदरोज्योंतिमर
दिकेसा॥ ज्ञानुदिसेवकरेज्ञानिभारी॥ ताहिदेतनधरहोसुचारी॥३४॥ विनुसोधोहितक
वकुनधरही॥ कोकाकोदिखवेनुसमरहो॥ विनुसोधेषोउकहतुनरीकीजे॥ हतनयोगहो

नाहिं हरती जे॥२२५॥ ॥ ऊसन होइ जिनु देस हरतावे॥ लजो पापु पाउआ तन पावे॥ निज मुख निज
सुरमत की गाथा॥ कवहू न प्रगटावे वउ माथा॥२२६॥ करत तर है चित सम सुख धरही॥ हरि सिम
हरषे यस प्रगट रहही॥ सभ कीया चन पर करावे॥ मधुर वचन मुख प्रगट धरावे॥२२७॥ आप
शनिं दख पर दुखु जिहि जाने॥ ताको अपुने निकट न राने॥ सुभ चारी ते भार सील अति
ताहि न दूर धरो है सुभ मत॥२२८॥ रूपसी जन की गाथ न सुनी जे॥ मन तन ताके हेरि से दुख दी
जे॥ घोक धु काहू को देवो सत॥ पुन पछुतावो नाहि विमल मत॥२२९॥ चडुयो की सेवा हित
करहे॥ मान वडाई उन को धरहे॥ याको यसु ते ऊधन इकठावे॥ अपयस धुन को चा
हमिरावो॥२३०॥ दुष्ट जनो का संग न लेवो॥ अधिक मपरनार न सेवो॥ या प्रकार ये वर
तन धरहे॥ इह यस प्रलोक सुख भरहे॥२३१॥ सुन सुन धर्म जमयो हर घडी ति॥ मुख
ते वचन उचार करत सत॥ धर्म जो वाच॥ जिहि विधि मपत नर कुन देखे॥ सुर पुर जावे कदे
वशेषे॥२३२॥ भीषमुवाच॥ जे ते कर्मे जिहि नर मुकतावे॥ जिहि कर्मे नर हीन रकुं दिखावे॥ निहचे सुर पुर मो पठा धरहे॥२३३॥ तप ते अधिक सहा वस्स
हू धर्मे जये ते ऊ तुम करहे॥ मधुर वचन दाता सुहि रहे॥ हरि पहिचाने होइ न
ना॥ सम ते न्याइ अधिक परमाना॥ पर उपकार पर धन देवे हित॥ नारहन विषयन दुहराषे चित॥ कोमलीर
निरदे॥२३४॥ सभ को वेन हरख होइ भावे॥२३५॥ ते ऊ करे जिन दुख वेन को ऊ अन्यासन
दपुजा सुधराषे॥ सत वादी जन सो मेत सभारे॥२३६॥ याते
काहू धारे सो ऊ॥ नीच न सो वडु मेल न धारे॥ निज धन ते जपर होइ न गरवत॥ निज सव
पुजा दुखी निरधारे॥ ता पर रहे दया लज्ञ पारे॥ करउ न नीत धनु न हिर इकठावे॥ पाप कंस मंडार न पावे॥२३७॥
ने दुख हो जितु परवत॥ करे मुख ते उचरे वेन॥ जो भ्रपो सीवरत नाउहो सभी समु
होरग॥ पुने धर्मे जदे ऊ जोर करे॥ सम मते लषो हे धर्मे जवडु जान॥ हरि याबे मपत जगत
देन॥२३८॥ भीषमुवाच॥ राजु सुकवन

म्था करे मराच ॥ ७३ ॥ चौपई ॥ येन्रप सनीत जगावे सुखु कारी ॥ जेगीम त्रीतिहसभ चारी
सभ से नाना की सुभ चीता ॥ परजा को सुख देव हुरीता ॥ ७४ ॥ तिन की सुधन्रपु लेत रहावै ॥
मन को इ कूठी वात सुनावै ॥ सुभ चिंतक न्रप के सभ होवै ॥ परजा के सुख दिदे परोवै ॥ ७५ ॥
प्रजा सुखी हो देइ असीसा ॥ वहै भ प को तेजु अनीसा ॥ धीर शांत सभ कार्य माही ॥ धरे भ
प व उ सुखु उपजाही ॥ ७६ ॥ काम क्रोध धारे धारे ज्ञाति ॥ तेन्रपु दुह लोक लहे सुख सत ॥ लो
भ मोह भी धारे धरही ॥ वुरु तजे सो सो व उ हित करही ॥ ७७ ॥ याते प्रजा दुख सुभ पावे ॥ ता
सो सभ पति हित तेन भावे ॥ निर्भिदिन याते हरखत रहे ॥ तेन्रपु दुह लोक सुख गहे ॥ ७८ ॥ राजतेज
धन मद न रहाई ॥ विधि ध्याइ ज्यों ज्ञानी लहई ॥ सभ पाप न्रप धरे जपद भरा ॥ सभ पाप
इ न्रप धरे तेजु वरा ॥ ७९ ॥ सभ मे अधीन जगत दिखावे ॥ ताते सदा रमे सुभ भावे ॥ परधन दिखसे
चित न लुभाई ॥ निज भुजा रव धे परहर राई ॥ ८० ॥ ये अदेस को देस धराये ॥ ता सो धन ले दंड ध
राये ॥ तेहो दुखी ज्ञति णी त्ल स्वासा ॥ राहुत न्रप की निंद प्रकाशा ॥ ८१ ॥ निर्हवे न्रप को तेज
धरावे ॥ ताते न्रप अन्याइ न भावे ॥ निना दोसु किसै दंड न दीजै ॥ सभ को सुख धर्म आस बल लीजे
प्रजा धेन दोउ इव सम कहे है ॥ न्रप प्रतिपाल दुग्ध अन्ववे है ॥ न्यों हित ताको सम उपजावे ॥
याते अपुनाते जु धरावे ॥ ८२ ॥ सोहि प्रजा वधे अरर रखो ॥ चटु धन देव रखा सम व रखो ॥ जो
धन दुख देउ जु देहो जाई ॥ नव न्रप वो अधर्मा वल जाई ॥ ८३ ॥ पुन हरि ते लजु न रहो वे ज्ञाति
धम भी भार सासना स्वदेसत ॥ परजा जु न्रप दुम सगा उन्रमा ॥ जुते दुमर रहे सवल महान
८४ ॥ दोहरा ॥ ज्यों मासो अभ्रागम की रागस्यु धीहित धारा ॥ ते रवझार निहारे के दूर करत ततकाल
॥ ८५ ॥ तेसे न्रप भी प्रजा के सुधराय न तजाइ ॥ दुख न होन देकि सी पर अ सम सी वधी
करराइ ॥ ८६ ॥ चौपई ॥ अश्वनि अश्व रूप जो अमान न चुनावे ॥ [illegible] पर चड दु आवै ॥ या
सो [illegible] ॥ ८७ ॥ [illegible]

पुन भंडारे माहन लहे ॥ तब कहत बणप परजासो लेवे ॥ राखे देस जीय सुखु सेवे ॥ ७५५ ॥ दयादि धारे
बधर लेवे ज्ञानी ॥ बहु सुमृति सेन धरे विनानी ॥ ते भी दिज पर दे उन धरायेअ दिज धनी न
रमाइ लीवि चरापे ॥ ७५६ ॥ कहि तब उमान्नी दिज लेके राखे ॥ पर धाधर ऐव दूनाहि भाखे ॥ ये न पुछे
सी वरतन धरही ॥ ता पर कार को उस्वबलन परही ॥ ७५७ ॥ जो कछु उपजावे ताके देसा ॥ निचलते
इ भगजाइ नरेसा ॥ ताकी धारे इ शर दहित ॥ वसे सर वी सम भगते के जित ॥ न पको तपप
र जा प्रतिपालन ॥ न्याइ नीत क्रम रीत सभारन ॥ ७५८ ॥ दोहरा ॥ ये न पन्याइ सुनीत है
परजा को सुखु देइ ॥ प्रजा हर धर हरधाइ हरि बहु तपु मानेते इ ॥ ७५९ ॥ सहस्र बर बधे तपध
रे न्नी हिपर न्याइ स मान ॥ न्याइ सकल क्षम धना शही क्षम घ छ न्याइ स महान ॥ ७६० ॥ चौप
इ ॥ दिजा रखित पी करे तपु ये ते ॥ तप फल भप भम है इ सु चे ते ॥ यो केरा जस्म रवी सभर
है ॥ हर धपर सुमक्षर दुरखु दे है ॥ ७६१ ॥ होइ सबसि दीनि मर न कर रही ॥ ताके फलन पः
वड सुरवु धरही ॥ ये न पुन्याइ जीत वरताये ॥ सम पर सब लपरे बलुपाये ॥ ७६२ ॥ सुर
नर सभ नीति हिकाशिख धरही ॥ ते जकार बल सुरवछ धक रही ॥ धर्म जो तम्बा न पने
जी के से बहु रा वे ॥ ऊहो वे से तिन सो वरता वे ॥ ७६३ ॥ भी कछु उत्ता च ॥ दोहरा ॥ जेजी धरे हे
दिज बउ ताजे ॥ सत वादी तप डीहि सुजान ॥ धर्म जो ताच ॥ दिज की उतपति मो हिसु
ना वो ॥ हम रौरि देह से उपजा वो ॥ ७६४ ॥ भी कछु उवाच ॥ दोहरा ॥ पुरख इ ही बलन पकी
योक शप परिखिपय जाइ ॥ सिखि उत रदी यो ताहि को तेई तु मसु चो हि ताइ ॥ ७६५ ॥ दि
खि उवाच ॥ चौपई ॥ दिज वर हरि मुख ते पुग राने ॥ छत्री हरि भुज ते उपाने ॥ वे स पदु
रु हरि पग ते सु दा ॥ उपजा ने कहे वेद पुगर ॥ ७६६ ॥ दिज की उप मस म ते हा निभा
सी ॥ ता ते दिज ने जो सु बिकारी ॥ दिज नित्य रमल चित हो इ दुढी जित ॥ लो भ इरखा नाहि
पहि चित ॥ ७६७ ॥ जुक्त रीव धाम माहि पु बीना ॥ बुध भारी ता मस ते ही ना ॥ भ म मे

उपावे सभ को सुख॥ काहू को नही उपजावे दुख॥ ८३॥ पुनि जाह हरख धर ताको देवे॥ नृप भीर
रघ नन्द सुख लेवे॥ सभी दे दिज आशिख हरखारे॥ बैठे भूप के ते जु उपारे॥ ८४॥ स्व वंस
हो व तो देखे॥ जाइ सह तने तो सन रेखे॥ बसो वाच॥ हे रिख दिजवर तेसे सेज ग॥ धनीक
बन धर्म सेर हिल ग॥ ८५॥ रिखो वाच॥ हे रिख नृप दिजवर तप साधे हित॥ निज प्राप्त
पर हरखा वे चित॥ नीच इछ नी के मन माने॥ चित इस्थित रख धर्म न जाने॥ ८६॥
विद्या वेद पडे अति जागर॥ सभ कर्मी मो रहे उजागर॥ ऐसे दिज को सभ जग माने॥ स
भे अति उचार जाने॥ ८७॥ छत्री सभ कर्मी निरमल चित॥ दया दान पर राखे उदित
ना दिज सूने छत्री पुत्र सवे॥ ताते दुष्ट मोह तनु धाने॥ ८८॥ सु सप रहे नृप तन दो उभार हि॥
दुष्ट मोह दुना रहि नीचा रहि॥ ये दिज छत्री वे रख धरत है॥ निर चे दोउ उपाउ करत है॥ ८९
विजर न है दुष्ट के सभ जाम॥ जग मो रहे न दुष्ट लाज॥ या ते नृप दिज मे जग हाये॥ सर्व
करे शोभ जग गाये॥ ९०॥ दिज भी नृप की स्वस्ति चितारे॥ आशिख देत रहे हित भारे॥ सत
जग मो बहु सुख उपजाये॥ रहे सर्व सभ शोभा तजा ये॥ ९१॥ नृपो वाच॥ हे सप धर्म भूप
नमो पर से॥ कहु रिख तिन के पुत्र रहे॥ ९२॥ रिखि उवाच॥ नृप जिन रिख मन है रख
न सके॥ रिख तपु ते जता हि मन गम सही॥ याते उपजे वे सुख अधिक अति॥ सुत प्रपोरहे
प्रात अधिक तत॥ ९३॥ जो प्रथम धर्म पुन अति प्रकाशे॥ ते जधार सभ करे विना
शे॥ दिज नृप दोषी नृप दिज दोष॥ दुष्ट के बेर परे जग सोष॥ ९४॥ भीष्म उवाच॥ याते
भूप धरे दिज माने॥ रखे दिज सो हेत महाने॥ जे करा रजते दिज रख पाके॥ ते कारे नृप नी
कन भावे॥ ९५॥ याते सकल नारद कीते हुलसा॥ मन्च कद मथो मारी पर का सा॥ ता से मिस्यो सु
वे रपुनीता॥ धर्म उदार व उते ज सन्नीता॥ ९६॥ दिख कु वे रन्पसो पुग रारो॥ रे नृप तुम
हो वड भभचा रो॥ का हे दिज के धीरे मान॥ तुम ने भी तपु ते जमहा न॥ ९७॥ भूप वाच

हमेरा न जे तेज वह झाई ॥ द्विज नहि के प्रसाद ते जाई ॥ यौं यौं उनको सेवक रत हे ॥ सो सो भागी तेजे घर
तहे ॥१२४॥ कुवेरोवाच ॥ हे नृप ये धर ध्यान सुनावो ॥ तुम को सिद्ध धरो सुख पावो ॥ द्विज सेवा
तेजो फल लेहो ॥ याते सुन नृप मोपै हो ॥ नृपोवाच ॥ दोहरा ॥ कुवेर राज जो देस को तुम सो चाहत न
मोहि ॥ द्विज प्रसंन ता मोहि रच सन्च कहत तेहो तोह ॥१२५॥ यद्यपि तुम हो इद्र सम भिरमेउ
र तुम हाथ ॥ सभ ते वडे कहात हे पय सभ लघो तोङ काथ ॥१२६॥ चौपई ॥ द्विज रिषि सो याके
हतु नाही ॥ देहि न झाशिष तोहि हित नाही ॥ तोह ते जे असुर मानव ठाई ॥ तिनह फल नरव राजे
उविर घाई ॥१२७॥ सुनन तमप के वचन धीरज प्रीत ॥ भयो कुवेर हरख भाषत तत ॥१२८॥ कुवे
रोवाच ॥ धन्न नृहि कुल धन धीर तुमारे ॥ धन्न नृहि मत जितई हरि वीचारे ॥ तुमरी पुत्री धारिह
तई हि भाषे ॥ तुमरे हीना न कृधि कछु अभिलाषे ॥ धर्म जो वान्च ॥ जैसे जगत न पुवर तन धारे ॥
जैसे देस सकल प्रतिपारे ॥ जगत जज वपर लोक सिधाये ॥ कहो जैसे तह सुख उपजाये ॥१
१०॥ भीष्म उवाच ॥ दोहरा ॥ जो नृप सतो समान जग न परजा को सुख देहि ॥ असनीत नन कोहू
पर धरे दुहू लोक यस लेहि ॥१२९॥ परजा देहि असीस नित हदिन दिन ते जव धाइ ॥२ हमेला
नतिहमप पर हरि सम सुर रख घाइ ॥१३०॥ चौपई ॥ हरि सुर हरख निज दरस दिखावे ॥ स
कलजुगथ ताके सिध पावे ॥ जग मो ताको तेजु अपारे ॥ सुरपुर मेच उमानु सभारे ॥१३१॥
चिरतक ताका राजु रहावे ॥ दिन दिन तेज वधे यस पावे ॥ ये नर दीन दुरवी दुखाही ॥ करे रे
पाल्यो पित ताहि हिताई ॥१३२॥ धाहि दुए पर दोषी देखे ॥ यम सम धारे देउ वधोखे ॥ ये पापी जोन
देउ न धरही ॥ तहिंह देस म भ्रम भार समरही ॥१३३॥ दया दान या राजन मेऊरे ॥ पुजा रहे वउ
मुख हरघाते ॥ निरखे नृप को तेजु वधावे ॥ चनुस्सर जुभे ताके न पछताहे ॥१३४॥ सेना की
नपके हरि जाने ॥ इ ॥ सम भकी स्वछित चहे रिदि सोई ॥ सतवादी धर्मात्म जानी ॥ धीठे गो
नध्रिमाम नमानी ॥१३५॥ अमृत न होन पावे तिहि देसा ॥ तेजु विशाल मन धरे नरेशा ॥

जोहरितेजनगाउसुखउपजाये॥नाहिउततेइहिपापमहाये॥८४॥याघेकोहूधनचोरचुरावेआप
पकरीतिसदंडधरावे॥तसकरतेधनतहिदिवावे॥ताकेरिदेहर्षउपजावे॥८५॥येतसकर
नपहायनपरे॥नृपमहितेदेताहरखेरे॥८६॥दोहरा॥जोनृपचोरनदंडदेनिजभीदेवेना
ह॥सुसतसालमीधनदेहितिहवउपायलगाह॥८७॥चउपई॥रतनरबाकेसमभीनृपवडजा
न॥जोहरीकहसबुदेपुजावे॥ताससमफलनादिषाना॥८८॥सुनधर्मजभीषमवचनकहेम
सबतेपुरातन॥सबहीथेराजगातनरनजातिसमतेसबयाइ॥८९॥चौपई॥सुनमहिहरीमहरे
होराये॥राजुकरतनसमतेलषपाये॥मेत्रुनीमईहरिदेविचारे॥राजतजोहरिध्यानस
भारे॥९४॥कद्रूनुजवनमोवेठाये॥तपुधारेचितमेचितमिटाये॥कंदमूललिनिजकरलहरे
रे॥राजकराजनसेसबकोसमभारे॥९५॥राजलक्षनजोतुमपुगरावे॥हमानिरवाहनसबोमे
हावे॥९६॥भीषमउवाच॥हेसुतधर्मदेमनुमरीवातो॥समजानतहमरिदिनीसातो॥स
दाहीतसतोरदेतुमारे॥राजुकरतहोरहिमयधारे॥९७॥बालपनतेतोहसभावो॥स्यागचढतु
होरमलषपावो॥इहिसभावयानपवरहे॥निसकीपुजावउसुखलहे॥९८॥पितुपितामह
रधिनामनुमारे॥राजकरतऊपायेभचारे॥त्योंतुमनतपुधरहेसुसभारो॥परजाकोसुखध
रोसुचारे॥९९॥परजासुखहरिहितुद्विहलीने॥समकेतोचधरोपरवीने॥होइसजीत
उजापुतिपारे॥जपतपतेफलभागविचारे॥१००॥सहसुबनजरउतपेक्षराधे॥यजहोमत
पतीर्थसाधे॥विद्यावेदपढेदिनरेना॥मनवचकमसाधेज्ञानिपेना॥१०१॥पवनकदरारगधु
डोरनघाई॥पवराजतुल्यफलनहिउपजाई॥न्यायसभारराजजेकरीजे॥सबमेकछुधि
कजगतयमलीजे॥१०२॥दोहरा॥नरेकरउनतेकरउनजातिमनवसकरोसुजान॥जिन
मनवसकीयोसकलतसनृपवारंकसमान॥१०३॥तेमननमरेवससदानुमहेराधर्मकनव
राश्वेतोसमदूसरजगानमोपरेनहिदुगमअचार॥१०४॥लषधनदानजुकरेजगयसउ

पजावनहेत॥ताते यस नृप को अधिक जु परजा को सुख देत॥८१५॥चौपई॥राजन बडाई
सभ ते भारी॥देषो प्रजा रंजन नृप भचारी॥रिषि मुनि तपी धनी अरु ग्यानी॥द्विज को
पंडुत शील महानी॥८१६॥सभ भूपत के आश्रै रहे॥नृप की उर भार सुख लहे॥
धर्मजो वाच॥कोत पुजो धारा हम कीने॥उपजावै फल अध वड पुनीने॥८१७॥भी
ष्मुवाच॥हे धर्मज नृप के इही तप वर॥जरा राजन प्रजा रहे सुख धरा॥रिषि मुन जन
धारा जम ठौरे॥रहे सुखी आनंद मन भारे॥८१८॥इह फल तिन का हर्ष रहावत॥
नहि लष संमत ततपु तप तावत॥रिषि दिज हर्षत ताते रहे॥ताके फल असे नृप लहे
जिह फल के वधु अंत न पाये॥वेद पुरानो माहि लषाये॥अरे हान मीत सुख देवे॥
सुरपति सम होवहु सुख लेवे॥८२०॥तुम दिज की अस उपम उचारी॥वनी कउन
मो को अति भारी॥वड्डु दिज षेती कोवन हारे॥वड्डु दिज धार नते हे विवहारे॥८२१॥वड्डु दि
जन पकी सेवा करे हे॥वड्डु दिज तप विद्या गुन धरे हे॥सभ को इह समान नहि हर हीये
वर्धु विचार चित मो नहि लहीये॥८२२॥भीष्म उवाच॥दोहरा॥नृप सुनीत सत शी
लसति नीत चलावन हार॥सभ सो हर्षत हीरदे राषे रिदा उदार॥८२३॥यादि जको म
मकमेयुत देषे नृप वड उजान॥ताकी सेव करे रिदे ते राषे ताको मान॥८२४॥चौपई॥ये
दिज अपुन कर्म सविधाने॥तै दिज सुरे समान वषाने॥ये दिज नृप सुभ मंतर देवे॥
नेपरोहत करहीये जजमेवे॥८२५॥ये दिज नृप के नेगी होई॥भली चुरी सभ लषही जे
डु॥ता मो नृप को ते जु वधीवे॥ते अचवे हे दूसर नहि तावे॥८२६॥ये नृप को दिज होह वसी
डा॥काठे करत रहे भ्रमदीठा॥ये दिज नृप सोव लाजु करावे॥लेन्न देन की चिंता कुपावे॥८
२७॥पंच पुरा दिज धत्री सम सरा॥कोरस नेधर्म जपुन कुभमतर॥ये दिज चिचहार हेतप
रदे सै॥कुशाचत जावत सुनो नरै मै॥८२८॥ते दिज वेष समान रषानो॥कउ वसर डु समरि

जु स च्चो सू ज्ञा नै॥ यो दि ज व्यान प णी ते क्षा दे॥ त्रि कुस व स्य लो ती य उ न मा दे॥ २२॥ ते दि ज स्र
द र स मा दि ष्ण रे॥ न र स ना ला स स न ऊ को भ चा रे॥ २३॥ इ सु दि ज ना नु स भा र हो स मं ते व डे क
ता ड़ ॥ इ सु ठा कु र द्वा रे प र ज हो ध न चो धा जी य मा रा॥ २४॥ इ सु दि ज उ ठ प र भा त के सी त क्षा ल
स हे स्नी त॥ भि ष्या मा गा त प्र र तै है लो भ भा र धर ची ता॥ २५॥ चौ पई॥ आ व म हा पा त की ज न की
गा ता॥ स न हो धर्म ज्ञा हि त के सा था॥ जे क्ष र दो सु दि ज को र त कु र ही॥ वा प रो सं च न न प रे ध र है
श्च घ वा म द क्ष र मो स क्ष र हो॥ ता ग रु ची य से भो ग सं भा रे॥ पा चो म हा पा त की जा नो॥ २
न से सं ज न न ब हू मा नो॥ २६॥ इ न सो मे स म उ पे के रे॥ छ ष्म म हा पा त क ते ध रे॥ घो र
न र क को पा वे वा सा॥ व उ दु र्ख वि स पे स्म मू प र का शा॥ २७॥ भ प न स न प स व ल र रै वे॥ दि घ दि
ज दे उ ध रे न न जा ते॥ पा पी दि ज न्या ध न दं उ ले वे॥ क्षो र दि ज को हि त सो दे वे॥ २८॥ नि ज
धं नु र म हि दे न्यो हि पा वे॥ कु भ क भी दि ज स धी न र हा वै॥ पा पी दि ज को दं उ क रा वै॥ ता हि द
पा न ही नै कु ध गा वे॥ २९॥ जे पा पी दि ज को दं उ दे ई॥ पा पी दि ज को दं उ स रा व ता॥ स प त नै
कु न द या ध रा व ना॥ जे पा पी ज न को दं उ न दे ई॥ दे स भ ष्ट हो व उ भ्र म ले ई॥ ३०॥ यो दि ज
ध धा भा स्व ध चो रे॥ ता को पा प भ प को जो रे॥ दि ज ध धा त र ता रा ज न झो रे॥ र हे दु र्व
न प सु ध न सं भा रे॥ ३१॥ न प को व ने ता र के दे से॥ र हि स भ सु र्व न दु खु प र वे से॥
पे क्षा नि कु र न चु रा वै प र ध नु॥ ता को दं उ दे हि ह र्ष त घ न॥ को उ दो ष न प प र न ही ला गे
क्षु धि त पु न या ते व हु भा गे॥ स ला कु टे व ता दे स्य नि का रे॥ या ते व दु रु न जा इ नि हा रो॥
३२॥ क्ष य वा ह तो जा न ह त यो सा॥ न प को पा पु ना ह दु कु लो सा॥ जे न प ता ह न ह ते दि
घो रे॥ नि र पा पे नि र प कु क र जा रे॥ या ते इ कु इ तै हा स उ चो रे॥ स न ध र्मं ज तु हि शं सा नि
चा रे॥ ३३॥ हो र ता॥ जे ते दे स सो भ प इ कु र ते पा का न्ना म॥ व डो ते जसी ध न व डो स ड णी
स गु न धा म॥ ३४॥ इ क दि न न ग मो ता हि सो भ त भ पा ना मि ला ना॥ रू प व रू प म हा ब ली

दिखलपभयोभयमाना॥८४३॥नपतउचासोमतसो तुमकतउरकेमोह॥हमुरेन्याइसतशीलछ
नितुममतधारेरोह॥८४४॥चैापई॥हमकभनीतकवहूनहीमीने॥मुहिराजेसमसुखीपुनीमे॥
चारवर्णनिजधर्मसंभारे॥परधर्मकोऊनाहिसुचारे॥८४५॥दुंदउपाधमुहिदेसमकऊरे॥ना
हिहोतहमरेसभचारे॥कोकाहूसभमदेनसकावै॥तुममुहिमयदेवोनसुहावै॥८४६॥मतो
वाच॥हेनपजोतुमकहीसुसाता॥सभगुनपरणहोसभज्ञाता॥पयतोहिसमीपमपकसन्या
ई॥होहपापतादेसमहाई॥८४७॥दुखीरहेपरजातादेसा॥दंउविदंउसदापरवेशा॥तुमकिउ
नहतोतकोवलुपाये॥ताहिपापुतुहिसीसमहाये॥८४८॥तापापेतुहिसकतनाशे॥ता
हीतेहमभयपरकाशे॥नपोवाच॥वहिनिजदेसेराजुकरतहे॥ताहिपापुमहिकाहपरत
हे॥८४९॥मुहिराजेनाहितिहवरजाऊ॥देसविरानेकहाकराऊ॥ताहिमैनमोसोजातिभी
भ॥मतयुधपरेमोकोहततुरी॥८५०॥मतोवाच॥जेतुमतासोलरनसकावो॥केरिभात
करहोसुनपावो॥पुनदेसकेदीनहीनजन॥विषदजनपसीयाहशीलघन॥८५१
तिनकोसुखीधरेहोदयाला॥तिनकीलेहुअशीसविशाला॥तिहिअसीसकरनिवल
परावे॥ताहितेजुवउवलुदिघरावे॥८५२॥तिहिपापेफलुहानपरतहै॥पापवुधजेपा
पकरतहै॥सभचारेपरजासुखदेवे॥तिहिफलशत्रुनकोहतलेवे॥तिहफलतापरस
वलपरावे॥पापीकोहतनवहुहरखावे॥८५३॥दोहरा॥मतरसवनमुनहरखनपत्योहीकी
नसकुराइ॥वहुसुखदीनेपुजाकोदुखीनकोउरिहाइ॥८५४॥हरखकरसीसादेहसभव
धेतेजुवलुताह॥स्त्रिवलपरेसभशत्रुनितिहिनीतनुल्यधमुन्याह॥८५५॥भीखमउवाच॥चौ
पई॥हेसुतनतुमभीताहसमाने॥कहेरखिविधिदिजहरखाने॥उपजेवलकासुखभोगो॥
सतकेशीलन्याइनपयोगो॥८५६॥धर्मजोवाच॥कोतपतेदिजसरपुरजाये॥भोडेभारभे
गसुखपाये॥८५७॥भीखमउवाच॥मधुतिलखुरमनदरस्रमासोकेचनकेदेवेपायेभासे

नी वस्तु केवे च न हारे॥ जिस के जावे नरक मझारे॥८५॥ लेन देन मे छल कर शपथ खाई॥ याते पापु बड़ो होग
सिर ताई॥ झूठ मन न होई बिवहार उठावे॥ केते विकर्म कीवर तन न पावे॥८५॥ जिहि बिवहार ते पापु न लागे
सो बिवहार दिजन धरे सुभागे॥८६॥ दोहरा॥ धर्म करत तन पहि सदा धर्म तुल्य न कछु नाहि॥ शत्रु हतन
उद्यम सुधरे पुन जिहि यस बुगत हाहि॥८७॥ चौपई॥ बुध कार्य पर विल्म न कीजे॥ जिहि हां जिहि
सामि घरि जन कीलीजे॥ दि जावे दूर रहे सुर हर खाही॥ होइ हर्ष सामि प्रगट हाही॥८८॥ याको
सुरकी ता सिव भई॥ सकल पीर ताकी मिट गई॥ बुध कार्य पर ये हो वे रतना॥ सर पुर मो भोगे
बहु सुख सतना॥८९॥ जिहि हां धोई हि न्या उपजे वे॥ ते बहु घोर नरक को जावे॥ यद्यपि धत्री
कुल बड़ भए॥ पर उपकार हीन दुख रूप॥९०॥ ते नर ज्यों मल ताहो जल लहि न॥ ते नर
ज्यों तरवर हो निर फल॥ ते नर ज्यों वर्षा बिन बादर॥ ते नर ज्यों शर पुत रीस मसर॥९१॥
ते नर दुग्ध हीन ज्यों गाये॥ नर सो पर दुख दिष न सकाये॥ उपकार हीन नर जन्म व्रि
था सत माइ ही हर जन गनि द पर लोक अधोगत॥९२॥ सम को ता की मित कोन्चा हि॥ याते
को कार्य न सिधा ये॥ ता ते वे श्य ताम्र दर होई॥ जिहि ते हर्ष बुजन सुख सोई॥ उन ते या की
गत सुनि भाषी॥ सद्म साला सदु हूला ... सारी॥९३॥ दोहरा॥ जात पात कुल पर न सधु
के शुभ कर्म कमाइ॥ सद्म साला सदु हूला ... मो ते बहु सुख दिष राइ॥९४॥ चौ रपा पदि ष
किस केम्र धि रदे उमन तदेइ॥ दीन हीन जन की सदा बहु हित सो सुध लेइ॥ चौपई॥ दे
न पदा हूसा सन ते रो॥ सापुन र बचन र हेन हि मेरो॥ धर्म ताजन न परहेर पाला॥
धा पीरि घन तिरदे उचि शाला॥९५॥ पंच पुर बन पदे शुभ बचन॥ तन मसो चे मुख हेड
न रे बड़ा॥ पुथमे जीवन नित न पढ़े॥ लाभ हा ना न पही सो ता हो॥९६॥ कुरेन
प सो ज्ञान पारे॥ नर प भस्म ... ति ते चित मारे॥ दुमर जो नर सो धनु पावे॥ नर परे हर्ष स
ममन भावे॥९७॥ जी सर चा लप ला ले ये जन॥ नर मोहि तर गोवि निम तमन॥ सम सुभ

इन्पवेखेपरचाने॥सद्द संगत न्पवेखे हित माने॥८७५॥पिन पिता मये न्पवे संगा॥मलीतुरी मो
रहे अंगा॥चौथे न्पयावे सरलेही॥उनकेमे त्रनीकरे स्नेही॥८७६॥देस प्रजा के सु
ख उपजाइए॥अरसमेर रहे संगमहाइए॥पंचमयो जीयलो मनराखे॥सतके वचन न्पसे
भाखे॥८७७॥पुनकर धर्म कहे नवाता॥जिसदिन न्पकी चहे कुशलाता॥न्पकी वश पड़न
की सुधलेवे॥दुख सुख मइ न्परहो न न देवे॥८७८॥जिन परमदा रहे न्पदया ला॥जोहोवे
न्पबुद्धि विशाला॥इस मन होइ न्पही को हितकरा॥कहे वे नपर जाको हित धरा॥८७९॥
न्पके प्रजाकी ज्योंकी त्यों सभ॥कहे मपसो प्रजा सकल त ग॥ये न्पके हितही की बानी॥सरे प्र
जाकी हानमहानी॥८८०॥ईहि मो प्रजा दुखी इस निहोई॥वे नान्याइ समझ सुख होई॥अथ
वा परजा ही के हित गया॥कहे मपसो सार चरू व मया॥८८१॥ईहि मो न्पके राज विसारे॥
वने सुखों की सो प्रगटा रे॥यों की सुखके भाखन हारे॥तिन सो मपरहे हरखारे॥८८२॥तिनकी
हीहे तसो समुझे॥जीकी विचारे तिन के गुने॥कूरलजनो जे परजहीं पर जाये गतज जाइ सभ
बहु कालमि नतीन डीहै रहि तास समाइ॥८८३॥चौपई॥जीवजनो को देस नदे वे॥सुभ ज
नके संसो पेसु सुखले वे॥जीव जन प्रजाको दुख उपजावे॥न्पमं डुर घोर धनुकहावे॥८८४॥
सुभ जन देस न समाइले रधनु॥मपमं डार मेरे हही त मन॥न्पक व हूनहीं का लवि सारे॥
धनजो वन परतई न धारे॥८८५॥सदा परलो कसम अरत रहे॥जुगर चन दिस मल न
वहे॥ये दिन हरि सिमरन नकी ताई॥न्याइ नीत सो ये परजाई॥८८६॥ते कुनी हजा ने मन
माही॥कैसो रस भादिन चित ये दिस हही॥मरे उजन जगर चनदिस ये॥ललचा वे कह ज्ञान म
मा ये॥८८७॥न्पहि लये सभ मुरथ पुन तज जाना॥मधु नलि वहे संगम हाना॥ये के चन्न क
सो रीला ये॥ये रास रापरी धापाये॥८८८॥ये न्पु मलीतु री निज दे ये॥करत रहे यस
माहि विशेष॥जग रचन पा सो उर रूते॥मर ण समे सभु हीत ज जा वे॥ये त जने ता सो कि
पाहेता॥सभ विधधरे इं शत्रि तन चे ता॥८८९॥दोहरा॥न्पहि त जोर णम न मो प्रा ण करे

नपार॥ तिन पर सदा दयाल है॥ उपजावे सुख भार॥ ८५॥ चौ॰ हित प्रगट दिखावही कपट ध
रे मन माह॥ तिनके जो हरि सा हूं धरमत कछु कपट धरा है॥ ८६॥ चौपई॥ ऐव डबुध
व कुकार यव उगन॥ चतुविद्या चतु चतुर तमन॥ ते जन नृप की सभा सहावें॥ भारीमा
न मन पसो पावे॥ ८७॥ तिनके मन तरसे न रहे सद॥ निहचे चउ सुख उपजत है तद॥ ज्यों
मात पिता पर सुत मरोसा॥ त्यों नृप को सभ सुख है को सा॥ ८८॥ ऐसे गीत्र सपरई रखध
रहा॥ करे न निदत तो पसो नृप वर हो॥ कहि वा को वा को वहि भाषे॥ नृप दुहू को निज जानि कर
न राखे॥ ८९॥ नृप नेही चहीये बुध मारे॥ रहे सभ पर हर्ष अपारे॥ निज ते बड़ा नृप को
जीय जाने॥ नृप वउ मानीत नाहे ठाने॥ ९०॥ नृप भरोस जि नपर स्वआति भारे॥ सुत
पितु भात ज्यों तिने सभारे॥ उनको उच्चत नृप को हरि ताले॥ जाम तर रहे निज तरि दे असने
ले॥ ९१॥ सदा नृप के मय चित राखे॥ करे सत जो नृप मरख भाखे॥ नृप कृपा जा के मान न
हारे॥ रहम जान सुख धरे अपारे॥ हर्ष भए तिन पर हो दयाल॥ मान न व ठाई ले हरि विशा
ल॥ ९२॥ दोहरा॥ निज कुटंब सो हेत धर नृप देवे सुख भार॥ धान पान अरु रवस्त्र की सुध
लेवे शुभ चार॥ ९३॥ ऐव कुटंब ते करखवच कहे कोई प्रगटाइ॥ नृप नाहि कोपे ताहि पर रह
सहु लास जनाइ॥ ९४॥ चौपई॥ चोरक अघ पुलके न दुखावे॥ बड़ अघ दिय पल दिवल
म मेलावे॥ तिल मूके दे विजारे सभ काजा॥ नृप होइ तारा जस समाजा॥ ९५॥ नृप निज रा
जके रथ कारन॥ स्मा बधा न रहे शत्रु हतावन॥ ऐसे नृप धीरध धरे न रचावे॥ सवल परे
अरको उपजावे॥ ९६॥ दोहरा॥ रजस तो एक से अस्थिति नृप संतोष नासा॥ जनर लाजे
ना गहीनु त्स्वधी नित नृप वकाश॥ ९७॥ चौपई॥ ऐसे नृप के शुभ बाधन हारे॥ राखे नृ
प सो हेत अपारे॥ सेजी ने छीई रथ धारे॥ उमको रुष्ट करे प्रगटारे॥ ९८॥ नृप सुनाइ
के पेन रहे न तिहि नाम॥ जो ए के करे विचार कृपन नमन॥ तिन सो चे कधु हि ते सेन भाषे॥
अस्व मन भास चित न राखे॥ ९९॥ जान न काल पेदउ कटारे॥ ताहि राज में मंगाधरा रो॥ याते

सुनधर्मजइतिहासा॥ कालत्रिषुरीनामइकुवरभासा॥ ॥१४॥ तेहिविधिकहुपिंजरेपाये॥ कौशलन्नप
पथप्रगटयोकह्रायो॥ श्रवनन्नपवरूपयोकागुसौनगुन॥ पिंजरमोरकखोतुमहेमन्ना॥१५॥ हेन्नपइ
द्विषगनन्नसमाने॥ उत्तरप्रतिकरबुद्धिवधाने॥ कहेमपरेषगमनतमले॥ रघुउचरतोमुख
ह्रनकूले॥१६॥ कागोवाच॥ दोहरा॥ न्नपवरेजोकह्रावहीलोभविनाजथुनाह॥ निजकह्र
छैसभसाधहीन्नपकार्यनसमाह॥१७॥ जेजीमेजीसुनसमेरिसकतचितजीयमाह॥
मतइहिषगन्नपतेहमेदूरकरेपथुताह॥१८॥ चौपई॥ सभहीमिलमनमेठगये॥ ह
नेषठेकह्रतिनीकचनाये॥ निसकहेध्यारजाकागहताना॥ कह्रापुनकह्रतिवउशत्रुपथाना
॥१९॥ न्नपपुरिषिदेउकागहतुदेषे॥ पथुतानेमनमाहवशेठे॥ छिपिसन्नकुरवन्नपदोकेर
जोरे॥ करीविनीछिपिसोकह्रतिजोरे॥२०॥ छिपिउवाच॥ न्नाहिदोसनुमरेजेउमपा॥ निज
छिद्रंगमनतयोरकह्रनन्नपा॥ तुहिमितनकेकरीबुराई॥ कह्रवचारेउनमित्रनुदिखाई॥२१॥
यद्यपिसाचवेनउनमाठे॥ पथमनतयोरविचारनराठे॥ न्नाहिलषीइनकेम्विरकहला
रहतमपकेधामविशाला॥२२॥ बुद्धधरततुहिलीनवढाये॥ कहतवचनतवंकेवन्ना
ग्रे॥ न्नपमनहर्षेताहगुनजानत॥ तिहिसुखहोतकोउवेरनठानत॥ हिन्नविचारस
नवकहीवनाई॥ जोकहेताकीइहितनपाई॥२४॥ दोहरा॥ न्नपसोमाषनकठन्नकह्रति
कगमनजानेमीता॥ सुनमपमनतकेइपुनन्नपकीसमाकह्रजीता॥ न्नपमिलापमोस
रवघनेचासजीयकीहाना॥ सदाहेतुधारतरहेछिनकुपहतेमथाना॥२५॥ चौपई॥ स्वम
नेकठनमपकीसेवा॥ उरपतरहेजुजानकह्रमेवा॥ न्नपसेवाविपुछांउमगाई॥ धातमधु
रपुनहानकराई॥२६॥ तीनचासबुधजननवउमाठे॥ डाजनेहेरतीसरन्नपुलाठे॥ डा
जनेदूररहेहाथसहेसा॥ डाजनेतेसतगनमथसिहकह्रशंसा॥२७॥ केररसतगनन्नप
नेमघघर॥ भमंभेदुघामोरथुनहिकर॥ जोकह्रवशपकैसेवन्नकह्रावै॥ प्राप्तन्नपकेजाइ
रहोवै॥२८॥ हतनचितकरेमपकीसेवा॥ मतनरथडारवेन्नाहिकह्रमेवा॥ न्नपकह्रीतिमसषु

१६३ मनदधिराही॥हितङ्गेवेधनाहदिबराही॥१३१॥नितनेतनमपतकोजाने॥सेवमरतर
हेवउमयमाने॥मतमरोमन्नपहितपरधारे॥होइकोपरहेहेतन्पारे॥१३२॥दोहरा॥ज्योंह
रिगतको नहिलखेस्योंनपगतजीयजान॥हरिसमचाहेसोकरे रूपमलालपुगटान॥
ज्योंरसभीकोअंतेहहरिनपकोनहीअंतु॥उरपतरहीयेरेनदिनरहेवडेईहमंत॥१३३॥
रिषिउवाच॥चोपई॥ईहंसौरकालविधीवउजाने॥पुनननरेशसोरतवघाने॥हेन्प
नुमहेवडमभचारी॥पपनुहिभितनचीअनिहारी॥१३४॥ईरघलोभरूपरवहूधरही॥द्
सरकोनिरघतउरवरही॥नुमरीगतकैसेलखपाई॥ज्योदूधमधरसोनदीवहाई॥१३५॥
नाकेतरकेरवअरजारी॥सर्पसिरवाघरमयकारी॥तिनकेमयसोसमुउरपाही॥ना
जलकेकेअकचनमसकाही॥१३६॥इहीअंचेपरेनिजग्यासे॥ज्योरविधातररेहनि
रासे॥तोरमुभइनकेअनचारे॥बिधपरेसमकेहोउचारे॥१३७॥हरघपरसवुत
पनुमारा॥ज्योदरसनिहिसरवुअनपारा॥पपनुहिसभितेवेदुरुकरा॥कोउपद्रुचेतोह
निकरवरा॥१३८॥निजसरवलेहिओरनाहिदेही॥नेवुनईस्वरतेउरपेही॥नपुरेज्यो
नरवरफलपरने॥जउसभउचेहोइदुरवुचूने॥१३९॥नाहिबिएकोईसाहारे॥नुमनिउ
देखानाचोविचारे॥नुहिमजमारतेहेपरपंची॥निजसरवकोपरदुखममवंची॥१४०॥
घसुनीतनपसैनदुष्टे॥निहिअघनप्परेमपतसो॥सेनारेअघनपसोलाडो॥घरे
नेजुघातेकमजाडे॥१४१॥ईस्वरकोपमपदरहाई॥जिहरापैकमसैनासोई॥याते वडे
केरेपरकाजे॥सर्पनिजरतमानसभुभासे॥१४२॥नुरीमलीसमजैपहचाने॥पुनविचा
रोनिजजीयमोडाने॥रकेनधाप्पनदेइरदाही॥भमजनमानधरेपुगराही॥१४३॥चोपई
रेगपावनेवाच॥ईहपुकारवदुवचनसुनाये॥कालविधीरिषिनपसोगाये॥सुनोरघ
नेचनपुरुअतिररघाना॥कालविधीरिषिवइरवघाना॥१४४॥रिषिरोवाच॥दोहरा॥हेर
पकोमलतनुमेपुभुरखियोजतनसुरवहेत॥नाहिकिइनहीकोलीयोकितनधरेचितचेत॥१४५॥

जौंधंर नकी गंध ते सभ मरस्लेह सुगंध॥ सौ हरि नपकी ने जगत दीन उनन्को वंध॥५४॥ मन
मपरई शब्द पाल हो की ये वउ ते जतु मार॥ उच्च तजनु मते सकल जग सुख धरस्हे हरषा॥
६५॥ चौपई॥ तुम इन के ज्ञान ति मान वधाये॥ तुम को अध न डाणत गरवाये॥ अमें ज्ञान मे
इन मे नविचारे॥ विनु विचार नि जकाम विगारे॥५४॥ काक वदीन रच सांच वधाने॥ इ
ननि ज्ञार सम रूप इहताने॥ ज्ञव इन पर भी दोस करो मता॥ इन के ते ज भार हे जग मता॥
मतनु मपर उत पात उठावै॥ तोहरा जु ज्ञोरे व सपावै॥ पुद्य मे करत व सुग मव नाव ता॥ ज्ञ
वधीये सो नी कदि घाव ता॥५४॥ ज्ञव इन सो हठी हैतु पुगटाने॥ गवत रहे पर ज्ञार जीय
ज्ञाने॥ शिदिमो गप्र उपाव धरावो॥ घाते स्वस्त होइ सुस हावो॥५४॥ इन को सर्पसमा
नविचारे॥ मंत्र करमर हो शिदे मजारे॥ निन सोइ कुइ बुदं उधरीजे॥ इन वारे सभ परन क
रीजे॥ इन की ठोर ज्ञोर प्रभ चारे॥ वे ठावे तवल हो सुख भारे॥ इन सो नहि सुधरे कोउ
काज॥ मंगपरे सभ राज समाज॥५५॥ दोहरा॥ नपीरि दिमे दुन भाई करो जु जग प्रगटाइ
घाते जग सुखु पावही ते उधरे हितु पाइ॥५५॥ ये मत मूपत धरत है ता सम को सो रे नहि॥
समकी मत निज स्वारथ जप मत सम सुखु पाइ॥५५॥ चौपई॥ अपन को ज्ञाल सनन व
ज्ञावै मर है सुचेत सभ ते सुधपावै॥ विनु उद्यम विगारे काज सभ॥ दंउ चिदं उपरे पर जातव
शिष के वै नसुनन जप मन नमाने॥ निज जीय के सुखदाई जाने॥ होइ हठी मुरख ने प्रगटाये॥
हैशिष रहो मोहि निकराये॥ देत रहो मुहि सिष सुचारे॥ घाते प्रजा रहे सुखु भारे॥ मे को अ
मसुख उपजावै मनु मरे वउ उपकार जनावै॥५५॥ रिष रो वाच॥ उचत रमे सन नन पुवित
हारे॥ जगत रख न पर द्रिष्ट न धारे॥ सांच वचन रसम करे प्रकाशा॥ नमरे निकस्नाहि मु
हिवासा॥५५॥ नपके सुख मम रिदे वसाने॥ नेक सब के से तजो सजाने॥ तुहि पितु सो से
हेतर मारे॥ याने करही तो सो प्रगटारे॥५५॥ लषवात नकी एको वाता॥ जेजी नेहि दुष

हक्षातां॥ कवरहे तुं तांमो पुगरहै॥ निजसुखदी कीबांधाधरहै॥४५॥ सकातुइनको
तजेमस्जानें॥ वहुश चुहैमीत नजानें॥ हमदिजीविसेरह्यो नहीचाहै॥ पथतुहिसु
खनमिन्नपुगटाहै॥४६॥ निजमनचैहै इनतेरहोदूरे॥ हमवडुतपुधरहैसुखमरे॥
विदाहोईरथिवनेसिधायो॥ नृपकौशलमन नजानेवसायो॥४७॥ जिमदिनइही
मंत्रचितधारे॥ जिहतेइनकी जइपुरजारे॥ इनकीठोरझौर शुभमनतज्ञातिमथापो
इकुइवादूरकरेस्वत॥४८॥ सुरपतिसमानराजुउनकीने॥ बहुविधपरजाकोसुखु
दीने॥ शुभमतचतुरगुनीमन तस्याने॥ सभातांहसुरसभासमाने॥ सभमधोतेतेज
तांहआति॥ न्याइनीतवरतनजगसुखसत॥४९॥ उगवंशपायनोवाच॥ दोहरा॥ ध
मेंजसुनश्रुतिहर्षहुइमखतेरोरउचार॥ कहोतातयेन्याइपरथापेनवशुभचार॥
नीतन्याइसो थोतिसेज्ञोवुधविद्याभार॥ स्वतवादीसतशीलयुतधर्मअधर्मविचा
न्या र॥५०॥ चौपई॥ होइ जेपजिननीकेसीहे॥ कुटसांचकीसेहपछीहे॥ धीर्यतुष्मद
रमस्वानी॥ लोभहीनानिरवैरविज्ञानी॥५१॥ न्याइकरतकाहरनहीहोइ॥ सम
परविषदुष्टनहिसोइ॥ हीसक्षोन्नपतेवडुभयराखे॥ औरकिसीकीकाननचाखे॥
लोभीकुरलकपटकीसारवा॥ नहिमनेयेन्याइकअमलाषा॥ शुभजननतेसुनपुनवी
चारे॥ नीकसोधकेन्याइउचारे॥५२॥ ततथिनदेउकिसेमतदेवे॥ जवलोनीकेसो
धनलेवे॥ वहुवान्चालननहोइसुधिदकजाति॥ तेजनन्याइयोजानेसत॥५३॥ पु
नीकोभीइहीगुनसोहे॥ कपरकूरधरविसेनमोहे॥ कामक्रोधलोभनिरवोरे॥ परदु
खतनतरहे शुभचारे॥५४॥ देवेदानजोदयाकरराखे॥ नीकभांतसतवरतनसाखे॥
दिनप्रतिथीकेवडुभाई॥ निजतेअधिकसभारदेवसाई॥५५॥ सदुतिहूकीसेवाधा
रे॥ दिजथीकोवशउचारे॥५६॥ दोहरा॥ नपपुरपवरीयाचतुरसुद्धिदगनीज्ञाति

भार॥ राजनं दपरवे गये पुरखु पुरख धनन हार॥१०३॥ समझे भाव रूप भाव को जानन हार सु जान॥ तो धन
दो लेखि सीसो दुख न रोवे हान॥१०४॥ इन धी की गत मपवो वे है जाइ तनतका॥ नहन लल इस सपव
रीयाशो भेन्नपवे वार॥१०५॥ चौपई॥ सम वेसन की सुध न्नप रापे॥ ज्यो विवहार धरनसु धुनावे॥
निसदिन पछे सभ की वात॥ चिन चाहे सभ की कुशलात॥१०६॥ दंउ विदंउ होन नहीं पावे॥
रपनिंदा याते नहीं आवे॥ न्नप से नाते जो अनचारी॥ काहू को दुख दे गरवारी॥१०७॥
ताहि दूर कर और पठावे॥ तापर दंडु धरे न तजावे॥ तिहि दिव और सभी डर पाही॥ रहे
सुभ चार न्नारसी दुखदाई॥१०८॥ धर्मजोवाच॥ न्नप भंडार धन्ना किह करह इकठावे॥ ऐसे धर
चे चित सुखु पावे॥ भीष्म उवाच॥ हे धर्मज धन करह इकठाना॥ त्रैविध ताको रिदे महाना॥
पृथम दानु याते परलोका॥ सुधा स्नेह सुरपुर सुख भोगा॥१०९॥ दूसर ये रक्षु भीरव
रावे॥ भीर समे धनु कार्य आवे॥ तीसर कुटंब पालन के हित॥ रहे सुखी याते सभ ही मित
ईहि तीनो अर्थ जगत सुखदाई॥ जिह निमित्र धन इकठ कराई॥ पयसु नीत धर्म ये द
मढईये॥ ताहि हिय दंउ विदो से लइये॥११०॥ ये ज्ञ दोसमो दे उलेहू धन॥ ते धनु गान
काके समान गन॥ ऐसे धन सुनत सुनीत सो आवे॥ पुन सुभ कार्य परघर चावे॥१११॥
मतविकार परघर चेमरदा॥ याते जग अपयसु अतिरुद्दा॥ दुबध असुनीत असुनीते जाई॥
विरहचे जानेो भपमहाई॥११२॥ ऐसे सुनीत सो आवे हाथा॥ ते विन सुभ नहीं जाइ इस
कापा॥ हे धर्मज हम निहचे जाने॥ न्नप धन संचन चाहन ठाने॥११३॥ जगदीम्ह
रहो दयांल भपवर॥ सभ मानुष ते अधिक कीये वर॥ निज पर हूर षो रिस हूचि तारे॥ ह
रिहीउन की सुधि हित धारे॥११४॥ सभम जगका धन अपुना जाने॥ सभमनर अपन
सुतो सम न माने॥ सभ की पुनि पालन हित राखे॥ अन्याइ करनी न नाहक भलाये॥
११५॥ सभ की अनसिखले नरहौवे॥ सभ को रखावे मन न भावे॥ असे सेन्नपवे गम्रमधी

१६५ नै॥ होइ दीन पुनि गर्वं नहीं नै॥५८६॥ दोहरा॥ ये धन संचै सुनों हित त्रियादि षावै तेहिं॥ दो वि
ध धानें ज्ञान हो सांची गाथ सुनो नेहि॥५८४॥ ये सुत होइ सपूत वर निज धन लै तउ पाइ
पितु धन सो त्रिया कामु निहि पितनें म्रधिन सुहाइ॥५८५॥ ये कपूत होम तुसत न नीच व
के पुग होइ॥ मद जु वा पर त्रीया सो पितु धन देइ गवाइ॥५८६॥ दो॰ उस मन उतम तसंची
ये संचत कष्ट अति भार॥ निर्हचे व रजीय ज्ञान न पदे षोनी अविचार॥५८७॥ चौपई॥
सम काजे धन दे तरहा वो॥ पर काजे दो तो ष सुहावो॥ को नर किसी के होइ अधीनें॥ प्रभु
भाग सुख धरे पुछीनें॥५८८॥ चौर चुगल दुष्ट अपवर्हें मी॥ ठग वटपार कपट केम मी॥
कैसे ज्ञान दे दे सानि कारे॥ करनस का वे को उ विकारे॥ तव नि भे पर हेस भु पर ज्ञात हु
सहन सके करके उत मरो रहि॥ तुमरी सुत हे तचित नचारे॥ निसदिन रहे तेस उप
मारे॥५८९॥ कैसा न फल रहे सी पर ज्ञा॥ पावे सुख दो उहर्ष के पर ज्ञा॥ पुन ये तरप
ल सम ण वट ध्याये॥ पर जे प्रंप थी जिह सुख पाये॥५९०॥ पल तें भष धाइ उह्मी निवारे॥
होइ सुख केहानंद निहारे॥ चार पुरषन हि सुअंद षावें॥ प्रथम कटे तरवर ते गावे॥
५९१॥ दुसर ये जीवे ह तन करहि॥ भागीपा पुधरे नवि चरहि॥ त्रितीय धर्म कम पुनि जो सा
जे॥ पर धन मो शोच तन मन राजे॥५९२॥ चौथा ये करे हूत पुपेषे॥ वर जावे वठु अंध व
षेष॥ ईह चारो म तन न रक परा ही॥ रचक भर सुख न हिं दिषराही॥ सके तु ईस तु कापु
निनाये॥ उर तें रहे मन ज्ञान वसाये॥६००॥ दोहरा॥ नपष राज सभी पये वसे कं रहे राज
सवधान रहे नितो सो मन विगार ही काज॥६०१॥ सब कल होइ तुरि पुजा को दुख दे सुरक राइ
निनते भसर्वधान न हो व सुधि नर्हिर हिमराइ॥६०२॥ चौपई॥ ये जन नमरे दे सव सा
षे॥ निन्ही के र धधरे सुख पावे॥ मत दुख धरद सुर न्पसंत॥ जाई मिले हैम पक अंगा॥६०
३॥ पुन ये जन दुहूं म पन कारे॥ सपर धा तुरे नपर उचारे॥ इति रे उत उनरे इत न चन॥

मेरेउचारेअपरमपरकीरचना॥१०४॥ ऐसे मे जनको देहि चिन्हारे॥ निहचल पदको गहो हे तत्त्व पारे॥
दुहून को मोहि तुउपजे जगमा॥ दुहूके सार्थ सुधार परे तन॥१०५॥ उतपति अंत इनि मे वतज्ञावे
खिवहारी जनवउ सुखपावे॥ दुहूके देश सरमिहार हावे॥ रहेसमभुसुखीनदुखउपजावे॥
१०६॥ समतेन पुनिन जीय रधारि ति॥ करत रहे त्याग सारे भ्रमन त॥ दिदा अभिमानी काम गन
ऊरही॥ समसोहर घतवेन उचरहो॥१०७॥ हेतु वैर दिष दिष न पुधा॥ इक समान सम
सो नविचारे॥ हर्ष प्रतीत धरे न पुज्ञानी॥ परघहो इज्ञ प्रतीत महानी॥१०८॥ याको
ज्ञापुना अरजीय जाने॥ ताको हने विस्मन हीजाने॥ विस्मु की ये मन तवहि वलपाये
सनकु देवइ सको हत जाये॥ याको मिरम नारे रापधाने॥ तासो हठ हेत वदुमाने॥१०९॥
दोहरा॥ वलही ने दिघ शत्रु को दया नारि देव साइ॥ मनत वलघु ताकि सी दिन दुखदोष
उपाइ॥ येकु लतेको उते अनुहि रिठन सके रिसले इ॥ ग्रन्थ रशाओरि देन पद हतु चारे
१११॥ नुमसधधरताकोरतो हमनतनारिखसलसाइ॥ ऐसे चैरीकेरतेदोषनरम्भुघ
राइ॥११२॥ ये न हते कुलहानदिघगहिराछेवेदशाल॥ दुहूते इन ये नाचरे लधीयेम
हविशाल॥११३॥ चौपई॥ बुधजनो वलधावे वलभारी॥ वैर क्रोध ते हीन दिखारी॥ ता
परदयालरहेन पद हठ तो॥ मान वडाई ताह धरे सत॥११४॥ विचरा रीयेन गरतु मारे॥
राधेसुखीना हरहर धारे॥ जो धेतीहावे विरसान॥ निनकी सुध राखो हितमाना॥११५॥
सोहरमंडारमरेसखधारे॥ ऐसे न पघसले हज्ञ पारे॥ हो इसुखी वदु छेतीवो वे॥ मप
तको वडधनुघगरोवे॥११६॥ पापक्षा करमे जुवा मरचोरी॥ या दिदेस न पके क्षघ हो
री॥ पिरस नहि तितेन पज्ञादेवे॥ निहफल जाइ पितरन हीलेवे॥१०॥ पिरदेवता दानुन ले
हित॥ याते ओरपा पुन्निया हेमित॥ शोभन गारकी भी घरजावे॥ नपरेते नक्ष रयायघ
हावे॥ सतविवहारसो शीलमपजित॥ इशतानी हिके रधक रे हितामन तविवहार स्त्रैतन्या
इवि हीने॥ पुजा शापते तिरस्भमु लीने॥ ऐसे नपकारा जुधरावे॥ दिनादिन तेजता

१६६ हिका जोति ॥१०२१॥ हृल्लान वलीति हदेसमें ऊरे ॥ परी रहै सभ कोप्य मनु भोरे ॥ दिष्टि रिष पंडु
नोदि जनु रस्ताता ॥ तिन कोहे तु धरे ज्ञाति ऊता ॥ यद्यपि नृप सभ हीने ऊचे ॥ पंच रिषि दि
ऊतुन ने भीम रचे ॥ इन कीज्ञा सिष्ट देसु वसाते ॥ याके फल भए तस्मु रवपाते ॥ इन हीं केश
वलन्नप वश ॥ वसे भमन तलभाती म्ब्र मुधरा ॥१०२२॥ दोहरा ॥ वलानि ज वल कीने तेजु दिष्ट
वेकर तज्ञातिभार ॥ दि जोरि षिसो हासी करे धारे वद्धे ऊन चार ॥१०२१॥ भुज वल तें सेध
र तहैं डिरचो यत्न परमान ॥ उच्च कल्क्यो तुरहीमा नोऊं रम्य मान ॥१०२२॥ दिसीन
जाने ज्ञपुन सम सभ सोव रै रेस्कार ॥ विरधरा वे सभन्न सो ऊनन्न चारे रहित कार ॥१०२३॥
चौपई ॥ दि जोरि घदुरवदीनो तिह शापा ॥ ऊपुन कर्मफलन तेरू ज्ञमापा ॥ दीन हीन सभु
दैमा ध्यायो ॥ वलने धारे शापु महायो ॥१०२४॥ जाशाप ताते जुमि रायो ॥ ताहरा जसु
रपत जोइमायो ॥ ज्ञवस्तो वलप्या लतितह शापे ॥ रहे ऋमेजि रंगर पुञ्जमापे ॥१०२५॥ वहुर
मान धाता वडु भूपा ॥ यज्ञदान कीषा नञ्जन्न पा ॥ इकदिन रिषिकञ्जु सो पुहम करायो ॥
होरि षिमिष्या धरो महायो ॥१०२६॥ रिषो वाच ॥ तेजु मान वलक ऊपुनो दैबो ॥ ऊरवनकी
जोरि देव शेषो ॥ नृप सो वडु वडु ऊन्न परोयो ॥ हो वजे ऊण मीन नहीं कोयो ॥१०२७॥ दोपु कारमा
नृप नगनाने ॥ इक उत्तम इक ऊधम पधाने ॥ ज्ञधम कर तर हैन्न पकी सेवा ॥ उत्तम
कीन्न पुवसन्न मेवा ॥१०२८॥ सो ते एकादशमिष्यावरा ॥ उच्चरा चो ते सनो म्ब्रवण धरा ॥१०
रशाचोन म्ब्रनु भाली ॥ नि सम सो रहोये दृस्म चारी ॥१०२९॥ प्रथमे याम दज्ञ चरहि उन महो ॥
दृस्मर गुन परगावै रत्रो ॥ धनु येभन्न वल्लु ज्ञपुन ननि हारे ॥ काहू को निजसम मन चिन्चारे ॥
त्रितीय मरहस्यो देनु नन्न करीयो ॥ निन्न केवध्य विसहन धरीयो ॥ चौथे याम करत धेरे ज्ञाति
वाते ॥ उत्तम धोरेका जवहो ॥१०३०॥ पंचम येन तज्ञाल कपा ही ॥ हेतु पुरान नीध्वेग
वाही ॥ हूदा पुत्र पुन भी येवरहो ॥ दिदेन ऋमु भंगदो ऊध रही ॥१०३१॥ ज्यों हूदेता जे
शो तृपराते ॥ ज्यों कात्यों ज हूने नदिनो वे ॥ जे मेग ते इष मो निहरस ॥ त्यों हीं प्रीत सीत

भोरे जस॥१३३॥ पछ त्रीयवहु संगुन की जे॥ तुक ज्ञान जिन के संगा धाजे॥ अस पूरन न पुरुख के
लउ धाना॥ मन ज्ञोवे बहु ज्ञान महाना॥१३४॥ अस सुरभत तहा घने पिराही॥ मिलता को
मतम्रम उपजाही॥ अछ मकार्य बिन महन ज्ञोवै॥ नवही जाइ अब सपव नावे॥१३५॥
वउ मेंदरस अरकोटन माही॥ निकसावन मग अस मऊ गमाही॥ नवमेस धपि धू अस रची
तां॥ सिर हनाग ये ज्ञीयम यमीता॥१३६॥ इन के निअट रहे हट दाने॥ दूरबरो वैरि दि भयमा
ने॥ दस मेया सो हेतु संभारे॥ तासो गर्वे वेनन उचारे॥१३७॥ अस सन करो छिन माहि
तुपाये॥ तिहि श्रम धरो अकाय दिखाये॥ प्रीत रीत जैसी कर जाने॥ राउ रंक दोने सम
माने॥१३८॥ सकको नु हीरि बिन दूसर है ते॥ ना हृ धरो जो निज सुख चेते॥ बिन हरि है
तु सकल दुखदाई॥ मिले सरवी बिधु रेभ मपाई॥१३९॥ एकादस त्रीय जो पति हीने॥
तासो हितु मन धरो पुचीने॥ पुन ये त्रीय के जोग न देखे॥ जदि ते देइ बिसार वशेखे॥१४०॥
तासो हेतु वहु रमन गहीये॥ ये जाही ये बहु ते सम लहीये॥ वच कठोर मन करे दुख अस
नि॥ करे लराई गाध करे सत॥१४१॥ जैसी त्रीय का संगत ज्ञोवे॥ मन तउ न ते संततउ
पज्ञावे॥ उन ते संतत तनी कन ज्ञाने॥ करे दुष्ट वुधी सो माने॥१४२॥ जैसे दूध अस चत
हेवाला॥ तैसे ही गुन धरो विशाला॥ जोन पुका मन वसे अस नारी॥ करे हेतु ना लपनि
हारी॥१४३॥ तैसे ही संतान उपाई॥ जैसे मातका दूध पिवाही॥ राज पाइ अनीत धरे
अनीता॥ पुज्ञा दुरवी रहे पुन चित चीता॥१४४॥ ना ही देस वर्षा होवे नी॥ कपट कूड उज
नामद चोरी॥ दंड विदे उदे स अनीत होवे॥ उलकापात भार पुग टोवे॥१४५॥ याते नृप की
चार धराये॥ अनी कसे तेदूर पराये॥ करो विचार सत संग ग्राहो॥ येम भले जन नचे
नधराये॥१४६॥ दे हरा॥ त्रीय सम ते ऊम मन लहे सम रूप वर ज्ञान॥ जग मो येअछ
अंबुरी बिन नारी नव घाना॥१४७॥ इहि सिख्या नृप निरदेध रजो वरते मन न धारा॥ नरप

१८२ ज्ञानदेष्चारोवरनदेषेसरवनिहपार॥१०४८॥चौपई॥परत्रीयसागसमतेरहेनीका॥कामी
केसभवोलेफीका॥येदिजमतउसरडुनीसंगो॥करेजूर्मदेहिदंउजमंगो॥१०४९॥तिससो
दंडुदीयेभारीफल॥नपकोउपावतहैभुमथल॥यातेनपकेसमझथजाही॥योवस
नरमेलघोयेनरहाही॥१०५०॥येनपताहिदंडनधराही॥सकलदेसताकोविनसा
ही॥ताकेअघनपसीसलषोवे॥येपापीकोनहिदंडभावे॥१०५१॥मातपितातेभीभयभा
री॥नपकेराषेजगजननसारी॥सुतसमाननपुसभेजनजाये॥दंउदेतधरमभगतया
ये॥१०५२॥दोहरा॥धनतेधनीनहोइनरगविनधनरंकनजान॥हरिकोभजेसोईध
नीरंकभजनविनमान॥१०५३॥चौपई॥सतकोशीलदयाकेरूपा॥सतवादीसरना
नऊनपा॥भ्रमकर्मकापुरवीतावे॥परधनपरत्रीयदिषनभुलावे॥१०५४॥घया
शकतवाधुदेतारहे॥तेधनवेतजगतमोरहे॥रंकतेऊजनहरिनपधाने॥दानदया
रदिमाहनभाने॥१०५५॥देसघनेजोधनवहुराषे॥उभीकुटंवमजनविनभाषे॥
तेधरपरतनोषियपुरानी॥तिहिदिषजारवुनधरेज्ञानी॥१०५६॥दीनजनोते
उरतेरहे॥तिनसोगरवमानमतगहे॥नितभुतनपरसवलरहावे॥सोईकरे
कोतुमपुगटावे॥१०५७॥पुसपरवेरधारनसकावे॥तुमतेऊतिभारीभयपावे॥
धनपढनतेरहेजचेते॥घटेतेजभ्रमदेषयेते॥१०५८॥येतुमतेधनपाइसदाही॥पु
नकोभीकरहैअपराही॥ताततकालतिनकोरतुकरहे॥यातेदोषुनाहजीयधरहे॥१०५९॥
येचिरकालतेसेवतुमारी॥करतेरोगदिहेतुमभारी॥तुमधनदेनतेरोरहजवगये॥
तिनधनतेभीरेसुतिभये॥१०६०॥परेभ्रमधसेवतुमारे॥मनताकोकधकेहोपकोरे
अपुनीरिदेमोज्ञानविचारे॥उनकोअस्वासनवडुधारे॥१०६१॥येकोऊशत्रुनरेभय
माने॥करेउरलहेअनेसमाने॥सकोरीगहेसभविधताहा॥लेतरहेतासधनरनार

१·१४॥ सरन परे कौ सरव देवे जे॥ भारी पुंन फल धारत है ते॥१·१५॥ दोहरा॥ गुन जन पंउत इक्को वड्डे रिष
दिज तपीस जाना॥ मान वडाई वड्डे हैं तु उनकी परे महराजना॥१·१६॥ कोप दया भ्रम मुधेन पुंदिष
दिख प्रगर धराइ॥ जो प्रसार न मित्र न दया करे ज्ञाधिक सखु पाइ॥१·१७॥ मीत सरवी ज्ञर दुरवी
हुं पाते सरव सम देसा॥ कहम लाल छो से सन्पक हे समान सरेस॥१·१८॥ चौपई॥ मली
वुसी जग की सभ जाने॥ वैरेन्याइ हरि को भय माने॥ दिषनि जते ज वलको गवै मत॥ सभे
ज्ञधान सम कधु जाने सत॥१·१९॥ वडे वडे भूपत जडामवे॥ निज निज सभे भोग वे गये
भक्त भ्रम धर गये सरपरये॥ वडु सुख भोग भोग ही न्रपते॥१·२०॥ जिन ने ज्ञपदयस
जगत रहाने॥ वं मै ज्ञ प्रभ गो नरकम हाने॥ दुख भ्रम भार धरे पधु ताबे॥ ठाढे विमन
माथे परकौवे॥१·२१॥ लख चौरासी मोन मऊरे॥ मानख जन्म ज्ञमोल उचारे॥ सभ मानु
बने न पउत्रम धरा॥ मत खोवे ज्ञन्याइ कपट करा॥१·२२॥ वार वार ज्ञभ्रस जन्म न पईथे मऊ
निवढु पुंन फलो ते लहीथे॥ जिहि न्रप की सेना भ्रमचारे॥ नितन को शोभ वडु पसु संसा
रे॥१·२३॥ ज्ञवरम पयस ताह सनाथे॥ रेउपमता सभ प्रगराथे॥ जवको दूज्ञर तान्न
पपर ज्ञावे॥ जग ज्ञसी सताते जुव धावे॥ सभ शत्रु न परसवत्तर होवे॥ धाते दिजरिष
सेव सुहावे॥ ज्ञर संग्राम मरे सनो उपावा॥ वहो प्रगर हे न्रपसत भावा॥१·२४॥ ज्ञोउ
न्रपतु मपर चवउ ज्ञावे॥ हे सवधान न विलम्ब करनावे॥ तास न्रपुर दजावे वलवीरा॥ न्नी
कसभार सुध से न मुधीरा॥१·२५॥ ज्ञरिन होइ सम धुर रज्ञसिचाने॥ ज्ञाइ परे ज्ञरवउ
वलु ठाने॥ दिन ज्ञसी सते विजे तु मारी॥ ज्ञर को जित हो वो हर्षारी॥१·२६॥ ज्ञनदे दोही
तादेसपि राथे॥ धरे धीर मत षेद धराथे॥ ज्ञरदेसी ते ज्ञाधन पावे॥ जिज सेना को वार
दिवाबे॥१·२७॥ तो हर जको अदुरव ज्ञर भ्रम युत॥ अबध पासन हिरदे हे वरदुत॥ सभ
सो मधुर उचारी वे ना॥ सार वे धरे पर जा ज्ञरसेना॥१·२८॥ सरपत वन निजमस्दारहा

१६८ वे॥ लोभई रचा चितनन वसावे॥ धन जत्रवा हजिसको हितु चाहे॥ सुखु देख पर लोभ उमाहे॥ १
॥८॥ मरहमर जतन नरपानि कराने॥ वेठेरहे सदा हितु ठाने॥ जैसे सैन रूप को सभु जगु चाहे॥
देखत भीत पचितनहर्षे जा माहे॥ १०८॥ सत्रु वचन कटु रहते सा ताने॥ त्रस तत्र मधुर विषु सम कै
रजाने॥ विनाविचारे कछु न कराते॥ जो अचारे स्रम ही दिषरावे॥ १०६॥ मतवादी जन
पढ़हर घरेहे॥ आप मतवादी सो हेतु न धरहे॥ तज कुभसंग गरहे त्र सभ संग जे॥ निरहचे ना
शपावही जत्रन ते॥ १०८॥ जैसे नर वर धन धा या पलु तज॥ केर कजार सो प्रीत गहे सज॥
कुभ संगत ने पलभु भला तैं॥ अधम संग ते दुख कुभ जा तै॥ १०९॥ कुभ मते पस अत्र कुभ मेल
पपस जग॥ निज अविचार देषो नुम सर्व ग॥ याको सेन सुखी पर जासु ख॥ ताके अरका पेगुध
लहे दुख॥ १११॥ दोहरा॥ सैन प जाके दुखते ज्यों विनजउ दुम होइ॥ घारे बल हीसो गिरे तेउ
रूपभी सुखको इ॥ निज वचन ते जो फिरे नृपु तत छिन हानदिषाइ॥ ता मरे सुना को धरे
सावी जा नम हाइ॥ ११२॥ लोभधार जो पु जासो दुले हराधकाइ॥ निरहचे जाने राजपु
नप गआपकु राज लजाइ॥ ११३॥ नर साखा पर वे वेके मल कराते तमहि॥ निरहचे भ नपर
इस भेभेद भर्म कछु नाहि॥ ११४॥ आपु न जसधा उनही परजासे न लुभाइ॥ ताज पकी
की तेज अतुतेज भारउपजाइ॥ ११५॥ चौपई॥ आपु जा को और देष न्रप धारे॥ फिरे तज और मो
रे न जो धारे॥ देखे सुने न डर कीसभ जग्य॥ जैसे कहे वैसे बरते सत॥ ११६॥ यस आपप सु
आपु जानि जनाने॥ सुजतीप रे न्रप ज्ञा न मराने॥ निरहचे कार्य ते पुरुन सीर वैठ त॥ ते काये
मन कर हे भ्रम मत॥ ११७॥ सभ ते कठन राज के काजा॥ दिन निसर है चित मन न साजा॥
रे कनी वसु रवि निद्रु मसो वे॥ धनी रे न दिन निचित विसौवे॥ ११८॥ धनी पुरख को अं
स सह सो॥ रकनधरे शं सकी उपसौ॥ ये विचार देषा मन माहीं॥ धन विहीन नरो दि नौ
॥१२०॥ निसिदिनि ते निवितन च धारे॥ धरनर धीर नवैर तरो॥ धनी रे रन मरण के काल॥

इ रसनन तनेरे प्राण विशाला॥१०५४॥ मरण काल ज्यो स्वर्ग सिंह दास न॥ सोहं ही भुम परांत्र लागे कासन
रहे संतु एजगये मनतधीरे॥ को उचार न ही गहे गंभीरे॥१०५५॥ ये धनपाइ नी कछु अति जाने भउप
धनी पुरुष को लष जे जाला॥ निरधन को कछु नाहि उचाला॥१०५६॥ धनते ऊनी कर ये सभ ते होई
याते सुजन सुधरे सभ कोई॥ पापु कीये यो धनु उपजावे॥ निरचे तेसु रखु नाहि दिखावै॥१०५८॥ नाह
ऊनि सदिन विषये सेवत॥ हरि विसारउ नम नर रहे निंत॥ बुधजन संपद रूपदा माही॥ रहे स
मदरष शोक नदिषाही॥१०५९॥ धन रहे ते वरसे कसमारे॥ दयादान उपकार विचारे॥१०६०॥
दोहरा॥ सुख मो सभ भुपारे हरष दुखदि षहरष न कोइ॥ दुखसुख ही मोह छचित न को विरला जन
होइ॥१०६१॥ परधनु छोवरने नदिष जो जन कौ ईरषपाइ॥ ते जनु हरि का शत्रु है हरि के कोप
दिषाइ॥१०६२॥ चौपई॥ निज प्राप्रपर हरष रहे ये॥ हरि के मीत जान जन जगते॥ जपतप धरह
रको हरषावे॥ हरि के हरषे बहु सुख पावै॥१०६३॥ सहे जनन ते दुखी दिषावे॥ इरष धर चित रहे दु
खावै॥ बुधजन निज ते दुखी दुखाये॥ करे इशको उपम महाये॥१०६४॥ जिन देख निज ते जन
दुखी॥ निरचे रहे चित न न ज सुखी॥ निज ते दुखी दिखावन हारे॥ निरते रहे दुखी रूपारे॥ इर
खते चितता उपजावे॥ ऊजगिन रूपहा ना रिजगावे॥१०६५॥ दोहरा॥ चिषाचितदो ऊ सम कहे दोउ चि
ता अधिकाइ॥ मिरतक ही जारे चिषा जीव तचिंत जराइ॥१०६६॥ परधनादि ठ कियाइ रषा सके त
वर न पुदेष॥ इरष धर तपको लगो भोगो भोगविशेष॥१०६७॥ चौपई॥ इकु कैसे जो कु रवे तेज ध
नु॥ त्याग होइ तपुलीन जाइ वन॥ सवि न चार न हिरदे आने॥ जठर चजाते मठा मरा ने॥ १
०॥ इरमाया सभ रो भरमावे॥ नवरे कका हून तजावे॥ ये तजभाग भोजन दाने॥ कइम लाल
ने ऊउ त्रम माने॥१०६८॥ चर मो दुख शुभ जानम लाई॥ दिव्य दुख दुख मान त जाई॥ निरचे जा
न ये नी की होवता॥ जानी भीता सो चित पावता॥१०६९॥ करतने होत स्वाजुन हीक रते॥ इश सम मान
नार चित धरते॥ हरि बिन कोर सभी मिथ्या ल[illegible]॥ मिथ्या तज हरि भज नसंसार हु॥१०७०॥ करु
दे भजो जगपती क्या वे॥ निरचे एम कहे द्रुम रहे है॥ ये करी ये उद्यम कीये ने धनी॥ बिन पाप स

मयतनत्रिय गन॥११२॥ताते काहे कपट न धरही॥पराइ मधन पुनी नित वरही॥जो सुखवन
मो वसे कछु संको॥तरफल सरत जलु अन्वे अभंको॥११३॥ते धन मो सुख सपन पाये॥धनमो
दुख अनेक उदि जाये॥तपसी नहिं निद्रा सुख सोई॥न पुनि सदिन चित मठ कन पोई॥११४॥
धनमो उद्यम यतन महाने॥तप मो को सासन न दिषाने॥निज विचार देषा मन माही॥ध
न तप मो को नी अदिषा ही॥११५॥सभे भोग धन होइ विनाशे॥ईश हेत तप सदा विलासे॥
माया हेतु अधिक दुख देहे॥ईश हेत वहु सुख उपजे है॥११६॥सको तु हरि को हितु नहीं त्यागो॥
मन वच क्रम हरि सों हित लागो॥ज्यों ज्यों नर माया उपजावे॥त्यों त्यों तिह मा अधिक वधावे॥११७
जिन साझी ते उवहु भागी॥नरचना तज हरि लिव लागी॥कंद मूल फल पत्र अहारे॥सब
तवि चारे जगहूर घारे॥११८॥जिन के चित माया हरि अटके॥दरदर लोभे भरमे है भटके॥नि
सदिन हाथ जोर रहे ठाढे॥परन आज्ञा मोरे हीं चत गाढे॥११९॥दोहरा॥सखु नमि त्रया के लिखी
ता को दुख न पराइ॥दुख काल्हे पुत्रे भाल जिह के से सुख दिपराइ॥१२०॥उद्यम यतन पर
नाह कछु कर्म रेष परमान॥दुख सुख दे नो कर्म वस त्रिया रहे चिंता न॥१२१॥हे धर्म जइ
दिवचन चर चित धार तेहे जोइ॥जो कछ न देखस्व त्रमो सदा ह रहे सोइ॥१२२॥चौपई॥कछव
रसु नो तपते फल भारी॥सुजामे स्वर्ग जाइ सुभचारी॥मातपिता की सेवा करे जिन॥उनके
ग्रेह सुख रहत चित॥१२३॥मातापिता हरि सजाये याते॥सभी कर्त्त पूर्ण भये ताते॥याते
पितर हर्ष नर हाये॥ते नर घोर नरक दुख पाये॥१२४॥याते मातपिता सुर सेवा॥करत नरे जिह
जा कछु भेवा॥इन के रे जन न हार सराई॥वहु सुख धरे दुह पुर माही॥१२५॥इन से व वहुत पु
ने भारी॥उत्तम ते उत्तम पुरारी॥दुहूँ लोक न उपसु उपजावे॥रिंच कसम भी दुख न दिषा
वे॥१२६॥याके जग शीतल मुंडों जन॥इनेक घावे हिते मदत मन॥के प्राणा धारे हेतु
मा के॥ताल सको पार देन हिंमाके॥१२७॥इन की आशिष वसा पुरवधावें॥जग में भाग
सौभाग पावें॥तिरस्कार जु पुने रिदे विचारे॥मातपिता ही जग दुख सरे॥१२८॥मातपितं नोये

जन्म धरयो॥ हरि का मग गुरु ते सिष रायो॥ ये इन की सेवा न अराधे॥ मन उन रस केमन को साधे॥
चार पाप भारी जग कहीये॥ बुधजन ते चारे नहीं गहीये॥ प्रथमे वैर दुहू के माही॥ ते दूजी चोरे
रूप रा ही॥११२॥ विविश्वित ये गुन का हू के॥ नहि जाने उपकार ता हू के॥ तीसर वडयो कीस
धन मानै॥ वेद वाक हरि देन ही जानै॥११२॥ चौथे हंकारी गुरु दोषी॥ सदा रहे चित न चित मे सो
षी॥ इहि चारो सुख कहू न देषे॥ परे नरक अति घोर विशेषे॥११३॥ दोहरा॥ दो प्रकार के नर
जगत इक सत दृतीक असत॥ सत ते सुख संपद सदा असत ते दुख दुमंत॥११३॥ असत नमस्का
न कोतव नहीं झूठ समान न पाप॥ झूठ कहे जे होइ सुख तो ऊन नी का पाप॥११३॥ चौप
ई॥ सत ते जो को उ हान दिषाये॥ तो भी सत को नाहित जाये॥ झूठ न कति हू कोउ चारे॥ याते
वडु सुख जग प्रगटारे॥ पयसत कहे को उहत परही॥ तहां असत्य न वश प्रगटर ही॥ झूठ
मायता जी व न्चावे॥ सत ते भी वडु फल उपजावे॥११३॥ इहां न जउ अर्थ ये झूठ उचारे॥ भारी
पाप कपाप पर धारे॥ असत्य वादी वहु अपयश पावे॥ हरि का भरसा चुदि षरावे॥११५॥ सत
कीसा षम रे ये या ने॥ विन पूछे ते भी न वषाने॥ ज्यों की त्यों क हे कछु न छपाई॥ जानत ना ह
कहे न घटाई॥११५॥ सत्य वचन हरि को अति प्यारे॥ सत पर सुपाधरै निरधारे॥ ताते सम
कोय सत्य सुहावे॥ सत मारग तर हे झूठत जावे॥११५॥ औरं कर्म सम भयो संसारे॥ भिंन भिंन कहे
नि जत कर्म निचारे॥ सत ये करे तिसे जो वनहीं॥ वर्ने धर्म सुषु भेद नगन हीं॥११६॥ सत वा
दहै सु र गभारे॥ उपमता इसम करे उचारे॥ झूठ पाप कफ फल पछाने॥ पुन नी जम सत है जीय
जानो॥११६॥ झूठे की को उ करे न आसा॥ झूठे के जप तप तुछि या प्रकाशा॥११६॥ धर्म जो वा
वा॥ झूठे की संगत को उ व रहे॥ जिन भी झूठ सदा मुख कहे है॥ संत संग उन को वहू न लीने॥
जिन की जाप करे प्रगट प्रवीने॥११७॥ भीष्मोवाच॥ ये को जन अपकर्म कमावे॥ जिह
भिचार मन न लजा पावे॥ पुन न करे या ते पछुतावे॥ अभ कर्म धावत हरषावे॥११८॥ दान व

१२०

थास तक सबके रहित ॥ सब बद उपर नाह धरे चित ॥ वेद बडे यो केके हे चलो ॥ जु भव रते को उअघन
लगो ॥११४५॥ नर कुन देहे सुर पुर भोग ॥ पर रही सभी इलो गत यो ॥ पुजा पाल सभी इली गत ले वे ॥
पुजा रख यो रहित धरम से वे ॥११४६॥ पर उपकारी जै प्रेमी जन ॥ पच ठौ मा हभो गत है सुख घन ॥ सुभ
मे सो ते इहि फल सुपावे ॥ लो वे पसु पर लो क सुख वो वे ॥११४७॥ दोहरा ॥ हरि ते भय पये धारही नित
ते भय जग ताइ सम भप रदुधारि देधरे चित चेत हुँ सुख पाइ ॥११४८॥ नित सेवन हरि को भजन
मोर है सबि धन्न सुचा ॥ ते जन ल मिल रही ईश से र हम ला लग जन भार ॥११४९॥ धर्म जो वाच
चौपई ॥ दीन लसो ज्यौं बरते भप ॥ के हो पुगट हे ता कअन रप ॥ भीष्म उवाच ॥ सुन धर्म जया
ते ईत हाम ॥ साठ रुचे वचन दीयो सपया ॥११५०॥ तुम रे तट यें त्रि छ दिघाये ॥ तिउ उपरत
हो तुम बल सुपाये ॥ हम ते जीत बड़ा बड़ाये ॥ य घ का हूं ले दुख न दिघायो ॥११५१॥ साजर के ईह
ले न सुनाये ॥ बोली ठंगा ते जम रहाये ॥ ठंगा उवाच ॥ यत रवर मुझ हत ते रहाइ ॥ ऊच होइ मान
ग रवाई ॥११५२॥ दीन हो इसी सन नि बो वे ॥ हुकारे उन मन फुलावे ॥ ता ते हम रो तो पठ ने प
र ॥ उपरा वा उन को वडु अर धर ॥११५३॥ यद्यपि हमरा धुर वेरन घर है ॥ तहि नि जहं कारे
सिर पर है ॥ ये वडु यो रे ना न न देषे ॥ निह चे इहि गत लेह विशेषे ॥ ये वडु मान न वहाइ चा
है ॥ नि जपर सुख कीत नी न रखा है ॥ जल जो प वन इही गुन धारे ॥ सदा च ले जग सा ज
सवारे ॥११५४॥ तर वर भी हम रे उ लु पाये ॥ व धे पले बिध नीक सुहाये ॥ त्र प ने कर्म फल
ते जो दिर ही ॥ ओरे दो सदे म लो पिर ही ॥११५५॥ बुध जन न रघ ज्यों म त ले ॥ रा ला कौ ये व
चे पुजारे ॥ सर घ जन ज्यों से न पाती च र ॥ ताह गार सुन कुछ न रिदे धर ॥ सहु जन
ज्यो क जाउ चौरे ॥ वि कर टारे भी त पुकारे ॥११५६॥ नित नवे शब्द न ले से हितो वे ॥ मह
अ भसु सभ भ दो अघा वे ॥ जे पुरी षका हू पर करही ॥ ताहि देष कोप र तध र ही ॥११५७॥ दोह
रा ॥ सहे जन सो नो न धरर हे जिन चेम न ज्ञान ॥ वडु यो कीइ हि सिंधु से हम ला लस

सत जानु ॥११६८॥ जैतै तैतै सै भी मदे देखि रस सम सर्पी दिखाइ ॥ दोहा ॥ नीच धातु नहीं मन तउ धुम सुर
पजाइ ॥११६९॥ धर्म जो वाच ॥ चौपई ॥ बुध कौ विद्या जो गुन जगाव रमइ नंने जो मधो पुधम
पुगट धरा ॥ भीषम उवाच ॥ विसम रख न पहि मन लागि रागे ॥ शिव सो मिल मुख सो पुछन ये ॥
११७०॥ धर्म जो वाच ॥ है शिव को विद्या पुधम नाये ॥ मइ पुगट सो कहे मन दाये ॥ शिव वाच ॥ दो
हरा ॥ ज्यों ब्रह्म ते सुनी हम नित उत कहै हैं न पभार ॥ पुथमे वेद पुगट मध्ये पुनि विद्या विस
तार ॥११७१॥ पुन वर श्रा स्तुभा रमन पाये ॥ वतु फल पदे सु नेहे ताके ॥ नव व्याकरन वीजुन
पदे वुध जन ॥ उपजा वे नर ज्ञान धरे मन ॥११७२॥ पुन जोतिष सम पुरान ॥ तामे
वरई तिहास पुरान ॥ भिन भिन ताके नाम वतावे ॥ धरे ध्यान सुन सरव उपजावे ॥ पुन
चौदस विद्या उपजाइ ॥ जिहि ते जग मस भरव नदि खाइ ॥११७४॥ अव चतुर्दस विद्या ना
म ॥ शास्त्र विद्या ॥१॥ मंत्र जंत्र विद्या ॥२॥ कामशास्त्र विद्या ३ नट विद्या ४ ॥ निरत विद्या ५ ॥ दूत विद्या ६
तम अगन विद्या ७ ॥ शिल्प विद्या ८ ॥ अस्त्र विद्या ९ ॥ जल तरन विद्या १० ॥ राग विद्या ११ ॥ ना
द विद्या १२ धनुष विद्या १३ कंचन लुहार तरव रज्ञार रूपादे सरल विद्या १४ ॥ अथ अष्टाद
स पुरान नाम लिख्यते ॥ मत्स्य पुरान ॥१॥ कूर्म पुरान ॥२॥ वाराह पुरान ॥३॥ वामन पुरान ४
नरसिंह पुरान ५ ॥ विष्णु पुरान ६ ॥ मार्कंडे पुरान ७ ॥ अगनि पुरान ८ ॥ नारद पुरान ९ ॥ ब
ह्म पुरान १० ॥ भविष्य पुरान ॥११॥ पद्म पुरान १२ ॥ शिव पुरान ॥१३॥ ब्रह्मांड पुरान १४ ब्रह्म
वैवर्त पुरान १५ ॥ स्कंद पुरान १६ ॥ भागवत पुरान १७ ॥ लिंग पुरान १८ ॥ नाम समाप्त ॥ पुन धोतर
देद विद्या धर ॥ ताते सम ज्ञान को से सरव धरा ॥ पुन सम सुष्टि विद्या ज्ञान भा नी ॥ अस कहे
॥११७५॥ वह रसा गे ते नाग ठे धुव वर ॥ ताहू पढे जग रचन सम न धर ॥ जु
व से हवि चारी ॥११७५॥ ताते सम ताहे न जग तर ॥ हस तज्ञा दि ची दी पर ये ने ॥ जुग
न जान पुन भये निरंतर ॥ ताते सम नाट हे न जग तर ॥ हम नज्ञा दि ची दी पर ये ने ॥ जुग
॥११७६॥ दोहरा ॥ इन सम भविद्या के वले जग स्व नाउ रता इ ॥ ना त
व्यापक शो भ ज्ञा ने

१२१ रविप्याइ शंभीक्ष्यंतजेरमधुजाहि ॥११७॥ विद्याबेकेदेक्ष्यंतकोज्ञालषपउतरदोइ ॥ तेभि
पारलपावहीलहमलालपुगलाइ ॥११७॥ मारगंडेकीस्मारपाबुद्धिगणेशसमान ॥ पठ
तरेहसभक्षारयातेभक्ष्यंतरलज्ञान ॥११७॥ चौपई ॥ पुछनेसमविद्याकरणकरम ॥ र
इविहमुनिमलाकोहितधरा ॥ पुनबुसलातेशवलीनीहिता ॥ स्हमलालवउरठधारवि
ता ॥११८॥ ग्यातेज्ञानलहारघोरजुडा ॥ विहनबुसरउडीहसर्वगामयागवलकोरिषिभ
ज्ञानतहे ॥ भागीज्ञानारिदेठाचतहे ॥११९॥ कोउरिषीम्बरभकोउकेकोउ ॥ कोरकृधिक
ज्ञानतहेस्मेउ ॥ चनुगनतनसेवषवितायेग ॥ वितमैपुलेजगतकीगाये ॥ योदीसेजग
रचनक्षपारे ॥ लापुहोइजधुनाहिदुखारे ॥११९॥ दोहरा ॥ चौदससइंदुजवकीतहेत
यइचवस्पुकदाइ ॥ बुसमाकोंदिनभीतेउकहमलालपुगदाइ ॥११९॥ छंद ॥ जिउदिनतेसेदी
चशावुसोसोवेभारा ॥ उलेहोइतवरचनजगजातेपुनपुगदाइ ॥१२०॥ चौपई ॥ वहु
मसबुरिषिउपजोवेतवा ॥ विदज्ञषज्ञानेहेतेसभ ॥ इनकेसुतभीज्ञानलहारे ॥ कोरन
केजुगमबेसभारे ॥ धर्मजेताच ॥ तातनुमारेज्ञानकृधिकज्ञाता ॥ सुनसुनथारर
हेरिदहरता ॥ जवचनुगानचप्रिंदुमोई ॥ वेदवामुतचकहेकहोहोई ॥१२१॥ भीष्मउ
वाच ॥ दोहरा ॥ तेतीस्मोरसुरमिलसभेसरपतिधारेमप ॥ तीहिक्षाज्ञामाननतरहे
मोरनसबेहजनप ॥१२२॥ वेदशाबुसभइदुवेविसदिनपलुइलास ॥ इनसेसे
वलजाचवेपुनहोइरचनउकाश ॥१२२॥ चौपई ॥ तोभपसभजेलपरकीने ॥ जी
धमवलसमधमवमदेने ॥ उनेरभयोशिववेभउत्री ॥ जिरबेलाभापरदेहरधार
॥१२२॥ मुधजनज्ञानीसवलतरहिता ॥ शिववुवेरवेरहेसभिलेविन ॥ जिरसमेरम
भजिरपरमप ॥ रिदनमोकेवर्वसिपज्ञनप ॥१२३॥ तेजवानमोरहिवउतेजा ॥ ठउ
ज्ञानपभयोवदुजमेजा ॥ शवकापुउसवेरनुमारा ॥ चोगसीपरपायेभारा ॥१२४॥

चौपाई मन नष्टे ज्ञान दे ॥ समकी मूर त ते ऊले हू ज्ञा वो दे ॥ सम पर का लव सी ठहराये ॥ उपजाव
पत तो ते दिखराये ॥ ११५ ॥ वा सै प्राहु बिध समाधराये ॥ नर पर दूर्हू ज्ञा वसया सिच राये ॥ उप
र च ना सम भी दु रूप ताई ॥ उपजब पज हो स माधताई ॥ ११६ ॥ सभै विना रघु नाहू लखा
ये ॥ सम पाव धान सम न पर तो ये ॥ बुला विहम शोभ ते ज्ञा दे ॥ रवि सस इंद्र सभ सम ज्ञा वा
दे ॥ ११७ ॥ रेख भेख ते रहे ज्ञ का ला ॥ ज्ञात जन्म जिन्हि विशा ला ॥ ११८ ॥ ज्ञा हू ज्ञो तस
भ मो परका शी ॥ सदा सर्वदा हर्ष हूला सी ॥ ज्ञोत स्वरूप ज्ञ च त ज्ञ विना शी ॥ घट घट
व्यापी पर्म विलासी ॥ र तुगुन धर च तु रान न है ये ॥ रुरे जगत सी रचन सो ये ॥ ११९ ॥
सत गुन विष्णु प्रति पालक ताहे ॥ तम गुन ते शिव हो इ खपावे ॥ १२० ॥ दोहरा ॥ वे ज्ञ व स्थ मान
बुध रे वाल रूपे तन्यो ब्रह्म ॥ नि ज नि ज सम माभु जा वई रूप मलाल प्रसिद्ध ॥ १२१ ॥ धर्म ज्ञो वा
च ॥ सुनी त रूप भु भ इ छ धन सीह तै मान ष माह ॥ त्रिहु ते नी धी ज्ञो न है याते सुख उपजाह ॥
१२२ ॥ भी षम उवाच ॥ चौपई ॥ रूप ते धर्म व सनी त सदाई ॥ ज्ञनीत ज्ञ क भनी ते भुभ जाई ॥ जप
त प मल सुनीत लखा वो ॥ जी प के सर्व धन ते सम रूपे ॥ १२३ ॥ पय धनु जिह सनीत भुभ
रूपे ॥ ला डो पर उपकार सु धर्मा ॥ धनी वही नरूपु सुख न ही पावा दा ॥ चित न त रहे दिन रैन
ज्ञ वादा ॥ १२४ ॥ पंचम त धन ते रहे हर बत ॥ दु ज देख ख व लो सनी ये रर ॥ सम सोम स्वार
स पर्श तु न्वा धरा ॥ १२५ ॥ ज्ञा प जो धले वे सु खु दाई ॥ धन ही ते सम शोभ सु हाई ॥ सुख सभ
भ रूप मन इ छा धन ॥ याते सुविध रूप न को इ धा ज न ॥ १२६ ॥ धन ते सख सी रूप ते नी रूपा ॥
विन धन न र रूपा जीवन फीका ॥ धन न वने त ज्ञ नीत वना ये ॥ धन उपाइ मन न तो सुख
नदे ॥ १२७ ॥ वि धन ने रे र ग त ना र है ॥ लोक पु लो क की सम धत ज र वे है ॥ इस धन ते निर्धन
ही नी का ॥ जो सु पाप है ल है सुख जी का ॥ १२८ ॥ ता ते न र मन न व सन पर वे ॥ मन न व सम
र सम भ चार धन वे ॥ सो ऊ रूपे जन त ज गय सपाई ॥ पुन पुलो क व उस सुख उपजाई ॥ १२९ ॥

१२२ गहीचरैरखतिपकीपउ॥ दीन अधीनकीनगोसरूप॥ नपसीररहे असंगअखेल॥ पिछपनसो
रापनहिमेल॥१२॥ हारीहरकांनवैठनपुधारै॥ तजसभुगिंचतहीरभिंचतसभोरै॥ जन्मनर
कोकेभपतजरहे॥ हरिविनदूसरमंतनगहे॥१२॥ ननरतेभलसपेहजोवे॥ प्रापापरास
मानलघोवै॥ नारपदांध जगवरजानो॥ चहूकेहेत जनमनरमानो॥१२॥ पुणमेऊत
मनदूसरधनवर॥ तीसरभोगचौथोविरागधर॥ सतमपईशध्यानधररहे॥ जपतपसं
यमसतोदृढगहे॥१२॥ धनमोदानदयादृढपालै॥ परउपकारसभचारसभालै॥ केर
भोगनिजनारीसंग॥ परत्रीयनिकरनजाइअभंग॥१२१॥ त्यागमाहसमतासभ
देह॥ चितमोधारैभरकवशेह॥१२१॥ दोहरा॥ इहसंसारअसारहै यामेसारकहेचार
उपकारदानसतसंगतहरीरकभजनसधार॥१२१॥ रूपसमानेहोइजिउजिउजलनि
कसमधुर॥ चउसनतेरहेजोइहे॥ कुचीलकेउनहिकसने॥१२३॥ चौपई॥ सोईइछा
धेपरनेहोवे॥ मननमोरहैवचेमनघोवे॥ इहपरेपाछेपधुतावे॥ तेइछामनतहीनभावे
सभसुखवेतेउन्नमसुरवणही॥ रहीयेसदाईशरेनेही॥ सभसुखादेमीस्वादउन्नमवरआरहे
येजगतेस्वार्थनरेतर॥१२४॥ अस्नेवरकहतेहोसनधरध्यान॥ नपुरशजितमयोज
गनमहान॥ कामुदूनरिपितारेसभा॥ वचनविलासकरेविहभगा॥ नपढेहिनचीय
सेलक्षधकायो॥ त्रीयावचनदूसरगधनरैभायो॥ नाहीहिनुसमकोअमदेवे॥ अस्नयाइनी
नभाशीअमदेवे॥१२५॥ इकविदनारिविसोपुरमवपाने॥ हरिविमुहिसमकोइमहाने॥
जेनरपापुकरतनउरावे॥ दयादानकरहूनकरावे॥ वेसमकतनेकीहोई॥ कहर
कलाकरमोमोसोई॥१२६॥ शरवोनाचमेदोहरा॥ हरिसिमरनतजावेसोरचेहेनर
जोइ॥ पापकरतेहेहीनमनतमनोमूरतजितहोइ॥ हरिविनुविषपनमोरचेमतानिम
कैसईहीना॥ परमातमपरसोकतजभयेनिषपनकाधीन॥१२२॥ चौपई॥ विषपनर

तेभयेसमकाजा॥११२०॥ सरतजुगलाजसमाजा॥ कैसोरसभीसुखदीयेविसारी॥ विछपनकेसुरवजा
तेभाजी॥११२१॥ जाडेभाजपदेवतपुभाजी॥ मझइछउपजाहेसाई॥ चाहेविघपनमसोनुक्रोधे॥ क
पाकीर्तिसतसंगहितावे॥११२२॥ तिनकेवाकसुनतहिदुउमाने॥ सुघतेभडेविचारमहाने॥ ज
गम्भिंदातेउरपनरहे॥ दुष्टजनोकासंगनुनगहे॥११२३॥ ज्ञानवानकोसंगतिहितावे॥ तिनकीसि
क्षाहिदेवसाये॥ क्षतिक्षमीलपसतोकसंभाले॥ समकोहर्षधरेसुभचाले॥११२४॥ पाछेयेक्ष
घमयेभयमाने॥ परउपकारदयामनआने॥ काहूकोक्षमनाहधराई॥ सभकेसुखवीवं
छमराई॥११२५॥ संतजनोकीसेवकराधे॥ निसीदिनरहेतपसाधनसाधे॥ मुक्तसुनीतक्ष
वित्रनरहहे॥ स्वपापाठहितुधराहिदिगहहे॥११२६॥ येज्ञानवहुकामसंतावे॥ कहेघतन
पवित्रतनसावे॥ सुभकुलकीत्रीयकेओविवाहे॥ नासोकामभोगतिरवाहे॥११२७॥ दोहरा॥
दिजकोमदरापानतेकेसेसापापुलगाइ॥ कंचनगालकशचदेहितेप्राणतजेतवजाइ॥११२८
गमचवास्त्रीसदानतेउनरावेडीहपाप॥ नारवहुजन्मधरेसहदसहेसंतापु॥११२९॥ चौ
पई॥ येविधिविदितेघनुलेस्टहतावे॥ तेकघभीक्षतिभावलघावे॥ सहस्त्रगांइदेदानुहेतुधरा॥
दिजशिषिकीक्षमिवारहतवर॥११३०॥ येमांगेतेउदेहिहितावे॥ सभकोइछपरसुरवपावे॥
गुरुकीत्रीयसोभोगेभोगु॥ तपतलोहत्रीयदेहिसंयोगु॥११३१॥ परत्रीयसोजोभोगकरा
वे॥ कठवधत्रनुधरेसरावे॥ दुष्कमदुसोउघवेशपगत॥ वेश्यतेघत्रीकोदुष्कामक॥११
३२॥ छत्रीतेदिजदुष्कपुगटावे॥ पापपुंनपरमाणदिखावे॥ भिंनभिंनप्रायश्चितनिहजाने॥
वेदमाहभाखेवहुजाने॥११३३॥ दोहरा॥ इननजानेयेक्षघकीयेवेदपाठमुखतामि॥ जानको
येतेप्रायश्चितभिनभिनप्रगटाइ॥११३४॥ धर्मजोवाच॥ चौपई॥ सुभमतभीसमजेसुभमते
च॥ हरिजेमजननकरेवहुसंचा॥ तिनकीगतभाखोकरणाकरा॥ सुन्नभीक्षमभाखनसुरव
तेवर॥११३५॥ भीष्मउवाच॥ चौपई॥ दुर्योधनपतराजसुनवादा॥ कहेतोतोहेहिनजनलको

अवाद॥ दुर्योधन पित सो पुत्र सताये॥ हे पित धर्म जु गोरसि धाये॥१२३१॥ नित प्रति दस सह
स्त्र दिज भोजन॥ स्वर्णपात्र मो करे मुदित मन॥ नेपात्र दिज हूं को देवे॥ नित नित इस सही
विध सो सेवे॥१२३२॥ चिरकाल मो हमनें रस उपजाई॥ इक पदरी दातपताई॥१२३३॥
धन गयो तब॥ हे सत पर प्रभु करम लखाने॥ हर ध्यावे जो ज्ञान महाने॥ ना हम कि तु जर रि
स उपजावे॥ दुखचिंता सो निज रिद जावे॥१२३४॥ सु पुत्री पुत्र नीकी जाने॥ दिष
परते जु नारि दिद दुखठाने॥ जिस हरि ता हद दीये देवे नांहि॥ ता ते न मम तधरे रिदे सहि॥
१२३५॥ गरहरी येव धुरा धन परहे॥ दुख भूमु संतापेत न जर हे॥ जिं उ प्रहलाद सर
पन कीहे जाग्यो॥ ती ये प्रहलाद स्वरपत नेवल मग्यो॥१२३६॥ इंदु राज पस लीन वला रे॥
इंदु दुरबी भाइ याभय भोरे॥ भाग स्वरपत अगस्ती चिकराने॥ नि जभ्रम की गाय कही
प्रगटाने॥ पुन कहे हे मुन करो उपाये॥ याते अस्रर निवलहि होये॥१२३७॥ अगस्त
उवाच॥ हे सुरपत प्रहलाद सुचारे॥ शुभ करमी जग को सुखुधारे॥ शुभ चारी नि
ते नि वल होवे॥ निह पर हमरा वल न चलाये॥१२३८॥ विधि के वच सुरदेव सुनाये॥
धारी चितररिदे अधकाये॥ ह्रां ले नर सा बिचार विचारे॥ दिज को रूप मये ति हवारे॥
नि सी रूप प्रहलाद निकट वरा जायो॥ इंदु मुख ते आशिष धरा॥ चिरतक तांकी निकट र
हा नि॥ तप की सेव करी मन न मानि॥१२३९॥ भयत तांकी सेव निहारे॥ इक पद रमु ख ते
प्रगटारे॥ प्रहलाद वाच॥ हे दिज वरं मांग या इच्छा राखो॥ कहु तन कालप रते उला खो॥१२४०॥
दिजोवाच॥ हे नृपवर तुम्ह सुभ करम शील लखाने॥ ति हि प्रत मा नि जहि गदे सुमता॥ ने उदा
न करमो को दीजे॥ इहि दइच्छा हमरी सुनलीजे॥ प्रहलाद ता ह हुका मम सुन जाने॥
[illegible] नाहे॥१२४१॥ दोहरा॥ ता तक लताहि दिते भये॥ इकु नर प्रगटान॥
[illegible] नि सम पश्चात॥१२४२॥ नरोवाच॥ हे हरि तो हि सत

जानजीपनममहिंदिजकोदीना॥कनवनुमसोमहिसियाजामदेहिदिजके।जांउप्रजीना॥१२४४॥
पुनपुहलादकीदेहतेअवतरनृसिंहरूपसान॥तिनमपनसोजहीमुखअपुनशीलममजान
१२४५॥ममवामसनाथीतोहिजीहिनपमतधरहोरेह॥तुमनिजहरखतहोइचितदिजको
दीनामोह॥१२४६॥वहुरजनमधोंदेजहीजावैदिजनिजदान॥तुमजिनजदानकीयोहमदि
देनधारेजान॥१२४७॥पुनलछमीअवरसंदुवपुनपतेभईन्यार॥जहीनपसोदिजकेनिर
मजावतेहोनिजदार॥१२४८॥तवपाचोनपदेहितेनिजसेमपकोत्याग॥दिवप्रहलाद
जानतमयोइहिसरपतिवडभाग॥१२४९॥इरवधरिसमतकधिजवधउपायनचल
इ॥देवराजसुरपतमयोनपदकालविनसाइ॥१२५०॥चौपई॥पाछेसतकोपीलरह
वोकोउपायुतिहलगनसकोवै॥पितरेवचनुरमपसन्योयो॥इहिपितसोमरवतेपुन
रयो॥१२५१॥दुर्योधनोवाच॥देपितजिहनिरमलचितहोई॥मोकोदिवरावोमगसो
ई॥पितोवाच॥देसतधर्मजकोदिवतेजा॥मनचितानरजनोजरेजा॥१२५२॥जानीर
चारमननिरमलकरहो॥कहूवेदरविदेनधरहो॥जमेरेवसमतेवलवाने॥पितृ
कीसिखमनसुनीहितान॥इरवधरसमकुलउपरायो॥सकलजगतकोघातुदिखा
यो॥१२५३॥धर्मजोवाच॥तातमोहमनवसतसदाई॥वैरप्रसपरनीहउपजाई॥दुर्यो
धनममजेरनिहारो॥मनमोरिसवधरतजनपारो॥१२५४॥ज्ञानिजगंनजेजीवह
तान॥हमभीचाहतयेप्रभुजाने॥दुहूंकीपदनभईनजासा॥सजोतातमतजेरे
प्रकासा॥१२५५॥इरवधारदिदेदुर्योधन॥उपोजगतातरहीइरवमन॥हमकुल
केजगहानजराये॥जीवतहैमनजासतजाये॥तातजपावजसोममउपाव॥स
धाईसोवाधानलहावे॥वाधाजियाहेजेवाधनतवर॥जदुर्योधनीसोतातजपाधर॥१२
५६॥भीषमउवाच॥दोहरा॥प्रदुसनसुनमनपुपुत्रसम [illegible] निर्णौद

घतापाछे परे सोहत नन मकपोर हे चेत ॥१२६४॥ पुत्र कलू पित कलू डायो मिगकोलू तुनहार ॥
दिन वीसो भयो भ्रिम मकज्ञान तन पसत सधनी दघार ॥१२६५॥ वन न उदान नहिं संग
न पु सुत मिंत ताम नन माहि ॥ तर पत तचैन नन पाव ही सुधमल सिमुरव नाह ॥१२६६॥
चौपई ॥ मकत वियोग व्यापुल नपमाती ॥ इति उत देरत पिरत दुरवाती ॥ तरसमीपदु
कुतात्सुदिषायो ॥ यानोजसुज्ञित विमलसुहायो ॥१२६७॥ तपतावतनपमजुनदी
ते ॥ भयो हरष मिमरनमो लीने ॥ डोहमो होम शरिषिदु धनाम ॥ तपुधारे तन षीन
सुजान ॥१२६८॥ रिषि देषि नगडायो नपहितु धर ॥ रिषि नपजाय ल षीस भत
पवल ॥ पल करो पूलम सोहित जाने ॥ नपुदिषमुरवते कीन वषाने ॥ हे रिषि मोते
सुत वियोग ॥ कवित हम वड भ्रम दिषरायो ॥ रखुन लष्यो हम वड़ा गमा नाम या
ते हमुवा दिदि तपता ना ॥१२७०॥ वड़ा करो गोहि भांत मिलावो ॥ यासो हमरी तपत
बुझावो ॥ रिषि डाही मोन उचनो हदीनो ॥ मेन मंद भयो तप मोलीनो ॥१२७१॥ त
व नप मन न मो कीनो विचारे ॥ डीहे रिषि का हूका नन धारे ॥ नीह समरथ मीह स्रमे
चिवरई ॥ कोविरला पर दुरव दिषरई ॥१२७२॥ नवी रिषि नपके जीय की जानी ॥
मुरव तमा घेव च न महानी ॥ रिषा वाच ॥ तेऊ समरथ तेदीन हीनने ॥ ताधाधारन
हूप रघर जे ॥१२७३॥ हमक चार रषु चारन धरै हे ॥ स्व छत वन न मोन पे समरे हू ॥
तेऊ समरथ सुन नार वधा हत ॥ रहे दुरवी चितनाधर चित तीन त ॥१२७४॥ तुमव उनप
व तुते जनुमारे ॥ धन करे वनु हैसे न कपारे ॥ सुत वियोग सभ दीयो मुसाये ॥ नीह
लषीय नक वहू सुरपा ये ॥१२७५॥ हम ए को तन कुजम कारे ॥ तपुधार तनिह शोक क
पारे ॥ तेसु रखो वियाजो सदान रह हो ॥ लो पुरो हत वमन क मोद हहो ॥१२७६॥ तेऊ स
मरथ जिनने को उकाजा ॥ दरन रोइ धरे मन लाजा ॥ तेऊ समरथ जि मव हीन

तेजसम थीं गुन कहन जानैं॥ न
न करहीं॥ तेजसम सी किरि दिवान नयरहीं॥ तेजसम थीं सुना जेहि धामा॥ २ दूजन ग्यान रितवरे जाका
रवही को जहम मानै॥ तेजसम थीं सुना जेहि धामा॥ १२७४॥ सुने
रिष के बैन बडर चन सुनायौ॥ रिसकी उवम आरल व॥ दोहा॥ १२७९॥ सुने
काचा॥ दोहरा॥ हमरे चित की गाथा तस ओरिस उतर दीनो मोहि॥ जिहि चेमता
छीरो मिलै जो दिजाल रिखहोय॥ १२८०॥ रिसहि रखहि दिजाल हेतुव
जानो सुतातहि॥ कुसलाल सुत कोनि रखन व मप्रेहि रति जाहि॥ १२८१
सुवाते रिख के चारों दिस कूछत दोउ कर जोर॥ हे मुनि हमरे जानत पह
देखे जगत को॥ १२८२॥ चौपाई॥ गोषोक जा चाहि मजग चाह निहुचा हि हमरे
चित सुनो लोमस मोहि भये हारे सकल ग्या न हरे ही मोरा ते॥ नम्म मरणा
पौन यहाते॥ १२८३ विसै कार मन को ए काम करे॥ मन स्वरूप पत विचार
परा॥ तमय न तेज कुरेव कामाने॥ हरमार गाते साचो जगामे॥ १२८४॥
न पावत जौ सो कर सिर ढायो॥ तव समते उतम जो यम पायो॥ तारर वनासम
सुनी जानो॥ सुना को राजा छह रवयर छानो॥ निजा है हो रिस निकट जव
तव यर॥ त सुना तल भाना माजे जगे जरा॥ १२८५॥ मसे कउका च॥
दोहरा॥ रसुख है समल लोमस ते पेसु रव लोग तिकर॥ तुमसम जानो नाहि
जाग देखा कि दे दें जर॥ १२८६॥ मेरे छु मुन व दुख यरत कास्रो कुट
वके हो॥ तांगा सुख मयो तिताहे नो जान होय चित चेत चौपाई॥ चाम
पुन सुन जोहि दू तिहि सा ह छेर द मन दासो कुजो सा॥ सुख भास्वत है
मारो तुम तो है हम कन आरे॥ १२८७ तिसारि तन सबे तिकर रहिवे॥ सुधा
हप ते वैन सुना जो धम रखहु सी व चमत सुनावत॥ ते हवता जु करत मदैन काहा
१२८८॥ माथ सकुजाव तमोत मते रख तव सुलम जो॥ म हमहे वखें तव धा रेतुजमत

[illegible] नाम [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥
[illegible] ॥
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ रानी धर्म [illegible]
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥

ॐ [illegible] ॥ [illegible]
ॐ ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]

ॐ स्वस्ति श्रीगणेशाय नमः॥ अथ अश्वमेध पर्व लिख्यते॥ दोहरा॥ सम देवन के आदि वर श्री वसुदेव कुमार

करुणाकर सुर नर मुनि जिहि पूजन हरि हित सिध दायक मदन॥१॥ सारस्वती वानी विमल जाहि पूजो होय दीन॥

अति भारत ग्रंथ महान॥ तदपि मातु तासम नयो कै

र देव बुद्धि मम भाषा को प्रवीन॥२॥ यद्यपि मम मति अल्प अति ना इक पाई॥३॥

उके सब जान॥३॥ जिंउ अथाह दधि रतन की इक कोउ धरा ई॥ पुन न तहा नौका बिना मन नैकोर

गण पति देवी दया लही सुगम उतारो पार॥ नारद मो मति तुच्छ है उतरन गमन कंमार॥४॥ यथा सुमन आकार की केव जन करो

न लस॥ मातु प्रेम मन बसत हमारी नाहि की सो प्रकास॥५॥ भूत बनी है जाहि को अपनी करणा धाम॥ निज बहु धन की

आदरियत सौ जेनी कहावत॥७॥ कथा सुधा रस नेकस मपडे सुने सुर लंभार॥ कृष्ण लाल प्रकाश पति नम न के

अनुसार॥१०॥ यथा जन है उक्ति [illegible] तम मानयि [illegible]॥ त्यो कवन ल निल तति कहासी [illegible] ठिय रा [illegible]॥८॥

धर्म जप्तक सौरा कहिन मौ [illegible] सायगा॥ ईश नाथ कहे हम अश्व बहु कुल जान द मोह नाद॥१०॥ दाहि अथ जैके उनरहै

तैस कथा बखान॥ द्विजनानि हाँरा प्रसादया नुसार समान॥११॥ श्री कृष्ण उवाच॥ चौपई॥ अथ तज्ञ नभ सभा

अथ अश्व मेधा॥ गाथ करन का उन करणा॥ सविमल मत लान उआमर॥ दयाकृपक कमला का सागर॥१२॥ जैसे

उन रूपा पत्नु मौरा॥ ते सोसिष धरे हि लभार॥ ताज जगगुरु गयो श्री कृष्ण सुर लौकै॥ तल जो इ मासी सुखल मोह॥१३॥

पंडव लनिविद बनना कामी॥ कीये हितै प्रभु करुना धामी॥ कास नर एता होय जनिज हित॥ सन्नुदन वा दो दा

बितावित॥ विदु उनार कम सखीनो ना॥ सुना येन येवे प्रा अमो तो॥ हपुर मावि कपृनि नारन॥ कृदन

प्रला प्रा अथ उद्यपि धारम॥१४॥ कुल कुरं कहन सो हम कीनो॥ ते दुख बहु मुहि दिये प्रबीनो॥ नी दम्मू बमो को

न सुह वै निमहान कैन हिद मो अवै॥१५॥ कैसे विन सो बिन हमारी॥ इनजे शांत मोह सुदनुकारी॥

दुर्योधन कर कपट बुराई॥ तीये देस दीन जू पहराई॥ पुन हम युद्ध धार रणमाही॥ तीये दे प्रा अपुने

बल वाही॥ नाह तीये हमये दायराये॥ देवो रिदे विलार धराये॥

२३

पय जो कुरत मुहदि देव साने ॥ कहो प्रगट तुम सुनो महा मो ॥ भीख जोव डाना ल हमारा ॥ बाथ द्रोण गुरु सुत वाकारा
करण भ्राल जो हम रावरमा ॥ जगत्रय गरुर लोक ग से सत ॥ तिन वि तुरा जनाकि या प्रभु मोह ॥ कहो
विनती मय यु तनोह ॥ २० ॥ दोहरा ॥ कसी हा ॥ म नहिद्वि ज सदा करन पाठ हुनमार ॥ शिव मुनि हवि
रहा सकल सपूरन किनमार ॥ २१ ॥ तमंय रीति पर जी लेकामा नहाइ ॥ शिव शिव उपजे शोक
मम कहन कह्यो नहीं ॥ २२ ॥ ये पपूजा योग हमारा जिन कोहन जोने प्रभु मारा ॥
पाप्रवल मरा ये न जीवाई ॥ नीक प्रमाण मरिया विपुलाई ॥ २३ ॥

प्राप्ति वैदिक ला लेबर स की
हिंदी तव्य कार्य करें है

९४ धवाऽ

२३६ इकुसबैसै॥ग्यापडगोतोमिसबरावै॥विद्यादानसमदाननगावै॥
इपुकारसावै॥इकहीरलषैइकुलबनसकावै॥१९३॥विद्याभीदो
मउन्नति॥पंतपफलउपजावैसत॥जिनलहेवेदतिनवसुलषाये॥येदरिसलषेतेवुउत्र
लमोभेदुनापो॥१९३॥लषदेवसुवसतेहोई॥पामोभरमभेदुनहिकोई
लहमनलालपरकपालपावै॥शांतसर्वभयापरस्कचावै॥१९३॥दोहरा॥सव
लरिषोजीसारजरदेजीपरसाद॥शांतपर्वपरलोजीयोमोषमउतमरपाद
१९४॥चौपई॥शांतपर्वकीकथापुनीता॥पडेसुनेयोधरहितचीता॥मोक्ष
मउतपदंवीलहै॥दुखभ्रमशोकजभिनेनहिदहै॥दुभधाहेतमभमिन
रजावै॥कलैयगीदिशांतसमावै॥ज्ञानदीपवउज्वालप्रकाशै॥रुग्यानअं
धेरकलपनानशै॥१९५॥वरभ्रमअर्मसतशीलउपावै॥परउपकारदान
जीयमावै॥क्रोधतजरहेहर्षविना॥लोममोहईरषनधरैमिन॥१९४॥
दोहरा॥दषिमयतउनिजसेरतननितउमरमारतगंय॥शांतपर्वप्रगटायोपर्म
नकुतरापंष॥१९४॥सुमनतधरेदमंतरहेप्रेमरषावननहार॥इदमलोलवकुभ
गजिहिपढेसुनेहतुधार॥१९५॥विसाघीमनलजीवेनतीअवैजारदोवुहाचीन
घिवतुनदिषनहिसोगपुनवढाईसाथ॥१९६॥अरोविननतीहेवुधजनोहमनि
जतुहुपुमान॥धारीजीजिहिपढेउपजेज्ञानमहान॥१९४॥मनकजोहमउ
रीनिजवुधले॥कुछाधिमअरोअपराधममअपुनरवढाईपाइ॥१९४॥मोहम
तषोरमहिरे॥येमनदाभारतजिहिनाम॥साअरजिउग्रसगाटअनितिसमजावेवुध
रजाम॥१९४॥पढुलामनोमनअजधिकतातेभाषाकीन॥उपहासठोरवुधजनो
कीसाची॥उमना॥१९५॥चौपई॥येगुननननहेदिदसहिरदेआमा॥इवरजन

हानी ॥ कदूसो नहीजानत वषानी ॥ जिन जानी तिन नहीं वषानी ॥ मकी जोतहरी
मोहि मिल्लानी ॥१८२४॥ दोहरा ॥ नपुंजे साधन नतवील गजवलग वमिल्लाइ ॥ ह
रिमिल्ला वभये साधन को उनादुरुपराइ ॥१८२५॥ जैसे नर वाजी सवर च्वल्लाइ अधि
कौदिषाइ ॥ नरहोइ वाजी जैवषे नर गीह जाइ ॥१८२६॥ श्रीमुखउवाच ॥ जो नज्ञान
कैविषाभासी ॥ पातेनर हीरसुधहितकासी ॥ जैसे मृगतपडनिजरले जन्ममर
लाहुलनिरे वसले ॥१८२७॥ श्रीव्यासउवाच ॥ जिरिजनपाइ जाको गतजान्या ॥ तिन
हीरचे नटाके नपछान्या ॥ घोपाजगनूभसच्चलषावै ॥ तेनहवे हरि की सुधपावे
॥१८२८॥ दुहूस्लाव भोगेसुरवभारे ॥ जगमेलिपेनको उविचारे ॥ डीरबुधनाहि पेव
देवहाहि ॥ दीनबुधनाहि पे चतुसेदाही ॥१८२९॥ डीरबुधना घोधनउपजावे ॥
डीरबुधनां रलोक नेऊवे ॥ डीरबुधनाहि जयवदुपदे ॥ डीरबुधनाहितोरेवठगेडे ॥
नेउबुधयोजानुविचारे ॥ अमेरचारसतवरतन धारे ॥ विनवतेनताननीवन
हीसोहे ॥ जिउ पवित्र दीनचौपभषनजोहे ॥१८३०॥ दोहरा ॥ बुधजन्नवनजुनीसोउ
सनवतेनहीरलीन ॥ जगतुरिभवन धनहरनवे स्वाभीपरवीन ॥१८३१॥ विषा
नेउपायेवपडे जगकीरचवनसजाइ ॥ सतविचार ज्ञानेलगेरहमसात्महितपा
इ ॥१८३२॥ चौपई ॥ उतपति तनहीचारपरकारा ॥ सेत जअंडउजजेरज धारा ॥ वो
वीउतभुजलघोसचारे ॥ चारषानहै न्यारेन्यारे ॥१८३३॥ जेरजुनितवसेच्वमलपे
री ॥ नरपसुमजाइ मरषादेभेरी ॥ अंडउजसपंपघसद्मादा ॥ सेत जपुनदारुनव
दा ॥१८३४॥ सेतजमैदमनतेउपजावे ॥ उतभुजभुमतेपुगारीद्रवे ॥ ब्रिह घरी
जारेजीवजानो ॥ इननेलषचोरासीमानो ॥१८३५॥ सभनेउतम मानुषदेही
होइ ॥ घामोइ प्रभ कोजानलखईये ॥ पातेनरवडउबुद्धपुरकापे ॥ भतन जनानतजे

अवहमरेमनइहीविचारे॥ करहैराजुभीमवलभारे॥ अप्यवाअजैननकुलसहदेवा॥
करैराजुमजवलैअमेवा॥२४॥ हमवनमांहिजाइतपुधारे॥ ईशध्यानिजपापउता
रे॥ यातेचितुहर्षितनहिहोई॥ किउकीजेरिषिकाजुसोई॥२५॥ इहिशोभेवनमोतपुध
रहो॥ राजदेशकोइछनकरहो॥ मतहरिदेषदीनतामोरी॥ मेटपापदयाकरवोरी॥
२६॥ श्रीवेदव्यासोवाच॥ धर्मजस्वस्तिरहोहरषावो॥ कोउचिंतचितमोनहिल्यावो॥
करोमंत्रजिहचिंततुमारी॥ मिटैहैपापपरीयेतेभारी॥२७॥ कुलदेहतेलगेयेपाप॥
तेभीविनसेजानअमापा॥ हरअघतुमनमेचिंतनिवरहो॥ फलअनंतउपजैउ
चरहो॥ यात्राअश्वमेधसमतेजगुरुचा॥ याफलसोकोउनाहपहूचा॥ तातेतुमअ
समेधकरोहितना॥ सकलपापहरवसोहर्षचितना॥२८॥ याकेफलकीसंख्यानाही॥
समतेगनतनअघकदिषाही॥ श्रीरामचंदरसरधनंदनव॥ तीनवारकीयोप
रहितुधर॥ ३॥ दोहरा॥ तुमभीतेसेहीकरोमजवलधीरवधाइ॥ कोअघरहणन
पावहीकरोराजुसखुपाइ॥ ३०॥ अपुनराजतुममजवलेलीयोकपरनहिकीनाई
शदयालतुमपरभयेमतचिंतोपरवीन॥ ३१॥ चौपई॥ पितुपितामहकौवडेतुमारे॥
राजकरतआयेसुभचारे॥ तिहकुलमोतुहिजनमउजागर॥ भुजवलुतेजज्ञाननगुन
नागर॥ ३२॥ कैसेहाइअहालघुवानी॥ पुगरावोहेमपमहानी॥ रिषिदिनवनमोत
पसमालै॥ लिष्योविधातारनुजिरमालै॥ तुमअपतोहत्याइतपुभाष्यो॥ रेष्युधिते
जुतुमरेतपुराष्यो॥ येअपजाइवनेतपुधारे॥ करहोकौनजगरदासभारे॥ यतअपरेभोहि
सवधाने॥ राषतहोवलुइंद्रसमाने॥ श्रीपदुपतिसउोरतुमारी॥ रहेरेनहिदनहिरहिनचि
तभारी॥ ३३॥ जववचिंतवोतवअइदषरोवे॥ तोरइछहितरिदेपरोवे॥ पजसमजीतुमरे
धाम॥ सभविधपऐंजानुअकाम॥ ३४॥ शत्रुहानमनमेचिंतनिवारो॥ सकलपाप

३२ हां पुन पुकारे॥ रहे पुले तक्र ना मनु मारे॥ दोर दो रइ सी बचा उचारे॥ ३५॥ दोहरा॥ हाथ
जोर रुपी ति दीन हो धर्म जनि करट व्यास॥ उठ दादु आति दीन हे मुख ते कै रे प्रकाश॥ ३६॥
कहा ज्ञाय गर्के कीन तुम कठ नदि पावै मोह॥ वहु स्मान गंधन घणा चहीय ते हेगुन
डोह॥ ३७॥ भहमे रेगधवने नही देखो रे देवि चार॥ प जप रखे से पर कहे स्मान्यु प्रगार॥
३८॥ चौपई॥ दुर्योधन की वने न ज्ञाने॥ जे उपर जा धीर हत पुमाने॥ ताहि रा जपर जा
न धरे मरखु॥ समभे धनु हर रते सदे तदुरखु॥ ३९॥ भइ वपर जा फो छिहि धन गहे॥ वने देउ
मुखना दुख रहे॥ समभे शान धरे वन ज्ञाने॥ उन मुख देम मरि दि हर षाये॥ ४०॥
नाहि छिनि नमो धनु चाये कहवा॥ नु ममे रुचन छपी ज्ञानो समा॥ येज हो भप न मो
धनुली जे॥ तिन की गा पा पुगरमु नी जे॥ ४१॥ दुर्योधन मो पुकृह माने॥ दुहू उार
न पर शा दुखारे॥ को उर मरे रे को दू उन के देने॥ र सेव रे माने युध च्चे ने॥ ४२॥ उनके
युधने मब रहा ने॥ तिन को सुख दीये वने सुज्ञाने॥ नाहि उलर दु कथ वली जे॥
४३॥ पजा ववे से कीने॥ ४४॥ मन्धमे धके मैन नभारी॥ पहील पत रे सुन हो सुखु
का री॥ जन तमोरि से नार है ना है॥ वरे मु नी हर तेह कहारी॥ ४५॥ तीन मोहि
कहा करि ये॥ रानुपार वन तप साधरि ये॥ व्यासे वाचे॥ हे धर्म ज को हचि ताये॥
मे नदु व दये नु मभाने॥ ४६॥ मर रनना मुभ पन भये भारी॥ उनकी पोच नवेठो
रितु धारी॥ कहा नदु ख वि पुनको दूने॥ पवि युधनु ले परसी ने॥ ४७॥ पोउठाइ
मा पे ले गये॥ रहता उमी ठोर तज गये॥ मरनम पर धन कहे कहाने॥ तिर वदे रमोध
रे मु जाने॥ ४८॥ कैसा दान मर तन पदीने॥ इक गुनने मोजन भये भी ने॥ ने धन
ले नु मका ईमा धो॥ पजन पतो हार राधो॥ ४९॥ धर्मजे सा वाचा॥ दोहरा॥ दान दीये
मो दीये सक री नम लीन री काड॥ जगु उपरा मे ने हि रके डि र भीनी कन पाइ॥ ५०

मनोहरीं व धरहन कौ देख पय सरै जग माहि ॥ पुन सम वड़ी हरि पयस गहो हमरे द्वा
रौ हाम ॥ आग्र व घासे वाच ॥ धर्म जधन तु मारे जाना ॥ स तसे सो शील शो त के छाना ॥ स
सो स्वदवे वैन उचारे ॥ या ते तु मरे सं शनि कारे ॥ ५४ ॥ उतन धन के भेद जो को दा
ना ॥ भयो दिजो राजा नम हाना ॥ दिन ते द्दख लागधन तये ॥ ते धन उन ते स्वारे
भये ॥ ५५ ॥ सर्व दिजन दुहता धनु जाही ॥ विप्रा रहो धन एव तीमाही ॥ ए घ तीध
न भपन क सहा ॥ सिम तवे दमारि कहा ॥ ५६ ॥ परस रामकी सद कवारै ॥ ब्रजी घा न
कौ देव लभा भो ॥ भनक श्यप को दीनी दाना ॥ भई क श्यपकी भनमहाना ॥ ५७ ॥ त
व कश्यप भुम तज उठ जाये ॥ पुन छत्री भुम घेरत मये ॥ ते द्रुरा जुस्म च तु मप रसा [illegible] ॥
निरहि ते तो जे उहां सकुचाये ॥ ५८ ॥ ते रभपन की भनउचर है ॥ भपन को व धुदो
स न धरहै ॥ निरसं मे ते धनु ले जानी ॥ के तो यज्ञ स मे धम हाना ॥ ५९ ॥ याधन ना
स्वामी नहीं कोई ॥ ते धनु गहे न पदो पन होई ॥ दिज भरणा येन को दूर हायो ॥ ता व धन
तु मराम यो लषायो ॥ ६० ॥ धर्म जो वाच ॥ सारा जा मा न स्यावे ते धनु ॥ दोहि विधि स्व रचे
कहो सकल भन ॥ व्यासो वाच ॥ सु सुमे धप गमे हि दिज बुध वर ॥ [illegible] सों सम
विद्याधर ॥ इकु इकु दिज को रघु सुंदर वर ॥ ज रत सा जयु तदीजो हि तु कर ॥ ६१ ॥ इकु इकु
गजन गजरे जराये ॥ इकु तुरंग [illegible] शोभ मदाये ॥ कंचन जर त जरे सभु साजा ॥ ग
जरघु [illegible] सम सुभ रु च सम साजा ॥ ६२ ॥ गऊ [illegible] दिर षी रये दे ही ॥ व छुरे सह तन दे
रसम ते ही ॥ कंचन रतन समान सभ के ताग ॥ इकु इकु सहस [illegible] दिज को दरा ॥ इकु इ
कु स्व [illegible] भार भ ही जे ॥ इहि विधि दिय धन ता सम को सी जे ॥ पुन [illegible]
[illegible]
[illegible]

२२४ उसरा॥सावधान रहै है रे नारि नसुभर रा तु वल चर॥९८॥ तो हि भ्रात समुझै बली
या के न ग्राज्ञा देहि॥ सो निरवारे कजतु नगथ सान्वी सुन लेहि॥९७॥ चौपई॥ तु
म दनुवर्ण घनश्याम नपुग॥ वेदो भार शील सत धारे॥ मन मे सिन बुति सेय मधर
हे॥ तवे के उचित न मेहि न करेहा॥९८॥ वाम करि नहि ना सहा वे॥ मधन न्वी
रसना धल जावे॥ अंशीकार ता हि न ही की जै॥ येकी जै निस्च मखु धी जै॥९९॥
न व लै जस्पि परज्ञा वे ना ही॥ तो ला रहे शील सत माही॥ जे रतज समुझ पुनी
घउ तोरे॥ सरस्व गवे देदा न सुन्वो रे॥१०॥ हे मयज्ञ तहाँ जि कै दाना॥ दूजे हि त १२
चित नहे इस ज्ञाना॥ ड दूवि धदाने दे दु मधमाहि॥ नस भाल परप चलि षाही
१०॥ दोहरा॥ सभाल वे च न परा ता परलि षनि ज नाम॥ पुन लिषी ये जो च
ली हे वा धर्धरे निज धाम॥१०॥ निवे लरे दे वे दे उन पज्ञा ईमे लहि तु पाइ॥ ज्ञा
ना नि भ पवी ज र पठि ये तह ज्ञाइ॥१३॥ चौपई॥ वे बांधे ता सोर ता म हो॥ निज
भज्ञ वलता का वलु षहो॥ सम्भु डाइ ज्ञा तो के जा वे॥ न भोज पुने संग चला वे॥
१४॥ हे धर्म ज्ञ नेव पज्ञ वरे इहि॥ मन ज्ञो ह्नै वम रे वे जि हि॥ चपुन के के तज घन
उता इ॥ दया दान भुच शील रहा इ॥१५॥ वे कार ज्ञा घ इन मो ज्ञाला गे॥ भु ज्ञ त मि
रे पा पुसम जा वे॥ हे मत शील रहै संपत लरा॥ ना पे पा पुन लागे के उ जरा॥१६॥
जि उ री व उ रे हे हो इहि म उ रहै॥ पव न पुं व उ त्रि ण तू ल उ उ रहै॥ नि उ ही ब नि वे प
लरि नि भा रे॥ न घ सभू मि मे रेपुं न पुग रा रे॥१७॥ य ज्ञ रं भ स्वी का चित न ली जे॥
सु सा भ मुन के उचित न की जै॥ सोच पुला व सुधा रे हो यु॥ पिर पुण्य न या हि ने हो य
१८॥ धर्म जे व न्यू॥ कवित्त॥ सुन हे मुन था सतु म र भा मी है ज्ञा स मो हे ज्ञ पुने जो
ध उ करन महेश ह व र ग धर हे॥ वे म्रप्र र पो रे मे ना धन नाहि मरे ज्ञ न त्रि

हि तेपुराणधारे जैसी विधउचरीये॥ काकोपईये जो है अरुपईये कहिकाहिसो
रुचईये यो हिरदेवीचरीये॥ भातनदुखपावे मोहियु भआये अजहूं छेदमिटाये
पुनखेदभारउरीये॥७९॥ अविद्यामानपुत्रछिथवेतापितासोकभारढेततासोकह
तचितुलाजसोमरतुहै॥ रविसुतकेदुखशोकभयो महिमनवियोगकहवेकान
ज्ञावेयाहिगणतनपरतुहै॥ वहरतापेसुतकोजैसेसोकाजेकटनमावेकरोधि
याविचारमोरिदाजातिजरतुहै॥ नुमहूविचारसुहोयामोसुखदमारलहोदेछेहो
नदूसरयासोचिंताचिंतररतुहै॥८०॥ दोहरा॥ इनकोजैसेकानमोमनकोउ
खेदुपराइ॥ हमराजीवगएकछिनहोइकठनदिखराइ॥८१॥ पुनयदुपतिया
कैरयाहमइहिराजुदिखान॥ तेहेहारावतीमोहिहिविधवनेसुजान॥८२॥
पुनधर्मजसुतपोनपुलाये॥ तासोभाषेसचपुरारायो॥ धर्मजोवाच॥ तुलके
हतेहमेअघलाते॥ जन्मजन्मकेसुकृतभाजे॥८३॥ चाहरेतेपापुमिटावे
विनअसमेधउपावनपावे॥ जेमअसमेधजग्यरिदेविचरीये॥ वधहीसु
नतभारहरमरीये॥८४॥ तातेंविनतीतोहिकोकरहूं॥ जधिरदीमतारेन
उचरहूं॥ करोराजतनुमपुजासंभारो॥ हमवनमोतपुधरोसुचारो॥ तपके
बलहीरहोइदयाला॥ रेपापरमेरेततकाला॥८५॥ भीमोवाच॥ युजकरे
विलमोनाधिनजिवेव्यासपुराण॥ कृतेतेजजतायसुवधेभुजबल
शत्रुमारान॥८६॥ पुनयेकहोहरिदूरहेतेजानोनिजपास॥ जवमनध्या
वोपुजरहीदुखहरसुखेप्रकाश॥८७॥ चौपई॥ हरिहैंसदाहमारीओरे॥
हरिरोतेवधनाहिनथोरे॥ तीनलोकमोपापरहुध्या॥ धर्मअपनेकुलहोपु
त्रध्या॥८८॥ जैसेदपालुहोहरपदुनाया॥ कपानहीहोवेरमेरेराघा॥ धनसो

नाचारेहानुमजेतः॥ हरिरम्यात्तेपावनेति॥ ८॥ पुनर्योवदेहानुमहाद्यन्तस्मृतौ॥ छिन्नमोस्या
वाचोहरिम्भावे॥ जेसेदयात्स्वईशरह्मपरेहे॥ छिउनयज्ञस्वरस्मृघपरदृरेहे॥ ९॥ व्यासदेवते
पुह्मव्रजेरिनात्स्मस्ववनाइदेहिहोवेजितात्स्मरोहानत्स्यावेननज्ञावे॥ स्मपुनमनो
धरत्नेपावे॥ १०॥ पवनपुत्ररेवेनस्मनाये॥ व्यासरिदेमोस्मृतिदूरछाये॥ उपमभी
मचीधारउचारे॥ धनस्मृतपवनस्मसधीरसभोरे॥ ११॥ व्यासोवाच॥ स्मृनोभीमस्म
सुगाद्यमृत्वाधरमदूरहे तिस्मृतिदूरस्मस्ववरा॥ पस्मृमेदेशभपभुजवलस्मृति॥ दस
पूरनमैनायाधीमन॥ १२॥ स्मृमकीरधमभीहितवरेहे॥ साधधानरहेविलमुनधर
है॥ मुनन्नभीमव्यासयेवचना॥ हमहमउचरानेचउरचना॥ १३॥ भीमोवाच॥
देरहा॥ जोतनजावोउहात्स्यावोस्मस्वननजाउ॥ धर्मजजोरहरघाइहेतनमृतपो
नजहाउ॥ १४॥ दउधारनाभयेस्मपुनादास्मनाइ॥ नपवेपजसिरस्माधरोनच
मोमनमृरवुपाइ॥ १५॥ होवेपइ॥ यदुपतिवरेहमारसहाये॥ विउचितावोरिदेमहा
वे॥ धारनेहापुत्तारिदेमुनीजे॥ नामोकोउनसमशाकीजे॥ १६॥ येनुरंगनहीस्मा
जीदयाउधोरनरमोवासयाउ॥ धर्मजशीहनिहचेजीयजाने॥ स्मस्वत्स्यावेनहे
जउवधाने॥ १७॥ मोसोतेस्मस्वलेहुसभाजी॥ वरेस्मरंभजीयचितानिजाजी॥ दुर्यो
धनपकादशाघहना॥ सेनाराघतभारवसीरना॥ घहनसातरहमासीमेना॥ हई
विजेहरिपवजनैना॥ १८॥ दोहरा॥ स्मस्वत्स्यावोवेजहीदयाधरेयदुराइ॥ भीम
वचनस्मनधर्मसनमुखनेपरेप्रजराइ॥ १९॥ धर्मजउवाच॥ भ्रातधनन्नुहि
धारवलनेनैस्वचरेवेन॥ पवनकोतनवउनेहेस्मस्वत्स्यावेमुरवदेन॥ २०॥
चौपई॥ नवप्रिछवेतेजोरदोदुहाये॥ मुरवतेपरेस्याइपवनमाया॥ रमहोरराय
नोहिमनधर्म॥ स्मरिरायधेरानुमवेहे भूभवर्म॥ २१॥ कोधिमुहसोरतोपुरुधोहे॥

धत्रीधर्मुनिवासस्सचारे॥रणभनपुराणतजेउत्तमफल॥धत्रीरणतेनाहिटलैपल॥१०॥
३॥मैपतपापसदामननाहितभरा॥छिमाकरेतुमदासजानकरे॥द्रुपदसुताके
शीलरूपगंता॥ताकोअम्बरदीनेनाहिसंकता॥येकारजतेउपजेपापा॥तेकार
जउनकरेरघुनाथपा॥१०४॥पवरणहत्योतुमारेहाथा॥लहीरउगततुमकीयोस
नाथा॥ऐसेमहोतेहिउपकारे॥याकोरहतनपावोपारे॥१०६॥धर्मामहरायोन
तपाई॥सभउपमिरस्वरलोकवसाई॥ताहहतेतुमसनतचिंताके॥सभताके
सतुमोहलखावो॥येकधपत्रपतालेरहिजाये॥रहेनिवारणभुजबललखोतुम
रेकाये जाइसचारे॥शोधपापपितज्ञेनिरवारे॥नोहिटयातेटमरेसीमा॥ल्याये
कमलतुमरहेजगीसा॥१०७॥दोहरा॥येवनामसैनाउदधितामोटवकीला
ड॥नमलल्यावोगहिभजायामोभरमुनकाड॥१०८॥सरधसतवेवचनमुन
भीमकौशलालीन॥उपमउचारतकहतमुखधननुहिजनपुकीन॥१०९॥
सरपुत्रहेमसरमाकाडरकाडरहोहि॥पितसमनतुमरेबललखेसजसवधावे
तेहि॥११०॥चौपई॥वक्रभीमनिजमस्तकास्तवर॥तासोवचनलोहेअरण
करमेघवर्णतानामुपधाने॥रावसमायाकोभलजाने॥१११॥भीमोवाच॥
तुमवरोतकवसुतवलतोरा॥पितसमानमस्तधरोसनेहा॥तेहीपित
याकाधकीने॥ऐसवरनकोकरमकोपुवीने॥११२॥तुमऊजेनकेनिघररहे
।हितमधमंजरघरहेदेवुजितविता॥हमीवुघंकेतकोलेनिजमसदा॥ऐसमल्या
वैतेजसमंगा॥११३॥मेघवर्णोवाच॥मोहिपितुकीवडउपमकरतहो॥पुन
वडाईयोउनधरतहो॥तुमसापितायाहिकाहेकी॥निहचेधरमभजगोविंदोवे
११४॥घघापिकससनौरवउपायो॥परतुहिसंमप्रगटजगमायो॥जरुधापवि

२५१ उतंग गनो जाई॥ सो पुनीत जसु गंग चलाई॥ जिउ भान जस तरा घो संगा॥ सो को भि
लै च लोऽस भंगा॥ म गमो सेवा करे तु नारी॥ म घोऽरो मे वलरण भारी॥११६॥ ध
मे जर छहे तऽर्जुन वर॥ सभ ते उ त्र मुण ब्रुधनु घधर॥ सभ ज गवे ये भरइ क
ठावे॥ सो भि ऽर्जुन सम मनी द्घावे॥११७॥ दोहरा॥ धो वनाम रवे सनम रेवन
म युधु करे महान॥ हम ऽस पीठ चढाई न जलेऽ गावो सुगमान॥११८
भी सुता त वे वचन सुन हर्ष सो सधर हाथ॥ धू हम लाल व उहे तु धर चले
भा रहि तसाथ॥११९॥ इति श्री महाभारते पुराणे ऽस्वमेध पर्व लो॥ घ जैऽ
रे भवि ज्ञानना म पुत्र मो ध्यायः॥१॥
चौपई॥
मैनो व्यास देव पयगये॥ पजासिर न्याइ दीन व दुभये॥ व्यास विदा कीने उर
णव र॥ हो हु ला सऽ शिघ भारि धरा॥१॥ पुन धर्म जे पग सिर नाये॥ भये
विदा तीनो हर खाये॥ धर्म जं चिंता तु रसु ख वे वोले॥ यदुपत हे सु हि उ ऽस्मे
ले॥२॥ ले रहु राव ती दूरऽ तिगई हती नो च्वाले प र भु म सता॥ किया जानो वि
धा करे हि धाता॥ को विचार चित पवेन साता॥३॥ जिउ हरि दृपद सुता वे दुख
हरा॥ है घरा ज र ह मको व रण व रा॥ ति उ हरि हरि को जेऽ नि भारी॥ मेरे पराने
उर पा सुरारी॥४॥ दोहरा॥ धर्म ज मुख इह वचन यो ऽ पुन टेप दुना ध्यास
ननं द ह सनम दत मन दोरे व र्ड हित साथ॥५॥ हरि चरन पर सो सधर प्रेम
मगन भये दीन॥ हरि उठाइ लाये उरै रथं तनर रणा कीन॥६॥ चोपई॥ दृप
द सुता हरि वऽ गमु सुन॥ हरि पग सिर धर सुख गाव त गुन॥ हरि दरस मरे
पीर गई॥ सव ल वाम ना सफली भई॥७॥ नर जेहर हमको पीर भई॥ मये स
हाई श्री जर हरी॥ सभ भाम हर दुर्यो धन मोहे॥ ऽ ज्ञान गन उरी वहु रोरे॥ तव

हरि हैं से भये सहाये ॥ नगन नन करसा खेप कपाये ॥ वन मो दुर्गे स्नात्रि विस्नाये ॥
मो जन नमा गे कठ नव ना ये ॥ ७ ॥ हम भोजन न त व उठे स भी कर ॥ ७ ॥ हि हि ते भोजन
दे हरि रखी स्तुत ॥ संकट हर हरि भये दयाला ॥ रिषि मन नतो षक रेण नत काला ॥ रिषि
शाप ते मो हि रच्चा ये ॥ याका भेद वेद न ही पाये ॥ अस व इहि का जे क हा कठन अति
हम ति न संग रण करे जाने सत ॥ ९ ॥ धर्म ज्ञो वाच ॥ नी क की न कैसे स मक स्नाये ॥ ह
मुरे कार जस कलपु राये ॥ अस्वमेध यग करवो चाहे ॥ कक एक मी ये उरनि वाहे ॥
११ ॥ हे दयाल कैसे सी विघ की जे ॥ कठन सुफा जु स्गम करद जे ॥ नुम सी हि भीरु स मे क
कराई ॥ कीनो न पव दु अप दामि राई ॥ १२ ॥ दोहरा ॥ न वहि र हास्त्रे चौहि ने कहे पोन
सुत भार ॥ उदर पर जाने भले बुध मो नाहि उदार ॥ १३ ॥ अस स्वस्त्री जोहि न्नार हैं निहि
मिया वुद्धि रहाइ ॥ तिसको सैयो कामु नुम कैसे परशे दखाइ ॥ १४ ॥ कैसे जनन गमं तभी के
सेका रयमा हि ॥ चौहिल्ली जौ ये धर्म सत वेद वठे प्रगट हि ॥ १६ ॥ चौपई ॥ अ गहीन जो
मानसु रोई ॥ तासो मत नन की जे कोई ॥ लघु कुल की यया के र्जहि मा ही ॥ ते भी अ सक
ये शच्च नाहीं ॥ १ ॥ अनुम अषि चारे कैसे क ज्ञा ॥ सो पद धी ये भी मे हेर ज्ञा ॥ जसी स ध अ
र अ मरहि हुवे ॥ इन दर नु करे धार व ठुंदमे ॥ अजु न सो सुधरे इहि गमा ॥ यो पवि
त्र निज भच जहि वामा ॥ अस्वमेध कर्ति र कठन जन नाचे ॥ राम की न याने रस्त
नावे ॥ १८ ॥ रामचंद्र अस्वमेध करयो जब ॥ हन्नमान को सैयो अस तब ॥ ते भी मर
यम पव उवल अति ॥ हन्नमान सग अस राखो सत ॥ २ ॥ राम जाई निज भुन वल
मारे ॥ अरव लहा नली ये मुकतारे ॥ ताते अर्जुन पर हि का ज्ञा ॥ सो यो हे धर्म जयग
ला ज्ञा ॥ २० ॥ इहि अर्जुन ये तु असि धावे ॥ नृहि र छ करई रा को नहि दे पावे ॥ सुनन नभीम
हरि के इहि वचना ॥ हरि सो बोले हे वेन व उरचना ॥ २१ ॥ भीमो वाच ॥ हे हरि धर्म जसभु

१

२८२ गुनपरन॥ केतेयज्ञपरनकसस्चरन॥ हमनुमपीकलसणाचितधारे॥ कीयोक्ष
रेमईहकार्यभाखे॥२३॥ नुमकेरोउद्दरपरेयेन्यारे॥ क्सल्मत्रकिंउकाजुनिवाहे
नुमसेउद्दरवडाकोधरई॥ नुमरेउदरसवलोकिस्थपरई॥२४॥ तुमसमानकोओरे
कहारे॥ सवकेलजगतकसचोत्रपवनधारे॥ कमुनेकसवगुनतुमनविचारे॥
औरनकेउंलवसोधारे॥२५॥ दोहरा॥ पुनकहेयेजोवुलचीयाकरीविवाहकस
जान॥ जामवंतनसेरीछकीसुतानाहपरराजन॥२६॥ निजवातेदेषोनहीकसवरे
धरेकसंम॥ रकमणदेतसिसपालकोतुमल्यायेवरदंभ॥२७॥ कस्नेउक्त॥ योयोरे
मसेवहीसवलनुमधरनहे॥ कसचरेधनेउलेवन्याइनसीकरतेहे॥ पुनकहे
बलतुधमजाबलुकसधरे॥ उपरभनदेउंफेकवकहूकेवहूवरे॥२८॥ कस्नस्व
मेघघेकठनकरठचपुगटाइहे॥ करहेपरकीतमीरसान्तुलषेपाइहे॥ हमदेव
ननुमरीतुरकहमनकसजाइहे॥ नुमकसाकेसवलोकेनसरखपाइहे॥ जिउपवीर
रुखोछेघनकीवृदहिन॥ रेरतहेदिनरेनउधरभारचित॥ येघनननीहवरसा
इदोमनाकोवहहे॥ पसीकेचमोडाइस्वामीनजरहे॥३०॥ केहूतिसकोलियाक्ले
न्याइकरभाषीये॥३१॥ हमरेतोरकसधीनकीकेजेघनाधीया॥ कसस्वमेधवेस्मा
हदयालेकेसवरे॥ कथावलुवेलेरहमारवुचनभाषाधरे॥३२॥ दोहरा॥ वेनकसधी
केभामकेसनहरधभडावान॥ कंडानसजानेहेनकोनिकरता॥ कैनमरान॥३४॥
भौषधेकुतकसरवलोनेकसादिरहनेरणमाहि॥ निनकोदेषिजिवारहिनुकसस्वमेधव्र
डरोहि॥३३॥ कस्नउक्त॥ नुमकसजाणीरहनवरेसममपरलोवरे॥ नौवपललनेवरनुमा
गेरिहनधरे॥ कुंभकरणघाननोचमचा॥ पउपुत्रहमकहासीकरनुमसेवहे॥ नुमसमयोधा
नौरागेरेजानेपरहे॥ ३५॥ रमप्ररथनरहेकैरो॥ पञ्चपकरो॥

उपजे फल काम न जंतम सकल कम रहत न धरे॥ करपुण्य मन तपो न रच्चन पुराण दहे॥ जाको सम
सो के हेत ज्ञो नु मन मन भाव है॥ ३७॥ जब लों हम काम सत्या उतु मन तहलै न्न पर छाहि ना॥ धारन
रहो दया लव उधर हित चित ना॥ सुन हरि लीनी ना न सभी दर रव तन मये॥ निर च्चा राखे जी य
धन परलोह ये॥ ३८॥ दोहरा॥ पवन पुत्र प्रिय के तस न मेघ बलीसंग धार॥ होई विदा सम
सो च्चले तीनो सरव लार॥ ३९॥ चोपई॥ नासके पुरी निकट जाय हुन्चे बल देगी है॥ उच्चा के
रख हुनी दुउ च्चहुं दिस नर रवर तेहि॥ ४०॥ चौपई॥ रूप वाव ली ता लखप पोर॥ पुर च्चहु दिस
के लेज लु भारे॥ सुंदर सर सधाम काम नि रुच्चे॥ जिन पर दुष्ट दार न परहून्चे॥ ४१॥ पुरजन
सखु सम मपर रिख रही॥ चित शोक काहू मन नाही॥ सिमरन भजन करे सब लेजन
सभी सजन कोउ नहि कठोर मन ना॥ ४२॥ गरीहि गरीह वेद पाठ पुन माही॥ फल ते प्रिय फूली
फुलवारी॥ रागरंग आद न करे न्ना विहावे॥ ना पुर रोगी कोउ न दिखावे॥ ४३॥ रवाइ तीन जंगी
रव ही ख्याति॥ को रच्चो फेरे दुष्ट परे सत॥ तीनो दिवस रहे मन न माही॥ शोभन नगर न र
रली जाती॥ ४४॥ ओषधु उवाच्च॥ हे रवि सत हमनि जपुर देखे॥ जानन ते जीय माहि रव
शोधे॥ सब जानै मा वेतेन्नी की॥ नगर च्चना धारी हीर जीकी॥ ४५॥ पुर सम पवर सं
रर ताला॥ सवली भीत जल नु विमल विशाला॥ जल के जीव शोभ का नि भारी॥ मेरे
नूर लरगन रव नु कारी॥ ४६॥ ते कम सवनि सी ताल जल लहे ते॥ मि तरुपाव न जल लगन
वम सुच्चे ने॥ चई सर सब मर रब लु बरही॥ नग सब रछा हित सोक्रानि धर रही॥ ४७॥ दोर
ना॥ दही भी मप्रिय के तसो मोमन नी क उपाइ॥ पासिर मोर हे सोपर मकास्च की दख
मराइ॥ ४८॥ जब कम सकाो बेना सहि ठहरमा तिर सर पर जाइ॥ सिर हमारा गर जाव
हीगर रस धरे हि भुलाइ॥ ४९॥ चौपई॥ हम उन सो कर रहे संगमाना॥ नुम मुहि रख
वरेका मरामा॥ प्रिय के ना वाच्च॥ दम रबहन सैन्नाई हिधरे है॥ नाते सब लस भन प

गपरेहे॥४७॥परभरोसतुमपरक्षतिभारी॥जीतेजोइनसोबलधारी॥कौनशकततेसन्मुखर
हे॥येइनमेलखइरवठेरहे॥४८॥ईहमेजिनमातेषुगरमे॥जिनकोजगतनाहकोठाने॥
जिमसमानउननगरजावै॥परेसुतालवलीदिखरावै॥पुनतुरंगवेजगतसंदरक्षति॥कक्षा
पुगरेताताललनिधरसता॥तापाछेसरेजरवीर॥कक्षावनकसबवनेनिरपोरे॥४९॥शत्रु
वरसमुचडेतुरंगे॥पाइकसागरलहरउमंगे॥दुंदभसंखभेरवहुवाजे॥युद्धकानेअभं
तधवधाजे॥५०॥दोहरा॥तीनेदेखिविस्मभयेतवरोविसतउचरान॥योवनासमीसे
नमोनिसवेदेइमहरान॥५१॥चौपई॥येशोभाहीरनकीभाषे॥तेरूशोभसोईरक्ष
सराषे॥जलकुसवचलेभीमुउचराये॥हमरेमनवडुअंसपराये॥५२॥यातुरंगहि
नरमईहाकाये॥केकसवइनमोनाहीदिखाये॥लछीपततेजोहमारररहाते॥वहीठी
रजलकुसविपताते॥५३॥केकसावेहमरेहाथा॥हमराजोरउसीकसमुसाथा॥ते
कसवेलजावैसरवुपाये॥नातरगोडपामुखलेघरजावे॥५४॥इहीमारिहसेनकसनअंते
वभीदुसखेजारजते॥मेघघराजिउकसावतमारी॥शोभसुसेवेतेजकपारी॥५५॥ता
पाछेकसवयोईरिखारी॥चहुधवसोकावतातिहिमारी॥कसचढीदसरथकोरि
समाने॥कावतदेखधकधकाने॥५६॥हमचालतेकसमधसोरे॥योदेयेसभ
कामनमोरे॥बनरमेरजनततेजाही॥मनमाथीकोदूवेठेनाही॥५७॥वमरमोरघ
उसीदृहीवरा॥चनमयनगजरेकधिकधरा॥पाछेजनउनमककअंता॥कन
करजनमहलेधवंत॥५८॥वदूंसजकसवनीधरराये॥मगनकमोसतातेवउसु
हाके॥सवतारलरतनोसेजरी॥वनेहीरेचउधवमरी॥५९॥दोहरा॥कसवेनि
रधतीनोरथमेघववेजीयधन॥देरतुरंगगदेखावसेमायाचीपरवीन॥६०॥पर
नपुचपधतालसोधेपाउपजीमननतोर॥परपुलतताहदोहिसभीदसावतेहमो

हे॥६॥मेघवर्णोवाच॥चौपई॥सुनोताततुममतघुघुकारेहे॥रचकोषेतनसाभु
मघरहे॥भुजनहद्दबलअसदपीठचढाये॥त्यावोतुममेरेनिकरमढाये॥६५॥सुत
युतयेवनाशकेघेरे॥पक्षस्यावोलगेनवेरे॥हनेहीतेतुमघेदुनकररहे॥सम
विधानिजोरोदस्वीतिविचरहे॥६६॥सुनतभीमनहसकऊपादीने॥घसलेवो
हेसतपरवीने॥लेकरजाहूघोउपराही॥लघचपलाममतेजुधराही॥६७॥
दिघसरउरेहुदुपेजाये॥केरदेवघुलक्षीनपाये॥केसेतेजकेनपरकाशे॥
ज्ञौहदिदघहमुरेधीर्यनाशे॥६८॥सुनसरदेवकोपक्षीतिजीना॥कहेउपावक
धकरोप्रवीना॥शस्त्रपरस्परतहीजमाये॥पुगरतेजोदिघवक्षीसमाये॥७०॥
देघरहेकघुलक्षोनजाई॥पकोपकस्परतिहनिकराई॥हेतशीघसरमुख
उचरायो॥केतुमकैसातेजुधरायो॥७१॥क्रोधिहकारणतुमकाजनजाने॥सा
चकेहारमानिहचेमाने॥केतुलकोतुमनाजमहाने॥सुननतजीरमुख
करतवघाने॥७२॥मेघवर्णोवाच॥हेसरहमुरेमतभयकरहे॥तुमसेलोगह
ममेवेरविचरहे॥सततसनीरकामेंहिसतजाने॥मेघवर्णममन्नानपधा
केो॥७३॥धर्मजसस्वमेधकीजाम्मा॥मेंहिस्नजाणमेहेदृतेपुराणमा॥योवनाशचे
वलपतीन्हजाये॥जसस्वलेजावोकेरमस्युनाये॥७४॥समभसरभागुयजतेपावो॥
रहेोस्वक्तिचितचितततनाबो॥हर्षवसीवसमभजाइवघाने॥सुननसरपतीर
रेदेहरघाने॥७५॥दोहरा॥देवनपतिदेवनसरतचढविवानततनजाल॥कौत
केदेघनहारतचजुस्झायेभुभमाला॥७६॥इतिश्रीमहाभारतेपुराणेअस्वमे
धपर्वेलासरपतिशंसविरहरणंनामहतीयोध्यायः॥२४॥दोहरा॥मेघनादमायाक
मेचलीपवननततकार॥उदेवघलेधरघनरषिलेप्योदिनपार॥१॥चौपई॥

रघवो रेकुमरे भयमा नेभजार जपरो मरचपलसमा ने॥ केसीधुनसमभेपरीका
ना॥ भयेवधरतनवलु नरहाना॥ ॥ नसमणीहली येनंकमरम जवल॥ ३॥
योवीरच उते जसे ननमस॥ दिषसमभयपुतवेरपुकोरा॥ नसव लेगयो कोउभ
जभोग॥ आपसीरारदुदडीहभाता॥ घनेरतेपुमपरडीहसाता॥ डीहमेनसमस
णवीरसुपाये॥ दिवरदेकहूना॥ दिदषाये॥ ५॥ करोहरषउपामवरषाने॥ करी
कीरके उपमनहाने॥ उपमावरतचलेसरगेहा॥ भानुजभीमरहषवउने
हा॥ ५॥ उपमवीरकीहिते उचोरी॥ कोसपरलसकाजसवोरो॥ धनतुलमा
तपिताहितनने॥ जनमेरहषरेरेकुलीजनने॥ ६॥ दोहरा॥ योवनाशसधपा
इवेभयो चितचिसमान॥ वरतवचनससकाइदेवेकोसमवलीमहान॥
७॥ योगीसैसीमेननयलेगयेनससवलपाइ॥ नसवमहिमरवेसपरेर
जाव॥ चनरेडानसनाइवउये॥ दुदमधोरवचउशवदवगयो॥ ८॥ रयेचडेमव
चलेपवचवत॥ मुमेघवणकेताडीनसेमता॥ लीनेघरवीरोसमहो॥ मस्व
पुहारमसाउनमही॥ १०॥ हसनवीरमुखनेपुजारायो॥ तुमेकासुमेयेजीहस्यायो
डीहकीरसउणके सधुसम॥ हाथनतेगीहलीये त्रिलोवतुतव॥ पुनपणा
नभोरपुहारवराससमरेकुलपरेयमरेघर॥ नीवतकोनतजोसममोर॥ ॥ ॥
नसमता तनिकरोर॥ ॥ दिषरहैमननमोनसमेरे॥ उपमवीरकीवरतचरे
हे॥ सवर्वलेवा॥ दोहरा॥ तानतुमासीरपातेकसकासवोवलपाइ॥ योवना
सनपुपुवमनकाव्येडीनरहाइ॥ १३॥ नमकसमवीरहवकरोहमीनतिसनमुरव
जाइ॥ उनवेवलपतीकाइदेकसावोनेजममहाइ॥ १४॥ इषेतेवाचा॥ धनड

हैजिनकैमसीकीनी॥ डैमसीविजेनकाहूलीनी॥ वईहिघेदुनिवाम्हरावे॥२
मउनसोयुधवरोवनावे॥१५॥ डेसेसभाघतधनुघुसभारे॥ डारजनतचलमोसिंह
कीसारे॥ सूचउचारेमुखसोबानी॥ रेघेचेहोवासोविधानी॥१६॥ हमतुमपयुघु
कैहतसाये॥ मेहोप्रुगटनीहिवैरोछपाये॥ सुनकारदेरेकोपमहमें॥ लीयोवी
रकोघेरतघाने॥१७॥ जिउरविलोपेवादरमाही॥ तिउवघेतसेनमधमारी॥
निजनिजशस्त्रप्रहारकराही॥ मारिरदिभारेकोपकराही॥१८॥ रिमवीरचर
वानप्रहारत॥ रणभूमसमघाइलकरडारत॥ वहुरततेयमपुरीपठाये॥ करी
तातवहुवलुरणपाये॥१९॥ निजवानेकमारेवानि॥ उरउकरीयेनाहिरहे
नै॥ वीरवानवृत्रियानपरई॥ हतसीमेघाइलकरही॥ वहुमारेघोरे
हिगये॥ मारधीरसभभाजतभये॥ योवनामसनाचितोचेताधर॥ मरवतेवेन
केहेमनारिसमर॥२०॥ पोवाच॥ समाचईहियाधवीमातिमकरतेके
प्रुजरीमेयरसत॥ हमरेवानीव्रयेसभुजावे॥ सकेहमकेमैदिघावे॥
२२॥ दसमरसमराजनामी॥ इनमारेहमकेवहुस्वामी॥ पुनपेमारे
केतवसेना॥ राघतदेसजाभुजवलपेना॥ २३॥ होइसेनचहुसेगति
हजिनकेमेरणकीना॥ उनोमघोवोघोनघोतीनोहेपरसीना॥२४॥ इउ
वीहियोमसुलेउघोदुसरजिहियुधमंडु॥ इतुकीनीसेनासवकेलभुजवल
तेजप्रुचंडु॥२५॥ लेवाचइ॥ तीमरलेकमसीगिरपरेवेवमातुरुपएकजीतिभासेके
डा॥ नारिस्लघेरमसोकिया करई॥ रामउपाउमुहिरिदेनपरई॥२६॥ नरनेह
इजिनकेमेकीनी॥ इमलाविस्लरइहिरतीने॥ केनरतगमलेहसेनमरोडे
हहरनसावेरणतजभाजे॥२७॥ पेसमरइनरोजाननदेसे॥ हतोलेपुन

२८५ येऽस्मत्सेनेचे ॥ ईदृशीं द्विमपच कृपां वडु तेऽज्ञा ॥ सैन्यापाके सं गज्जसेज्ञा ॥ २५ ॥ द्विषके तए
कलाझीरणलरही ॥ शत्रून्नमेयुधुके रे नउरही ॥ जिशपरच उैया भीमनिरषाही ॥
भीरवीरपर ज्ञवरीदवाइ ॥ गजादाशपजी हि देस्परान्ना ॥ रीवसु तसु तसोमुरव उच्चरा
न्ना ॥ २६ ॥ भीमोवाच ॥ एवं सज्ञामुवीर नुममा ॥ अस्रवनुमके राघ दुनिरजा ॥ २मइ
न्नमोधर हो संज्ञामा ॥ तोराइन्नेके वल्लकु मरान्ना ॥ २७ ॥ द्विषकेतोवाच ॥ तात कार हतु
मखेदकराउ ॥ इन्नशे हतवडपनन्न धराउ ॥ सरस्रसरन्नसेयुद्धनुमारे ॥ ईदृ
मान्नसीव यादीन्नीवि चा वे ॥ २९ ॥ इन्नमोयुद्धके रेस महीरण ॥ रहोहर्षनुमता
नधीरपण ॥ ईदृशे सैन्या त्रीयसमज्ञाने ॥ हमुरीवधभीमसतमाने ॥ ३० ॥
पुषमभये रमयाके सन्नमुखा ॥ कीयेयुद्धइन्नसो हमरणानिष ॥ याते सन्मुखु
भइनुमा ॥ ३१ ॥ न्नाहिन्नमेरेयुधकुन्नसा ॥ ३२ ॥ भीमोवाच ॥ द्रोहरा ॥ सुतकोसे ये
चारतनुमके रेयुद्धमन्नचाइ ॥ निरवेनुमहीरतोरेरणभनमोवलुपाइ ॥ ३४ ॥
कृष्णवाये वडुमन्नुधरे शत्रुवलीरणमाहि ॥ तवरमकज्ञावे विस्मृत ज्ञ यामोशं
मान्नाहि ॥ ३५ ॥ मैापदं द्विषके तनीन्नपुज्ञमा ॥ कैन्ने चरणाभीमके वेदपुत्रीन्ने
शत्रुणसन्नमुखसरपररहारे ॥ वहृषाइलके न्नेवडुमोरे ॥ ३६ ॥ वडुधर्मधीर
वडुभडभयाके ॥ योवन्नासींदषकृष्णाकृपारे ॥ गज्ञपरस्व डैया वेगरणञ्जाये ॥
मुखते वन्नन्न वीरसोजाये ॥ ३७ ॥ भैमपोवाच ॥ नुमपदातहमगज्जकृष्णा रहे ॥ च्चा
इन्नाहिन्नुमसोरणडाइ ॥ गज्ञनगाइवारयुनीरदेहे ॥ पुन्ननुमसोरणभुम
युधसेरे ॥ ३८ ॥ नुमोदूरतेकुगामठाने ॥ मनसेन्नाइयुद्ध पुगढान्ने ॥ देरिवा
लसंदरीदुजपरहे ॥ न्निज्ञबुलनाम पुनारझवकरहे ॥ ३९ ॥ नुमनेरवलषा
इयुधकररहे ॥ कृष्णवाशं तधीरारीदधरहे ॥ द्विषकेतोवाच ॥ वडुार्हमारा

अरुपपडजानेो॥ ताकासुतसरथपहिचाने॥४॥ सरथेरामतनवरणीवलना॥ याकेवलसमनजग
नीदेषारी॥ ताकेसुतनेकोवुगररीये॥ त्रिगवकेतुनामहमराविनधरीये॥४१॥ सुहिपितद
त्योवउपुरुषराही॥ दुर्योधनकेपवुधराही॥ गरवधमेजरासमेधरारतदे॥ तुनहरतकेसाध
हानधरतहे॥ तहांएहसमवेलेजानेोभया॥ यामेशंसमनाहिकसमनपा॥ तुमकहोरघुदेहुम
जाये॥ तुमरारघुमांहिकाजनकाये॥४३॥ तुमराउसवेहमलीयोभुजावल॥ हमतुमसेआ
रीउपजीकल॥ करकेरथोगोहिकाजहमारे॥ तुमहीदेधोरिदेविचारे॥४४॥ सुनकरपदरथ
वडीउपमाकरसमरवतेवचनकहेचितानहीरे॥ भयेवाचादोहरा॥ करलेबानप्रहारकल
मतकघुरिदेकहाइ॥ पाछेहमपरहरकोरेसाचुमेहेपुगटाइ॥४५॥ सिसोवाच॥ तुमकप
वहुतेसुतधरोहमतेवडेमहान॥ नीरुकनाहिमोमसेलहेमतवाधेनिजहान॥४६॥
चौपई॥ सिसपालकेसेवचनसुनेजव॥ न्रपकुपहृदसवानतजेतव॥ काटेवीरस
सभीनजमाही॥ पुनइकुसरन्रपडोरतजाही॥४७॥ देहिमेदनपडीभयेपारे॥ चि
हस्सधमपपरोभमकुरे॥ छिनपाछेपुनहेसवधाना॥ डाढोधनुषकरवीरदिषा
ना॥४८॥ चंदुवानवीरपररहरमार॥ करकाधनुषुकत्योनतरणधर॥ पुनदेसरकार
घतीलजाये॥ भुमपरहुत्योविलमनलाये॥४९॥ न्रपकोचनरकुलावतजेकुडठ
सरजादहतुकीनातेवु॥ पुनसरवलगजकुंभविदारो॥ न्रपरघेदोरच्यउयोरिसिवा
रोपमतीधवानकीनेकुपपरहरे॥ छतीवीरकीजाइकीयोघरा॥ वीरकोपमरचा
रथुहारो॥ यातेऊडिननेतुगतुगारे॥ करररपुकेगसवचारेमारे॥५०॥ इकवानेसा
रथीहतानना॥ पुनसेनतोरहसवुडारतवाना॥ जितावितवीरवानतुडिधावे॥ वानवी
नाकेतुडेरनपावे॥५१॥ उजीधरनभमानतुलुपायो॥ धनकसाडामपुलेजना
यो॥ इकडिनवाननपकोपवुहारे॥ यातेऊडिनतुगतुगारे॥५२॥ भुजारहाभमक
डिनकीयोविसम्यारा॥ न्वासतेजुभारीतेभारा॥ त्रिपकेतवीरकेहिगदोरीसना॥ चिर

बवीर विस्मायेन्हि दिपला॥५०॥ अवर्सांजमरत तकी येपुहारे॥ मेटी कअडि नीता हि वर्ध अपा
रे॥ न्वप पुहार कीये॥ पवनकअन्द्वितवा॥ बधांमेरडाई ताके जवा॥५१॥ पवन बीरको कीये
जुअआ तरा॥ ताभी सरपर हारतचातु रा॥ डार समन सरसमीर केअडे॥ रहे रोक न्वपीर
दि वुपुजाडे॥५६॥ पुनमपत सरवर्ध कराई॥ भमक अकाश सरपरादि धाई॥ घने
सवान वीरतन लाडे॥ निरखभीमको वडौरस जाडे॥५७॥ कुपधर अत्र र कौडारसि
धाये॥ न्वपन वसिस तन वान लगाये॥ लागतवान वीरसुधत्यागी॥ चिन्तसमा
नरहेभुमलागी॥५८॥ निरखभीमचितातविचारे॥ मोसंगदीयेधर्मजडीहवारे॥
घोईहीं ममकामरणदिवाडु॥ किपामुखलेधर्मजपे जाडु॥५९॥ जदा हि घअसेना
परये॥ डजरपुअसपाइकभिंघरये॥ जहिलागेतेडुचुरकटहोवे॥ सोडुवचे
सनमखुनघरेवे॥६०॥ डजरपसन वडु नुगकीयेरण॥ अरकी सेना भईभय युतघ
न॥ पवनसन्नन पवनसुतेदारे॥ चोधतवाइकीये कअरवारे॥६१॥ भीमतेज केडुस
हन सकावे॥ समके रिदिथर थर कंपावे॥ रणभूम चलेरक तपरवाहा॥ मजा
रधरकी चअमगाहा॥६२॥ दोहरा॥ स्वेडनामुन्न पसुत वलीपाम जवलुनोह
पारां हारइभीमके सनमुखमखतेकहत उचारा॥६३॥ न्वपसुतो वाच॥ येराघत
हेभुजेवलतहार ममसों संग्राम॥ मो सो तुममें के सेवचो जिउचिरीसिचाने धाम
॥६४॥ चौपई॥ भयोपदातन्न पसुतरपुत्याडे॥ व्याइनीन मननमेकअन्न रडे॥ पव
नपुत्रके निदरपदे खे॥ रपुतजदीने व्याइ वशेषे॥६५॥ दोडुवीर करगदा जरावे
सिधनीजिउ लरहीडर जावे॥ न्वपसुत गदाभीमपर डारे॥ यहि हिलडोपरवन हेड
धारे॥ भीमुनारहेरवसन जाने॥ अरसन्मुख निजगदात जामे॥ न्वपसुत
भीवक्ष भूमुन जनावे॥ डुहुकावलसंग्रामनहीपावे॥६६॥ अलरनलरनदोडुप
रपावे॥ सधन जदोदभुमें वेडे रहावे॥ भीमसेन उठये पुपमाही॥ अरेडठाइली

ऊ बलवाही॥ फिर परे फेर फेर भ्रमता ऐसा॥ नृप सुत उठ पुन युद्ध संभारै॥ कोप भीम को पक
र भुजा बल॥ पर का योवल भार भ्रमत तत्र॥ दुसा भीम बली उठ तात तक ताल॥ नृप सुत ऐसो
गहि युद्ध विशाल॥ नृप सुत भुज बल गजे उठाये॥ भीम तोर ऊसो बल सुपाये॥ १७॥ अस्त्र
तगा जाहि भीम बली छोड़ी तौ॥ ऊ से अवरे ऊरे भुज बल स्मत॥ इहि विध बहु संग्राम भ
ज बल स्मत॥ इहि विध बहु संग्राम करे रण॥ पुन पर लव पराने दोउ बल घन॥ १७॥
मुख न्वपेर लात पर हारे॥ लेरे वीर दोउ ऊ कोउ न हारे॥ नरत लरत दुहू सुध बिसरा
ये॥ भ्रम पर पर रेन शक तपराये॥ १८॥ **दोहरा॥** योवनास कौ ऊतर दे घरी सुत सु
त बल धाम॥ सर तजन्न पकौ सुध हरी जहू तो युद्धको ग्राम॥ १९॥ सुध बिहीन
के जाइ तिन वहे वचन चित ताम॥ हे हरि इहि न पुजी उठे करण को राम हान॥ २०॥
चौपई॥ हम धर्म जसो करि आये वचा॥ हम कछु स्वन नृप सो लेकौ वे सच॥ नृप के
सूये ब्रिय पुण पर ही॥ याते हम इहि विनी उत्तर ही॥ २१॥ सिसु कौ विते सुन तहीर
मानी॥ जीव उठो नृप भयो सबधानी॥ ब्रिय केतसी स पर घर ऊनिहा हो॥ देघ दे
व नृप सवन उचाओ॥ २२॥ **नृप बोवाच॥** हे मिस तो हि उपमा कियाकी जे॥ जनि
भारी पुनतो हि दिखी जे॥ हम यो निह सुध येतुम चाहत॥ हम रे प्राण पमजो हि
निरत॥ २३॥ तो हि उपकार महि हि व चेपराना॥ तुम सो लरत न बने सुजाना॥ यो
ऊ बल तेरो कत घुक हाथू॥ बुद्धि हीन हू इच्छा धर्म सदा तू॥ २४॥ **दोहरा॥** मो हकत ब्र
न जानीये जानत हो उपकार॥ शांतधीर तुम सो जहां धरे हो हे तन अपार॥ २५॥ इ
हि अहि प्रा स्वत जाइ नृप शिशा हि गज्ञा ये हेत॥ जंके अमाल दुहू कौ नत ववे रमे
रहितुं चेत॥ २६॥ **चौपई॥** कछु पुन राज तुम्हें सम भे देवा॥ हुइ दास नस्स मतुम सो
से वा॥ नृप हि प्रसाद धर्म जदर स्मा वो॥ शोक हरहरि प गपर स्मा वो॥ २७॥ तुम गोपता

२४३ कर्णो जित हि नामना॥ हृतो सकलं जगमो बलधामना॥ ताकेतु मसपत बलगे हा॥ ज्ञाव नु मसो
भयेन्स्मधिकसन्ने हा॥ ६॥ दो त्रुट्ठभी मेपेज्ञायो॥ याज्ञो न्वपमन तलरत तदोय॥
न्वपदकुराद्युस्ते तेप्रहि लीना॥ वि ववरसोगस्यो भीमपुत्रीना॥ ८३॥ दुह्रूंकोदस्ते
के ना ल ल र वाई॥ पुत्रपरहरधे वह्रजध काई॥ मेघवर्णोस्तन दृष्ट्वा तज्ञायो॥ सुत
सपान्नवमि लज्ञातिस्वरवापायो॥ ८४॥ इति श्रीमहाभारते पुराणे अश्वमेधपर्वणि
णि पुत्रस्य परह्रष्ठ उपजावन्ति तीयोध्याय॥ श्रीः॥ भःपो वान्च॥ दोररा॥ परत्र वेशकी
जेरहरघहारपुत्री तलघ लोक॥ तुमरेदरसनजवके रेमि रज्ञा वेसमशो वम॥
॥ चौपई॥ तुमस्तपत्रुधर्म के रूप॥ तुम सामान्यरज्ञोरकोभूप॥ रविको वंसमुन्निय
केनउजाडार॥ दोयपुत्रामेचो वरणाधरा॥ २॥ तुम तो उपनज्ञपारदिखाई॥ पैखदी
येनेउबनेमराई॥ ज्ञबड़ी विनतीसुनो हमारी॥ धर्मजसणदेखो गिरधारी॥ ३॥
जने के दरमन हमुरेपापा॥ जन्म जन्मके मिटे ज्ञनापा॥ राजदेसमभुतुमराभ
या॥ दीपजपरसाखिवरमया॥ ४॥ दससरस्वगजस्वेतरणोवरा॥ मोविनुनादि
ज्ञवसन पवेवरा॥ नेसमभुभेरवोहितधोरे॥ तरस्तंरतज्ञनेव उचारे॥ ५॥ जे
सेज्ञस्वकाहृके धाम॥ स्वेत्रभी हो विनज्ञकाम॥ वेन्व ननगमो तीज्ञननंते॥
करो भेरहि तधरेज्ञनंते॥ ६॥ चौपई॥ वंशपायनो वाच॥ बहुतज्ञादरधरपुरनो
ज्ञाते॥ दरबतभिन्नमतवमतलमनाते॥ ७॥ दोहरा॥ भीमभ पदेत्रुणवतजच
केपुमन्यधनाद॥ चित्रबकेतमहतन्वपमत्वे उद्धमरगजाहितभाइ॥ धावत्रुध्व
कीये पुत्र वेशपुरपुरजनादिवद्दरथा हा॥ भीमसीसपरवारधनुउरेगनेचजाहि
॥ पुत्रके न्यायालीवरवरतानोदी पजगाइ॥ चंदनजादि सतोधवरपुहपमा
लमरवदाइ॥ ७॥ चौपई॥ धपदीपज्ञारतीवरधरा॥ केतेनिधावर गोवेसरमरान्ना

जापलवर्षडिंउमेहा॥मंगलहर्षभयोसभगेहा॥११॥वजेतवाजेआयेरजधानी॥अ
इदोरहेतवररानी॥एकहाथफूलनकीमाला॥दूसरकरआरतीविशाला॥१२॥
भीमनगरेमालाइलुमेल्ली॥दससहस्रसंगसुभगसहेली॥इनकेमालअरचम
रधराई॥धूपदीपआरतीकराई॥१३॥नपसुतभाभिनारहेतधरा॥बिधकेतसी
सपरधनवारेवरा॥जोवेदेनपसभामनओरे॥मपभिनयुतआनंदमोरे॥१४॥यो
वनासभारतकीघाघा॥सुनीभीमसोवडोहितसाघा॥पुनभोजनवहुभांतवनाये
मछभोजफलसरससहाये॥१५॥दोहरा॥समनपभिलभोजनअचैहर्षतशो
भअपार॥अहमलालनपुजानइअरएकरीमुरार॥१६॥पुनदुलासबीविल
ससेअर्थीनशावीताइ॥सोयेसरवकीसेजसमअआनंदउरनसमाइ॥१७॥
चौपई॥भईप्रभातहोइसररउदेवर॥अरजतेलफुलेलइकठकर॥तीनोकेअंग
गमरदनकीनो॥मजनकरवायेहितभीनो॥१८॥भोजनहेतरसोईल्याये॥चहुं
कारकेअंगजनभाये॥भोजनकरपुनसभमेंसिंगारे॥मिलवैठेचिंतहेतअपारे॥
१९॥नेठीमचोसमुइकठाने॥तिनसोकहेसपपुगटाने॥सभुपरजासेना
सोकहे॥चरनाविभुकवालकजोअहे॥२०॥सुपोवमच॥जपुरसोहिपाआना
जानेोसमकधुअरजानेइकठाने॥पुत्रअलितिवरुदेवसहदतअरा॥धर्मज
हितहरिदरसोवोअरवा॥२१॥दोहरा॥तबवारहरलावेनगरनपकीअआजाआन॥
केचनवासससदस्वइवुधासोलगेमहान॥२२॥दुंदभवाजेमारधुनजगारजे
बनसार॥सवलसनअीइकठअरचलोमपटरथारा॥२३॥चामरछत्रदु॥दसस
हस्वरानीमपकीवेचनसिंघासननमाहि॥नगजरेरहिससजेलकेहीरेमणी
चमकाहि॥उजरथनुरअनंतवरछवपालसोसुरवुपाल॥पाइकसमुदुलहर

पुनि बहुते जे भैन विशाला॥२७॥ दिन्नु रैन चलही है तुझ्ञात न्यपु के है कव पहुंचा है॥
कव दर्शु पावो कहन काइ ही चित वन्नी जीय माहि॥ ज जपु भनि करे पहुंचे ज वीछव
भारे ते जमहान॥ सुन पान सभे उ नारि नि ज गये ते जु भारी हान॥२५॥ पहुपति सहत
धर्म जनि रथ तवली यो ग से लगाइ॥ मुख स्पीस च न्यो प्रेम से ग या सुने सुख पा
इ॥ जि उमे घव र्णक रे भुजा वल ये है सम पुग टान॥ त्रिप के त के संग्राम की ग घ ज्ञा
दिखंत वधान॥२६॥ पुन शीत सुख जि उ भ प से भये शा कहे सव ल प्रकास॥ न्यपये
वन्न श उ ला स ज्ञा न मुस्न त भये विलास॥ उप मइ नो की ज धव करे जिन ज्ञीत
व डाई कीन॥ ज ग ह हं न माव ही के है देम ल्ला ल पुजी न॥२७॥ दोहरा॥ द्रुपद
सुता को सुध भई ज्ञाये भीम सुजान॥ यो वनास सुत न्यारस हज्ञाये मिलन म
हान॥२ चपचाम र छंद॥ जे नन कुल सहदेव धर्म ज संग मपज पार॥ पहुपति
सहत ग ज रथ च ढे चले ले न वहुरि त मार॥ पुर जन सभी संग सो भ ही छ वनो है व
रनी जाइ॥ वहु भांत वाज वजा वीधु ज फल न न काइ॥२८॥ सुन ये वनास विला
स देखो मिलने जाओ है हाइ॥ कर जोर ठाढ़ मिल्यो वहुरि त भा ग भ पत सोइ॥ फूल न
भेप भीस ग यो ही र ली यो ग लगाइ॥ कम लधर्म ज सो करी दो उ भये हर्षमन
हाइ॥२९॥ पवन सुत नृप से स स्नेह इत्यादि की गा॥ धर्म ज सह त फूल हर्ष दव
हे धन धन सुधी र॥ ३०॥ यो वनास मे स॥ पिया उप मयो सत की रे मे ये न हग ज
इ॥ सदे वुर्स्पादि मिला पहूंस्यो भयो पापु मिराइ॥ पुन धर्म रूप न्यप धर्म ज भा त सन
सुख धान॥ कीये ह रसंइ न्य के अव भये पर स सुख लेत मान॥ यो वनाश की तीय वु तीय
गा लपटान॥ सभ भेट दे वहु मणी मुक तमाल महान॥ पुन द्रौपदी से मिली सम भइ
पु क्खु वहोरि त साथ॥ सुख उपज्यो दो ह दिश पुस्प र के रि ते त ही सा थ॥३१॥ दोहरा॥

पोवनासनपसोकहे अजेनबुद्धिविशालं ॥ हमरापुरपावनमयोनमेस्वरनपकाश ॥ २४॥
जिउधर्मजनममसीसपरतिउनुमरहोरुपाल ॥ नुहिसुत जानेभ्रा तसमहमससभुनुमरेवा
लगइ ॥ २५॥ नपोवाच ॥ नुमरीउपमाछियाउरैनुमहमकीपेसनाथ ॥ वहुउनरानुमनीभ
ईदुगदेखेयदुनाथ ॥ २६॥ चौपई ॥ विस्नुत्यागअस्वकीपरजाअरु ॥ धाइआभारहर्षहीयरे
धरि ॥ ताकीरछाहमधारेहिता ॥ सहनसकेकोउन्नपमुहिमयचिता ॥ २७॥ अरुमेसेवमय
कीजउचारे ॥ नोहिअर्थनरुरोजीइप्यारे ॥ हर्षहुलासरहेपुरमाही ॥ अघाकीतेनु
हितेसुनाही ॥ २८॥ पुमममछभोजफलस्वछतभोजन ॥ घररसअरेअहारमुदितम
न ॥ यदुपतिउवाच ॥ रख्यावर्षुडकुयज्ञमअरे ॥ नुमयोवनासमरणरहारहरघारे ॥ २९॥
अवहमपुरछारराजेहे ॥ एकादसमासवीततकहेहे ॥ तवलगयाअस्वकी
परजाअरु ॥ धाइआयगमोसुफलहोइवर ॥ ३०॥ योवनासकीआज्ञामाही ॥ सुहिअ
गमसेआरहेहिताही ॥ हरिहेविदाद्वारकागये ॥ यदुकुलदेषहर्षअतिभये ॥ ३१॥
इतिश्रीमहाभारतेपुराणेअस्वमेधपर्वेणेउहमलालभाषायंउहमदारकागम
नेचतुर्थोध्यायः ॥ ४॥ वैशंपायनउवाच ॥ चौपई ॥ धर्मजयोवनासमेवोले ॥ सुनो
भूपतुहिज्ञानअमोले ॥ जवलोयज्ञअरंभनहोई ॥ सिष्यादेतरहोमममोई ॥ १॥
योवनासोवाच ॥ सोदिजयोविद्यापरवीना ॥ वेदशास्त्रकेरसरहेभीना ॥ धर्मतीनिर
नकरेपराई ॥ दासदयासतधरेसदाई ॥ २॥ धर्मसुअरकेपरतंत्रसुनदहेविदवसजा
मनाहिन्विनुउरे ॥ वेशपसमाविवहारअरावे ॥ सदादिजनकीपरजधरावे ॥ ३॥ सदुक
रहितसमकीसेवा ॥ अपरअरतपसुलहेअमेवा ॥ उमेसज्ञानरहेपुरमाही ॥ अ
पुनेधर्मरहेजगमाही ॥ ४॥ दोहरा ॥ विधवासिंगारनतनधरेसमजनधारेदास ॥
येमलीनरहेशोभअतिवुधजनअरेपुराण ॥ ५॥ अरअसतीयतेभागीयेजिउअह

२४५ तेम यभा॥ तीय स्वधर्म त्यागा तेने बैठे ये यद्यपि है प्रभु भ्चार॥६॥ धर्म जो बाचा॥ चौपाई॥ सदा शी
ल स्व तपा के रहे॥ दान दया तप त्रित दृढ उर गहे॥ धन कसै जगत ने दो उर जितु रहही॥ ते विधि सुने
रदा मम चरहही॥ ७॥ ये बनासी बाच॥ प्रभु दाच करई नप्रकासे॥ निरमल मन जप तप की
गमे॥ परतीय मात सम दिषाई॥ परधन परसर दिन कुलाई॥ पा कूप बावली ताल सबा
रे॥ ८॥ कूप रहे शोभ जापोरे॥ करता करे दीन जन देवे॥ दिन शिवि कीडा है सेव वशेषे॥ स्व बहु
जानी भी होवन ताही॥ रहे सदा प्रीति सम यम माही॥ जम जन के धन रहे सदाई॥ या के उपजन
के उमदाई॥ ७॥ कुटि विधवच नविलास करत नितबी तानेद समना सदर्शी चितम्॥ यज
ञ्ल धनेरे जकराई॥ धर्म तन भी मिदि योपठाई॥ ११॥ यदु पति सो करविनी उचारे॥ जपु
रमो लघाचो हरषारे॥ भोजन में नस्या रीहे के नो ब्रह्म महर तम गणपजु दीने॥ १२॥ दोहरा॥ पवन
बेग धर पवन सुत जाये होर कामाहि॥ ठाडु जा हरिहार पर प्रभु धाम विस्जीय माह॥ १३॥
घर घर जान न नहार हरि हासी गाय मन धारा दी नि वार भोजन करे ठाडे हरि के द्वारा॥ १४॥
चौपाई॥ भोजन पावे उमनि तकर रहे॥ सभी विजन की शोभ उचर रहे॥ बाह बाह हि प्रभु पधीर
बनी हैं॥ गाम भोग तकेसो था उधनी है॥ १॥ दधि तेंदुल्ल ब्रत स्वादन पारे॥ पाम भोसर कर
व ने धुरहो॥ दधि भो स्वादकन ने कब्रत देही॥ बार बको मैं बने सुरहो॥ २॥ दार मपाइद
रजु बनाई॥ ताहू उपम कधु कहीनजाई॥ बनी तार रीकढी स्वाद चरा॥ अर दरसम सच
लेके जीर बरा॥ ४॥ पापर ब्रति स्वादु अधर सुदाई॥ दर रसभो जन स्वाद महाई॥ सिधर
न स्वाद कचरघे लघे है॥ मनमोज्ञा बन घाव तनेहै॥ ५॥ बने राइते नीके सलोने॥ जि
बने भोजन की जे दोने॥ निरखु ये वघी रे ख्ञार तो री॥ उले कन्ने दिकनचारा चटोरी॥ ६॥ से
याषा लसकी मेथी पुना॥ इन की भर जीर ख ब चनी पुना॥ सरस्ता वसे नार सीफ
ना॥ मीठे पारे के ले सभ भले॥ ८॥ दही धाध मा धन की शोभा॥ त्रिपुन पै सीरे के जीतेले

भा॥नानाप्रकार भोजन कराति हैं ये॥ याकी गनती केसन कोये॥२४॥ दोहरा॥ जेउ जिंउ हीर
उपनाके रेसु नन भीम हिरि समाइ॥ दरपर ठाडा धुधा कराति धिक्रे माहि दिघाइ॥२५॥ चौपई॥
घारघार कापुरी वधावे॥ भोजन नके रे कैरम तकरावे॥ वाकोउ भये उपद्रुव भारी॥ याते राघ
दयो किवारी॥२६॥ मम घर वाहर निकरसन सौके॥ कैरे बिसकी सुधि लिहितो कै॥ काको दून
पुकारू ले गये॥ इनके औरिदे भारमय भये॥२७॥ याको दूवडुयाद वामिन पाये॥ याहि शोक
दरद्दी ये रहाये॥ वाहिर मात नातर हत मये॥ वारक कमनन पुदुख दत दूये॥२८॥ इनके शोक
भाभमन कीये॥ शोक बिनातर वेठे होये॥ कैसी करावे रिदे हमारे॥ भीत समेत घार देउ
फारे॥२९॥ हीह जाने वहूते जन कराये॥ सभु कराच जाइ हमे न रहाये॥ रेनि लाज होहो
एको तन॥ भोसगनाहू दूसरे को जन॥३०॥ याम तउरे हो वहूते जन नाही॥ कारहि परे होवि
तामाहू॥ वीचारी हरि रयाकि उभीम कराति॥ मतदर तोर उरेसम ही सत॥३१॥ नवहीर
हस्त वके हे मुख वचना॥ तुम हो पवन पूत वडु रचना॥ हम न नहीं जाने यो तुम कराये
तवस्त तयो न रहे पुठरारो॥३२॥ भीमोबाच॥ करसरा जान तुम कहे हो ते मये॥ कूपता
बुद्धि हिरदे धर लये॥ मतके कैरे करा भोजन नुवेरे॥ स्पम भयो हसम ठमेरे॥३३॥ भीम
ववन स्मन रूपा निधाने॥ हसे हुलासा हिर्दे दरशाने॥ कराति वडु मानन भीम मठे धारे॥
जाड रसोई मोवेगोरे॥३४॥ नानाविध वे भोजन कराये॥ भीमसेन कराचवे दित माये॥
घरर स्प भोजन वि[illegible] भयो कजति॥ उदर पर मननु हर्ष भयो सत॥३५॥ दोहरा॥ भोजन के
ववत सर्थ मनन वेठे॥ भासकचारा॥ धर्मजकी गाथ पूछही हितसो सुकमम मुरार॥३६॥ हम
जान तरमलेन्नीह तकरावे कसम उं नमीता॥ हमरो हितयो नाहि सेकैरन सोन हीवीत
३७॥ जा याहित सोघ जकी कहीभीम पुरातराइ॥ समझे दुग हेतोहि हिगत कराये समुखु
दाइ॥३८॥ पजकसवधनेरे मद सुनोइण सघुधाम॥ धर्मजको हेद शीतुहि चलोवे

२५०

गघनस्यामस॥४३॥चौपई॥हरिरहेउहर्षप्रानाजी॥ससमपदुकुलग्रपुनेसंगलीना॥
मातदेवकीसंगलीनहिंत॥सतभीवाबुकमणज्यादितीयामिता॥४४॥वडेउछाहें
वरसाजज्ञपारे॥संगमचलाधीहततीतभीरे॥चतुरंगनसैनाहितचाली॥निज
जनजानदुयाहरिपाली॥४५॥निशापरीतहाउतरपराये॥उउहूलगेनखंतधरा
ये॥द्वादसयोजननमाउतराही॥हरिसेनासधुगमानपाही॥४६॥कोसुखपालके
डेलेमाही॥कोगजकोरथचढेसिधाही॥हरिरथवाससभारछबलीने॥मडेगेच
लतहरिशोभपुलीने॥४७॥धरउडेरविद्विपनपैहे॥निकरबरेनिजद्विपन
पैहे॥भोरभारमगमारपरावत॥धकाधकीसोवहुगिरकावत॥४८॥दोहरा॥
डर्कादचलतेपथमोवेलचडीकेडनार॥जगजगरजानेजासमसोगिरपसीजीयमुन
भार॥४९॥देखहसेतवलाजसमजीयमुखतेउचरतच॥मनहासीमोपरकेहरिदे
समकेप्रान॥५०॥चौपई॥यद्यपिहमवीचारकरतहै॥हरिमेरासजीयमारदधरत
हेगहरिरथशेषनजगढधमिदेहमारे॥जुउरहमनजरेनेजगवभोरे॥५१॥जीयवेवचसुन
रर्थहसेतचाजस्माशेनलेदेतभारीतवा॥५२॥इतिश्रीमहाभारतेपुराणेअश्वमेध
पर्वलोहरिहारनापुरीसेजनाजमनेपंचमोध्यायः॥५५॥वैष्णपायनोवाच॥चोप
ई॥पेथचलतेमालनडसुकुराई॥चेहेमुखतेहरिसोपुजराई॥मालेगवाच॥
पेथचलतमालनडसुकुराई॥चेहेमुखसोहरिसोपुजराई॥हेहरिहहमसोपूल
ल्याये॥वेचकुंरवीहरिकेराजस्नाये॥१॥जाजनपूलहमेरेनोवकाजे॥वडअसमसो
मोरहमुरवकुजमनाजे॥कुमलाजदहवेदउनलेवे॥मोहिकुंरवमघन्नजीतसवे॥
मीभगवानेवाच॥पूलनमोलतोहहमदेवे॥तुमहेरमदहमसरनमरवे॥ह
थंभईमालनसरवपाये॥पाये॥जनजगनानामिरोये॥१॥पुनडपुतेलज्याद

पुकारी॥३॥ सो तेलमु ऊभीर नुमारी॥ हरि स्वे हे जेता तेस्नु तुमारो॥ लेहु मेल्ह मो मे
व स्नारे॥४॥ निरख भीमु हरि सो भाषे तव॥ ईरहु चील चीघ तो हरि मिले सभा॥ सप
नके जैसी न सुहावे॥ येकु चील जन्तु निकट देखावे॥५॥ हरि हास्यी चितवत पुण
रान्ये॥ सुनो भीम नतुम वल्लु ऊधकावे॥ इहकार्य तुम हौ हित नरेस॥ इनने संबु देख
इकुवरहे॥६॥ भीमसोवाच्यु॥ मोहि धान नगारस इकुनारे॥ घोहमवरो उदर्शनि हकारे॥
तुमरे न्नारद नीर्जो हरि मारी॥ रस्वी निलजा हतुम वरो हित नाही॥७॥ स्रीभगवानोवाच॥ के
हरा॥ जिउ नु नरे र्जो हरि रम्बसौ तिउ हौ मन गर्जो हरि माहि॥ जानवे न कौसु ता हे यामे शेसा
नाहि॥८॥ तुं हरि इकु चीरुभव दूसरी मो हे संदरशनहि॥ वरहे तुम सखु पावते भीमसा
चुस्नुनले रही॥९॥ चोपई॥ हरि जैसो भीमनके सुन संवाद॥ भयो हर्ष सभलोक ऊवादा॥
चलत वेग हरि सपुर अस्त्रायो॥ सुनत तलोक सभ मेरो रत धायो॥१०॥ दूध घने माजन
दधि जान्मे॥ हरि रहित लेहि ऊपास्ति ठाने॥ जान नकडोप जेगोड स्चरईया॥ हरिसो
परवे हे नु धरे या॥११॥ विदावन हरि गोड स्वरावल॥ नवके हरिस्यो हे तुम सभारत॥ हरि
जैस्य वदिखवर पुजाराने॥ इते सा जतुम कहा सोऽस्माने॥१२॥ हसे कहमन तवके उवो
ले॥ सुन्नो डोप तुम हेलज्जीनि भोले॥ तुम मत संदगोड वनचारो॥ जपुनो उरप
रहरघरे॥१३॥ हरि कोनि जससमान नचि चरेहे॥ पुनकैसे वचननार उचरदे
हरि के त्रिभुवन नाथ पीहि स्वाने॥ राजन्नके रानाकर जाने॥१४॥ डोप वध परवेवि
धन्नाने॥ हरिस्यो कहे वचन पुजाराने॥ हे हरि हमरे माघन घाचते॥ लडाराइ करते
मेरु भावना॥१५॥ कुपलसेवाश्योनु ऊमात॥ दीघो भुल्ला इह मसो हित साघा॥ इउ
दिन जनवनु ममारी घाइ॥ जससमनतवरेहे नाइमाइ॥ मुरवपसारत चमानी दघारे॥
तीन लोक तामो पुजारारे॥ देघरन्धन तुमनसी समुउरे॥ तुम हस्पुन उनके भयहरे॥
१७॥ सुन हरि तिन पुके नाधारी॥ दीयेकु उनकेनि हपारी॥ यमन्नान रहरिस्न

२५१ उत्तारे॥ वेहरसीतन्नकोसिध्याभारे॥१८॥ श्रीभगवानोवाच॥ धर्मजयज्ञअंभुअगये
अयोर हल्लसमेहेतुधगये॥ पुनहरिसमुत्रीयसोसमुझाई॥ कुंतीकेपगलागोज्ञा
ई॥१५॥ द्रुपदसुतासोहितुउपजावे॥ योवीहवेहमोइतुमभावे॥ उनसौज्ञा
ज्ञोसिरपरमाने॥ मानुसमनानुनाहिहिरदेआने॥२॥ पुनप्रभुब्रसोवहेनंद
नंदन॥ धर्मजपगावरेहेहितवंदन॥ मानुसमानुगिलानननअगये॥ सवकल
मेवमघकोहितधरीये॥ यदुपतिबुद्धिहितसमभेज्ञाता॥ गयेहस्तनपुरवहुज्ञ
नुराके॥४॥ इतिश्रीमहाभारतेपुराणेअश्वमेधपर्वणिभगवानहस्तनपुरज्ञा
गमनेयष्टमोध्यायः॥६॥ वैशंपायनोवाच्य॥ दोहरा॥ हरिज्ञाज्ञानसुनधर्मसुतहर्ष
प्रेमकुअधकाइ॥ ज्ञाजेव्रलयेमिलननहितेरुष्मनलालहर्षाइ॥१॥ चौपई॥ हरिज्ञा
गमसुनधरमजसोबोले॥ तुमधारतहोयज्ञअमोसे॥ यज्ञतेवडुफलयेहरिदे
ष्ठ॥ समनरेमनिजोरिदिज्ञानवशेछे॥ पुनइकुदूसरीदेजुप्रगराज्ञा॥ जपुतपु
यज्ञहोनियोदान॥ ईशरिरूवाणिहितसमुज्ञानो॥ हरिहररोषवउफलुपाहिच्चा
नो॥ हरिमोहरिज्ञावहरनप्रभुप्रोमे॥ ररशुदेषसभोदुरवनमेसो॥४॥ धर्मजहरि
पगलागरहायो॥ हरिरउठाइहितकेवसनगायो॥ पुनयोवनासुहरिपगलपराना
ज्ञाकेज्ञपुनेभाजमनहुराना॥५॥ पुनपुरजनसभनवेहकुमराणी॥ देषहरिरछव
मननरयोचानी॥ जवेदेषेहरिशएकोतनहे॥ नारीकोसनगनाहिहिरेपामनहे॥
६॥ वेदवेदसभत्रीयापाप्रकानी॥ वहेसुनीहरिसंततत्रीयज्ञानी॥ हरिवनदूसर
कोनहिद्रिपावे॥ फूलेतातासोसुनावे॥७॥ तवदूरभधुनप्रभुवाणसुनावे॥ भेरसं
शरववडुशवदुउठावे॥ ज्ञानभभानवडधुजारिषानी॥ मेननज्ञअंगनज्ञावइ
वजानी॥८॥ दोहरा॥ दशवेदीजनउपनसविहितसमेनीचनउचारा॥ इकहरिहरिहैजे
नमनेवहुरकेपेवडुभारा॥९॥ इकहीवहमज्ञवरहरनजगजिहरिदेषदुरवसमजा

ई॥करता हरता हरन भ्रम भंमै भेद वखुनाहिम॥११॥चौपई॥करता भरता हरता ताहीं॥जग भ्रम
नासभ घटि हिसचे तहीं॥मत्स रूप धर हसो संघा सुर॥वेद उधारे जन हित ताम॥१२॥कछ
पम्त रूप धर न ठहराई॥धाप र जग को रचन सुहाई॥ वाराह रूप मधु थे रजम सरहत भ
हीइ कुंदे तप रधर स्यापे सत॥१३॥नरसिंघ होइ हरनाकस मारयो॥प्रहलाद भगत का
र्जि निवारयो॥ वावन होइ छल्यो वलु छल कर॥ परशुराम सहस्र बाहु नस धरा॥१४॥परस
राम धारयो अवतारा॥ त्रेता होइ श्री रघुवीर जो जग सारा॥ श्री रामचंद्र दसरथ सुत भयो॥
रावण हनि सकल सुखु दयो॥१५॥ अब वसुदेव देवकी के घरा॥ लीये जनमु करे हे भवन
वरा॥ भगत तेहेत प्रसु मत तेक जायो॥ नेद नंद न जग मन हिक हायो॥१६॥ जगनाथ
प्रभु वहा ये स्वामी॥ वोधा वतार सकल जग नामी॥ निहकलंक दस वा अवतारा॥
धारहरे जे भुवन के भारा॥१७॥ रचना याकी लषी न जाई॥ जेते ते निगमे पुकारा
वैभव लेइ श्रम वधन धरु रूपा॥ पुगरे जग अघ हरन अनूपा॥ धोजन पा काद रश
न करे हे॥ पुन जनमी के गर्वे न परे हे॥१८॥दोहरा॥ एक हरि उपनायो के रे अपनाप स
ने से सुनाइ॥ ता के फल अनंत हे संधा नहि दिखाइ॥१९॥ या जग जन सपर लोक
सुखु उपजे सुमन तज्ञान॥ शांत सुशील सदा रहे हरि ध्यान लाल हरधान॥२०॥चोपई॥
सुनेते रथ भये त्रिभुवन पति॥ ता पर दया करी स्रणा सत॥ नि जग रते मोतन के
मा ला॥ हृदे उतार तारत तक ला ला॥ रूप अवदु रदि जन को देव हु दाना॥ उन सो की नी
षमहा न॥ पुन अप समर की निरति निहारे॥ दीये दुख उन को नि रूपा रे॥२१॥ इक
अप समर हरि रक्षे निहारी॥ भई म गान अपुना पुरि स्यारी॥ देखि चारु अप ते हे अप
सरा मो हनि रत मन न भंग पर हरी॥२२॥ हरि से वारे रव चरन उरसवना॥ सुनो इ गार
नु कर मम बचना॥ अप सरी वाचा॥ तु मह हरि एक सेवकी परगटे॥ हम नाच रचाये रे उप

नृप॰

८

२५२ वे॥ २९॥ दोइ चक्र के घेरु तापन माही॥ दोऊ दुहं बिगोपिके दिषाही॥ इह प्रकार आदि दिषत अनंत
नु रहे॥ बिस्मै होइ उपमा उचरा हे॥ २४॥ पुन कहे इहि जोग दस ता ने॥ फेर तेह भुज बल अप्र
धका ने॥ इह मसान ते गदपे फेर देषी सारे॥ नवसा तो इहा चली ये धरा॥ २५॥ ए करु बंनम
उरपुरतारे॥ पचकरज्ञांत चतुरा ईधारे॥ हरि हरषे ति न नरदुधन दीने॥ पुनन मुख तेरे
बचन परवीने॥ २६॥ श्री भगवानोवाच॥ इम तुम ने को कृष्णु दीने नाही॥ पुन्न कज्ञावो
इम मेरे मन माही॥ येवा सो सो तुम मे मेयावो॥ निज मम नये संता पमिटावो॥ २७॥
इति श्री महाभारते पुराणे अश्वमेध पर्व लोकपमर संवादे स पूर्णो ध्याय॥ ११॥ वैशंपा
यनोवाच॥ चौपई॥ पुन करु जेन हरि पयदित ज्ञा ये॥ हरि से मिल वडउ सूरक उप
ज्ञाये॥ जनरथ ते उतरे नंद जंत रन॥ ब सेधतराष्ट्र के पगा वंदन॥ सभी वड अप्र पु
मे सेगा सीने॥ धृतराष्ट्र के जथे पुर्वहिने॥ धृतराष्ट्र दोर त तर ह ज्ञाये॥ हरि से मिल
वडोहित उपज्ञाये॥ २॥ पुन गंधारी के हरि गाये॥ ताप गए जनस र से भये॥ दोर दु
पदी पग लपटानी॥ सुभद्रा आदि सभी हरषानी॥ धर्म जे हल धरकी कुशलाता
पछत ही हरि सो हितज्ञाता॥ तिम करु जति सबे नहीं स्याये॥ सभ देव देवकी
नद मस राये॥ ३॥ श्री भगवानोवाच॥ पुरी द्वारका कीरषारहिता॥ राघ्यो देस लवर
सुर रजित॥ हो सभ न की कुशल उचारी॥ हेर हे द्वारका पुरी मझारी॥ ४॥ दोहरा॥
भोम बुद्धम्रुह रिवी च न सो उज्ञा ये छ कर्म तिमार॥ पुर जन सभ दिय रहे सीवा सुख
तो न तार॥ ५॥ कर फर गरे है के ठ सभ दिघ रिदिय रहैं न ना हि॥ त्रिभुवन पति हरि के
नकी पेमा वहीन जाइ॥ ६॥ कर स्ये स्याये पर जो हि ते ति हरि द यसभ भिरमान॥
कैसे मेम समुद्र मर जग तीर नहून्नारी दमान॥ ७॥ चौपई॥ धर्म जेयो ते ना स्यकार
मर जनु॥ सदे दे वसी के पगा हि त धन॥ हरि सौ माय रोइ दर्शन किता॥ दहुँ जसमोस

इनकोधरवउहिता॥ वस्त्रहरनोललन दुष्यासनं ता॥ कनकलताछतीमानकछनिकसंता॥ कहाये
भीमविवधकेतसनेता॥ मेघवर्णसमानिलेसबचेते॥ धर्मजकेपगसीसनिनाये॥ लवर
नेदोउहितनमधनाये॥ इनकेदेषविदेसभहरषे॥ धर्मजकेपाइनीनुनपरषे॥१०॥ कर्ण
तानकाचरूप्योभाला॥ मेघवर्णपरभयेलपाला॥ वहुरद्रौपदीकुंतीसमलनवा॥ हरिस्माता
केचर्णलगीसभ॥११॥ हरिकीछीपसोसमवहुरेते॥ निसनेटेतभाजीचितनचेते॥ रमना
कसीदरषसभनारी॥ इनकोदीनेदुवनपारी॥१२॥ सतभामानचनुराईधाम॥ द्रुपद
सुताकेवहेमकाम॥ सतभावाउवाच॥ हमसहरषेडुसेहैनामी॥ रहेसदासभ
हीहरषारी॥ तुमरेपाचकंतवीचारे॥ केरातुमकेसेवरतनधारे॥१३॥ द्रौपदीउवा
चा॥ तुमसमुहरषमारिरहावे॥ कहेकठोरहीरसोदापावे॥ हमपांचोसोइहमस
मनेहा॥ राषेहेजीयभारसनेहा॥१४॥ पाचोमेसोसुखीरहावे॥ सपावचनहमसे
पुजादेवे॥ तुमकापतिभोद्यपनपावे॥ मोपररापोगिदहरषारे॥१५॥ दुर्योधननेह
मुरीलाज॥ राषीहरिहमराषकभाज॥ कहावेहमेरेरिदेमचा॥ नम॥ नारदकोहरिसौ
वोतुहिदान॥१६॥ पुनतुमहरिकेसहितविवासी॥ नारदकेसररसंमासी॥ ईरपु
कारवहुहासहुलास॥ द्रुपदसुताहरितीयपुकास॥१७॥ पुनरुषाहरिसुतसुतली
घवरा॥ कुंतीपडसिरधासोहितभय॥ गंधारीकेचरनलागहिता॥ पुनद्रुपदसुताके
पडाडेहरषेता॥१८॥ मेरसनेमधनीनिहिप्राडे॥ सभुहितुकरेप्रेमकरनुगाडे॥ सभ
तीयहरिकेपगलपटानी॥ विनतीकरतसकलअनुरानी॥१९॥ दीनकोमला
भारतेपुरानेरूपहमेधपवेला॥ हरितीयगजपुरमाजमनं करूमेधपाय॥२०॥
वेशेपायनेवाच॥ दोहरा॥ हरिसोभोषसकलतीयविनतीधारनपाव॥ हमरे
विनतवाहैपुभदेषेनमस्तौनिरधार॥२१॥

२५३ गवो हरि रंग सम भुनानी॥ हरि धर्म जमो न रखो उचारी॥ जस दे खो चा दे सम भुनानी॥ २॥
तुम पे राह रत मंग दीना वर॥ इन को जस्वी दिखा उनी मकरा॥ २ बवा रे सम दूर करा
वो॥ जस्वे दे खे जी प हे तु धरा ये॥ ३॥ दिखावे कजस मकी छव सबली तीय॥ हर बन
माव अनंद रूप जी या॥ इह तो नाहि पुग सो जन्न शाला॥ यहि भान ता या शाला वि
शाला॥ ४॥ सिन स अंग त सं गनि ज धोरे॥ नर जस उगरो ते ज जस पाये॥ हरि सो वे
र भान त का धरही॥ पुगर हो इ मुख ते पुगट रही॥ जस नु शालो ता चा॥ इन हरि स
म राभान र ता न॥ ग हो वे र हरि रे ते ज मर हा न॥ सम स मा ज र खा इ कुठा ना॥ हादे
दर॥ चपला सम ने दोर त प सो ग खा तुरंग म भार॥ रोर प भी त व जंग त व ड भांग ले
ग स पा रा॥ हरि के मा र ने हरि हि ते ग र जा ने म र त्रू रा॥ बन ते धुन या की सूधि क ये
धाय धके म र॥ चा चो पई॥ नि ज से ना से च ले जन्न शाला॥ सा च भान र हे ते जा वि
शाला॥ अर्जुन भी म र दर्भ छ के ता॥ युधु के रे ग र हो स चे ता॥ ६॥ नि ज जी व न
के जस म त्या गे॥ इन्न सो क रो यु धु जन्न र गे॥ हरि के जहि पके रोर वा ता॥ भान वे र
गहो स ने सम साँ त भाय॥ मंत्री उवाच॥ हे न्रप न मर हरि के ज हि चा हे॥ कछ नंद
खो वे ये नि र वा हे॥ हरि के पद र सरे न ही के जत॥ ये के को र सरे भुज बल लग॥
११॥ तुम पद हरि रहे व न दे व स॥ बिना भगत स न्ना हकी ये म स॥ स्व जन्न शाल
वि शाल द सो त व॥ भा ते रेन्न हीसा ग सर्वे ज व॥ १२॥ युधु हे तं दु द भी व जा ये॥
गर जे यो धा का ल भ्रमा ये॥ दो रे वी र रहे व ल भोर॥ हरे हरि जस जे न र ग सिधारे॥
१३॥ दोहरा॥ स्व न स मा ग म जन्न शाल हे॥ श त्रु हर न्ने ग पाल॥ चिंत त चि न दो र हर
पुन्न से ज गा स पा ल॥ १४॥ च उ पुन शा स्व व जाइ र ण धर्म ज ग जु न सं ग॥ अपर
स न्न मु ख ज सा ये व ली धो धरि दे ख भंग॥ १५॥ श्री भग वा नो वा च॥ चो पई॥ स्या मक

त तव रमावडुने हे॥ योवना सुभपत वलडोहे॥ नकुलमस हदे वकानन रफ वलारी॥ रेहेध
मे जसं सगर धकभारी॥१६॥ मे घवर्णा सडु वलज्ञिहि माही॥ डी हमीरे हेधर्म जनि कदा ही
ञवरसभी मग्निघवेतसज्ञधिरवला॥ पदम्न सावसला हम जेर रसा घला॥ २॥ धारमु जावत
ज्ञस्वीपरल्पये॥ शव्रूवेवलरला पतीज्ञाये॥ हीरसु तभीम दोवूरला माही॥ हे रेज्ञ र जी
उरतदा हा॥ ८८॥ कहे ज्ञ नुशाल ये जी वत जहे॥ पुन हीरिवगदे येसचम हे॥ ये नज्ञ
हो नहिव ज्ञज्ञघला हो॥ ये ज्ञ धीर जनीघमो गेजा जो॥ ८८॥ शतिने सधमई जी या दिवाये
रतन देइमरता ज्ञ घपाये॥ ते ज्ञघर्म्मी हलाडोन नजा वे॥ हमव्र एकी ने पुगरसना
वे॥ २०॥ कह रहे सन्मुखजा इ पहूंचे॥ भीमीरदो उवलउ चे॥ हरे रे वीर जानन ही
व हे॥ हमु रकज्ञ म लेनुम कहा जे हे॥ २१॥ करे युद्ध ये मज्ञ व लघरे हे॥ कज्ञ स्वमोग हे स्व
गमजा विच्व रहे॥ सुनकज्ञनुशाल वहे मुख वे तन वा॥ हे हीरस्कनतु मीं क उमर हे॥
ज्ञव॥ २२॥ जाइ वे गये प्राण पारे॥ सुन हीरस तकोप ये तिरिक्षारे॥ धाचवान कूरे उ
रत जाने॥ दि खज्ञ नुशा लमगमा हिवरा ने॥ २३॥ पुन हीरस तके वानुलगाये॥
रघमल उडुपदु पातिहि गज्ञा ये॥ पितसमी पतिरये सधली ने॥ दिवही रके पकर ध
मतव ही ने॥ २४॥ रघते उतर हीर दो उ सायवसा॥ के पकार सुत के उकघला॥ मरव
नेवये रेपत कपते॥ युधके दोर तडतिक रन्ते॥ २५॥ नारि हार स्वाये सरव सो वा
उ दो सभी की धीरन धोवा॥ मो हि धाम तुमर हन न पावे॥ धारि इ छनुमसीन
हा जावे॥ २६॥ वनमो जइ सेक्ज्ञ मनमाही॥ वसो कने दनराय धुनाही॥ छिषिमु
स्वधाधन सन्मुख हो इ॥ का इ रकुल लजुतानुम धोई॥ २७॥ मातत्र रभमो धमर जाव
ना॥ हमको कास्वलेक लजावता॥ कनु नजी रमी नसो हे ते॥ तुम उरदो रे युध उदे
ने॥ २८॥ पधिको पहीर से जीय ज्ञाये॥ सतके प्राण काढ़ मरखु पाये॥ दो र भीम री
ये उहिर राये॥ मुरव ते स्वचन इ शसे भाषे॥ २९॥ भीमे वाम्हा दो हरमा हे रीर स्या इवे

चारीयेयाकेदेखनकोइ॥भ्रात्रसेसरवलज्ञापसे॥ज्ञापनछायेसोइ॥२९॥तुम
भ्राजनकेजायसुननतुमसमकेनभजाइ॥जिंअंजेअर्जुनजनचेहुतुहिपरेप
रेहीजाइ॥३०॥श्रीभगवानोवाच॥चौपई॥भीमनेतहि कुहेइसेतजावो॥याहिप्र
णच्यातरनिजसावो॥तुमकुंतीजनजरवीसधलेवो॥जाहुवेजपलनिलमुनेदेवो
भीमपुदुवेतोनिजसंजधावे॥भ्रातरवेसनसुजाहकोरे॥जदापुहरखारसेना
माही॥जजरथजनसहुनतुजदिखाही॥३३॥जजजउठाइनभजेसवलाये॥जजु
सेजजनसमारदिखाये॥पंचनतलयोधेजननंजना॥रणभूममेकीनेभसमं
ना॥रजुवारसवेलीनिरपाये॥दुहूसूकेचेयुधजनितभारे॥३४॥त्रिष्ठेतोवाच
तासयुद्धतुमकैसेसेकरहे॥पययातिवडेपुननहीधरहे॥तुहिवेलकेउहिदी
नीविचारे॥वाहसमनपंचरहेपुगारो॥३५॥तुमरेसनमुखवेहोइनसारे॥दीन
नहोइउपमीद्युयावभे॥इनसेहमेरेयुद्धवनाइ॥नजेतानजीयधारवउ
ड॥३६॥इहिसुतत्रिष्ठपलेजेदीसे॥संगहोइवालननसुजनजीसे॥तापलुते
रवालकोदीजे॥रविक्राधिषयातेमनलीजे॥३७॥इनहतनतुहिगिदिहरषा
रे॥नतहिनामईहविजेउचारे॥भ्रातरवीसननेनानिहराये॥रहिनसवे
सनमुखठहिराये॥रथदेरथ॥भीमनेजजनमालीदिखभारकोपरिसकाइ॥
वानपुरासोतोधजनितगिरेभीमनरघाइ॥३९॥निहसवीनरघतभीमके
होरहीरननकाल॥दारकुस्याये रथुनहाजहांतीरजनमाल॥४०॥चौपई॥दि
षजनशालरथेदौराये॥हरिसोभाषतमुखवेउचराये॥हरितुमहमरेभात
हूताना॥मतजोभीमकेदेषमहाना॥४१॥जहेतुजेमहिमनइक्रिजासेमहाव
इधनहीजरेउकासे॥नेदजारवेतुमसनहोये॥ध्याधजनहीरनपाल्योते
रे॥४२॥भ्रातवजजामे॥निजवलीचलोवेमरणभूमनमेसेयुधहितावो॥कनरथे

तुमेरे रणमारी॥ तुम देखो वलु मोहि सम हाही॥४३॥ साचु व चन सुनले हु हमारे॥ ते सि हे दरस
मिर है अघ भारे॥ हम तुम को सनमुख दिखाये॥ सो न जगत जो मोह हतारे॥४४॥ तुम रे पुरु
जग पुगर कर तहो॥ तुम सो मिलगति भार धरतहो॥ तारि हाघ ये हैं तेप गौ॥ पुन जन
नीके तर्के न आवे॥४५॥ तुम हा व उसरस पुनली जै॥ हम सो लरत पीउ नतदी जै॥ भागत
भीतु हि जान न दे है॥ जह जावे तह पाछे ऐहै॥ जो हरि है रहे घर घर वासी॥ जग हत
तो दूर करे परकासी॥४६॥ दोहरा॥ जान दरै रण व चन को हि धनुष बान कर धार॥ हरि
र घ केस्त चार तर कर कै नेवान प्रहार॥४७॥ भाग अरवन घरो वहीदार करध्यो सभा
रा॥ रघुले रण भुमत जग ये भार भय जी पधार॥४८॥ देख्यो अनुशाल हरि रघुनंद
न॥ अस्त्र तजे मन में आनंद॥४९॥ चौपई॥ मुनि अनुभाग वचन सुन रीझे॥ ज्ञान सम कहै॥५०॥ चौपई॥ मुहि अभा
छीद घाउ करत भयो मुख तेव चन रिदे ज्ञान समझाई॥ घे बधु पाप हो तम नु समारो॥ हरि दरशनु है
रहे न हीजा ही॥ घा ते हरि रसो पेन रिदे घारे॥ मोहि देस को कूकी ये अघ भारे॥ के से
न पाव तन नाही॥५०॥ पचे अनिरस्चा रिदेह मारे॥ मोहि देस को कुकी ये अघ भारे॥ ऐसे
सद्धि जना रभुगाई॥ अस्वतापर धनु को दुखि नाई॥५१॥ वाधनु ले को उसनाविचारे
घाते हमु रे मुक्ति न दाहे॥ घा अघ तेव उअघ मम देसा॥ की यो कि सी म मन लगा पाकेले से॥
५२॥ स्ति रिति वे ती ची घपति देखो॥ रति न देत की ये पाप वशे षो॥ सुह दी सनाव ही हो ग
है॥ गति अ सौ वि पितु कि आर नदई॥५३॥ अघ वनु हि भिति नते को उ॥ कै से अनीत उ
जादुखु हातु॥ पुन को तुम्ह कान कै सा ची जै॥ घाते पुन हरि दर्शन ली जै॥५४॥ सवनु
रवते अनु शाल पुंसे रे॥ जो मांगो पु मदे उ ततकारे॥ के से हरि को दरशन पावे॥ घाते
कौ मधेपुका
नि जन अघ पापु निरोवो॥५५॥ अनुशाल ज्ञान सनी त्रिभुवन नाय को॥ भये पुका
भाम कल अघ घायको॥५६॥ दोहरा॥ तीन वान हरि परहरे अरदि घनरो रहन
कहे ह वली मुख ते वचन नु हि वल दिये महान॥५७॥ अनवहम बान्ह पुरा के पार

सखोतुकराइ॥भाघतसरपररररकेरहीरसघदईमलाइ॥५८॥छपैषंदा॥निर
सघहीरकोदेषसारचीरषुदोलपै॥लेलपोरणतेकाहु पौन्नसमनेवेणधनायेथु
मिजपेलेलगयोदेषसभौविस्मरहाने॥हीरसमनयाकेवलेभयेरणमोमुरघाने॥के
नजावईसभुभयेजधीरचितचितयुत॥भाजेस्यजेमनरणहितुनसभोरेपुत्रीप
ते॥५९॥शास्त्रडारभयभारहाथपगकौसधनाही॥जितमतपावहिजाहधानजुल
लाजन्नचाही॥चायलततरफतरलेनाहिपरपतुधरभाजे॥भ्रातभ्रातपितपुत्रमीत
मीतनचेतायो॥केदुनजाहूदेनधर्मछनयलचीर्थीनपेरन्ना॥जनशलयुद्धजे
साकेरीदिषसमही॥भयेविमननमन॥६०॥दोहरा॥भाजेजाहजधीरचितपाछेमरन
दिषाह॥दारवहीरकेलेगयोसतभावाजिरठाह॥६१॥सतभामाहरिसोकहीतुम
भातनसुतदेष॥जारमारवहुकोनानिहिधारेकेपुवशेष॥६२॥सवैया॥कालसजीतम
षेभयभीततेजोरकीवातकहाकहीये॥यमकालकोयेतिसुतेजुडेरेवलजाकोनिहारजे
भयरहीये॥जीफजावतपागधरेममसीसदाहिमानजमानवहासहीये॥तनशस्त्रसे
मारउतारजीधावपुवेधनभेमभयोचहीये॥६३॥दुंगोजेसेजसुरनमाधलगीधे
लखेलभरीरणभसभोमसडुयोधनजेवलहानजरेजनहूलतगावतयोहिजन
धारे॥लेसहीजाइलनेन्हुरेपतिभानजनकेहीवहिरसभारे॥नुमीतउनसभारनहाघ
नस्यानजगौसधमलसकोरपधोरे॥६४॥सुनजीयकेवनजचेवनपुभजचजचो
केजरजाइहकोरे॥त्रिषकेतउदारनिरारपुभोहिगजजाइवहेमुखेतेननकारे॥मीहि
जायसुदेहजुजाइलरोजरकेसन्मारवुकरकेवसभारे॥जन्नु शातकेजीवनजाइ
जहेजनतेज्ञासतजानीयेचेनहमारे॥६५॥दोहरा॥हरिकीजाजालेचल्योकाजेज
जीतवलवान॥रथतेजरसन्मुखभयोमरवेतेकेहमहान॥६६॥

ਸੂਤੋਵਾਚ॥ ਤਉ ਤ੍ਰਾਰਤ੍ਰ ਮਹਿ ਸਨਮੁਖ ਜੇ ਵਧੁ ਹੈ ਵਲੁ ਤੇ ਨਾਹ॥ ਦਿਖ ਸੁਨ ਕ੍ਰਿਪ ਵੋ ਸ੍ਯੋ ਵਲੀ ਜੀ ਪੇ
ਖੇ ਨ ਸਮਨ ਲੋਹੂ॥੮॥ ਸ੍ਰੀ ਭਗਵਾਨ ਸ਼ਾਸਤ੍ਰੋਵਾਚ॥ ਚੌਪਈ॥ ਕਹੋ ਤੁਮ ਕਿਹ ਵਲ ਪਰ ਸਗਰ ਵਾ ਕੋ॥ ਹੀ
ਤ੍ਰੇ ਰਭੀ ਮੇ ਤੋਰ ਦਿਵਾ ਕੋ॥ ਉਨਾਂ ਕ੍ਰਿਪਾ ਕੀਨ ਜਨੁ ਮੇ ਸਵ ਕਰ ਹੋ॥ ਜਾ ਕ੍ਰਿਪਾਣ ਪਾਰੇ ਜੋ ਧਰ
ਹੋ॥੯੮॥ ਵਿਸ਼ਸ਼ੇਤੋਵਾਚ॥ ਕ੍ਰਿਪਾ ਪੁਤ੍ਰ ਮਹਿ ਜਾਨਨ ਨੇ ਸਾ॥ ਯਾ ਕੋ ਵਲੁ ਵਡੇ ਨੇ ਜਾਂਦੇ ਨੇ ਸਾ॥
ਹਸ ਹਸ ਵਿਸ਼ਸ਼ੇ ਤਸਾ ਤਸਰ॥ ਸਤ੍ਰ ਤੋਰ ਜੀ ਨੇ ਵਲ ਪਰ ਹਰ॥੯੯॥ ਕ੍ਰਿਪਾ ਸ੍ਰੀ ਭਗਵਾਨ ਦਸਵਾ
ਨ ਚਲਾਏ॥ ਸਿਸ ਤੇ ਤ੍ਰਸਰ ਸਾਰ ਧਰਤੁ ਪਾਏ॥ ਦਿਖ ਧਰਮ ਜਰ ਪੁਤ੍ਰ ਵਭਿ ਜਾਏ॥ ਤਿਸ ਪਰ ਵ
ਤ੍ਰਿਪਵੇ ਤੁ ਕ੍ਰਿਪਾ ਏ॥੧੦੦॥ ਚਤੁਰਵਾਨੇ ਤ੍ਰਸ ਤ੍ਰੇ ਸ੍ਵਰਾਨੇ॥ ਪ੍ਰਸਰਤ ਜਸਾਰ ਧੀਰਤਾ ਨੇ॥
ਰਘੁਦੇਰਾਇ ਹੀਰ ਦੇਹਿ ਤ ਜਾਏ॥ ਤਸ੍ਯੋ ਮਜਾ ਵਲ ਰਘੋ ਧੁਤ੍ਰੋਏ॥੧੦੧॥ ਜਿਤ ਸ੍ਰਾਹਰਨ ਗੁਨ ਧੋ
ਨ ਖੇਤ੍ਰ॥ ਵਹੁ ਦੇਰ ਸ਼ੇਲ ਜਰ ਵਲੇ ਤਊ ਤ੍ਰੋ॥ ਪੁਨ ਵਹੁ ਵਡੁ ਵਲ ਸੋ ਪਰ ਕਾਸੋ॥ ਮਧੋ ਵਿਸੁਧ
ਤ੍ਰਰ ਵੋਧਿ ਵਿਸਾ ਸੋ॥੧੦੨॥ ਪੁਨ ਖੇਚ ਤਧੋ ਚਤਨ ਹੇ ਤ੍ਰਾਸ੍ਯੋ॥ ਹੀਰ ਪਗ ਪਰ ਤਾ ਮਸਤ ਕਠਾਨ
ਯੋ॥ ਦੀਯੋ ਰਾਧ ਹੀਰ ਦੇਤਰ ਹਾਧਾ॥ ਸਭ ਦਿਖ ਕੇ ਦੇਧਨ ਧਨ ਹਿ ਤਸਾਥਾ॥੧੦੩॥ ਧਰਮ
ਜਰ ਰਘਤ ਸ੍ਯੋ ਕ੍ਰਿਪਾ ਏ॥ ਕ੍ਰਿਪਾ ਜਲੀ ਤੋ ਸ੍ਰਮ ਲਜਾਏ॥ ਮੁਰਵਸਿਰ ਚ ਮਤ ਰਖੁ ਨਮਾਹੈ॥
ਉਪਮਾ ਕਰ ਤਕਰ ਤਪਕ ਪਾਹੈ॥੧੦੪॥ ਵਿਸ਼ਸ਼ੇਤੋਵਾਚ॥ ਹਰਿ ਸਮ ਹਰਿ ਰਾਜ ਦਯਾ ਵਿਚਾਰੇ॥
ਜਾ ਤਰੀ ਕ੍ਰਿਪਾ ਵਲੁ ਸ਼ਕਰ ਨਮਾਰੇ॥ ਦਸ ਸਧਾਨ ਕੋ ਹੀਰ ਯਸੁਦੇਯੋ ਮੋ ਪਰ ਕ੍ਰਿਪਾ ਕੀਨ ਜੋ
ਤ੍ਰਧੇ॥੧੦੫॥ ਇਤਿ ਸ੍ਰੀ ਮਹਾਭਾਰਤੇ ਪੁਰਾਣੇ ਤ੍ਰਸ੍ਵਮੇਧ ਪਰਵਣਿ ਕ੍ਰਿਸਨ ਸ਼ਾਲ ਜੁਤੇ ਨਵੋ ਨਾਮ
ਨਵਮੋ ਧ੍ਯਾਯ॥੯॥ ਹਰਿ ਉਵਾਚ॥ ਦੋਹਰਾ॥ ਕ੍ਰਿਪਾ ਪਤ ਕਰ ਤੂ ਤਵ ਡੁ ਸਭ ਜਗ ਜੀਤ ਨਰਾ॥
ਕਿਸ ਉਪਮਾ ਤਾ ਕੀ ਕਰੇ ਯਾ ਕਾਨਾ ਕੇ ਪਾਰ॥੧॥ ਧੇਪੁਲ ਹੀ ਚੇ ਜੀ ਵਤ ਤ੍ਰਹੋ ਤੇ ਸੇ ਹੀ ਇਸ ਕੀ
ਜਾ॥ ਧਾਸ ਮਸ ਤ੍ਰੋਰ ਨ ਕ੍ਰਰ ਸਖੇ ਧੋ ਹੇ ਲਾਧ ਪ੍ਰਕੀਨ॥੨॥ ਚੌਪਈ॥ ਜਵ ਸਧਾਇ ਉਤੇ
ਕ੍ਰਸ਼ਨ ਸਾਸਾ॥ ਇਨ ਉਤ ਦਿਖ ਮਧੋ ਵਿਸਮ ਵਿਸਾਸਾ॥ ਧਨੇ ਸਧਾ ਮਹਿ ਉਸਧਾ ਮਹਰੋਧੋ॥ ਦੇਖ
ਵਲੀ ਚਿਤ ਮਚਿਤ ਪਰੋ ਧੋ॥੩॥ ਤਵ ਕ੍ਰਿਪਾ ਜਕੀ ਤੋਰ ਨਿਹਾਰੇ॥ ਉਪਮ ਕੀਰ ਕੀਯ ਹੇ ਉਚਾਰੇ॥ ਕ੍ਰ

२५६ नशालो साच॥ तोहि है वैर मुरि कार्य न्साये॥ यातें हरि का दर्शनु पाये॥ जन्म जन्म के पा
पी मेरे स्रव॥ गये वैर भये मीतु जगत सभ॥ हरि पुताप स्रग्यानु विनासे॥ शत्रु मित्रु दे
नो सम भासे॥ ८॥ हे कृपा जु तुमने उपकार॥ सतगुरु सम तुम मुझे विचार॥ तुहि गु
साँई ईस सभु कउ स्राई॥ हरि दरसे जैसी निधि पाई॥ ९॥ पारशसंग लोह जिउ
लाहे॥ कंचन होइ लोहर रूप त्याहे॥ पारस हरि मे संत र ज्ञाने॥ हरिका भगतु मन राय
स त्राने॥ १०॥ सूनी जो वाच॥ हे स्रन्तु शालमुन वचन तुमारे॥ हरि विसमाव तोरदे मन
रे॥ हरि रसन मुखनु हि वचन अभ्रसंगे॥ पुगटाव तहे हावली उमंगे॥ ११॥ जे सम सहि
सु ग्याभु मड्डू फल पावे॥ धार रसेया भुम या हरि के वरा॥ सुरेश महेश गणेश दिनेशा
ज्ञाहि मिलन के काँवे रखे लेशा॥ १२॥ अंदेरा रखे दृष्टि मुनि तपुकर हि॥ तेभी केसी विध
न उच्चर हि॥ जिउ तुम हरि को वचन वषाने॥ अैसो रोग सनक्रे हम जाने॥ १३॥
स्रनु शालो वाच॥ दोहरा॥ बडे वडाई न्यात जैसे गुनका हूदेषा॥ जे पापी जगा गरे
प नगल्यगाठे रव शेषा॥ १४॥ धू व ननछ व हरि वरेते सभ ते उत्तम रोड॥ राजत जे
न मस्रर स सवरेपु कृन मसोड॥ १५॥ चौपई॥ सभुन छ ती तिस्व हू दिस पिरहि॥
वीहि धेयाका तें उडी स्थ तरहि॥ सम हरि के जैसे तपुलीने॥ याँ करन्हूंस के प्रेन ही
लीने॥ १६॥ मत ज्ञाने हरि मे सो भाते॥ अपुनी स्वनकउ पुत्र न राते॥ जातरंदे त
सुर सभ इस कहु ते॥ तैसो भे हरि के जितन न सकातें॥ १७॥ हरि त्रिलोकके जीतन न होरे
या क्या कउ व लसें तान रमारे॥ पांडुवा न भी वहुत पुजीने॥ इनते पुध र हे चित लीने
ने॥ १८॥ कहु लभ वन नवा धार लहारा॥ रच्वर च्वदेषे रच्चन कउ पारा॥ पेज न ईशा
धान धारेरहे॥ सुर पुर जाइ भोग व उलसै॥ १९॥ याके वाहन गरुड ते ज्ञाता॥ व
के सुदर्शन शस्त्र कउ जिते जीता॥ दे रदन शेर खु जरह वाजे॥ याकी धुन सुन सम भुवन

लाजै॥१७॥गदापदमनबहुशोभसुहावै॥कौनजगतजिहिजीतसकावै॥हरिसनरचरि
मालक्षन्नशाले॥मयेदयालरूपालगुपाले॥१८॥जिनजनबुद्धिगल्लाइकरलीजामम
दीसरचमनहेतुबहुकीन्ना॥धर्मजानिमरतमहिकोल्याथे॥१९॥सीसपरचस्वानिवा
वाये॥धर्मजनकेठलगायेहितुधरा॥मुखतेरचनमेहेऊरगाऊर॥२०॥धर्मजोवाचा॥के
हरा॥तेहिशत्रुहमजानेतेनुममसमनीतुनकोइ॥२१॥जुनभीमजिउभातममतेमे
तुममीहोइ॥२२॥जिउमुहिरखाधरेइहितिउतुमधर्महिताइ॥सफलहोइवरषजम
हितुमरीसपामहाहोइ॥२३॥कृष्णशालावाच॥चौपई॥देहिहोहिधनुसकलरमारे॥तु
मैरेमयेकधुशंकनधारे॥तुहिकारजपररुपुनेप्रान॥जाहिपारधरेमहाना॥र
३॥घाविधयज्ञसफलहोई॥हमहितचितनचाहेविधसोई॥सुनधर्मजाहितरठैम
रायो॥वृषकेतेउरदिखमुखउचरायो॥२४॥धनरीविसतनुमसमसुनयाको॥समते
कृषिकहोइवलुयाके॥योवनासकोहायुगहाये॥हरिसमरहठतपुरमोक्षाये॥२५॥कृ
नशालहेतदीनोवरगेहा॥तामोजाइउतास्योनेहा॥पारंवरसेवरचहुभाते॥दीपप
गइभारसुखपाते॥२६॥धर्मजेवेदासभासितकारे॥सभुनरपकरोवेदधवभारे॥सुतस
लयोवनासुकृष्णशाला॥धतराष्ट्रक्षादिसभबुद्धिविशाला॥२७॥पुनहरिमातदे
वकीघसमता॥गाधारीकुंतीहरिजीयथुता॥सभद्रादुपदसतासमसंगजीया॥रलधर
मातरोरज्ञीहितजीया॥२८॥पदमवतयोवनासकीयवर॥दससहस्रयाकीगातीध
र॥कृष्णनिवधुछवेवेठीवरस्नारी॥गौवेसकलरिदेहरघारी॥२९॥बहुसुगंधस्याधीनहि
नोरे॥सभमेकृष्णरहछीधिरकारो॥मधुभोजनफलसरसस्वादी॥सभुअचमदतमयीन
रवादी॥३॥इदुपुरमसभसभासुहानी॥सभपुश्रेनकोउदीचेतनमानी॥राध्यजे
रधर्मजनसमस्साडो॥विनेवचनभाषेकृष्णराडो॥यघायोगबुवसमकोदीजे॥भाग

ज्ञान समभु ते हि प्रभु कीने॥ काहू दई मोतन की माला॥ काहू नगन पदीये विसाला॥ रमा प
दे घर जंघ वरवड शोभे॥ घरि देष सभ ये मन ने लोभे॥ ३॥ जर पस्न सुपाले सो जे सपण॥ नगम
ण माण कथंचे ही रेघन॥ ३४॥ तरल तुरंग शोभ सन्नति भागी॥ सभ को दीये धर्म ज्ञा हित का
री॥ जय जयकार भयानि हि जैसे रा॥ सभ को दे धन धन पंचवरा॥ ३५॥ दोहरा॥ सफल
म हूरत सुभ घरी सुकली सभ भांती पयार॥ धर्म जक यो मिलना न वर द्रुपद सुता सं गांधा
रा॥ ३६॥ अस्र स्वकी प्रजा करी हित घनी सुगंध लगाइ॥ मृगमद चंदन मलैगिर कुंक
म कादि सुहाइ॥ ३७॥ चौपई॥ धूप सुदीप आरती करही॥ बाजे बाजे भ मन भ मर ही
सहस्र कन्या ठासी दिज्ञ इकठाने॥ इच्छा भोजन दीये हित ठाने॥ ३८॥ सो तू दीयो यो यो
जिन ब्याह॥ मुदित विपु चित वडो उसाह॥ मुख वो छतद छना तो हि दीनी॥ जे जे क
र दि ज्ञा वउ कीनी॥ ३९॥ [illegible] न क भांत केवाजे वजे॥ वेदी जन उच्चो धुन गजे॥ निरते
अपसर गंध्रुव गावै॥ देष सुन तन सभ शोभन सावै॥ ४०॥ अस स्व सुरपाल रघु तिन को
दीने॥ भपो सम मगन जनन कीने॥ सभी भपत रादि प्रदि घाये॥ दीन हीन जन को रु
न लघाये॥ ४१॥ जैसे व्यास कही ते तु विध करा॥ सभ को प्रधाये धर्म ज्ञा हित धरा॥ पुन धर्म
ज्ञा॥ [illegible] रहे सविधान जाइ जहा ताजा॥ वैशंपायन ने घाव्ह॥ लेरूपा तू सम जेन मंजनाये॥
भवन धमन शास्त्र जेहां ताये॥ ४४॥ दोहरा॥ सुकृत माल वउ मो लकी रूपवे ग
मे निला द्रा पदराबा षो तेह भालप रशन जंतु लज्जा निवादा॥ ४५॥ तारथ कल जे
न सुभर गो डी वधनु पुधर हा घा॥ सुकरस मर रविसम सच मन कपाली शोभ सफा
घा॥ ४६॥ कीवन॥ जवन जैन छव भारी कन्या यो नाम धर्म ज्ञान करारी तहा वे देवन वा
रा वडा रा घोषी सज्जा दे यो धर्म जन्म के कला यो न रव मे तरह रघा यो कमल वदन प्रत

[illegible]

२५८ वोरेस॥दस्मोदिसाकेन्नपवीनावे॥ताजपुरमझाइसईइइमडावेस॥५॥मतमोपरउपहा
सकुरवे॥सदन्न सकेलिवुषाइ मरावे॥ ३॥ सीकरे जुनुहिवकुझाई॥सुनसभ
पुनेरेउपननहाहेस॥धा॥जीयवेकेसेवचनसुनाये॥करणएतभाषतपुनहा
ये॥तोहि जानुसन्नदमदरघाने॥छिदिहतेपाये जानमहाने॥४॥निजसुनने
नुमजावलकरहे॥नझाढेहीनियामनुषपुनरहे॥जेसभजगकेमटइमठाने
तेभीनेसोलरनसवाने॥५॥सभमेवलतोरोरणमाही॥सिंदसमानपरे
वलवाही॥जिउकासीधितसभुपापविनासे॥हरिपुरजाइजनुधरैविलासे॥
५॥जिउडापाविद्वतेपितरपाहिंगतं॥पुत्रतस्मानेतेहोइविमलमता॥येउनके
फलपुन्नदेहवावे॥तवहमरणभुमत्याजीसधावे॥६॥दोहरा॥केसेवलरण
भुमवेजिहसुनसभरघाइ॥उपममारमरवेतवेहेतुहिउपहासुनताइ॥
७॥जोहमरणभुमेतभजेतेहिनदेषोरझानमधोकीटवीरविदामयोहरिपदहि
देवसा॥८॥सवैया॥वहूदाननदिवाइचलयोरणकोमिलराजेनसोझनसा
हसिधीरे॥रझसवपाधेनवलेसभसरभलेजीपरदोवघाइवजाइनडारे॥सु
जनीलननरेससरेससमाननभुजावलजारगानेजगमारे॥सेनझापारम
हावलवारसुझजीतरणेतसोहेतझघारे॥९॥सवैया॥मरहघापुरलोझशोच
सभीकेदनाहिदुखीसभुदर्षभरे॥सुखसंपतपरझांचितवसेपरईरवांन
दनजीयधरे॥जितिसंदरपुंरदरसीनगरीमघहामदयासनशीलघरे॥व
रनपझनपसदसवयोदसतासुनजिहिदर्षविहारकरे॥१०॥दोहरा॥सु
भआरनसोमपसतदर्षापिरेवनमाहा॥देषतवनझांनदसोपुदपवुनन
विउसारा॥११॥दशरानीपदमंजनीयासोमामेहेत॥ताकीद्रुसपरेझसव

रिससानी छवि चेत ॥१६॥ छंद ॥ मोतन माल विशाल उरे नग मान व कहीर अप
रलडे ॥ कलगी मलगी अस्व सीस बनी सम स्सर समान समुझ तजडे ॥ छवल पअ
न पुनि हार जीया चित चाहत है पाहे लोभ लडे ॥ कहे अंत समंत गहे अस्व को तव हे
हमुरीजीय चिंत भडे ॥ धस्यो किसी नरेस तेई हिअस्व उपनअ गत ॥ यास मनी र
दूसर जडात गहि लीजे हे अंत ॥१७॥ चौपई ॥ नृपसुत भीक अस्व दिखाविस मानो ॥ ती
धसन लोभ परे असधकानो ॥ गहि अस्व परा पहुंचा तत काला ॥ लिखपा रेय गाधर्मम
याला ॥१८॥ अर्जुन पा अस्व की रथाहि ता अवत है पाछे शत्रु गण जित ॥ वेहो बली
गहे अस्व भजवल ॥ नात सझा ज्ञामे रहे अस्व चला ॥१९॥ नृपसुत बधु शंकनहि
कीने ॥ गहयो अस्व नृप पेपवदीने ॥ अर्जुन आपुरा स्यो ततकारे ॥ नृपसुत शब्द
सभारे भारे ॥२१॥ अजोसमवे वर्णाक आयो ॥ नृपवेसु तको मुख व पुगटायो ॥ नु मअ
स्व हमुख कहि गहाना ॥ लखी यत तोहि काल गुण गनमाना ॥२२॥ छांडो अस्व विपुमुल
रो अस्वव ॥ अपुने बलकी पुष्ठ लहो सभ ॥ परे युद्ध दुहू मे कर्म तिभारे ॥ व्रिषधुज रो अ
र अस्व हतडो ॥२३॥ बहुर स्वार घीमार गिरायो ॥ नृपसुत कोस्या वल्लु दिखरायो ॥
गरजत बरतन तोहि तजावो ॥ यो अयो वेतिह प्राण गहारो ॥२४॥ तीछन सर छिधवे
तेडोर तव ॥ कीयो पुहार भुजबल लुलगाइ सभ ॥ लागत बानु वीर के पाना ॥ पेनडि
रोसी विधानु रहाना ॥२५॥ अर्धं चढु स्सर कोप वलासी ॥ अरकी तुरकी नृप रहासी ॥
दोहरा ॥ नृपसुत मस्सर घकीन रण गजर पहुंते अगेत ॥ मनु गिरशिषृग हुटे पवे रण
भुमसमो नरी अंत ॥२६॥ चिरपाछे सरधान हो नृपसुत रथे चलाइ ॥ हो यो सनअ रु
ताहित वदिख अनुशाल मराइ ॥२७॥ चौपई ॥ अनुशाल तारहन गमा हनकायो ॥
हिसनृपसुत मस्सर तीछन चलायो ॥ कुपअ नृशाल उरीवर छा सरा ॥ अरुर गार युभ

२५९

महो हो पुसै रे तस॥ द्रकुति षरा नृझनु शाल ब्रह्मा सो॥ न्रप सत को रण भने मा हो॥ २२
सुनी नी लधु जस व लीला षा॥ दो सो घनी सैन धरसा या॥ ते जुत्र पार ग्रनि न्रप संतो॥
तीन षर नीसैन ग्रभं जे॥ २५॥ सत को विमन नरे षकु पधोरे॥ रण भुमकी ने व हे ग्र षो रे॥
वमन की सन सव र्ष भई ग्रस॥ मन न सा व ण की वर षा छ व व स॥ २६॥ न्रप र्जुन सु नी नी
लधु जल र ही॥ व दु संग्रम भ ज्या व ल र र ही॥ को पे र पुदी रा इ रे म्र जा ति॥ च ल ग्रा यो
च पुला ति जे सत॥ २७॥ पाच वा न पर हार करा ये॥ रिषन पन गमो कार धरा ये॥ दूसर
सन पु भा षत मुख व चन॥ तुम चा हत हम सो युध रचन॥ २८॥ दोहरा॥ न्रप र्जुन रिस
का नो ली ये कर र को हार दि षा इ॥ जां ह्ली व धन षकर धार के वर बाधी म ह रा इ॥ २९॥ न्रप रको
ति रपा छे सी व धान हो व चन करे पु ग रा इ॥ न्रप ग्रनि देव सो ध्यान धर म न न मो की न पु
मा न॥ ३०॥ चो पई॥ नी लधु जो वा चा॥ दो इ विमन न म न्रप ग्रनि न बुला ये॥ ता सो भा षत
न र्पुन्ति ना ये॥ मो जन मा त तुम हो व ड ते जे॥ न्रप पुकु रण भु म नि र हमे जे॥ ३१॥ दू म ग्रजे
न सो ल र त पव का ने॥ मुहिर धा न्रप व परा म र ने॥ सु सर चेन न सु न ग्रनि ने ते जस प ति
प रा धन जे की सैन्या तत॥ ३२॥ ज्वाला ने ते ज सम जर र ते दि षा ही॥ ग जर र पु ग स व स मदी प
जरा ही॥ सम धी र्ष न जर गा ते भा जे॥ ग्रनि त दु ख पा ये ज्वा ला दो जे॥ ३३॥ न्रप र को उ स
र षा हि से ल रे॥ विर छे ग्र डि न म ह ज र म रे॥ कै सी दि षपा र पु ति ह वो रे॥ वा र ण व र ष
ध सी नि र ह पा रे॥ ३४॥ व र्ण ग्र सु नि हि पा र सी ये ज व॥ मे घ व र्ष भा रे हो ई त व॥ ग्रडि न
ने जु नै सा त व ली ने॥ ध तीज उ ज लु ज र ही न प ची ने॥ ३५॥ न्रप जैन दे ष ग्र धि व वि स्म
ना॥ व ध उपा व ता ग्रन न प छा ना॥ जो र हा य दो दु विनी धा र ग्र ने॥ व रे ग्र डि न सो ग्र
जै न प्र भ मन ना॥ ३६॥ न्रप जै नो वा चा॥ सभ दे व न मो न मु म व ल भा रे॥ सभ प ष्ये नो को हि

तुधारे॥ धर्मपुत्र अस्वमेध करत हैं॥ तुम कों चित्रु ऋद्धि धारतु हैं॥४२॥ तुम सो हम ने हे हेत प्रवीने॥
तां जीव धनत्रु तुम ही हम दीने॥ अरचित हैं हम तुरा घाता॥ तुम निर्पछ धरो इहि भाता॥
अरस मह मेजरा वो जाने॥ विप्र अवगुन हम कीन महाने॥ मित्र भाव तुम हम स्यो त्यागे॥
पुीतमीतन जजार नत्यागे॥४४॥ इति श्री महाभारते पुराणे अस्वमेध पर्व लो काद सोध्याय:
११॥ वैशंपायनोवाच॥ चौपई॥ वैशंपायन सो यनमेजा॥ पछत भयो यहि कहते जा॥१॥ ज
नमेजयोवाच॥ सुनत वड्डी शंका भई मो मन॥ पांडुपुत्र सत शील दयाघन॥ सभीवर
तदया धर्मात्म॥ सर्व ज्ञान ध्यावे परमात्म॥२॥ तिन सो ऋषि ने वैर किया परये॥ पछुनील
धुज को हित करयो॥ कहना करमुहि शंस मिटावे॥ जिउ कीनि उकी हह मे सुनावे॥३॥
वैशंपायनोवाच॥ सुनो भूप वर ध्यान धारि कर॥ ऋषि नें वैर कीने अर्जुन वर॥ ज्वाला
नामु नीलधुज की तीय॥ स्वाहा नाम सुता जानो जीय॥४॥ रूप बुद्धि सत शील अपारे॥
राषत स्तन अधिक सुभच्चारे॥ दोहरा॥ ताहि रूप सरूअ अमर नर देष सभो रीदहि स्मान॥
तापितु याके किआस्वी चिंता धरत महान॥५॥ ढूंढत वर याके लीये बीताये चिर काल॥
तासम कोउ न देषा जही चिंत निभपाल॥६॥ इति श्री महाभारते पुराणे अस्वमेध पर्व ले
कादसमो ध्याय॥४५॥ चौपई॥ इक दिन भूप सुता निकटारे॥ गाते नर तेहे त अतिभारे॥
केन्या सो पछी पितवाता॥ किस को व्याहि देउ कहु साता॥१॥ सुछत वर मागो तुहि देवे॥ क
ध्रुवि लंबु या माहि न लेवो॥ लजत कुमार नैन निहराये॥ मरवते रचन कहे र उचरगये॥२॥
केन्या उवाच॥ मान धर्मो नहीं चार हमारी॥ मरो माहि येव उदिधारी॥ तासो व्याहु हमा
राकी जै॥ निज जननी पकी स चुरके हासनी जै॥३॥ नृपोवाच॥ सभ देवन मो कहु से पेरमा॥
याऊ न धीन सरव दहिने षमा॥ ऐरावत गज चार देत ये॥ ता पर च उ वडी धव सोसे॥ दु
गमहम स्वमरति सवे जाता॥ ये नृ हि इछ वरो कुलाता॥४॥ केन्या उवाच॥ सरपति नारी

हैव्वाहहमारी॥ मदाकरतुहैतेऊसभमारी॥ योकारूतनपुकरतनिहारोरे॥ करेभंगतातपुकप
दोरे॥५॥ यजनकरतदिर्घाविघ्नकरतुहै॥ ऋषिरईरखादेधरतुहै॥ दिजनारीकाभंगकीयो
सत॥ वेतेऊरहेडुतेऊसघक्रीता॥६॥ कैसेकोनवरेवेहूसाचे॥ विववजीयदेहिगोहस
घरामे॥ करसिवचारतीयनरखपराई॥ काविधवाहोइवउभ्रमपाई॥७॥ चोपाति
सोजरपावकमाही॥ सकलपापततधिनेनिराही॥ तातेऊडिनसभोतेउचा॥
सभेदेवनतेजानेमेरचा॥८॥ मोमनरइथऊडिनेकावरे॥ तातेउन्रमकोनीरच
रे॥ रमराव्याहताहिसोकोजे॥ हेपतियामेविलमननलीजे॥९॥ स्रतावेजसनच्पु
विस्माना॥ रागीसनडाहिचिंतनरहाना॥ डिरवन्याकेसेउचरावे॥ न्ह्रीडिनसभीकेभस्मव
गौरे॥१०॥ मधुऊभधनाहिवीनीरे॥ मलीचुगीसभचोपरजारे॥ जोरिमगजाइस्यामतेउहोई
पीनवर्गीनिजरेराडीसोई॥११॥ जिरहवासातधर्मनिवसेनुरवा॥ निसेदेतमुहिलातेवडु
रवा॥ यातेरहेहेनीचमनतनारी॥ मलावुराननहीवेरेविचारी॥१२॥ दोसरा॥ जोजायोत्रिहूलोकमे
स्रधरीकारनसरा॥ परेऊकाटेतेभमनपरउचनीचनीविचारा॥१३॥ पितावचनस्नवं
न्याउठीरीयोइस्वान॥ ननकरला॥ वसनमेरतभुचपररननठाईवनगरनीविशाला॥१४
चनमोचेडुचुलाडिदउरी॥ चोऊडिनुउकाणा॥ हेमदरेदिजमेअपठवेन्यारिदेहलासा॥
१५॥ चोपई॥ चंदनधनुतंदुलीनिलघने॥ दूधचारुनाभिमलगने॥ ठरनुरखाइदसभमे
वेहरे॥ पानरपरलतंडलूपोरे॥१६॥ जातीफलसमसंगधघनीऊीता॥ न्र्पाडिनमानिहकी
धेहेमहेनुसना॥ हठेऊडिनहेदिननेरपा॥ ठयोनीलधुजीनिवरऊनपा॥१७॥ न्पपु
लामचरपधनसाडा॥ चरेवचनहेदिनवऊभाणा॥ कीहेकाराहमरेनुमस्राये॥ सेहो
पुधन्स्नापुनसमरूपे॥१८॥ दिजोचमे॥ नुमरीमतामचललगुनपरच॥ सोमुनिदेहह
हेऊस्वरन॥ रेदजोचिरनेमोहमतावर॥ ऊडिनवेरेहिचारीहरेदधरा॥ नुमरोवहवेस

वरदीन्है॥ दो॰ भरतानसहाहसुनीजै॥२०॥ द्विजोवाच॥ हम केकअगनि जानत भूपाला॥ सो
ठिलहि शिषमोहि पतिनिवशाला॥ द्विजवपुधरतुम पेहमआये॥ दीजे सुता मुझे हरषाये
सभासहित नृपसुनि द्विजवचना॥ हसे सभी दिघकैसी रचना॥ सभा जनोवाच॥ दे
नृपतोहसुतावर ज्वाले॥ सुरपति सम नहि वरै विशाले॥२२॥ ईहहि द्विज अगनि होइ
केनाही॥ नीकसमनऊ दीजे सखुपाही॥ तबनृप कअगनि सोकहे उचारे॥ तुम कहीहम मैहेरवै
गिनसचारे॥२३॥ असपुनी प्रीछा हम मैदिषावे॥ हम रेमनतेशंसमिरावे॥ द्विजसुनमुख
तेअगनि निकासी॥ अगनितबउ तेजप्रबलतप्रकाशी॥२४॥ दोउ मरछ समन कीजली॥
अगनि तेज सभैतेवली॥ सभ भयमान भये तिहकाले॥ मनतजारे सभ कोइ हिज्वाले॥२५॥
नृपसभेन सभ जोरे हाथा॥ वडउसतुति धारीहित साथा॥ भई शांत ज्वाला हरषारे॥ भ
पतपाये सखुचिहपारे॥२६॥ नृपरानी कै वहन चतुरअगनि॥ नृपसोभाषे वचन
भारमता॥ हे नृप तुम मैसुता शीलयुता॥ सुहा नामु नृपगुनवरदुता॥२७॥ विना
अगनि दसरकी अग्नसा॥ नहि रोष पुण भारपुकासा॥ याकी प्रीछा नीकीनि हारे॥ अं
न्यादी जोजनतसखुभासा॥ वन जाने योगाके दीजै॥२८॥ सनने होइ पाछे पछुनीजै॥२९
देहरा॥ नदीद्विज कोनि नसंगलेगई॥ नीयानि जधाम॥ मंदरमो वेगाये॥ द्विजवपुअ
अगनिसकाम॥३०॥ नीयाउवाच॥ चौपई॥ हेद्विजयोनु मअगनि पुनीत॥ द्विघरावा
निजप्रीछसनीता॥ सुनद्विजसबसतेअगनि पुकारे॥ जारधामनिजकी योनि
वासे॥ दु॰॥ नीयातनवसन जरन जकसाके॥ भजीवीरतजन्विताहोठे॥ सबलन
उरमोपुगटीज्वाला॥ भडेलोक सभ भैतीविशाला॥३१॥ रोवतनारभपै फसाई॥ जरे
मोरनहिप्रीछापाई॥ करुणा करमोहि जेहिवचावो॥ सुतादेहु अवीवसनुनलावो
३२॥ तवनृपकीरानीपुरारानी॥ कहिद्विजरावानतारमहानी॥ उठनृपजोरहाथ दे
दीने॥ अगनितवउ उपनअगनिकीकीने॥३३॥ रहेहेद्विजकेन्यानहिदेहे॥ पेडकपुर

२६१ तुमसोकरतेहो॥ वसोवासनुमनजारहमारे॥ रे बोरछमुहितेजुगपारे॥१॥ जोमेसे
संगवासकरावे॥ तिसेजनावोहेतुधराये॥ संतमईजगड़िनसरवीभयेतव॥ नपवेवचादि
जेमानसीपेसभु॥२॥ नपंम त्रोईहिनोमनमाना॥ भावेनपसोमुरवप्रगटानी॥ मं
चीउवाचमहड़िनवासतुमपुरमोचाहो॥ मतहोकेपुसमनकोदहे॥३६॥ नपोवाच
पाकेरिदास्वमितनुमनवाधो॥ हमुरीइछधरोहितलाधो॥ यासोनातामयोहमारा॥ जानो
सरवुउपजेजोमारा॥३॥ रधामनवलनजारकोवरई॥ हमरेजगरनिजतेजप्रजगो॥ इन
विधइनसोवुणदहिराके॥ जरतहमारपरेतीहिआवे॥३८॥ दोहरा॥ नपसुमलगन
विचारजीपसताव्याहीतिहिदीन॥ वसडीनतापुमीमोथोवुणनपसोकेनमई
धमनकीरजननमेजसोनातड़ीनवडेतेजु॥ नड़ीजुनकीसेनादहीसाजवाजु
निहमेजा॥३६॥ चौपई॥ नड़ीवकड़ीजुनकोवधासुनीजे॥ पावुसनेपापुसभुधीजे
कड़ीजुनवहुउसतीतकररहासो॥ नड़ीनच संतहोतवुपधासो॥४१॥ रिसवकतमन
पुनधनुषुसंभासो॥ नारायणासुधनधारवुपासो॥ निरपड़ीनिनिजतेजलु
पायो॥ रिजनवपुधरज्ञायोनिसटायो॥ जोरहाथनमजुनदिहाडेरु॥ मुरवतेतचनक
हेरितनवोहु॥४२॥ चिनउवाच॥ हेजनजुनतुमनकोनीहजारे॥ जानोनाहिसास
नाधारे॥ नुमकनसवमेधय जवोचारे॥ योनेरकारवनिवारे॥४३॥ सोहीर
नुमरेनिकरसदाई॥ रहेउमयुतहेतुवधाई॥ पुननुमकाहेयजकरतहे॥ पानेवउ
मुमघेरधनेहे॥४४॥ यजमनहीरतुमरेनेहे॥ पुनीवतवरोयजसोनेहे॥ नड़व
हमकरीवुराईएहे॥ धिमाकरोनुमरहसेमरेवहे॥४५॥ नुमरेसाजेवाजेयजारे॥
लाजनतहोतुहिउरानिहारे॥ योनुमडीहजमसवनानिकारन॥ रमननुमरासमहरी
वधुजारत॥४६॥ नड़ीनवकड़ीसीमहितचिनसोधरे॥ जरेमवुमसवधानोदवरे॥ डीहि
ड़ीनदेकड़ीसीमाचीने॥ समभसवधानेजिडीनउतीने॥४७॥ जारवुमसवेयो

जेरेअग्निनवल॥सभुजीइउदेनलगोएकुपल॥अग्निनेतेजप्रथमेनपदेखे॥होइहर
षुन्चितअग्निवशेखे॥४६॥जानोअर्जुनकेवलहाने॥अग्निनेतेजहमुदेहितदा
ने॥हरषतवाजवजतपुरमाही॥जाइप्रवेशपोन्चितनजाही॥अर्जुनअग्निहेतुजब
कीने॥नहेअग्निमुखतेपरवीने॥४७॥अग्निउवाच॥नदारजाइन्नपदोसमुज
खे॥अस्वपुनस्पावेतुहिनिकटाये॥विदाहोइभपतपेअपाये॥तासोसभुविरतानुस
नाये॥५॥हरिअर्जुनकीउपमाअगीता॥अग्निनवचनउचरीमनरीमनतनहरिसम
पावेमित्रपुनीता॥तबहेनुहरिधरचीता॥४९॥कवनजगतयोग्जीनेनारा॥सुरअ
सुरनेजुवडवाहा॥जरइनखाडुवनकोजासो॥हमरेहितमजवलअगीतथा
से॥५०॥तबसुरपतिवनकीरखाहिता॥करेयुद्धअर्जुनसोरिसकता॥अर्जुनकोसे
बानप्रहारे॥सभीमेघखंडुखंडुकरडारे॥५१॥सुरपतिमेघडकेकरसभहारे॥तबखा 8
कीनोभारीतवहे॥मेघपरवूंदपरनन्हीदीनी॥अर्जुनअसगनधरेप्रवीनी॥
५२॥तादिनतेमहिमित्राचारा॥अर्जुनसोसभकृतेभारा॥डांडीरवधनुषुरन
हदीनोहिता॥यासोभारहेतनखोचिता॥५३॥हिहिमलेपाकोउपकारा॥मनीतेभ
रीअग्निभारा॥तातेनुमकोसिषादेवो॥नुमनीस्वस्तिसदामननसेवो॥५४॥अस्व
लेमिलेविमलमनतधरहो॥पार्थसोवडुहेतुसभरहो॥तवनपअपुनोरिदेसिचा
री॥याकेवलहमतारवनभारी॥५५॥तेहैसीरवनापुतहावे॥अवअर्जुनसो
मिलेवनाये॥निजरानीसोसवकलोबुतेतता॥करेननेरसअग्निरिजेअहेता॥५६॥रानी
उवाच॥अस्ववाधरखे॥निजकोहा॥पुनरेदेनमिलेजानेहा॥नुमभोवडेनरेस
करहे॥करहेअपुनीहानदिखावे॥५७॥नरनमरनखुडीविवहारा॥मनतुरपोकर
होवलुभारा॥मरनजामुपोरिदेवसावे॥इकादिनमरनाहेसमजावे॥५८॥जवमोअन

२२हे न हसै कोई ॥ ते कृष्ण नर षां कायसु देहाई ॥ सुरपुर जा भोगे बहु भोगा ॥ ल्ली जेपससया
देहि संचे गा ॥ ६१ ॥ पुत्र षार्व तेसे पत तनु मोरे ॥ पके रण मे कर वल भोरे ॥ से नासं घारी
नु मरी कृष्ण न जान ॥ ने भूई रषा न्नाहि जिन्ने मन ॥ ६२ ॥ सुत के सेके वे रविसो रे ॥ मि
ल वो न्वाह तला जनि वोरे ॥ भपति त्रीयवे वे नसु नाये ॥ श्रिदि मे कृति ई रषउ पजा
२ वे ॥ ६३ ॥ सजे सेना श सुत्र कृसु पेरा ये ॥ कृष्ण जेन वे सन्मुख भये कृष्ण आये ॥ दससकृष्ण जे
न उर घुहारे ॥ दिष कृष्ण जुन रथपा छे धारे ॥ ६४ ॥ जाये वा न जा मै न दुख वाई ॥ कृष्ण रीनी
लधु जरला वहु कृष्णाई ॥ कृष्ण जुन सुपं दुग नी रचला ने ॥ सुर वर घोर वर्ष समाने ॥
भु मकृष्ण काम सर प रोद् षा पेु ॥ सरविन्न व धुद्रिष्टी कृष्णा ये ॥ कृष्ण सेना मे घेघे ते
रथा ॥ सह त कृष्ण सव सारथी रे रेमथा ॥ ६६ ॥ पुन इकु सर कृष्ण रथ तीलगाये ॥ निहि
सुधन्व पके नगर ल्याये ॥ तव न पुभये सवधा न महाये ॥ जव सुधपाय त्रीयमे नि
रषाये ॥ ६७ ॥ नि ज त्री य कोषि द कार की न कृति ॥ रनी सैन हमरी या वीमत ॥ र
दुर्जहि हमरे वान रहा वे ॥ कृष्ण जुन को मिलहो मन पावे ॥ ६८ ॥ लेकृष्ण सुवा वे कृष्ण
उधर हे ॥ कृष्ण पुने पा पाछि मा पुन कूर हे ॥ दे चा भे कृष्ण ने र उ कारे ॥ मो तीन गमान
वनि र पारे ॥ ६९ ॥ जनु रे गर पसा जे भे रे ॥ नपकृष्ण पार्थ कृष्ण रोध रा जो र हार्थनि
ज पा पाछि मा ये ॥ कृष्ण जुन दया परी र रषा ये ॥ ७० ॥ कृष्ण र मा ल दृहे कौन प्रसंग ॥ दृढ़
मोहे न सउ पज्यो कृष्ण ति व ७१ ॥ कृष्ण जो न्वो चा न्वा ॥ दो हरा ॥ वलो र मो स्मं गनु मसे
न सहत व लवा ना ॥ नृहि ससहा य हरि धर्म सुत दे षो जा इमहा ना ॥ ७२ ॥ मा नी नप
ज ना मनु न स्मु त को रा जव हा ड ॥ नि कृष्ण जुन चे सगा यो सहम स्वा ल सुखुपाइ
उषो न गार निज न सुत को रा जव हा ड वो न्ना मुत्र चे यो दशो
७३ ॥ इति श्री महाभारते पुराणे अश्वमेध पर्वणि नील धुज सें जुद्ध हो इ वो नाम त्रयो दशो
ध्याय: ॥ १३ ॥ वैशंपायन्नो वाच ॥ चौपई ॥ नृप वे ना री ज्वाला ना ना ॥ पति त जन्य हि

उठगई ऊकामा॥ त्रिजभ्रातावेनि कर गई तव॥ दुखञमकाविरतं तुमरेवो सभु॥१॥ उतम
नामज्वालाकोभ्रातमा॥ तासोकहे वचन दुखऊातो॥ ज्वालावाच॥ ऊमजेन मुहि सुत
वंधहतानो॥ हम मुरे पति केवलरण हाने॥ अव तुम परमुहि भार भरो सो॥ ऊखमा
हिदेवो कोउ तो सम॥ तासोलेहूवेर वलमारे॥ मुहि दुखऊमम देतो मुभचारे॥३॥ उतम
भ्रातमगनीके वचसुन॥ मुखते वचन कहत माया धुन॥ उतम उवाच॥ ऊमजे नकउत
वउवलीसुनाउ॥ तुमरा दुख भी दिवनसहाउ॥४॥ तासो यु करन उरपे चितु॥ नर
चेमरनह मारा तुहि हित॥ येकहे उन सो जीतो रण भुम॥ लेहूवे राजि रह सुधरो तु
मा॥ ऊसोमसतका दुखतुमरे मन॥ हम मरहै निह चे करत दुखगन॥५॥ येहीरकोइधा
जीपजाने॥ ताहे धीरह मवचेमहाने॥ ज्वा तरऊजे चनके सन्मुख वुड॥ जीवतनार
वचेजगमोकोइ॥६॥ ज्वालावचन भ्रातकेसुन॥ भइ व्याकुल दुख सो सिर धुन॥ को
धपरमुखते पुगरानी॥ तुमऊजेन से उरे महानी॥७॥ तोहि उचनमुहि वेनसुना
वता॥ प्रातुहा नमम दुखविनसावन॥ धिगु तुम को धिगुहम रऊावन॥ यावेदुख
नहीकायेमिटावन॥८॥ भ्रातभ्राव॥ जि उतुम मरताचे वलहाने॥ सुतहताइऊाई
दुखमाने॥ तिउहमो हरतायाचारे॥ मम मुहि नाहवहै तो उठजावे॥ याहेइनि
मानऊवमानीदखाये॥ रोवत उठगई चित मरहाये॥ डोडानर दुखपरचितजानि॥
चारहतनेकापर चडुती ततमत॥९॥ भियुसल्योवडागेजामे पडी॥ भीतेच मनकउहत
दुखभरी॥ मोहदेहिंगंडा जललाडो॥ मेदुपाय समभु ऊतभाडो॥ तवडांडाजीया
कोवपुधारे॥ जलतेनि कसी कहेउचारे॥११॥ डांडा उवाच॥ दोहरा॥ इस्त्रियावत्रऊ
निडांडाजलु समऊघमेरन हारा॥ तुम सो केसेऊघचेडे याजलुपर गडा मार॥
१२॥ ज्वालोवाच॥ विधावितेस्नुसहीलनेसनेसवाचको डाया पानपुऊउपजाउ

१६३ तुमबोलेजुलेअरजाथा॥१३॥चौपई॥अरजमसुतनतमभीषमजायो॥जिहिअरजुन
बलधारहतायो॥सुतकोबरबिसारहहाई॥बधईरथतुहिरदेअजाई॥१४॥तुमसतही
ननुहिकहावउई॥बहेरासाधमसतबिननरबनाई॥सनजगमसुतशोकतपानी॥अरजु
नघातुकीयोमननमानी॥१५॥धातेअरजुनरहतोपराई॥तेउपतननकीचितधराई॥
जगदीश्वररसाध्यानुलगायो॥अरजुनमितकीदृश्यमहायो॥१६॥दीयेशापघरमास
हेरहजवा॥अरजुनसरबलहतोपरेतवा॥दुघतज्वालावजुअग्निजराई॥तासो
परीजरीनरहाई॥१७॥तेउसरबपुधरतेजअपारे॥जाईबब्रवाहनीनरारे
नभिनबेगमोजाइपरोसर॥रहमलालहरिरबनमहावरा॥१८॥याकीअया
अधिकीबसतोरे॥अरजेअजोबेगीशुभचोरे॥भरचनीलसनलेअसबअरजुन॥
अरजेगयेसेगसरसैनघन॥१९॥इसुपर्बतजेसोदिरुना॥यामेदुमनिर
मगतबधाना॥घनेदेवअधरहेताहिपरा॥जापहूचेअरजुनतहावलमर॥
२०॥शिलाएकुयोयनपरमाने॥यासोअस्बथिरभयोसमाने॥शिलासाथ
असबपररहीया॥समघलुकरयोसेनपुहायोम॥२१॥जिंउचितेरमरतधर
लबहीं॥तिउमघकरेउदीपरही॥देखघअतचदेघरसाने॥अरजुनमनसम
२ सेनरहसाने॥२२॥अरजुनअसबउदुम्रनरअजायो॥असअगमिदेघरसेविसमा
येउ॥सभभेअसबपीरेहाठयो॥२देखुजाइबलुकरणपयो॥२३॥तमभवलुकर
हारेनहीधरे॥अरजसमभरेसेससभरे॥हटे॥असअजसबयुरहनहीदेखे॥शिल
सेअसबथुटननहीसेखे॥२४॥अरजुनेचाचा॥इरहोइसोउतपमीमानी॥
जिसकीसीहोरचनोदिघारी॥नृउतापरेसभीमनीचेतन॥अरजुनसभमरि
घायोबननतन॥२५॥शोरभना॥नपसा घेनराकेपचिबाके

तहां द्रुम फूले फले दिषाही ॥ अति सुगंध पुहुप द्रुम ताहीं ॥ २१ ॥ ताल तमाल रसाल रसाल अजाति वृ
क्षे ॥ कंद मूल कंद वक्ष फले फल रसे ॥ तरवर झौर घने फल दायक ॥ तिनकी शोभा कहत न का
यक ॥ २२ ॥ निर्मल जल पर्ण सरताला ॥ कमल फूल तिह मांहि विसाला ॥ तिन पर
भ्रमर अनेक गुंजारे ॥ मोर चकोर कोकिल झंगारे ॥ २३ ॥ सिंघ तुरंग गज कंठे फिर ही ॥
पसु पर भारी हे तु विचर रही ॥ मृग अनंत जीव हुते ता ॥ जा आपा मिल बहु सरवु चे
ता ॥ २४ ॥ अर्जुन तह रिषि की सुध पाये ॥ पांच गये मन चिंत महा पे ॥ चोवना समातर
त्रिषदे ता ॥ हरि सत पुत अर्जुन प्रभु पंचे तम ॥ २५ ॥ जो रहा चारि षि की उपमा धरा ॥ तांडु
हो अनधीन तिहि जनवसर ॥ रिषि को निरंतर घने रिषि देखे ॥ कथा और तनु हो न व शे
षे ॥ २६ ॥ पठे वेद वहु तर वहु साधा तन ॥ वहु पुरान साजान कराध त ॥ इन कोदि घनेर
छनला डो ॥ को तुम कि तसाये वडु भाडे ॥ २७ ॥ अर्जुन उवाच ॥ हे रिषि मोहि अर्जु
न जी पजाने ॥ धर्म तकाल घु भ्रात पधाने ॥ हमर पमो कुलवा धवमा रे ॥ जु
डे पा पहम को अति भारे ॥ २८ ॥ धर्म पहुत अस्व मेध उठा ये ॥ अस्व काज छल हमे
पठाये ॥ ते अस्व विशला सा पल पटा ये ॥ हमरे वल धूरन न हीं आये ॥ २९ ॥
रिषिवर हम पर करुणा धारे ॥ कर दी जे मुनि अस्व निवतारे ॥ रिषिवर रोस न क
ज्ञे न वेना ॥ कहे धन पडु सुत सु सवदे ना ॥ ३० ॥ शौर भ रिषि उवाच ॥ तुमे पापको
लगन सकै वे ॥ जिनकी उपम सकल जग गावै ॥ कहे सा व तुम रे वल को तू ॥ हन
नहीं भयो पापु कति हे तू ॥ ३१ ॥ रतन तानस मभु कहि के हाथा ॥ रचना रचे देवे समु जाथा
अर्जुन उवाच ॥ जि उतुम कही नि वे हरि माधे ॥ ये हरि वच हमहु उन ही ताधे ॥ ३२
दो रहरा ॥ रिषि उवाच ॥ सम जतठ वि हमु स्व तपे हैं ॥ गिर सा जारके ॥ उठ ॥ प मुपंषी
कानु तसु द्रुम कहु मेघ विहमे जम भज ॥ ३३ ॥ जिनि जनि जसव मे वि नाशु हो जो

२६४ समसबनीदषाइ॥सदासर्वदाईशहिंहवसमसोलप्रगटाइ॥४०॥चौपई॥तेहरिनुमसो
हितुऊनधिकाने॥रहेसदातुमनसोहितुमानै॥ऊसबमेधयज्ञयोतुमकरहो॥पापुमिटा
वनकइछाधरहो॥४१॥मधवुधतुमहीसमलघपावे॥तुमजान्योवहयज्ञमहावे॥जिउ
५७॥ जनमतउमलहतरंडो॥सुबरटाकसोहीपराजाडु॥४२॥पुनजोकोउचिंतानमताला
डो॥सरेजाचसोचितुक्रमनुराडो॥जिनकेरिदेईशकोध्याने॥तेरिदजोवतजान
मरुने॥४३॥धारिदमोहरिभजतनरोहेईधमिरतारिदेपधानोसोई॥हरिप्रताप
हरिसभतेवडुजाने॥तिहितसभकरोमहाने॥४४॥हरिमखुभीहरिहेतसभारे
निजबहुतराईतिलनविचारे॥हरिरतलतेफलतुमकोदीने॥ईहायशुपरसो
कउचमनलीने॥४५॥पुलेकालतकनामतुमारा॥रहेजगतमोउपमअपारा॥
समभपनपरसबलरहावे॥नरविडारनिजनामुकरावे॥४६॥अर्जुनोवा
चा॥रिधिवरसिधासुनततुमारी॥रखशातमहिहिरिदेसभासी॥जिउतुमकही
कैसेऊनवकरहो॥पेडनइछारिदेनिजधरहो॥४८॥जिउअँशिलसोममअसबल
परावे॥नाकोगतमिनतसधानहाने॥शिवोवाचा॥दोहरा॥उधालशिधिकीजी
धाईरशिलवरजीयजानु॥चेऊीयाकमामेहेमतमहुमरहान॥४९॥जवचवि
वाहदईमानीपतुनाचोऽसाज्ञाकीन॥पतिकऊाज्ञामोरोनहीसत्नामनतकरदी
ना॥मतउवाच॥वहेसाचपतिवचनसुनावो॥येकरहोतेउलटीदुष्पावो॥
उधालकसावसोविचारा॥लेडयेभेदतापोजमारिमारा॥५०॥एकदिनसतनो
रिधिवाले॥कछनोनारमोहिवेनऊमेले॥तेकऊबवऊीमईउमीहिसेवा॥हितवि
नरेडकरेविविहिभेवा॥५१॥कछोदिनदेवकोनुरधरेहिता॥कमभचारीसंततउप
जोतता॥नारीउवाच॥कछादिनदेवपरंशतनकरहो॥संतानकऊासरीरमा

हिनधरहे॥५२॥ इक दिन रिषि तासो उचराये॥ त्याग ज्ञान लगो कुंभ मन आये॥ जीया कुंभ जाहि भ
मपरकासे॥ संदेह संदेह कीना दीपविसमासे॥५३॥ पति कहे सो होकुटी मन जाते भवा हरजा
सो वतसउन्नारे॥ ये रिषि कहे हम रे विपरीता॥ चंठी कर तज्ञाति भार ज्ञानीता॥५४॥ पति
के वचन न नाहि तससे भुने॥ होइ दुखी रिषि माया धुने॥ दुखी होइ रिषि ता ते धीना॥ त
पु भीकरन मके भ्रमभीना॥५५॥ इक दिन नारदमन तह आये॥ रिषि को दरसन देखि
पताये॥ रिषि दिख को वड्डु आदर कीनो॥ ये ठायो भूमठौर सुखदीनो॥५६॥ न वरि रिषि सो ना
रदमुन बोले॥ देरि पुछ तुहि हेरो कतम नो ले॥ कुम कुपति दीन धीन तुम पेखे॥ कहे तेस
न तुहि धाम न शोखे॥५७॥ उदालक उवाच॥ सुतान सुत महि सुख न ही कोई॥ जतन धरे
दुखी ज्ञति होई॥ चंडी नार मोहि नहि उपजाई॥ ति न मुरझो दीये भ्रम कसधकाई॥५८॥
मोहि कही करहे विपरीता॥ बपघकपरयो ताहू ज्ञानीता॥ करणकरमो को वरदीजे॥
तज्ञ चंडीतपुतीधिकीजे॥५९॥ रिषि को मुन एको तव हाये॥ दई सिख्या ताते सुखपा
ये॥ नारदोवाच॥ यो चंडी नहि हिवे न सुनाये॥ उत्तर करे न रहे तजाये॥६०॥ यो तुम
कहो करेन तजावे॥ तुमरे कह्यो नरिदे धरावे॥ ताहि च्याह निज उतली करहो॥ वर
उतली कोरे निज मसखलहे॥६१॥ उदालक रिषि काशंसा बोधो॥ डायो नारदमुन
विदया होये॥ तबे उदालक जीया सो भाखी॥ उतली विध मनि ये वाहि राखी॥६२॥
उदालकोवाच॥ रिषि मुनि कालह मारे जावे॥ भोजन नाहि देवे जीय भोसे॥ नसा
दरभी ताका न सोकजै॥ इह जीय मोर हवे न सुन लीजै॥६३॥ चंडीयोवाच॥ कैसानु
निकसो वे मन डोरहे॥ नसादु मान कीजे मसख ते रहे॥ वह प्रकार के भोजन करहो॥ सेवा
धरि रिषि को हरख रहे॥६४॥ उदालक ऊ रिषि जीय मो उपकारा॥ जानन मयो भार ते भा
रा॥ परीरे नन तव जीय सो वचना॥ उतले रे कहे मे निसिख्या रचना॥६५॥ उदालकोवाच

२६५ ।पिन्स गाधु हम वरे सहाई ॥ काल नकी जे हम जीय जाई ॥ आमंत्रण भी दिजेन करे
हे ॥ दिउन भोजन नु मानुन धरहे ॥ ६६ ॥ काहू के ओ दिमा हन जाने ॥ इहि विध ऊ
ते नी कीं जाय जाने ॥ चंद्रजीयोवाच ॥ सुरस्व शाध्र द्रिपान गनावे ॥ विप्रन के वड्ड म
न धरावे ॥ ६७ ॥ दिजे सुंदर रिषोवाच ॥ पंगत्ल रोइ जिञ् ठा कुचीले ॥ मतके मरु दि
उ वन ते त्रेहे ॥ चंद्र उवाच ॥ दिज सुंदर पंडुत मत भारे ॥ तिहि बुलाइ दे उ आदर
सारे ॥ सुंदर भोजन ताहि जिवावे ॥ षटरस भोजन स्वाद वनावे ॥ ६८ ॥
२ रिषोवाच ॥ सवैया ॥ मोंन चाह तु मान तनाह सुने जीय प्र गर प्रकार कहे ॥
केतु पानी चीया न ते तुधे त्र न जादि जते तु देवे भोजन नीके लहे ॥ साग भिद
न रस लोभ स्वादि केरो उ न जे हित हर षरहे ॥ चीर कुचील धरे न करो पुंड जी
य के हेइ हि के सम सहे ॥ ६९ ॥ चंद्रजीयोवाच ॥ सवैया ॥ घृत तंदुल षोउ स दूध दही वहु भां
न की हार वनाय धरे ॥ धीउ मा हप के भी वरे न लरे शुभ मंडप मसाल न साथ भरे ॥
गंधि वास लयो नीर हस्त मो हरि दे हम के भेसे जं जाल मो नाहि परे ॥ हि तिष्या लप मीर
उन्या उजीयाये के सी करे न हिनाहि वरे ॥ ७० ॥ चंद्रजीयोवाच ॥ सवैया ॥ न जु के रीपं
उनाहि करे स मनो हिर्पे पंडु करावो जी ॥ भउ जुल चीर सुगंध भरे तिह सो तुम के
पहिरावो जी ॥ फल फूल नते चोल न वेद न देनु हि पर नर्थ भरावो जी ॥ दक्षणा रुच
भोजन विप्रन पो वसु ते धनु मोर षावो जी ॥ ७१ ॥ इति श्री महाभारते पुराणे अस्व
मेध पर्व ते चंद्र जी उदाल क संवादे च नु र्द शो ध्यायः ॥ ९४ ॥ वैशंपायनो वाच ॥ सवैया ॥
परभात वुलाइ तिसी विधि से दिज भोजन षटरस मासि द्ध कीये ॥ पनि सी करवाय भली वि
धि पिंड जिवाय दे जो सुर भार की ये ॥ पि के त्रि पताइ दिञा इहि ते सिष धार दयो
वहु दर्ष जीये ॥ कही से पि त्रु नम सु जुगीये ऊँ गा पंडुप ल शाध के जान दीये ॥ ७२ ॥

रा॥ योरिषि कहे उलसीकेरे ऋति चंडी सठनार॥ रिषि कहीऊ रोगंगामे दीयेऊ अन
डी ऊरा॥ ४॥ रिषि दिषि के पुधरे ऋधिक शापु दीयो तनकाल॥ चंडी तूं हे शिला वपुदी
यो मुऊरवेदुषशाल॥ ३॥ चौपई॥ पति मुख ते जीय शापु सुनायो॥ चतत विसम क
हे प्रगटायो॥ तोहि शाप ते कद मुकतायो॥ जव॥ शिलवपु त्यागी निजदेहि लहोतव॥
चंडी नामु ऋलषमीयाका॥ शेरभी रिषि विचार कहे ताका॥ पुनकहे हे ऋस जैन सुभ
चारे॥ मत्त्ले हाथ लहे ऋसब मुकतारे॥ ५॥ तुहि उपकार मुकत जीय होई॥ ऋस जैन द
घकरी विधसोई॥ शिल सो जाइ हाथ जव मले॥ हे मुकता इनार मुखदले॥ ६॥ च
रणिरिषि के हितसिर नायो॥ ऋगो चले ऋनंद मन हायो॥ चंपावती पुरी पहुचे॥ ऋ
मरावतसम सोभ कमहाने॥ ७॥ दोहरा॥ तापुर को नृप हे सुधुज ऋसु रवपती चलि गोहि
गयो तुरंग ता नगर मे ऋति सुंदर छव तेहि॥ ७॥ पाछे ऋस जैन वजो छव सम भयो धे
ऋो सेन॥ देष्यो सरवपुर परसभ दुखजन पस्यो सेन॥ ८॥ चौपई॥ सभ ले को न
पके सुध दई॥ दिष तुरंग दहम सी सुधगई॥ जिह पाछे पार्थ रष वारा॥ तासंग भए व
ने वलभारा॥ १॥ यो वन ऋसनी सुधुज वल ऋति॥ सातवपुद नृप वृषकेतसु भरसत
न पुवृ लाइ मंत्री सोभाषता॥ मिसे लोहि लरे पार्थ रोम्पिंतान ऋति॥ २॥ जद्रह ऋस जैन चि
न्हे हरि ऋसाके॥ ऋस जैन परऋमदिषन सकाके॥ हम हरसा दर्शन सुदि षायो॥ ता
ते इह मंत नृम ऋभायो॥ ३॥ ऊहि ऋस पार्थ सोरण मंडे॥ वउ मरण केवल रण छं
डे॥ मन नरस्ने निरस्वे हरि ऋसाके॥ पार्थ वहम हरिदर्शु दिषाके॥ ४॥ उहि हरि ऋहि ऋदि
ने वा हरऋसायो॥ ऊँमित तमे सेन तर्नी धन्न दरकायो॥ सातनसु मंत्री ताके संग॥ सरहस्व
सरहस्व रुकुदरकाजवेका॥ ५॥ सरहस्त सरहस्व रषु लषु लषुरुरुन्ववर॥ पाय एकही
वधुसानन रीघरा॥ रुकुदरने जीत पुनी सेन॥ नीक संभाऽसकेले व लेपन॥ ६॥

सभीसमर्थविधविद्यासचे॥समभीसमरजुनधीलसतउद्ये॥वेदवकेहेतेउकाजहिता
वे॥पापकर्मकेनिवारनजोवे॥१८॥निजचीर्यविनुनहीछहेउलाइवित॥समझी
वनकासमुद्यवाहेहित॥सतवादीसतकर्मकरावै॥लोभईरषाहिरदेनधरावै॥१९॥दु
ष्ट्रदेहिमुकतकोधान॥त्पसोतिनकेहितुमनमान॥दसभाईनृपकेउच
राने॥तिनकेनामसुनोधरध्याने॥२०॥इंदुसेनकुमारचंद्रकेतवर॥चंदुदेवपुन
त्रिलाचरनधर॥विदुरथमहाबलदृढसबलकरसो॥सरबलरविदतभामीलसो॥२१॥
राजकुवरदसनेकेनाम॥सुंदरसबरसरबलधाम॥तिनकेभयधरनीदलम
ली॥सभुउदरविद्याधरवली॥२२॥पाल्हकुमारसुपरवीनचतुरकलाम॥रणमोकर
केबलतेरेसत॥पंचपुत्रनृपकेकुवसने॥भिनभिनकनामलिनोरेगुनो॥२३॥सु
रथसुजानसुधन्वाकृतिवर॥चंदुभाससससेनकलचलदल॥पंचोदीवल
गुनचेदेह॥निसचिनदानकरतरहेतेह॥२४॥पाल्हकुमारसमनृपसंगजाले॥
दुरभकाजेवाजरिमस्ले॥विपुनकोवडूदानदीयेतवा॥रलाभनमपतचलेवडीछ
वा॥२५॥सुधन्वामातपेउयो॥विदहित॥पकसेमातवडुनेहुधारचित॥जननी
केपकामीसुनिनाये॥मोजीविदपुत्रणपुगटाये॥२६॥विदाकरेकजुनसोलरे॥
सबलपरोकमस्वलेकहिदिधरे॥मातोवाचा॥दर्षतजाहुपनदर्षकजाने॥कजरेजी
तमुहिसुवुदिपरावे॥२७॥हरिनामकसुखपजहितउनधीरे॥जहिराधोनतजे
बलचोरे॥नारदउपनहीरकीवडकीने॥सनमकाईसभनोदपवीने॥२८॥तुहि
पितसभभनकेनृपजीते॥पेहरिकोनजितोभपभीते॥निसकामरहरिहरिव्र
तरे॥केसीभातहरिदरसुदिपारे॥भूनुमसपतकेसेयुधकरे॥पितकीड
धसपरलधरहे॥सकेतुमजुनकेजहिलावे॥जाहतेहहरिदसनपावे॥२८

यैतुमकहतेपैरारणमाही॥ यातेगतउत्तमकोनाहीं॥ पैरणभुजनतेमखुजनमगवावै॥ नतरहमपर
उपरास्युकरावो॥२५॥ जीतेकछेकळधिकहरखावो॥ हनुहेवानन्तमोकुमिरावो॥ उजाउ
पहास्यसखेयानहीजाई॥ हमौनिजसहीछवतेंहिवजाई॥३०॥ सुधन्वा वाच॥ दोहरा॥
कर्जुनसरणहरिकेउपकरत्यावोतुमौनिकटान॥ विंतातजरहोहरवंमिवतमोहिमवन
परमान॥३१॥ चवस्योमातमोविदाहौंमिलीवहनतकछाइ॥ कोशलयांजहहनामरवहिपु
हपमालतगलपाइ॥३२॥ भगनीवोवाच॥ चौपई॥ यहकहैतरणजोनतुमारे॥ करेभानत
हारणकरीतभारे॥ रणतजमतनकलंककुलतलावो॥ पुराणपारयुधुकरतनभावो॥३३॥
कंरीतदुःखीसुमरारहमारे॥ मतनमुरूपरठाहेहासकछपारे॥ करेभानतनुमरायुधकोहता॥
दहीवलहरिकोजीसोचाहता॥३४॥ तवहमसहनमकोमरजाना॥ भामपतेवितनिं
ताषाषूकेसीवरोवीररणजाये॥ होइमानुहरखोछाधिकाये॥३५॥ सुधन्वा उवाच॥ रे
भगनीतुमसौंसधरोचिता॥ सोईकरोतुहिमानवधेजिता॥ यद्यपिकहेहरिवलभमरे
तोभीतावलखोरणचडेरे॥३६॥ जिजनतुमसुनोजुरणवलुकरेहो॥ तुमरेचितभासहर
घरहे॥ इसहीमोताकीचीपकछाई॥ प्रभावतीयानामसुजहाई॥३७॥ स्वर्णघालखितदी
पजगाये॥ कपूरवातीयागंधमहाये॥ नानाविधकेफूलसुहावता॥ पतिकेसीसमुदिन
भरमावता॥३८॥ मोतनमालकेतगारजोरे॥ मुखतेवचनकहतवरनारे॥३९॥ नामसो
वाच॥ दोहरा॥ केतकाजुतुहिवदनछवकैसीमोहिदिखाइ॥ हरिकेदरसनुकेरेजोसाभु
ममोवलुपाइ॥४०॥ मोहइकेलखाजुकछवरणवोलेवलतेंहि॥ लखीयतजोरवखवरे
मोमनकछावतरहि॥४१॥ चौपई॥ येयुधुधरणहतेपगावो॥ जिहवेसुरपुरजाहवो
वो॥ जहकहीतिसुंदरनारकछपारे॥ रहनमकोतेवरहेनारे॥४२॥ मतजीयधरेजुतुके
स्याडो॥ जरेसंठातुमरेकछनगडो॥ जहतुमजाहुतहाहमजेहें॥ तोहिसंठातजना

रसै कै होंं॥४३॥ कै तो वाच॥ मत तुमे चिंता तरस्वि तकर रहो॥ ज्ञाव तहें रण भन रस्वर्दे
हरि सरण पार्थ चलुप तीक्ता वो॥ क्रोरो जीत पुन तो हि दिषा वे॥४४॥ नासी उ वाच॥ सोव
ग्रा॥ हे तो भारी भरोसे ता क्रा न सरस्र मन्न तो सो जि उ के दे वेन मो से रण तै स तु म करहे॥ जी
ते विन्नु न क्रा वो न मसर रव ठु करहो वा रि तिदा न दे सिधा वो पुन यु कु ज स भ र हो॥ न फक्रा
ज्ञा नै भ सी की ने जो न क्रा इ रण पु वी ने ते ल करा हे तजु की ने ता मे ता ह जरहे॥ पित मय
उ रहे॥ पा भी सा न्वी पुग र रहे॥ छि न दे ल कै भ सी करहे॥ तु म ज्ञा न रि दि विचर हे॥४४॥
ईत स्त्री म हा भार ते पुरा ण क्रा स्व मे ध पर्व ले पांच द स मो ध्याय:॥४५॥ दोहरा॥ रण या
ते हो य छ हि त चि उ न वि न्वो रे ज्ञा न॥ वि जे क्रा वि जे त हो दो दु के र त नाके हान॥ १॥ रि
घे दे वो मो हि को उ प जे स त र हे ना मु॥ पुन ज्ञा ल रहो हर स्वर ण हे भर ता वल धाम॥२॥ सवै
पई॥ पु व हो न ग ति न्वीह संसा रो॥ सत वि क्रा म ना पुर न दि षा रो॥ सत वि न्व नामु जग
त मे ना ही॥ सत वि न्व दु हु लो क दु र व दाई॥३॥ सत ते न र हे ना मु ज गं भ्रन्न तर॥ स त ते सु प
ले जी फ ल न र जं त र॥ स त स प त ते कु ल उ ध रो वे॥ ना म व दु ये रे त ग र कना वे॥४॥ दोहरा
वादी वा द की ये घने चौ या न धा दु ता र॥ जि ति दे जो वादा न म म करे सा न्वु हे ना र॥५॥
चौपई॥ बो उ सी स गा र की यी ति हि जो सर॥ तु म म मु हि वि नी न मा नो प ति ब्र श॥ म जु न
जे ज न न हा व र स भा शा भ ये भि रा र्थ तु म ज्ञा न वि सा रे॥ चो रा सी ल ष य न मे म न्नु ष ज
न म मे ला॥ जि हि पा छे सं त ता न हे ल हे सु य स नि र तो ल॥ ग क्रा फ ल म न नो र्थ स म रे
के ने॥ मि म त वे द व न्व न न सी वी ने॥ कर त कर त त्री पा भु म ऊ र पा नी॥ जै से जि र है भी त
पु रा नी॥ ता र द न करत ज ल न च ले पु वा र॥ क्रा क ला इ हु ति सर थ मा र॥ त्री प को म नो हा र
व हु कर हे॥ स व ते व न्व न र रु ष पु ग र र हे॥ सो वि भं का प नो वाच॥ भ प हं स धु ज ज व स ग ता
यो॥ त ह भ सु ध न्वा दि हु ष न व ये॥ को प भ प क्रा ता की नी त व॥ ज्ञा वे स न न ते ग हि सा पा वो ऊ वा॥

१०॥दोरहतसधन्वापकरायो॥पितुअज्ञाजागहोकेसोजाये॥चलोवेगनुहिविलम्बनलावे॥ते
लकेदहितप्रमोपावे॥११॥सुनतसुधन्वाअतिविसमाने॥कहीउनेनृपमाकेउविलम्ब
ने॥नृपभयनुऊसरूउतकेनाही॥येसरूउतकीतिविलम्बलगाही॥१२॥हमनृपतेभीभय
वउधरेहै॥जाहुवेगहमप्रगटउचरेहै॥नृपपितुकीसैनानिरूपानी॥तिरयोजनमो
उतरीस्यानी॥१३॥तिनमोजाइरहेनृपपूता॥नृपतेभइअधिककरतूता॥चल्योवे
गअतिरथदौराये॥देखसैनमनदधिउमगाये॥१४॥रथतेउतरपितापगजाइ॥की
नप्रणामनृपकरव्योकुपाई॥भूपोवाच॥मोहिअज्ञाजानहकाहनमानी॥पाछेरहीके
उढीललगानी॥१५॥सुतोवाच॥कुमदफूलकंचनमयमोसो॥मांडयोनारसीचके
हितोसो॥तिसदेतनकछुविलम्बलगाई॥चितअत्रवैसोकरोनहाई॥१६॥भूपोवाच॥
हमअज्ञायेजितहीदरसावे॥अबजेनसोरणयुधउपजावे॥तुममतहीननारवच
मोहे॥पाछेरह्योकहेअबतोहि॥१७॥कैसेससमेत्रीयाहितदेखे॥करीढीलमहिभय
नेसुकरोहिमारतुहिजानो॥सुतननातानहीरिदेविचारो॥१८॥दोइदिजनृपकेते
वउज्ञाना॥तिनमोएकतभयपसुजाना॥एकसंतछदूसरतिसननमा॥दोउजपतपवि
घाकेधामा॥१९॥तिससोभयपतकहेउचारो॥योदेउहोइसोकहोविचारो॥इसमरदमहीअ
ज्ञानहीमानी॥केहोदंउयाकेपरमानी॥२०॥रहेयाधामनिजन्मनारिरउाई॥मोहिअज्ञा
ज्ञाकरभेददिखाई॥२१॥नृनीतनृपमभाखनहारे॥योंनृपकहोकेरोइहिवारे॥दिजोवच
नृपकन्याहाथोमेगलरतहै॥चोरनरकमेजाइपरतहै॥२२॥दोहरा॥दसीचेरनृपराज
निज्ञाविस्वामित्रैदीन॥चेडोलनमोजातुम्योनिजवचलागनकीन॥२३॥रसा॥चंडोलो
ताकेवध्योयोमरहीपुरमाह॥मिरतकवस्तुउतारलेआवतघाडोनागहा॥२४॥सुत
योवेचयोदिज्ञोपेतेहोयोवसकाला॥नारवसनभीनाहितज्योलीयोठनारततकाल॥

पुन्न दसरथ के कई दिन राम दीयो बनवास ॥ अपन वचन ते नाहि फिरो कीये के कई भा
स ॥ २५ ॥ तुम भी अपुने वचन ते नाहि मुरो है भय ॥ सत के डर ब दारह मो यो मृह रन से ध्यान
न पा ॥ २६ ॥ यो तम वचन ते फिरो हम न रहे नाहि धाम ॥ वचन हीन नर पुरष मो नि इचे
पे सेज न काम ॥ २७ ॥ चौपई ॥ यो नर पअ पने वचन मुरा हि ॥ ता के व स वो ना हस्यु हाई ॥ इहि
औ रहि दिन उड़गाये तन काले ॥ मो रली यो नर पवित्री विशाले ॥ २८ ॥ हीर के ध्यान मगन हे
हीर जन्म ॥ करत विचार सुचार मगन मन ॥ नजाज ता की न कराह ते लभरा ॥ त सेज ल गि
न सो नी क जाति घर भरा ॥ सुत म जुन करत तिलक दादस ॥ निकरत करोर भयो ता उति
स ॥ २९ ॥ मो हीर दे पीपार्थ सेरण ॥ करे यम्हि दि घर रावे वल घन ॥ अन व इहि भांत व
ना उव नायो ॥ हीर का मन नु का दून लगायो ॥ ३० ॥ दोहरा ॥ हमरे मन वघु जोर पी देव
व नाई जोर ॥ रही जीव की जीव मो देव इ धम सिर मोर ॥ ३१ ॥ कवितु ॥ चित चाह पी
र मारे जो वन जे न वल काली धारे मी तगिर धारी तप सो जाइ रणा ल रहे ॥ पुस पर
वा न डुरे निज पुत्र क मनु जा दिख ओरे के जीते को हारे वानर थंवर घर है ॥ दे व गन न्यास
जिन ईर विर्धा दिधारी थोड़ छ गिर धारी ते उनी की रिदि वरहे ॥ शोक कारक जे या
ने देवू लो कसी ऊते लक रो रहे मा र हरथे होइ जरहे ॥ ३२ ॥ चौपई ॥ रिदे ध्यानु ही
मरव हीर नामा ॥ परो करो रहे मा ह कज का मा ॥ इस मुठो रदे षे वहू ते जन ॥ दुगम रम
रो वत विसमे मन ॥ ३३ ॥ वहून पके धिधका रउ चौरे ॥ यो मुत तेको से सी विधमा
रे ॥ वहून के ह इहि दिन अन्याई ॥ जिन क समंद ठक है पुगटाई ॥ ३४ ॥ वे वु दया इनीर
दे न जानी ॥ नृप सुए करो जनीत मरानी ॥ नृप सुत पके करा ये जव ही ॥ तप तेल
जलस मभयो त वही ॥ ३५ ॥ नृप सुत को न ही जान वलगाई ॥ सभ जन देष भयो वस
माई ॥ जव सी सत भयो तपू ते लकाति ॥ करे उको न वधु सुनी पतन ता ॥ ३६ ॥ सभु

हरषेइहि स्वनदिषाने ॥ अपदो रज्ञायो न्रिंद्रराने ॥ तेलमाहि सुतफिर नदिषाई ॥ जिंउ जल
माहि मीन सुखु पाई ॥ ३ ॥ दिज्ञो वाच ॥ ज्ञाति ज्ञा च युहु मुरेमन ज्ञा षता ॥ तत्र तेल सीत
ली दुष्ट वत ॥ लषीयत तिसी मंत्र रोनाकर ॥ सीतल तेलु कीयाइ हि ज्ञ रवसर ॥ ३ ॥ ९ ॥
दोहरा ॥ कालयेर या तेल मो डारे दीप समान ॥ अये प्रज्वलत निदजस सास्वबल हे इर रे
वि समान ॥ ४ ॥ कालयेर हलूद रके लजो संघ केभालाग ॥ दूसर तिलके वदन पर ला
ज्ञो तेज रवि शाल ॥ ४१ ॥ चौपई ॥ दिज कह्यो याका वदन उघारि ॥ देषो नीलहि मनतव
छुद्रि डारे ॥ याते शीतल तेलु दिषाई ॥ मनको त्रमंत्र समुझ मोपाई ॥ सखउघारसि
स को दुष्ट ॥ विनु हरि नाम नाहि रुधु पाँदे ॥ ४२ ॥ दिज्ञो वाच ॥ धन नृपसुत तैसे
सात पुकरई ॥ याते ज्ञदिन माहिन हीजरई ॥ सोविधिकार मो हिपरधरहो ॥ हमको ज्ञ
नि व उपाप विचर हो ॥ ४३ ॥ हम निज विद्या परजारवाने ॥ भजन प्रताप न रजीय
जाने ॥ हरिजन के जैसे दंड दीने ॥ ज्ञाति मारी ज्ञ पनि जसिर लीने ॥ ४४ ॥ उचत
जैरेहम इसी कटा है ॥ ज्ञ घेस मेतदेहि हो दाहे ॥ जोर उपाइ जोर जो करहे ॥ इहि ज्ञ
पर मतेना हउतरहे ॥ ४५ ॥ भाषत उ सो संघ प्रथमाही ॥ कूदत परे ज टारे माही ॥
दिषहरि भजतानि जहा घधराये ॥ दिजे व चा इल्ली ये सत भाषे ॥ ४६ ॥ दिज्ञो वाच
मिसमझ ज्ञ धारे ॥ दईं ज्ञ सी सवाद ज्ञाति भारे ॥ वारंवार उप मप्रजारने ॥ केहेतु
म समझ श्री नदिषाने ॥ ४७ ॥ जैसे सेत पतु मग ज्ञ करराषे ॥ दुहूपुरो के सुरवसजस
जे ॥ ज्ञा पवच्यो पुनहु मे वचाये ॥ मोसो उपमन न रन्नी जाये ॥ ४८ ॥ जावो रघे ज्ञ
वपुहु सभारे ॥ ज्ञार न्नी तोइ ह्रीव च नु हमारे ॥ तव नृपसुत को ज्ञे कलाइहितामु
खज्ञ म्यो वउधार रष्ट्रें विन ॥ ४९ ॥ शस्त्रुपरर घ जाइन्व तु ये ॥ रएवाजे वाजेगहि
राये ॥ मषज्ञस्व राय विधनी के ॥ जैसे नरो मं शास्त्र हि जी के ॥ सो हरको टसम नेसे

सैन पठोई ॥ जा रे जे सुभट मुदित मन न होई ॥ सस्त्र अस्त्र दे प्रसंस महौ ॥ देषत कुरहौं काल
भय न वही ॥ ५१ ॥ दोहरा ॥ सुधन्वा अस्ना गे सभ मन के या को तेज अखंत ॥ शंख बजायो दुहू दि
स वाजे व जे अनंत ॥ ५२ ॥ चौपई ॥ पार्थ हरिस्मृत पुगराये ॥ जिह ह्म राज अस्व गहे या ते अ
नुमरे व लसभ ते अनन्त ठांता ॥ हरि दल जीतन द्वारमहं ता ॥ ५४ ॥ यो व ना श स्वे ग पुत्र स
न ॥ स्यातन अजैं अनन्त शाल यो ध वन ॥ पुन ब्रिषकेत नील धुज व डु वल ॥ सभ ह्री सूर
अजीत व वुढ भ ल ॥ प्रथम अग्र रोस नन्म रव को जाँवे ॥ शत्रुन को जित अस्व मुरता वे ॥ ५५
प्रदुम्नो वाच ॥ हम को पिता दीयो तुहि संगा ॥ तोहि आज्ञा करस को न भंगा ॥ तुम पीऊ
जा पाइ गमा जु ॥ भज वलध अस्वर वलुपती अज्ञा त ॥ ५६ ॥ ब्रिषकेतो वाच ॥ युध्द हे त
हम अब अस्व सो ज्ञाये ॥ ये उडुर ये अर व स्ती दिषाये ॥ हम निज स्वार्थ सभ स्यो लरन ॥
धर्म जन का म षपरांकरन ॥ ५७ ॥ जिउ ब्रिणतु गज अडिन परजोरे ॥ ति उ अस्वे दल रे
रोसि धारे ॥ ये अस्व से जाँवे यम लोकु ॥ तो भी हमन हीधाउ नयोगा ॥ ५८ ॥ प दाद
स्य पाइ ता मोतन काले ॥ शत्रु सैन दाहो स्मर ज्वाले ॥ अर्जुनो वाच ॥ हे सुत तुम पर भा
री आसा ॥ करो शत्रु दल रलो विनासा ॥ ५९ ॥ प्रथमें मेम मरण मोयुद्ध दे षो ॥ तु म
जव जाहु भीर जब पे षो ॥ करण जोवाच ॥ अब मुकौ उच तो न रहा वो ॥ तोरल
पा शाधुन को घा वो ॥ ६ ॥ शल्प प्रताप रम रावो ॥ ६० ॥ इति श्री महाभारथे महापु
राणे अस्वमेधपर्वे लोयोगो ध्याय ॥ ७ ॥ दोहरा ॥ अर्जुन ते आज्ञा जाइ हौं व सो वी
र वडु ते ज ॥ ३ ॥ उग्ची धुन मुख ते कहे सार्थ सो निरमे ज ॥ १ ॥ अव ररौ सेना मद्म मीह ज
हा सन्वा ती ॥ २ ॥ हम पर पुले जा इ तरह स्वार्थ ज्ञान गंभीर ॥ २ ॥ चौपई ॥ अब तु स्वार्थी
हरि उर धुव रा ॥ अब पुला ते अति अधिर वेगधर ॥ निर रास धन्वा मुख ते वो ले
को अज्ञा वनत ज्ञानि ते जो अमनोले ॥ ३ ॥ निरमय हम में स्पन्न मर वकौ वे ॥ धुज परब्रिप

भग्य कारदिषाहें॥ लषीयत करणि पुत्र त्रिय षकेता॥ अश्व वतेहे युधहे तस्स चेत॥ ७॥ काहू के
डिपीन नहीं अत्ने॥ निजनव लपरसिचतनगर्व मह्यें॥ मोहि स्सन्मुर कमायो एको तन॥ उच
तहूके लपरे एसो रन॥ रघु दौरायसुधन्वा चाले॥ सन्मुख भये दो उवउन्वाले॥ हस्सच
हो हेस्सर विशाला॥ अपुन नाम कुल कहत तत्काला॥ ६॥ त्रिय षकेता वन्च॥ सूर्यं तातके
लोपदिखावानो॥ ताका सुत मस्को जीय जानो॥ त्रिय षकेतन नाम हम राजगनाही॥ हमरा
अस्व बंधन सुरवु नाहीं॥ ७॥ सुधन्वा उवाच॥ हम राता तहि सुख जम पा॥ सुधन्वा हमरा
नाम अस्न रूपा॥ नुमरा स्सर्य हो इपिता मा॥ दिषरावो वलते जन्म काम॥ ८॥ इहि सुनक
रणि जधनु टंकारो॥ वा न नचाउ रस्वा हि दिषारो॥ रघु सार्थि सन्मुख अस्व तोरे॥
अभिम सैन हानीवल घोरे॥ ९॥ निरख सुधन्वा विस्माने भूनि॥ इहि वड्यो धोरे ज
नो सत॥ रिसकर तर घुच दिलोपवला नी॥ अहरसन्मुख की ये वान प्रहारी॥ १॥ रघु सा
र्थी सन अस्व वल घुजरन॥ पंच हजार धनुषु की रन॥ सर करणि जली घ ती लगायो
संपानो जीयदेषजनायो॥ ११॥ करणि जके और धनुषु कर धारे॥ सर सहअ वतन उरदरे डु
रे॥ सरव लअररघुदूर गयो हटा॥ करणि तातके सेसा की नो ठटा॥ १२॥ दोर सुधन्वा के ये
धेप्रति॥ करणि पूतको घरली यो सत॥ गदा रव डगमुगद र त्रि फरले॥ वान शकत चक्र
युध मरले॥ १३॥ भूम भकुकेवार प्रहारण लागे॥ स्वामी हान दिषारस जिहि जागे॥ तव त्रिय षकेत
होइविस्मेमन॥ हरहे ध्याय स्याम ईश धन॥ १४॥ तव अर्जुन वह योध पठाये॥ अमर सेनाव
हुद ईहताये॥ मार मार करशवदु उचरेहे॥ एक एक ते अग्ने लरेहे॥ १५॥ दोहरा॥ करणिज वा
न पुहरतर णसा वन चर्ण समान॥ दुरवी कीनी अररसैन तव सभी भय भयमान॥ १६॥ सा व
दुरस्सुधन्वे पांच वानन निषडारा॥ करणि ज की धाती लगे डि रनमके संभारा॥ १७॥ चौपई॥
सुधवि न करणिज सार्थि देषे॥ लेजायो रणते वन विशेषे॥ दौर प्रदुम्न हो सन्मुख वोले॥

२३० सुनेोसुधन्वावीरकुमोले॥१८॥तुमनिजवल्लपरकुजतिगरवावो॥पेमासोकुबक
हाँसिधावेग॥भाषतंपांचवानकुजतितीछन॥हरिसुकीयेपुद्दारसुततीछन॥१९॥म
रधकीयेपुनरघुकुसुसारथा॥हनउरेरणभनवउभारथा॥तीनवानपुनकुव
रचलायेकुरकोधनुकरभमगिरायो॥२०॥पुनसुधपाइसुधन्वाकुजतिवत्ता॥हरि
सुतकेसनमखदेरणपल॥हरिकेसुतकाधनखुरायो॥बहुतीसेनहतीवलपाये
॥२१॥पुसरवलपुदुमुकोदीयोहराई॥गरजभयोरणघनकीन्याई॥हरिसुतकोपेकुज
तितप्रभना॥देनोलरहीसिंघसमान॥२२॥चिरतकयुकीयोउनभारी॥कुंतसु
धन्वाभयोवलारी॥हरिसुतकोसुधदईभुलाये॥सेनाकोदुखधरेमहाये॥२३॥सुतवर
माहिरकोपभयेतव॥वानचलीजीकुजतिभसुसत॥सुधन्वावानशत्रुकेकाटे॥चिर
तकभयेदुहूयुधठाटे॥२४॥कुंतसुधन्वावलीकृनेंता॥सुतवरमाभागाभयमंता॥देखकु
नुशाल्वपरेभयधारे॥सुधन्वासेरणगहेउचारे॥२५॥कुनुशाल्ववाचा॥हेहरिजनतं
कीरमहानम॥वउयोधाहमरेकीयेहान॥वहुनरथकीयेचतुरभजाये॥मतगवेनिजव
लीदुसराये॥२६॥कुनुशाल्वभयजगन्नामहमारा॥सेरोजवकरसाकोवलभारा॥हमरेस
न्मुखयुधकरावे॥पाछेकोनहीपीठीपरावे॥२७॥दोहरा॥कहिकुनशाल्वनिषंगतेका
देनीघनवान॥सुसमारेकुरकीयतीखाडोतेजमहान॥२८॥रथपुहुँचडकवकीयेशत्रुका
पुनहुरेसरथाध॥कीयेनरथभगतेकोकुउहुनमेटेकेधा॥२९॥चोपई॥गरजतकु
रकेसनमकोरे॥चपलातेजपरेवलभारे॥वहुमारेवहुभाजसिधाने॥कोउनठहरस
कोभयमाने॥३०॥सुधन्वावथकसेंजावाई॥पुनकुनुशाल्वसरदीयोचलाई॥सुध
न्कीनहसुधकैसापरये॥मनंदेहातईशकेचरये॥३१॥सुधन्वाउरलेचसभदेथे॥
भयेविसुमरणयोधवशेषे॥पीतसुन्वीरमुगंधतडारे॥सुधमेलयेयतनकुपारे॥

कोपसुधन्वारथकन्यानाडो।अर्जुनशालसमीपगयोवलगरेडे।अर्जुनशालतेअरिसवानचला
ये॥सरथतजीनोतेजमहाये॥३३॥पुनअर्जुनतजीसेनामाहा।अर्जुनपरोभारीवलवाही
हनवहुसेनरथपरवाहा॥दीयेचलाइवलीरणमाहा॥३४॥भगेलोगरणहरनसारो॥
सुधन्वाकेभारीवलताके॥भागतचमदेषसतठवअर्जुनपहुच्योअर्जुनसन्मुखधर॥
३५॥वाननवलअर्जुनधनेगिरायो॥सेनाहनवहुनधरचलायो॥तुमलयुद्धदुहुरण
हुकीनो॥दुहुदिशसरनतननभीनो॥३६॥अर्जुनसुधन्वेशकतचलायो॥सतवकीस
धइभुलायो॥सातवऊरदेषसभसरे॥हाइहाइकरभगेकसरे॥३७॥अर्जुननिजभु
जवलैनिहारे॥लषेनिकलपयमनीरसभारे॥सेनासेनरघुहाकचलायो॥सुध
न्वाकेसन्मुखपहुचायो॥३८॥अर्जुनजेनोवाचा॥सुनहरिभगतवीरअतिभारी॥तुमस
भसेनाहनीहमारी॥सरपतिसमतुमरेवलदेषे॥तेहितेजकीउपमनशेषे॥३९॥दो
हरा॥हमभीवहुसरेहनेजिहिभयजगसभयो॥षेपमानरहतेसदामतहनइकर
कोधु॥४०॥भीषमुमहाभयानरणद्रोणाचारवलतेहा॥रविसुतकणवुधमीहमहानेर
णतेहि॥४१॥अर्जुनतुमारेयुधदिषहमअचरजरहेमान॥तुमसमयुधनदेषयोनार
सुनायोकान॥४२॥सुधन्वावाच॥सुनपार्थवहोसन्वीकात॥भीष्मादितुमकीयेरण
घात॥डिहनअर्जुनतुमनिजवलहाने॥इशदयाकरहतेमहाने॥४३॥तिनयुधनो
हरिसाथ्यतोहि॥सभअर्जुनिवलपुतिहरिकेरोहि॥वरहीरअवनहीनुदिरथसारथ
देषोमुकेजीतहोपार्थ॥४४॥हरिविनतुमअर्जुनसकोवे॥मोसेनअवकैसेन
कतावो॥अर्जुनकीवहानिजप्राणगहावे॥मुझतेजीवसवूतनजावो॥४५॥तुझरत
उहमइहीतुरआ॥पेरोजगमेरिदेउमेजा॥चारोदिसजीतोक्लपायो॥करोयज्ञनिजसु
तसमहाये॥४६॥निजविचारदेषोमनमाही॥हरिहोतेवहुवलतहिकाही॥हरिवि

२२१ नुयोन्वाहोजीतोमम॥ स्वपून्नोनदिषावेइहितुम॥४७॥ अर्जुनकहेंदृतीगिंउभाषो॥ महाय
रवोलमुखुवांधारावो॥ सेरेमुखतेवहुतुनवैन॥ दिषरावैरणयोकेरसवैन॥४८॥ कहिअर्जु
२ नसोंवानप्रहारे॥ तांडोंधिनपुकोकरंसकोरे॥ दिषसुधन्वासहधनकाटे॥ सरपरहारकी
योवहुठाटे॥४९॥ अर्जुनभीअरवान्चलाने॥ दुहूकेभयेसंग्रामनमहाने॥ सुधन्वे
ततसोंवान्नप्रहारे॥ पुनसहस्त्रपुन्कोंसेतोदिषारे॥ अर्जुनदेषकेटेमनमाहो॥ दुहूकेव
लकीअंसख्यानाही॥५०॥ सेनसुधन्वांहसधुजरणलागोसुममन्न॥ गजरथहैपाइ
कजेरेभगेनठहरसकान॥५१॥ सुधन्वाचरणशचूतवेतलधिनचरयोप्रहार॥ व
हमेघडेउसेन्कोधिकेन्वालमिटीततकाल॥५२॥ भुजंगाधंदु॥ परेववहोंगोलेचनीसे
नहान्ने॥ रहेवाजन्नेदुदभीरणमिजाने॥ गजरथतुरंगोलगेवहुसतापा॥ च
लीपवनसीतलमयाजअमापा॥५३॥ जोरेसेनचतुरंगनीकंपठंपे॥ गिरेगस्त्र
भुमपरभडोभाजंगजेपे॥ धनुषुंडुसतकाचस्योतावतेन्चा॥ दुनोयाहिमोतोसच
लमारवंका॥५४॥ येहरा॥ अर्जुनधनपरसोंरगुनधारलीयोततकाल॥ वानन
कीवरषाधरीअरकोउरविशाल॥५५॥ सुधन्वाचितमेअकलमन्येदियअर्जुन
केवान॥ रिसकपरोअरसेनमोकोउनठहरसकान॥५६॥ दोउटोहुरहेमनरण
योधेतेजमहार॥ दुहूकीसेनजीतउतमईकोउनठहरसकाइ॥५७॥ भुजंगाधंदु
दोउवीरवूसपरअरेयुधमारे॥ दोउचतुरहीरभरतहीरनेप्यारे॥ वसोवानयोधारहे
वीरअर्जुन॥ सुधन्वानलेचारहीयांहिवलुघन॥५८॥ पुनःवचनमुखतेअहेस
नोअर्जुन॥ विनाहरिनपरोपरेतोहितेजन॥ विनाहरिव्रिपाविजेकोअ्रास
धोरे॥ वजेकोकहाजानअपुनेसमारे॥५९॥ कहोसान्चहीरविनहृतोनोहिअर्जु
ना॥ कथाडुगिकसीविथचरोपरकाजा॥ सुनोवीरजैतोहिहरिजताडनप्यारे॥

वुलावो जगतपति जुरछक तुमारे ॥६४॥ दो॥ उठ मोसो करो युद्ध वलधर ॥ वचोवा
न हो कहो साम्ब गयवर ॥ सुनत कोप अर्जुन तवे वच उचारे ॥ सुनो वीर मतंग वुले
करे हो स्रपारे ॥६५॥ दत्ताग वुरणा भसमो नहि वनाई ॥ किससो प्रकाशे कहो कियाम
हाई ॥ हतो मोहियो हतसो वलन पारी ॥ वली वचन मुखते कहत हैं विचारी ॥६६॥
हतो मोहरवा हम हते तो हिरणा भम ॥ विजे ई शके हाथ मतंग वु होज्ञा जतुन ॥ इही
करत पार्थ प्रहार कीये वान ॥ नग मो करडारे सुधन्वे महान ॥६७॥ कीयो सारथी
हतरथे जे म्वल्लाई ॥ सुधन्वे करे रणा भम वलम हाई ॥ भयो काहराइ सुत ई शध्या
योॐ रिदे ध्यानु हरि धार हरि उपम गाये ॥६८॥ दिखे घोलद्रि गई शरपथ परनि हारे ॥
जहापरेस्स करत हार छथोरे ॥ निर्घ दर्छ पार्थ नतमो स समावे ॥ भयो रर्थ जितउ रकव
उदर खपावे ॥ दो ॥ उहाथ जोरे करे वहु प्रणामे ॥ हसे देख यदुपत ग्नेने तेज धामं ॥ इति
स्त्री महाभारते पुराणे अस्वमेध पर्वणो सप्रदसमोध्याय ॥१७॥ ॥ वेशंपायनो वाच ॥ दो
हरा ॥ पार्थ की चिंता मिटी हरि को दरश दिखाइ ॥ हरि भगिज्ञानंद तभये तव हरि से देख
गताइ ॥१॥ स्त्री भगवानो वाच ॥ पार्थ पार्थ हीन तव तुम सरोगि करो सभार ॥ याते कार
रतुम भये कीयो मुहि ध्यानु स्वचार ॥२॥ हमसे तुमरे निकट हीं जव तुम धरो ध्यानु अप्र
गरपरो निसही मने रहमला लनीय जानु ॥३॥ चौपई ॥ उठो हर्ष निज ठौर सभारे ॥ हम
रथु हाथ वचला उतुमारे ॥ अर्जुन तव पाछे जोवे ॥ सार्थी हो रई शवडु केवे ॥ अर्जुन रथ
परहरि को देखे ॥ हर्ष सुधन्वा कहे वशेषे ॥ हे हरि हम तुम को जीय जानो ॥ अर्जुन रथक
रतहि तमाने ॥४॥ तुमने तोइ कके हाथ विनाने ॥ करेसे वडई की प्रकाराने ॥ दासन सम २
जव तो हि वुलावो ॥ अर्जुन तवथि न विलम्ब न भावे ॥५॥ पुनः अर्जुन सो कहत प्रकारे ॥ स
नो ध्यान धरव वचन हमारे ॥ अर्जुन तु हि रथ कजाये हे हरि ॥ मोरह हतन उपचार करो च

॥हमकैंमेउपचारकेरोरण॥सुरनरविस्मनिरषेहोवेमन॥हर्षरोइमोहिउपमर
रेसभमानुषउभुमदेवसरुलनभा॥हमरेभुजवलयुधसरोहे॥शत्रुमित्रसमउ
पमसरोरै॥हरिहैसमभगीरह्नाहोरे॥दोनोएकसमानानिहोरे॥॥दोहरा॥त्रैसरस्नाढन
षगतेक्रजेनप्रणपुगरा॥॥हतोतुजेइनत्रिहूमरहेक्रजेननुजान॥॥योनहतोइ
नसेतुजेपित्रनरक्नेजारहा॥सकेतुकरेवचाउनिजहमसाचीप्रगटहो॥॥चोपई
तुमजेकरसाकोनेउकरहो॥रहुसविधानविसमममतधरहो॥क्रजेननामनमोहकाजा
नेम॥हतेतुजेसाचीकरमाने॥॥॥सधन्वावान्वा॥नुमकीयोपुणयेमोहरतोवे॥हमरा
प्रणभीपुगटदिखावेभदहिंचेवाननुमारेतीक्षन॥जेमनकरोषडुमसरस्ना॥१२॥वरो
नरकैलाजेवउपापा॥इहिकहसोसरतज्योक्रमापा॥सभीवानहरितनजालाजेम
पुनकोरवानउरेधनराजे॥१३॥वानवलेक्रजेनकारपुवरा॥भमतकुलालचक्र
जिउरणाधरा॥पुनहसमसरक्रजेनपरहोरे॥तवहरिपार्थसोप्रगटरोरे॥१४॥सधन्वा
केवलजैचनुराई॥कैसोरनसमनहीजान्नमराई॥योतुमयेडुघहितहतकीयोप्रन
देषुविचारीकरसभमरहनुकोजेरना॥१५॥तातेकोरजणयाषावलु॥केसेतुहिप्रणपूरे
रणपल॥तुहिरघपरत्रिभवनकोभार॥षावानोवलभमेक्रपारा॥१७॥योहमक्रप
नावलुनलडावेभिघाजानेउउनहामिधावे॥याकेप्राकमणीलक्रवया॥जीतधरे
हेइकमनमण॥१८॥यामकजीतनकठन्दिषाउ॥सभनेक्रतिवउवलीदिखाउ॥१९॥क्रसर
जन्मवान्वा॥दोहरा॥तुहिकरणदिषमोहपुणनुमहमरेरधपाल॥निजपरेगेमोरहपुण
क्रपनोविरदसभाल॥२०॥करेरुपायोकोहतोपरपरेपुणमोरह॥नुमतेरुधनदूरहेरुढन
सजमहतसहोइ॥१५॥चोपई॥भाषलक्रजेनरिसचिनधांरेक्रजिनचम्नकहयोननक्राशेक्र
निभयानजोहरिदखयमडरही॥सुरनरक्रसरजासमभधरहो॥२१॥नवपार्षदहरिवानप्र

काश्यो॥ देष सुधन्वा मरवते भाख्यो॥ सुधन्वाउवाच॥ यद्यपि है हरि सर भय कारी॥ पै मुहि हर
तन सकौ वल कारी॥३३॥ पुन हरि ऐसो भाषत प्रगटाये॥ सुनहो यदुपति ते जन हाये॥ अ
द्दि वल डारगो वर धनधाऱ्यो॥ जाइ गोप गोपी सुमुरा स्यो॥ सुरपति वल वर्षा करयाँ
आउन को कष्ट असुदेन हीमार्षि ३॥ ते वलु पार्थ को देवो अब॥ पुन रक्षा तुम करोगे हेतु
सम॥३५॥ देषो कैसे राघव होइ सम हम पुहार करत हो सरीरस॥ सुचेन मोहि समर ते नि
हचेधर॥ राघस को तो राघो है हरि॥३६॥ तव सुन हरि अर्जुन सो बोले॥ हे पार्थ याव
लुनि हते तो ले॥ जिहि वल हमसो वर्धनु धाऱ्यो॥ तिसे धारयो फलु पुजारा स्यो॥३७॥ ते
फलु हम सम तुम को दीने॥ परहरो सर ते जप्रवीने॥ सकल देव देवांगन तवहौं॥ कौं
तक देषन को आये सभ हीं॥३८॥ सभु आपस मो करे है वाता॥ अर्जुन सप्रकली विष्याता॥
सुधन्वा भी अति वली कहाई॥ देषे कहा वनाउ वनाई॥३९॥ सुधन्वे तव मन्तु कीयो वि
चारा॥ हरि पार्थ को दीयो वल भारा॥ अर्जुन सो भाषे मुख वचना॥ सुन पार्थ हरि की
ईहरचना॥४०॥ हरि वल कैसो फल तेहि दीये अत॥ हम इहि वानु तुमार कटो सत॥ त
मकरा वृदने वेन तीव हुकरा॥ हरि सो वलु लीनो जितने धर॥४१॥ हम का पुनेहीं व
ललरे हो रण॥ सव लपरो रणानु मपर हे निवला घना॥ तव अर्जुन सर लीयो पुकारे॥
सुधन्वा दिन निजस्वानत जारे॥४२॥ अर्जुन अर्धचन्द्र सर चन्द्र अर्जुन कारे॥ याहि ते जुन हीपावै
पारो॥ अर्जुन को सर दुकड़ कीना॥ दिष सुरनर भये विसम प्रवीना॥४३॥ आ कृपपार
पसस्यो रनि कास्यो॥ धनु ध धार हरि उर निहारयो॥ हरि के हीसभि पुष्पनी फल
वल॥ तेसभु हम नाहि है तम हाभल॥४४॥ ताफल हते इसे ही वारा॥ सुधन्वा कैसे कर
तसुधी॥ अर्जुन वह हरि धनपा कापषु धाऱ्यो॥ हम को हरि नहीने कुसभ कस्यो॥४५॥ सुध
न्वाना चा दोहरा॥ सकल मही के पुन तुम कीये अर्जुन के वाना॥ तो भी मर्दौं न हतस

२१३ कोकारोगासचमानना॥१॥ दोहा॥ योनकरेप्यावानकोगुनवसिएहैमोहि॥ शस्त्रअस्त्रविद्यास
कलमुकेदईहितसोइ॥ उआतापतनीसोसंगाधरयोगघलेमहान॥ तेजघलाकेमोह
केयोनकरेपाईहवान॥२॥ चौपई॥ हेगुरजैननमेरोवडभागे॥ हरिनमकोवलदेअनुरा
गेमनुमहरिकेगुनितिहरघतकीना॥ जिहिप्रतापकगुपुनाकरलीना॥३॥ धनतुमधनत
पपितुमाता॥ धनकुलजिहनुहिजनमविख्याता॥ तवगुरजैनपरहारकीयोसरा॥ रवि
समयाकीजोतनेजधरा॥४॥ सुरनरदेखचकतचितभयेग॥ सरकेतेजगुनासकुतिल
येग॥ मनतयासुरकीज्वालमहाना॥ जोरेसकलजगतभयमाना॥५॥ सुधन्वोनजस
रमेलकरवाना॥ तीनहूकरकरमठेकराना॥ सुधन्वाहरघभयोसरकाटे॥ शेषुवजा
योरणवडुठारे॥६॥ वडेदेवतापिताहमसधुजा॥ कंपेचलाइलीयोसतपसारभुजा॥ वि
जेसंरवसभसेनवजाये॥ दुंदभवजेभेरसरनाये॥७॥ भुमके पायमानहूईतना॥ सुर
केजाकसरनरदेखविसमेसन॥ हरघसुधन्वेवकेगुरजैनसुन॥ तुमकिउशंखवजायहो
वडुगुन॥८॥ दोहरा॥ जवबाजेमोहिसेनमोशंखवजेभुनभार॥ तुमकिउनाहिवजाव
तेयाकेमीतमुरार॥९॥ तवहरिपार्थसोकहेकहोतीसरवान॥ तापरमुकेवेदारहे
मरोसीपकगरजान॥१०॥ हमनतुमशंखवजाइरणसभहेवोधमिटाइ॥ कपुनकग
केमाधोसुजानमयोगोसन्नारा॥११॥ चौपई॥ सुनकरजैनहरिमुखतेवचवरा॥ दु
खकुमनमेरभयोअतिहरघरा॥ भिनरूपीसरततछिनकाटे॥ धनवरधारेकोपचित
वाडे॥१२॥ वान्नुकगोविनिजनतेजधरेहरि॥ मरवतेवचनकहेवरणाधरा॥ श्रीभगवा
नोवान्चा॥ जनहरिधरेगमकगविताग॥ पितनगाजानननापिरेदुखारा॥ पितकीगाजा
पिरपरमाने॥ गजेत्याजावनवनभरवाने॥ तातेयोपकलमहिउपजाये॥ नेयापकल
यावानसहाये॥१४॥ याचरचेसुनचिंतसुधन्वा॥ कलमलयेभयोरिदादुखवन्ना॥

पवरण ठाढ़ा कलीन कै लो॥ हसन हरि सो कहे वचन कृष्ण सों लो॥५१॥ सुधन्वा उवाच॥ हे हरि
हौं लव हे प्रभु वात॥ हमको हसो चहे हे वड गात॥ तीन देवता वान मझारे॥ ठीहरायेतु म
के रण मारे॥५२॥ कृष्ण अर्जुन को कहा नि हि हत तन हित॥ पुण्य धोरे रण भुन मो हर घत॥ देवो के
सो निरवास ते हे॥ सदा कृष्ण सुमर वलु दा हते हे॥५३॥ पुनि पार्थ पुण्य कहे प्रकाशे॥ सने मो
हि पुण्य कर है भाषे॥ कृष्ण अर्जुन उवाच॥ तुस्ला विहम महे स्फुरन मा प॥ नि हुके हते हो इ जे म्या पमा
५४॥ ते हम रे तन मे ला जो कृष्ण ई॥ मर हे तुम मनी च गहि पाई॥ ये न रते तु हि इ स सर हे वला
परे मो हि प्रभु कृष्ण सम भुनि र फल॥५५॥ सुधन्वा उवाच॥ मोहर॥ कोशा न र पर जाइ रहे ये न र
रे इस्त्रान॥ हरि मंदर मो उपमन हरि मुख नहीं करे वखान॥५६॥ ये कृष्ण छइ को ला जाइ ती ते न
सभु हमें लजाहि॥ तुम रावान भया न ये कृष्ण व हम कारे नाहि॥५७॥ इति श्री महाभार
ते पुराणे अस्वमेध पर्वणे कृष्ण अर्जुन सुधन्वा युद्ध वर्णनो नाम सप्त दशोध्यायः॥ दोहरा
पार्थ वान धनुष धर्यो या मो ते कृष्ण गंत॥ धुस प्रहार भयो तम हि ते निमर भयो कृत नि कै
त॥१॥ चौपई॥ धुस कृष्ण छिन यो ते निरस्या ते॥ पुनरि ह न भमे कहाँ ते विसमा ते॥ युर
पुहरत कृति शव द प्रकाशा॥ केप उठी धरनी धर त्रासा॥२॥ सुन ते सम वरदे भये
कान्ह॥ निरख सुधन्वा कहे प्रगटान॥ सुधन्वा उवाच॥ हे हरि अर्जुन उ चहु पद मो कहेर
शगिते उतुम मान सान मो न र हरि॥३॥ पार्थ कीरता वरे हो हित॥ मन पाछे प धुनावध
रोष्टि ता॥ ववपार्थ हरि ध्यान लगायो॥ वान प्रहारो ते जम हा ये॥४॥ सुधन्वा निज सुमरत
ज्यो पुरी ने॥ कृष्ण अर्जुन का सुर करे दोके ने॥ एक खंड धरपरे गिर पर यो॥ दूसर खंड उकृत को शे
चरयो॥५॥ सुधन्वा दि प्रभु ज पर भु नमोरे॥ कृष्ण सो कृष्ण रा रस हास कृष्ण पोरे॥ वान खंड जे
च रोड कृष्ण को शे॥ रण भुम कृष्ण यो च उपर कोशे॥६॥ सुधन्वे की ज्योति वा कृष्ण ला जा॥ कहे रोम्यी स
जिउ का न्हा ताड॥ का रुपी सुना म हरि ध्याये॥ जोर लो र हरि पद लपटाये॥७॥ श्री प
दुर्पति की उपमाधार ता॥ वार वार प्रणाम उचार ता॥ भीम सहीन न ते नकुल उ गहा यध मास्त

ਰੇਸਿ ਨਾਮੋ ਪਤੋ ਨੇ ਜਮ ਮਗ॥ ਥਾਵਨੀ ਸਿ ਨਰ ਨਾਯ ਮ ਪੁਰਪਤੀ॥ ਤਾ ਸੁਭਾਇ ਵਡੁ ਰਣਤ ਜਨਨ ਵੀ॥ ਤਵ
ਰਪੁਨੇ ਤੁ ਨੇਰੇ ਯਦੁ ਨਾਯਕ॥ ਲੀਯੋ ਭਗਤ ਕਾਸੀ ਸੁਤੁ ਠਾਇ ਕਾ॥੪॥ ਜੋ ਤਸੀ ਸੁਨੇ ਵਲੀ ਤ੍ਰਕਾਸੀ
ਯਦੁਪਤਿ ਕੋ ਨੁ ਖਜਾਇ ਨਿਵਾਸੀ॥ ਦੁਹੂੰ ਲਾ ਯਹੀ ਰਸੀ ਸੁਤੁ ਠਾਯੋ॥ ਤਅਪਤੁ ਕੋ ਦ੍ਰਿਗਦੀ ਯੋ ਚਲਾ
ਯੋ॥੮॥ ਮਮਪਦੂ ਸੁਧੁਜੰ ਦ੍ਰਿਠ ਸਤ ਸੀਸ॥ ਹੋਇ ਸਰ ਧਾਗਿਰੇ ਕ੍ਰਨੀ ਸਾ॥ ਭੁਮ ਸੋ ਨਿਜ ਸਾ
ਯਾਵਰ ਕਾਨੇ॥ ਸੋਰ ਭਾਰ ਮੁਰਖੁ ਧਾਰ ਲਗਾਨੇ॥੧੧॥ ਸੁਤਕੇ ਸੋਕੇ ਬ੍ਯਾਕੁਲ ਮਯੋ॥ ਚਿਤਵਿ
ਤਾ ਨੇਰ ਯ ਸਭ ਗਯੋ॥ ਰਦਨ ਕਰਤ ਹਾ ਹਾਇ ਪੁਕਾਰੇ॥ ਦ੍ਰਿਗ ਸੁਨ ਲੋਚਨ ਬਹੀ ਸਾਰੇ॥੧੨॥ ਹਾ
ਹਾ ਹਾਇ ਰਿਨ ਸਾਵਦੁ ਨਕੋਹੂ॥ ਜਿਤ ਕਿਤ ਹਾਇ ਹਾਇ ਹੀ ਹੋਈ॥ ਪੁਤ੍ਰ ਵਿਯੋਗ ਮਪਸੁਧ ਸਾਗੀ॥
ਮਰਵਤੇ ਕੇ ਹਮ ਵਡੁ ਭਾਗੀ॥੧੩॥ ਸੁਧਨ੍ਵਾ ਸੁਤ ਯਾਕੇ ਮੇਰੇ॥ ਪੁਚ ਜਗਜੀ ਯਕੇ ਰਿ
ਯਾਸਵ ਧੇਰੇ॥ ਪੁਨ ਕਰੇ ਹੈਸਤ ਕਿ ਤੁਨਾਰਿ ਬੋਲੇ॥ ਸੋਨ ਧਾਰ ਹੀ ਰਧ੍ਯਾਨ ਜਗੋਲੇ॥
ਕਿਯਾ ਕ੍ਰਸ਼ਵ ਗਨ ਹਮ ਕੀ ਯਤੁ ਮਾਰੇ॥ ਹਮ ਸੋ ਕਸਰ ਹੇ ਹਰਿ ਵਾਰੇ॥ ਕ੍ਰਿਸ਼ਨ ਵਸ੍ਯਾ ਸੋ ਹਿਤ
ਜਾਨੇ॥ ਨਿਜ ਹਰਿ ਪੁਰ ਸੋ ਜਾਇ ਸਮਾਨੇ॥੧੫॥ ਦੋਹਰਾ॥ ਤੁਮਰਿ ਬਿਨੁ ਸਤ੍ਰੁ ਸਵਲ ਪਰੇ ਹਮੇ
ਨ ਜੀਵਨ ਦੇਹਿ॥ ਤੁਮਰਿ ਬਿਨ ਮਮ ਜੀਵਨ ਜਗਤ ਜਿਉ ਚਾਤ੍ਰਕ ਬਿਨ ਮੇਹਿ॥੧੬॥ ਤੁਮ
ਬਿਨ ਸਕੋ ਸਭ ਜਗਤ ਸੁਨੇ ਪੁਰ ਕਸਾਰ ਕਾਮ॥ ਸੁਨਾਦਿ ਯਾ ਬੇਰ ਚਨ ਸਭ ਤੁਮ ਯੇ ਕਰਿ
ਸੰਗ੍ਰਾਮ॥੧੭॥ ਚੌਪਈ॥ ਹਮ ਤੁਮ ਤੇ ਲਗ ਭ੍ਰਮ ਹੋਇ ਰੇ॥ ਤੇ ਕ੍ਰਸ਼ਨ ਗੁਨ ਸਰਿ ਛਮੋ ਸੁਚਾਰੇ॥
ਕੇ ਤੁਕੋ ਗੁਨ ਹਮ ਰਾਜਨਿ ਚਰਰੇ॥ ਮੁਖ ਨੇ ਬੋਲ ਮੋਹਿ ਦੂਰ ਧਰੇ॥੧੮॥ ਇਹਿ ਸੋ ਸੁਰਥ
ਸੁਧਨ੍ਵਾ ਭ੍ਰਾਤਾ॥ ਪਿਤਾਨਿ ਕਸ੍ਯਾ ਯੋ ਵਡੁ ਗਾਤਾ॥ ਪਿਤ ਕੋ ਸ੍ਰੀਤਿ ਸੋ ਚਾਤਰ ਦੇਖੋ॥ ਚਨੇ
ਲਾਗ ਹੇ ਵਚਨ ਵਸੇਖੋ॥੧੯॥ ਸੁਰਥੋਵਾਚ॥ ਹੇ ਪਿਤ ਯਾਰ ਨ ਰਦਨ ਸੋ ਰੇ॥ ਇਨ ਵਡੁ ਸੁਰ
ਹੇ ਤੇ ਰਨ ਤੋਰੇ॥ ਸੁਧਨ੍ਵਾ ਸਮਰਤੁ ਗ੍ਯਾਨ ਕੀਰਨ ਭਯੋ॥ ਸਨਮੁਖ ਲਰਰਣ ਸੁਰਪੁਰ ਗਯੋ॥
ਕੰਤ ਸਰ ਮੇ ਕੀਡਨ ਪਰੀ॥ ਤਜੇ ਪ੍ਰਾਣ ਰਣ ਸੁਜਸ ਸਨੇਹੀ॥ ਰਦਨ ਕਰੋ ਯੇ ਭਾਗਤ ਮ
ਰਹੀ॥ ਯਾਤੇ ਕੁਲ ਕਲ ਬਡੁ ਡਾਰ ਰਹੀ॥੨੦॥ ਤੋਹਿ ਪੁਤ੍ਰ ਭਾਰੀ ਯਸੁ ਪਾਯੋ॥ ਹੀਰ ਕੋ ਮਿਤ੍ਰ
ਸੋ ਯੁਧ ਦਿਖਾਯੋ॥ ਹੀਰ ਹੀ ਨੇ ਮਾਰੇ ਹੈ ਰਵਲ॥ ਸ੍ਰੀ ਜਨਕੋ ਨਹੀ ਜਾਨਤ ਰਥ ਚਲ॥

२२॥ दोहरा॥ जिहि अर्जुन सों समर में सुर गन गंधर्व सैसे काइ॥ सनमुख होन न सक्यो वह हीता
सो लख्यो न सोइ॥ २३॥ चहुँ यस युत जगतै गायो तुहि सम तेह मजीवा हा॥ हमें सं गाधर
शत्रु सो लरो वैरसन तजा हो॥ २४॥ चौपाई॥ तेहि हर दुन दिवस भरदन्ता गहि॥ श्रेन न जो
कत जधीर तजा है॥ जिउ जिउ नमरे रोवत है मख पा॥ तिउ तिउ उत्कंठ हरखा हि जन रपा॥ २
अंस न है इअर न आइ परो वै॥ हम सम भको हतयस जग पावै॥ उचत पात को वैर लेइ
आव॥ निरलज्जो कार रण भुम मो सम भा॥ २५॥ हंसधुजो वाच॥ हे सुत तुया ते सदन न हम
रे॥ कहो प्रगट तुम रे जिव कटोरे॥ महि सत को जव सी सकट यो रण॥ लोर परयो जाइ
हरि के चरण॥ २६॥ हरि उठाइ मोहि हि गडार यो॥ कछु न लख यो उन किया धा तो
सुधन्वा हरि का भगत सदाई॥ कछु तस मे गारेप गाय दुराई॥ २७॥ न ही जान्यो उन
किया जे गुन कीनो॥ याते यदुपति मानन लीनो॥ तव न पदु कुर रस्ती स्त्रि वा
ये॥ हरि रथ मो दीयो डार महा ये॥ २८॥ हरि उठाइ न भेट्यो रच लाये॥ भयो अदि ए
सुना हि दिषायो॥ २९॥ दोहरा॥ देषो नप संग्राम मुहि शत्रु तारण को हान॥ वैर
भ्रात सल्ले तहे होइ हरि सच साचे जान॥ ३०॥ इहि विधि पितु से वद पगार धच उदो हे
हीरा॥ सैन अभित संग योधक्षत शरव वजावत धीरा॥ ३१॥ इति श्री महाभारते
पुराणे अश्वमेध पर्वणे सुधन्वा रतो उनीसमो ध्याय:॥ १९॥ चौपई॥ अर्जुन सो
भाव हो सन्मुख॥ तुम रत यो महि भ्रात वडो दुख॥ भ्रात वैर तुम सो अति गाढ़े॥
मैन तुमा सी त्रिण सम दर है॥ १॥ तव हरि अर्जुन को प्रगटा है॥ देखो अरलो के
महाने॥ जि कुम्हार मरण ते डरे॥ लषीय नयुद्ध भार प्रगट है॥ २॥ हतु म रहेव हसे
न तुमारी॥ ऐन हो इ हतते देअ्ञ भारी॥ उचत ई रा तेहम कहू जाये॥ सो पुरषे जि ज
समाविता ये॥ ३॥ अर्जुनो वाच॥ हे हरि हम पर भीर परे जब॥ तुम सी मुहि रक्षा के

रहे तब ॥ सुरथ अरु सब लु धारि निहारा ॥ पसो भा गरे इरहे उन्यारा ॥ श्री भगवानो वाच ॥
बहुसंत्रन संग्रा मतुम कीने ॥ एक तेदस हो तुहि प्रभ दीने ॥ सुधन्वा जेसे वीर रहे ते रन माहि
ने कीने रण युध मो युध घन ॥ ५ ॥ पुनः दस ग्रीव हिसो लरे हेपातन ॥ खेद निवारक ओतु मना
तन ॥ ऐसहवरसैन यासो पुधु कीने ॥ हम तुम सेन पार्थ जा परे ॥ ६ ॥ दोहरा ॥ इस भूत बलत म
के दीये हते सुधन्वा तेभरि ॥ ऐसब इहि कथा येव उबली चित मो धर ज्ञति रोह ॥ ७ ॥ मो प
र हो अन्य अधवलन गुडेदे उदर खाइ ॥ पाते इहि हतु हो इरण बलि विनहतो नजाइ ॥ ८
चौपई ॥ तब पुहुम गृहि रसीली ये बुलाये ॥ तासो कुटिल गायस मभ्रक भे ॥ जिहि हिचा देहा सु
पुत्र संग्राम धारे ॥ तेरे सुरथ सो बल कृष्ण तिभारे ॥ ९ ॥ बहु सेना संग धर युध करदे
सुरथ चली करि ज्ञति हर शरदे ॥ सुनत हरि वचन मुख देत उचराये ॥ पुहुम पिता कोप भ
रिसनाये ॥ १० ॥ सैन चली संग धररण गये ॥ सन्मुख सुरथ के ठाढे भये ॥ तबहरि पार्थ
के ले गये ॥ योजन तीन रण भूमत उदये ॥ ११ ॥ तहा जाइ कीना रणठाडे ॥ ऐसरस न्मु
ख हरि सुतरे सो ठाढे ॥ दुहु दुतु रमई सेना बहु ज्ञति ॥ पार्थ कीसं ग्रामो हि पटीतता ॥ १२ ॥ तु
व तिमिर तम सुरथ रण माहि ॥ हरि कौ पार्थ महनदि खाहि ॥ मरदे तेभा खेरच प्रगरा नै ॥ मो
हमानत हतक हासुपाने ॥ १३ ॥ कोरन मे रहमरा किया काजा ॥ पार्थ हिसो युद्ध समाजा ॥
ये बहुत परे से दुष्टसमार ॥ भात वैर ले हुउन मारे ॥ १४ ॥ पुहुम गृहो वाच ॥ दोहरा ॥ रहे सा
च सुन प्रब्रण अधर सुरथ हमारी बात ॥ तुम कीतम रहे द्विगपरे चारे हो पार्थ घात ॥ १५
पुहुम युद्ध हम सो करो जब ले बोमुकुंजी तो ॥ कह तुम उन के नाम तब ब्रिया न बच हो नी
ना ॥ १६ ॥ चौपई ॥ सुरथ सुनत हरि सुत के बेना ॥ सुर पर हार करे ज्ञति पेन ॥ बहु मारे
बहु घाइल कीने ॥ पुहुम्र सेन भागी दुख दीने ॥ १७ ॥ हत्ती सेन बहु त गलजाये ॥ सुरथ
बली कर डोली जाये ॥ जाप हु चे जहा हरि कौ कुंज ॥ सुरथ बली बहु हरि सुत दल

हन॥१८॥ दिब अर्जुन हरि सो प्रगटाये॥ सबलोइ शर्मा हिव चांदि नुल्लाये॥ तुम कारदयाइहा
मुअस्त्राने॥ अरभी अापवहुंच्यो वलु डाने॥१९॥ हाकोर धुसन्न खहोल रेहा॥ अपुन भ
जावलअर दलहरहे॥ इहिन होइ अरअाइपरावै॥ सवलपरे मोहि अमदिखरावै॥२०॥
तवरावि उरधु अर्जुन कारीरा॥ सन्मुखसुरध जापार्थ रिसभरा॥ पार्थ वान वर्ष धारी
अति॥ धनीसेन अरकी कीनी हत॥२१॥ पुन अरकारधु ओा सुखहने॥ धनु ठकाटउ
सोवलु घने॥ ओारधन धुरधुर्जो सुचडाये॥ हैार वीर अति कोध वधाये॥२२॥ सरवर्षे
अर्जुन परकीने॥ हरिसन दुहू को वडु भ्रमंदीने॥ तवहरि पार्थ सो कहीवाता॥ धनअर्थे
धावलु अति अाता॥२३॥ धाधु धसभरू तेअति भारे॥ हमयाके वल अधिक निहारे॥ पा
र्थ केथो हरि केवच यम्न॥ हरि सो भाषत हे पर्जन्य गुन॥२४॥ येतुम रहो हमार सहायक॥
धाकोरतो सगाम वलुपायक॥ धाकाहतन कठननदिघाऊ॥ साचवचन नतुम सोप्रग
टाऊ॥२५॥ तवअर्जुन सोवान प्रहारे॥ देघसु रथम गामो हिकटारे॥ पुन अर्जुन परस
रथ रहारत॥ पार्थ को कीनो अतिअारत॥२६॥ अर्जुन कारधु धावाने वला॥ भ्रमेचक्रे
समर ताके भुमतला॥ हरिवलु लाइरहे नरहाये॥ दिब अर्जुन को तुपउपजाये॥२७॥ को
पेसरवरषा अति भारी॥ अरकारधु हन्नकीयो दुफारी॥ असचसार्थ धमपुर पठदीने॥
चतुरधुजा अाटीवलकीने॥२८॥ चडुमन्ने रथयो धमहाये॥ असवलकीने योधमहा
येअको धान जाये॥ हन्नसमान पार्थ की धुजपरा॥ पधवे धायरधुलीयो अंकभरा॥ सिरप
रथेरले धनपरकारे॥ चरनन कीनो रधुवलभारे॥२९॥ दोहरा॥ सुरथवली कोप धअ
हिसान्यो अर्जुन पास॥ हरि कहीयाको धाउ देहु धाउ योर नुमत तास॥३०॥ जव धो
उधो तवदोर ते अर्जुन रथे जहाइ॥ सीस भुमा धोचके सुमन सोहिन रवते प्रगटाइ॥३१॥
सरघा वान्ध॥ कहोडार देउ सिध जलचकहो सम रदेउ डार॥ कहो तो अाहो जपनीजदइ॥

२७६ धर्मजन्मभवपार॥३५॥ चौपई॥ कैसे वचन सुरथ जब कहे॥ सुन पार्थ ते जात न सहे॥
क्रोध अगनि तन मन तपतायो॥ कृदयो पार्थ रथ ते जायो॥३६॥ कहे सुरथ सो अस सन म
भयो॥ कम कैसे निरबल रण पयो॥ जिन के मात न मसा जर मो ड्रारे॥ वास मे रागिर पर पर
ह्रारे॥३७॥ वाह सत्त न पुरपठो वलारी॥ सरवज्ञाव से सो वहे उचारी॥ इहि कहि पाच वा
न तिष ठोरे॥ निह सुधनी यो सुर को वल भारे॥३८॥ ता की कैसे नसो भाषस न्नाये॥ क
टे सी सघाना मन न ज्ञावे॥ पे सुधही नादिष कछु न वदेज्ञव॥ हते तानु निंदे मुकेसुर
सभा॥३९॥ चव दे उनिहसु धको सिर कारथे॥ अपन लाज ईहि ठार न ठार थे॥ ले जा
वो नमड से उठाये॥ पुन अनस जावेन धरे मह हाये॥ सुरथा विसु धको रथ मो ड्रारे॥ ले ग
ता से वको चितारे॥४०॥ दोहरा॥ वहु रसुरथ सुधपाइ के दौर गयो वल गोहि॥ सावण सम स
रवर्षि धर वरकेअर्जुन सो ते हि॥४१॥ अर्जुन सोघुण धार के हसो हमारा भान॥ ते स
सो सुज पुपा धरे देषो नुहि वलसा ता॥४२॥ हमरा वलु हरि देष तेरथ ते ड्रारो ते भी हग॥
यो नहि ड्रारो पुन सभ सकल निरा धर्म हो इ॥४३॥ अर्जुनो वाच॥ ते हि हते तुम रे पि
तु देषत॥ सभ वरवाद हरो तुमरे सत॥ भाषत दुहू वडु युद्ध सभारे॥ अपस मो दिषरा
ह अपारे॥४४॥ अर्जुन अरकार पुरातन वल॥ चौर जर करडारो रण केघ ल॥ सुरथा
वर रथ चड युध करही॥ नै कुन पार्थ तेम यकर रहै॥४५॥ हरि प्रभु पार्थ रण तोरथे॥
भयो पदा तप रम युद्ध न धोरथे॥ सुरथ हते रथ तुजोर लयाये॥ अर्जुन का रगिराये॥४६॥
इसी भो नछ रर घाअरके रण॥ वर ड्रारे अर के ड्रा के न घन॥ सुरथ सर नत हीव ल
वान॥ इपुडभ रपा छेन हरान॥ पार्थ अर सेना वहु हान॥ मधर मिध रणभयो
भयान॥४७॥ दोहरा॥ चेड्डवा न्को पे सुरथ अर्जुन उर प्रहार॥ वर पुते चीत रधन्न
छवार णमजने अर्जुन पार॥४८॥ पुन रपुअरस रथ सहत वाने वलकी यो हान॥ प॥

थीभयोपदातरणकोप्योस्वकञ्जविशान॥४६॥दूसररथपरचढवलीमनमोधरवहुक्रोध॥
धनुषसहतअर्जुनकोभुजाकाटड़ारीवहुयोध॥४७॥चौपई॥दाहनकरतेहीजसुरथतव॥वाम
हाथगहिगदावडीधवा॥पार्थसोकीनोवहुभारत॥अर्जुनकोकीनोवहुआरत॥४८॥इ
कुसहस्वगजकीनोघाता॥जैसेनसुहतीताकीविधाता॥विवसहस्वरथकीनेहाना॥
सरथवलीरणतेजुमहाना॥४९॥लघुपाथकहनकीनवलानी॥हरितनगदालगाइसा
गी॥पुनभजवलसोगदाप्रहारे॥पार्थकोदीयेभूमनपरडारे॥५०॥दिवहरिपार्थसोइग
ठाने॥यासमयोधानहिवधाने॥एकहाथसोअसयुधुकरई॥प्राक्रमभारभनरण
परई॥५१॥अर्जुनरिसअस्त्रकारथहाथा॥सरप्रहारकारयोवलसाथा॥दुहूहाथते
हीनउचारत॥हेअर्जुनतुमहेवलभारत॥५२॥दोउहाथहमरेतुमकाटे॥पेदेखोर
मरेवलठाटे॥भाषतदेरोदोउभुजहीना॥पडोसीसवलपरेप्रवीना॥५३॥पार्थ
कोपवानपरहारे॥दोनोपगवारेकरडारे॥हाथपगनतेहीनभयोरसा॥तोभइपु
छुवरेधरसिसधुना॥५४॥कूदकूदसेनापरपरही॥धनीसैनदेहितलरहतुकरई॥
जान्वानकेवलदोराये॥हनेघनेसरेकेपाये॥५५॥अर्जुनवानप्रहारकोकर्णते
करयोसीसअर्जुनकोभुमरणसत॥हाथपगनसिरहीनकवंधा॥तोभीतजेनहे
युधधंदा॥५६॥वहुसरेहतकीनकवंधा॥कुपअर्जुनसरतीक्ष्णसंधे॥वान्प्रह
केवधकराना॥भूमपरडारेतेजुमहाना॥५७॥लोरतधरनदोरहरिपगतल॥
आइपरेसिरवीरअर्जुनवलवल॥दुहूहाथहरिलीयोहरषाये॥रथपररासोहितु
अधकाये॥५८॥गुरवतेउपमउचारनलागे॥हेअर्जुनसोतुमवडुभाडो॥कै
सेयोधपरेरणहाने॥जिनकेसमदूसरनदिखाने॥५९॥इनसाकलीनदेखोहेर
गा॥मानुघवराइनतेउरपतियम॥धनइहिधनइनकेमातपिता॥धनकुल

हरि

२११ यामेंडहिभये जन मत॥ कजेनसग उपम वषानी॥ भमनरनमसर कीरतिठानी
९॥ इति श्रीमहाभारते पुराणे अस्वमेधपर्वणे स्वरपवध: विंशोध्याय: २०॥
वेशंपायनोवाच॥ दोहरा॥ हरि उपमा बहु धारी तिहि पुनलीयो गरुड तुलाइ॥ त्रिभ
वनपति वा लालसो कहे वचन समुझाइ॥१॥ एमिर जाइ प्राग मो तुरो हे वलवान॥
जंगा यमुन सरस्वती जहा तीनो इकठान॥ चौपई॥ हरि की आज्ञा पाये षगपति
चाल्यो तिह मार्ग को वेग अति॥ मग मो शिव कुं अर्ध जीसाष्य॥ भारी धवरि सल
दहि हाथा॥१॥ डाएषम सवहूह सेगाधव के अति भारी॥ वेठे थे चित हर्ष अपारी॥ गरुप
नो उर ज्यो की त्रिगपर यो॥ मीसुयो तपर ऐ मुसपरयो॥२॥ भगत प्रताप सरमत ते
जा॥ तिनसी समे जो तत्रमे ज॥ जगमगातर विसस तेजागर॥ सकल जो तते जो
तउजागर॥३॥ डोरीदिषम नकचर्यमाने॥ शिवको कहे वचन प्रगराने॥ हेशि
व हरि वाहन षगपति वर॥ जाइवेग अति कष्ठ मुख मो धर॥४॥ अद्य कमोलक
छमुख माही॥ याहि जो तक उपम नपाही॥ नहि ज्ञा नो कहा तेइहि ज्ञावन॥ हिया मख मे
लिकैर मिभावन॥५॥ शिवनेवाच॥ ईहि षगपति पद पति को वाहन॥ वडो ते मुसी
अवलदाहन॥ सूश्याम धन्या कहे तुसी मा॥ लीयेजात हरि देग जीमा॥६॥ अजेन
मोडी हे बुधमारे॥ भयेमपमा की निहपारे॥ हरि समहा इजसै जनकी कीने॥ नरइन के
मिरवत्रेषु वीने॥७॥ नारदनको को नरताई॥ डरि हे छंग मे पोधमहाई॥ तेजुमे
सरव गपति लीये जावे॥ चाह तन गगमें जापावे॥८॥ हमरी चार लेहु डरि सीमा॥
वजेमालको मेरजडीमा॥ ऐसे सीस वहाते पावे जन समस्तर चीरजो इषावे
॥९॥ भिंडी गणशिव काजनिप्पारा॥ निरमुलाइ मुख कीन उचारा॥ देषि भिंडी वलने
जञ्जाई॥ षगपति को रेवे मगमाही॥१०॥ प्रथमे कोमलवचन उचारे॥ तासो कहे

[illegible]

न के बल लक्ष्मन॥ घडाकौ तौरे कर धुहर न तत॥ गरज्यो मनशब्द भयानक॥ कंपउठे है
लोकत्रय जानक॥ ४७॥ दोहरा॥ भानन लुपानै धरउ तुच हीं दिसनि मर महान॥ पुलैसनालक्ष
न्नागन भयो घरघर भननकेवान॥ ४८॥ दुखी भये सुर नर सकल कहे मन न भु मउपजाइ॥
न मन की कोर सबलाइ देजीव त कोन वजाइ॥ ४९॥ चौपई॥ घडाप ततनन पर्वत लाग व
ला॥ वड भ्रमपायो क्रांति सो विरह बल॥ चुर कर मंथ कंगसस भयाको॥ सी सन दोहरु
धु धार नसाको॥ ५०॥ रव मन नमांहि कोरे बीचारे॥ योसिर न हीं तारे गंगाम करे॥ योम
हिव लक्षी उपमन करत क्रांति॥ ते निदे उपहास धार सत॥ ५१॥ योसिर त जाके युद्ध संभा
रे॥ याकै भीच तु व ली विचारे॥ मन तले सीस वे गक्रांति धारे॥ हमरे युध बलर हेन्यारे॥ ५
२॥ योर धासी सकीकरे॥ वलीप्राच्य सोचे से लरे॥ चलु सभार वड वेगकी यो तव॥
धुले चालकी योन समाधवा॥ ५३॥ तनप स्नागत सिला पधान॥ त॥ भ्रमुपाव
नपच तस्यो जातसत॥ शिव वाहन ज्यो मन माहीं॥ हरि वाहन वडवे गामाही
॥ ५४॥ पकी यो मुरव तु व त दाहीं॥ करत पहार निज बल सो जाहीं॥ स्वास न लेत धा
तु यो भारी॥ यों हि पवन ओर दुमे उधारी॥ ५५॥ ते दुव वन वगप ततन लागा॥ निव
न भयो छडर्पा तें जम कागा॥ भुम भुमन्वारों दिस भरमा यो॥ वहु तर रख्यो न ठहरस
को॥ भ्रम भु मि भुमारी पाई गरायो॥ निहमुध होइ वहुर सुध पायो॥ पम रखे तें सिर ना
हि न जाई॥ शिव वाहन की यो युध अधिकाई॥ ५६॥ तिन वड युद्ध दुहू बल की नो॥ शि
व सुरहरि वाहन पर चीनो॥ हरि वाहन भी वलीनें चतुर क्रांति॥ शिव वाहन न हीं तज
न जा न सत॥ ५७॥ दोहरा॥ हरि वाहन न न हि देत सिर शिव वाहन न तजाइ॥ दुहू ने बल
को युद्ध की कयान न बने न जाइ॥ ५८॥ शिव वाहन धुर भिजा वे चला॥ भम ने तउपर डार
डारत न भयला॥ डार डसीस दोउ हाथ्यो मंहीं॥ कंच पंख सो लैरे न दाहीं॥ ५९॥ ले न

गरदुउदंडगनडारे॥३॥ सीसपुनकटेउचारे॥ हनहीतिअजाजापरतधारे॥ अबकरहोयुध
दधतुमारे॥४१॥ तंदेहीगणजलनेतीहसीसा॥ अणोशिवकोनिरजरजनीसा॥ दो॥ भूमिर
वडीजोतकुंडलमण॥ शिवकेअणोधरेमुदितघण॥४२॥ मेरमालहीनेशिवहरहत॥
सरा॥ शिवभयेहरषचतुरानतनवरधेतन॥४३॥ इतिश्रीमहाभारतेपुराणेअस्वमेधपर्वे
लोजरडनंदीगणसंग्रामोनामअध्यायः॥४४॥ दोहरा॥ सुनततनुपतभयोहरस
धुजकोपसेनसजभार॥ अगोअर्जुनसन्मुखवेमहासुरथवलकार॥१॥ चौपा
कलमल्योमहीतलनभसुरसभउंपान॥ सेनचलततउधरअतितेपहोर
हेयाभान॥२॥ चौपई॥ सुरअजीतयुद्धहितआने॥ सभीदेखभयेअतिविस्मा
ने॥ अर्जुनतेसन्मुखवहोयोजव॥ यदुपतिचितवीचारकीनोतव॥३॥ हरिपुत्र
णकेशोकतपाना॥ दुखदेवेजोतेजमहाना॥ रथतेउतरन्पपनिकटाये॥ ज
येयदुपतिजिहरवचनमहाये॥४॥ मधुरवचनहरिन्पसोबोले॥ ताकोधीरदे
हिअमोले॥ श्रीभगवानोवाच॥ तुमबडन्पतुमसमकोऊनाही॥ ज्ञानसभ
रोकोपुतजाही॥५॥ योपुत्रशोचनरमतकोकीयाचारे॥ पुत्रशोकजानाअनीदाहे॥ ज
गकीरचनामिथ्याजानो॥ नहीसदाईईशजीयमानो॥६॥ जगरचनासभ
सवपुत्रसमाना॥ तापरशोकनकीनमहाना॥ धनुकुरेवकोहितसोवाधो॥ शोक
रुपपरहेमतअगाधो॥७॥ सभयुधतजजिनईशअराधो॥ सुकतपुतकोनगति
नमाध्यो॥ हरिकेअननतवचनसुनायो॥ धीरधीशांतभपनेपायो॥८॥ हरिहितन
पसोअंगनलायो॥ शोकतापुभमताहिगवायो॥ हाथजोरन्पहोइअधीना॥
हरिसोभाषतेवेनपुवीना॥ श्रीनपोवाच॥ हरितुमहरनकेसरवदाइक॥ त्रिभव
नपतिसमकेफभमाइक॥ तोहिदरशहमरेदुखगये॥ पुत्रणशोकन्यारेभये

२२५ कोपुत्रा सतुन दहम रेजी पठेवा॥ हुव धादेह मिटी मम हीयते॥९०॥ शत्रु मित्र उभय सम करजा
जैसेहि चेर भाव रोचे नर रहाने॥ उजा कारत उजत वदे हुम गाये॥ तुम रहम रेजजा जानी मरायो
॥९१॥ श्री भगवान उवाच॥ दोहरा॥ पांडु वानकों देख हम तिन उघर है बडु देना॥ तिउ हीर
हेतु सदा इतु मम मोह सरवान्वित न्वेना॥९२॥ धर्मज उवाच तुप्र लीयो जाहीवा हेहे इस हाइ॥
तुम को भी फल उपजहा मरवकीर चनादिष्टा इम॥९३॥ चौपई॥ नवन पकाय मन गाइ
लीयो वरा॥ कृष्ण जुनसो दीनो हरनचित धरा॥ पार्थ मुदित उसी संग माला॥ सम के नन
भयो हस्थवि शाला॥९४॥ पांचो देव सही रत हार हाने॥ धर्म जान कर गये हर थाने
धर्म जसो जामिले मरारी॥ सब भविरतो नुके हे पूजरारी॥९५॥ धर्मज सजनत हर्ष मत
होयो हुलसत पुरि देखो यो॥ जदगद हो हरि चरनी लागा॥ इहि काये हेतु
मरा भागा॥९६॥ इति श्री नरा भारते पुराणे अस्वमेध पर्वणि त्रयपंचसप्तमो
विनामृ विषयो ध्यायः॥१७॥ दोहरा॥ अर्जुन सत्रागे चलहे हर्ष पाये अर्जुन चीर॥
भय देसधुजनी लधुज पुन अन्नशा सस्धीरा॥१॥ त्रिय के तजार पर दुख रचे
वन्ना शर ऊभ प॥ ताका पुत्र सवे गवल सेत सहाइ अन्नप॥२॥ चौपई॥ चल
तच लतजा स्वहे सम सरूप॥ देख्यो निरमल ताल अनूपा॥ तामो फूले कमल
अपारा॥ तिनपर करते भ्रमर गुंजारा॥३॥ सघन धाइ तरवर फलद रे॥ क
रहि पुनि केकम नहे॥ मैना को कलकीर पनेकाति॥ चकचीचकवा तूल
क ताम॥ सावकमोर मधुर सर वानी॥ करे उच्चार सकल मरुमानी॥ कीनेति
केलजल पीनल जहा॥ अस्व जापुत्र हेयो नहा॥४॥ वरे ताल मोज्ञा स्वजल
कीडतो॥ रहित केचन जचर्थ मंडति ता॥ जल के अचक स्वचाह रज्ञायो॥ अ
स्वतज्ञा सवनी भयो देखायो॥५॥ सभी निरखत रोइ विसमाने॥ अधुन लषेया

गतिचिंतानेः॥६॥दोहरा॥अस्ववपुतजअस्वनीभयोजौजैसेकोहेउकोइ॥पुनिवैसेसेअ
स्वहोइवपुवनीअठनअस्तिअाइ॥७॥वैशंपायनसोकहेयनमेजान्यभाव॥अस
अस्वनीकेसभयोसोननसंसमनिवाभाव॥८॥चौपई॥वैशंपायनसभुतुमजानत
भाजीमतभविष्यपथीत॥जलमोहिपायानुमकहोसोई॥जिहिपरसतअस्वकअस्व
नीहोइ॥९॥वैशंपायनोवाच॥सुनोभूपइहिकथचपेवाता॥इहितोभयोवहोउत
पाता॥यापिरतेतनुसभनुमसमरूचू॥तुमरेमनतेशंसमिटाऊ॥१०॥एकसमेगो
भिसतभामा॥इहाकरतमईतपुवरवामा॥शिवरीऊवननीमनमाअस्तिगतप
मोलीननडोलेचितुमति॥११॥दोहरा॥केअमसरअायोतहापारवतीकोदेष॥
वचनकहेदुष्टात्माशिदमोलोभवशेष॥१२॥अमसुरोवाच॥धरपरसभगातयो
भाराधनूराषाइ॥भूतपेतसंगभिवताभूमहर्षहरिदेभिवराइ॥१३॥चौपई॥नूकितया
घोजीकेपाछे॥तपकरहेतातीनुमकाछे॥तोहिरूपसभहूतेअागर॥गुणानिधा
नचनुराईसागर॥१४॥सरनरगणगंधर्वगुणभारे॥तोहिदधमनधरेअपारे॥
सकलअसुरमोहिअाजाजारी॥सुरभीहमरोवउभयधारी॥१५॥मोहवचयातेसरु
पावो॥सुअसुरनमोवडोकहावो॥अर्धधनूरागरलअहारी॥वसहैमडीमसाएउ
जारी॥१६॥तातेतुमगुणकहानिहारे॥याहिचाहचितधरेभवावे॥मोरचाहकाहे
नहिधरहे॥मोहिधामनमोसुरवमोपरहे॥१७॥तोहिअाजामोरहेमसदाई॥सोईकरे
जोतुमनभाई॥पारवतीयातेभयपायो॥दीयोश्रापुहरध्यानुलगायो॥१८॥दोहरा॥
उमाश्रापतेननीधनेअसरभयो जरध्यार॥पापीजन्मकहीगनइहीरहमलालपुगरा
र॥१९॥पारवतीउवाच॥जोपरहेयालमोहोइपुरषतेन्कार॥तातेअस्वअस्वनीभयो
रीवचनअपार॥२०॥चौपई॥ओरसुनेअसनीदोराई॥अवरतालमोजाइपरा

२१० ई॥ अस्तुति के हरि तहां भये॥ दिपि दिपि दिष बोध सम भनत गाये॥ २५॥ अर्जुन सो भई तें चित ता
अति॥ रिदे अराधे हरि त्रिभवनपति॥ हे हरि मो के कठन वन नाई॥ अस्तुति हो ये सि
ह मन हाई॥ २२॥ जि उधर्म नका नष हो दुर्ज॥ करुणा करो मोहि दुख चूरन॥ तुम हो
सदा हमारी ठोर॥ करी भीर हमरी कई कोट॥ २३॥ अब संकर का तो प्रभ मेरा॥ हो
हो सदा तुमारो चेरा॥ पार्थ अस्तुति दिष न सके हरि॥ अंतरजामी दयाल दयाघर
अर्जुन की विनती तब मानी॥ हे हरि तें अस्तुति नम हाने॥ अर्जुन दे षकसनंद त
भये॥ दुख संताप सकल मिर गये॥ २४॥ दिष सम हर्ष भये निहअब सर॥ डांवतन
चतारि दिअनंद भरा॥ धनेदु श्याति हि दीने दाना॥ हरि का सखा उदार महाना॥ २६
जन्मे जा उवाच॥ दोहरा॥ कि याग न या उस ताल मो अस्तुत भयो सिर हरू पा॥ डी हरी
ग्य सम मजाइ मोहि हरणा धा अत न पा॥ २७॥ चौपई॥ वेशंपायनो वाच॥ अतव
रना मए करि दनम ये॥ तीर्थ जपुन पुभारीलये॥ तीर्थ नमत ई हां चलज्ञायो॥ इसी
ता लमो ज्ञाइ परायो॥ २८॥ उमारतों है को उस ले चलयो॥ दिजवर व उग्रम घरव
लमलये॥ तालेध टाय तन न च डे कर॥ बार स्नायो के पत घर घरा॥ २९॥ दीयो शापु
जोई हाप रोते॥ सिर हहो इ या तेन ठरो चे॥ यातें सिर भयो अस्तुमहाना॥ दिजआव
च न अमोर सुजाना॥ ३०॥ इति श्री महाभारते पुराणे अस्तुमेधपर्वणे अस्तुअ
स्तुती सिहमन तायवो तेंइ शमो ध्याय:॥ २०॥ दोहरा॥ अस्तु अज्ञा जे धर्म दितमन अ
गुनादि सम गुनीर॥ जापर चेदी यारा जमो जराश्च नगंभीर॥ १॥ चौपई॥ जापर चे
दी या राज गरतें जिहि॥ पुरुष गुनादि के उद्दिप परेति रि॥ पुमल्ला नाम च्रीपरा नुअर
न सरा॥ न्याइ नीत परजी चरुप बरा॥ २॥ जन्मे जयो वाच॥ इहि अचर्य हमरे मन
आवे॥ तुम क हो इहाँ पुरुष गुनादि धावे॥ वेना पुरुष उत पतिनि हहो ई॥ उतपति

बिनपुरशोभाविक्रोइ॥३॥वैशंपायनोवाच॥दोहरा॥विवहारनिवहारकोजोआवैतारे
स॥तेत्रीयातिनसोसंगधरमेरतमदनकलेश॥४॥आगर्भतेहोपरसतहीसतकेन्याउ
पजाइ॥केन्याहोइसजीवहीसतुनरहेमिनुपाइ॥५॥चौपई॥परदेसीतहारहेइतुनास
आश्रिकरहेतोपरेबिनासा॥पांचदिवसआयवादसरहे॥उठजाहीवउभयीरदगहे॥६
पुरषोकोतहभ्रितमयभाती॥घोरेदिनतहावसेभयाती॥घोरेहीदिनउनकावलुसभ॥
त्रीयकामातरहरिलेवेतव॥७॥वीजेजीवत्रीयातेहरहै॥तातेपुरषुहूहामरपरहै॥तिर
वीजेजनयोहोजावै॥स्वासहीनाजेउघालदिषावै॥८॥घोरेहीवसनरउभागे॥ते
हूजाहिभागीजाहिजाहि॥भागनसकेजेउतहामरहीं॥वचेनाहियनपुरपगधरही
॥९॥तहांजाइअस्वपात्रभयो॥अर्जुनादिदिषचितभ्रमपयो॥समहीलाडेअरनाव
चार॥वहांआयोइहिअस्वहमारा॥१०॥येहमजीतेगेइहिनारी॥तोभनाहिरथउ
पमहमार॥मनात्रीसोयुधुअरतनवने॥त्रीयाजीतहियाशोभामने॥११॥घोडीइहन
परसवलपरावै॥त्रपतिलघुताईअपुनधरावै॥दुहूवातेहमरीलघुताई॥अरहारेहठ
दहीवनाई॥१२॥इनकपअर्दरसपुदिषावै॥मोहपरैसमुसैनलुभावै॥कोनलरेइन
तेमनमुरवतव॥अधिविचारचितमेनपरेअव॥१३॥इहिअस्वबाधेनाहितजावै॥नि
स्चेहमभारीभ्रमपावै॥येहमतेरैनीरनवनावै॥योनलरेअस्वहायनआवै॥१४
इहीमोआइप्रगटभईनारी॥अर्जुनसेंदरषोडुशीसिंगारी॥अनितअमेलालेमनुव
नाहला॥शोभाअद्भुतिचिकदेतसमबेताला॥१५॥मयनचीरसंधसुहाये॥सभअस्व
वमाइआवरहीधाये॥घनघुहाघशस्वेदलिसम॥करनिषंगभारीशोभाधवा॥१६॥सम
वदनीदुगकमलसमाने॥मिकसाधजिहिदेषलुभाने॥गजसमचालभ्रमरसीका
र॥सतसमलाताइहिरतरतार॥१७॥दोहरा॥हासविलासकुलासमननआइसरउ

२८१ सुभाइ॥८॥ प्रेमसरूप क्रस्न स्वर्दिजपदेरो विसमानी चितल्याइ॥८१॥ क्रस्न कोडरि हिइसु चतुर त्रीय
से जर्इ रानी पास॥ द्विज रानी विस्मै भई पुनमुख कहे प्रकाश॥८४॥ रानी उवाच॥ दोहरा
जीके बाधो नृप सहि क्रस्न सुबर॥ हम इन सौ युध करे हो बलुधर॥ सम जीपकी जो भ्रमपर
हो वत॥ प्रेमलक्षणा नाम धर्म हीन जावत॥८५॥ उक्रस्न सो उचहि दिसठ जपाता॥ तिन
पर सम भसे दरक्रस्न निक्रांत॥ प्रेम रुक्म चस्य मसकल सदैरक्रस्नांत॥ उजर पक्रस्न स्वचदे
दोरे तनां॥८७॥ रूपवति नो चे उपमक्रस्न पारे॥ रानी सस सभ श्रीपति मतारे॥ सजसैन क्रस्न
जैन के सन्मस वा क्रस्न प्रत्पु ग्रीपु घहे तन हो इस रुपा॥८८॥ क्रस्न जैन की सैना निरखाई॥ प्रेमला
के दे मरवने प्रजराई॥ प्रेमलोवाच॥ इहि रथ चढे दिखावे भमरन॥ हमै देग क्रस्न सवा
रे ने जघन॥८९॥ निरखे चेइन परस कलपरावे॥ हमरे सन्मुख वाकि हिठी हरावे॥ भावतर
सरस गज दोराई॥ क्रस्न जैन सो मसक तउ चराई॥९०॥ सक्रस्न जैन मेरो सा च तणाने॥
नृप वलुधर वउछो धहताने॥ तुरि रवल की संख्या कछु नाही॥ हम सो तुरि युध करि उन
दिखाही॥९१॥ नृप मम मो सो रणाट हर न सा को॥ करवि चार क्रस्न पुने जीयत को॥ डीह करि
द्विजक राह ते वा न॥ सेनक्रस्न वरदे तजे महा न॥९२॥ सो रठा॥ जीय दिजती धन वान
पार्थ की सैना निरख॥ क्रस्न जरस्थ सविधान सम भर रथ हो गिरपरे॥९३॥ दोहरा॥
क्रस्न जैन कैसा वर दमु वरथो वना सक्रम नृशाल॥ सु वेगा हस धुज नीलधुज दिखम ये वि
सा विशाल॥९४॥ चौपई॥ मदन कान जीया द्विजके घोठो॥ सभ चिंता चित नबोध तजा
के॥ नृप भीन हे न नहि दोहि सभा रे॥ पिया वलु करस वर्त्तिहि वोरे॥९५॥ पेम्ब्रिघके तव
उड द्रीजिन॥ जीपा स्वरुप दिखनाहि डोल्यो चित॥ रूप स्वरूप पाठ सम मथो को॥ के सोति
स मो रहि द्विज तनाको॥ भ्रमदन वान कर्णाज की डोरे॥ हा उभा उकरत जेक ठोरे॥ मो हि नसी
तिर्मैन सम्मानी॥ क्रस्न जैन सो तव कर तन वखानी॥९७॥ प्रेमला के दे सने क्रस्न जैन वर॥

तुमदासनतसमर्थमंजकेधरा॥ताकीआज्ञा माहरहतहे॥दुखसंतापश्रमभारसहतहे॥८३॥
दोहरा॥अवतुमआयेमोरहवसयासोधरेतना॥मेसोवरससुखुधारहेयेसुरभीनदिखाइ॥
८४॥अर्जुनउवाच॥चौपई॥हमतुमरीदहिगतसुनपाई॥योनरतुमसोभोगभुगाई
पुनजीवतनगयोअपुनेधरा॥कियासुखुउपजेतुमसोहितुधरा॥८५॥तातेमोमनमैंचे
तपराई॥तुमसोहितुयमलपदिखाई॥बांउलपेरीआरलेहोइजिम॥घातेसरवपुनप्रा
णलेतातिम॥८६॥प्रमलोवाच॥अर्जुनयेमित्रुतेतुमउरहे॥शोकतहूनरहेजीयधरे
दुहूंभातनमोमित्रुतिहारो॥केहेसाचकीगयघुगारी॥८७॥योहमसोसंगनामउरावे
निहचेयमकामोहिदिघरावो॥योनलरोतोरिदेविचारो॥लोभरोदिघसपरमारो॥८८॥
मोहिदुगकरादवेवानदुखारी॥सहनसकोपावोश्रमभारी॥तातेहमसोभोगभुगो
जीता॥सुखकरलेबोअपुनेवाधतम॥८९॥हमभीतुमरासपदिघाये॥अंगअंगअगसोनद
नवसाथे॥वरोमोहिनातरतुहिप्रभना॥यमजोहिपदोपुहारोनघवाना॥९०॥ननअर्जुन
जीयकीनविचारा॥कीतिकानातुरभईदुहिनारा॥इतोउसेइहिनाररननीजै॥घात
नहारीरमरेजीकी॥९१॥तववपार्थपरररकीयेत्रेसरा॥तीनोफोटेपुमलोवलधरा॥पां
चपोचरखदुखदुसरकीने॥अंगसेवलभुमरणत्रीयलीने॥९२॥सातवानपुनअर्जुन
नमारे॥सातोताहीत्रीयकरभुमडोरे॥इकसहस्रवसरतजेचतुरत्रीय॥पार्थकारयकुप्रा
घादतकीया॥९३॥रिसअर्जुननिविद्राकतवाना॥घातेउपजेनीदमहाना॥परहारिये
पुमलोदिघकादउ॥अर्जुनसोभागैठरहारउ॥९४॥अंगोरवानपउसतधनधाओत्री
यकोरतोरिदेवीचारे॥तवअर्जुनकाशतेवानीसुनी॥भयोशवददेपार्थगुनी॥९५॥मत
चितवोयात्रीयकोघाता॥सुवणकरोहमुरावचसाता॥हसरहसवसमतजोलरहे
कोभीत्रियपरविजेनथरहे॥९६॥दोहरा॥प्राणप्यारेजेतुऊकार्यलेवोसाधो॥मधु

२८२ रखच्चनकोहिरसवसो उचननकुंऊ उपाधा।।४५।।महोइसेतुहिवरोगासउनहरषावैन्ता।।
गजपुरपठदेवोइसेलेहुनिजकाजसवार।।४६।।चौपई।।अर्जुनसुनअकाशकीवा
नी।।विस्मतसभसोकहेप्रगटानी।।अचरयवानीभईगगनंतर।।रहिदविचारकर
देषोअंतर।।४८।।इतिश्रीमहाभारतेपुराणेअस्वमेधपर्वणेप्रमलापार्थसंवादेच
तुर्विंशमोध्याय।।२४।।अर्जुनोवाच।।दोहरा।।वानीसुनेअकाशकीतुमसभज्ञान
महान।।पुनीविचारमनऊसोकहोयामोसरकजुधिकान।।१।।चौपई।।नभकीवानीसु
नोसभीवर।।क्रियाउच्चरनहेचकेशवदकर।।यामोहमरीहोइभलाई।।सोईमंत्रदेवोस
खदाई।।२।।सुनसभकहेइसीविधिकरो।।निहचेज्ञानमारमसुखधरो।।इनपरविजै
करनोंदुष्टो।।पुनत्रीयहेनसुजसनतथावै।।३।।येत्रीयसवलपरेहमहारै।।ईहक
लेकहकतहुनीनिवारे।।इहीनीकइनसेजीहिशंता।।निजकार्यसाधेसरवभांता।।
४।।तबअर्जुनप्रमलाहिगजाये।।कहेतुमनहमरामगुनकेहिलयो।।रूपसरमतदेख
तुमारे।।यधर्मकोजधनहीरहीरहमारे।।अबतनुमसोनहीयुद्धकराऊ।।निजमन
ऊसाचीउचरा।।५।।पतनुमहीचितज्ञानीविचारे।।देषोहमरासमासचारे।।६।।हम
धारोहेयजसकरभा।।यामेवनेनाहसकोउदंभा।।परजनेनाहिहोइमघजवलजा।।वर
नरीसभकोतुमकोतवलजा।।७।।अबतुमजावोगजपुरमाही।।हमअबवरोतुऊता
हाई।।८।।सभकुरेचदेषतसुहिवरो।।अतिवउमानतुमारेधरे।।९।।तुमरेसंगकीजेती
नारा।।सभकोवुहावरदेहुभतारा।।प्रमलाहर्षभईइहिवचसुन।।पुनपार्थसोके
हतमधुरधुन।।१०।।प्रमलोवाच।।सुनपार्थतुमसभवडभारत।।निजजीयकीकहे
तेमेंहयपारथ।।मेंहिमनर्थीतुमकोसेनासम।।भारीयुद्धकरहतेनाहरस।।१०।।
अबतुमरेमसवशे।।तवचनसुन।।हर्षभयोमोमनमेहेप्रभगुन।।चोतमकसपुन

प्रणप्रतिपारे॥ तवसहि गजपुर पठो विचारे॥१०॥ अस्वपि राइ कृष्ण चो तुम जु चलो॥
धर्मज निकट रहो हम जु चलो॥ प्रमला अस्व तव दीयो मंगाये॥ अर्जुन रहे छत हि
येन माये॥११॥ इकु त्रीय असवर या की मत भारी॥ राजन सिंहासन पर बैठारी॥
निज संग त्रीय सुंदर वहु लीने॥ गजपुर चली हर्ष रस भीने॥१२॥ शत्रुघ्न रस
मनारस हानी॥ नगर हीरे मणि चमर रुम हानी॥ घोडि सहस्र कसा घोन ही देघे॥
मणमुक्ता संग लीन वशेषे॥१४॥ धर्मज हित लीये दुव अनंता॥ कीतो गम
नचित हर्ष अगंता॥ अर्जुन सो सम भई मदित मना॥ गजपुर गई प्रमला अग
नंदघना॥१५॥ धर्मज हर्ष मान अति धारे॥ सम इस्यान दीये हित भारे॥ धर्मज
कोवहु भेरा दीने॥ हर्ष प्रसपर अनंद भीने॥१६॥ इति श्री महाभारते पुराणे
अस्वमेधपर्वलो इस्त्री हस्तानपुर गमनने पचीसमो ध्यायः॥२५॥ दोहरा॥ पार्थ
हर्ष तुरंग ले अस्व गो चले सम ज्ञान॥ हे घो अस्व चरीत एक पया न हरि को रचन महान॥२६॥
दुमजिन सो फल नारनर गज अस्व अजगर गाइ॥ स्वर्ग मित्र गम सर्प हित साई दले वोजी
गहैजन नामाहि भर॥ चौपई॥ प्रातकाल इहि फल उपजावै॥ अर्ध दिवस होइ प्रौढ दिषा
वे॥ पम रहे दिन त्रिह्न होइ रतवा॥ सर्व अन्न भये मरही सम॥३॥ पुन दूसर दिन इसी
सी प्रकाश॥ लागे फल निस दिन सन हारे॥ तादिन इहि विध रचना देषा॥ सम हीव
समे मये विशेषा॥४॥ वहु इक वहु युग अजा घमस होवे॥ वहु ते तीनने त्रिदुष्णावे॥ चे तेइ
कजो घन वहु चाले॥ केते दोइ पगउपम विशाले॥५॥ केते तीन जोध वल भारी॥
केतेसी सासित्र गम युक्तारी॥ केते मानव सम मुख धरही॥ के गज के अस्व वदन दिष
श॥ धावत सम मनचे अति निस्तारे॥ इहै वसन उनचे निरधारे॥ एक चरण तलइ
वरुपरधरा॥ सो इरहे मुखकों निंदु भर॥ आदि इह प्रकार तहां रचना देषा॥ अर्जुना

२२३ द्विविस्मानौविस्मानविशेषे॥तहांनगरवडऊजमरवसैजिता॥ज्ञातिवलसरेयो
धकभयचिंता॥५॥भीषनतामजमरकोराजा॥महावलवानपरसमकोजा॥
मदनामामंत्रीवलकारी॥घाकेमंत्रचलतनरूपभारी॥२॥ताकेप्रोहतमयकज्ञात
मानै॥जिनकेदरसनयमेसमाने॥कंजोवनकोयज्ञोपवीतजोरी॥रडुनमा
लनिशालधरैतोही॥३॥डजरूपालराजतनगरमाही॥घामोजलीजिउसधरजचा
ही॥डजउपरकवणाजिमनोती॥करूवनघालवमेसवरधोती॥४॥हडुगज
नमेनिनकेशमसु॥तनकोरेविकरालकोधक॥नभसमानउचेभयरूपा॥चो
यनपुमानमुखदुंगजेसधकूपा॥५॥वडुतरवरसमभुखमोदंता॥नासाउ
रकीजुफाजठंता॥दोलायधपरोहतडसीस्वरूपा॥तिनकेसरजनतरपतभूपा॥
६॥वनमोफिरतकोछेस्वकेविता॥जस्वकोदेषभयेरषैतचिंता॥रूपभीषन
कोउनमधदीने॥कजवर्यसेरमदिगमोलीने॥७॥पितातुमारागवकजिहिना
मा॥हस्योभीमकरतेजमरहान॥ताहभ्रातकोजेनवलकोभ॥चतुरंगनसेना
संगधारीभ॥८॥कस्वकीरहाकरतफिरतचरा॥ज्ञातिसंगयोधवलीवलकेव
गासकोतंनेरपितामकालीजो॥भुजवलधरसभकोहृतकेजै॥९॥चारमास
वेवधानरहम॥निराहारव्रतिधसोरिषिनसम॥घातुमयजनरमेधकरो
कवन॥उदरपरहम व्रतिपालेसभ॥१०॥यजनरमेधकीयेफलवने॥घासमपुं
ननदूसरगाने॥जिसीनधर्मश्चिमोरोमुकरतहै॥जवधिुतनेदुलहूतंधरत
देशाचधारदीसंवउकेनेडविसधांधा॥डारनोहतहोडज्जनीमधा॥यज्ञकेरेघर
रसभोजनततन॥देजेजिवीवेफलउपजेकज्ञीता॥११॥तेमसेतुमडसीयज्ञकरेजव
वलुसंभारजारसैनहतोकवा॥पितापुशनवेरगोरहोर्ड॥माजसीसधरेतुउ

सोई॥ पुनर मसमभयो वैरं ज्ञहाँ रै॥ देवेतु मेकसुसीसुसक पाये॥२०॥ पुसो रघु॥ हम सी त्रिभुवन से
इक्कैसेयजु कीये विनु॥ तातेकी जैसेइ तुमसन वलीन कोऊ जात॥२१॥ हम लख्यो वेइ
कहोइनि जसमन वलरावनसघने॥ वरोय जु वलपाइ त्रिभुवसभीसा सिघ धरे॥२२॥
चौपई॥ इहविधि यज्ञ कीये वल रावन॥ लंकापति ऋरवलपती पावन॥ तहा हम
त्रिभुवन भये घानासा॥ रघुरसुचे पुनरही नकनासा॥२३॥ ताते पुनकसुम्रि उनको उपा
सो त्रिभुवन मारीहेतु॥ ये तुम रावन सम कसुवकरहे॥ शत्रुन हानरमे त्रिपत रहे॥२४॥ भीवन
उवान्हा॥ तुमरे वचन मोहि मन भाये॥ पितवेसी पाउ वलघपाये॥ जिउ तुम कही ति केसुवके
रहे॥ सेन समरत शत्रुन संघर रहे॥२५॥ जैसो सकेहो जाइ छतु माभी॥ तेउपर करोवल धामी॥
वसराघ सो वान्ह॥ सै प्रभु पतु मेरो दि जकसन ठंता॥ समते हम रीछु धकसंत॥२६॥ कसर कीन्ह मसदिघ
वैजती॥ हमरे उदरसम भावै तेती॥ मेरिसहार गमी हनि ज चलकाये॥ जाको मनसम उदर भरोये
२७॥ भीषण दरघ्योदि तवचने सुन॥ कहे सुरंभोमत भारी गुन॥ हम जाशवनसे रगमे तु॥
२८॥ सम को जीवत ही गोहि लयो वो॥ सम दिन की तुहि मर्षि मि
समकी भुजा वलप्रा क्रम रव तु॥ वलकालीयमलोपमहाने॥२९॥ राघसीयानिस्न
रावो॥ इहिकहि सम सुरकरे इकठाने॥ तवकसु जैन इहिसुधसुन पाई॥ राकसा
तिनकी नाली॥ चढी गिरेयु धुदे घनराली॥ इसमही कसु जैनदो सन मुख भये तव ही॥
नक्समल्ली योगहाइ॥३०॥ युद्धहेत इकठे हो इसमही॥ राघसानकी त्रीयादिघ
पार्थ्वकी धुजपर हन मानना॥ दूसर वलीन जाहि समाना॥३१॥ इदा हमुरावासुन हीकसुवा॥
ये॥ कपानी चित त्रासवसाये॥ तव शवदपुकार उठी सभ॥ रामन्च उ ये जवराव णपर॥
३१॥ भजो भगो जो पुराणप्या रे॥ इसकपरा वणाको संघारे॥ लेकमा हवड
इसकपकी नसकेन सवेकरा॥३३॥ उदधि कूदगयो अनुन जनायो॥
इसकपकीनसको नसवेकरा॥ पुहपपत्र फल तरनर हान्या॥३४॥ च
भड्डपपायो॥ वनकसु शोभकेसे उपराज्या॥

२८४ नधाम पुंधल्ला जोरे॥ इन कीने तह राव डेउ ऋषा रे॥ कृति वल कार ऋस्सर कर ह्याने॥ तिन कीन्ही
री कीन्ह निमाने॥ ७३॥ ते उ अपूर्इ हांडु रूप गयो॥ लखीय तकोल सभ न कोऊ जायो॥ योनि जज्ञी
व वचा या न्चाहे॥ न तंधि न भाजो॥ विल्लुन ल्लावो॥ रुधा देह रा॥ लंवो दस्न भ्मा रा घसी तावे
व च्च न म्न नाइ॥ कहे धारी ए तीषिं उ वेके का हे को भय पाइ॥ ७४॥ काल पाश वांधे सभ जाये॥
हमरे धाम ना॥ काम्चे ह्नी व रघा हहम इन कोविन संग्राम॥ ७५॥ चौपई॥ पुन इक ऋवकरा
कसी वोली॥ मतं कि उ ऊरपा नी मोली॥ देष इनो को ऋव रस्तु कोरा॥ तु मेरे मन ते शंका
हरो॥ ७६॥ हमु रे कुन्च यो जन परमाने॥ दवमारे ऋरसैन महाने॥ जो हवान्नर ते तु मभ
यधोरे॥ पुत्र यमे इस को लेवो मारे॥ ७७॥ पुन अर्जुन को सैन समेते॥ हत लेवो न तेजे
रथ पाछे ते॥ वहुर एक राकसी उचारी॥ मैं निज कुन्च पर गंके उगरवारी॥ ७८॥ तुहि कुन्च मो
ह कु चोके ऋाऊ॥ न लये रम निवरती जे उ ऋापमल्ल लाऊ॥ हमरे कुच केछिद्र स्याना॥ ति
न को हेयो जन परमान्ना॥ ७९॥ तिन के कल्कार से नी सुघावे॥ एको वार सभी दव मारे॥
मे हहा यते कैा न व चावे॥ जो जीवत पुनि निज गृहि जावे॥ ८०॥ इहि कर रह दे चली वउ
तेज्ञा॥ ना मंड ना राकसी या ऋन्त नेजा॥ वे भार जा चड़ी ऋाऐ का पणा॥ सभ कीहि पूते भई
ऋभा सा॥ ८१॥ कुन्च पुहार रूहाते कर रहे॥ पार्थ की वहुसैन संघरहे॥ गज रथ ऋस्व पद
तजि हल्लाडे॥ यमपुर जाइ प्राण तन त्यागे॥ ८२॥ प्राण हीन भुम पर जे वपर हे॥ गज रथ ऋस्व पद
हे रम रव न मो धर रहे॥ इहि प्रकार वहुसैन घपाई॥ इति उति फिरे योध सकुचाई॥ ८३॥ राकस
दोहरा॥ पार्थ सो भाषत वचन राकसान को भय पा॥ मोसो जीवत न... फिरे योधस कुचाई॥ ८४
ऋन्त पाप॥ ८५॥ सभे पाइ तुहि भ्रात पवन सुत॥ मो हि पिता रत नु कीन ते हव चो निहचे जान
ऋाइ वस परे हम मारे॥ हते तातु जे पितु वेरस भारे॥ ८६॥ पत्रु जन रमे धमरे सभ को रत॥ ऋव तु न
त्रिपता वे हमरे सभ पूत्रो हता॥ जे उ तुम ऋा स्दमे धा चित वे मन॥ ऋास को रत वांधत

रोफलघन्यु॥५५॥ तिउहीरमननरमेधकरावे॥ नरहतसमुद्राहतत्रिपतावे॥ तुमकोहतपुनभए
हताउ॥ जाहिपितुवैरारदेहरषाउ॥५४॥ तवैतमाषतकानप्रहारत॥ मैंल्मसकलहीनीकजात
कुमारता॥ पुनअर्जुनपरकोपुकपावे॥ जदाप्रहारकसीवलभारे॥५५॥ दिघअर्जुनदोरवंडकि
नाई॥ कोपयोअसुरभपरिसघाई॥ गिरकेवहुतेविजउपरायो॥ अर्जुनइतिउतिदेडस्वा
यो॥५६॥ असुरउपरवहुविरघवलावत॥ पार्थचतुरचोटनहीपावत॥ पार्थसरकी
वर्षधरीतता॥ वहुतेरहतेवहुत्रासकीयेमता॥५७॥ असुरनअर्जुनकीसमुसैनाम॥ हती
भ्रमरणकरवलुपेना॥ राक्षसीयाकुचवलवहुहाने॥ लरतलरतदोउसैनहताने॥५८॥
राक्षसीयाचपुलांजेउपरही॥ हनवतपरमाभीवलुधरही॥ कूदकूदहनवततपरपरही
वहुक्षमदेहिजरानहिउरही॥५९॥ दोहरा॥ चाहेजाहिहनमानकोलेजावेवलभार॥
दिघपार्थहनवंतकोनरवतेचहेउचार॥६०॥ तुमकोधारेभारमनहतोइन्हेहेवीर॥
शत्रुपुरातनतोहिहेहिउविलमोरणधीर॥६१॥ चौपई॥ इहितेतानुमरेशत्रुपुरातन॥
कोहेविलमुकरीअरघातन॥ सुनहनवंतधुजतेगिरपरयो॥ राक्षसीयासोवहुयुध
धरयो॥६२॥ चा पुंछलपेटधरणपटकारे॥ तिनप्राणपयानमझारे॥ जोचोजीवतभीरच
जावेम्धरकरहाउरणेतनफावे॥६३॥ केतनकेजाहिकेशमुजावल॥ उरतनमकीडो
रतेजमरभकेतनकीभुजजोघउपारे॥ हसहसवीरदसोदिसमारे॥६४॥ असुरनारण
भजीभयानी॥ हनवंतवेवलसहनमसकानी॥ केरादिषहनजलजंभीरे॥ लोपर
हानेतेरणधीरे॥६६॥ इतिश्रीमहाभारतेपुराणेअस्वमेधपर्वणेछपरविशमोध्यायः॥
२८॥ दोहरा॥ असुरभपरिसधारमननपरेसैनमोजाइ॥ हतीसेननहीपारजिहिभ्रम
दीनेकजधिकाइ॥७१॥ चौपई॥ असुरभपकेतेजदिषाये॥ अर्जुनकुपीकेशोषतदाये॥
मंत्रतसरधनुधारप्रहारे॥ हतेअसुरअर्जुनतेजपारे॥७॥ रहेशेषतेभाछातजाहि

२८५ पवनवेलेंनिउत्रिलोउड्डाही॥ भीषणभाजातेसेनानिहारी॥ रचलीनीमायाततकारी॥३॥ माया
वलवरघाअससेहाई॥ अंधधुंधधुंधिगपरतनकोई॥ निजअगिरकेवपुभयोवलीअति॥ अझाइपरो
अरकीसेना ततमआगिरतअझाइवचयोनहीकोई॥ पुनभयोसिंहभयानकसोई॥ मम
कमभकवहूसेनासिंहहारी॥ इतिउतभाजेमनजभयारी॥५॥ दिषपार्थअरसनमुखजाई
परहारेअरकोपमहाई॥ मायाकीअसरसिंहवपुताडो॥ गजेहोदोरवरोरिसजाडे॥६
पुनपार्थसअवरतजाने॥ असरजोरवपुधरयोमहाने॥ अझाठजागभअझाठन
हाना॥ अर्जुनकोभ्रमधरतमहाना॥ रिसपार्थसरडारततीछना॥ असरजोरवपुध
रतछिनेछिने॥ चारोदिसअर्जुनकेवाना॥ धाइरहेतवअसरलुपाना॥७॥ माया
वीराससमयमाने॥ जेसेलापोकहूनदिघाने॥ जेसेअगिनछारलोपाई॥ प्रगटेजन
वहीदुरवदाई॥८॥ दोहरा॥ अर्जुनरचनाअसरकीदेषभयोभयमान॥ तूठतपिर
हीशत्रुकोचहूदिसतेजमहान॥९॥ स्यलतातटदेख्योतपीई॥ शधाननमोलीन॥ व
इवाललनासोपदेवियाज्ञानपुरीन॥११॥ चौपई॥ अर्जुनशिवस्मरअसरजोरे॥ दो
उभयोविनेअतितेउरे॥ तपसीअर्जुनअजोनिरषाने॥ मरवतेभाषतवचनोहिताने॥
१२॥ शिवउवाच॥ हमअसरतेवउभ्रमपाये॥ जपतपवृतिअधकरनसकावे॥ जीर
के जनतुममोपञ्जायो॥ तुमेदेषहमअतिहरषायो॥१३॥ रोनिकटहमरेविसरामा॥
अंतसिषावूतुसिअभरामा॥ यातेमायाअसरविनाशे॥ लोपनहोइपरेपरकाशे॥
१४॥ जोरभधरसकेनकोई॥ अमहतेअसरकोरणहोई॥ पार्थशिवसेमंत्रपढो
हितमवदोहोइदोरोहरषतन्चित॥१५॥ देष्योअसरवपुसर्पविशाले॥ मुरवतेकाढ
तअतिवहुज्वाले॥ प्रलेकालकीअगिनसमाने॥ परेसेनमोतेजमहाने॥१६॥ मे
जोरवपोधेवलभोरे॥ तापरडोरेवानअपारो॥ पेनहीइकुसरतानतनलाडेअपार्थपेदे॥

रथरथ्यो नृप जाके ॥५५॥ मंत्री ऋषि भीम स्वरते जो पायो ॥ पठ कीन्ह हरि ध्यान लगायो ॥ मिटी कसमर की
तव सभ मनाया ॥ ककरकरयतन अर्जुने रथ बनायो ॥५६॥ पुन वपु के ओरन सकाना ॥ चाहत र
एते भगे भयाना ॥ अर्जुन देवसीस रकस मान्यो ॥ कातीवे धन पात निकान्यो ॥१५॥ सादोह
रा ॥ जिते गिर स्त्रिग दुरभुमपरे ति उगिरयो भुमभाह ॥ पार्थ कीन्हे नाहिर थ धनधन
धन प्रगटाह ॥५८॥ असुर सैन दिख सभ भगीरण भमरष्यो नकोइ ॥ वनगिरकंदर उध
धिमोजाइलुपाने सोइ ॥५९॥ चौपई ॥ रिषि तपसी मुनि जन नरपाने ॥ कार्यकी उपमाइ
गराने ॥ पुरमो जाइ स्वम स्वयतअर्जुना ॥ सूरयो तां का पुरकोध तमन्न ॥६०॥ भीषन के
रमी हि वि तम्रंता ॥ नगम पानुरु ताहे मअनंतम ॥ बहु दीयो वास्वमको अर्जुना ॥ स्ते
हिस भी भए पत हर्ष तमन्न ॥६१॥ धर्मजकेओ कीर्ति सम हेतकीति ॥ गजरथ उप रमरभे
जेतत ॥ वहु रंग हेम उपम अजपारे ॥ तेलीने अर्जुन हरषारे ॥६२॥ मुकरसीस कावर
नगजरे ॥ पाहि जात रवि सस समधरे ॥ ते अर्जुन लीनो हित चित धरे ॥ पुन अजर धाम
जार कीने सर ॥६३॥ पुत्र वीलि चउसरथे जोरे ॥ अक्षय धोधर चलेव लारे ॥ असमसु
वसमेत हरताना ॥ जैजे शब्द सुरे प्रगटाना ॥६४॥ इति श्री महाभारते पुराणे अस्वमेध
पर्वणे अस्व रवधः स पूर्विं शमो ध्यायः ॥२५॥ वैशंपायनो वाच ॥ दोहरा ॥ अस्व वचि त्र
कथा कै चल्यो पाछे अर्जुन वीर ॥ जा पुत्र भयो मन्न पुरी या की उपमनं भीर ॥१॥ चौ
रोवरी सु धर्म जिहि हि निजानि जधर्म चलाह ॥ दया दान दे या जिहि हो तनित साकी
संगधाना हार ॥ चौपई ॥ चारो वरी सु नृवि वहारे ॥ सभार है सो धर्म विचारे ॥ परनिंदा
इरध तेहीने ॥ वैसे पुरी सभ मदित प्रवीने ॥ उभ्य तके ओ शील की धर्मा त्रिया तिहि ॥
मन वच क्रम पति की अज्ञा जाजिहि ॥ उरि रविहि कयादीर तनु करही ॥ दुरख क्रम चि
ताकी सून धरही ॥ भा रिषि तपसी भारी तपुसाधे ॥ द्विज धरकरमी ई शंकराधे ॥ दे
नपुन की गणनन कोई ॥ प्रजहो मजहिहि दीहि निन तहोई ॥ ५ ॥ मुकतजा सम सम भये

२८६ जैयमाही॥ वेदशास्त्रकोसंपयचलाही॥ परदेसीअभ्यागतपेषै॥ मुदितकरेतासोजुवशेषै॥ ८॥
धनसोपरउपकारसभीजन॥ तहांवसैधनभरेमुदितमन॥ सभहीरभगतमुदितमनजि
नकेरा॥ गसरहुनकोसभसंमस्त्रतभाषी॥ सिमरतवेदपुराणअभलाषी॥ पुरकीशोभाकहीन
जाँवि॥ सुरपुरसमनसुरवपुरपदिषावि॥ ९॥ सुरअजीततेजवलभारे॥ न्रपकीसैनअगंत
अपारे॥ रामभुमतेशत्रुपराजीतेविन॥ पाधेपगकवहूनधरेतिन॥ ७॥ दोहरा॥ परचौफे
रेसुचहुरज्ञतरचीजिहिभीत॥ न्रपकेमंदरस्वर्णकेलगमणिभ्रवकभरीत॥ १०॥ तिहि
रथवारेसवलअतिशस्त्रधरवलवान॥ निसदिनरहेसवधानवररछ्याकरलाल्लहि
तरान॥ ११॥ चौपई॥ रूपवावलीतासअनेका॥ नालीनहरनपरतववेका॥ फूलेफ
लेविरछअतिअनंता॥ तिनपरपंछीवोलिमाता॥ १२॥ वानीमधुरबोलहीछगवर॥
जिहिसुनमुनमनसुमरहरा॥ हेसनचालचंतुर्हलमोरा॥ जीहदिषमिटेचिंतअति
घोरा॥ १३॥ ऐसेसापुरदूरीतेदेषे॥ पाँधेपरेअज्ञानवशेषे॥ कहोंहंसघुजज्ञानअ
अपारे॥ हरिपुरकोनेरणकलभारे॥ १४॥ यापुरमपवपुरवाहनवर॥ यासमान
नहीअज्ञानभमनतला॥ दयाधर्मसतशीलअपारी॥ याकेगुननहीजातउचारी॥
१५॥ वलसुरमतउपकारेहरवर॥ परजाकोसुखदेवेहितकर॥ सकलनरेसअनीत
हमाने॥ अतिवलकारीतारूपवाने॥ १६॥ इकसहस्त्ररथघरारेशोभत॥ सदाभेरहम
थेहिनीकरततमथावेमयसमन्नपररेहेउरपति॥ तासन्नमुखकोचूरहनसवेसत
१७॥ वुधविद्याऔज्ञानमहाना॥ निसदिनदेतरहतहितदाना॥ येचाहतकेकेसंपया
सोजांचे॥ मनवांछततिहिदेतोहितांचे॥ १८॥ याहिदानदिजलीयोफूबौरे॥ पुनअौ
रनहीहाथपसारे॥ इहिन्रपपरत्रीयनिरहटनजांवे॥ अपनेतेउरेरंमासदध्यावे
१९॥ समत्वनामृतायकमंत्रीवर॥ हरिकभजनभगतमोतनपर॥ सभदेसोफु
सधनपुराणे॥ सकलप्रजाकोसुखअभलाघे॥ २०॥ तासोभीरहुबलीपछाने॥

यासम जगद् सरनदी मानो॥ वेरन काहू सो मन न गावे॥ सकल प्रजा को सुखदे अमला
वै॥ नृप मिप कच्च सम सो भावै॥२१॥ या मे सम की होइ मलाई॥ ते हूं मं चन्द्र पसो प्रगटा
ई॥ अर्जुन जो इहि नृप वल भारे॥ या हम कछ सकाहे ते जस पारे॥२२॥ रउन पेरे अस स्यक
म कतावन॥ युद्ध करे सम वल पती यावन॥ इह माभ ये अचर्य निहि काला॥ नभ ते उ
तरी चीत्न विशाला॥२३॥ पार्थ सी सत्र्याइ वे ठानी॥ दिक्ज पश ठान सम हे रेम हानी॥
कहै इहि घ गजं जासी सव हा वे॥ निहचे ते जन्न यमपुर जावे॥२४॥ प्रदुम्न ओ देस भम
ये विमनन मन न॥ हर्ष न नाहि स्पो काहू के मन न॥ वड अचर्य भई इहि वाता॥ अग जनु न हीस
म को कुशलाता॥२५॥ वेशंपायनो वाच॥ दोहरा॥ इक सहस्र संग्रामे सेन धर वत्रु वाहन
वडु मप॥ अग्ये रकवरन गर को चल्यो स ते ज ज्ञन प॥२६॥ अस्व विचित्र को देख के तग्रे
लोक लुभाइ॥ नृप को सुध दीनी उनो अस्व उप नप्र गटाइ॥२७॥ चौपई॥ नृप उनसो
कहे गहो तुरंग॥ हम युध करहे तिन के संग॥ इहि काहू भूपत युध के हित॥ धाउ ये अ
स्व सम भूपन को जित॥२८॥ येन ठाहे मुहि निवल पछाने॥ घताई रमुरी जग
मानेगठ होवे कनक स्वजा न न दीजे॥ होरण रोप लही सन कीजे॥२९॥ नदो रे है वो
ठहि स्याये॥ दिघ दिघ नृप सम सम भू हरषाये॥ पुर को पठ दीनो वर वाजा॥ पाछे जा
त ते जव तुरा जा॥३०॥ अस स लपुरमो जाइ प्रवेशा॥ वेठो सभा मो संग्रादिनेशा॥ स
भा उपम कछु वहीन जाइ॥ जिहि सुर नर दिघ रहे विसमाई॥३१॥ दस सहस्र कं
च न के थंभा॥ हीरे नग मणि घचे अचंभा॥ लाल नीपाच सत धनु प्रमाने॥ नकुली
त्रेम तत्र री महाने॥३२॥ अच्चाली सघन छत्रू ची सुंदरता॥ सुरपति सभा सम ता
न वनी मति॥ विस्वकर्मा वद प्रीत लगावे॥ कीन वनाव यम सभा सम भावे॥३३॥
विस्वकर्मा का या एही पुर॥ याठ न चाहे सरकल असरस पुर॥ सभा भात परयोग

२८७ नकीनै॥ तिहि उपमा नन ही परे पुवीनै॥ २४॥ जिहि रवि के उदित दुगनी हि बहु रोवे॥ तेउ सभा
जैा तनि रषत थरकौ वे॥ जगमगत नग वमकी वे कैसे॥ सूर्य चंद तारका जैसे॥ २५॥
बहु विधि चित्रन की कै रे॥ ग्याहि निरष सभका मन्न हरे॥ विविध भीत दरवत तहं आकार
तापर षतनी शोभ अपार॥ २६॥ चरनी चरन वाहन और सकला॥ कोकिल मैना मोर रवि
शाला॥ सावक तक पोत समुंद सजीता॥ चित्रनि लिषी यत सभ जाने॥ सतो है॥ २७॥ फ
लकल नल वहु भांत सहाने॥ तिन पर रंग जै भ्रमर सतु भाने॥ सकल सर स कीव तना व
नी॥ तन की शोभ जात न गनी॥ २८॥ जग जैाति उजीयारा होई॥ तहां दीपक को है तु
नहोई॥ असन भीत रे वचनमय ताकी॥ उपमा अपार दिषावे याकी॥ २९॥ निरत करत
सुर सुअपसर वन॥ अंध्रुव गावत राग हुर्स्तु मनन॥ सन कर संगध तहां छिरकाई
नहो अंधकार धूप धुपाई॥ ३०॥ वहु प्रकार के वाजे वजे॥ जिहि दिषस ने कोप भ्रमन भ
जै॥ जर रथो जर तसिंघासन सोहे॥ ताको शोभ न दिषमन को मोहे॥ ३१॥ तापर नृप भ
भेष करा जता सुरपति सम ते सभा सह राजता॥ अस तिहु सभ उदित दिषाई॥ हरि
काभजत नरेश सहर्ष॥ ३२॥ इति श्री महाभारथे पुराणे अश्वमेधपर्वणि नृप सभ व
र्णनो नाम षष्ठो अध्यायः॥ ६॥ दोहरा॥ वेद सभा माम पवर तहां मग आयो वाजा॥ दिषत
रथा ने सकल जन ताकी छवि कैसी मा सा॥ १॥ चौपई॥ सी सम स्व वेकलजो सोहे॥
रीव समस जात देषमन न मोहे॥ अष्ट विविध प्रकार शोभ अति॥ पजान पर जनत
रहत तस तां॥ जरत कारवे चनमय पटा॥ अस्व के गर चमत जिउ छटा॥ २॥ चउ
छ कर है जो तन की माला॥ अस्व मर विशाला॥ ३॥ पुनि कुप रभाल
अस्व केवरा॥ ताकी उपमा को नस के कर॥ तापर लोक कंज जन भ मरी ता॥ धर्म जछ
कुल सभ मरीन॥ ४॥ दोहरा॥ पर घोल तो ताको पैठ डीह सस्व धर्म जम प॥ ५॥ ताउपो

२धमताहिकाकअर्जुनतेजगमनपु॥५॥योनरेमवलुराषहीगहिरघेगहिमभहि॥अर्जुनयुधु
अरताहरजोजीतेसंग्रामनाहि॥६॥योहोवेग्रससमर्थवलपार्थसंग्रामसिधाइ॥ताकमाजुमानन
रहेतववहिनपसखुपाइ॥७॥चौपई॥अर्जुननामुसुनतनरईशा॥मातासोजाअहीजगी
शा॥चंद्रांगदनपकीमहतारी॥सुनविरतंतसभकहेउगारी॥चित्रांगदोवाच॥हेसुत
तो अर्जुनीपितातोहिवस॥ताबडभ्रातयुधिष्टरकोधरा॥तोहिवनैपितुकेसंगाहोई॥शत्रुनकोमम
रणहोई॥८॥अबतुमखलेजाइचरनपितपरे॥जोहिहिहिहरहतताहिचितधरे॥ज्ञानेजाठेमाण
तुमारे॥घरवैठेपितभांगदरशदिषारे॥९॥मातैवैनसुनीमृतुविसमाने॥पक्षतमा
तासोपुत्रगरानो॥बभ्रुवाहनोवाच॥मातारहुवितोतडिहिसभमृज॥जेसेवसनीनापा
धनुक॥१०॥तूशेशनागकीसुतातसचोरे॥अर्जुननामरूपदिषारे॥जेसेहोईव्या
हुतुमारा॥मेटोडिहिवडुसंसरहनाराम॥११॥मातोवाच॥बालसमेहमपितुनिकरारे॥षे
लतरेन्यासोहषोरे॥तवतबथुकोजनमेम्सोभयो॥पितासापतवमोकोदयो॥१२॥आकसो
जाहुस्मारहवपुधारे॥जलतबसमानमसकरोदुरवारे॥सुनहमपितसोकहीउचारी॥तो
हिशापवरवमुकतहमारी॥१३॥पिताउवाच॥सममापाइअर्जुनइहफाखे॥तुमरेजलमे
मजाइपरीवे॥अर्जुनहाथजबतुहितनलागे॥ज्ञानेभ्राततुमारेजाठे॥१४॥तुहिपा
धकैदेहुविवाहे॥चउपत्रहेवडुनरनाहे॥ज्ञिउपितकहेफमभईतिसीविधा॥अर्जुन
ज्ञायोपर्मेहर्षनिधा॥१५॥तासोविधाहुकरदीनामेहू॥तिसुतेहमउपज्ञानानाहूलड
स्वलेजाइपितापगलागो॥युधुकीगाथरिदेतेत्याजे॥१६॥नृपमाताकीपकरनरया
नराम॥कहीसुमतसोहेतुधारसभ॥पुनकहीअर्जुनपिताहमारा॥सरेतिमिलेबकहो
वीन्हारा॥१७॥मंत्रीउवाच॥तेहिनवनेपिताकोवाजा॥गहोवहुरथारेयुधसाजा॥
उचततातकीसेवाकीजै॥नाहीकियुद्धपितासोलीजै॥१८॥पितुसमनसेवापुन्नरे

२२८ हौ॥ ज्युपुत्रपुत्रीतिधारेयेकोई॥ जिहिरखधरेपितुमाता॥ तिनपररखतत्रिभुवनताता॥ ९९॥
यासेभ्रातापिताजगमाहीं॥ तेजनदुष्टलोकसमपाहीं॥ २०॥ दोहरा॥ तुमसमसमभएपनजगत
मोमैनन्देशग्रामठांता॥ मातजवाजसीन्याइहिनितधनवस्तेतेजस्रनेनत॥ २१॥ उचतीपिताकेपग
गहेतननमनुधनधरभेसकरजुनकोहर्षतनकेरोमननतेशंकमेर॥ २२॥ चौपई॥ तोरखने
समभैसिनसभारे॥ दिजम्मनितपसीसमभइबढरो॥ नरनारीपुनभेसभमंसजगाधराजे
२ जैनन्निर्बेचलोबडीहितुधर॥ २३॥ पुनकेन्यासकलीसंगलीजे॥ पुरहपमालसमभवे
बरदीजे॥ निरततगावतन्वलेमृदितमन॥ जनरथकासकमनेउसकलजन॥ २४॥
साजवाजसभजरतसुहावे॥ सिंघासनडोलनचढसुखपावे॥ केचनमालमुकत
नगजरेभजिमसेदिघसभकामन्हहरे॥ २५॥ सभकेडरेसुरवेबहुछवामबनची
रहेनठसिठवमपुलतत्नावचमलचवेली॥ मोलसिसीरापवेलकर्केली॥ २६॥
सभचेबहुतेलेकादे॥ सभकेहाथरेहेनिरबोदे॥ जैनपरसरलीसेनासग॥
पुहुपवर्षजाकेरेहर्षवण॥ २७॥ नानाभांतसंधनेनोदरा॥ भरकोबेगावतानिरत
नवरा॥ रंगपुष्पसभकेत्तेनथला॥ पामेरुधनदीविपाना॥ २८॥ हीरामणमो
तीमेभरपावेपूलस्कारतधोरे॥ जैनचेसिरपरभरमायो॥ रतकारती
प्रेमभरोपे॥ २९॥ वाजेवाजेस्रननउरा॥ नधुरेमुरजावेसभभुन्ना॥ रूपसरना
चतधुवगावे॥ जैनमननपरदउपजावे॥ ३०॥ दोहरा॥ डोरानगरमझारे॥ केन
रेसभचलेमुचाले॥ विचरीतबहुउदुलावे॥ चलेसंतपुरमेनगरे॥ ३१॥ निजनि
जभेरमठसभजनना॥ जैनठपजलठेमुदितमन॥ मठठकरूमनेनोसभसम
पावेमग्रधिकनुमनर्मासिजोमे॥ ३२॥ जरजरततहेचनलावे॥ हीतबहु
बेरतनमहावे॥ जरनीतरुनणवहुजोने॥ रेघचतननधारउरोने॥ जह

२२९ देवसमनवहूभांतमाया॥वहुधकरूजेननिकरपहूचे॥तेसमभाउवहुदर्थतस्चे॥कर्जे
नसंगजकेमपदिषाने॥हेमधुजेतेसमभावसमाने॥६॥वहेवभ्रमाहनवलरूपा॥या
समनगीहजगमेवहुभपा॥भयोनयुद्धदूतनगयेको॥जासपाउसामिल्योदीन
हे॥७॥हीरकीजतवधुलवनसवेहम॥नाहिगणतकेनपहम यासम॥वहुवि
चारकरअपुनमावे॥कहीतचहुभागपहुसतगोवे॥८॥जिनवहुवाहनसेभपा॥
मिलेदीनहेतेजसवरूपा॥पुनवहेहेइनयदुपतिवसचीना॥तीनहेलाकेहेजाह
रधीना॥९॥हीरवसकीयेसवलमसहोई॥ईहकेतेजसहसवेनहोई॥धनंप
उपुतरकेसमहान॥जिनवयमेनेलोचवधान॥१॥दोहरा॥कजेननिकर
कहावदुनुसंगसभुमपमजान॥नाासपासमोहेघरे॥वदमनलालदरघान
११॥हीसमतवुदुनिसनमखेराबहुधवसंदरमुपा॥योवनासनपमतसहत
घरनतेजसनपा१२॥चौपई॥चामसंगतवलीजजगनशालना॥वहुधवटाहुसम
रोवयाला॥देसधुजस्मानवकोरतवरमा॥मतयुतनीलधुजयुधवरमा॥
कोरथचेमपतचलभारे॥डीतउतहावुरयो॥भजपारे॥केदाहनसोचामसहावत॥
वहुसभूदिषादिघहरघावत॥१३॥सवजजुमेतनचारदेताजिरहा॥रतनपचेसभु
मातुमसजोतहि॥सवुलरतनवनरमवहुलग॥चपलसमानजोतजिरज
गमग॥१४॥मेतनकीऊउरलरकावे॥जगमगानरोवसमसनपावे॥तापर
चहुयेवहुवादनवर॥कसचतवहुधवहरघहेतधर॥१५॥रूरतेकजेन
केरहे॥जनतेउतरथोसजवशोधे॥दोपदातदहोतकरावता॥दोरनकायोरिद
रघावता॥१६॥नवकजेनवहेनेमपायो॥मीसनजनकरदोरपराया॥केस
नसोपनोयमसजुनसे॥ऊरकूरभारोसचमनकी॥१७॥हेमधीननवरन

नामि रघो॥ भेरा दीन अनाथ के करु पुकारे॥ सुंदर श्रीया आरतीक रण॥ सम स्वरद नीराई
वडु छवि मन॥४४॥ करै आरती हित चित तहाँ ई॥ निज जनि जन मेर देत सम कोई॥ वार वा
र आजु जन के सिर पर॥ उरे न गमन नमो ती धर्नंत रा॥२॥ धर्नंत वरे कैसे वचन मन कौवे॥
मन नमउ उजगन नमा हृसमा ते॥ विरघमा तसम कोप जाको यो च याया गो जाको भेरा
निहिदीया॥२॥ दोहरा॥ जोर हाथ सनमुख खरा दे भेर तुडडीन॥ ऐसे भागहि मेरे व
डे तुम मेरे रशीन कीन॥४२॥ चौपाई॥ यद्यपि है होपुत्र तुहि पेदास न सम जान॥ रह लच्छ
नो स्वच्छ धर के रोप रहित ठान॥४३॥ चौपई॥ निवांग द वरमा त हमारी॥ सत
जो शील लघा न तुहि नारी॥ ता सुत मो को पहिचाने॥ नाम तु वड़ बा हनमन
माने॥४४॥ यद्यपि कपि जाति वडु ते जहमारो॥ पद निजट सेदा म्सि विचारो॥ केहो हल तुम रव सो
सोई करो॥ तुम रोक्स अज्ञा सिर पर धरो॥४५॥ हम रे देस व देस सत भस्या जा॥ तुम रे हू देपित व
डरा जा॥ अम न जान तहम गये नु रंडा॥ घिमा करो मुहि पाद कञ्ज अंगा॥४६॥ दूसन समस
अवक रो सेव तुहि॥ करत घर मो पर न करो न हि॥ सवकी रच्छ करे वल मारे॥ सम रो
जी तो ते जन पारे॥४७॥ दीन खी महा भार ते पुरालो अ सबमे घ पउँ लो व डवा हन नाहि निरच्छा
ने नी सम मो ध्याप॥४८॥ वव्रवाहनो वाच॥ दोहरा॥ निहसं भो जउ पर रहो धर्म जको
तत काल॥ स्वपादु पमो पर करो हे पित मीत गुपाल॥४९॥ इहि कह पुनि पितु चरन पर धा
र रहे यो हित सीस॥ कहे पिजन कोरे उठाव हे होके रुणा धार जगदीस॥५०॥ चौपई॥ अर्जुन मो
न धार रह्यो तव ही॥ प्रदुम्न आदि दिष वो ले सव ही॥ यो व ना सा हंस धु जआ न सा ला
सा त को विषवे तधु जनी लवि शाला॥५१॥ केहे हे अर्जुन कि हो विलमा वे॥ सुत क्रोसी
स काहन उठा वो॥ अपनो पूर्ण भाग विचारो॥ वव्रवाहन ने सेता न नुमधारो॥५२॥ यार
ने जसमजनको रूप॥ भयो न हे न हि होइ स भन पा॥ अर्जुन नो वाच॥ हे वे शोपाय न

बडु नाचे॥ अर्जुन मोन्न कितधरी महाने॥५॥ अश्वेसा सतम भगुणम यपर्ण॥ वड्डे ते जसीअर
देत चरण॥ ताको दिष कितहठ नरम्यो॥ कहे मोन्न धारवे बद्ध यो॥ हां ज्ञान रूप विस्वापर ची
ना॥ ऋषु जन लघी क्रिया मत मन लीना॥ हम सुन अश्चर्य मान होइ रहे॥ तुम बडु ज्ञानी
जगमें अहे॥ वैशंपायनो वाच॥ हे नृप हरि गति किसे न पाई॥ होनहार सम कोअमर
माई॥ अंगगाशापरस्कर वेहित॥ अर्जुन आहत हीरचित बोतता॥ ५॥ होनहार अर्जुन
मन बसी॥ सकली सुख पछि न होनी असी॥ होनहार सम कोअमर माई॥ होनहार को
हूनी मिटाई॥ ५॥ याको काल प्रकृत्यो नसाई॥ ब्रघ मे ता को बुद्धन साई॥ होनी वसके से साभ
येअर्जुन॥ वचन कहिन हीसुने कोपधना॥ ॥ होनहार वसके पकाध कधर॥ अल
तल जाई सुत सिर वस्नम॥ वत्र वाहन पुन सीस उठाये॥ जोर हाथ मुख विनी सुना
ये॥ ११॥ हे पित किप कैजाग नहम कीने॥ याते तुम कोप परवीने॥ हम कोअसा पापकरा
ये॥ याते तुम मुहि हररष न पाये॥ १२॥ अर्जुनोवाच॥ दोहरा॥ बिधा महा वामो हसत तुम
हमके सत नाहि॥ ये तुम हे तन हमार सुत युध ते उरपत नाहि॥ १३॥ कुपा जानो कासो भई ते
हउ तप न सिजात॥ १४॥ कि उपक सो तुम मोह अस्व पुन कन उसो विशाल॥ १४॥ वान
नचा ले भग्न रण ना हपरस संग्राम॥ देषत ही मुहि से न बडु नुम उरउठे अकाम॥ १५॥
को पई॥ ये नृम हे रा ते पुत्र दमारे॥ दिषरा वतरण युद्ध जपारे॥ मुहि सस तन घाअभमं न व
स्यरी॥ जिन संग्राम करे रण भारी॥ १६॥ भरत मो राषी कुल लाजा॥ भीष्म द्रोण कर्ण यु
धसाजा॥ द्रोण वका व्यहरजे साटाने॥ याको दिषसम भयो धक्र पाने॥ १७॥ ये अभमंन न
सर मावलकनि॥ तोर चक्र काव्यहस्थ स्यो योधे रता॥ ये दु षकर्ण से मरे॥ ते कर कोन
रहो बल पदे॥ १८॥ ये संग्राम करे अभमन ततना॥ कुरसी योधन हीदि षसब सता॥ स
ननार धरम हारा नच लाई॥ अति नाती योधे रण पाई॥ १९॥ प्राणत जे रण पगन हरा

ना॥ सिरहरूपमहिमसतपरमाना॥ तुमीसगालकेउयुधुनदिघाने॥ नाकेगोधावलीर
ताने॥२०॥ नारयुद्धमयेवाननसहे॥ मनउरपतिमंहिपगअञागेहे॥ गंधर्वसोतुमरी
मातना॥ ऊहिऊहिनाचतीपरहैसाना॥२१॥ उचतनेहिधनुषकोसरतज॥ परोमातके
संगमिदंगमज॥ धत्रीयानसन्मुखउचतपुन॥ हमहेधत्रीकरेधनुषधुन॥ हेकर्ज
नहमतेहिपितजाने॥ सदेवचननतीयतीधमहाने॥२२॥ जागेहमनेसदेनजावे॥ पि
तापुत्रनातेमिरजावे॥ हमराधीतुमरीवडुआई॥ तुमजानेमिलयेआसंदिघाई॥२३॥
मोरमातयोशीलरूपारे॥ तिहिलधनलावोआतिमारे॥ दरघोमानदेघतहमरासभ॥
तुमरीमतलघुलघपाईसभव॥२४॥ योपुत्रमेहमकोसेजानता॥ तेहिवडुाईनेतुनठान
ता॥ युद्धपरतयेवमवहमारे॥ प्रीधकरनवलतेजअपारे॥२५॥ हमनमलेपेतुमहीभ
ले॥ मिलेनमेयोहेअनजूले॥ रिसकतकुपतरिदेवलभारे॥ अपुनसेनसीडार
दिघारे॥२६॥ आज्ञाकरीवव्रुवाहनवर॥ तुमससमरीनजानिजचलहेघट॥ नजविलव
जावेनरहावे॥ मननमोहितकोनधरावे॥२७॥ पुनयोधनकोआज्ञादीने॥ संजम
साजुसाजोपरवीने॥ अस्वकोलेजावोपुरमाही॥ देखोमेसोकोमकनाही॥२८॥ मं
त्रीमोहिसमतवलबाना॥ इनसमकोरतुकरेमहाना॥ मोकोकैसेसकोचदिघा
ई॥ मुऊसन्मुखयुधधारसकाई॥२९॥ वव्रुवाहनकीआज्ञापाये॥ रणतेवाजेसक
लवजाये॥ धुंदमसंखवडेधुनवाजे॥ जोमुखमेरमम अञ्जनिवाजे॥३०॥ तीनसे
कोरगजवरउनमाते॥ चुणइककोरजिनकेवलअञाते॥ जिहूसमानगजाहिमी
मपवे॥ इकगजभीचहीतास्वरूपवे॥३१॥ सातकोररथधछअतिभारी॥ तिनके
अस्वकीशोभअपारी॥ तीसकोरसरस्वअसगारा॥ साठकोरपायकवलभारा॥३२॥
संग्रामप्रवीनसभीभुजवलअति॥ अस्वअसाअधरचलेतेजमत॥ सिंघसार
गरजतसमसरे॥ पुरकोतजवरगयेवलमरे॥३३॥ अर्जुनकीसेनासेकहेव

चौ॥ जो हरि सिंधु मथ्यौ जिन जिते उतनुमको मसच्यौ॥ कहा करै रन पछा जानौ नाहीं॥ जा तर तुम ए हते क्षिन मा
हीं॥ ३५॥ चौपई॥ क्रोध परख वृत्रवाहन कराए॥ रथ मरूढ भये धनि तानि चवत करर भर पल की जो
तरी वितेजसमाने॥ मानो भासन भुम चलत दिखाने॥ ३६॥ जहरीर वसरपति इरषपा
ई॥ तासमान निज रथ चलवाई॥ रथ दौरा इन्द्र जैतानि कटायो॥ क्रोध तमुरख तेव
च उगरायो॥ ३७॥ तुमसुहि समात कोट दूष चलायो॥ निज गांडीव पर तुम गर वायो॥ नि
ह गांडीव पर तुम गर वायो॥ कैसे समाना निज्जमन ता वायो॥ ३८॥ मोहे तोह संग्राम
व नेकग्रव॥ हम ए हे तुम सैन इक ठस म॥ देषो विहिव चहो हम रे वस्ता॥ हतो तुके नत
जैसे पलम॥ इकठा नीतुम से नम हायो॥ देषत हो नुहि कैान छुडाई॥ हे सधु
जो दियो सैन सुनाई॥ पार्थ सो भाषत ठाठाई॥ ४०॥ हे सधु जो वाच॥ ऊत जे नत
मम तन्नी कन ली ने॥ वृत्रवाहनन से निज करी ने॥ इनग मीहम मवठ कडाई॥
म्हाई मिस्यो गारकं चरपाई॥ ४१॥ यांते अवतु न भयो न कोई॥ तुम या कीअ तला
जा सोई॥ को पधारे कृष्ण इपरेरया॥ कैनसभारे याके वलपूया॥ ४२॥ हम की ये याव
ले पधा नै॥ पुन तुमसे नके वल जै पजा नै॥ हरि हरि दाकरे हमा स॥ जीवत मर्हि
दे ई हवारी॥ ४४॥ इति श्री महाभारते पुराते अश्वमेध पर्वे [illegible] हंसध्वज [illegible] चिंता
व त [illegible] ध्याय॥ [illegible]॥ जैनो वाच॥ दोहरा॥ तुम उर प तरो या हि तेरम
भै उभनि हारा॥ दे सोउ कै से कैरोर भुमसो व लधार॥ [illegible] न शाल्ला वच॥ चो
ई॥ [illegible] पुष मदैर कृष्ण शाल्ला॥ भ पोस न मुरख धरते उ विशाला॥ वृत्रवाहन
पर वान चलायो॥ मानो सो वत सिंह जगायो॥ [illegible] रख तपरदी से सम भये तन॥
वृत्रवाहन सो सर पर हारे॥ [illegible] शाल्लम [illegible] पुन्कृष्ण शाल वृत्रवाह
प [illegible] सर [illegible] वाने वलभारे॥ वृत्रवाहन पर
धनषषहारे॥ दुहू के वानै से नादोउ॥ क्षित भये विन [illegible] ठोन कोई॥ ४५॥

रकतरंगी से कर मरे ते तन॥ रकत प्रवाह चले तव भूमर तन॥ दस्सो दिसा सरहीं दुगपर ई॥
सो रेण रन भमन्नी दखरही॥५॥ चमत्कार कौतक देखनहारे॥ इन्द्रके वल दिख भये विसस
मारे॥ वभ्रुवाहन सर चारत जाने॥ अरर ष चारे अस्त्र हरताने॥६॥ सारथ मारधु
३ जा कट डारे॥ अन्नशाल की ये वान प्रहारे॥ वभ्रुवाहन के तन जाइ लागे॥ कोप वीर
दस्स सर तव त्याडे॥ तव अन्नशाल मूरछा भयो॥ पुन सुध धार दौर वलुलयो॥७॥
सरपर सार कर तअन्नुशाल॥ वभ्रुवाहन दिख कुपो विशाल॥ वान प्रहार अर
केर पुनस्सधुज॥ काट दिया ये ततछिन वलभुज॥८॥ कोपदा तअन्नशाल ग
दा गहि॥ परहर कसी वभ्रुवाहन पर॥ देख वीर कुप वान प्रहारे॥ कर की गदा काट
भूम डारे॥ वहु सर तज पुन वोध हरे तिह॥ अन्नशाल धरन पर परो नमुर्छा ह
ह॥९॥ दोहरा॥ अन्नुशाल ऊर पर दमन्न दिख हरिसुत तेज अपार॥ दस सर छाडे
कोप धर अनर की ऊर निहार॥१०॥ चौपई॥ पार्थ कुप सुत इकु सहस सर॥ हरि
सुत ऊर देख की ये परहर॥ सुधवुध सभ हरिसुत की हरे॥ अर्जुन पर दौरयो व
ल भरे॥११॥ अर्जुन की सेना पर चाना॥ परहरसा वलवर्ष समाना॥ वहु घाये वहु घ
मपुर पठे॥ घने धीर तज रण ते नठे॥१२॥ हरिसुत सर निज तन्न ते काढे॥ पुन अर्जुन
न्मरव भयो रिस वाढे॥ सार की वर्षा वडु रण कीने॥ वहु ग अस्त्र पार करने दीने॥
१३॥ वभ्रुवाहन की सैन धीर तज॥ हरिसुत वलु दिख रण तज गये भज॥ चलेभ
मर णरचत प्रवाह॥ घोड अन्नी घो चित न धरे उमाह॥१४॥ अर्जुन केतुं ढेरे मरव मोघ
रा॥ मनन्न सुरना इव जो वेहर घर॥ चिलक चील च्चमते उनराही॥ कर कर मासु नीद
ने होघाही॥१५॥ दोउ सैन अर्जुन वि हस वल भई॥ जीवन अस्सास सभे तज रदई॥ वडुत
हरन हरिसुत वलु देखे॥ मन मो कोप भयो निरशोधे॥१६॥ सर वल हरिसुत कारघु

२५२ तेरयो॥भयोपहातपरमरवनहीमेरयो॥पार्थीदिघरघऊवरनगायो॥पहूंचवीर
केलीयोचउयो॥१३॥तेवलीकरयोहेभुनरण॥रघुपुनऊवरमंगादीयोगर्जे
न॥तेभीकरयोवज्रवाहनोधन॥ऊजेनऊवरपडयोहेसवंदन॥१४॥इसी
प्रकारहीसरथकारे॥वज्रवाहनभारेवलठोरे॥हरिसुतऊसेतारिसधरणमाहे
ऊरपरहारपरोवलवाहो॥१५॥हरिसुतकेरथहीनदिषायो॥रथतजदीनोजा
नमहायो॥रवडगगदायुधुकेरपुसपर॥केनरटेदेउसूरेवलभर॥१६॥घने
येधदेउरणहतुकीने॥कंसतवज्रवाहनवलुलीने॥हरिसुतकेतनगदालगाई
कीयोमरछागाधगवाई॥१७॥हरिसुतकेमरछरणदेषे॥रणतेलेगयोजान
वशेषे॥नगमेहरिसुतभयोसचेतज॥सारथसोमुखवचनकहेतव॥१८
देहरा॥पुनमहिरथपुहालेचलेजहांमहिऊरवलभार॥महरोविनारोमन
रणमामधर्मवीचार॥१९॥चडूरथपुद्दहूकीयेरणमाहो॥ऊहीपरतनहीवा॥
देहीपरेरथचऊजेउनिरघसभीरिसमात॥२०॥चौपई॥हरिसुतरथते
वदभुजावल॥ऊरकेगहिरथुतेडारे॥तस॥वज्रवाहनउपहरिसुतकोगहि
भुमसोपरऊरोमजेवलीतिहि॥२१॥परदुमउरताहगहायो॥भुमपरडारयो
तेजमहायो॥वज्रवाहनउदीवलमनठाने॥हरिसुतकेगहिभुमपरठाने॥२२
॥मरछभयोभनरणहरिसुत॥पुनसुधपायसरभयोहरिसुत॥गदापु
हारश्रवपरकीने॥वज्रवाहनशिषरटीपुकीने॥२३॥पुनानिउगदापुहारकी
नवल॥हरिसुतभोरउरतस॥नृमलयुद्धदेउकीयेपरसपर॥केन
हरेभयोधिततनदेउवर॥२४॥दूहूकेतनकोसोधितहायो॥धितोविनठोरनहीं
सकेयो॥देहूसेनाघाइलवहूदेष॥चापिरेरवधवशेष॥योगीनीथापर

धरह्यो॥भरभररधरज्ञ्चौंहितमायो॥वभ्रवाहनपरद्रुम्रवशेषे॥युद्धकीयेअर्जुन
गनसमदेषे॥३॥इतिश्रीमहाभारतेपुराणेअश्वमेधपर्वणिप्रद्युम्नबभ्रुवाहनयु
धेवतीसमोध्यायः॥३०॥वैशंपायनोवाच॥दोहरा॥इतीउंरमंत्रीअनमतपार्थ
सैन्यदिखार॥जाइपरानाअर्जुनिवलीभयेसंग्रामनजपार॥१॥चौपई॥त्रिपवेत
रज्ञादितासोलरहीरण॥कर्णजनाहकीयोनिवलयुद्धघण॥वभ्रवाहनदिषमंत्री
उरे॥हरिसुतकोतजतायोवलवोरे॥अर्जुनकीवृषसेनसंघारी॥समरेधी
धंदीनेटारी॥समरेवानकारभमहारे॥निजसेनाकीरथसंभारे॥४॥वभ्रुवा
हनकोदिखनेजेअर्जुनि॥जिहिलागेतेजुगिरेरणस्सता॥ताअर्जुनसलगतदोउदो
हे॥चढ्यउसरदससहसपायपरपोवे॥५॥वहुघायेनिहस्सुधभुनपवे॥जसेते
जवीरररणधरे॥होइवकेअर्जुनशालहंससधुज॥घोवनाशस्रातलवलवडभुज॥६॥
प्रांवधनीलधुजकासुतपितसण॥अरेरथनेनपर्कोधधारघण॥सन्मुख
देरभयेभारीवला॥अतिवलयुद्धपरेरणवेघला॥७॥वभ्रुवाहनवहुतेजपूरे
रथ्युत॥सवकोनिवलोवेभुजवलसता॥रथशश्रुसमरोरणदीने॥निरशश्र
समरेरथवीने॥८॥ठीहरनसरेदुरदीहाभोगा॥वहुमरथवहुतायेरणसा
गे॥अर्जुनपरअग्निपरघोतेजघन॥वभ्रुवाहनवहुतेजरणतन॥९॥ताजर
थअर्जुनीनेवहुघात॥पायकीकियाअहीयेवात॥पीतवदनसमयोधेमये
होनिसमानमलयुधजये॥१०॥स्वानिसिकालउदरमासेभरमर्दसतवूदेत
देरतरणधरभरमरथपररधरकेघोजन॥पिरहीनाम्वतरणवधधारे॥
११॥अैसेयुद्धिसेनादिखाने॥सुरनमनरभुमभयेविसनाने॥वहुनपवां
धनजरथदीने॥जिनभारीतेजप्रवीने॥१२॥अर्जुनकेसींदिखांवेताने॥

२५३ सब बुध मल पये बिसमाने ॥ भीषम द्रोण करण केयुधवर ॥ द्रोणे बिसार बुधयुध
ष्ठिर ॥ राग ॥ १७ ॥ दोहरा ॥ पार्थ कृपा चितवन चितत गांडीव धनुष धर हाथ ॥ समु
रक्षाया बीर के बहु योधेस जैसाथ ॥ १८ ॥ सत सेनांघ्रे पुगट रण सौब धाम
हे बीर महतु कैसे मम योधन मते फल लेहु गंभीर ॥ १९ ॥ चौपई ॥ ये तुम मुर
से नासे तो के ॥ ते मे तुम सो करे पुत्री के ॥ बभ्रुवाहन को बाच ॥ इह बिचार घरि
देह मारे मनु मेंदिया जू न जब लम भी रे ॥ २० ॥ देखो रिदि बिचार के साई ॥ को सि
ज्ञान सिर हवे हो ई ॥ अर्जुन बाच ॥ कोन को न से युध तुम कीने ॥ याप र
जरवा तो परवीने ॥ २१ ॥ बभ्रुवाहन बाच ॥ हम राघो पीते महि बडाई ॥ तुम रे मन
कछु मोर बसाई ॥ निर्दूषन रमनी मह तारी ॥ तहि लछन दीनो निमारी ॥ २२
पुन तुम मो हन छोड जु सिंगाला ॥ तजि के मैस दल पाई विशाला ॥ सम के म
हिम हि की यो विलाना ॥ निर्दूषन की नो लघु काजा ॥ २३ ॥ तातें तब हम अगि नो जै उ
तना ॥ ताप लुतो हि दिया उभम रना ॥ हम जान त तुम बुद्धि बिशेषी ॥ पेतो हि म
न लघु नेल घु देषी ॥ २४ ॥ सिंगाल सुतोहि मला दिष राउ ॥ तुम रे मन ते गर्व मि
टाऊ ॥ तोहे बभ्रुवाहन चित्रांगद के सुता ॥ जो तुम को रण मुर छावो तता ॥ २५ ॥
दोहरा ॥ तीवो तेवा निकरो करे रा जतु मतेहे हो ॥ कहने कौ गय नाह रव छुपु
र दिखावो तो हि ॥ २६ ॥ बभ्रुवाहनो वाच ॥ कहबे लोजन बसा डार दिराघ तदे
तो हमा न ॥ निरखे चे हम समे युद्ध धर है वो जोरण हा न ॥ २७ ॥ चौपई ॥ यद्यपि
तुम मम ही हला जउ तारी ॥ तो हि बडाई हम नीनि वारी ॥ जब लो तुम शस्त्र न
पुहारो ॥ तब लो हम रे छिमा विचारो ॥ २८ ॥ शस्त्र पुहारो छिमा न मेरे ॥
सकोचा ल सकायो तुहि नेरे ॥ बभ्रुवाहन के बैन सुनाये ॥ पार्थ जलत नरस लामे

नायो॥२५॥ लाज धरत मरव ते पुत्र सते॥ सुत संग्राम दिषाइ मन हाते॥ निरहचे लव हो निज
जीय माही॥ विजै तुमारी संसा नाही॥२६॥ पय हरि डधाइ सो मन फोरे॥ मरु तुरु युद्ध पर
रण भारे॥ हम तुम को हित संग्राम जानी नो॥ करो युद्ध मे पसो पर वीनो॥२७॥ तुम को ति बुधे देहि
त्रिभुवन पति॥ हम को जीतो रण भूमि मसत॥ वब्रुवाहन सन कहे अर्जुन वचना॥२
पुत जजा पग लागा स्वचना॥ पितके पग परसी सुध राये॥ जोर हाथ मुख ते उच राये
२८॥ यो कैसे हो तेहि मन जाई॥ काल तुमारी मत वौराई॥ शस्त्र पहर रहो विलमु मत
कीने॥ विज वचनै फल सोई लीजै॥२९॥ अर्जुनोवाच॥ हे सिसु कौर रण तमत ठर
हे॥ शस्त्र संभार मोहि सो लरहै॥ धापी दई हि ते सुत को पति॥ विजै तुमार धको नि ह
चेचित॥३०॥ वब्रुवाहन उठ शस्त्र सुसंभारे॥ तब अर्जुन रस वान प्रहारे॥ वब्रु रपोच स
रउठे सुतपर॥ इति कुमार सर कीये रिसपरहर॥३१॥ सुत के वान पित मगे उराये॥
दिष कुमारी रिसकै और चलाये॥ पर सपर सपरहरै न पाये॥३२॥ करे दोउ मग मे निरिखा
रे॥३३॥ सुत के पितनु पितनु के सुत काटे॥ वहु हके युद्ध परे वहु वारे॥ चिर लगाई हरि विध मये सं
ग्रमा॥ पिता पुत्र दोउ दूरगा॥ कृभ रामा॥३४॥ पुरुष परवान दोउ हेरे प्रवीने॥ दोउ कुजाति
चतुरन्नाहि कै चहूं हीने॥ दोनो है वउ वली कपोरे॥ निन जीउ पमउने तनिहारे॥३५॥ जन
मेजयोवाच॥ दोहरा॥ च थि वमोर मनन सुत पित युद्ध परान्न॥ कृष्णा डेमी का दूनप
तईहिप स्कारी दषान॥३६॥ वैशंपायनोवाच॥ चौपई॥ त्रेतायुग ोतर राम दसरथसु
तं॥ सोई ये संग्राम सुतन सो वरदुत॥ प्रभु कूसराम कहै वतार॥ तीन लोक जाप्य जान
नहा॥ना॥३७॥ कैजै ने जो वधु देम सुन धरहै॥ श्रीराम कथा सुन संशय निवरहै॥ जन्मेज
योवाच॥ कैहि विध राम सुतन सो लरे॥ को हस्म नावोर सांधे॥३८॥ इति श्री महाभारथे
पुमोकस्वमेधपर्वणे तेतीसमोध्याय॥३३॥ वैशंपायनोवाच॥ दोहरा॥ सुन जन्मेजप त
धरध्यानी दुउ जैसे दसरथ नंद॥ पुत्र रण सो कीये युद्ध वहु रण की मुनमस्तरवसंद्धा॥१॥

२५४ चौपई॥ रामायण की कथा पुनीता॥ सो तुम सकल सुनो सुभ चीता॥ जब रघुपत रावण को
मारे॥ इंद्रजीत कुंभकरन संघारे॥ राक्षस सकल जीत जंग तत पाये॥ फिर अवधपुरी सीता
को ल्याये॥ सीता सहत अयुध्या आये॥ लछमन भ्राता संग सुहाये॥३॥ भिभीखण राज्य लं
क दिये॥ ते भी राक्षस संग बहु लीने॥ कपपति सुग्रीव अंगद हनूमाना॥ सीछरा
ज जामवंत महाना॥४॥ बहु कृत धार संग सुभ आये॥ रघुपति जिह कौ दिव साथे॥ व
सिष्ट आदि रिषि दिज हरखाये॥ रघपति सभ के पग लपटाये॥५॥ भरत शत्रुघन दोर
मिलत मन॥ सी सु धार दरे रघुपति चरनन॥ श्री रामदया निज अंक सेल गाये॥ विरह
ताप हितु धार मिराये॥६॥ दोहरा॥ प्रथम मात केकई पग लागे रघुपति राइ॥ अंक मे
लाइ लीये हेतु बहु सुख चित सुख उचराइ॥७॥ केकई वाच॥ यद्यपि हम कीनी कुमेव
तु मज्ञान महान॥ छमा करो सभ पाप मुऊ निज माता परिचान॥८॥ चामर छंद॥
रामो वाच॥ हे मात तुमहि उपकार की उपमा कही न जाइ॥ या ते रत तल अपती से आस
र ते जस हाइ॥ पुन सीय लछमन लागे पग केकई के धाइ॥ मात लगाय रही हेत
सो हरे हरख न समाइ॥९॥ पुन राम कोसल्या पग दोउ लागे निज कर जोर॥ दिव मा
ता हरख अपार मन ही न हरख धमंड प्रीत उर॥ सुध ही न रह इक सी गिरी सभ नार नर
थिक माना ला जीवने कै आस मतन हेरे हरि चित्र समान॥१०॥ चिरकाल पाछे सभ ध
र श्री राम को लख अंक॥ सरबसी सम चूतन तरह कै भांति जिउ पाइ धन जनु रंक॥ रघुवीर
देखी मात अस पुनी खीन बसन मलीन॥ ऊच सीस जो मगन तुलसम भये जरा से रह
अधीन॥११॥ दिख कमल सम मुख रघुवीर को माता न हरख समाइ॥ सस सम नवदन की
ज्योत दीसे सी पार मंदिर धाइ॥ जिउ कमल मुरझाना जल दिख विसमसी छिन मार
ए तउ राम लछमन सीय को दिख हरख मावत नाहि॥१२॥ आस रूप हरख श्री राम मुख
पद्म पेख मानंद॥ हित तर पद रघुवीर के मात के सुख कंद॥ मातो वाच॥ रावण से

स्रेवेस जीत रणतु मम भजन बल हनु की न्या॥ उहा उहा छित भई देहि मके दिखाइ गंधी न॥१
३॥ वसि सेवा॥ कौशल्या राम न जानक सकल हते छिन खाइ॥ यास मान जो क
सु रमा तीन भवन मो न्या ह्रा॥१४॥ जो उचित नाम न त धरो मन न याते हर्षर हाइ॥ जो अ
नदी से मोह जगाया॥ चन खेद उपाइ॥१५॥ चौपई॥ पुनि श्री राम भरत लछमन
वर॥ त्वो यो शत्रु घन भा सी अरर हरा॥ बैठो सभा सिंगार नहा न्यो॥ राज सिंघासन
राम सुहाने॥१६॥ राम राज न्या इक्को नीता॥ सम जन सुखी वसे प्रभ सीता॥ अवज
सिंह इक ठे पीवे जल॥ मजारम खव तोन्या हर रही कला॥१७॥ छो ती विर छकस दिफलु
देवे॥ पिता जा ना तके स तहि तसे वे॥ प्रीतभाउ सभ मो अति घने॥ ईरख पर दुख को
ऊ न गिने॥१८॥ सीया राम प्रसपर वहु नेहा॥ करत राज सुख भोग सनेहा॥ सीता
गरव तभई दिखाये॥ सभ कोरि देह ष्ठ उपजाये॥१९॥ वसिष्ट राम सो वचन कहे तब
सीता को सुत उपजावे जब॥ चारो दिस को न्यप ईहा जो वे॥ तु मेरे मंगल चार सहा
वे॥२०॥ तिन को हित सभ मख धूइ कठोवे॥ सभैं ता खब उ झाने दपावे॥ तन को है तवा
म वड उस्यो॥ कंचन रच शोभ वडु भयो॥२१॥ रघुपत रिषि के वैन सुनाये॥ हरखत
आज्ञा कीन न तदा ये॥ जिउ रिषि कहे तिवे सभ करहे॥ बैकुं विस्मय मो न्ही हुधर
हे॥२२॥ देख ठेर सभ मंदर सवा रयो॥ योयन ठेठ प्रमान उचा रयो॥ चकुला लांबा
एक समाना॥ कंचन रत न रचो विधना ना॥२३॥ मण न गरव चत र चौ सिंघा
सन॥ यो पर वैठे राम कमल नाशन॥ जानी चतु रपंड तरि षिमुनि वर॥ देखन आवे
मन सुन हित धर॥ इक दिन लछमन हर्ष उपावे॥ रघुवर सो कहा कहे सुवचने॥
२४॥ दोहरा॥ विस्वामित्र अरु जनक न्यप राम मिलन को हेत॥ आये हो री द ह
केश नित लछमन लान प्रभ मचे ता॥२५॥ चौपई॥ पा छोरे तिन्हों के भा री हेतु दिखाइ॥ सो सीस

घासन जेमेन गति न पर दीये बहाइ ॥२६॥ सुन सुन मम पसकल ति हुआ ये ॥ जनवध पु
री चहुं मंगल गाये ॥ कुल की रत कर ने लागे तव ॥ वसिष्ट परोहत तै वे ठ सत्वे मिलि वित ॥२७
रघुवे कुलमें जैसी रीत ॥ प्रथम गर्भ तीय रो इस कुचीत ॥ भरत ता सहत सिंहासन
वी है वे ॥ इ कवे ठे बेठे सुन ले हरखाने वे ॥ अस्या दिज रिषि मुनि कैसो कुल मो बहु ये ॥ मि
ले वे वे तहा हरखु धरे ते ॥ सभै ता घर ले हि असी सा ॥२८॥ मन लाल चित हर रघुजनी
स्या ॥२९॥ राम सीया दो ऊ के मन ॥ भूषन वसन सुगंध तठाने ॥ एकौ सिंघास
न पर वैठाये ॥ रिमस सजोरी दोउ सुहाये ॥३०॥ मल पनी हत न गाजे रैसिं घासन ॥
तिन पर सोहे शत्रु विनाशन ॥ रिषि दिज तप पीउच इस्थाने ॥ सिंघासन बहु शो
भे दिखाने ॥३१॥ बहु धुन वेद पाठ दिज करही ॥ बदी पन नाना विध करही ॥ धीरधा
उघ तहा मकरत आति ॥ तोष्यो अग्नि देव मन नह ठंता ॥३२॥ पर जाते जबड उठे जगत
पति ॥ जै जै कार भार हो ये ते ता ॥ मल पन चो ग जे रघुसु रव पाल्या ॥ दीये राम मन मुदि
तीव शाल ॥३३॥ रिषि दिज तप नीतो घु सम भाखी ने ॥ मन वांछत फल उन्ह मो लीने ॥
निरत राजु नहा हो तन अपारे ॥ सभ वे रचि न मा वत पारे ॥३४॥ जन कन मपदि घरा मन
सीया हित अंक रिति ले कर्ति हो दो उ रिष तंचित ॥ रंछो राजे सम माजे कप न सम ॥ रामे दी
न दुहि नृप घर तव ॥३५॥ नि जरि रिषि विस्वामित्र संग हो इ ॥ वन जात धार तमये सोई ॥ दो
जन बहु भंत नी हरि दोही ॥ नि जनि जन के धर्म सम सो ही ॥३६॥ इति श्री महाभारते तेषु
जेमिनी अश्वमेध पर्वे चौतीसमो ध्याय: ॥३४॥ वैशंपायनोवाच ॥ दोहरा ॥ इ कौ द
नै वैठे हर खित सीया राम सुख धाम ॥ रामचंद्र जानकी कहि ति जह ठवध धाम ॥
चौपई ॥ गर्भ समै श्रिया इ छ नु मारी ॥ सो सोप्र गट रो नत कारी ॥ गासीने वाचा तोहि
अंगन मुक्ति मारी ॥ सभ कर धुपर ऊन कछु नाही ॥ घान पान पहर स नकी चा

दो॥ तेसभ परेरिदे जउ माहा॥ ३॥ पैद कुचा हुजु नरिदे हमारे॥ सुनो जगत पीत जेहो उ
चारे॥ जंगात रीरोषि तपसी तप वरा॥ साधत है हरि ध्यान रिदे धरा॥ ५॥ तिन्ह की चीयरि
तेसे चाकरहीं॥ बन फल खाइ हरष रिदि धरहीं॥ सो मन न्चाह तिनो जो देखे॥ उनकी पू
जा करे ब सेखे॥ ६॥ रामे सो वाचा॥ बर्ष चतुर्दस नू बन रहहीं॥ जहं त्रिप्रेता हम मन न हीं
पैये द ध्याइ हीं तु मोरे॥ जा तेवा वन जीय हूं छंज पाते॥ ८॥ पाइ न रामपिरे पुर माहीं॥
सभ सुखदे तद्धि पाव त न्जाहीं॥ देखो सन्नो वा तसम भजे हे॥ निर्श दिन पुर सुख ले ते र
हे॥ ७॥ इक पाइ जसो राम जेहे तव॥ मेसो व हे॥ वा तस न्वी सम॥ पुर के लाक नो
इसे भांति या भाषे॥ पसु जप यस हम पर रिनु या राखे॥ ८॥ जिउ कीति उ मो सो सतभा
षे॥ इम नेत्र छछ पाइन राषे॥ कहे पपकतु मरे यसु भारे॥ पुरा रावे सम हितन चितधा
रे॥ कहे श्री राम स काम जे कीने॥ जवर सि सी स प्रेम हीन्ही ने॥ रावन से जिन व
लीसिंघारे॥ सुर मुनि निर रिषि के कष्ट निवारे॥ १०॥ इकु पाइ कता सो च उरे ता॥ पछेरा
म इकांत सचे ना॥ देरा॥ पुरजन ने जे से मोहि के यस कुप यस प्रगटाइ॥ तेस
म हम के व इप्रगार के छ नरे छ पाइ॥ ११॥ कुरु भयरा बोला हमन्नी जिउकी
ति उव हो मे॥ हिया या हीते हर्ष तर हे॥ सान्च वा तक हो तो हिय रा न्चो पई॥ सुन नराम
के बचन सु पाइ॥ हम भाषे है रघुकुल न्जाइ॥ तुम हे सकल जगत जाघं उ
ना॥ तीन भवन जो ज्ञ पद दीव हे जना॥ १२॥ पाप सरूपा दुष्ट तुम कर हे॥ जनम जन
म केति सनी घपर हे॥ हम तुम री वरु प्राय सुपाये॥ भली बुद्धि सभ सुन्नी मन दी
ये॥ १४॥ कस्ना जु करु चर्य सन्नी इकु वाता॥ तिन न कही तुम से जेहे सु साता॥ या हिके ह
ने ल जु भक्ति पावे॥ तुम सो भाषत चित नु सक चावे॥ १५॥ रामो वाचा॥ तुमको मोहि
सप्न कहा राता॥ जातर ते हिके रो छित घाता॥ जिउ कीति उ डाय भाषो मो सो॥ सम

२५६ सुनबोध न धावै तो मैं॥१६॥ येन करी तुहि प्रा ए निकारे॥ जाति चपरी तो को बीचारे॥
पायको बाचा॥ सुन श्री राम कमल दल लोचन॥ त्रिभुवन के भव दल भ्रम मोचन
१७॥ कछ जुग धर्म्म चर्य हम देखी॥ जिहि के कमो वे सुकृत्य विशेखी॥ घोबी दुकुनि जे वी
त्रीय परस्तु परकरा॥ लखु कुटीला तन सो माटी पर॥१८॥ उठ तई नारी पता केजरा॥
चार पांच दिन बीते ते हम॥ ताके पिता चित न जान बीचारे॥ नारि सोई जो पति हित कौरे
१९॥ पति त्रिया ज्ञा विनु कहून जावे॥ सोई करे जो पति के भावे॥ हम री सुता नीकन
ही कीने॥ पति आज्ञा बिन हम भई अधीने॥२०॥ जब कुमार तब पित के बन रही॥ व्याही
पीति बिनु शोभ न तान रही॥ उच न सुता को तहा ले जावो॥ पति सो या के पाप धर्म्मा
वो॥२१॥ निज घर नहि त्रिय पा पुल गाई॥ कन्या व्याही पति गेहि सुहाई॥ हम रजु
कस भर्त्तीम लुधो बुलु॥ आपु के अध काहे न ही वो वे॥२२॥ इहि वी चार भात ड्रक
गेहै॥ गयो जम्मा त के गेहि मरहाने॥ सुत सी सुपति पउ गेहि नि वा ये॥ सुसर
जमा ता सो पुकारा ये॥२३॥ सुसरी बाचा॥ याको आपुनी दासी जाने॥ पुसपर
ने हम हम सरदाने॥ पतिकी त्रीय मो ने हम यो जवा॥ दह को उप जावे बहुत
खुतना॥२४॥ याके पाप पछि मास भुकी जे॥ निज घर हो सुर दव जगत यसु लीजे॥
सुसर वचन सुनकुपो जमा ता॥ दातक अधरक रे कुपका ता॥२५॥ जारी
देत पार कछु नाही॥ कोपक रे मुख ले पुकारा ही॥ इहि कुनार रहे मेरे कम नाही॥
हम गेह आ ना भंडारा ही॥२६॥ दोहरा॥ जई सुकाई पुन याहि को नाहर राखे
जाहि द्यान॥ मोहि न जा नो राम सम मसी या बसाई धाम॥२७॥ तंभ नारसी य
असुर जाहि लेका राखी जाइ॥ भुजा बले हत तर्भ हको ल्या ये त्रीय मक ताइ॥
२८॥ चौपई॥ जाई व हु सर्गा स्वान बसाई॥ वीर व जन पुइहि उने सुहाई॥

उनकीनिंदाकोउकरनसकोवे॥हमकोसमकोलाछनलावे॥२८॥हमरे
वचनसाचहैएह॥गईनराखोपुनानिजगेह॥रजुरकैवेनहमसुनहेरघप
त॥मोमनकोपवहेउअतितेउअति॥३०॥जैसेसबुपमसरिदेवसाने॥याकोहम
नाहधारसकाने॥तवतासोहमकीनपुकारे॥सुनोनीचतुमाकयापुगटा
रे॥३१॥जबतेरामममातेतजनमे॥पापकर्मनहीलपावेमनमे॥याकेत्याङनी
तसमसुखी॥कोउजनरहेनातननतेदुखी॥३२॥नीचजाततुमकरअधमकसवी
जन॥रामकथनाहिसुनायेनुहिमन॥निंदकरगेहेताकीनीचे॥लखीयतकअ
ईतुमरीनीचे॥३३॥हेश्रीरामहमइहीसुनाये॥तुमरेचरनकमलदरसा
ये॥तुमरेउरहमनाहकसोयेपछु॥नीचजाततरजुवकहेउसवच॥३४॥
दोहरा॥पाइकवेदेहीवेनसुनरघुपतिचितालीन॥पीतवदनभयेजगत
पतिसुखबिसारसभदीन॥३५॥चोपई॥सकलरैनाचितचितवनकरही॥
वहीविचारनिजमननमोधरही॥पुनाविचारकरहैमननमाही॥जगकेमरव
कोधेनहीजाही॥३६॥लोकोकेअपवादनलीजे॥सीताकोवनमोपठदी
जे॥यद्यपिसीतासमवरनाही॥जगतमाहिदूसरनादिखाही॥३७॥ताहि
तजेमोकोश्रमभारी॥योमुकाोपुानोतपाही॥चिंततरामविचारमहाई॥
सकलरैनादुगनीदनपाई॥३८॥भईप्रभाततबभरतशत्रुघन॥लछमन
सहआयेहरिदरशन॥रामपदौलागेहितगादे॥हाथजोरसनमुखभयेठा
डे॥३९॥चितपूररघुपतिकोदेखे॥प्रसपरभाखेज्ञानुवशेखे॥कआजुरामचि
तचिंतादखावे॥पीतवदनप्रभकोदिखावे॥४०॥मतकोदुःखवगनहमतेमये
पानेरामहरषितजरदये॥सदापुफुलेकमलसमाने॥रामवदनहमकोदुख

ने॥४१॥कोउकवगुनहमराहिषरघुवर॥मननमेचिंताधररहे कानितर॥वहुचि
चारइनपुसपरकीने॥भारीचिंतारिदेमोलीने॥हाथजोरुमरवीचनीसुनाये॥
तीनोहीरपरासीसआनिवाये॥रघुकुलनिलकवेदुजसनेरे॥हमतीनोहैतुम
रेचेरे॥४२॥तुमहोजीवनमरलहमारे॥पितसमानवस्योउजीयारे॥हमस
भेदिषतपुतेजतुमारा॥मननमेधारेहरषअपारा॥४३॥तुमरेराजसवजासमुसु
खी॥वसेसुदितमननकोउनदुखी॥सदाहरषतुमरेमनवसे॥चिंतकोपनहि
देखनसे॥४४॥आजुकमनलमुखनहिकुमलाना॥हमरीदिषपरेवरजाना
कषुनलषेहमतेभयपापा॥भयोयातेतुमकुकेअपमा॥४५॥दोहरा॥येअ
वगुनहमतेभयेदुहुदेहुनपभार॥हमरेतुमरेदाससमदरछैनोहिनिहार॥
४६॥रामोवाच॥तुमरेराहमरेप्राणदाहिहारे तुमरेरछपाल॥तुमरोउरीन
हारहमधारेहर्षविशाल॥४७॥चौपई॥चिंतचिंतवदीहमोरा॥जोहरआ
उकथुनहिंदुखोरा॥रजकवचननश्रीरामसुहाने॥भ्रातनसोसभकीनवषा
ने॥४८॥पुनकहेजउपरासननसहे॥इहिचिंतावडतनमनदहे॥तोते
सीताकोतजदेहु॥जउपरासदुसहनहिलेहु॥४९॥सुनतभ्रातरामके
वचना॥सहनसकेसीयश्रमकीरचना॥भरतोवाच॥हेश्रीरामसर्वसुखु
दायक॥तीननेलावकेदुखश्रमघायक॥५०॥तुहिनाम त्रसीयजेदुखसहे
कोसमर्थताहरननकहे॥उचततोहिपेकरणाकीजे॥नाहिसिउलरेश्रम
लीहदीजे॥५१॥तुमनेहतुकोनोलंकापति॥सीयकोल्यायेतारनिकरत
न॥तुमरेमनवहुरोसमहरा॥सोप्रीथानुमलहोसजाना॥५२॥लछमन
उकपानाहमोउरी॥तमतोशीललयोभ्निरपारी॥रचपतेजनतोहिलगा

ये॥ तुमसीकरलाज्ञा हमसहाये॥४७॥ ये कहि दूषन से वततानन्मा॥ जरवरभस
मेहानताहीं छिन॥ पुनवहुगायमलतनुहगई॥ सीयकी गायपितामहद
ई॥ मनमकाशपुकारउठेतव॥ सीयाश्रीलवकीमाथदेहिसम॥४४॥ इति श्री
महाभारते पुराणेश्वमेधपर्वणि रामायणे पंतीसमोध्यायः॥३५॥ दोहरा॥
ईहप्रकारबहुवचनकरि रघवरस्योभरतजंभीर॥ धीरजकरहुगई राममनवो
स्योलछनवीर॥१॥ चौपई॥ कहेउ राममनसुचवचनहमारे॥ जनकसुतसत
शीलव्रतपारे॥ इनराखी हमरीकुललाजा॥ कोनकरेजगयासमकाजा
पुनिपतनुमसोसिषधारी॥ ते वचनमकितिदीयेविसारी॥ पितकहीयी
येसतन्चितापरा॥ मेरैपितातेनसकपरैवरा॥३॥ सर्गपुरमहवासनहीपा
वे॥ यमकेभारीदेउसहावे॥ यद्यपिहमनुहिविरहिसंतापे॥ तजेपुराणलीये
पापकपनावे॥४॥ सीय शीलमहिपापनिवारे॥ सुरपुरमेसुखभोगेभारे
ताहीवेसतशीलप्रसादा॥ तुमवउआस्वरहतेनिहवादा॥५॥ तातेसीय
कोवडसुखदीजे॥ जिहिविधिहियाकोहर्षतकीजे॥ हेरघुपतिविधिपितुवेच
मोरे॥ देतेहोसीयकोदुखघोरे॥६॥ पुनवचनुरानवनदेवमहेशा॥ नारदादि
विषिसुरपतिशेशा॥ समझकहेहोतुमपेज्ञाये॥ सीयसतकीदईसाषमन
हाये॥७॥ समझकेवचनमदीयेभलाई॥ चाहततेहोसीयातजोमनहाई॥ हरि
कोभयनिजरिदेवसावे॥ कैसोजायहरिरिदेनलावे॥ सीयकेदुखदिष
समुमरजेहे॥ याकादुखभ्रमदिषनसकेहे॥८॥ रामोवाच॥ दोहरा॥ तुम
भाषतहोसांचसभसीयाश्रीलहनजात॥ पैजगाकेउपहासतेसोमन
वासमहंता॥४॥ जिनकेरूपयसजगतमो तेनरमिरतककाज॥ सोयस

२६८ तेजो जीवननातेउ जीवनामाना ॥१०॥ चौपई ॥ मानधा ताहसीं चंदन रेणा ॥
नघसांतननरुपतेजु दिनेशा ॥ जिनके यसहै जगतमझारे ॥ जीवतहीहे
लघोसुचारे ॥११॥ जवलगधरतिहिनाम है तवलगा ॥ कीरतउनकीअर
तेंहेसभजगा ॥ याते जगमेकप यसुहोई ॥ तेकार्यमतकरेहेकोई ॥१२॥
यसकेहेतदेरापुधनधोडे ॥ वनउद्यान सुभ जनमनगाहे ॥ तेजूपसुहे
तसीयाकोतजहे ॥ ताविषोहिनिजकुमुपरसुजहे ॥१३॥ जिउकोङ्ग
पुनीतुचाउतारे ॥ करेदूरनिहचेदुखभारे ॥ तिउसीयत्यागसुमुझतेहो
इ ॥ यामेशंसामेदुनकोई ॥१४॥ सुअमनुठारसीसपरसहीये ॥ जगउ
पहासकठनजगकहीये ॥ याते तुममोहिमतवरजा वो ॥ होनरहोमुझ
हतोदिषावो ॥१५॥ तवलछमननरपरअरमारे ॥ कहेवचनमुखतेपुग
टारे ॥ वकुमाचयहेसीयाकीवाता ॥ जजरून्कसाइसुखकीयेविधाता
३ लछमनेनावाच ॥ दोहरा ॥ बहुकरतेंकामजे तेउदिषजगवरताइ ॥ कु
मतेयसुकुमुमेकुपसुनरपाछेरहिजाइ ॥१६॥ धारघपातिजेतुमकरे
उदिषतिहिसभजगमांहि ॥ इसीप्रकारमनकरेजेहमसाचीप्रगटाह
१७॥ चौपई ॥ नीचजनननरेवेनसुनाये ॥ तिउमलोहेजगसुखदये ॥
निजचीयातजमधामारकरतहे ॥ सभके जीयकेरथहरतहे ॥१८॥
शिषितपसीदिजसुनहीहिवाता ॥ रथेनरोरहजानजीयसाता ॥ श्री
रघनेवाम्चा ॥ हेरघुवरराजनकेराजा ॥ नाहिवनेतुमसोइहिकाजा
१९॥ सीतासमदसरजगनारी ॥ सुवचननसुनीदिठननिदारी ॥ राम
उवाच ॥ सुनोभ्रातसतवचनहमारे ॥ सीयाननरोधाधाममझारे ॥२०॥

तनुधनुधामकुरंचतजाउ॥जगतीहासीसहनसमगाउ॥रामकुपेदिछमरपशत
घन॥गीहनमछेउठगयेविमनमन॥२॥लछमननरहेगरामनिकटारे॥नासेगहे
प्रगटारे॥हेलछमननुमप्रानहमारे॥कहेतोहिगयसाचविचारे॥२२॥हेसीयके
वनमेतजग्रवो॥ऐसदुगकारमुरुकोहतपावे॥करहेविगविलमनहीठाने॥
दुहेतेजानुमनीकेठाने॥२३॥नुमनेहिरुग्रजाकवहूनमेरी॥मेसोप्रीतानिपर
ग्रीतिजोरी॥जोनुमवापेनहीकरसाके॥हमनिजप्रानतजेनुमनाके॥२४॥ल
छमननसुननतमेनधररयो॥उतरप्रीतकछुमरवनहीकयो॥जसरपचल
तवसनतनभीने॥भयोविसमचितजिंचतालीने॥२५॥श्रीरामोवाच॥दोहरा॥
मोनधारिकउरहेनुननहीकछुकवरउपाइ॥केसीयाकोलेजाहूवनकेमुर
हेतोमहाइ॥२६॥रुदनकरतलछमननचल्योरथुलेसीयकेधान॥मगमे
जसरथवेगिरेभयेअपशगनमहान॥२७॥चौपई॥करतउपननरथेले
आये॥सीयाधामपरठाडेभये॥रथतेउतरवीरसीयापजपर॥जाइनिबाये
सीसचितभरा॥२८॥जसरहरतहाथदेउजोरे॥ठाडेभयेचितअतितोरे॥सी
याहेवलछमनकोरूपा॥कहेवीरतुमहदेखचरूपा॥पीतवनेतुमनगनमये॥हदे
तुमाराकहाकितगये॥२९॥लछमनोवाच॥श्रीरघुपतिमोहिग्रजादीने॥
चलोमाततरजंगपुवीने॥सीयाजानीहमकहोथीबाता॥रामरथाकीनी
ग्रीतग्राता॥३०॥पुनभाषतसोहेलछमनवर॥लेजावोमोहिजंगातटपर
लिवनदवोविलमोरिषिनतीयाहिता॥लेजावोतुधभेटदेखिचिता॥३१॥दोहरा
मनलछमननसीयकेवचनउर्धसीसरयोधार॥रुदनकरतदुजपरजलम
खनकहेउचार॥३२॥चौपई॥विवधवसनमिनगनचासंगो॥घकेवसन

२५५ सीतेसीयासंदेसा॥रघुपरउरबसीरघुबीरा॥रघुहाथिउकौशल्यातीरा॥३३॥कै
शल्यासेपराजालाजी॥हाथजोरभावतकरजुराजी॥सीतेतावाचा॥मातायसीमेरे
मनचाह॥कोउदिनजाइरसोवनमाहा॥३४॥उडातटरिछिकीचीपदेखे॥रघु
वसेमनुहारिरदेवशेखे॥रघुपतिरघतकराजाकेने॥तुनभीविदावेराहितुलीने॥
लीछनचवीरहैसंजरमोरे॥दमलालवउजानुवीचारे॥रिषिमुनिनगर
बेदरशदिघा॥३५॥परतुमरेपजासीमुनिवाउ॥३६॥कौशल्यावाचा॥दोहरा॥र
किरजागनमीधर्पाछनतुमतेमहीनजात॥उसशीतउयानवनकैसे
रहकरवुवान॥३७॥उरभरमैनहीवनतहैरघुवेदुहेसीया॥बेरउरपरमान
तिहिदिघकपावेजीय॥३८॥यासीतावाचा॥चोपई॥पातेचितनधरहेमाता॥
दसवकवनराहेसंगनाहितात॥नेसुचितनहीहरदेलीजे॥रघुनरहोइविदाम
हदीजे॥३९॥वछचतुरसचनैवितायो॥रहीरघुराधुसुतजनायो॥तवकौ
शल्याविगतेनीरा॥सीयाविछुरतनहीपावतधीरा॥४०॥तीनपुत्रनारसी
सचरा॥विदाभईमननमीदतेरेनुधरा॥पुनरेवकईसुमित्राकेपग॥विदाभईसी
ताबहुहितलग॥४१॥[illegible]सबनसरघुपरवठाये॥[illegible]रघुनवको
मदा[illegible]वनजरमुखराहीबात॥सीयाचिवरीत्रिभुवनतात॥४२॥सम
रदेचितकीनवरी॥तिरीरतनसीयासभतीयजरी॥रघुरिउकीपतु
नीपदाना॥सवधतसीयमोलेतननहीना॥४३॥दोहरा॥पुरतेतुजवकरा
चलेशवुननीदेदषाना॥वेलेकउपसवनसनमुखजारघपपंछिला
[illegible]॥४४॥सीतावाचा॥चोपई॥चीरवउरूशपानदिषावे॥लछीयतपुनर
मेनमिलावे॥४५॥[illegible]॥४६॥

आधि व्याधि कौ उग्र संतापा॥ रामै लगन सकाड़ आपा॥ राम बलाइ मोह
सम लागे॥ राम रिदे ब उजान्द जागे॥४७॥ इहि विधि बहु बीरज रतमन॥ गं
गा तट पहुंचे सीया लछमन॥ तरवर पुने फले बहु देषे॥ फल सुगंध छाया अ
ति पेषे॥४८॥ तहां बैठ तकी ते इस्नाना॥ पुन गंगा ते गये महाना॥ चो रस घन
बन पहुंचे जाये॥ जहां तरवर की छाइ महाये॥४९॥ अंब कदंब बट बरन की छाया
रवि न परे दुरगते जनहाया॥ फल के भार लता झुकि रहे॥ फूल सगंधे जातन
है कहे॥५०॥ सिंघ बिया घु क्रोध सर्प अनंता॥ अपने जीव छाड़ि फिरे निर्हिंसंता॥ स
बरषि जाल अंरने जो भेसे॥ त्रिजदे रता परही बर बैसे॥५१॥ इति श्री महाभा
रते पुराणे अस्वमेध पर्वणि रामायण सीता बनवास षष्टी समोध्यायः॥ छ॥ दो
हरा॥ सीता दिष बन के हत पुन लछमन सन कर ज्ञान॥ वे से बन हम को आपि
रे उहा के उ रषि न्नीद षान॥१॥ रिषि नासे दुरग न्हि टपरे न्हि दिके उ रषि के
बाल॥ कियानु मम लेप घते देषो न्नी ब संभाला॥२॥ चोपई॥ राम सहत जब बन
हम कजाये॥ आगे चले सीरा मसुहाये॥ तुम पाछे हमको नघलीने॥ जाते ये बन
कोपर कीने॥३॥ तब बहु तपसी रषी दिषाने॥ तिनकी स्त्रीय संजम सुता म्हाने भव
हु स्त्रीय बुल सभार आमले आनि॥ से जाती पत से बहेत सत॥४॥ इहाको दूनो हि
दुस्नन्हि हिरावे॥ होम धम को उनाह उठावे॥ तह म्सुनी पटीयत भारी धुन॥ इ
हाथा बरन मसुनी पत सबननन॥५॥ लछमनोवाच॥ माता जे इस्थान मम
हाये॥ तेदेष जे भाग महाये॥ नप संयुज तपापीने ही जेते॥ तिनकी दुइ परत
रिषि जेते॥ हा॥ बेदो की धुन ते उस्ननावे॥ राम चरन चे उनिकट रहावे॥ अनुम
आपहि बन गहहबर॥ राम चरण ते बिछर पाप हरा॥६॥ तेरिषि दम से दुर गम हा

३००

परही॥ महा पापी जनन्ह में बिचरही॥ ईहि बिधि लछमन भाषत बचना॥ सुदन कीन
समहीर कीर बचना॥ ८॥ दोहरा॥ सदन उर तन्मस यो चलत नगदगद भाषत बैन॥
ये ऽस्या न भोषोम नहि यासों ईहि निरह सुख दैन॥ ४॥ चौपई॥ जगउ पहा मसर
सबे नर रघुपीत॥ बन उधान तुहि पेठा जान समता॥ रमस भीवन तीकर कारया
मो॥ होड क्ष बगा छ ईहि हट तन नता वे॥ १०॥ ईहा धाइ नु मन केपि परजाबो॥ रघुपीत
वे पगपरी सिरनाथो॥ जुह क्षा जा मोरी नहीं जाती॥ यद्यापि हे प्राणन की घाती॥
नु मसत वेती मातर मारी॥ त जजा वेऽन्नस बन भयकारी॥ दुहू पुर मार हमोहि
मनमाही॥ मो सम पापी जनन नहिं घारी॥ १२॥ लछमन बेईह वेनसनाये॥
ऽसी घरन परसीय मरथाये॥ जेसे सर्पकाचे बेलर ही॥ त तोछ नन रभुमपर
जिर परहे॥ १३॥ जेसे गिरही भी तपुरानी॥ जनन चक्र सुतानि उधर ऊरपानी॥
इहे बन लपरे भुमन परजिउ॥ जनन सुता भुमन परदी सीतिउ॥ १४॥ छमन ल
लछी सी पामर गर्दू॥ स्वामसहीन मिरतन सी भंदू॥ लछमन पारदु नकरतन
हि पाये॥ सीय बेनु खपर जनलु छिर कारे॥ १५॥ श्री राम ध्यान मनन माह धराये
बिनी करी हे त्रिभुवन राये॥ ये सम हि नकरी मे बनु हि॥ पुन सब घानु होइ
माता मुहि॥ १६॥ ऐसे भाषत सदुनु चर सकुचि ता॥ तत उधारी दुगदे घो साप
तत॥ १७॥ दोहरा॥ लछमन के देखो बिमनी चंता परउदास॥ जनक सुता
मुख नेन हे मरमर दूमे स्वास॥ १८॥ दासी ते बाचा॥ ऽको देन वहि तु मरामसरा
करते मोहि सस राइ॥ ऽचुई हो दिन मय क्जा न स्रीत जावा हमे न जाइ॥ १९॥ चौ
पई॥ पर्व ले छ छो दूर मरे जाडे॥ मोपर कृपे राम बहु अडे॥ नार मज को दे
सुनची नो॥ मोसे वो र्य निचारा दीनो॥ २०॥ राम कसम लक्ष्मे पजान बरा॥

मलपरेहै मोहि जग भाग वरा॥ मन न वच क्रम हम दोस न कीनै॥ लछुमन लखो चित
कुपे पुरी नै॥२१॥ सो ऊदम की न राम जे भानी॥ न पुनी बुरी मलीन पछानी॥ स
म चरनन निज औ दुग हम मन मेले॥ रामै देष पाप कञ्ज घर ले॥२२॥ हे लछमन न वीर दि
न है वेकव॥ राम चरन मम सीस लेठ तव॥ इकु इकु गन स्त्री राम संभारे॥ मदनु
मरत जिहि कि अनु न पारे॥२३॥ वहुदि न औ उन सभारे वीरा॥ विसर्यो मन चरि छ
ज्ञान सुधीरा॥ ता संग हे इ सम पितु के ठहा॥ स्त्राये थे चित मार सने हा॥२४॥
चहुं दिस सेन पभये इकठाने॥ जनने प्रा क्रम ते जस हाने॥ धनषु उठाइ के
जुन स का यो॥ राम मोहि हित तोर देषायो॥२५॥ धिक प्रीत धर मोह यह है॥
दुख संताप हमारे दाहे॥ मोसे केसे प्रेम वधाये॥ नृप धन को जीय परि देन मा
ये॥२६॥ जव रावण मोहि ले गयो चोरी॥ लेका पति कुंजी तरि देके ठोरी॥ हमरे
विरहे राम ताप वर॥ वन वन दूढत फिरे चित धर॥२७॥ न डर गाना गिरि ढवे
दर माहीं॥ देषत फिरे वडे भ्रम पाहीं॥ मोर नामु ले वार वारे॥ अरत पुकार स
ये मन त धारे॥२८॥ मम हित नमी छूवपन की सेना॥ कीन्ह इकठ रघुपति सुखदे
ना॥ सेतु वाधव डेय तनन कराये॥ दधि मल घले पार सुलाये॥२९॥ सभेत
मारे मानन हमारे॥ महावली रावन संघारे॥ तीन लोक के जीतन हारे॥ देव
रुसमरवे वलपति कमारे॥३०॥ लंक जाइ मुऊ लो मरताये॥ वडे प्रेम सो धाम
(लसमायो॥ सबडी हरि द्विन मुऊ वन न भया नजाँत॥ धाडु चलेत नमी नरदे मनस
न॥३१॥ दोस न राम न ननुज हे लछमनना॥ दोस हमारे बमौं को डाना॥ राम स रत
नुम मोह तजाये॥ कौन तजे हरि जडा सुखदाये॥३२॥ दोहरा॥ अवधपुरी जब
जाहु नुम हे लछमन नवर ज्ञाना॥ सो श सास्नी मन वचे वडे हरि सी मा न स ज्ञान॥
३३

३१ निसचरनन परसीसन्हि धारचढ़ो न मैवेन॥ हननतु मरी दासी दुती सुर्ऊ दिष
पावत चेन॥३४॥ नरदूषन ष्ठाड़ी रवने गरम स्वने च्छन भार॥ ऊरर रघुपति मे
केतज्यो तजोन्ति त्रिभुवन नार॥३५॥ चौपई॥ हे लछमन तुहि निरदे जाने॥
पठो राम तुहि संगम हाने॥ उचत नर रघुपति को ऽहिवाता॥ मोहूनि कास्यो व
उम्हन्केज्ञाता॥३६॥ जिउ रावन को भ्रात वभीषन॥ ऊसी तव ठोर घोर निरदेम
न॥ चूल च्टक के भ्रात तज्यो॥ मिल्यो राम सो सीसन्नि वाये॥३७॥ राम संग
होही घो कुल घात॥ ऊस सुरमरल उपदेश तिनसाता॥ तिउ तुम मनो हत्या ज्यर
जैहे॥ निरहचे तुम भी सुख वुन दिषेहे॥३८॥ बोइ ववूल जंव वाघन बाये॥ विष
हौ घषे त पल उपजाये॥ ज्यो वो वीर रामने नेरे॥ यो तुम मेरे मारगवो हेरे॥३९॥
साको ज्ञा ज्ञामा हररहावे॥ हम रामरणा दिदेल घपावे॥ तुमरी रध्या वेर जग
तपीता॥ म्हवसे पहुच्चो राम निवरसता॥४०॥ जेमे को उवठावि जेवराई॥ तिउ
तुम ज्यो वोहरध धराई॥ राम सहत तुम विजे वरीजे॥ जो न सर जग सो वे सीजे
४१॥ ईहि वह सीया गिरी मुरछाये॥ दूसरी दिशा लछमन गिरपाये॥ दोउ निह
सध होम न पर परे॥ मनु चितेर चित्र लिख धरे॥४२॥ दुहू केडुग ते नीर चला
है॥ अंजन कालवा समा दिषाई॥ पुन दोऊ उठे होऽ सवधाने॥ उभे स्वास लेहि
चिंताने॥४३॥ रवल लछमन ने ऐप्रुके मस्लीने॥ सीपद्म पद परशी चिंतन चित तुभीने॥
उर्धस्वास लजुत मरव वोले॥ हे जननी तुम ज्ञान ऊसे तोले॥४४॥ ज्ञपा करे तुम
पर ज्ञादीसा॥ रध्याधारत रहे जगदीसा॥ यों कच्हे जेते जीय जंतना॥ करे तुमारे रष्षा
भगवंता॥४५॥ जिम हस्स पक्ष ज्ञा देव भय पशुरी॥ तिनसे रध्या होऽ तुमारी॥ सद तुम
रनर पपरचाह हुचलयो॥ सीये होविश हीरदाके लमसयो॥४६॥ करमर सीय

कीउरनिहारे॥इतिसीयलछमनउरदिषारे॥दोनोउरछेमनवहुजोठो॥रिदाक
लमल्योमनजनराजे॥४०॥इतिश्रीमहाभारतेपुराणेजरसमेधपर्वेरामा
यणेसैतीसमोध्यायः॥३७॥वैशंपायनोवाच॥दोहरा॥भयोसद्रिशजवद्रिष्टे
सीयबोलछमनबीर॥होइव्याकुलभगिरीसुधनरहीसरीर॥१॥चौपई॥चिरपा
छेसुधपाइउठानी॥कोऊनदेष्यानिजनिकटानी॥रुदनुकरतजिहपारनपावै॥
कहेसुनेतेअधिकउपजावै॥२॥उदउदमुखतेवचनउचरवत॥नोऽभागनही
कंतधरावत॥ललछोहमनकीयेकिपसवगन॥पातेहमपायेवडभमवन॥३॥
जनकपितासमुराजभरतनी॥वरुतजगतयसभुकतधर्मा॥ताकेन्याकेसेवन
माही॥फेरएकलीसंगकोऊनाही॥४॥रामसापमुरववउदुखसहे॥जिहवरने
सभुतनुमनदेहे॥यादिनतेमुहिब्याहुभयोहै॥तादिनतेसुखुनाहलयोहै॥५॥
पुष्पनलंकनोऽज्ञातदुखपाये॥जिहवरनतहीपरावपाये॥परवसपुदेसराम
नेत्यारी॥संकटसहेअपारतेभारी॥६॥रामधामतुहातेजकसानी॥मम
धारेसुखनहिरुधगनी॥अवजहूछिपतनभईमनमेरे॥रामदासकसभल
पवनेरे॥७॥मुहरदईहसंकटजादिषाने॥नारलकलीवनमोभाने॥इहिपुर
षवहुवचनविचारत॥रुदनुकरतवनमोऽज्ञातिज्ञारत॥८॥इहिपरकारचित
वनाकुरकर॥जनकसुतारोवतदुखभरभर॥पुनविचारकरहीऽसुनेम
न॥मनतरुसीहोइहासीबछुलछमन॥फिरज्ञावतहैनिकटहमारे॥दर
सदिषाइकलेशसहिरारे॥यासमभीलवेतजगनाही॥भयोनहोइनाह
दुखाही॥९॥छिनसरछतहोभमीऽजरपरे॥छिनउभेस्वासाचितभरे॥
जिउजलविहीनमीनतरफाही॥तिउसीतावनमुसगनाही॥११॥

३०२ पाके रदन देषव स्रवग भिना ॥ सभे वियोगी भये चिंतन लगा ॥ षान पान सभ कोन
योग मसी ॥ सीय के दुखु दिषि रिदै भन कूली ॥१२॥ पक्षी पंष पसार सीय पग पर
छाया करै रहै तु भारी धरा ॥ केउ पंष जल लु पान करावै ॥ सीय के दुखु कर्म दिषन
सकावै ॥१३॥ सीय चितन्नि जजीय कातन करावै ॥ कूपन दी कहूं जाइ परावै ॥
वेद सच नक हूं रिदै विचारे ॥ उरभ मरे नी केन उचारे ॥१४॥ यो मेरे हैं तिन कीग
तनाही ॥ नीच यो न कुजा वै मृत्यु पाही ॥ उरभ चीया या कुलभ पमरे रम भारी रु
प ता हर कुल परे ॥१५॥ यो दुख सो निज को हतु करे ॥ निरचे कुल पर लंघन ध
रे ॥ निजं उत निज पूतिक तिचितचेत ॥ रोवत सीया राम के हेत ॥१६॥
दोहरा ॥ बालमीक के सिष्य वर फल फूल नके हेत ॥ जात इद्र कोग ति सीवन
जहा सीय दुरदी वशेष ॥१७॥ जनन अस्तु ती के देष दुख उनका हा रिषि सो जाइ ॥
रिषि सन दुख गति सीया की ततीथ न कह्यो घाइ ॥१८॥ रिषि वर रहे षे ज्ञान
कै करतम हा चिरन्नापु ॥ मुख मुरझा नो कन ल सम नरा मां विरो रहे ताप
१९॥ आवहु पग धाले वहु पेरे दिषाये ॥ दुजा पेरे नीर धीर न हि पाये ॥ मन व्या
कुल लि दव लक ज्ञाति भई ॥ चिंता सो जात न न तं जिर भई ॥२०॥ बालमीक देषत
निहि ठोरे ॥ रिषि कारि दाज रया ज्ञाति घोरे ॥ तव सीया को पूछे रिषि बात ॥ क
की नार को न तुहि रतात ॥२१॥ के से गहन वन कूत ज्ञाई ॥ तुहि संग को उ
नार न सहाई ॥ मुरवे न्या सम मकपत मारे ॥ कहा या पिन जम्म प्रग
टोरी ॥२२॥ सीतो वाच ॥ दोहरा ॥ जनक सुता दसरथ वहू राम चंद की नार ॥
रिषि ज्ञानो तुम जापन मम न सीता नाम हमार ॥२३॥ रिषि सुनन तप ताये ॥
कपथव वदे तुम पुत्री माहि ॥ दसरथ जनक दोउ मीत मम न सु ससरा पिता जे तोर

२४॥ चौपई॥ सीया देरल्लाली शिषि के पढा॥ कहति बडुद या परीरषि सरबेता॥ दे पुत्री
तुम स्वछिनि रहावे॥ कोच्चिंता मन न मोन बसावे॥ २५॥ मौहि तप फल तुहि दुख स
मनाशे॥ दुख होना शुसम सुख परकाशे॥ जैसे सुत तुम ते उपजावे॥ रघु
पति ते बल कार दिखावे॥ २६॥ यो रिषि दिजसम तुहि सुखदाई॥ चेला तु सीम
हिहर्ष हिताई॥ रिषिनारी सम तुम मरी सेवा॥ हित चित तबै रे जान नहि भेवा॥
२७॥ तब सीता रिषि को पहचान्यो॥ जनन सौपि ता सम ता को जान्यो॥ कहे हैरी
षि बहु भाग हमारे॥ जैसे बन न तुहि दरश दिखारे॥ २८॥ दोहरा॥ बालसमे तुम
मोहि चोजो दरिबलाबत हेत॥ कहति हरषारि दाम हित मेरे दरशन चेत॥ २९॥
चा त्रयमरखांज उवृद घन परे त्रिप्र कहति होइ॥ [illegible] वेशां तपरी मो हि मन नयं
सारहे यान को इ॥ ३०॥ चौपई॥ रिषि सीय सो नि जकथाश्रम ल्यायो॥ रिषि कथा
श्रम सीया बहु सुख पायो॥ कथाश्रम उपम कहु नहि परगावे॥ जहमिग सिंघ रह
कठ चरावे॥ ३१॥ बैरस पर्धा काहू नाही॥ जीव जंत सम सुखी बसाही॥ सी
य कथा गम सुन बे सम नारी॥ दोर तकओबे दे तकप्रपारी॥ ३२॥ जो ऊदुध भाजन
ले दौरी॥ चो ऊद हील्यावे भर कोरी॥ कोऊ फल कोऊ फूल ले कथा बत॥ ३३॥
सीता को रिषि दिघर दीवत॥ निसदिन निकट सीया के रहे॥ [illegible] याम सुसु
खु दायक मुख कहे॥ सीय बौद्धे दे हर्ष उपजंत कथाति॥ त हाबीते न्मौ मास हर
ष सत॥ ३४॥ इक दिन कथाधनि शाती ताई॥ सुफलबार शुभ घरी सुहाई
भलो मह्रूरत जो हि प्रभु मसमहा॥ भई प्रसूत जानकी नवहा॥ ३५॥ मधु
सीस्परगावे रिषि की त्रीया॥ हाससहुल्ला सम मेम्म भरे जीया॥ जैसे सुत सी
य ते उपजाने॥ रवि सस से सम जोत महाने॥ ३६॥ बनकथाश्रम देषे

३२ उजीयारे॥ मुरछा भई रिषि मन जे कोरो॥ मीत रिषि जनि तिहर्ष होये॥ मंगल
चार कीये हित पाये॥ ३॥ सीय मो कैदे पुत्रीन मसत॥ दोउ ब दुमुख रहे हि
जे वरदुति॥ पितु मो पुत्र कन्हजधि वधोरे जे॥ भ्रात नन्सण रामेनि वलकेरे
जे॥ ३॥ इति श्री महाभारते पुराणे अस्वमेध पर्वणे रामायणे सीता प्रस
ते कुस लव तीसमो ध्याय॥ ३०॥ श्री पादि रस॥ रिषि तपसी द्विज कहत वर वालमीक सुर
ज्ञान॥ वह उतन सब कीने तहां वडु हितमन्त मेठान॥ १॥ जिउ जिउ सुत होवे वडे
निउ निउ गुन रुजग ध का ३॥ समते उत्तम देखीये क्व हमला लपुगटा ३॥ २॥ चौ
पई॥ रिषि सीया सो वहुदान कराये॥ हर्षत करस्स भविदा धराये॥ ३ कुकान्ना
मु लव पुगटाने॥ दूसरन्नाम कुश पुगटाने॥ ३॥ जिहि तेलव कुशन्नाम वषा
ने॥ तेमुनवेदाधर ध्यान महाने॥ जवरीष इकवे जन्म समन्नाये॥ दंड कुशारिष
हाय सुहाये॥ ४॥ इकवार दंड कुशादू सरक॥ ५॥ दो उ सहा वत चेति रुक्षव सर॥
देउ कुसाथ शवे जोदंडे॥ लउ कुसथो भोइ हेकसरष घेडे॥ ६॥ याकारण लउ नामु धरा
ये॥ कुशकुशाते पुगट पुगटाये॥ वालमीक उहि नाम वषाने॥ सीयमो कहत
विदेस रषाने॥ ६॥ इनद्वदुके वरहे पुतिपाला॥ वडे तेज स्वी हे दो उवाला॥ द
वे सीय रिषि के पग लागी॥ ७॥ जि द्विज रणाते अपुदा भागी॥ ७॥ जव दश वर्ष के
वालक भये॥ जननी के दुख मामि मरनये॥ पुनि रिषि यज्ञ की यो इन्ने वहुत
घर समो जन्न सम भुधो वों जन॥ ८॥ चार वर्ष के भये वालन जव॥ विद्या पढन ल
गे दोउ तव॥ विद्या सकल पढी ध्यो रेदिन॥ १६ दिस सीया मुदित वहु हीम नन
९॥ दोहरा॥ द्वादस वर्ष के जव भये वडेय ज्ञरिषि की न॥ यज्ञो पवीत तौरेगे दोउ
जिस पर्म पुनीन॥ १०॥ जंग्यो व्यस्ति रिषिधामी रिषि वेहमु रव इध्यानेलि हाय जस

मरमोतोहमम नहीयांतेकहोतेनाहि॥११॥चोपई॥कामधेनयोधामनमोरे॥मुजेदेहुकर
णाकरितधारे॥कामधेनकेमसेगुनधरही॥मोजनसबधर्यातेतुगारही॥१२॥पकल
जैसोफूलकसादिजेवाधे॥तेजुदेतकसाधे तेकसाधे॥हर्षवसिषगोडांतहिदीने॥लीनी
रिषिजीयहर्षप्रवीने॥१३॥रिदजोरिषिसमहीतोषकराये॥इधामोजनदेजेपताये॥य
ज्ञोपवीतदुइहकेगरडारे॥वालमीकसीयसगहर्षधोरे॥१४॥वालमीकसमुजाननहारा
भावीमतमोविष्यविचारा॥रामायणकीकथासुहाई॥दुइभिसोचउठेतसिषाई॥१५
कसाछेहोसजहूनमयेयुध्मकसनुमयतेकहहदईवजीवुध॥वालकजावतापिरेमधुरधु
न॥सुनसुनहरषावेरीरिषिदिनमन॥वीनवजाइतालपरेवर॥उचीसरगावेकसा
नेदमरा॥१६॥दोहरा॥इहुविदकसुनदेवसमहोवेमुदितविशाल॥रूपनलालउप
माकछुधिकोविचरावेदोउवाल॥१७॥सुस्नरहिनरनधूपकेतान॥धारसुननकीचा
ह॥धामवसाइवसेतहाकसावेधनेउमाह॥१८॥चोपई॥रिषिमुनतपसीरिदहर
षाये॥मिलसमकेहेरमवडुसरवपाये॥उचतरमेइनकोकछुदेवे॥यातेइहिकु
मारसुरवलेवे॥१९॥दहुंरिदेदीयेवानकसमोरे॥जिनकेतपकेवलकानितथोरे॥
पुनलिनरवेगउनकेमसेदीने॥कवहूनहोइहवानतेहीने॥२०॥समसायुरयेवा
नचलावे॥तोनिषंगतूनोनदिहावे॥दोइधनुषकासकेकरे॥वालमीकरिषि
मंत्रउभेरे॥२१॥रेवनामतपसीकतिभारी॥मंत्रसिषायेहितचितधारी॥काहूरि
षिदईगदामुदितमन॥काहूसतुगादीयोधरहितघन॥२२॥निजनिजशकत
दईवरशस्त्रा॥दोउसिसजाइकसघरकसधवरा॥सिंहदेषमकबकजिउमारे॥
वउकसरोरेपुानीनिकोरे॥२३॥वेशपायनोवाचा॥सोरठा॥सीयाकोवचेनिक
ररघुपतिराजनकरनमये॥मनमोपछताधारइकदिनवेठमुदितमन॥२४॥सो

३८४ परै॥ तुम्हरे कंस राव न हम मारे॥ निज पर पाप लीये कहा तिन मारे॥ ताते बध उपा कस
वची है॥ यातें इहि मारो कंस घरी जे॥४४॥ रिषि वसिष्ट जोगा लव तीरिषि वरा॥ विस्वा
मित्र कैसा वामदेव धरा॥ इहि चारो इक ठाइ सहाये॥ तिन सो मंत्र कीन रघुराये॥४६॥
उनो कही कस्व मेध करो हित॥ सभ पापो को नास होवें जित॥ तब कोरी सभ जा
न न हारे॥ पछे उन सो मुख बुझ गये॥४७॥ यज्ञ कस मेध जो न विध कीजे॥ सो विध स
कल मोहे कह दीजे॥४८॥ वसिष्ट वाच॥ यज्ञ अस्वमेध कठन अति जानो॥ तामे बड
घडे पहि चाने॥ प्रथम कै सो होइ तुरंगा॥ सभ सुं संस्वेत धरे सभ अंगा॥४९॥ पुंछ
स्याम होउ करन जु स्यामा॥ ते हरि छन होइ सुर मन्हामा॥ पाउ तुले होइ अस्व को जी रहल
ना॥ तब कही च होय एक वरि शाला॥५०॥ वीसहसर अस्व दिज वेद जाता॥ रिषि तपसी मुनि
वर तन पुरस जाता॥ इकु इकु को इकु इकु रख दीजे॥ दस दस सहसर अस्व बहु साज सजी जे॥ इ
कु इकु भार स्वर्न का होइ॥ सो सो गाइ दूधक दीते जोइ॥ कंचन सी गार जत पुरदी
जे॥ इकु इकु मनु कामाल रहित कीजे॥५१॥ दासी चार चार ही दासे॥ इक इक को दीजे
पर सा कै॥ यज्ञ करत बअस्व छुटवर रहावे॥ काम क्रोध चित मा हि न ल्यावे॥५२॥ जीय युत
सो चैस्व प्रथय कपर॥ मक्ष रखउ गुराथेन जानी कर॥ जब लग जगस्व फिर आवे ना
हो॥ तब लग रहे सु संयम माहो॥५३॥ सो तुम सीता सी वर नारी॥ नीच जनन न
केही निकारी॥ ऐसे वचन हीय जत तुम्हारो॥ कंधे जी नीर हि डोरि हि सदि पारे॥५४॥ श्री
रामो वाच॥ दैव सिष्ट गुर सभ गुन जीता॥ जग उपहास ते कादि सीता॥ कंच
न की सीता रच ली जै॥ यज्ञ मनो र्थ सफल करी जै॥५५॥ जि हि प्रकार को इन
स्व तुम कहो॥ सो हम रिखि हि बहु लिख पलहो॥ कस्व के धाम न मो तुम जाचे या
प्रकार सहि करन स्या बे॥५६॥ जा यो वसिष्ट पुन कस्व चुन ल्याये॥ दूध फेन

समसुष तद्दिषायो॥ पुंपषवीत कुंकनकेवरना॥ याकेस्यामरे गदो ऊकरन॥ ३॥ आदि जौर
षिजे सेवके हेषसि एमुनि॥ तेइक ऊसम कीये परगुन॥ सर्वगुन इसी ता रच्चली नी॥ गो
मंगीरघुपति केकीनी॥ ३॥ सम कीप जाविधवतकरी॥ गजरथ संचनदीयो हतष
री॥ कलभसीस हस्त्रिषिइकठपुरी जै॥ रघुपति जीके निकट कुलीजे॥ ३॥ सोरठा॥ पु
नक्रम भवके स्नान रघपतकीने हर्षचित॥ केचनकी सीय कृपान कृपांच गोठता सोव
धी॥ ४॥ दोहरा॥ प्रभु ने कर श्रीराम जी करन कसुगंध लगाइ॥ प्रभु के तन मरदन
करे कहम लाल वल जाइ॥ ७॥ चौपई॥ मकुमाल कप्रभु गरे मिलाई॥ निज कर पं
कज सोर घुराई॥ सर्वांप रालिषकंजगस भालकजीता॥ इहि प्रभु सघ्गा ऊथे रघुवर
जगहित॥ ४॥ येन पप्रा केम घरे वधावै॥ शत्रुघन तारि भुज वले हतावै॥ ये
रपनि जप्रभु सर्वंपधानै॥ निलेशत्रुघनकीन्हाजामानै॥ ४३॥ तीनघद
नी स्वैन संग धरा॥ रथकमयो शत्रुघन ते जमरा॥ चारों दिश प्रभुपे पर ल्याये॥ व
डे वडे भूपन सुवुलाये॥ ४४॥ राम प्रभु सके ऊवोधनसोहे॥ यास मान निज व
लन ही ताके॥ योका हुनपवांधधरायो॥ ताको जीतशत्रुघनु ल्यायो॥ ४५॥ फिर
तफिर तप्रभु सघ आयो वहुपवग॥ तालनी कलेक ष्म्र नहि गजवा॥ तरारुम सघ
न फूलफलभरे॥ मिएसुगंधसर सकृपति षरे॥ ४६॥ निरमल जल पूर्ण सभु
ता सला॥ कमल प्रफुल्ल शोभाविशाला॥ शिषिकालजैसे प्रभु देषे॥ मन मोहर्ष
नमयेव शेषे॥ ४७॥ लवकोसुध उनदीनी जाये॥ केहेर प्रभु चर्य प्रभुसो दिषाये॥
सनके लऊ प्रभु जागरेयो॥ तौंछचनिरषी विस्म हेहारस्यो॥ ४८॥ पापराउताप
ठेता प्रभु द्वार॥ इहि प्रभु सधा कौ यजहि हितरघुवर॥ कौशल्या माताघाकी विमलम
ता॥ यप्रभु सनेधकर तभुजवलकजीता॥ ४९॥ ताश्यकेशत्रुघनकेधवकवला॥ सं
घारे शत्रुनके वहु दल॥ घोरराघडी भजवलवर॥ जहि रघके प्रभु सको विचार

३०५ ५०॥ अगर हरन सो ता बाधु धुप रैं॥ निरह चे जानाति तिन को हरतु रैं॥ ये सन ये अगर हरन
रुक्मा कै हा नाम मा चै सिर पर है हा हनि मा ना॥५१॥ लउ सपठतई रघा मा नी॥ कहेव
चेन सु खगर मन हा नी॥ घे को शल्या सतघ्री रा ना॥ हम भी सीता स्रुत व लधाम
पसधो हरा॥ भाषत लऊ दुकूलनि जगन सुवे गरे निलाइ॥ जी हल्या यो हर्षतीर
दे वाधो गी हानि करा इ॥ ५३॥ कदली तर सो वांधये रिषि सुत सभ विस्मा ना॥ प्र
रघरके पे ना सवड कुंवर लऊ सोंचि तान॥ ५४॥ ओपई॥ हमी रिषि सुत ई हरु
सव धूरा जन॥ जिन के भय व डु यो धेमा जन॥ हम नन वेन जई हर सस जा है॥ ये
धन रेव ल के से सम हे॥ ५५॥ वी हर शस्य परव डुसे ना सा घा॥ हम इये लकुस
रा वे से घा॥ हे सीय सुत तनु मनी केनकी ने॥ दुहो रि दे विचार प्रवीने॥ ५६॥ अजव
हूं रुसा वे जो यो धे कृति॥ तो को हत ब रेहै जाने स ता॥ जत सो अस वर छ ज न हि
सा ये॥ धाड़ो रठ जे ना रव ना घे॥ ५७॥ वाल का न के वचन सुनाई॥ चुपहे ल
ऊ के हे पुरा राई॥ तुमदि त पुत्र नु मे भय सदा॥ हम छत्री र हमरे मन न मदा॥ ५८॥
रम सीय सुत जस वगहा व तजरू॥ श त्रु न सो भारी युधस जरू॥ धाड़ो अस्त्र सभ
हा सीव रहे॥ हम को छत्री ची र पु ग रहे॥ ५९॥ यो सीता सुत के मन त ज्ञा वे॥
शत्रु न सो रण मंडहि दि घा वे॥ हो इ स हो इ सम रा वे मारे॥ भूतेम यारि देन घारे॥
६०॥ ईह मो से ना अपहु वानी॥ जा जर घ अस्व पाय घ जग रवानी॥ चहे व हा
जा यो अस्व वा धा जिहि॥ रघुपति अस्व विहि व लग हयो ले चा॥ ६१॥ ई हा के
ऊ भपस रनी दिघा वे॥ वा लीरविन को दु रपरा वे॥ गल का न सो पछे वा ता॥
कि हि अस्व वां धो धरो के हु सा ता॥ ६२॥ वा लीद व सुनन के पे घर घर॥ र दन
र रतम बीदु ज नल भर भर॥ चहे हम बीन भच धु रपाने॥ जिहि अस्व वाधो
निस पछा ने॥ ६३॥ दो हरा॥ अंस वंधु छ तल घरा है वाम धन घघा हा पा॥ निर

बालकअस्थवांधयेअदली तरके साथ॥६४॥ प्रभुन तहस्से सभसर में कहे इहिबा
लकअज्ञान॥ मोरैतिहि जे बलु धरेयाहत पाप महान॥६५॥ चौपई॥ केतनकअस
केनिकरउयेजुवअभस्तु वरको घोलन लागे तबा लउ देव धनवान सभारे
उचशवदतिनसो प्रगटारे॥६६॥ कउ वांध्यो अस्व मतमु कता वो॥ पुरहेत
ममस न्मुखज्ञावो॥ येते हो तुम योधबलानी॥ हमसो लरहो मनजोउपतानी॥
६७॥ बालबचनसुनसुन हसपरही॥ हसहस मुखते योध उचरही॥ हेसि
सुईहानरहु मगजावो॥ मन हम ते अछुबेद दिखावो॥६८॥ इहवाहिअस्वन
कताब नलाओ॥ तब सीया सुत वोल्यो कुप जाओ॥ सो हवचन सुनअस्व
मुकती जै॥ उत्तर पुनि हम सो करली जै॥६९॥ इह सिसुके बच श्रवण नकरही
अस्व मुकता वनमनमतधरही॥ इकु योधा अस्व घोलन लागा॥ कूदपरे
सीयसुत वहु भागा॥७०॥ बान प्रहार झुरघाइ मजासन॥ कार उतर्यो देव
तसभजन॥ कैसे सी दिखसभ वहे मैकु तेजति॥ बालक तुम नहीं कोनीव
मता॥७१॥ रिषि बालकु हम तुमको जानें॥ नातरहत नकरे विलमुन ठानें॥ ल
वोवाच॥ हमको मत तुम बाल विचरहो॥ करो युद्ध येमु जबलु धरहो॥७२॥
सुनकुपसभी बान परहरही॥ सीयसुत ऊरको पदि हरही॥ लवके लरेभ
येसभ छिततितिहि॥ कोन्दिपाबे छितना हीं जिहि॥७३॥ इनके बान काट सु
मउारता॥ महा प्रवीन वराउ त बल भारता॥ कुपसि सरके चहूं पे रधि गये॥ सब भे
शस्त्रु परहारत गये॥७४॥ दोहरा॥ बान शक्त तम दगार गदा खड्ग असजो दये
अस्त्राह॥ वरषा सम परहार हो सीयसुत ऊरपे नाह॥७५॥ सिसु कूदत जनराज

३०६ हाथ परे को छूटहि रन सकाइ॥ सब कल सैन नीद बयाँ हि बल होइ रहौ बिसमाइ॥२६॥ चौपई॥
लव के सर रैगि रे गज जैसे॥ इंद्र वज्र लगि गिरि सिंग जैसे॥ अस्व रथ परत भूमि गिरे प
दाता॥ मानो प्रलै काल भयो साता॥२७॥ टूटे तेज अंग तन बचे सब भागे॥ शत्रुहन स कोधी
रं चितन्ता हो॥ चढ़ि रथ गजन अस्व गिरि पदाता॥ छूटन लाल सीय सुत बल कसाता
॥२८॥ गने न ज्यों हनुमंस ब्याकुल ये॥ जितौ तौ मिरत तव तुर्ग दिब ई ये॥ हं पतसी
घसु तचै भयभोरे॥ शत्रुहन सो ताकी न पुकारे॥२९॥ इति श्रीमहाभारते पु
राणे अश्वमेध पर्वणि रामायणे ... तीली समोध्यायः॥३४॥३४॥ सेना उ
बाच॥ दोहरा॥ इव बाल लव कैसे करी हतीनु मारे सेन॥ बलु चतुराई रूप तीरि
के दूर पारे न हौ वेन॥१॥ चौपई॥ बाल लरे यो बलु रन भुम की ने॥ तेव तन दूर करी दु
ख न ली ने॥ शत्रुहन सेना की सुन बाता॥ भयो विस्मै चिंतातु असि ता॥
दोर शत्रुघन श्री धुं हिं अयो ये॥ बाल कोदिस बर सा पुत्र राये॥ रोसि सत्रु तनमा
रे मन मयो ये॥ अस बस भार हो इ मेरे कोघो॥२॥ भाषत बान धन धपर धरे॥ बा
हन असर की सैन प्रहारे॥ लव तब कीये पुहर दस बाना॥ दस ही कसायेते उ
मरा न॥३॥ चहूँ सर स्वारे अस्व हतु की ने॥ इक सो कटी धुजा पर बीने॥ इ
क सर धन प्रत्यंच करउ रे॥ तीन हू बानो कर सार थ मारे॥४॥ इस शत्रुघ्न तती
छ शत्रुघन के तन॥ लगत मुरछा भयो त्रिस धरन॥ पुन सधपा इराम
के भ्राता॥ दुसर रथ चढ़ि यो कुप कसाता॥५॥ कोधत ती न बान लव मारे॥
कीये पुहार रव उभु जन बल सा ये॥ ते व ली दिघल बहु सउ चरा ना॥ तुम इही
च लर मको दिघरा न॥६॥ अस घमुक बलु दे यो जो करे हो॥ रहो सब धान

साच पुगट रहे ॥ सीय सुत कहि सर चार तजाये ॥ कूर रथ के कस चार हताये ॥
पुन सर तज धनुज समार पहारो ॥ धनष कट रयो भाली भर डारो ॥ राम वीर सिस के ब
ल देषे ॥ मन मो धारे त्रास विशेषे ॥ १२ ॥ रिस करत धनष डकोर कर रथ ॥ वानलाइ
मरवे न उचारे ॥ शत्रोघन चलो वाच्यो ॥ रे मम समस्य दर रूप वलारी ॥ तो हद तन न दी
चाह हनारी ॥ १ ॥ तो हद तन चित मो न वसाऊ ॥ जाहु प्रान ले भाष सुनाऊ ॥ जे
निज जीवन ऊसा सधरो मना ॥ हमरे सनमुख रहो न रन भुन ॥ १० ॥ लव को वाच्यो दो
हरा ॥ जो सावालु न जान मम तुम बच गहो मन त्रास ॥ हमुरे तुमरे वल भजा चिन
पर है परकाश ॥ ११ ॥ चौपई ॥ सुनत शत्रुघन कोपे भर यो भुजवल सो सर सिस
पर द्धर यो ॥ सीय सुत मगोकरो ते वानन ॥ रामन भ्रात सर कोर गहानन ॥ १२ ॥ धनष
र चाढ चाहत कर डोरे ॥ करे पुहार भुजावल घोरे ॥ दिढ सीय सुत परहार सो
वाना ॥ धनष सहत ते वान कटाना ॥ १३ ॥ कूर रघ नीरदे रिस कउपजाये ॥ जो
र धनुघ जहि कोपम हाये ॥ कुवान तूण ते काढे ॥ यासो रके सर वल गाढे ॥ १४ ॥
लवण नामु सवल वल कारी ॥ जा सर एकी ते सभ संहारी ॥ या पर परहार सो तेव
ना ॥ कौन वचैयो यम जो है सिधाना ॥ १५ ॥ ते सर धन धरि रिदे विचारता ॥ इन
वालक मुरको कीये संसार ता ॥ लोचन मो नर रहो मुहिला जा ॥ या को रान करे नि
जकाजा ॥ १६ ॥ लवनि निहार ता सर की डोरे ॥ मन मो कीये विचार अति घोरे ॥ ये
हमरी माता हित चित करा ॥ पति की सेव करी मन वच धरा ॥ १७ ॥ इह सर का रघ
उदो करे हो ॥ कू पुन भुजा के वलनि रधार हो ॥ राम वीर पर हार यो ते सर ॥ लाग
तनि हस सुध भयो सुरला धरा ॥ १८ ॥ राम वीर की उपम करे रेसम ॥ दिघमई रुठ पर
सेन्या तट ॥ रथ तन दुंदभ शंख ववजाये ॥ घोर तत कस स्व लीन मुकताये ॥ १९ ॥ राम
भ्रात लव पेत वस्साये ॥ लीयो उठाइ धर जो दम हाये ॥ सहे वीर स्या वाल समाने

३०७ सुन्यो नद्रसरन्ना हदिखाने ॥२०॥ रामसमान रूप उजीआरा ॥ घाम नयो धान्न हि संसा
रा ॥ जलधि स्रवे तामरवमो हित करम रण परहारउ चह्यो चित हरषरा ॥२५॥ राम
बीसव स्व कोध लगा डे ॥ चह्यो चित हरषरा ॥२१॥ इहि इतिहास जे सुने सुना
वे ॥ जन्म जन्म के पाप परावे ॥२२॥ नारपुत्र जे सुने हे तध रा ॥ होअपापी च
रे जे गमरवम र ॥ शत्रुगा के भय स्वप्न न देषे ॥ लोक पत्र लोक भारसरवपेषे ॥२३
इति श्री महाभारते पुराणे अश्वमेध पर्वे रामायणे चत्तीसमो ध्यायः ॥४॥
दोहरा ॥ तब लव के रघु डारसे गये अश्वम वताइ ॥ तब बालक तन सीया स्यो कही
वसम जाय सुनाइ ॥१॥ सुन सीता धीर्य तज्यो चलत दृगन ते नीर ॥ उभे स्वा
समरत प्रभु के निहिस्यु धीवक लशरीर ॥२॥ चौपई ॥ नृछे हो इ देषे सो जरपा
नी ॥ जे कैगिर है भीत पुरानी ॥ सुध बिहीन मुरव बोल न सा के ॥ सुध की चिंतपरी
जीवयाके ॥३॥ चिरपाछे सुध पाई चितमन ॥ मन मो चितर वन कैरे विघनघ
न ॥ ये मुहि शील पति व्रत भारे ॥ कुशभ्राता सुध ले दुस्चारे ॥४॥ लव तें पुन
मोहि निचर रस्यो वे ॥ जिहरि दिषदि षमम मोर दिचिपूबै ॥ इ तत न लव शत्रुन
मो कसयो ॥ ज उ रविराहवे तब लग सयो ॥५॥ शत्रुगाइ उठ तातमुहि घेरे
के ये हो हडे भारी ऊरे ॥ पनो चाल दे हि छिरमई ॥ मया जानो हिपा हू है वई ॥
घा ई हि प्रकार स्व दृ चित तन नररहे ॥ छिन छिन हो इ व सुधागार परहे ॥ पुन
मे छित सहे ॥ उन च उ यो धन सो युध ठाहे ॥ यो अव स्यामो लीये गुन क
नि ॥ तासमदृ जो नाहजगत सत ॥ वउ फल पाइ रह नहर पारे ॥ सत जो पील
धर तन्नि हपारे ॥८॥ दोहरा ॥ कहा पर न पित जाउ दैरो इहि दुरव सह यो न जाइ ॥
सालमो ल भीन हि इ रायो मुहि वरत महा ॥१॥ चौपई ॥ दोई हि दुस्सह दरव

कोमुरन॥हरेहमारा॥तवहीकुशरुस्त्रायोतहां॥सिरपरईधनभारा॥१०॥चौपई॥कुश
कोदेखधीरसीयपाई॥सुतदेखीमातामिचिताई॥लवभीनहींईहांदुराई॥कहा
गयोकछुलखीनजावै॥११॥पुनकुशरुस्त्रपुनीरदीविचारै॥लवकहींयीमेमेसे
प्रगटारे॥ईधनलीहतजवहमवनचाले॥लवकह्योहमभीचलहेनाले॥१२
हमवरजोयोतहिसंगनलीना॥मानभंगताकाहमकीना॥मतकुपहोइअहू
उठगयो॥दुखनपरेमारस्त्रमभयो॥१३॥ईहिवउपायपलगायोम्रुगतनमा
तापरछ्रतहोईचमनमन॥हेमाताक्रियाचिततुमोरे॥लवकहांगयेनाहि
दुराणे॥१४॥हेसुतकाहूनपकोसतवर॥कछुइप्रवेश्योईहांचउछचंधरा॥लव
जाहितेअस्ववांधधरायो॥वड्योधनसोयुद्धपरायो॥१५॥इनउनकीवहुसेनहै
नाई॥अंततउनेलीनामुरछाई॥मिसुतनविधिमरछकोदेखे॥लेगयेवांधम
वलीवशेषे॥१६॥सुधनलषोतागातिक्रियाभई॥पोतेहमरीसधवुधगाई॥येतम
जाइतहांमुकतावे॥हमरेमनवडुसुखउपजावे॥१७॥भ्रातभ्रातकेजावैका
मा॥मारस्त्रमेकारेक्रमघामा॥सुतमाताकेवैनदुखारे॥कुशमनमेचितनकोपजो
यधारे॥१८॥तवइलोहवेसमदुगकीने॥वहेमातमेवचनप्रवीने॥हेमात
नुमचिंतनकरहो॥सवलयावोंधीर्यधरहो॥शत्रुनरघरधारत्रिप्रावो॥लवपय
मकतादतोरहपेस्यावो॥१९॥दोहरा॥सुरपतिवरणकुवेरयमगणगंधुपइउठा
दा॥कूरकीरछावरेरहितसोभीधाडोनाह॥२०॥जनरुसुतासुनधीरधरमाछे
हेसुतमोह॥वेगलेहुसधभ्रातकोविस्मुनसोहेतोहि॥२१॥चौपई॥मतकहू
शत्रुदूरउठजावे॥दोरतघवडोकउनमिलावै॥शसत्रकाढसुतकोपहरायो॥
चल्योमातकेपगसिरनायो॥२२॥मातामुतकोदीनअसीसा॥सवलयोवीरररण

२९८ धीरजु गीस॥ पोन वेग जा शत्रु दिखाये॥ परे ते जसी चपल महाये॥२७॥ प्रभु
जपर प्रभु जमार तप्रु गराये॥ घरे रहे हे पुह्म महाये॥ मो हूमान को धाउदे हूं सब
नातर रहते परो गे तुम सभ॥२७॥ मो हू हाथ ते जान नपे है॥ लैवे धाउनि
जप्राण वेचे है॥ धाउ मार चे ते जम हाने॥ देष सभी भये मनी विस्माने॥२५॥
सभ है वे है इह वड वलकारी॥ कहाये है जी यग के जपारी॥ कहा ठो इकी सस
चढ़ु स्रम मुदीने॥ कहा घरि हिरसा पो वली प्रवीने॥२६॥ कियाजा ने इहि विया स्रम
धरे है॥ जान नतै है सभ को स घरे है॥ तउ ग जम सम जोसं हू परा ई॥ देत गजो की
सर्धा चिस राई॥२०॥ तिउ सभ पाये धीरत जाये॥ तिउ तीपरै हे जा सम हाये॥ उ
उउचे लघु जापर वहे॥ दिघ कपश व न प्रसपर चहे॥२८॥ का जपव नक
निभार चलावे॥ उउउ उ धर मृगु शीतम रावे॥ कुशा चे तज देष भय लीने॥ मन
ने हरषु सभी तज दीने॥२९॥ प्रभि विलकई तरा म भ्रात मन॥ इहि बाल वदेवेगो
भ्रमु घन॥ कपुन सेन सो वेद उचार॥ इसे जाहे रेपो धवलो रे॥३०॥ कहा ठो क
वन इसे नदीजे॥ हो सवे धान भजा चलकी॥ नातव सेना नी रस वो रे॥ या
सधारो पुधक सीतमारे॥३१॥ रामभ्रात की कज्ञा माने॥ दोरे यो धा कोप महान
एउस नानी जाइ ते जुगनी॥ कुशचे स न्मरव जाइ भयो सत॥३२॥ कुशकी
उर रस वान प्रहारे॥ कुशने बान मजे रच उरे॥ पुन चारो जस जमर की ये हान॥
धजा सार थी हने महान॥३३॥ तारवान करथे धजे भारे॥ ने सभु हने वाल
वलु धारे॥ वानो वल रघु चु रच रकीने॥ करभु जपन पस हत चरदीने॥३४॥
वोलस जाइ शत्रु केकारे॥ सौ पस नके सिर रणहो रे॥ पुनेसर तज
सीसउ उगना॥ दघ सभ सेन भई भय माना॥३५॥ हाहाकार सभ के सीनभये॥

परसीहोरसभकासरवजायो॥ करेंडीरवालमहाकर्तीतमरा॥३॥ जनकजसयो
धक्कीयेरण॥४॥ इतिश्रीमहाभारतेपुराणेअश्वमेधपर्वेलोकभाषा
ऐइकतालीसमोध्याय॥४१॥ दोहरा॥ कुशवलकोउपमाकैरसभीसराहसरा
ह॥ तवअर्जुनकहुरोजञ्चउदुसरभातातारहा॥४२॥ केपधारकुशसन्मुखेश
कतजीरिससधाइ॥ पंचरुक्मकीनीमहेभीयसुतवानचलाइ॥४३॥ चारेजांघ
गजकीकटीरवउगपहारपवीना॥ सीसभारभमपरशिरोअस्वरणमोक्रम
लीना॥४४॥ चौपई॥ मुखभारपुहकरभुमपरयो॥ उहोसभारगदाकुपमरयो॥
पुनकुशरवउगमममरणपरहूर॥ गदासहतकरभुजाकटीवर॥४५॥ त
वपुहकरकरचक्रसंभारे॥ पुनेदोरमनकोफकपारे॥ सीतासतसरसागम
हाने॥ दुसरभुजभीताहकटाने॥४६॥ दोउभुजहीनदोरवलकाठी॥ चुपदेरे
सिरज्ञाठधारी॥ कुशदोउजांघतांहिकीकाटी॥ रणभूमधीरस्वचमकसठारी
पुनसरतजनताकासिरकाटयो॥ सीघपतकेसाढरठास्यो॥ शोरपरीसेना
मोभारी॥ कुशकौउपमासभेउचारी॥४७॥ करकसमानतणिकसायेतहा॥ पुह
करयोधपयोहतनहा॥ ताहसीसशिवलीयोउठाये॥ मालमाहिपोअतेमि
लाये॥४८॥ दुहवीरकोहतसीतासुत॥ रणठारजतकुदतभारीदुत॥ कर
सेनापरवानप्रहारे॥ मानोमावलवेध्यवकारे॥४९॥ डारसमगजकुशके
कानोवल॥ डारेधरनकरायेचहुंजनतल॥ हाउहूकीमरतहेजाहे॥ नर
फतरफमरहीउठाही॥५०॥ जनरथकअश्वपाइकजेहाते॥ ताकीसंख्या
कौनवघाने॥ रुधरप्रवाहचलेकरसजाहा॥ कसमरथवहेजानजैमारा
५१॥ भजीसेनाचितनधीरनिचरे॥ कसानईरथकौनविकारे॥ नभमोदेवउप

२०५ मचतुकर हो॥ कुशासमदूसर बीरनवर हो॥१॥ निजसैन्नारणभाजातेदेखे॥ जाही
शत्रुघन्नोंचेतनवशेषे॥ चे ननत्वेषघनपुरंकोरो॥ दोरपरोरणभमनचिक्रोरे॥१२॥
दोरुरा॥ कुपरुरउरेवाम्नदसरमभ्रातरिसकानने॥ तेसमहोमजमोकेटसी
घसतते जमहान॥१४॥ पुनचारेजमलशत्रुकेरथसारथकीघेरान॥ राम
बीरजोधनीमेलाये तीक्ष्नवान॥१५॥ चौपई॥ पुनकुशसरपरसरपरहा
रे॥ फुधनुधजरकीदई निवारे॥ धनुपुशत्रघनकोनिरपरयो॥ सीतासुत
कैसाकलूरयो॥१६॥ सीयसुतकैसेसवलोदखराने॥ रामभ्रातनेसहनस
काने॥ जिउ जनमतोजिरतेजरपाई॥ तेउ रामबीरगिरयोमुरछाई॥१७॥ पुन
सेनापरहोरयोवलो॥ चालवलेरणमोदलमली॥ वहूमारेघाइलवहूक
रे॥ कुशकेदेषवलसमझेरे॥१८॥ शस्त्रहाथपजको सुधनाहो॥ जजनरथजस्व
नजभाजेजाहो॥ हूरशस्त्रहाथपजहूरे॥ जदावलेजजमस्तकहूटे॥१९॥ पिता
पुत्रपितनुस्तनसभारे॥ भ्रात भ्रातरे ननविचारे॥ मीतमीत तजभाजेसिधाने
पाछेमुरकेनारदिघाने॥२०॥ जैसीदिषलचमरछत्याजे॥ कुशकोदिषभूदये
भ्रमभाजे॥ दोरतकुशकेजसेकलगाये॥ मिलदुहूभ्रातजधिकेसुखपाये
॥२१॥ तववरदेलवडेभ्रातसुजाने॥ जसलेचलोभ्रातनिकराने॥ उनजस
मेननदोयाधजसाडे॥ वहुमरेरसजधरजनुमेघ॥२२॥ लववहूवेजजयोभजनव
लजनति॥ दिषसभमजोनवहेरमके ततम लवजसखनीहत्याधाजनिजधाम॥
चदलीमेचाधोजभरामा॥२३॥ दोऊभ्रातसिवनजिउभोजे॥ तारेजे॥
सुनतशवदशत्रुनजिउलारजे॥ सेनाभाजतमुरनादिघाई॥ जिउसि
जालनिजाइदभजाही॥२४॥ दोहरा॥ सेनाभाजतरामकेजाइनिकरप

इचाना॥ प्रगट पुरारी गाय सभु रघुपति सन विस्माना॥ २४॥ ब्रह्मचर्य श्री राम
जीतन पहिरै मिरगाना॥ मृगसिंघ जोइ कहा यमेविवसरछटी सजाना॥ २६॥
दाहन भरथ परामनील छमन नवा केंग्रा॥ यज्ञ ठोर हर रघे सरल हिरदे सचमि
निरहमंगम॥ २७॥ चोपई॥ मघकी ठोर होमन होवत ऋत॥ यवी तल तंदुल घृत मि
वांछ सत॥ नालयेर का परस गंधत॥ देत ऋहूत मंत्र पढ मुमन ता॥ २८॥ प्रप
न चमस को चाइल देषे॥ श्री रघुपति कहे चिंत तन शेषे॥ रामो वाच॥ को भपत व
न मा हव लारी॥ जिन हम तीइ हि सेना सिंघारी॥ २९॥ सेनो वाच॥ हे रघुवर तु
मरी कर रणाधरा॥ फेर यो ऋस्व चारो चारो दिस वलभर॥ कैसी भपक ऋस्व उमहि
न सका यो॥ जिस बांध्यो हम ताह रहता यो॥ ३०॥ जक्ष्मो को ऊभ पत नर हाना॥ यो
मा चेन नहीं तुमरी कमाना॥ ऋार हन वली सकल जग जीत॥ हर घत ऋाये तो
ह मिलन नहि तन॥ ३१॥ हर्ष शत्रुघन वल ऋस्व संगा॥ सरइ उमर हरक ऋावत निर
भंगा॥ ऋाये ऋस्व वन मो जहां रिषि कुटीता॥ ज पुत्र ऋर तपुस्यानंदित करतसत॥
३२॥ तो वल सिसु तुहि रूप समाने॥ वो सधन घपा हो पसुहाने॥ ऋस्व उमहि
बांध्यो च दली सो उन॥ युद्ध वरे हम सो उन बहु ठाना॥ ३३॥ हाथ उठावन वि
सीन दीने॥ नतीच्छिन सभ को देह तुकीने॥ ते हम आत भारे युद्ध कीने॥ वस्था
सम मस रच वसे पुकीने॥ ३४॥ बाल कवल की उपमन को ई॥ कहे हाक हार मक स्या
न हो ई॥ तुम ये वान दे षो करणा कर॥ ऋतन्त तज्यो तुहि भारमी रमरा॥ ३५॥ ते
स रभी सिसु की च दुफेरे॥ बालक वल निकि पाक हेउ चारे॥ एक रवड जा वाल लग
ना॥ तो हि पुत्र तप भयो मुरधाना॥ ३६॥ रघुम सो डार नाह हम लया दे॥ हर्ष तरु
ऋ पुन ऋस समुक ताये॥ पाछे ते ऋाये विहवाला॥ तिन की ने संग्रामनि विशा

३१० ला॥३॥भाउरथकसम्नपगसनगंतहहताने॥तांवेवलदिवसभुवंपाने॥हायउठो
वन्नीकेसेनपाये॥नमलकसमभवेवलपतीयेमउयाउवैशत्रघनमनरथतमयो
नवीदिवसमभघावलघटगाये॥केउनठहरसरवचोसमभमाडेकंपतईहाउसा
येरणतयाडे॥शत्रघनसुरतहमेनाहिकेउ॥मनरथापरयोमनरणजोउ॥इ
॥दोहरा॥मयोकिउजीवतहैतहापरोविसधरणमाह॥इमजीयलपायेभाडवे
सन्चीडायपुगराह॥४॥चौपई॥जिनजितेडारपंथुजिनपाये॥तिनिभजोव
डोमयघाये॥कुवतुनवरोविचारकपनमन॥दोऊनालवधरहैभजव
लघन॥५॥सुनतरामउचरेविसमाने॥इहिगयकाहिकोरेवघाहे॥इहि
गयडनोनहीकउचयेकजीति॥वधुनलघेनहीलाजरदेसत॥४॥मोर
भाजमैसावसुधारे॥कोनजगतयाकावसुहारे॥केइनकोभयोमनतपुतेशा
भयेचासेरेतहिकलेश॥४॥बृम्बउघभयइनकेरिदिभाये॥यातेभारभपा
नसुगयेसोइनभंवाधनराघाये॥योजेइनसाचाधनसाये॥४॥शत्रघ
नपरहमेभरोसमकति॥काहूतेनहिहारेरणसत॥देखोसमाएहिकियाकह
हे॥हमसहिभागेगयसमभजहि॥४॥सेनोवाच॥दोहरा॥रेरघुपतितुहि
रंभिजिहिदेखोसेनानिहार॥भतनधुहिसपोतिसेरहमलालपुगटार॥
मुह॥नाहिभातमनरथपरयोरसमभाडेमयघाडे॥रमयोसीतिउकरतहिकै
डउपाइ॥म॥रामोवाच॥चौपई॥धिगधिगहैवलतेजनमोरे॥मउभाता
केनकेदुखारे॥योनुनहेतमनरवलवारा॥नाहिउतनाकोरणमाहू॥
मयो॥नारीसमनरणाभुमतजभाडे॥तातचितहमरेमनदाहे॥तवरघुवसे
भिउगतेनीरा॥वस्योउमडचितरहीनधीरा॥४॥मुरतेतकेहेवचनचितातिन

ता॥ लव एक अस्सर जिन लीने जित ता॥ कह जित अच बंधे समरे मन कह आंदे॥ को बालक ता को
मुर छांदे॥ ५५॥ बहु अवर धमो है ते मधे॥ जिन ने तन्या रेका र पच देये॥ उन मुहि छहे
केर न सांके॥ याते कैसे दुख स्रम ताके॥ ५६॥ मोहट हल उनी हत चित की ने॥ नीह
लघी यन ईह दुख बाति लीने॥ धर्म दयाभारी सत शीला॥ कहा ते पुजारी हरि स्रम नली
५७॥ अधि शोक चिंता तर राम॥ कहे लछमन न सो है बल धाम॥ यज्ञ अंक गन्ता हन रे
हाथा॥ कि से जाइ लरे कहा स्रमा था॥ ५८॥ एहि सम मेन ही को पवन्नाई॥ तुम जाओ से
से न महाई॥ भ्रात शत्रुघ्न सो युध जामंडे॥ सको ता जारवे बल रणरंडे॥ ५९॥ बहु
सेना नीका लज्जीत स्रण॥ जावो बेगु नी विल्मु धरो रण॥ ६०॥ इति श्री भागवते महा
पुराणे अस्वमेध पर्वणे रामायणे वेतीसमो ध्यायः॥ ३३॥ रामो वाच॥ दोहरा॥ वीर वे
र लेहु शत्रुघ्न सो रण प्राक्रम बल पाइ॥ प्रबल ते अश्व लायो के रोई रघ्यरि दे न पाइ॥ १॥
लछमन न संग धरयो लज्जित चले सेन अनंत॥ चतुरंग सारे बलीगनंत
नपावें अंत॥ २॥ चौपई॥ अस्व रण वरण सम धुजा स्रहानी॥ सैना छत्र छत्र कहन
सकानी॥ बहु स्रुगंध तन न छिर्रत पोधे॥ चले युध हित चित बहु क्रोधे॥ ३॥ रण
ऊमो स्रस रे ऊर जावत॥ चले ते अजित कहें न जावत॥ के तन के रस्थे नसम वाने
श स्नुव सुसभ से तीरद पाने॥ ४॥ के तन के रस्याम सम सा जा॥ केसो व स्वकेय स
मला ता॥ के तन अरण वरण को अपीते॥ अजित बडु शोभ सेन कस रजीता॥ ५॥ केसे
बलु लछमन न भुज धरई॥ स्रर पीत भये पीत भय धरई॥ सेना भार धर्म पर हरी॥
द सो दिशा चल धल मल परी॥ ६॥ नो रेन दी ताल जल सो खे॥ ती न ले कहु रपति
हरो खे॥ करव डु वेग तहा पहुचाये॥ जहा शत्रुघ्न परे मुरछाये॥ ७॥ अकुर रहन
को रण परे दपाने॥ चहुं दिस योधा परे हताने॥ बहु घाय लरपामे है को॥ ८॥ बहु स

३११ धंदे हिस्स धन सभा रे॥ ८॥ दिष्ठ छल छ मन नि हस्स धनि जभ्रात॥ रदन सी यो
जति ते जति ज्ञात॥ भ्रात सी सनि ज उर धरा ये॥ चार तती र के वो धपरा ये॥ ९॥
दही मे लख कु मज्ञा पहरा ने॥ कु श लव ता मुख वे न व षा ने॥ कुशो वाच॥ देष
वीर ध रसे न म हा न॥ जा यो दे ल छ मन व ल वा न॥ १०॥ वरे हम्रात क हु वदे से वी
जै॥ जै मे युद्ध जरे सो ली जै॥ लवो वाच॥ दोहरा॥ युद्ध नं ठ हे जरे से युय पि
हे ज्ञ नं गंत॥ तुरि हस्स मुख न हरी रि हस्से तु मरे व ल न हो ज्ञं त॥ ११॥ लघु जे व वे
जे इ व वे हु इ व वे हर के देष॥ दहर न सा वे जो हम गो दे व ल षा न व शेष॥ १२॥ कुश
हो हन यो स न मे व यु द्ध करे हे वीर॥ श स्त्र परत तु न पद्ध न्व हो विल न नपरे से धीर
१३॥ चौपई॥ वा लमी नी रिषि दीये जे वान॥ ते सभ ल्यावो ते ज महान॥ या से
ना के मारो घेरे॥ पडपु चित व डी मन न मेरे॥ १४॥ दूट परे रण धन षहमारा॥ के
से व रहे शस्त्र सं घारा॥ सन लव त ति न रि विपय जांये॥ निधारम रवेत पुग
टाये॥ १५॥ सात मुखी ज्ञस्त्र दा व त तु हिर य॥ दिन मेरे न तुम हीते सम र्थ्य॥ प्रभ
उस्त्र लीने तो हि स्व र प॥ सभ मे उ त्त म ते ज अनूप॥ १६॥ तु मस म ते जो हर से वे
ना ही॥ तो हि देष सभ जग मुख पाही॥ चार वेद षट शास्त्र पुराणे॥ तो हि प्रताप
पु ग ट सह राने॥ १७॥ अग्नि ते ज तुम ही ते पायो॥ ब्रह्मा विष्णु शिव तु हि प्रगराये
सभ मे माधी सभ मे ज्ञाता॥ तुम सम ना हि दूसरो दाता॥ १८॥ तो हि ते जे के उदे घन
स चा रै॥ सभ म ज तु म हि उपमा जो वे॥ कौ व इ र्यु वि न ती स न ो र मा री॥ तुम सम न
र के उ उ प का री॥ १९॥ ध न षु दे जी ये मो हि कृपा क रा॥ या ते हरे ज सरो वे ब ल ध रा श्री स
र्य ते व भ यो ध्वा न॥ लवे के धनु षु दी यो त त का ल॥ २१॥ र वि ह्री सम ज्ञो ने जु धा ज ता
लव स्वी यो वि त धर हर्ष ज्ञ नंत॥ कु श के ज्ञा य र ही सभ जा॥ जि उ र वि धनु ष
दीयो दि त मा या॥ २२॥ इलो वीर ज्ञ रहे स नन मु ख ज्ञा वा॥ उरे म य न उ न ही से ना

सवा॥ कालजीतन लछमन वउते जै॥ ठाढे तेरणते जउझमे जै॥२३॥ पवन वेगे जिं
उजल बल बला॥ इनको दिष सेना सम घरप॥ लछमन कालजीत सरणजा
ये॥ कुशसो भारीयुद्ध उपायो॥२४॥ सेन सबल लवको लीयो घेरे॥ सर वृष्टि धारी
चहुं फेरे॥ चारो दिसको रसजन को कीनो॥ लवको मद घेरउन लीनो॥२५॥
इस इस कर षद सद सकल समूह घेरे॥ समसंगयो घेसमु वल भरे॥ पुन इकु इकु कस
स्वरहस पदातामलवको घेरयो जैसे भातामः॥२६॥ दोहरा॥ बउगुण दानु गदरसाव
तवचको विम्हल वलारा॥ लव वडोरे सम परहरै तो भीजमय कुनार॥२७॥ रेचवको
स्रुनधरतम नउार तवानकन नंता॥ गजरथकम सुपाइमहते गन तनपोकेसे
तार८॥ चौपई॥ चवले कोण परवाहजनेका॥ कीचमीचम जुगाविवेका॥ भ
गीजेनचितधीरन रहे॥ लवके तेजन जावे सहे॥२९॥ तवलवचितोकुशपेजा
ये॥ भ्राताकी सुधलेहमहाये॥ जावसमा तइकुमसरपृकाशा॥ रीवरजनानु
याहिवेमसा॥३०॥ लवको पाछे होवल घेरे॥ लीयो हाथ तेधनुष मेरोरे॥ धीन
धनुषुनमछोच्च उगयो॥ तवसी पासुतविस्मानामयो॥३१॥ चितनीरादेखा हीर
नलगायो॥ त्रिभुवनपति वउहेतुधरायो॥ पुनगरचको कासकेपाछे॥ परे
सीपासुतमजवलकजाछे॥३२॥ कपोकेसरशषिलारेवेशा॥ पाछेगरजतल
वधनमेसा॥ लछमन कालजीत इतिदेषे॥ मनमेविसमेमयोविशेषे॥३३॥
केदेषेमिसकी चतुराई॥ चउयोकाशन जातहराई॥ समसेनाकेसमी
निरषाने॥ विसमेहोइकेसे निरषाने॥ विसमेहोइत्रासमनमाने॥३४॥ मनत
नमतेरमपरोगिरपरही॥ घातरमोरेमनकोवरही॥ कोहूखडगुनजन
करधरे॥ कोहूचमसीसपरपरे॥३५॥ येगिरपरेरषउगपरपरही॥ करयोजाइ

३१२ मुरुषेदुनकरई॥ वदुगजनतल्लेलावदुरयतल्ल॥ वदुभोजेरण नेद्रोविहवल्ल॥ ३९॥ स
मतनामदसरयराजंत्री॥ याहिहायसमजगकीयंत्री॥ चुपसरदसलवतेरप्रहा
रे॥ लवीदघघंडुबंउवरज्ञोरे॥ ३०॥ तलेज्ञाइवरगदासंभारे॥ ज्ञामितनचमरराण्डी
नसंघोरे॥ जिउपापीजनदेयमदंछा॥ तिउलवसभकोकीयेविदंछा॥ ३१॥ सभ
भोजेनहीटहरस्सकाने॥ लवरोत्रासभारमननमाने॥ नमतेअससरवली तल्लका
ये॥ लवपरगदातजीरिसकाये॥ ३२॥ लवमरथतेहोयोरणमाहा॥ ज्ञपुनज्ञप
संभारतनाही॥ एवमहूर्ततिनिदसधरयो॥ पुनसवधानहोइकुपगयो॥ ३३॥
सोहमईलसधरहायो॥ ज्ञसरउरदोरोहितमसयो॥ दोरज्ञसरकुकेसनतेग
हि॥ भुनसोपरकासोवडुक्लजरहा॥ ३४॥ घडुगपुहारनाहिमकटायो॥ सीतासुत
वडुतेजदिखायो॥ वदुरसमनतकोहतोवल्ला॥ लवरकेवलउपनाञवचाहु॥ ३५॥
सर्वजिनधनुघ्लीयोज्ञरमारेमसेनापरदीरोवलको॥ जिउत्रोणतुगमतेज्ञ
जिनवराई॥ ध्वनमोताकोमसमकरा॥ ३६॥ तिउलकञरसेनामोपरयो॥ स
भयोधकालूपररयो॥ लयेरपयेसरखदुकीने॥ भाजेवदुघावलहतकी
ने॥ ३७॥ कितिसमततयारवरजरहा॥ दोहरा॥ ज्ञवकुशकीसंग्रामगयसनोभ्र
ताधरध्यान॥ कालजीतल्लछमनवलीतासोस्यरतमहान॥ ३८॥ वेररजि
वकुशज्ञरेनोदौरततेजज्ञपार॥ लछमनकुपपरहरवरेदससरभजवल
धार॥ ३९॥ चौपई॥ कुशदससहीकोटेमगनाही॥ लछमनपरसरतज्योमहाई॥
लछमनकारयुकुशतेवाञ्जभमेकुल्लालवेचक्रेसमाने॥ ४०॥ दोइघसभम
योन्हरहेरण॥ भ्रमभ्रमहोरेमरयेतेजघन॥ पुनदसररयचउलछमनतव
रादेसरकुशपरतजेतेजमरा॥ ४१॥ कुशकेतनतेकोचविधायो॥ सिरतेघो

लकारद्रिष्टाये॥ बोलसंजोइदोउजवकारे॥ भाषतभिम्रीदिषकैसेटारे॥ ५४॥ कुंशोवा
चान्नीकेकौनमोहिभारउतारये॥ कह्योदेषोहमरेवलसारये॥ कह्योतेदसगुनवलधर
हे॥ ऐसेनसहतसमकोसंघरहे॥ ५५॥ वालमीकतेसीयेजुसंतर॥ पठवानेपरतजेनिरं
तर॥ तिनतेअगिनिप्रकाशतभई॥ कीयोपरहरसरज्वालप्रगटईं॥ ५६॥ दोहरा॥ लछमन
नकारपुजलनयो जरसैसेनानिहपार॥ जरहीयोघेदीपजिउवानतेजुग्नतिभार॥ ५७
पछगीवजसवकेजरेगजरथजरेअनंत॥ योसमसेनापरहरेनहीताकोअछअंत
५८॥ चौपई॥ दिषलछमनवाणसुप्रहारे॥ कौनिमिटाइदईततकारे॥ पुनलवप
वनअसुकीयोपरहर॥ मिटीवर्षअगनितेजपवनकर॥ ५९॥ पवनचलेगजरथउड
परई॥ गजरथपररथपरगजऊरई॥ रथतेउडवाहरजापरे॥ पाइकेउडैनभ
कछघरे॥ ६०॥ पटकपटकमभमसाघवलैअगनित॥ तजततजप्राणघनंघघपरेसत
कालजीतयोअतिजरवावत॥ लछमनकोमुखतेप्रगटावत॥ ६१॥ दोहिस्मरन
कोवडश्रमधरहे॥ रामसैनअसनठंतसिघरहे॥ जेसेवजंगिरेहनउरे॥ तैसे
करेअजाजकलभारे॥ ६२॥ देषोमोहिवलप्रगटपुकारे॥ कुंभसमइनकीजटाउपा
रे॥ सुनकुंभकरनहेसतनोवलधामा॥ इहितुहिवचनकोस्मरीकामा॥ ६३॥ सोवच
नजोअकरोदिषरईये॥ कहेतेअछउपमनधरईये॥ रावणअसमेहमननाही॥
सरवीरनहीअरिदिषराई॥ ६४॥ करेतोवानअरेपरहारे॥ जहुवातोहिअटोत
नकारे॥ पुनअरेसमुखवकेदेनभाषे॥ करोउपाउजैअछवलुराषे॥ ६५॥ भाषतकुं
शकारजिहूनिकासे॥ सरप्रहारततछिनअरहुलासे॥ भयोअंगममरववालनसभके
उसरसरस्याइयोकुंभकेअंगसो॥ ६६॥ कुंभकरनवचायोसरभयमानन॥ इतिउतहोइप्रवी
नमहानन॥ अतअसरसीघापुत्रतजानेधनकषमहतकारभुजाअरानै॥ पुनच

३१३ पुवानपरहरेतेजकहीता॥ कालजीनकासीसकरयोततर॥६३॥ इतिकालजीतवधः॥
दोहरा॥ कालजीतकोहत्योदिषविसमनतरघुपतिभ्रात॥ बानवर्षकुशपरधसीतीन
तीनसरजात॥६३॥ लडोबालकौछतीजोपुनवईशकतचलाइ॥ कोपहोइकैसैक
योमनहोसिसुवडुराइ॥६४॥ चौपई॥ कुशरिसकाइतीनहठजीने॥ लछमन
गदातजीपरवीनेयचकौत्रिसलगदाताकाटिदे॥ कुशपरहुरेनिरहमिरयादे॥६५॥
कुशसभसस्त्रकाटकरडारे॥ सातसातटुककरद्रिसारे॥ कोपसस्त्रजववनाहरहा
न॥ परहरेषनसुरिसलकुटसमान॥६६॥ कुशकूदततेचापवचायो॥ लछ
मनकोनिहसस्त्रदिषायो॥ कहतिवडहर्षपरेकुशोरेमनन॥ कूचेसवदपुकारत
भमरन॥६७॥ दोहरा॥ हेलछमनतुमकहतिवलीदेषरिदेविचार॥ हमसरतज
हूदेषनुनकोवएकेवार॥६८॥ बानपोचमंत्रतकरेभजतलधरतजदीन॥ राम
भ्रातभुनपरगिरेभारसरधालीन॥६९॥ करलछमनकोसरथावलदेषनको
हेतगतहाजाइपहुच्योवलीजहलवलरईषेत॥७०॥ चहूदिसकजरत्तवमइतिहव
कीसभकहतिरोइ॥ कहुरवडगदारेवलेकोपधारकहतिसोइ॥७१॥ चौपई॥ भीर
भारकरोरीतहा॥ मगतनीदपावतजानेचरा॥ कहतशत्रुनकोमगकरहु॥ दुकु
दुकुजनरथपाइसधरहु॥७२॥ लवकीभीरमिटीतवदेषा॥ कुशकोदिषभयो
मोदतवशेष॥ दुहभ्रातोकारसेनसिधारी॥ जरेसमाततुगतीयेभारी॥७३॥
त्रिउझनायथमोकेरपरहै॥ तिउदोभ्रातकारसेनसिधारहै॥ हनाहनी
केसीदुहूसैनी॥ काहूकौसुधरहनदीनी॥७४॥ फिरेरवधसरसभमनस
योजनरथकरैरपतमनन॥ भाजीसैनभारभपपाये॥ रणभुमनमाहरवर
रनसकुचाये॥७५॥ विजयसरवदेषुतोरवजाये॥ कूदतनावतहरघुनहाये॥ मात

निवरजग्रायेहरषाने॥सीयादिवस्त्रेतेजनंदउपजाने॥७६॥इति श्री भागवते म
हापुराणेअस्कंधेभाषायांतितालीसमोध्यायः॥४३॥दोहरा॥ग्ररजुनतरस्त्री
रामजूकरतयहितमारा॥होमहोतनिसदिनतरा वेदनकीधुनकार॥४४
कहेरघुपतिवहुदिनभयेलछमननकीसुधनाहि॥कालजीनसएगयेरएाव
उप्राकेमाजिननमाहि॥२॥चौपई॥कछुनलखोरियाकीनउहांउन॥जिननमो
भारपराकेमनछोगुन॥वहुदिनतेकछुसुधनलधाई॥डिहिकाचर्यकछुवेधो
नजाई॥३॥दुइवालकजीतेवानाही॥संसायोरमोहमननमाही॥४॥लछीयतारे
जहहनाहजितानो॥यातेसुधमोकोनपठाने॥५॥येलछमननकेवेलेखिचा
रे॥तासमदूसरकोनानिहारे॥याकेमयसरजमस्ररजूपाये॥वडेस्मरता
पजसिरनावे॥५॥सियाजानेसिसुवरसियाकीनो॥महनेसिसाधधरेपर
वीने॥वोहिवालककूवननचरनिहराने॥उनकीरघवाकेकूनठाने॥दाजा
लजीतललछमननदोऊवलकजीते॥६॥नेकेसमागमस्रनभाटेमता॥सियोधो
रेजारकेररमाहीं॥भागागयेहोवालकराही॥७॥परेहोहडीरउनकेपाछे
हापनभाइहोइसिसकूपाछे॥नभलेजाइशत्रुघनकेजो॥तोभीलछ
मननहीछोडेते॥८॥भ्राताकोलेमोपरजाखे॥निजदर्शनदेसुखउपजा
वे॥उनसिसकीडायलषीनपरई॥यातेविलमुमोहियधुधरई॥मधधोदि
ननेरपहुचाये॥जगस्वागमकपजजूनादिहारे॥९॥दोहरा॥मलपठायोय
त्रघनहमननसीविचार॥दनमनस्मुजीवयामवनमेयोरिवहवलकार॥
१०॥इनयोवलकीयेलवमोहोइहमारेसंग॥तेसिनरुदेखनहीसवप्रेम
हनिहमंगाम११॥चौपई॥वालकनकेवलेसत्रुघन॥सेनहतादपरेगम

दुवानपरहरेते अस्त्रजाति।। कालजीतकासीसकटयो तत।। ६३।। इति कालजीत वधः।।
दोहरा।। कालजीत को हस्यो दिषि विस्मत रघुपति भ्रात।। बानबर्षे कुशपर घनी तीन
तीन सरजात।। ६३।। लडो बाल कौ छती तो पुनहई शकत चलाइ।। कोप हाइ कै सैक
यो मन हो सिसु बडु राइ।। ६४।। चौपई।। कुश रिस काइ तीन दश कीने।। लछमन
गात जी पर दीने।। अचकौ त्रिस लगा दाके आदे।। कुशपर दुजौ रे निह निरधारे।। ६५।।
कुश सभ शस्त्र काट कर डारे।। सात सात दुक कर दृष्टि पारे।। कोप शस्त्र जब ना हर रहा
ना।। परहरे घन धुरिसल कुरस मानना।। ६६।। कुश कूदत ते चाप चढायो।। लछ
मन को निहस्त्र दिषायो।। अति बड हर्ष परे कुश रे मन।। अ चेश वद पुकारत
भ मरन।। ६७।। दोहरा।। हे लछमन तुम्ह को जाति बली देषि रिदे विचार।। हम सर तज
है देष तुम को वेणो बार।। ६८।। बान पांच मंत्रत करे मजब लधर तज दीन।। राम
भ्रात भुम पर गिरे भार सरथा लीन।। ६९।। कर लछमन को सरथा वल देषन को
हेतन तरा जाइ पहुच्यो वली जहु लव लरई षेत।। ७०।। चहु दिस कअर तव मछी तरह व
धी सम जाति रोइ।। काहु रव डगदोरी वले को पधार जाति सो इ।। ७१।। चौपई।। भीर
भीर कारो कीत रहा।। मन जनी दषा वत जानेवे रहा।। कारत शत्रुन को मगजा कर हूं।। दुपु
दुकु जजर पयपाइ हम धर ही।। ७२।। लव के भीर मिटी तब देषो।। कुश को दिवभयो
मुदित विशेषो।। दुह भ्राता अरसैनानि सिघारी।। जारो समान तुंग लिये भारी।। ७३।।
जिउ जंगल परमो वेर परही।। तिउ दो भ्राता अरसैनानि सिघरही।। हना हनी
के सभी दुहूं कीनी।। हाहू हुकै सुधर हनन दीनी।। ७४।। फिरे रव बंध सहस्र भसरस्न
यो जन नरश्च नरश्चे दूर षत मनन।। भाजी सैन भार भयपायो।। रघु भ्रम ना हर वर
रनस भायो।। ७५।। विजय संरष देव सैरव जायो।। कूदत नभ चतर रघुम रायो मात

निकस आये हरखावे ॥ सो या दिसि सब ते आनंद उपजावे ॥७६॥ इति श्री भागवते म
हापुराणे ऽस्कंधे भरामायणे तितालीसमोध्यायः ॥४३॥ दोहा ॥ सरजू तट स्त्री
रामजू करत यज्ञ हित भार ॥ होम होत निसदिन तहां वेदन की धुनकार ॥१॥
कहे रघुपति बहु दिन भये लछमन की सुध नाहिं ॥ काल जीत सब आ गये रणव
उप्राक्रम जिन माहिं ॥२॥ चौपई ॥ कछु न लखो कियाकौन उपाउन ॥ जिनमो
भार पराक्रम सजोगन ॥ वहु दिनन ते कछु सुध न लखाई ॥ इहि को चरचर कछु कहे यो
न जाई ॥३॥ दुइ बालक जीते वानाहीं ॥ संसा घोर मोह मन माहीं ॥ लखीयत के
जरू नाह जिताने ॥ याते सुध मो कौन पठाने ॥४॥ ये लछमन के वले लिख्चा
रे ॥ तासम दूसर को न निहारे ॥ याके मघ सुर असुर उपावे ॥ वडे सुरता
पड सिर नावे ॥५॥ मिया जाने सिसु परखि याकीनो ॥ हते सिसु वांध घरे पर
वीने ॥६॥ हि वालकु वनचर निहरनाने ॥ उनकी रछा को अनठाने ॥ दाका
ल जीत लछमन दोऊ बलगति ॥ इनके स्वागमन सुन भाठे सता ॥ हि सो घो
रोगर के दर माहीं ॥ भाडा गये होवा ल्हडे राहीं ॥७॥ परे हो हडीर उनके पाछे
ह्यापन कसाइ होइ सिसु कुसाछे ॥ नभ ले जाइ सत्रुघन को जो ॥ तो भी लछ
मनन हीं छाडो ते ॥८॥ आता को से मो परकासो ॥ निज दरसनु देसु सुख उपजा
वे ॥ उन सिसु की जय लखी न परई ॥ याते विस्मु मो हियु धुधरई ॥ मघोदि
न मेरे पहुचाये ॥ अस्वा गामकस जहूना दिखारे ॥९॥ दोहरा ॥ मल पठायो या
त्रपन हमन की विचार ॥ दन्नमनतस्र जीवयाम वंत से यो देव वह वलकार ॥
९॥ दूनयोवस्लु कीये लेव मो होइ रमारे संग ॥ तेहि जहू देखे नहीं स्वप्रमा
हनि हमंगम ॥११॥ चौपई ॥ चालक कानके वलेस त्रपन ॥ सेन हता दुपरोम

३१४ रघुराना॥ पुन उठ बोले लछमन निज प्राना॥ ताकी सुध करहु नाथ महाना॥१२॥ सुने
भरथ वर प्रान हमारे॥ लछमन की सुध लेहु सचारे॥ भरथ राम की आज्ञा माने॥ त्या
ये चतुरंग सैन महाने॥१३॥ तिस सो कहे रघुपति समझाये॥ जाहु वेग लछमन
निकट आये॥ मोहि संदेस लछमन को दीजे॥ रण मो दया सिसो पर कीजे॥१४॥
यद्यपि उन नीके नहीं कीने॥ तब भी तुम न हत्तो परवीने॥ तुम बड उवली काल
मंग जीत सभा॥ मैं नाहे तुम रे के जन गरा॥१५॥ बहु पदाति है रथ दोऊ बाला॥ जीवत गार
ल्यावो ततकाला॥ उन कहे मुरख नो कोई सुनावो॥ ततछन ल्यावो विलम न लावो॥१६
दया वाल कन पर येक रई॥ पुत्र कलित्र सन बहु सुख धरई॥ मुजङ्ग भागा सीय
सुत नाहि निहारे॥ गरम तत्ती परदई तब नेनि तोरे॥१७॥ उन ही को निज चाल कज्ञा
ने करो दे न उन सो मन न माने॥ सम भय सोध उनो कीन्ही जाने॥ क्रोधे सुत कु
ल होन व छाने॥१८॥ रोषि के प्राकृत सब के शोधि॥ प्रास कैसे तुही निहोरे नीस स
ये॥ कैसे वचन रचन रघुपति॥ सकल सभा मो भा वत मद सत॥१९॥ तब
से नाजन न भागत कृष्णधि॥२०॥ तन रुधिर पर तन पाये॥ काहू भुज काहू पग काट
ये॥ काहू के उर मा पग फूटे ये॥ काहू के नाक स्रवन न रहे॥ बहु भय युत घर रह के
पाने॥ राम नाम सम भये मरव जापा॥ भाग तक जाये चार सकल नापा॥२१॥ राम देख
चितवन तगहाने॥ विस्मित हो इमुख ते प्रगटाने॥ कोउ सो विधनुमत हते कहे जाये॥
कहे पुनि ब्रिया कहे सम मन मे॥२२॥ उन कही राम सुने त्रिभवन पति॥ रम
न गये ये लछमन संगा संता॥ कैसे भय रन मोर मद दे खा॥ या ते न हो को दु ख
सब शोक॥२३॥ दोउ सम सन की बल चतुरंग [illegible] लगके है कहे तन कहे॥
जे व लछमन उठ [illegible] दुख पाना॥ जरा जे जे पत घन सम महाना॥२४॥

चाहत तुम पुनि भ्रात उठाये॥ दो बालक तन हाक पठाये॥ जिंउ चपल घन ते झापर
इ॥ सकल जनन की सुध बीसरही॥२५॥ जैसे सिंह कुरंग जा मे॥ ऊसाये॥ धीमक जा की दे
त मिटाये॥ तिन दोउ सिर धरि ते ऊपारे॥ पैसे नपर डारव ऊपारे॥२६॥ हम मत्रे
लछमन संभारन दीना॥ सकल सेन को ऊरत कीना॥ इकु लव इकु कुश ना मध
राई॥ तिहि बल की गय यह कहन पराई॥२७॥ लछमन काल जीत दोउ कु पकरा॥ उन
सो युद्ध करत भये रण धरा॥ जैत कुश दुहू को मुरछायो॥ सकल चमू का बल लुप तिजा
यो॥२८॥ दोहरा॥ युद्ध की गर्व किया वरनी ये कहत रिदे अपा इ॥ देखो मने न वि सी
जन को ऐसे युध जग माह॥२९॥ काल जीत वड युद्ध कर जैत कुस हत लीन॥ दिष
लछमन सनमुख भयो कुपव ड भारत कीन॥३०॥ युध समे प्रचमे अस्यो कुश से
लछमन वीर॥ काल जीत को हत्यो तुम तो हते जंभीर॥३१॥ चौपई॥ यदुपति
तुम बहु सेन हताने॥ हमरे भाग यो धष पाने॥ तो भी हमरे मन न हीं चाहा॥ करे
युद्ध तुम सो रण माहा॥३२॥ जा हुमा तपे जीव बचाये॥ सहन सको नहि वान
महाये॥ मो वल प्रगट जगत मो परे॥ जैति वड घात कस रहम करे॥३३॥ इंदु
जीत जीते जिन सुरपति॥ तिन मो सो ठादि युद्ध जैति केजति॥ पुन कुंभकरण
वण को भ्रात॥ तिन भी करे युद्ध जीति ज्ञाता॥३४॥ राम सरपा सो सभ हत कीने॥ तुम सि
स कीध्र या हतन प्रवीने॥ ऊवर वडे गम सह मारे॥ जिन के वल सर राखन हीं धारे
ऊभा॥ जे तुम इसके द्वि गदि द्रणते॥ निर धन प्राण तेज घर जाते॥ सुदर रूप पताल तु
हिदेथे॥ मो नन उपजे दया वशोथे॥ नात रमो इहत न नारि द कामा॥ मन तम मो सो सर
देवु धधामा॥३८॥ नु शो वान्वा॥ वहु सिष्या हम कौ तुम दीने॥ पेनि जोर देखि
दे॥ संग्राम करन नहि ता॥ हम तुम सिख्या धरेन हिं चित॥
चारन लीने॥ तुम कराये

इअ तुम अज्ञानि गई बुधि देमो धरहो ॥ अपुन भ्रात की गत बीच रहो ॥ वह भी गर वत तो ह
समाने ॥ परशे वत सो होमु रघाने ॥ ३२ ॥ तुम को भी गे प्राण प्यारे ॥ युद्ध की गाथो दे
न बुधि सारे ॥ राम मिलंकी ये तुम चाहो ॥ मो सो धरे न युद्ध उमाहो ॥ ३३ ॥ जाहे वी
रा मनि कराने ॥ त्रिया प्राण मन त तजो अज्ञाने ॥ ये तुऊ बुद्धि इहा न रही जे ॥ श
त्र घन की गत देषपती जे ॥ ३४ ॥ ते भी करत इसी विध वाता ॥ मो सो युद्ध भयो रण
घाता ॥ ये तुऊ राम मिलन की आसा ॥ मो सो युध मत करो प्रकाशा ॥ ३५ ॥ ये अर
हन सो मिलवो चाहो ॥ तव मो सो संग्राम न चाहो ॥ कर विचार देषो मन माहे
तो हि युद्ध मो सो शुभ नाही ॥ ३६ ॥ प्रथम प्रसपर हो न हिल रहो ॥ तो हि व डा दिष
दया कि च रहो ॥ जो तुम अर रहो वान प्रहारो ॥ ह तो तुऊ न ही विलम दस मारो ॥ ३७ ॥
लछमन न सुन वालक के वैना ॥ तप्त लोह सम कीने नैना ॥ सभ तवान पर रह
रची ये तु पधर भदि षकुशाते म गाव ऐते जवरा ॥ ३८ ॥ छिमन नो वाच ॥ वीर तो हि प्रा
ऊर म देष ॥ तुम देषो वल नो द तुचो षो ॥ इह भाषत सर व ठो धारी ॥ लछमन के
अंग वेध मारी ॥ ३९ ॥ लछमन तन सर पर दिषाना ॥ सर विहीन अंग जानि
रहाना ॥ अति व उ युद्ध दुहूं रण कीने ॥ तिन की सरषा नाहि प्रवीने ॥ ४० ॥ जव ल
ग लछमन न शत्रु धरतन ॥ तव लग कुश सो युद्ध करत घन ॥ अंत कुश ने रण
स वल परायो ॥ अस्त्र सर अनर र धु हान कराये ॥ ४१ ॥ पुन परहार कीयो ति
षाना ॥ सर रछित वीर धुरन लपटाना ॥ निकर शत्रु वन छेरण परयो ॥
सी ता सुत कैसे चल कर यो ॥ ४२ ॥ इम कर रहे जुद्ध से उठावे ॥ तो जो वे रघुप
ती निकट वे ॥ कुश के वसते विलम न पाई ॥ ते निंप्राण भये भय पाई ॥
आय तुम रे चरन दिषारे ॥ सो तुम रो जो नी कि विचारे ॥ ४४ ॥ प्रजा रंभ त जग न

स्वैसं भारे ।। भ्रात नवेर गोहा नविसारे ।। ५० ।। भुजबल तुम पुनाम स्व मुकतावो ।। दु
हू बालक को पकरम गावो ।। तुम बिन नाह अवर कौ कामा ।। दोऊ मिल है रणमे
वल धामा ।। ५१ ।। भुजबल तुम पुनाम स्व मुकतावो ।। रघुपति सुन लछमन की
हा ना ।। रुदन करत चिंत मर ध्याना ।। दोर भरथ तव ली यो उठायो ।। राम कुरघर
सी सस हायो ।। ५२ ।। भरथ वाचा ।। हे रघुपति तुहि भ्रात प्रवीने ।। कहे रण भली यु
ध कीने ।। ५३ ।। छत्री यान के कर्म करे तिहि ।। रण भुम ते न दी पीठ दई जिहि ।। मार
ण मर या दो ऊ रण माही ।। या ते चिंता चित न दिजा ही ।। ५४ ।। दो हू राम दोऊ वीर पे
प्रीति बहु भाऊ ।। तुम ते सौ अथ प्राण रण त्याऊ ।। जब लछमन सीय बन ते न जाये ।।
तब ही तो निज प्राण हि तायो ।। ५५ ।। सो हि दिशार्यकमायो तह प्राना ।। ता हि मन ते चोंस
अदि ध्याना ।। तुम रे मन न रुष्ु दया जाई ।। नीच बचन सीया वन पठाई ।। ५६ ।। निरद
यन सत तवं ती नारी ।। नाहि बन फिरे दुखारी ।। सीय सम लछमन के रिदि माही ।। नस
दिन बस तो रिसार तन्नाही ।। ५७ ।। इह जु कहे सा छमन नर रथ तरन ।। कहे जान ते है कहप
ते मन न माही ।। मर यो हो इ जीवत नर हाई ।। सदा भरन की चार बसाई ।। ५८ ।। मो मन भी
चिंता सीय की कृति ।। फिरे दुखी वन पर शील सत ।। जीवत है के धो मर गई ।। के हर
ल्या घर के बस पई ।। ५९ ।। हमनी की सुध कछू न लीने ।। कहा ति बहु अघ कपुने सिर
कीने ।। अब तुम के कपने बस करहे ।। अब तुम को तुन कहा घार है ।। भ्रात नि
कर मोह वीच रहे ।। ६० ।। युधु धर वीर रण बेर गहा वो ।। वा उन ही के संग मिलावो ।।
सीय लछमन कनर हनो विनु ई हिज ठा ।। ना ह क छ स्मुर खेदे प्रभ सर्वेज ।। ६१ ।। भरथ
बचन सुन रघुपति बोले ।। सुनो वीर वल डोहि कमो ले ।। ईह कार्य तुम बिन
को करही ।। भ्रात वेर गोहि मुझ कर सवरही ।। ६२ ।। जाइ मिस सन की प्रीछ लीजे ।। मोरे
का वे सुत जान लीजे ।। पुन तथा रके ई हास्यावो ।। मोको उनके मुख दिखरावो ।। ६३ ।।

येकतहून सोरथा तथसाई ॥ तकब्बवशहोकुरोलराई ॥ पेनरहोतोजीवतल्पाहो ॥
हनुमतकोंगदसहत सिधावो ॥ १ ॥ ड्दूदोवली होहसंगतेरे ॥ यमसुरपतिहे
सेवे नेरे ॥ वीहवालकतुरुडेहिपाकज्ञाडे ॥ लषीज्ञतदेषजाहहोमाडो ॥ ९ ॥
दोहरा ॥ हमपितुवचनेसुनतहीवनवनफिरेदुखवारा ॥ पतकज्ञाज्ञानेसीनही
देषोफिरेविचार ॥ १९ ॥ तिउतुमहमरेसंदेसनजावो ॥ विलमतजाइ ॥ भ्रातन
केसवधावनवारसिसगीहमेफिरिदिषाइ ॥ २० ॥ चौपई ॥ भरथावाच ॥ हेरघुव
रंजीहमैनतुनारी ॥ वमेनयनेतलषोवलारी ॥ तुमनिजसनेउजोकेवलक्ष
ति ॥ पुनभाषतहेतहे जीवमत ॥ १ ॥ उनकोपजिउज्ञावतमुजन ॥ ते
भाषोमुनीयेपतिविभवनमतुमनीवनकेवहकारेसीया ॥ नकुविचारनकी
जैपनमुखबा ॥ २ ॥ तीयतुमरीमतेतेदेउवाल ॥ वुजरभयेहोवसुभवाल ॥
सीयकाधरमधरतेजस्वरूपा ॥ तिनमोपरयोहोकुजनरपा ॥ ३ ॥ नरचीकउन
जितेसभकेरन ॥ सीयाकोपतेवचेनकोजन ॥ रघुपतिकैसेवचनवषाने ॥
होल्पेभरथचरनलपटाने ॥ छिमाकरोईहहमरेपापा ॥ तुमरेसवैज्ञान
निरमापा ॥ ४ ॥ भ्रधियोचिनीवरतभरथसज्ञाने ॥ रामपदेनगहरहेयोज्ञा
ने ॥ रामसहनदाहिंसंचलगाये ॥ साजयुद्धकेदीयेमगाये ॥ ५ ॥ इतिश्रीभाग
वनेमहापुराणेकस्वमेधपर्वणिरामायणेवोतासीसमोध्याय ॥ ४४ ॥ वेसंपा
यनोवाच ॥ दोहरा ॥ पुत्रयमनरथभयोशत्रघनपुनलछमन ॥ मरथीना ॥ सु
ज्ञानीरामकीवल्पोभरथवलवान ॥ १ ॥ कमसुधारवुपभारधरहनमतसंगदसं
सेवकवलपुजकेनीकेन्ता तेजकसंगत ॥ २ ॥ चौपई ॥ पुत्रकालेपवनसमाने ॥
गापदुन्दुभेमभूमगरज्ञाने ॥ सैनव्यहरिघंटीसंभारे ॥ भरतहनुसेवरेडवारे
३ ॥ हेहनुमततुमजाउवलीकहोति ॥ जिहिठोरेर्मोहम्भ्रातपरेसत ॥ उनकीसुधह

मेल्या इहाँ जै॥ ईहि कार्य मो बिलमु न कीजै॥४॥ हनुमान भरत कौं बीरा जो पाये॥ रामभु
मसमुद्र दिए पार उतम हाये॥ जजर पय कृस्व सम भये दुरवारे॥ राम भ्रात कै तहू हनुमान चिह्न
रे॥५॥ रही भर पय सो स्वकली बाता॥ हनुमान देखे राम भुमन कसीति कसा न॥ जजर स्यकुस्वप
कतयो पर्वे॥ जिन की ठगती रध नधरे॥ दो तो हि भ्रात तक तहू हनुमानदि दाने॥ हनुमान चं
ता तर भर तव घाने॥ उंगपार तुम जाहु चलो रे॥ मन हू हा हा वे भ्रात रमारे॥७॥ हनु
मानो वाच॥ उंगापार को नाहि थ जाऊं मो कातु लाठ धु नाहि दिदाऊं॥ भरथो वाच॥
हे हनुमान तइहि कसन चर्य मो हि॥ तुम सागर कूदे वड्डु वलु तो हि॥८॥ कहा गये ते प्रा को न
तेरे॥ उरपाने उंगावल है रे॥ हनुमानो वाच॥ तव पी सीय पर राम दया कीजै॥
हम दधि कूदे सीया हर्ष सत॥९॥ कावसीय रघुपति ते दुख रहे॥ चढु स्त्रम स्त्रम मे
वनमाहि विचरै है॥ सीय के दुख भ्रम मो मन भारे॥ लंघन सकौ उंगलै पारे॥१०॥
हे भरथ जिउं तुम जावो॥ क हू ते उनकी सुध पहुचावो॥ कपा जो भरथ कुमो रव
चाये॥ राम सीया कथ्या न लगाये॥११॥ दोहरा॥ उंगापार हू उतीप मो वे कर तपुकारे॥
हे लछमन नहे मन व घन कहा है दो है वलभारा॥१२॥ फिर तदि रत देखे दो कछिन तन्नमर
छपाइ॥ परे खेत रण प्रा कलीने तु न देहि संभार॥१३॥ सवैया॥ राम सीनिये हनुमा
न दि येमि रतक चहू डोरु पार वरे॥ तन घाउ गये सर एहु धमे चल ही पर बाहु रम
ध धरे॥ दोऊ वीर परे सुध हीन तहीन रही सुध वीर कीचि न कहे॥ वि सम न मरा नक
हे हनुमान जसोर घुवीर के वीर धरे॥१४॥ सवैया॥ तुम राम रणमे व सभार हू तेव उ
घो धम धान कराकसमा रे॥ तुम रे भय ते त्रैलोक उरे सम तेरु पति उन्म तेज तुमारे॥
सवधान रे षात्र न सो लर हो रण मो तुम हो भुजरे वलभारे॥ दुरमंद नकी दि
नी रन ही वन मो दुहि दोर सभा कुसघोरे॥१५॥ सवैया॥ इहि भांत पुकार पुकार रथ वि

योपै नहीसधपावतनीरदोऊ॥नरखयोल्नतउग्ररदीयोनरछ्यज्ञातिमरछपाइपरे
रणझोऊ॥दुहूंबोदुहूंहाथउठाइलीयोरनवंतसमानवलीनहीकोऊ॥दिख
भरथउदारसुभ्रातनकोवदेमोसोसरादरनकीनहोऊ॥१६॥दोहरा भमरथ
देषदोऊभ्रातकेोरदिमेज्ञातिमखपाइ॥वडुउपमारनवंतकीकीनीरहरबम
हाइ॥१७॥पुनभाषतउनमिसोघीसुधवछदीजेवीर॥लछमनकोनुरछाड
रणवदाजयेवडुधीर॥१८॥चोपई॥लछमनसोसंग्रामकुकरायो॥वदाजयेवडु
विजेधरायो॥रनजानोवाव॥इदुजीतसेवलीमहाने॥योरेभयसमसर
केपाने॥१९॥

ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ पद्मासपर्व लिख्यते ॥ दोहरा ॥ नीलवर्ण देवं धपगासे
ससार दाध्याय ॥ रहमलाल भाषा रेय या समत प्रगटाइ ॥ १ ॥ छपै छंद ॥ नीलवर्ण
अघमोचन पंकज दल जी हैं ॥ बुधि विद्या को धाम प्रजहीं सुरन नरांग बनि हैं ॥ ग
वरनं दसुख वेद हरण दुख जगम सुखदायक ॥ ज्ञान तेज बल रूप उपम ते अनन पा
यक ॥ चित हर्षतस सदा आनंद युत भजत बलत जाराफ सुरेद लन ॥ रहमलाल लवहीव
नी धरहि तचित तहें वंदत नचरन ॥ २ ॥ चौपई ॥ व्यास भ्रम नपर्व त्याग कौन पा ॥ यम्हन उ
पजे अंशा तज अनरूपा ॥ धारहू तु दृढ भवन नजरो ॥ जग जनसु पर सो तेसु रवपावो ॥ ३ ॥ दो
हरा ॥ वैशंपायन सो कहेय जनमे जा वह ज्ञान ॥ सोपै कहे विसतार से सकल लख पाप्र
भजान ॥ ४ ॥ धर्म पुत्र जब हते सभु दुर्योधन ते [illegible]दि ॥ छत्र फुलायो सीस निज
भाठे राज अवादि ॥ ५ ॥ धृतराष्ट्र गंधारी सहत पुत्र कुरव हीन ॥ धर्म जबै से वर
त है उनसो कहो प्रवीन ॥ ६ ॥ वैशंपायन बोल्या ॥ चौपई ॥ दोहरा ॥ हे प्रीक्षत सुन
नपवली भवन आवतो इहू जाचा ॥ धर्म जधर्म सरूप वर भरथो ज्ञान सा था ॥ ७ ॥
चौपई ॥ धृतराष्ट्र के पितपं उस मानें ॥ करे से कज्ञा ज्ञा हित टाने ॥ याम ोरही तात
कोज्ञान तान्ते ऊकर तानि सदिन सुख मानता ॥ ८ ॥ नाहू नीत तानि त पृष्ठ त सभ ॥
ज्ञा ज्ञा पाइ कर रक्षायुत ति ॥ जब लो ता अनकसा ज्ञा कर ई ॥ को उकाज पर्ण कहि पर
दे ॥ ९ ॥ उर प्रभात प्रभु च होइ धरम सुत ॥ चर्ण तात के वंदत हित युत ॥ पाछे कार्य के
रसे भारे ॥ ते भी ता की ज्ञा ज्ञा धारे ॥ १० ॥ दोहरा ॥ कुंती द्रनको मान कर दुपद सुता भव
जान ॥ सुभद्रा सुमना वतु देत नसे सेव गंधारी दान ॥ ११ ॥ गंधारी को राय ही दर्शन दि
न कै सोरा त ॥ तो की ज्ञा ज्ञा मोर हे ताबि नु करे न वा त ॥ १२ ॥ भा वन सब सन क ज्ञा रस भ

गफलन रपहि तयेको त्याइ॥ सम भले जो वे तातें ये धर्म ज्ञारत ज्ञधि काइ॥१३॥ चौपई
धृतराष्ट्र ज्ञ पे देवे हितिभाग ज्ञान धर्म जले हरखत॥ दुहूहे तव धे ज्ञाति ज्ञाता॥
इहु वा सो इहि सो उदुरा ता॥१४॥ गंधारी ज्ञ रहे ती माही॥ व धे रेतु क धृगन ती
ना ही॥ सुभ दुर्दुपद सुतासत रूपा॥ गंधारी के कहे चले ज्ञन रूपा॥१५॥ हर्ष गंधा
री धृतराष्ट्र सरूग॥ दीये विसार सुत मरण शोक घन॥ संजय कौ यु यु तस तु
धभाभा से वतात कौ वर तस चारे॥१६॥ जह मो हर्ष तात के पावे॥ नि हसो नि स दिन
सुख उपजावे॥ धृतराष्ट्र की सुध पल ध्यान माही॥ धर्म जले ते विसारे नाही॥१७॥ जे उर
रिमग तहां रिसे बाक रई॥ रहे सर्व ध्यान विसार न धरई॥ सपाचार्य धृतराष्ट्र के निकर
वरा॥ सो व्यो धर्म जव उहे तधर्म॥१८॥ सदा धृतराष्ट्र के निकर रहावता॥ वेद पाठ सुभ कथा
सुनावता॥ रिषि मन न सुर ज्ञ रंद ज इति हासे॥ पुराण वे पा सुन दुरवु नासे॥१९॥ धृतरा
ष्ट्र को हरख पुरावता॥ ताके मन के शोक न सावता॥ कीर्ति न ज्ञान रहा ताति सक ज्ञ ज्ञाडे॥
यां हसुने व उ ज्ञानंद ज्ञाडे॥२०॥ च हूं वर्ण के धर्म सुनावे॥ ज्ञेन कभां त वे सरव
उपजावे॥ ज्ञा स्वन चार रीव या सुनाई॥ जिस कर उपजे ज्ञान मन हाई॥२१॥ दो हरा
जे धर्म तु रे मि सन निर त ज्ञावे न पढे भार॥ त्रय मति लिय धृतराष्ट्र सो पुन धर्म
उनि करा रा॥२२॥ मं त्र करे धृतराष्ट्र ये ते उ धर्म ज परमान॥ त्याइ नीत ज्ञा ज्ञा विना
धारे ना हसु ना न॥२३॥ चौपई॥ वे धन मुक तं दे उ कौ दाना॥ सम धृतराष्ट्र हाथ
महा ना॥ हर्ष परमो दो सुख भारे॥ पुत्र न के सुख शोक विसारे॥२४॥ धर्म जव
दुप लसु देम रे॥ धि नो ध्यान ता ते हे ज्ञा डो धरे॥ गंधारी कौ से व वडे हित॥ दुपद सु
ता ज्ञा दे धर ही नित॥२५॥ सुभद्रा मुख्य रु दन के भजनी॥ तिन को गादसं दर सु रवम

गनी॥ अनूपी नाउ सत संदर ज्ञाति॥ इहि अर्जुन की नारी भ्रमता॥२६॥ पंडुसुते
की जेती नारी॥ अंधारी सो बहु है तुम भारी॥ धृतराष्ट्र जो आज्ञा करही॥ सभी है नृप घर
परण धरई॥२७॥ ऐसे सुतें पौन थोर रही जाई॥ धर्मज क्रद्ध रायो सुमन जाई॥ भीम में घसत तना २
है हताये॥ मन ताको दुख शोक उपाये॥२८॥ दोहरा॥ सुत राजे ते सब हरस गुन भोगवि
लास हुलास॥ धर्मपुत्र के राज में धृतराष्ट्र परकास॥२९॥ शोक सुतो के तज दीये र
षंत बहु सुख माहि॥ पंडुसुतो की उपम बहु मुख मुख जग प्रगराहि॥३०॥ चौपई
नेगी मंत्री अरु रसेना जिता॥ सभी तात की आज्ञा मानित॥ मेरे नारद ये मुख पुगरे
रे॥ कोन तात की आज्ञा टारे॥३१॥ दुवभंडार सभ ताके हाथा॥ जिम चाहे तिम सदेहि
तसा थ्या॥ राजन तुरंग अरु रथ सुखपाल॥ कीरे दान धृतराष्ट्र विशाल॥३२॥
पांडु वान केसे वदि साये॥ त्रियसण हर्ष तन रहे महाये॥ पुत्र कुरंव के हेतु अपारे
हर्ष पर होइ दीये विसारे॥३३॥ अंधारी सण उठ परभाते॥ अर्जुन करे तात बडगाते
देव पितर को तोष कराये॥ बहु असीस इन को उचराये॥ निज पुत्रन की मत धि
क्कारे॥ कैसे धर्मात्मा जिन ऊपर धारे॥३४॥ दोहरा॥ हस्तिनपुर के लोक सभ रर
धे बहु सुख पाइ॥ धर्मज की उपमा करे दुर्योधन लघुताइ॥३५॥ धर्मपुत्र आ
ज्ञा करी सकले नगर मझारा॥ दुर्योधन शकुन दुहसासने निंदन करो उचार॥
३६॥ चौपई॥ अस मन होइ कीने लघुताई॥ त्यौं या समेत सुन तात तपाई॥ धृतरा
ष्ट्र अरु धर्मज माहीं॥ वधे हेतु जाति गणती नाहीं॥३७॥ कोन लखे दुहु ते को राजस
ज्ञाति भ्रम चल नहीं राज समाजा॥ ऐसे को उ वचन कहे प्रगराई॥ या मो तात की रो
लघुताई॥३८॥ धर्मज सुन ज्ञाति कोप भरावता॥ राजन पर वह दंड करावता॥ अर्जु
न नकुल सहदेव वडे हित॥ राये धृतराष्ट्र सो बहु हितू॥३९॥ इक भीमसेन सो ना

५२२ हविमलमन॥ पवनपुत्रभीतैसेहीगन॥ धृतराष्ट्रगंधारीसनइवीदिनतिन॥ वि
देयेदेऊहरषपरचित॥४८॥ पंडुसुतातेनाहनकोई॥ जयेनिजनिजकामैसो
ई॥ भीमसैननतवनिजस्थाने॥ वृद्धेहर्षकृतरहसाने॥४९॥ भारशावदभजप
रभुजमारे॥ मुखतेकहैवैनउरवारे॥ भीमोवाच॥ इहीहाथवलपररहमारे॥ जिर
वलसमकौरवसंघारे॥५०॥ दोहरा॥ यातैचंदनमलोभुजह्नवलकीयेकृपार॥
दुर्योधनसोउरुवलजिनकीनेममघार॥५१॥ धृतराष्ट्रसुनतरिसवधरमरण॥
ननवहोइ॥ किंरनतकेहैनिजनारसोवृधकृपारथीसोइ॥५२॥ धृतराष्ट्रउवाच॥
चौपई॥ कृसवमुरिजीवनकीनहीत्रासा॥ सहनसकेकोईरवचनविलासा॥ सुन
गंधारीवुधसतघानी॥ जौहमसमदुसरजगनहिघानी॥५३॥ व्याससारजिहिम
उजरायेचिचरनथेजगमागेहसुहाये॥ शांतपूरवंतसोवोले॥ सेनावंतहरिरच
नकृतोले॥५४॥ गांधारीउवाच॥ हेस्वामीजीज्ञानविचारे॥ धामोदोसुनकाहूधा
रे॥ कर्मकृतधीनसभीजगुजानो॥ ईशदृष्टकीइहीपधानो॥५५॥ वैशंपायनो
वाच॥ दीहजाधधर्मजवधुनसुनाई॥ सुनतभीमपरहेतकृपाई॥ चितचितनाधृ
तराष्ट्रधर्मजपुनि॥ मुखतेवैनउचारेचिततत॥५६॥ धृतराष्ट्रोवाच॥ दुर्योधनकौ
भ्रातासहूतहतान॥ मेहिकृभाउपतेतसोसुजाना॥ हमसमतहीनेसंराजदीयेति
हि॥ तुमसधर्मीदुखीकीयेजोहि॥५७॥ राजपुत्रकोजानदेतहमशोकहहोवतउ
कहानइरसम॥ पुनभ्रीरहमसेपर्मासतोरे॥ होवसीठकायेमोरहवारे॥५८॥
मित्रभावसपदेवनहोरे॥ कहैवैनरमम्रवगानधारे॥ रिदेरमोरेस्मतकेवऊहित
जाथनकनूरीकाचित॥५९॥ पुनीनिरशंकहीरपुगारवधाने॥ राठलेदकुलदे
सनराने॥ पउसतेमोवेरनधरहो॥ सुतपरचानशंतसुरवपरहो॥६०॥ दोसन

दुष्ट तुहि कहा न मानै॥ चहू को बांधव ग्रहि धरो महानै॥ दुर्योधन कर्ण दुसासन जादे॥
चौथो शकुन कपट निहवाधे॥ ५७॥ पांडवा न सो शंक गहा वो॥ नातर कुल सन हते
दिखावो॥ तो भी हम नहीं कहै न मानी॥ होन हार मति बुध वोरानी॥ ५८॥ चेह मन हरि मे वे
न सुनावत॥ काहे कुल की हानि दिखावत॥ बहुरवास मुन गंधारी सुण॥ मति बुध व
हुधि दकार कीये घन॥ ५९॥ उन के भी हम वचन न माने॥ विन दुर्योधन सघु नहि ताने
पुन अशंक हो कीये वड पाप॥ याते भयो वड हान अमाप॥ ६०॥ भीम वैन न मनि दि
समवाना॥ अमुधार तहे दुसह भयाना॥ दुर्योधन सण भ्रात हताये॥ इहि दुख मुहि
मन ते नामि राये॥ ६१॥ मुहि दुख गंधारी विन ओर॥ नहि जानै या को सुध होरू॥
नहि हित को कछु कहीन जाये॥ तुम राजन को जस भुम हि वस पाये॥ ६२॥ दोहरा॥ ह
मरे हित रस भरे फल स्वाद सुधा सम जेह॥ छिन छिन ल्यावो हरि तव उपैन अहर रहो तेह
सह जात जम मसोर रहो निस चिंता चित लीन॥ वीव्ह जर तेहो मर गए सम मा दि यामुनप
रे प्रवीन॥ ६३॥ मोद कध छंद॥ पुत्रन के शोकन ताप न हो॥ निज पापो ते संताप होइ ल
खहो सब आयुर यो रहो॥ ताते तुम मो ताय पुगार कहो॥ ६४॥ तुम मो भ्रमहि तु धार न हो॥
पिततेभी अधिको विचार तहो॥ तुम या के फल हीर ते पावो॥ दुहु लोक वडे सुख उपजा
वो॥ ६५॥ दिन दिन तु हि आयुर ते जवधो॥ मन बांधव तनु मेरे का जस धे॥ सुन धर्म स्वरु
प रूपा अररहो॥ चित हर्ष तमो हि विदा धरहो॥ ६६॥ फल कंद मूल आहार धरो॥ अपुने
सम ताप त्रे मार हरो॥ गंधारी सण वन मांहि गमो॥ तप साधन के ध्यान रमो॥ ६७॥
तुहि आशिष दे उत्र पार हि ते॥ सलु आयुर ते जु व धा इजि ते॥ आजो भी अनिव कुम
प भयो॥ देरा जु सु ते वन मां हि गये॥ ६८॥ दोहरा॥ नहि हत्वीय ते तुहि सम सम कुलस

खुदाई सत खान ॥ सुत मयो भूपत किसी के नाहि भयो वर ज्ञान ॥ ६६ ॥ तुमरी तो रेख
स्म चित न प्रजा उठे है सुख भार ॥ जिनकी तुमरदा करो धर्मात्म अवतार ॥ ६७ ॥ तुम मे सो
कहीन बने रघु तुम सम ज्ञान प्रवीन ॥ दुख काहू नहि दिष सके ज्ञान भारी रीद लीन
६८ ॥ हित सो तीनो काल हम तो हे अ सीस देह ॥ तप का फल तुम को घना उपजे हमरे ने
हि ॥ ६९ ॥ वैशंपायनो वाच ॥ चौपई ॥ धर्म जज्ञ सुत न तो विस्म ज्ञाति होये ॥ चित धार चित
ज्ञाति बहुरो ये ॥ अपुना आप संभारन परई ॥ वलत नीर दुग वचन उचरई ॥
धर्म ज्ञोवाच ॥ दोहरा ॥ तात लषत हो ताजे ते हमरे हर्ष महाइ ॥ हमरे मन इहि सुख व
डे उपजरो से वहि तपाइ ॥ ७१ ॥ तुम त्यागत हो मोह को हम न ही साग सको ह ॥ जिहि व
न जावो प्राणम मति हवन हम भी जाइ ॥ ७२ ॥ वन उदान तुम विप्र अजनि करे से
व के भाइ ॥ तो तेरा धो संग मनहि सुख होट हि लहर थाइ ॥ ७३ ॥ चौपई ॥ सीतल जल फल
हित सो ल्यावो ॥ सेव धार व उ सुख उपजावो ॥ निज तुम मो पर भये दयाला ॥ राजति
लक दीने मुहि भाला ॥ ७४ ॥ अब उदास सब दुखै से होवै ॥ वन हमोरे जीय ते खोवै ॥ के
अपराध मोर ते मये ॥ या ते तुम री रीदत प्रये ॥ ७५ ॥ हम तो हि सेव भाजो न जज्ञा
वे ॥ मन न वच कै म जीय निहचा वे ॥ तुम विन राजु तितका ज हमारे ॥ तुम को देख उ
पजे सुख भारे ॥ ७६ ॥ तुम ही पितु तुम ही गुरदेवा ॥ तुम ही बड़े हमार अभेवा ॥ तुम बिन
राजु भोग न सुहावे ॥ राजु भोग दिख दुख उपजावे ॥ ७७ ॥ तुम रास तयुयुत्सु सचारी ॥
राज दीजीये तिहि हरषारी ॥ अथवा राजु भीम को दीजे ॥ अर्जुन को देहो सुन लीजे ॥
७८ ॥ अपना या या के इछ तुमारे ॥ देह राज ये योगि विचारे ॥ मोह राज सुख तुम सो ता
ता ॥ कैहो स्वच्छनि ज्ञरिंद की वाता ॥ तुहि आज्ञा जाते राज करत हो ॥ तुहि सेवा ते हर्ष

धरतहो॥७॥दोहरा॥तुमबनमाहदुखीरहेहोहमनेरेसुखचिहिकाम॥जहांतुमतहहाहम
भीरहेहोतजेजनसंगकाम॥८॥धृतराष्ट्रोवाच॥चौपई॥हेसुततनपपरहछहमारी
प्रगटकहतहोसुनोसचारी॥हमरेकुलमेचलतीआई॥राजयोगसुतजवहिप्रा
ई॥८१॥सुतैराजदेनिजनतपुधारे॥जगतजईगसे ध्यानमनधारे॥ऊदिमोरूपाचा
र्यसंजयसग॥तीसरविदरभगातनिरमलमन॥८२॥आप्तजाईदेवाईतिनडिहिर
चन॥धृतराष्ट्रधर्मजवेवचन॥आठदिवसभावादुसंवादे॥दुहूमोवीतेनिहि
मिरयादे॥८३॥जलभोजनीकनहूनानिहारो॥भयेअसकेदुहूकावलुहारो॥
तवधृतराष्ट्रजोरदोउहाथा॥च्याहेचहेधर्मजसोंगाथा॥८४॥पिसलपांउभमप
रगिरपरयो॥जंघारीदोरअंकमोधरयो॥सावधानहोतातउचारयो॥सुनसुत
तुमसुखप्राणहमारे॥८५॥हमतुहिपितुतेविप्रछवेजाति॥मानविनीसुखसिदाकरे
सता॥आउविनीतहमपापेकीनो॥अंतसमेबनतपेपुवीने॥८६॥सभजेउरमखध
रपुजाई॥तुमरहोधर्मजसोसमझाई॥८७॥दोहरा॥धर्मजतातकोरचनदिष
भयोचितचितालीन॥रुदनुकरतद्विगभरेजलउचारतमुखपरवीन॥८८॥धर्म
जोवाच॥हरिरचनानलपीपरेयासमानवलभारउजनधरतहोकहुसेरा
आवपगहीनसंभार॥८९॥छंद॥जवतातवलवीचारतहो॥तासमनदूसरोधारत
हो॥लोहभीमकोअंगलगायो॥कीयोचरकरकोपुदवायो॥९०॥अवतेकृपगन
संभाररहो॥गिरगिरपरभ्रमधारसहो॥सभमोहपापेजानहो॥अधुमर्मभे
दनमानहो॥९१॥धिगधिगहमसीएहमता॥थानेभईइहुतातगता॥इहुकोहिन
पपजपरपरयो॥वहुधीरवलुतातेधरयो॥९२॥धृतराष्ट्रोवाच॥सोरठा॥आजमत
मयहरतोहा॥जिहलागमुहिवलुवधो॥पुनइहीहाथदेमोहिलावोक्रस॥श्रीधार

३२५४॥ के॥ १५ ॥ दोहरा॥ मरदन कीन सुगंध कजनि दिहत ली योइंजेगलडाइ॥ वल उपजायो ता
तन न धर्म जदे हि धृहाइ॥ १३॥ चौपई॥ पुन कहे मुख सुनहो धर्म जवरा॥ मुहि बडइ
छरहो बनन तपुधरा॥ बनबीभन मुहि दिरे देहि ताजी॥ वसोन दुसतन पुरबड ज्ञानी॥ १४॥
योदरसे तुमा विदान करे हो॥ कजन पेछु उठ जाउ विचरहो॥ बचन वियोगतानके सुन
सभा॥ धर्म जसुन कररसदु नु भरतवा॥ धर्म पुत्र तन वधीर्य बचना॥ सदन करत मावेवर
रे चन॥ १५॥ धर्म जो वाच॥ दोहरा॥ तात तुमारे कहे तेपरो नहि पुणभार॥ या ते तुम कह
धतरहो ते अहमारे सार॥ १६॥ २॥ चौपई॥ विनीजा न सधु करो जहारे॥ करो हुमा
रे सो कनिवारे॥ तातो वाच॥ हे सुत तुम रे वेनन पेरे॥ तो हिशील ससभ ते बडहेरे॥
मेरो जहार ये पुण ठहरावे॥ सम कोइ विदाकरावे॥ इहि मो न्यास देवजगमाने
वेठा यो वडहेतमहा ने॥ धतरा पुकी सकलीगाया॥ धर्म जपुगरव ही हि तसाया॥
१८॥ व्यासो वाच॥ देध मिजनु हि तात सुखरूपा॥ सते शोक भयोदु धसरूपा॥ पुत्र पो
चे सकल रहताने॥ वधपुटंबमीत नरहाने॥ १९॥ बडु दुख धरे कहे न हीजावे॥ जोक
हीये बडु भूमउपजावे॥ तोहि बने या बचनन मोरे॥ या कोज जाहि ते नि तसो
रे॥ २०॥ पुत्र कलच सथ मरणाजोहि मेरे॥ मत तुमरे वरजेदुख हेरे॥ सन हो इसो
केमर जाये॥ सचबधु चलेन तोहि उपाये॥ २१॥ छत्रदेविध प्राण तजावे॥ के सं
जामें तेप सुहावे॥ इहि दुगहे नयधुकरन सकवे॥ तातेबननतपुकरवन जावे॥
२२॥ येविधु गराघतदीह वडसूरा॥ सभभ मकरतचिन्तवसवलभरा॥ यासन्मुखवके
ठहरन सकावत॥ योठहरे यमधाम सिधावत॥ २३॥ तोहि पतु पडुजसरवेठ वलीजीत
याको सेवकरत हि तरहे॥ इनबडुयजकीये जगमाही॥ तोहि पतु नवशासेवामा
हे॥ २४॥ तुम भी पितन समवडे विचारो॥ याके केरनीपरो मचोरो॥ तुम जवकहो दमरा

जुतजाँवे॥ तातसंग वन माहसिधावे॥ तोहि समान नहीं रिदे विचारे॥ सबे सभा सो मे
रुभचारे॥१०५॥ वैशंपायनो वाच॥ दोहरा॥ विद्या गन तप तेज मय नहीं कोउ व्यास
समान॥ ताके वचन अमोर जग ऋद्म लाल जो यज्ञान॥१०६॥ धर्मज व्यास के व
चन सुन रोवे भर भर स्वास॥ कहे कियाश्चत तजु पेर हो वचन अमोर व्यास॥१०७
व्यास विदा हो उठ गये पाछे धर्मज भूप॥ अन्न न कमांत मोजन न छोर छठ रस स्वाद अ
नूप॥१०८॥ चौपई॥ छोरे वडे वुलाइ लीये सभ॥ भोजन न करहीं वडे रे तन तव॥ निज
ही यें धर्मज वडु हित धरा॥ भोजन न तात के मुख डारे वरा॥१०९॥ नवु हो हर्ष तत तात उचा
रे॥ वसे क्रार जाते जनु मारे॥ तुम सो विदा होइ वन माही॥ जा वो वहुर मिलो वा म्ना
ही॥११०॥ ताते सिष्या सुनो हमारी॥ हरि रस मिमर न मोर हो सरचारी॥ सोई करो हर रखे ज
गदीसा॥ हरि हर रखे सुख भाग जगीसा॥१११॥ अज्ञा पट हर्ष हित तथा जनन कर ही॥ भो
ग योग सुख वडु भ्रम धरही॥ पर जाहर रखु धरे या माही॥ ते अकरे न पसु ख उपजा
ही॥११२॥ वडु यो के वचन सुन्या व तर हे॥ नीच जनन की सिष मन तजा है॥ भूप
न को वर न्याइ उचारे॥ पजदान ता सम नहीं विचारे॥११३॥ दोहरा॥ न्याइ पछ हीन न पो
ने ज व हरि ले घाले इ॥ ते अ सुर दीजो न्याइ पो न्याइ हीन भूमदे इ॥११४॥ राज सम मा
न न करु ऊन न धु दे घोरि दे विचार॥ सकल पु जाकी सुध समे रै से नाको र समार॥११५॥
चौपई॥ प्रथमे गढ कोई शध्यान॥ ले उती मे जी शील सजाना॥ से ना नीर संभार तर
हे॥ सर मन सम तमत जिहि लहे॥११६॥ देघो होइ जिनो से उपमा॥ जिन करे नाम ज
गत परमानम॥ तिन सो नपव वडु रे तनु संभारे॥ भावी करण तिन पर धारे॥११७॥ जव का
प रस्का मुको अमाही॥ अपने काम ते उ वसल करी॥ अपन को धनु सेना ज्ञाने॥ जिहि
॥ दुर्योधन के रे तने मन र हो वेगार वाना॥ हो
मोहि वर से नाहि ठिकाने॥११८॥ दोहरा॥

३२५ इगयेहाजाहिगोईशइघइमानम॥११॥यद्यपिइधाईशकीहोवनहैनरहाइ॥
तेभीनरकोचाहीयेउद्यमकुमनतजाइ॥१२॥चौपई॥केतूगारबुहिरदेनही
ज्ञानो॥समावलीसमपरपाहिचानो॥ज्ञाडोभीवडभपतमये॥गर्वबुद्धमे
भारीतव्रये॥१२१॥दुर्योधनयेगर्वुनत्याडो॥समकुलहानपंचजीहिलागे
हैसुतगर्वबुरिदेनहीत्यावे॥पईशकीउपमाहितावो॥१२॥चउयेकेवरमा यम
नवधावे॥जिहिहोरहर्षतेउगाघमाने॥चिन्नउदारद्दुडशीलसदासत॥र
होसदाक्रघलगेनतुहिरुत॥१२३॥योजननेहोइबुद्धिसतेचारो॥क्रपुनानिवे
रगोबोहितुमारे॥सतवादीनरच्वतुरसाने॥समकीसुधतुहिदेहिसुजाने॥
उनतेभीसुनीरदेविचारे॥मनतलोभकेहेक्रसत्रसभारे॥येक्रसत्रवादी
पुगटान॥ताकोदेहुनिकारमहान॥१२४॥नेडीमंत्रीकोसमकीगाघ॥
परुचेतोहोसदायथार्थ॥जिनकेहितमाह्वेतुहिसंग॥तिनकोराखोसरवीक्र
भगा॥१२६॥कोटकोटभारीगउबंवे॥तहाजिजवासुधरो॥निरसंको॥भयोके
भरहैवहुतेरे॥निसादिनरहतसमेकोहेरे॥१२७॥तातेतुमसविधानरहा
वे॥मनकोकूपपरतिसीतेघावे॥शस्त्रपरस्परवलभारे॥धामेकोराषोरषवा
रे॥१२८॥दररषवारेक्रसस्थलेहो॥विनक्राजातिसेजानननदेई॥येजन
निजहितवकारीजाने॥जलभोजन्नीतरहायेठाने॥१२९॥दोहरा॥क्रवरीके
सीसेराघतेजलभोजनक्रच्चवाइ॥मंत्रीजीयेतिनोकेजिहिहोइमनकोइ
धकाइ॥१३०॥पुरकीसुधकेसेसुधरोजिउमालीफलफूल॥मलीसनाबोजि
नेमीतिनसोरकुसनकूल॥३०॥याहिबुराईमतसुनोदंउधरोततजाइ॥तादि
घसभलोगपसुमेक्रपमभेकोनलजाइ॥१३२॥चौपई॥दुखकाकूपरहोनमदे

नृधपापतेजानहतोवे॥५

जोन्रपभयसभकेमनवसे॥ तान्नपवेकार्यसभरसे॥ पुनमहितुहिमिलननहोइविनहोवे॥
ईशइछाधियावुजरबशेवे॥१३३॥ दुरवकाहूपरहोननदीजे॥ येदुरवदेहिदंडनहकीजे॥
याकेराजदीनदुखपावे॥ ताकेन्याइयेनपनहतोवे॥१३४॥ तेसभपापभूपकोला
गै॥ तांतेरहोन्याइअनरागै॥ सभकीसुधरावोसवधाने॥ वस्त्रसुगंधतनधरे
महाने॥१३५॥ न्याइदुवभंडारनपावै॥ जेसाकरघैतैसादंडदेजे॥ साधिकउन
तेपापभरीजे॥१३६॥ मित्रितशास्त्रविचारतरहे॥ शत्रुनकेवलनिजवलदहे॥
निजसेवेनापरहोदयाला॥ रुधधारवलधरेविशाला॥१३७॥ पंडतरिविदजाविद्या
भारे॥ निजदानेभाषेदरबारे॥ तिहिकजसीसनुहिहेतुवधावे॥ भारीपसतुमराप्रज
न रावे॥१३८॥ मित्रकेसुमित्रनिजजाने॥ भारीहेतुतिनोपरठाने॥ शत्रुनकेशत्रो
सोवडहित॥ जिहिकिहिरावोतिनकेरघत॥१३९॥ येजनपरकेहिजारनहारे॥ ये
विषुदेहिनपापसंभारे॥ येजनकदोसदीनाहितुकरही॥ येपरधनहरतेनाहिडर
ही॥१४०॥ येपरत्रीयसोलोभदिखाई॥ परपुरुषसोजाइरमाई॥ वचनीसहितयेदंड
कहेहितै॥ जेसेजेसेपापुहोहिंजिहि॥१४१॥ हेसततुमनिजजानस्वरूपा॥ भीषादई
तुहिसधक्रानरूपा॥ तमसोकरहतमसहिदिस्वरूवावे॥ निजमेजाननतुहिरश्रमुपावे
१४२॥ पितासोवडहेतहमारे॥ यातेकहोसुनोहितभारे॥ तूधर्मपुत्रधर्मोकहतानी॥ सभ
कोसुखदाइअतुहिजानी॥१४३॥ सोरठा॥ जसकरनाजहतलोक नतेलक्रजादिसभकोर
मे॥ रहेसदासुनसोनघरननपावेरतुभी॥१४४॥ दोहरा॥ शस्त्रअस्त्ररणसाजसभस
धरहेभरमरायुधृपरेतवस्त्रभिवितनरोशत्रुरणचूर॥१४५॥ चौपई॥ वडुसेनानीतुम
रवोई॥ तुमसोनिर्मलरिदानहोई॥ दंडउपाधकीठोरपठोतहि॥ चौरउपजघरचढेहोत
हुजिहि॥१४६॥ तहांवहिरहेधरेषुमभारी॥ घरजोवैतिहितेजुभयारी॥ करउरेनिहस

भजरहाई॥मनक्रमवचदंभकाहूतेधाई॥१४६॥तेउविचारकरहोवहुज्ञाने॥अरगनहि
दोरवअपरेमहाने॥आपनक्षमेअररहेसदाई॥तुमपरवलुउनकानचलाई॥
१४७॥तुहिसेनायेसररमतूदिषरावे॥चनेनेतोहितेधनवहुपावे॥होइदयालतिन
कोसुखदीजे॥कपाअपाररहेतुवहुकीजे॥१४८॥योकाइररणतेउठभाजे॥सुखुनहि
पावेनिजप्रमुलाजे॥गाबदेसनिरभयनवसावे॥तुमरेभयइतिउतभगजावे॥
जहांवलशत्रुनकेदिषरावे॥तिहिठांकोविध्वंसकरावे॥अररकोवलसोंहीणारा
षे॥वसुअररकानिसदिनगदिराषे॥१५०॥दोहरा॥अररसैनातेतुहिनिकटउकरा
वेयोसर॥तपसोवडहितकीजीयेहेसुतधर्मअरसवरा॥१५१॥येजानोअरतोहिते
राषैसेनअपार॥तासोहितउपजाइकेधारोनिजहितकार॥१५२॥चौपई॥येजोव
रूपसगरामुवनावे॥धरोधीरकार्यसिधपावे॥निजसेनापरकरसाधरो॥मधुरवे
नसमसोप्रगटरो॥१५३॥तुमतेऊंचासुखवलाभा॥जीतोअररोगहोसुखभा॥गज
जरपकरसमरपालदेहुहितासरणाभमवसुदिषरावेहरषता॥१५४॥विजेहोइज
वतवहरषावे॥वहुधनवांटोकरणाधारे॥सकलसेनकोकरहोहरषता॥धनकोसें
वस्वुइंदुसमवरषत॥१५५॥सेनसेभारकोराजकीवुधसभा॥युधकीजातीव
मिरतसकलनवा॥उजावरतनसभधर्मइतिन्याये॥धर्मजसोधतराप्रजा
ये॥१५६॥पुनरहेहेधर्मजसुखरूपा॥न्याइतुल्यचधुनाहिअनेरुपा॥न्याइ
नीततेयसुईहलोके॥परलोकेसुखभाअशोके॥१५७॥सतजसवमेधयज्ञतपु
दाना॥निहचेजानुनन्याइसमाना॥धर्मजसनतरहथवहुधारो॥भाषनमुख
सनतारहमारो॥१५८॥धर्मजोवचवाकामतवचनमइतुहितातात॥सुनउपजाइ
हरषअतिगाता॥श्रीपदुपावनकरणाभंडारो॥जपेहेवारापुरीमअरो॥१५९॥वृक्षज्ञा

नकीबानविदरतर॥तेभीहरिसंगगयोहैतुधर॥ज्ञानजेहिभीषमसुरलोकेगयोसा
गजगकोनिहशोके॥१६५॥ऋषवतुमविन्दूसरननिहारे॥जिहिवचसुननिजसो
सनिवारे॥हरिसमकोपितपंडुसमाने॥तुहिहितुहेमोहिसंगमहाने॥१६६॥ता
तोवाच॥दोहरा॥हमदीनेतुहिछेकेज्ञातिमहिंजावोसुरवसपा॥सुरवसोसोईनिवार
सुमपुनऋगावोवरमुप॥१६२॥धर्मजउठवरगामुकरगयोनिजधामसुचार॥
धृतराष्ट्रऋपुनेगयोरहमलालपुगदार॥१६३॥चौपई॥तवउठधाराममतोसोबोले
स्वनोकततुहिशिदिज्ञातिउले॥सर्वज्ञानव्याससुबुधरूपा॥तिनकोसीजानुतुहि
वनेऋजनरूपा॥जवतुमधर्मजसोपुगदाने॥क्रियाउचरतुमदीनमहाने॥१६४
धृतराष्ट्रउवाच॥जवहमधर्मजसोसमझायो॥सुनतीरदेखितासधकायो॥मुरखकाहीत
हऋाज्ञानमुरावो॥वयवनमोतुमतेसंगजावो॥१६५॥घनेवादसंवादहमारे॥धर्म
जतवऋवशपुगदारे॥पेडकुऋवरीदेमोऋाई॥दुर्योधनकोपापनहाई॥१६६॥धर्म
जसेयातेतप्राने॥यातेपरेक्रियापापुमहाने॥ऊपदवडेइनसोउनकीने॥सर्वसुरर
भारीसुमदीने॥१६७॥दोहरा॥त्वाहतेहापुत्रोहितेतोछोदिजोरिछभार॥तिसफल
सोउनकेसमेकरहोपापनिवार॥१६८॥वैशंपायनोवाच॥धर्मजसोधृतराष्ट्रत
वकहपठोसंदेस॥त्वाहततहोहितसोतुऊधारेयजुनदेस॥१६९॥चौपई॥यजसाम
ऋमीमेहिसमदीजे॥यजहमारापर्णकीजे॥सुनधर्मजरिछिदिजइकठाने॥त्वारेवर्ण
कुलाइमहाने॥१७०॥येतुरछेत्रमेदिजसमऋायो॥हस्तपुरकेजनइकठायो॥धृत
राष्ट्रसमसोवरजोरे॥आघतविनोधाऋज्ञातिउरे॥१७१॥धृतराष्ट्रउवाच॥होरिछिद
जतुमहोवडज्ञाने॥तुमतेरहितमोसोऋाधिकाने॥प्रीतपुरातनहमसोराखो॥नीके
मेतऋावमोसोभाखो॥१७२॥समऋावस्थाविप्रकोईऋाव॥वनतपुधरनिजऋाघमे

रोसभ॥ धर्मजसों विदा कराई॥ व्यास रुपा करि रहो प्रगटाई॥१७३॥ तुमभी हर्षी विदा
म्हि करहे॥ भ्रसी दया मोह पर करहे॥ मोसुतमचे सकुल रण घाता॥ तिनके शोक
तपे स्रुति रुप्ता ताता॥१७४॥ भरु धनी दभोजन सुध गई॥ शोके दोह ष्मीन क्रांति भई॥
धर्मजराज मही स्रक कुस धिकाने॥ पेस्रत सो करहोत पताने॥१७५॥ ऋाबइही जिहि
किहि वने सिधावै॥ तपु धरइ स्वरके हरषावै॥ नरप्ण समा हम राजनि करायो॥ ताते
तुमसो आष सुनायो॥१७६॥ वैशंपायनोवाच॥ धतराष्ट्र केवेन दुखकरता॥ रिषिदिज
सुनतनभयो चिंतातर॥ रुदनु करै सभ धीर न धरही॥ पूर्व तेज वलया हि विचरही॥
१७७॥ पुन धृतराष्ट्र मुख ते उचराना॥ शांतन मोहि कुल परम हाना॥ याते सक
ल पुजा सुखु देखे॥ न्याइ नीत शात शील वशेखे॥१७८॥ जग्यो जोगु स्याउ समाज
व कराये॥ वचन तवीर जतां ठौर समुहाये॥ ताके राज सुखी सभ लोगा॥ कोन दुखी
सभही सुख भोगा॥१७९॥ ताते भीषम तेजस्वरूपा॥ तुमानिज देख ताते ज अनूपा॥
या सम दूसर नाहि दिखायो॥ वल विक्रम तेज तास्रुत धरायो॥१८०॥ मो भरात पंडु
सुभचारी॥ जिहि सतशील सम कोन दिषारी॥ सभ उठ गये कोउ न रहायो॥ ह
मभी ज्ञाहनि जस्समा दिखायो॥१८१॥ ये हम कीये तुमसो खधु पापा॥ धमामरोहे
रुपा लक्षमापा॥ दुर्योधन वड पाप करेहै॥ भ्रातन सो संग्राम धरेहै॥ सकल जग
तो तिनके संग्रामे युद्ध तहायो॥ कोगा ने ज्ञाकाने॥१८२॥ दोहरा॥ ये तुमसो भी मोहि
सत कीन ज्ञाविज्ञा कोइ॥ धमा करोहो दयाल सभ ज्ञापुन ज्ञान कीलोइ॥१८३॥ न
म शोकातर शब्द दिख करो दया होदया स्रा॥ गंधारी वडु पतिव्रता ते भी दुखी विशाला॥ सर
भ॥ हमरे ज्ञन धन्नी चिन्ता रहे लाइपुनो ज्ञान सभार॥ करो दया को पोन हीन मही सभ
रार॥१८४॥ धर्मजु धर्म स्वरूप है स्वभ्रमी लक्षी पान॥ याहि राज सभ ही सुखी सुभचा

री प्रभु चरन जान ॥१८३॥ चौपई ॥ तेतो कौं सो पो हित धारै ॥ देत रहौ सिष्या तिहि भारे
या ते न पलै व धे प्रतापा ॥ सम प्रभु भरतार न चित ते पापा ॥१८४॥ तुम सौ रछक रे
सुध लेवै ॥ चरन तुमारे बडु हित सेवे ॥ तुम भी ऊपर पुन दास पछाने ॥ दया करो ध
मे जु पर जाने ॥१८५॥ वैशंपायनो वाच ॥ सुन समध तरा पूछे बचना ॥ पुनि शो
कहीन दुख रचना ॥ रोवे सभ कोउ तरन दे वे ॥ गदगद कुंभे स्वास सभ लेवै ॥१८६॥
फिर पाछे उन ते चित चिंतना ॥ बोल्यो कुंदि जु ज्ञान पुरंदित ना ॥ ना मुतं हि सो हेत
उचारे ॥ ज्ञान सिधि विद्या जु न भारे ॥१८७॥ सो है तो वाच ॥ हे धृतराष्ट्र तुम न रूपम
महा ने ॥ जग मो नाहि कोउ तो हम माने ॥ भीष्मादि सभ वडे तुमारे ॥ प्रभु भ चि
त कउ दार व लभारे ॥१८८॥ जिन की उपमा कंसे तुन हीं पावै ॥ तिन सो जग ति कउ
सुख न दिखावै ॥ दुर्योधन की प्रछो पो वा ता ॥ नी वे सुने व घा नो सा ता ॥१८९
दुर्योधन के राज मन फारे ॥ हम कउ तिर हे सुखी हर धारे ॥ ते सर खु नृप रहे वा ना
हीं ॥ ये सुख तुहि सु तरा जो दिखाहीं ॥१९०॥ नृप दरू भनि ज भ्रा ते संगा ॥ पेह म
सो नि मै ला चित्र भंगा ॥ भ्रात पुरु सप रम में हे नो ॥ लर ते हीं पाये वहु चे ने ॥ हे ध
तराष्ट्र तुहि सु त की नी सा ॥ सो न के रे ज गारे हो ज गी सा ॥१९१॥ दोहरा ॥ तुम जन क
हीं हम व्यास ते लीन्ही विद्या वन जा उ ॥ व्यास सम ताने दूस र ज्ञानी कोन दिखा
उ ॥१९२॥ नारद लोर छपाल तुहि हम री ज्ञा सिख ए हू ॥ जहा ज्ञा नो हार घेर हो
तुम न रूप सुख दे ओ हि ॥१९३॥ बोध तरे न ग दी शो ते धर्म जु ज्ञान क्षमे ज्ञा
र छमा हम री धारहीं व उ ज्ञा य बडु ते ज ॥१९४॥ चौपई ॥ दुर्योधन युद्ध मन फारे ॥
ये दृढ तुम ये सर ज्ञान पारे ॥ या को दो सु किसी को ना हीं ॥ दुर्योधन के मन ही दिखा
हीं ॥१९५॥ दुसासन शकुन व घा ने ॥ ता को उ ज्ञे र के ना मे मा ने ॥ दो मन

काहू इच्छ जगदीसै॥ इसी माह षील षो जगदीसै॥१९९॥ तेउ होइ जो हरि को भावै
हरि इच्छा को मोर सनावै॥ इकादश षूहन सैन तुमारी॥ सप्त षूहन पांडव की पु
गारी॥२००॥ अष्टादस दिन मोह तु होई॥ दस जन मारण हारे सोई॥ भीष्म
द्रोण कृपा कर्ण विसरत॥ भीमार्जुन धृष्टद्युम्न सात्यकि युत॥२०१॥ दुर्योधन
धर्म जु दोनो भूप॥ इन दस सही हतु कीन अनूप॥ जगदीश ते जु जन पुने
इन माही॥ धीरे तव संघारि दिषाही॥२०२॥ नातर हन न तव ढुव र्षै दिषावत॥
सरथो के युध नाह हरतावत॥ श्री उत्तम ते उ वषाने॥ रण भुम देहि पुराण यु
धठाने॥२०३॥ आप सम जगत के सरे वडु नामे॥ रण भुम ह ते धार संग्रामे॥ जाति उ
भ्रम जीति निन की होई॥ लषै नांहि उपकार सोई॥२०४॥ तुमरे जन्म हेत उप
कारे॥ जीवन सुखु मे पेन्हु दिषारे॥ याते दोस मिसी नांहि देवै॥ ईश इछडी ह
मो लष लेवै॥२०५॥ तप तो ध्यावै वने सिधावै॥ त्रिभुवन पति रक्षपाल तुमा
रे॥ तुमरे कुल की ते जन जाई॥ ऋषीन पर न ऋति ऋधि की दिषाई॥२०६॥ देह
र॥ तुम काहू वीर ष पार नाहि॥ देहे धुग रजा॥ रक्षा कर हो जननी ये तुमरे म
न भार॥२०७॥ धर्म जु सम न दूसर जगत चुका शील सम तमार है॥ न्याइ नीत ऋति
राजा जिहि हम अपराध न दिषा है॥२०८॥ चौपई॥ कृपा दिष्टि देषि सभ ज
गया॥ थे देषि न भुलावत हैं वरा॥ पुत्र सम मान जानत हैं सभ जगा॥ रक्षा सभ
की चाहत हि तम गा॥२०९॥ भ्रात सरण मन जांनि मेल पाके॥ जगत सुख दाइक व
रभुज ताके॥ तिन सो सन वर तन पै धरही॥ निरखे ते भाती सुरख मरही॥
॥२१०॥ धो कपट दे मइन सो करते हैं॥ निरखे भाती सुमुधर ते है॥ दे
धवरा ऊर मारी जो रे॥ रहो स्वामि दुष्ट न चित जो रे॥ तुम हीर सार

चजुग कोत्याजे॥ इश नु मारर धकुन राजे॥२११॥ वैशंपायनोवाच॥ दिन केकुमर तवे नस
नायें॥ सभे हर्ष धन धन पुग टायें॥ धृतराष्ट्र सुन रुदन उठायें॥ दुरत नीद्रि ग्याधामसि
धायें॥२१२॥ उहिमो ज्याइ विदर को बोल्ले॥ धर्मज पे पठो संदेस कुमो ल्ले॥ विदर गयो धर्म
ज निकटारे॥ कहे मुखते संदेस उचारे॥२१३॥ विदुरोवाच॥ ज्ञेवकां तके त्रयोदस दिन की
तावें॥ धृतराष्ट्र निहचे वन जावें॥ चाहे यज्ञ करों इहि वारे॥ भीष्मद्रोण सुतो त्रिपतारे॥२१४
धर्मज अर्जुन सुन हरषाने॥ भीमसेन सुन नाहहित ताने॥ नपठो ता सभार चितधारे
धरी मोन कछु नाह उचारे॥२१५॥ दुर्योधन केअपर बुराई॥ सदा भीम मन रहे कमाई॥
अर्जुन लखी भीम रिसकाना॥ तासो भाषे वचन महाना॥२१६॥ अर्जुनोवाच॥ धृ
तराष्ट्र वहुतात हमारा॥ पुनन्रपता तासो हितु भारा॥ तासो क्रोध कीयेन बनावें॥ हि
तचित सेवा करत सुहावें॥२१७॥ पुत्रहीन सुख ते धनहीना॥ हमरे आइ स्पोआ
धीना॥ सदा अधीन इन के हम रहते॥ दासो सम होरे पर वहते॥२१८॥ सम देस
न मो पार्वे देही॥ कोन वचै या पर हइ हे रोही॥ सम पाइ न्रत्र सभ सुख रखोये॥ मोके
हम सोन्निमत होये॥२१९॥ इहि मोलखो हमारे भागा॥ हीर करसगते को उतपुजागा॥
धृतराष्ट्र से हमको चाहे॥ वने नीक हित चित निरवाहे॥ चाहे यज्ञ सुतों हत करें॥ व
हुर ज्ञाइ तपुसाधन करें॥२२०॥ भीमोवाच॥ दोहरा॥ दुर्योधन पापंता नीक जु नरक र
हाइ॥ नाहकि ताहवि यज्ञ करदे वो स्वर्ग पठाइ॥२२१॥ भीष्म द्रोण ते आदि योवडे हमा
रे येहि॥ कर्ण आदि तिनके हिते यज्ञ हम करहै ते हि॥२२२॥ जाहू स्वर्ग मनम हर्षकुंति
दुर्योधन अधम रूप॥ रहे दर्श भ्राता सहत मोरजु वनै कुन्रपा॥२२३॥ चौपई॥ उ
नहम सो कियाकरी भलाई॥ यो हम चाहे ता मुकताई॥ जिहि पापे सभ जगत हता
नेम॥ हमसो कीनो कपट महाने॥२२४॥ निरपति करराढे सम भारे॥ ढाद समवर्ठ

बैठे ध्रम न धारे॥ पुनह कुबर्न बैराट कै देस॥ नृप के रूप भये दास न भेस॥ २२५॥ द्रुपद सु
ता सो कीचक कूरे॥ कहे भीम मह नेवच भ्रम चूरे॥ तुम से सूर सभार बपु धारे॥ निरत
त करत बैराट द्वारे॥ २२६॥ भूले तो हि मोहि न बिसरही॥ कोटक प्रेम मनहि दिस्ट मधर ही
भीम बैन सुन धर्म जु कोपे॥ कहे भीम तुहि मत भई लोपे॥ २२७॥ जग मो मान बडो न
मत रूं॥ बुरयो संगम ल्ला हो जे ऊं॥ ता के यस कैसो उपन प्रपारे॥ पुगरावे जग तुहि तक
रे॥ २२८॥ बुरे सा पायो बुरी करो वे॥ ले द बेर पर यस न धरावे॥ दुर्योधन ने देस ले भय
रा॥ कीये कपट हम सो जा नो वर॥ २२९॥ राज हेत बहु कर ते ज्ञायो॥ मन ते देहु बिसार
म हायो॥ बुरे बुराई न्या हत जाई॥ भले भलाई मा हर हायी॥ २३०॥ उनो कपट जे हमसो
कीने॥ ताके फल उन लये पुबीने॥ न ध्रम ये उन के कुल भारे॥ फिरे निमान जग मो
ता नारे॥ २३१॥ हम ये उन की सही बुराई॥ ता के फल उन्न मगत पाई॥ हम रे यस उ
न केस पयस जग॥ निस्चे जानो रहे प्रलेल ग॥ २३२॥ दो ह रा॥ पुन धर्म कहे
बिदर सो भीम न बुद्धि धराइ॥ मो हि बिनी क्रति तात सो कहो हे ज्ञान मह हाइ॥ २३३॥
पुन कहो यो कथुना ही यत तो छिन देउ मगाइ॥ सभ कथ तुम रे बचन मो करो रूपा
बहु भाइ॥ २३४॥ चोपई॥ यज करे रक्रति नीर उपकारे॥ हमु रासभ कथ ऊपन बिचारे॥
दुरव के बच जो भीम उचारे॥ कोउ न चित धर तात हमारे॥ २३५॥ देहि प्राण हम रेनि
उ जाने॥ देम श्रंगर समु रहल बखाने॥ बिदुर धत राष्ट्र निकट जाइ त व॥ धर्म जकी
ज्ञा गाय कही सभ॥ २३६॥ भीम बैन कहे दुरव की वानी॥ ते भी कही न कथु परि चा
नी॥ धर्म जन अर्जुन नृपुवर जायो॥ सभ कही जिउ कीति उ सम कायो॥ २३७॥ पुन
कही बर सभ दास कहाई॥ यो चाहे सो दे तहि ताई॥ कही धर्म जे हम दास तुमारे॥
भीमसैन मन तम सुनो सचा रे॥ २३८॥ भीम बाल मन न तुम बउ जाने॥ क्षमा करो मम

उरदिखाने॥ चित्र उदार धर यज्ञ करावे॥ मन न मो शंका कछु वसावे॥ २४३॥ सुन
धृतराष्ट्र हर्ष सो भरयो॥ बहु ज्ञानी शिष धर्मज को करयो॥ चार वर्ण इकठे पर कीने॥
द्विज रिषि छाया मधु ग्रण तन कीने॥ २४४॥ दोहरा॥ कुशा पवित्रे तात कर पीता बरति
लक ललार॥ मन ब्रह्मा जग रचन को बैठो आसन ढार॥ २४५॥ ब्रह्मा जग उतपत
कर त चौरासी सु धलेहु॥ तिउ धृतराष्ट्र कुरंव सह इक इक को पिंड देहि॥ २४६॥ चौप
ई॥ भीषम द्रोण दिहत पिंड दीये वर॥ कर्ण आदि सरे तो घन धर॥ दुर्योधन आदि सभ सु
त रे हैते॥ दीये पिंड धृतराष्ट्र सुचेते॥ २४७॥ मीत मित्र तवं धये हाने॥ तिहि हित दीने
पिंड महाने॥ पुन सभ हन नाम गहाये॥ सभ तो षेदी ये पिंड हिताये॥ २४८॥ बत्री भो
जन घर रस बने॥ भुंचे द्विज रिषि शोभा घने॥ भुंचे तपी मुनी संन्यासी॥ योगी जंग
म माह उदासी॥ २४९॥ भुंचे चारो वर्ण सहाये॥ भुंचे स्वध योयो मन भाये॥ काहू को क
छु इछ न रही॥ सभ की इछा दाने दही॥ २५०॥ दछणा स्वर्ण मुद्रा दीने॥ भू गम दके
सुरिति लक प्रवीने॥ हर्ष पर द्विज सुर के रूपा॥ बहु धुन जे जे कार अनूपा॥ २५१॥
यथायोग दे विदा कराई॥ गज अश्वादिक सभ शोभ धराई॥ डांड उडा न हर्ष नित दीने
मानक मोती कंचन लीने॥ २५२॥ पट के वस्त्र अनेक प्रकारे॥ उरण वस्त्र को केरे उचा
रे॥ भूम अरगाम दीन अनंता॥ मंदर दान दीये बहु भांता॥ भये सभ भु विदा चेरे जे
कारे॥ धर्मज को ताते शोभ निवारे॥ २५३॥ दोहरा॥ धृतराष्ट्र यो भाषही ताते दस गु
न जाना॥ धर्मज देवे हर्ष चित अति उदार बहु ज्ञान॥ २५४॥ चौपई॥ जे जे कार कर
त सभ जाही॥ धर्मज की बहु उपमा कराही॥ दस दिन देत रहे यग दाना॥ धर्मज के उ
पकार महाना॥ २५५॥ तब धृतराष्ट्र मुख ते न उचारे॥ सुन धर्मज तुम ज्ञान अपा
रे॥ योधी हम से चित मो चाहा॥ ताते तुम बहु धर्मी निवारा॥ २५६॥ अब तुम [illegible] रिखा

धारे॥ हमवनजाइ करेतपुभारे॥ धर्मजसुनद्रिगनीरचलावत॥ धृतराष्ट्रसोवचनसुनावत॥
२५५॥ धर्मजोवाच॥ तुमकोत्यागकरनसकावो॥ चाहतहोतुहिसेवसहावो॥ तुमविहीनज
वढैमंदघावै॥ निहचेमुहिवडुभ्रमउपजावै॥ २५६ अबनैनीकराखोमुहिसंगा॥ करोसेवतुम
भीनिरभंगा॥ धृतराष्ट्रोवाच॥ हेसुतवनकोसमोनतेरे॥ राजभोगशोभेइहिवेरे॥ २५७॥
हमतपुधरतुहिदेहिअसीसा॥ हमाउतेजतुहिवधेजगीसा॥ धृतराष्ट्रउठीयासनवउ
नाने॥ इमहितेबाहरजाइमहाने॥ २५८॥ धामदेउलीपरमापाधरा॥ मुखतेभाषत
भयोवचनवरा॥ हेममंदरसुंदरसुखरूपा॥ हमतुममोकीयेभोगअनूपा॥ २५९॥ अब
वतुमकोतजेवनजावो॥ तौकोइमंदरकोसोपावो॥ इहिकहचल्योधृतराष्ट्रनरेशा
भ्रातमीतसंतोचिततभेसा॥ २६०॥ सभरोवेचिंततचिंतालीने॥ नरनारीअतिशोक
अधीने॥ कुंतीगांधारीकेहाथा॥ उठेजातभारीहितसाथा॥ २६१॥ द्रुपदसुताजादेसभ
नारी॥ जाहसंगमनचिंततअपारी॥ हस्तनपुरकेसकलनारनर॥ रोवतजाहिसंग
धृतराष्ट्र॥ २६२॥ दोहरा॥ योचीयरवबडूधामतेबाहरनीहालनिकसान॥ कौरवनकीजाय
कियाकेहोरविसमभनिदूषान॥ २६३॥ तादिनदौरैरोवहीनिजदेहीकीनसभासभमथ
नवखंगिगिरगिरपरतकाहूकेनहिचार॥ २६४॥ ऐसीभीरपरेतवैमगमसेजीनपराइ॥
डिगरिडारवरहीनारनभ्रमपनपरानदिखाइ॥ २६५॥ चौपई॥ धर्मजतातसंगमगचिंत
तारे॥ चलेभारवगहर्षविचारे॥ जवपुरतेबाहरनिकसाने॥ ठाडेभयोधृतराष्ट्रमहाने॥
२६६॥ विदाकरतसभकोहितभारे॥ मुखतेदेतअसीससकजपारे॥
विदाकरतसभकोहितभारे॥ मुखतेदेतअसीससकजपारे॥ २६७॥ छोटेवडेपुरजनघरप्रोनारी
लीने॥ चलेनीरदृगधीर्यदीने॥ पुनधर्मजसोतातकहेवरा॥ योपिरहीतेऊचिंतता
रणजरा॥ सुनधर्मजपुत्तीसोचाता॥ मुखतेउचरोवेवडउनाता॥ तुमभीजाहुधामक
२६८॥ धर्मजोवाच॥

मातेतातनकठनक्ज्ञातिकरहे॥ओकोनिजविधोहापरहे॥चालोधामक्रवनुमसीसेवा॥ध्या
रोहर्षकरोनिहमेवा॥१६॥दोहरा॥पितसमानधतराष्ट्रमुहिजीयासमेततजाइ॥
नारवनावेकिरहरहोसुनोपुत्रसुखदाइ॥१७॥धर्मजोवाच॥सोदरअचंदा॥समअज्ञा
पुरतुममुहिदुखसहे॥अवहूस्वप्नेसुखनाहलहे॥हमतपोदसवर्षवनभ्रमभरे
वनवनभरकेतुमतेन्यारे॥१८॥भ्रमदुखअंडांततहाभोजनभोगे॥युक्माहिघ
नेभ्रमनिरघाने॥वधुअहनपरतज्ञतिभयामाने॥१९॥श्रीयदपतदयालहो
रूपाकरी॥२०॥भमसोविजेहमारधरी॥जवकेविधुरेस्विनमाहधरे॥तुमसीसेवा
हर्षभरे॥२१॥तुमसोसोदुखीरहीसदही॥पुत्रद्विगभरनाहदिछेअदही॥कृजवरा
जभोगदिहरर्षधरे॥ज्योहिवेठीजपुतपुदान्नकरे॥२२॥कुंतीयोवाच॥दोहरा॥
इशाकृपातुमपरकरीदीयेराजसुखभोग॥निसदिनजावोईशगुनसदहीर
होअज्ञरोग॥२३॥विदुरकृतवस्याभईमुहितपसोहेममदेहि॥पुनकैसेसासंगुलि
हमिलेजावोवनसंगतेहि॥२४॥धर्मजवकुविनतीअतीमातामानतनाह॥
तपकीइछावहुकरैरेहमलालजीयमाह॥२५॥चौपई॥धर्मजादसमसुनइ
हस्वचना॥रोवैसभीदेषहरिरचना॥होतजवश्यतवविदाकराई॥वहुरेतेमाताउचरा
कु॥२६॥रहेधर्मजहमदेवकुमारे॥उनमुहिसेवकरीनिहपारे॥हमरेरहितुतासोअध
काने॥तुमभीराधोहितुम्हसिकाने॥२७॥सर्वभ्रातसमतधरेविसारो॥देतरहोताहितन
वधुभोगे॥रमवासोअतिवुरीकराई॥उरदीयोजनसमोवोराई॥२८॥विदुरकेतपुत्रता
करवललूपा॥तासोवहुहितवरोअन्नपा॥वडेभ्रातवासतपहिचाने॥समतेअधिरमा
न्योतहिजाने॥२९॥पुनद्रुपदसुतानिजपुत्रेभोये॥रहेभारवितोइहिसोवे॥सदाता
रकोहर्षतराधे॥कोउलघुवेननतासेभाषे॥३०॥होइंधातीसेवामाही॥रहेसु

चेतयातेहरषाहीं॥इहदुःषोकदुरवीभारऽतीत॥निरहिंदुगपरतइनहरषारोसत॥२८०॥
दोहरा॥धर्मजादिसभमातवचसुनतेभयेविस्मान॥तुरेन्नीरदुगमोनमुरवभये
ऽधिकमलिनतान॥२८२॥दोइघरीलगमोनधरधर्मपुत्रउचरान॥मातातुचलगरह
दयाधरहमरीविनतीमान॥२८३॥जवहमदुर्योधननिकटपठेजुचेभगवान॥
तुमसिषदेपठीमुहिसुनभयेवलऽधिकान॥२८४॥भुजंगछंद॥सुनतवच
नतुमरेवधेवलऽपारे॥भईविजैहमतीसकलऽरसिंहारे॥सदाप्रेमहमारेदि
षावतरहानी॥नसुरवीछिननिहारयोरहीचितठानी॥२८५॥दीयेईशसोऽसव
भईतूउदासी॥वनेसिषदेतीरहीचितदुलासी॥लषोनाहिपितमोहपरदयाकीजे
धरोहाथसिरपरविरीहदुखनदीजे॥२८६॥द्रुपदसुताऽदेतुहिकोजुप्यारी॥पि
रेतोहिचिनहोनिमानीविचारी॥सभाराजऽयोकरोभोगभारे॥रिदेहर्षदेषो
वडेमस्वहमारे॥२८७॥त्रिसाभसवसनननगनपाइरहये॥विपतऽपुनीमो
हर्षमोरदहये॥सुनतमपर्वैनदुखसोभरेऽति॥रुदनकरतकुंतीनवोलेव
चस्तुतत॥२८८॥भीमोवाच॥दोहरा॥मातातुमारेदासलषहमकोनपापहमकीन
येनजरेनिजमातेकोविरहिहापऽधीन॥२८९॥रहोधामवठदानधरपा
वोफलऽतिभार॥सुखहमरेदेषोमईयासुखमोदुखमतडार॥२९०॥चोप
ई॥चोपई॥पितापेउजवप्राणतजेवन॥तुमहिउऽन्योमोहनगरसुन्न॥ये
तुमरेषेवनसोहेते॥नपासिषावतरहीसमवेते॥२९१॥योतुममोहपुरमाह
नस्यावन॥हमभीवनमेतपोसुहावत॥कोहेउपजडीहउतपाता॥यातेभ
योसकलजगघाता॥२९२॥दुखमोरहोरहमोरेसंगा॥सुखवेसमेउठजातऽ
भजा॥कुंतीसुनैनउत्तरदेवे॥मोनधाररहीदिदहरिसेवे॥२९३॥दोहरा॥द्रुप

दसतातेज्ञानदिसभमकुंतीपगसिरधारा॥रोवेकुंभेस्वासमरदयाकरोसरवकार॥
२५४॥कुंतीजंधामीहाथगहिचलततनवोलेवैन॥ईहरोवतपाछेजावहीवोले
मखविनचैन॥२५५॥कुंतीयोवाच॥चौपई॥हेसतसतहेवचनतुमारे॥पेतुमम
देषोरिदेविचारे॥तुमरेहितहमवडुभ्रमपाये॥करीईशत्रसवरुपामहाये॥२५६
शत्रहानभयेराजतुमारे॥हमरेमननलेवरुछनिकारे॥त्रिकृत्रवस्याहमरीभ
ई॥तपकेसमेदिषाईदई॥२५७॥वनतपुधरदेउतुमेज्ञसीसा॥मोहिहिपरण
ज्ञवनाहज्ञनीशा॥तुमकरोराजहोइदुसमाने॥प्रजासरवीधारोज्ञधि
कीने॥२५८॥तुहिवलसमदूसरजगनाही॥ज्ञवतुहितेउरेकोदूसनपाही
मुहितपकलवडुआरजपावो॥हषेतविदाकरोनदुखावो॥२५९॥जगसे
नारमोहकोउकाजा॥वनतपुधरोअवइहिमोलाजा॥तुमभीहरिसिमरनमो
रहे॥करोजाइहरिहषेतललहे॥इहिकहिकुंतीचलीसचारे॥समझीरोततसंग
सिधारे॥३०॥दोहरा॥इनकेरदुनसुनाइबजगिम्रिगसमुविसमावई॥कुंती
ज्ञानमहाइमुरइनकोन्दिषावही॥३१॥दोरदोरसमझपकपरेरोविया
कुलहोइ॥अवपज्ञानपाछेफिरेचितचिंतातुरहोइ॥३२॥चामरछंद॥सं
जयविदुरधृतराष्ट्रसंगहोचलेवनकीउतार॥कुंतीजंधामीसंजगहितहितेजग
तवंधनतो॥॥धृतराष्ट्रभाषेविदरसोहेभ्रातज्ञानस्वरूप॥कुंतीतजेसुतसव
लमुखमोहसंगमईज्ञनरूप॥३३॥तुमवरजराषोयाहिकोइहिरहीसदादुख
रा॥ज्ञवराजुसुरवदेषेसुतोकेधरेहिदेहरषारा॥३४॥ज्ञतातितविधमोरोइसे
किउसहेदुखवनमाह॥इनसुतोकेसुरवनाहदेषेकवूपरेसरवमाह॥३५॥
नवविदुरज्ञरधृतराष्ट्रकुंतीकोरहेसमझाइ॥तोभीनधाहेसंगइनकेधीलस

मतजअधिकाइ॥पुनगंधारीवचनकहेवहनन्सुनोमुहिवैन॥तुहिपुत्रहेधर्मातमा
कहेतजिसुखदैन॥३२॥हमरहुहेतेसोसभीनिजसुतेनिकरसिधाइ॥नि
हचैनहेकिउवनजगमेधामेनसुखउपजाइ॥कुंतीउवाच॥हितचितकरेहम
सेवतुमरीइहीसुखमुहिजान॥नहीऔरसुखकोऊचाहहमरेकरोसाच
वषान॥३६॥येतुमनराषोसंगअबपुनेकोऊकुंचादिषाइ॥तहांतपुधरोमुहि
ध्यानुरिदिचिन्नतपकरअबमुहिभाइ॥३७॥उत्यागकुंतीकेनिरषभयेविस्मेमो
नधराइ॥अजगेचलेतपरिसहितेहोरध्यानीरदाविसराइ॥३८॥जयेजगत
रमयेजअनतरवितनअरुइछुवडेदेष॥तहारहेनिसधर्मातेमेहरध्यानलीन
वशेष॥रिषितपीसुनसुनजावहीमिलामिलधरावेधीर॥वरअथाजो
वरज्ञानउचरेसुनतमेटेपीर॥३९॥दोहरा॥उतपंडुपुत्रचितनअधिकअ
येगजपुरीमकार॥रोवतहीसभदिनभरेकहापुरषकहानार॥४०॥दोह
रा॥धामधामचितानचितनहर्षतइछुनदिषाइ॥शोकपरेअतिसवललहूइ
रुष॥चौपई॥केतेअहितजवाहरजाही॥चिततचैननयवहूदिषाही॥ता
दिनभोजनीधूसेनकीने॥पानपानसधतेभयेहीने॥४१॥हाइहाइ
शवदअतिभारी॥जितकितसुनीयतनगरमकारी॥नीदमषवाहूनरहानी
मुखमुखपुगरेइहीकहानी॥४२॥दोहरा॥उठप्रभातस्नानकरचलेहेत
तपुभार॥पुनरविलोपयोगगतरउतपरेनिरधार॥४३॥चामरछंद॥उत
रेजदुहासुनीशिषितपीकअवेमिलनकेहेत॥फलफूलस्यावेहेतसोधनराअको
वठचेत॥निसदूसरीबीतीनहाकीनेनकथासुज्ञान॥दिननीसरेउवच
हेतहा तपरिदेज्ञानवशेष॥सुनसुन तपीरिषिदिजमिलेहितभारस

रवुउपजाइ॥ कीयेहेमनैजोवड ज्ञानदानदीनेयाइगननतीनाइ॥३१४॥ वहुडेदपा
डीहीउयाकीरतनभारउनउचरान॥ इतिहाससुंदरवाचहीयासुननकुनइ
होहान॥३१६॥ दोहरा॥ वसेहैहितवांधीकुसोभनाभिनसोभउपाइ॥ इकुसंजेइ
कुविदरहित इकुधतराष्ट्रस्नुचार॥३१७॥ इकुजोधारीकुतीलीयेकुतिनीकेपरकार॥
वसैका नं तहोतहाधारे तपसाभार॥३१८॥ चौपई॥ सतहुतकामवछोडकुमपा
देससतराजजगध्योतपुसकुमनरूपा॥ ऊसाइमिल्योचितगुीतमहाये॥ प्रसपरभारी
हितुउपजाये॥३१९॥ होइजगयेव्यासास्रममाहीं॥ उठव्यासधृतराष्ट्रदिखाहीं॥
कीयेहेतुधरकुमादरभारे॥ मुरवेतेकहेवचनप्रगटोहीं॥३२०॥ व्यासोवाच॥ राज
भोगतुमसकलत्याजे॥ नीरुबीनतपसोउनराजे॥ तातेतुमकोसिष्यावरदो॥ त
पकेफलत्यागेतेवहुधरहो॥३२१॥ सतहुतसर्वज्ञानसत रूपा॥ धारेतुमकोसि
ध्यावन्रूपा॥ सतहुतरहेतुमोरसंगे॥ करोहेतुतासोनिरभंगा॥३२२॥ वस्रवउ
तारवीयेवहुकाने॥ मिडीकीतुचातमेपहराने॥ कैसेसतहुतिकरीयेमहाये॥ र
कनमासविनदेहमहाये॥३२३॥ हाउचामहीद्विपपराहीं॥ धीनहीनन
हिवलुदिखराहीं॥ नारदजोरिषुदेवलजाये॥ ब्रहस्पतिमुञाचार्यदिखाये
३२४॥ हितधरतिनकोधीर्घदीने॥ यथायोगइहसेवाकीने॥ उग्याकीतेन
मोदिनरेन॥ तीताँवेहर्षतसुरवदेन॥३२५॥ तजततजराजजगायेयेमपाश्च
नमोतपुतिनधरेअनरूपा॥ तिनकीउयाम्सुनेहरषोवे॥ मजानइमनेध्या
नरहोवे॥३२६॥ तपवलमनकेमनभकतजाये॥ धृतराष्ट्रकौवीकम्हाये॥ इव
मनहोइतिननतफुजाराधे॥ मनइस्थियतरेस्मसरूपकोलाधे॥३२७॥ नारदे

वाच्य॥दोहरा॥इसी ठौर मो नपद्म ने मप ही येराज्ञ तजाइ॥ तप बल गये सुर लोक सभ
भोगे भोग महान॥ तप ते राज्य गहा वही रोजे तपु कठना इ॥ जिन के उत्तम भाग है राज्य ता
गत पुपाइ॥३३१॥ चौपई॥ तुम भी व्यास की रूपा महाये॥ भोगे सुर पुर संस नकाये
तं धारी जो कुंतीसत चर॥ स्वर्ग भोग पावै निह चै करि॥३३०॥ तुम राभ्रात पंडु सुरव
रूपा॥ सुरपुर धारे हर्ष अनूपा॥ तुमरी गाथा पाप छतरे है॥ तुमरे नाम लेत सुख
लेहे॥३३१॥ वैशंपायनो वाच्य॥ नारद के इह बैन सुनाये॥ भये हर्ष व उ सुरव उप
जाये॥ देसरा जरूके सोक तज शोक॥ मन ते भेटे सुरक भवलोके॥ इन के हर्ष तप
दि जो रिषि वर॥ नारद से पुछते ज्ञा सिष धर॥३३२॥ रिषो वाच्य॥ हे नारद मुन
ज्ञानन भपारे॥ तो हि उपमन्ना हि सके उचारे॥ जिउ तुम इन के मन हरषाये॥ ति
उ तुम रहो सद हर्ष महा ये॥३३३॥ तुमरे बचन सुनन तम नहरषे॥ बचन नार
मन अम्रत वरषे॥ पाका पल्लु इ सब रते पावै॥ सदा सर्व दा हर्ष रहावै॥३३४॥
सतदूतो वाच्य॥ दोहरा॥ धतराष्ट्र भाद्रि तुहि बचन सुन भये हर्ष कर सतिकंत॥
हम शारिदा पुरश न हो सर हे पुत्र सुमर हैं ता॥३३५॥ सबै ज्ञान तुम जगत मो की
यई शभ भ्चार॥ भा वीम त भश्चि पजग व यास ज्ञान हार॥३३६॥ चौपई
कहे धतराष्ट्र सी सच गाथा॥ कहा गमे जो तप बल साथा॥ कौन ठौर प्रभ
पावे वासा॥ इहि मो सभ भी जे परकाशा॥३३७॥ नारदो वाच॥ इक दिन सुभ
सुरपुर मो गये भ्रत हा जाइ हर मनि रषत भये॥ इंद्र इंद्रसासिन सिंहासन
वैठे पेख उद्धर षधार मन॥३३८॥ तहा पंडु बैठा रर खारे॥ स्वर्ग सिंघासन शोभ अपा
पारे॥ धतराष्ट्र सी तथ जनन रातो॥ मो से प्रश्न कीन व उ भातो॥३३९॥ इम

कही धृतराष्ट्र राज सुख त्यागो ॥ वडु हित सो वन जप तप लागो ॥ स्नन महि वेन पंडु र
रघाये ॥ कीन हमारी उपमम महाये ॥ ३५८ ॥ पुन कहे धृतराष्ट्र के वडु ज्ञाने ॥ द्रिग
विहीन जैसे सीमत ठाने ॥ धृतराष्ट्र गाधात ह वहु चाली ॥ सकल सभा उचरा
द्रिविशाली ॥ ३५९ ॥ इकु सुरवो लउ ज्जो वडु ज्ञाने ॥ धृतराष्ट्र जस व धवं हुवर्ष महा
ने ॥ तीन वर्ष पाछे तज देहा ॥ कुवेर पुरी जावे तपु ठेहा ॥ ३६० ॥ कुवेर धरे आदर
जीति भारे ॥ भूषन वसन वहु दे हरषारे ॥ भूषन वसन सु धरे शोभत जाति ॥ स्वर्ण सिं
घासन पर वैठे सत ॥ ३६१ ॥ सिंघासन न वेच वहू ओर वर ॥ आगे पाछे चले हेत धर ॥
जहां इह धृतराष्ट्र की होई ॥ तहां पहु चावे छिन मो सोई ॥ ३६२ ॥ दोहरा ॥ स्वर्ग आ
धकह नीन धीपे तुम हे तुम पार ॥ धृतराष्ट्र की गाथा कही हरि दमन लाल पुगरार ॥ ३
६३ ॥ सुन तस भीक्षमानंद भरे नारद ते इहि गाथा ॥ नारद सुन निज निज उथये ऋ
नि वडु हर्ष साया ॥ ३६४ ॥ चौपई ॥ सुनत हुत सए धृतराष्ट्र हर्ष भर ॥ रहे कुरुक्षेत्र मा
ह तपुमत धरा ॥ जव धृतराष्ट्र गज पुरी तजाये ॥ उधे वन मो तप रिदे वसाये ॥ ३६
५ ॥ चिंतन पर सभ जगतु दिखायो ॥ इकु जन्तु मी हर्षत न है साये ॥ धौंडे वडे पुलध
जौ नारी ॥ वद नुपीत चिंता नि दिखारी ॥ ३६६ ॥ दिज ऊ सो पंडु तके सो वडु ज्ञाने ॥ ध
म जको चिंता न दिखाने ॥ पुउर ज्ञान वहु धीर धराही ॥ कथा पुरातन न भूव ण करा
ही ॥ ३६७ ॥ ये धर्म जचित धीर न पावे ॥ मात तात के विरह तपावे ॥ धर्म ज रिद वीचा
र कराये ॥ उनके वहु दुख भ्रम न धराये ॥ ३६८ ॥ स्व उदान वन के सेर है ॥ क्रियासा
वैसु रव ते किया करे है ॥ विना धाम निर हचीर कौन जाति ॥ निसदिन वीता वे क्रीति चि
नता ॥ ३६९ ॥ धृतराष्ट्र अंधा री दो ऊ दृगहीने ॥ वन उदा [illegible] रहे ऊ साधीने ॥ कुन्ती उ
न कीपे वन ऊ ॥ के सेर है भार भ्रम सुधारे ॥ ३७० ॥ मीत भ्रात सुत वधसागो ॥ वन उआ

रतपुको जालाठे॥ कुंतीसुनु षाजरस्तु तस्याठे॥ जिनसोर हतसदा अनुराजे॥
३४३॥ समदासनीजें उसेवाधारतमझोई हातयो मात उचारता॥ धृपाजाने
जसववने उदाने॥ जैसेरहे वहाअमुठाने॥ ३४४॥ स्व जयविदुरदो वूवउज्ञाने॥
जैसेतिनसोरहतमहाने॥ तिसदिन धर्म जइहीचिंतधरयजीदन पावे द्रिजाचिं
तामरय॥ ३४५॥ राजकाज समदीयेविसारे॥ उनकीचिंतासोचितुजारे॥ इनहूकी मरव
जाषरहाेवे॥ जसववाज्ज भमंनकोचितुपावे॥ ३४६॥ द्रुपदसुताकेपांचोपता॥ जाम
मनसणहतेभारमरतूता॥ तिनकेगुणजोवनकसरतूपा॥ सिमरसिमरदुखधरे
जेसनूपा॥ ३४७॥ रविसुतयेज्जनजानदूताये॥ ताजायवीचारेपधुताये॥ रविसुत
केवलतेजविचराये॥ रोवे उभेसवासमराये॥ ३४८॥ दोहरा॥ द्रुपदसुतादुखसुतोके
जसमभमंनकीमाता॥ धर्म जकोरोवतनिरषरदनाेवेज्जतज्जाता॥ ३४९॥ रषोन
सुखकोतिहिसमेपेइहु सुखुद्रिणाइगया कोदिषजीवतरहैनातरसमभमरजाइ॥
चोपई॥ जसभमंनवासुतपुरीषतनामा॥ समकाजीवमलसुखधामा॥ याकोदिष
समदूखनिवरहा॥ चिंतशोकअमतजसुखधरहा॥ ३५०॥ जेजीमेत्रीकोहितके
रो॥ रहेचितनन्रपचिंतदिषारी॥ काहूकोसधवुधनरहाई॥ धतराष्ट्र गाषसम
देवसाद्रु॥ ३५१॥ धर्म जचिंतनमयोषीनज्रिता॥ नीदभषतजसुखनलषेअति
वदुचिरकालजैसेसदीतानी॥ तवधर्म जकोरेदेउपजानी॥ ३५३॥ वनमोजाइमि
सेदरसावे॥ रहतवहतउनकीनिरषावे॥ तवसहदेववोलयोवउजाने॥ जुनीश्या
यांकोसधिकाने॥ ३५३॥ सहदेवोवाच॥ दोहरा॥ हेधर्म जतुहिरिदेकीलषपाइहम
वाताश्चाइहतकुंतीमातवोचिरषावोवउमाता॥ ३५४॥ धर्म जोवाच॥ हेसहदेवतुहि
जानकीउपमनवरनीजाइ॥ जनमाषीलषलीननुमविद्यावलज्जधिकाइ॥ ३५५

चौपई॥धर्मजहर्षभयोसहदेवपर॥कहीभ्रातकीउपमप्रगटधरा॥कहेभ्रातइहि
जीउहमारे॥देषोउननेदर्शसचारे॥२६॥कुंतीगंधारीमममाता॥देषोवनेजाइहि
तेसाता॥जिहविधसोवरतनधारेवन॥येयेसरवस्वरूपकरतिमनजान॥२८॥
शीहमोद्रुपदसतातहमजाई॥मरवतेभाषवचप्रगटाई॥द्रोपदीउवाच॥हेधर्मतुम
नीअविचारी॥मातताकोदेषोभारी॥२९॥सभुजीयाचालेतुहिसंगा॥देषेउन
केदर्शअभंगा॥धर्मजनेजीलीयेबुलाये॥कहीतिनोसोमुरवप्रगटाये॥३०॥ध
र्मजेवाच॥तातदर्शहितवनेसिधावे॥सभकोसुधकीजेप्रगटावे॥सभीलोक
चलेमीहिसंगा॥देषेउननेदर्शअभंगा॥३१॥राजरथअसवारसभीचढावे॥मो
सोचलेनकोउरहावे॥येवधुजाहकीहेम्चाहि॥तेदूताहकरदेउजनवाहे॥३२॥के
उदुरवीनरेहेमगमाही॥सभम्रछलेहेसंगतहाही॥सकलनगरमोदेदुढेरा
सुनतसभीहरषेअतिऊरा॥३३॥निकसेभूपनगरकेवाहर॥मातदशोके
हितचितुकाहूरा॥भ्रातमीतहितबंधसकलजन॥संगभूपकेहेतचलेवन॥३
४॥नारपुरसबुधोटेअरवडे॥पुरकेवाहरतंबूगडे॥हस्तनपुरमोरहानकोई॥पत
राष्ट्रदर्शहितचालेसोई॥३५॥चलेगजेचहुरथअसवारे॥चलेतुरंगेछवजगति
भारे॥सिधउमडेजिउपावसचाले॥जनतुनाहटेओलीसरवपाले॥३६॥सभअगाडे
धर्मजसेनायुता॥देजोरिषिचहुरेरथेभारीदुत॥पाछेभीमतमसोडाजघने॥चले
हर्षकरतिशोभावने॥३७॥पाछेनकुलसहदेवसेनकरति॥जाहहर्षअभमला
ठदर्शसत॥तिहिपाछेअर्जुनवलवीरा॥मिलनहेतसंगसेनगंभीरा॥३८॥र
षसोघचेनजामोतीमाननका॥चमकेरवससुजोतजगचानजा॥द्रुपदसुताजा
दिवसभनारी॥चलीउलयोमोधवराम॥३९॥देवरा॥सभमेपाछेसुरमेश

३३५

स्वकुल सु संजोइ ॥ नृप राखहु मन लाल धर्म जनि चल्यो मात तात हित भरा ॥ ३४० ॥ ये को झुम डो
थका वही गजर पकस्व च ठाड़ ॥ ले जो वे ज्ञा ज्ञा भूप की सु हम लाल प्रुड़ राइ ॥ ३४१ ॥
चौपई ॥ खान पान सभ भरी सुध लेवै ॥ ये कुष्ठ को ऊ चाहे ते ऊ देवै ॥ पंच दिवस मो ज्ञा
पहुंचे हि ता ॥ ऋति पुनीत कुरखेत ता तजित ॥ ३४२ ॥ उत्तर परे नृप होइ प्रदाता ॥ देखा
ती हरिखि मंडल सा या ॥ वेद्व रिषि वड तपुत हाधरही ॥ वन उदान खग म्रिग वहु भरही
३४३ ॥ को काहू को भ्रम न हि देवै ॥ खग म्रिग दरष तहा सुख लेवै ॥ रिषि मो मह जाता तदि
खाये ॥ धर्म जोति सम होइ प्रसन्न्यो ॥ ३४४ ॥ धर्म जो वाच ॥ नृप तुहि तात मात मनु
नीह ता ॥ उये गंगा को तहा सान्ह किता ॥ ३४५ ॥ नृप तत काल गयो गंग हेत ऋति ॥
जो देख ना तके दर्शन प्रभु मत ॥ मग मो ज्ञा वत मिलो दिखाये ॥ सह देव दौर पग मात
ग हाये ॥ ३४६ ॥ दोहरा ॥ सीस मात के चरन पर मात हाथ सुत सीस ॥ ३४७ ॥ दो ऊरो
वे हेत सो द्रुग जल मिजे ज्ञानी श ॥ ३४८ ॥ गंधारी दर्शन मा वही किया ये सुत सहदे
व ॥ ऋजु नभी मन तुल सहत क्या ये ते जन्म मेव ॥ ३४९ ॥ गंगा जल निरमल भरे
कुंभ सु सीस उठाइ ॥ कुंती गंधारी का वही हरि गत ऊ ही न जाइ ॥ ३५० ॥ दिख
धर्म ज दौर तली ये कुंभ ज्ञा पुने सीस ॥ सभ रिषि न ऋगले सभ ने ली ये उठाइ ज्ञा मे
नीसा ॥ ३५१ ॥ चौपई ॥ आइ धाम जल कुंभ उतारे ॥ सभ ने तात के सिर पग धारे ॥ कुं
ती गंधारी के पगपर ॥ तुम मन तम ये सभ हित मोरे धर ॥ ३५२ ॥ संजे ज्ञो विदुर के प
ग स्व पराने ॥ केरवि नी हो दीन महाने ॥ सकल ले ला के पुरखे ज्ञो नारे ॥ मिलमि
लरखि धरे ऋति भारे ॥ ३५३ ॥ दि जो रिषि ये कुरखेचर हावता ॥ धर्म ज के देखन को
ज्ञावता ॥ दिज धर्म ज्यो देहि कस्मी स्मा ॥ ते जो ज्ञार जा व घे ज जी स्मा ॥ ज्ञो हीर
खपा ऊ वना हीन हारे ॥ संजय से पछतानि रवारे ॥ ३५४ ॥ रखो वाच ॥ हे संजय

मरिहनीकीदिषावो॥ कोधर्मजको भीमसुजानो॥ कोअर्जुनको नकुलसुंदररूजानो॥ को
सहदेवषिद्याधोतकसत॥३५४॥ न्यारन्यारसमझेहरिदिषावो॥ हमांदिषहर्षे तुमपल
पावो॥ रिषिकेवैनसुनतसंजयवर॥ नीकीदिषाये उनकोहितधर॥३५५॥ संजय
उवाच॥ हेरिषिवरसमरविजिहजोते॥ कमलनैनवउज्ञानउदोते॥ समझेवडजायु
धिष्ठिरजानो॥ संतछिमाकासागरमानो॥३५६॥ दूसरगजउनमत्तसमानो॥
देहिपुष्टभारीवलठाने॥ भीमसेनतिहजानजाने॥ यासनानदूसरनदिषाने॥३५७॥
नीस्वरधर्मजभीममझारे॥ जोवैठेहैसुंदरकुमारे॥ तिहिकअर्जुनजानोहेरिषिवर॥ उ
नमयामोविप्याशसतर॥३५८॥ एदुइपोडअतिसुंदररूपे॥ येकुंतीनिजउरसुहाइअ
नरपेम॥ नकुलसहदेवदोऊवलभारे॥ जिहसमाननकोजगनदिषारे॥३५९॥ कुंतीस
न्मरवसुंदरनारी॥ सतकौशीलताइअतिभारी॥ ताहद्रौपदीजानसुचारे॥ या
नमित्तसमभयेसषारे॥४०॥ तासमीपसुंदरसुखरूपा॥ समद्रासहमकीवहनअ
नरूपा॥ ताकेदिगदुइत्रीयसुंदरअति॥ इकुचित्रांगदाद्रुतीअलूपीसत॥४१॥ इकुनन
पवंन्याइकुंनाअस्सुतावर॥ दोअर्जुनकीनारीचितधर॥ समझेपाछेत्रीयासुंदर
अति॥ याकेअंकवालकअससमरवसत॥४२॥ तेजानोअभमंनकीनारे॥ सुतअ
नामप्रीछतप्रजारारो॥ भूमलछनसोहेजिहभाला॥ निहचेहोवेभूपविशाला॥
४३॥ वैराटसताहीहउतरकुमारी॥ जिहपतिअभमनकीययुधभारी॥ छेरधीयन
कीयेवलभारीअति॥ अभमनरूतकीनोवालकसत॥४४॥ दोहरा॥ प्रसपरगा
धावरतजेनकुलसहदेवकीतीया॥ संजेतेसुनसमीरिषिहर्षभराने जीया॥४५
रिषिदिसुहर्षितहोइरिदिदेहअसीसाभार॥ तेअसारजाइनकोवधेजअभारा

२३६ निहपाउ॥४८॥ धाम्होपाई॥ वैशंपायन उवाच॥ पुनि रिषि बोले है संजय वरु॥ तो हि रूप म
हमन कछेना हधरु॥ हिदहेज़ो गांधारी च हूदे रो॥ बैठी है जीय मेंचे ता घोरे॥४९॥ पीत बद
न सभु मैं ले वेशा॥ महनि हरायो विधुरे केश॥ व्याकुल मोन गही बैठारी॥ कहे
कोन की है इहु नारी॥५०॥ संजय उवाच॥ दुर्योधन आदि जो रणे हता ये॥ तिन की
है सभी चितन चिंता ये॥ हरष तादि जगि शिषि निजइ स्या भ्रे॥ जाये विदा है ज्ञा सिषवाने
॥५१॥ पुन धृतराष्ट्र युधिष्टर कुशला॥ ताः॥ पक्ष्य तहितहि रदे ज्ञाति ज्ञाता॥ धृतरा
ष्ट्र उवाच॥ है स्तत धर्म रूप बड़ ज्ञाने॥ सब भीतहो कुशल महाने॥५२॥ सकल दे
स तुहि ज्ञानंद धरे॥ तोहि उपमा हित घर पुगरो रे॥ त्याई बिना का रूप रंदऊ॥ नहि
धरे देन्न पवलरहऊ॥५३॥ नि हचे जान तहो जीय माही॥ तुमरे राज करत भ्रम
नाही॥ धर्मो वाच॥ तात तुमारी रूपा अपारे॥ सभ विधि सो है कुशल्त हमारे॥५
४॥ तवसंजे बोल्यो वड ज्ञाने॥ धृतराष्ट्र सो कहे सुज्ञाने॥ संजय उवाच॥ धर्मज
ज्ञाति बड ज्ञान धरत है॥ शत्रु मित्र सो एक वरत है॥५३॥ याते जगहि उसुख
न धरो है॥ या के त्याइ सदा द्विज पारे॥ मन न तातन बहु ज्ञान सिषदीने॥ मुख उचरे है स
तपर ही ने॥५४॥ दीन हीन जन जीय पतिहीने॥ तिन को तोषत रहो पुरीने॥ उ
पजो है सुख हर्षु तिन के मन्न॥ शोकु त्यागनु हि देहि ज्ञान शिष वन॥५५॥ धर्मज
उवाच॥ सभ ते प्रथली जीये ताता॥ जे सेनु हि वरतन न जगमाता॥ त्याइ निगम
महि देस दाई॥ त्याइ बिना सधुना हहि ताई॥५६॥ इही चितेम न न त्याइ नीत म
त्याइ नीत हटि सिमरन करहा॥ तुम री चिताचित मोहि सदिन॥ या चन न धरही॥
विचरे है सुख वन॥५७॥ दोहरा॥ तात पक्ष है रोग तु मेबड अन पर सुख धामा जाव

उदासन वन भ्रम भ्रमत चलै चैसे स्हो ग्रकाम ॥४१८॥ इम सुरी नाता शीलवन्ती जानि कहे हो कैसे सेव
रता इग २ रहल तुमारी है तसो धारत है कै नाह ॥४१९॥ ठाधा सी है से रहे के कवहूं भ्रमनुन
दिखान ॥ लषीयत ताके ज्ञान वड़ो सुख दुख एक समान ॥४२०॥ चौपई ॥ निसदिन हे
इही चित हमारे ॥ कहो तात कर रूपा तुमारे ॥ वन उदासन मोक्ष मुकति पाये ॥ धीर सो
कमन तसाति चित ल्याये ॥४२१॥ शोक धार देवे सहि शापा ॥ इही न मरि दे जनापा ॥ विदुर
नातन नहीं द्रिष्ट परावे ॥ कहा जायो दिघहर छव धावे ॥४२२॥ तातेवाच ॥ हे सत पंडु धर्म
ग्रवतारे ॥ विदुर धरे मोह हित भोरे ॥ कहूं कुंज हरि ध्यान लीने ॥ वैदे होइ ठो ज्ञान प्रवी
ने॰ ४२३ ॥ तुमरे ग्रागम स्ऊन कस वज्झौवे ॥ हेम को देषन हर्ष समोवे ॥ विदुर समान
कोउ तपुन दिषाई ॥ सभौर षित तपसी तेज ग्रधराई ॥४२४॥ पौनी विना ग्रष्ठु नाह ग्रह
रही ॥ भयो षीन देहि मास न धरही ॥ हाउ चाम रही कोउ द्रिष्ट नाही ॥ हेत वेर माहूं मो नाहे
४२५ ॥ स्वकल जगत ते रहे उदासी ॥ रिषि तपसी ते भार उदासी ॥ कवहूं म जना नावतरि
छिदेषे ॥ सदा लीन हरि ध्यान वशेषे ॥४२६॥ वैशंपायनोवाच ॥ इहि मो विदुर दूरोड़ि
ष्णना ॥ धर पर तनुन गन महाना ॥ केस सीस वहू धरम राये ॥ ग्रावत दूर ते
निरषाये ॥४२७॥ धृतराष्ट्र निकरे रवे ठे वहु जन ॥ सुरयो विदुर भीर जानी धन्न ॥
धर्म जदि षदौरे वडुहितु धर ॥ वन उदासन जहा जात विदुर वर ॥४२८॥ कवहूं धर्म
उर्वी द्रिष्ट पराई ॥ कवहूं तर वर तले लुपाई ॥ धर्मज ऊचे शबद उचारे ॥ षरो हादु
हे तात हमारे ॥४२९॥ हम ग्राये हेतुहि दर्शन हित ॥ तुम हम को देषत भागे छित
विदुर शबद सुनीर देविचारे ॥ धर्मज सम सइहि शवदु उचारे ॥४३०॥ पुन निजम
नवीचार करावे ॥ धर्मज ग्रस उदासीन तिहि रिकयावे ॥ तर धाया तल ठाउ दिषाये ॥
डरि को जन जे मोहि वुलाये ॥४३१॥ धर्मज विदुर निकट पहुचाये ॥ कोर तात के

पठाविसरनायो॥ पुनजोरहाथ दूइदीने॥ तवविदरध्यानपयकीने॥४४३२॥ इकूर ब
लाइरहेचिरकाला॥ पुनरचनअसकीविशाला॥ वुधविद्याअसो ज्ञानगु
नभारे॥ यनि जैसे राषत प्रभुचारे॥४३३॥ निज देहतेगुण काढजीयसए॥ धर्म
जके देहरवतघन॥ निजतरवरसोठाडुरहान॥ लकरीजिउसरूपरोतपध्या
न॥४३४॥ जैसे रचनविदरकीदेषे॥ धर्मजविस्मायोजवशेषे॥ चिंततभारीरुदन
सन्यो वडुशवदतदाये॥ नमवानीवान॥ हेधर्मजइह विदुरवडज्ञाना॥ तपकीअ
वे॥ वन हेतेहिहदेह जीयधरहे॥ यापररुदनअकारघकरेहे॥४३६॥ धर्मजसुन
तरुदनानिरवोरा॥ आयोधृतराष्ट्रनिकटसुचारे॥ विदरगाथसकलीपुगराने॥
४३८॥ धृतराष्ट्रादिसुनसभुविस्माने॥ धृतराष्ट्रोवाच॥ दोहरा॥ हेसुतमतचिं
ताधरेविदरसमान जगमाह॥ कौनजुजैसेसधारतपुकोवेपदनिरवाह॥४३९
यातेशोकनकीजीयेरहेयोंदेहरधार॥ सभसुनवचनधृतराष्ट्रकेकहेधनज्ञा
नतुमार॥४४०॥ धृतराष्ट्रनपकेहितेयथफलउमहिमाह॥ केहेमुरवतेहेध
सीतलजलअचवोसुरवकारे॥ धर्मयादिसभभागजनाये॥ तेउफलकीअसहारेहे
मसतइहीरमथाइअपाह॥४४१॥ चौपई॥ तुमभीइहीफलकरोअहारे
ताये॥४४२॥ धरीरैनसंजेविध्याअति॥ केरकथासभमनेविमलमत॥ प्रातकालउठम
जुनकरई॥ संध्यादिकनैस्वक्रिचितधरही॥४४३॥ नहाधनेदिनधर्त्रीअर्पावे॥ यहदा
नवहुदेमनकरावे॥ नवीरिषीमुनवहुतपुधारे॥ अर्पावेइनसेदेषनहारे॥४४४॥ मोर
वकोरशवदवडुकरही॥ धुनमुनपंडुपुत्ररषरहीं॥ वेदपदेदिजशवदसुन्नितउचे॥

करेतहा जिन ओरदिस्स चेय॥४४५॥ धर्म जस्वर्ग कमंडल घने॥ ब्रचेमाण्य ज्ञान श्रो
मावने॥ समोरशो कोदे तहितावे॥ धर्म जरिदा उदार महाये॥४४६॥ मृगकी
तुचकम्रनी ज्ञतिस्सुंदर॥ तेभी दीये रिशो को हितधरम॥ ज्ञवरयाहि तेइध्या होई॥
धर्मज देत हर्ष भिचित सोई॥४४७॥ अपंडु पुत्र सम हर्ष ज्ञपावे॥ धृतराष्ट्र मिनउर बैठे
हितमारे॥ सत तुरत न्तप ज्ञामान्न कौहाँ वधाये॥ धर्मज ज्ञपुने निकट बुलाये॥
४४८॥ तव व्यास मुनि कृपा प्रगटाने॥ सम उरबली दंडौत महाने॥ धृतराष्ट्र स
मीप व्यास वैठाये॥ मुख ते कहे वचन प्रगटाये॥४४९॥ व्यासोवाच॥ हे धृतराष्ट्र
तुम सर्वत जाने॥ वन उदान तपु धरे महाने॥ सत कुरुवंत तुमरे जु हताने॥ ति
नके शोकु तुहि रिदे हिताने॥४५०॥ कुंती सत ज्ञरस्स तकौ न्नारे॥ तज्ञ प्राई तुहि सेवा
धारे॥ धर्मज हेत तुमारे आये॥ याह देखन महर्ष उपाये॥४५१॥ तपसी ओ कहे ती
नज्ञाधकारे॥ तितीनो चित धरो सचारे॥ ब्रह्म से सन्न वचन परकाशे॥ दूसर वैरन
कतहू भासे॥४५२॥ तीसर कौहू शापु न रदेवे॥ इहि तीनो द्विठ मन मानि जसेवे॥ त्रिशा
मध उदम ज्ञरस्सीता॥ तिन ते धरे न चिंता चीता॥४५३॥ लघो कहा कध्र विदर गमा
ना॥ नागथ मोसो सुनो महान्ना॥ विदर समान बुध ग्यान मजारे॥ कौ तूनी दुष्प
रे संसारे॥४५४॥ सुरपति सम याके वर ज्ञान्ना॥ धर्मावतार जगाधरो महान्ना॥ दोइसे
वर्ष रिषि कहे ये वचना॥ ताकीये पर विदर वउर चना॥४५५॥ धर्मज सत धर्म विदर
नि ज धर्म॥ याते परस पर वउ हित [illegible] वरमा॥ धर्मावतार पुन ज्ञ पुन समारे॥
धर्मज को निज गुन दीये भारे॥४५६॥ [illegible] भयो जाइ इश सो लीना॥ तिउही तुम ग
तलहे पुवीना॥ तुमेरे जैसे सेत पद्रिष्टावे॥ उत्रम गान धाते प्रगटावे॥४५७॥ स्वपज
मोजे इह गाथ सुनायो॥ वैशंपायन सो पुगटाये॥ जन्मेजयोवाच॥ हे वैशंपायन

वडु ज्ञानी॥ मोसों कहो सकल प्रजरानी॥ ४५ या के तें दिन धर्म जब मनमाही॥ जस सब
हुऊन संजय रहे पातहाही॥ किया घावत कहां तें लें जावें॥ विनऊ ग्रहार जन रहन
सकावें॥ ४५४॥ वैशंपायनोवाच॥ दोहरा॥ धृतराष्ट्र जलवरणादि सम धर्मज
रदऊरान॥ लेकआयो संजऊ आपुने गनेन जाहम हान॥ ४६०॥ सकल से न
तहा घाव सींदे तदानन नहीं कंत॥ एकुमास रहे हेत सो ता तनि करट दूर खंत॥ ४६१
व्यास जु पाछे कही पीछ धृतराष्ट्र सो वात॥ पुत्र शोक है ताहमन ताते कहो प्रजरात॥
४६२॥ चौपई॥ जब व्यास धर्म जनि करायो॥ धृतराष्ट्र भी तहां वैठायो॥ शिषि दि
जपंउत तहां घनेक आति॥ यदगंधर्व तहां मुनगणा सत॥ ४६३॥ नारद दे
वलऊ अर ब्रहस्पति॥ बहुसुर तपी तहा चितहरखत॥ सुरपति सभा समान सुहा
ई॥ कर तपुरातन गाथ्य हितांई॥ ४६४॥ सभ कैमद्व्यास गुन भारे॥ धृतराष्ट्र
सोंकहे उचारे॥ व्यासोवाच॥ तुमसभ की गाथ्या स्रवणाये॥ शिद्धिमोर धनध
रेमहाये॥ ४६५॥ जब भार थकी गाथ चलावे॥ तो हि सुतो कहे तप्रगटावें॥ त
वतुम रामन चित मन दिखावें॥ तिउही गांधारी लखपावें॥ ४६६॥ सभ दुसुन
ऊभमंन कहानी॥ सुरकवदन गहिचित मह आनी॥ ताते हमनिज तप वल भारे॥
देववर लखथ विचारे॥ ४६७॥ या या के मन दुःखा होई॥ मोहवेरे पराए होसोई॥
हेधृतराष्ट्र तुमभी जो चाहो॥ हमसों मांगो धरोनि वाहो॥ ४६८॥ दोहरा॥ सकलस
भा धृतराष्ट्र सम सुनत भये विसमान॥ सभ ते कआधिक धृतराष्ट्र सुए
कहे वचन प्रजरान॥ ४६९॥ चौपई॥ हे व्यास तुहि उपमऊ अधिकऊ अति
याते सुनो मोरहु ध्यासता॥ स्वऊं पंच मो को दिखावो॥ हमरे मनते शोक मिटावो॥
४७०॥ तो हि दर्शी दिख उये मुहिपाप॥ पस तख्यो उधरो संताप॥ मम सुत मरु स

भजगत हतायो॥ कछुन लखो सकया पल्पायो॥४७१॥ भीखम द्रोण अर कर्ण समाने॥ को
ऊन दीसे जगत सुजाने॥ ते भी मोह सतहित हतु भये॥ मह अमर तमो रह्व लुल
ये॥४७२॥ जब चित अग्यावै सोम घरे होही॥ कंपत चित तब हम चिता पोई॥ जब धतरा
कहे ए बचना॥ अब श होइ सोवत दुख रचना॥४७३॥ धतराष्ट्र और तब सभ भीदि
खाये॥ सोवत मन ते धीर मिटाये॥ धर्म अग्यादि पुरख कपै नारी॥ न जनि जदुख
सोरोवे सारी॥४७४॥ अंधारीउ बाच॥ दोहरा॥ पंदर रहि बरख विहाणये मुहि सुतर
ऐहताना॥ तें दिनते मुहि पतनि सुसुख सोयो नहि हान॥४७५॥ इक छिन हरखे
न परेरि दिकाहू और न दिखाइ॥ शोक चित तबनी बस रहे ताते बिना सुनाइ॥४७६
हे ब्यास अवतार तुम तुम ते कछु न दूर॥ जो चाहो सोई करो धरो मोह दुख चूर॥
४७७॥ चौपई॥ तुमरे मन जे इछ उपजावै॥ जगस मदूसर जग उपजावे॥ जिउ
हरि इछाते लख पावै॥ चौरासी॥ तिंउ तुम भी अरस कोपु काशी॥४७८॥ तुमसे
दयाल हमारी ओटे॥ मन मो धरे शोक की पोटे॥ किउ नहीं काटो दुख हमोरे॥ इ
कारे मुहि सबै ते दिखारे॥४७९॥ पुन द्रुपद सुता अरु हरि की भगनी॥ सुत शोके
रहे चिंता मगनी॥ मोहि सुता की सकल लीनारे॥ रहे सुखी पति शोक चितारे॥ दु
४८०॥ कुंती कहै शोक महाने॥ रहे दुखी चिता चित गहाने॥ जि अरचना केरे
सी विस्तारे॥ सभ के मन ते शोक निवारे॥४८१॥ व्यासोवाच॥ हे कुंती तुहि ज्ञान
अध कअग्नित॥ मनन मो धार तहो चिंता अत॥ कुंती उवाच॥ हे व्यास तुहि बचन
अमोरे॥ ये चाहो कर होइ कफेरे॥४८२॥ तुम हो मोहि पते ऐपित ज्ञानी॥ हम नु
रलख है ईश समानी॥ सत केवेन कहो पुगराये॥ जब है घीपित धाम महाये॥

३३५ ४८३॥ गदुर्वासा रिषि कि ताप्र गरायो॥ हम वहु सेवा धारि रिझायो॥ दिन निस रिषि
की सेव महाये॥ तेहु कीन जित रिषि हरषायो॥४८४॥ निस दिन रिषि मो पर हो द
याला॥ तेहे स्वपा उरवे नरसाला॥ रिषो वाच॥ हे पुत्री किया इष्ट तु नारी॥ तुम मो
को दीना सुख भारी॥४८५॥ दोहरा॥ यो च्चाहो सोई दे तहो मांगल्ले उतत काल॥ करो
पर समझ इष्ट तुहि यो मुख महो उचार॥४८६॥ चौपई॥ रिषि के वचन कुंत मो रिक्चा
र॥ मो मन उपज्यानि भय भोर॥ रिषि की ताप प्रगट संसारे॥ छोरे स्राप पवा पव ठ
रा॥ मो॥४८७॥ भय धीरि दिधार हम रिषि सो कहो॥ जो तुम दया इसी विधि कही॥ तुम
ही कृपा पुत्र रिदे विचारो॥ देवो वर जो मुहि हित कारो॥४८८॥ रिषो वाच॥ वरे तो
हि स्वपवंतु सुचारी॥ तुम ते उपजे पुत्र वलारी॥ वहु येध समस सो पूरे प्रण॥
सम सम सर को नि वलो वेरण॥४८९॥ हर्ष नो रिषि इकु मंत्र सिखायो॥ ताको गु
रु कहि प्रगट सुनायो॥ जो सुमरी इष्ट जी पधारे॥ पठे मंत्र इह हे स्व कुमारे
॥४९०॥ निसी देव ने सुत तुम पावो॥ इह वच हमरे सब जाना हो॥ दीयो मंत्र त
व रिषु धुताना॥ गद्य नलख्या हमता ईग मोना॥४९१॥ वी दिन मो को नाहम
लो वे॥ भवि भय हम पुत्र रे देव सो वे॥ क्रिस पाछे इक दिन पर भाता॥ योवन कुंता व
स्था मुहि पर स्माता॥४९२॥ ताड़ी पीनि कुं सगन माही॥ सूर्य भयो प्रकास
नेरा ही॥ रवि तन चवन मो रिदे कसायो॥ पीया हित रवि ध्यान लगायो॥४
९३॥ पर यो मंत्र यो रिषि ने लीन्या॥ तते छिन कुंत्या चो ते जप प्रनीन्या॥ रवि को
रूप सुपी मम देहु॥ रवि उच्चार नो च हु न्ने हा॥४९४॥ सूर्यो वाच॥ हे पुत्री
किहि मोहि वुलायो॥ कौन काज पुनी इष्ट बतायो॥ तव हम कहो रवि सो उच

गयो॥ हेरि रवि जात उजरहो तेऊ आयो॥ ४९५॥ भानो वाच॥ नृप मनि जन मोहि स्तुति लायो सुंद
र॥ मोहि फिरि एन नहिं है होई रि देइ धरा॥ यो नृप मनि जइ ध्यान उचारे॥ जाइ छु
नु हिय वो ही विचारे॥ ४९६॥ जो हिय रिषि तौ कौ मंतर दीना॥ ताकौ भी जारे पर
वीना॥ कादे मो सो हास्य कीना॥ हम सी प्रभु ता हि दै न धरी॥ ४९७॥ रवि कै ऐसे
वचन सुनायो॥ मारी त्रास सुने महि जीइ पायो॥ हम चित तब निच्चित करी तप मो॥
वनी कउन मो को ई हिय वारे॥ ४९८॥ तुम हि जारे शापु धराये॥ रिषि को जारे दि
खन सकाये॥ हो अवश तब हम कही वाता॥ हे रवि न्याइ विचारे साता॥ ४९
९॥ मुहि इछ सुत ते तो ह समाना॥ उपजावे नृहि वैरे महाना॥ पे हो कन्या कै
सेव ने॥ उजा मो हम मुनिंदा गने॥ ५००॥ तब श्री सर्य हो इ दयाला॥ मुख ते उ
चरे वचन री रसाला॥ नृहि वि कुमार ता नाह जमा वे॥ मो र वैरे नृहि सुत उपजा
वे॥ ५०१॥ इहि विहि श्री सर्य गुप्ताने॥ हम रे मन रही चित मही ने॥ जाहू मोह
म पुजारन कीने॥ हिरदे अनुने॥ ५०२॥ चिर काल इहूं सुत उपजायो॥ हमरे
मन भए चासु दिखायो॥ हम वाल बुधि उर पत उपहासे॥ त्रिभाण का तु लाकी
परकासे॥ ५०३॥ वाल्हु तु ले पर उार वहायो॥ जां जामो जग ते भय पछायो॥ यार
विस्तार घनी हराौ वेसीता॥ सादिप ऐ मो माई वरन सत॥ ५०४॥ सुनो व्यास
ऐसे सत जाके॥ हत नृ होवे वह क्रिपा सुरत न भै ही इछ जी पद से हमारे॥
दै छोरी रिस तन कोइ उतारे॥ ५०५॥ धन तप भनि जन सुत दे छो॥ पाके नित नर
दै सो अवशो छो॥ हूप दसना के सुने ते विधि जो॥ हरि भजनी भी पसु तरे सो जे॥ ५०६

२५

आसो बाम्वा दोहरा ॥ तुम्ह कृपा योगनहीं जी यो तव ड्डारे मस्त जल माहि ॥
ज्ञान शील जो तुम धरे जग दूसर नदिषा इ ॥५७॥ यो तुम राषत पुत्र को
लख न सकत तुहि पाव ॥ पै तुहि देष जग सब कलजीय करत पाप निह पा
प ॥५८॥ चौपई ॥ जे जन सुर केदर सन पावै ॥ पांच कर्म सब भनि हर चेको
वै ॥ प्रथम सुभरि देस राषे ॥ दूसर द्रिष सभ सभ वरसाजै ॥५९॥ तीसर ध
र मन निरमल राषे सत ॥ चौथे हृषे न देह परदुख अत ॥ ज्ञिन जन सु
पंचम स्रवण पर निंदन सुनहीं ॥ गुन ज्ञा ही कछु वगुन नहि गुनहीं
॥६०॥ जिन जन सुर केदर सदिषा ले ॥ ता को कछुक नाह सुजाने ॥ रे
कुंती तुहि ज्ञान शीलोज्ञानि ॥ सभ कृपा गुर मो की यो न पाप अत ॥६१॥
पुनः गंधारी सो कहे व्यास ॥ तुम भार दूहे हो दर्शन विलासा ॥ एक बार सत
निज द्रिष्ठ वै ॥ तिन की जीय सब दर्शवधावे ॥ द्रुपद सुता निज सुते
देषा ॥ पितु ज्ञ रभ्रा तानि र बर रषा ॥ सुभद्रा भी सत को निरषा वे ॥
मन ने भाग से सो कहावावे ॥६२॥ कुंती कहे एको दृग नदिषा वे ॥ हर षु धरे म
चना पुजावा वे ॥ मुहि मन चाही येवे र तु हो ये ॥ महाभारथ मे यो यु ध धर
सो ये ॥ ६३ ॥ सभ को मन भान द करा वो ॥ वसि द षरा यो जग तम जो रे ॥ तम सत पु
ने ही की ने ड धा ॥ वैरो दर थ त को रे पुत्र धा ॥६४॥ दोहरा ॥ सर को र विज्ञ व ता र ध
र ज्ञा ये ये जग मा हर ॥ निज नि जली न म ये स भी पुन सभ व पुजारदिषा ह ॥६५॥
धन ताम्र गांधर्व सब तार है ये तु भग त गा ज्ञान ॥ विदुर युधिष्ठर धर्म के भी मपव

नपुराननि ॥५१७॥ चौपई ॥ दुर्योधन कलको अवतारे ॥ शकुनि द्वापर अंश सुवि
चारे ॥ अर्जुन नर अरु हरि देऊ नर नारायन ॥ वेद ते जगु नै पारायन ॥५१८॥ नकु
ल सहदेव दोऊ अस्वनकुमारे ॥ रविकी अंस करण बल भारे ॥ अभिमन्यु सस ते
भयो पुराने ॥ भीष्म अष्ट वसु सोइ कु जाने ॥५१९॥ द्रोणाचार्य ब्रहस्पति रूपा
अस्वथामा शिवकी अंस स्वरूपा ॥ जिह हरि आयो तितु जाइ समाने ॥ जिनके अंसमय
हिल बोसु जाने ॥५२०॥ चलो सभी गंगा के तीरा ॥ हमरो देखो रचन गंभीरा ॥
अपुन अपुनी हित वंधी दषाने ॥ शोक चित सगो हरषाने ॥५२१॥ व्यास
वचन सुन सभ हरषारे ॥ गये गंगा के तट हित भारे ॥ धरमं जुन हित ध्यानु
लगाये ॥ बैठे सभ मन प्रेम महाये ॥ तब व्यास मुनि वचन उचारे ॥ परे नि
शा देखोगे जु प्यारे ॥५२२॥ दोहरा ॥ सभ चितवै सब हरि जिनस प्रीतम मिलै हम
रा ॥ दिन भयो वर्ष समान तिह लोचो रवि सर खकार ॥५२३॥ धर्म आदि सभ गंग
तट बैठे ध्यान लगाइ ॥ द्रुपद सुता अरु देवीया दूसर उर बहाइ ॥५२४॥ चौप
ई ॥ तब व्यास देव गंगा मझ जनायो ॥ जोर हाथ हरि ध्यान लगायो ॥ तदनअरत
जल ते निकसायो ॥ जहा धृतराष्ट्र धर्म ज तह आयो ॥५२५॥ भारत मो जो जीव
हताने ॥ व्यास पुकारे नाम गहाने ॥ इक इक काले नाम पुकारे ॥ अरे व्यास दे
वो पुकारो ॥५२६॥ व उ पुकार जब करी व्यासे ॥ तब जल मो भारी शोर प्रकासे ॥
उथल उथल जल न मे च हाई ॥ सभ भीव स्याने ता ही दिषाई ॥५२७॥ अस्वार
सर कहन सैना सब ॥ पत्री द्विज सभ करै हर खनतन ॥ गज रथ अस्वा जुउ ते ति
उदेखे ॥ जे से हते प्रथम तिउ पेखे ॥५२८॥ परे है दुदरौ रूप अति भारी ॥ मन पा रे

ज्ञायो द्रुपदारी॥ होइ विस्मतं वेस भलोक॥ तब भीषम द्रोण ऐसे पूंछाते निहशोका॥५
२९॥ सत्रुपर रथ चढे सुहावे॥ तिह संग भारी सैन दिषावे॥ जल्लते निकसा ने
छव भारी॥ जिउ महाभारत मोदे तं दिषारी॥ ५३०॥ पुन न्रपवैराट सएा सो ते दिषा
री॥ द्रुपद सुता के सुत संग धारी॥ पुन अभमंन सुंदर रस राजप्रति॥ बहु सेना व
उछव पुगरयो सत॥ ५३१॥ पुन घटोतकच भीम पुत्र वरा॥ असुर सैन भारी नि
ज संग धरा॥ पुन दुर्योधन शकुन दुसासन॥ जल्लते निकसे सुत भ्रातो सएा॥
ग जरथ अस्वे चढे दिषाये॥ शोभ अपार न वरनी जाये॥ ५३२॥ पुन भगदत्त भर
स्व वंवरा॥ सोमदत्त बाहुलीक ये दुपधरा॥ व्रिषसेन करण करण का सुत भ्रातो स
एा॥ निकसा ने जल्लते विगसे मन॥ ५३४॥ पुन जरासिंध सुत सहदेव नामा॥
भ्रातो सह प्रगटे बल धामा॥ पुन धतकेत सिसपाल पुत्र वरा॥ जल्लते निकस्यो
भारी छवधरा॥ ५३५॥ पुन चेकतान अरु सेव बलारी॥ बाहर निकसे ते अपारी॥
हस्ता युधन्नो काशी का राजा॥ पुरान निह भारी साजा॥ ५३६॥ यो यो भारत मो
ह तुभये॥ तिस महीत हाद्रिसी पये॥ धुनापत कांजि उ वेति उसमा॥ उनना हूक छोद्र
ष परोत वा॥ ५३७॥ वेर भार को उदिन वसी वे॥ सब छत चले सभी इक ठोवे॥ वंदी
जन सभ के जस ठेहुद॥ चले पुआर ततव उपनो सोइ॥ ५३८॥ गंधुव अपसरना
चत जाके॥ ... मल्लाल बउर चनी दिषाही॥ जल्लते निकस सभ भुवा हस्साये॥
दिषदिष लोक सभी हरषाये॥ निर्जन जठो डेरोइ दिषारे॥ चिंत शोक तज सुर खव
पुगरोरी॥ ५३९॥ दोरस॥ तब व्यास उ राधतराष्ट्र सो अपुने सुतो निहारा॥ उनक
हरमुरे ना हर्दुग विहरदे शोक भचारा॥ ५४०॥ व्यासो वाच॥ चौपई॥ हमरे वरे तोह

द्रिग जोते॥ परकाशे रहे रिदे उदोते॥ तब धृतराष्ट्र द्रिग षुलवाये॥ नले हाथ उजी
यारी दिषाये॥५४१॥ पुन गंधारी सो व्यास उचारे॥ तुहि पति द्रिग भइ जो तुम पारे
सुन गंधारी निज द्रिग ते पट॥ दूर कीयो ततछिन हरषत घट॥५४२॥ कंत नारदो
उ सुत तो निहारे॥ हरष व्यास कीउ पम उचारे॥ दुरयोधनादि सुत द्रिग दिषाये॥ धृत
राष्ट्र गंधारी बहु सुख पाये॥५४३॥ सुत तो तुर जब इक इक लागी॥ दिष दिदि हरषु
मये बहु भागी॥ इक इक को पहचान महाये॥ हरष हरष निज कंठ लगाये॥५४४॥
बहु प्रशंन हीयरे न समावे॥ उपकार व्यास के भार लषावे॥ पुत्रे मात पिते ते तिर
पादिष॥ हरष व्यास के दोदे केसापिष॥५४५॥ मीते मीत भ्रात सो भ्रात॥ मिल मिल ते
हरहष अति साता॥ पुन कुंती पांच पुत्रो सन॥ भई वषी केनि करम दित मन॥
सुभद्रा सभ मंन की चीय संगा॥ सभ मंन सो जाय मिली संगा॥ दुपद सुता पितु भ्रा
तदिषाई॥ मिली सुता सो बहु हरषाई॥५४७॥ निज निज कंत चे सभ मनकामी॥ वाछी
निरष धरे सुख भारी॥ पंचदस वरष विरह स्रम सहे॥ दषी दष बहु ते सानंद मनग
गहे॥ सकल रेन बहु हरष महाने॥ व्यास रूपा कीउ पम प्रगराने॥५४८॥ दोहरा॥
निश बीती भयो रवि उदे सभ मही के स्नान॥ गजे रथे तुरे चढे भयेग प्रन दिषा
ना॥५४९॥ व्यास एकला हीन हा सभ की द्रिष्ट पराइ॥ पन हीनी तव चीया सो व्यास
वचन उचराइ॥५५०॥ व्यासोवाच॥ यो भरता सो हित तुम रेसता॥ मिलो जाइ मिल
साको उत्तम मत॥ सुनत व्यास के वच सभ मनकामी॥ धृतराष्ट्र गंधारी के पग सिर
धारी॥५५१॥ हरष नदेरि की सुध न संभरही॥ कुदे कुदे गंगा में परही॥ जिन के कं
त मये रण घाता॥ ते सभ जले मगन भई साता॥५५२॥ जह जह उन के भरते

गये॥ तहतहगई त्रीयन्हितुलये॥ सभ कीइछ्या पूर करव्यासे॥ विस्माने सभ स्वन
प्रकाशे॥ मुखते उपमव्यास कीकरही॥ याहरस्वन का अंत न पावही॥ ५५३॥ व्या
सोवाच॥ दोहरा॥ हे न्रप जो इतिहास इहि पठे सुने धरहेत॥ शांत धीर भाती दि
देखहे जगत सुभ चेत॥ ५५४॥ विरहिन का दूजी धीरे विछुरे मिले सहाइ॥ दयादान
धारत रहे हरखि हित उपजाइ॥ ५५५॥ वेद पठ्यो के वचन द्रिड उस तभाषी सुपुनीत॥
याइतिहास के फल वडे सुन हो न्रप सुभ चीत॥ ५५६॥ चोपई॥ न्रप पयन मे जेसु
न्चित हरखता॥ पूछे वैशंपायन सो सता॥ जन्मेजयो वाच॥ इहि इतिहास तुम सो
श्रवन्नाये॥ लख ऊंच पद मोहि दिविस्माये॥ ५५७॥ वह ऊंचपद सभ कौं तक देवा॥ कहा
डेसुनान कवहू पेखा॥ कुरखेत्र माह युध कर सभ मरये॥ जो जाने तिहि परगारहू
ये॥ ५५८॥ वैशंपायनो वाच॥ हे न्रप देहि न रहे कदाचे॥ सुभ असुभ कर्म जान जीय
माचे॥ पंचभूत ते देहि वनी तव॥ कर्म वश जीय परलोक जाइ तव॥ ५५९॥ जव पां
चोंन जनि जउठ जाही॥ जीव जात हरि हरि स्व सुमाही॥ जीव कर्म के संग भनमा
वे॥ स्वर्ग नरक सुख दुख भुगतावे॥ ५६०॥ कर्मकी जन्म स्वार देहि उपजानी॥ जैसे
कर्म तैसे फल मानी॥ कहु पाचो जीय संग रखाही॥ जीय के विछुरे रहन स
का ही॥ ५६१॥ सुइ जनन या ते म्रित धरत है॥ व्रिथा शोक जीय मार करत है॥ वुध
जनन इन के जानन हारे॥ जिउ जल कमल लिउ रहे न्यारे॥ ५६२॥ सुनो भूप वडु
रचन दिखाये॥ भये लोप ऋतु व्यास रहाये॥ धतराष्ट्र नेन भये परवीने॥ सरमला
लहरषित वडु जीय के॥ ५६३॥ जन्मेजयो वाच॥ दोहरा॥ तुहि गुर व्यासी जे उस्व
न करस सुंदर घराये ताहरा॥ तउ तुम मोहि प्रीथत पिता दिखराओ मुहि काहा॥ ५६४॥

पितकोदर्शनुपाइहमधारे॥हर्षुउपजिअपारा॥धर्मजजिउमहिपसवधेकरो॥उपमनुहि
मारा॥५६५॥इहिमोउपजेयेव्याससतवसकलसुनीइहुगाथा॥हेनपजे॥नुहिचाह
उपजितदेखो॥पितुहितसाथा॥५६६॥चौपई॥सुनमपव्याससेवैचना॥हर्षितउपम
कीनमिउजानैना॥धंनव्याससहमवंशतुमारे॥तुमहिनुउपसरचाकोनादिखारे॥
५६७॥व्यासोवाच॥हेनपजेपितदेखनकीउपजासा॥देखोतोहिपितुदेइप्रकाशा
तववयासेलीनपरीछतनामा॥सूचेकरीपुकारउजकामा॥५६८॥हेपरीछततनुर
सुतसुभचारे॥चाहतधरतुमकोनिरखारे॥ततोछिनप्रीछितमयेपवित्रकाजे॥मित्रतरु
सर्पतांगरेसुभासे॥५६९॥जिहदिजसर्पताहगरडारयो॥तेमोप्रीछितसंगोदेखा
सो॥उजसतीकनागभीनपवेसंगा॥उजोरघनेरिषिदिजनिरभंगा॥५७०॥जन्मे
जा॥पितकोनिरखाने॥पितकेपगेलपोसुखमाने॥उजेव्याससधनभागहमारे॥
तोहिहिसुपापितदर्शनधारे॥५७१॥दोहरा॥उजाजुसुफलहमरेजन्मउजाजुसुफल
तपुमोहि॥सुफलक्रियासफलेकर्नेहेपितुदेखोतोहि॥५७२॥प्रीछितसुतमसोमि
लहर्षउपजितवडउछाशिषधारा॥मयोजप्रतनव्याससएमानेसुवडप्रिविचारा॥५७३
चौपई॥पुनजन्मेजयपछतभारे॥हेवैशंपायनज्ञानउपारे॥धतराष्ट्ररचन
कैसीनिरखाने॥पुनक्रियाकीनकहेप्रगराने॥५७४॥वैशंपायनोवाच॥जब
धतराष्ट्रईहिरचननिहारी॥शोकचिंतारिदितेनिरवारी॥जेजामजुनककसुत
हिउजाये॥दिनतीरिषिसभभनिजधामसिधायो॥५७५॥तबव्यासपुनप्रगटउचारे
धतराष्ट्रसुतमरेतपभारे॥सुतकैराजशोकोनिस्वरहे॥ईशइछसभमतेवडध
रहे॥५७६॥नुहिसुतघत्रीधर्मनिवाहे॥वडयुधधररणहतेउमाहे॥उनकोफल
उपजेस्रितिभारे॥सुरपुरमोजातेहैसुखकारे॥५७७॥तिनकीचिंतकरनेवनाई॥

२८३ करो उपमा तिन की हितु पाई॥ धर्म जो है तु हि सत भ्रमचारी॥ करी सेव तुम सी हि
तु धारी॥ ५२०॥ याको देषत हरषत रहो॥ हरि को भजन रिदे दृढ गहो॥ एक मा
स धर्म जतु हि पासा॥ रहो हेत सो रिदे विलासा॥ ५२१॥ विदा करो कछु वनि जग
ह जाये॥ पर जा को जस सुख उपजाये॥ धृतराष्ट्र वाच॥ हे सुत तो हमें वसु हित कीने
हम ते रिदे हरष वडु दीने॥ ५२०॥ करुणा करकै सेउ दान वना॥ ज्या ये हम ते हे त नि
कट वना॥ तु हि जग मम सुहित शोक मिटाने॥ तुह उपकार निज सत दृढ ठाने॥ ५
२१॥ याको फल तुम को हरि देवै॥ तुम रीज्ञा जा सम जग सेवे॥ मो को दिषमत
पृथु जीय ज्ञाने॥ हमरे हे ज्ञान दृत भ्रम नप धाने॥ ५२०॥ जपुर ते मुहि सुष
ज्ञधकाये॥ धन तुम हित चिर काल रहाये॥ रूप विनु नगर देस न सहावै॥ को
ऊ का अर्थ न ही सिध पावै॥ ५२३॥ तुम होवत हमरे त पुना ही॥ हे सुत जा दृ
ढ़ पुर माही॥ यामो हरष हमारे जानो॥ कुवरगाय को रिदे न ज्ञानो॥ तुम स
वे ज्ञान तुम को सम जावे॥ सम जग तुम ते सिष्या पावे॥ तो हितु ओर हम सु स्वस्त २दे
चिता॥ पर जा को सुख रा षो हे सुता॥ ५२४॥ धर्म जो वाच॥ तात मो हि चित इछा
धारी॥ करो हेत सो सेव तुमारी॥ मो हम्मा त जा दे सु संभारो॥ पर जा को भारी सुख
धारो॥ ५२५॥ गंधारी ये वाच॥ हे सुत कैसे सेव हत नवने॥ हम सप त करतु म को ग
ने॥ राज सिंघासन बैठ महा वे॥ मोहि पाछे वड दान करावो॥ ५२६॥ तु हि दा
ने परलोक मझारो॥ उपजावे हम को सुख भारो॥ वैशंपायन उवाच॥ पुन धर्म
सु तु तीसे वचना॥ हाथ जोर उचरे वडु रचना॥ ५२७॥ धर्म जो वाच॥ हे मा
ता पुलोभ ते प्यारी॥ वेद देहु धृतराष्ट्र गंधारी॥ तुम ते न्यारो होन सकावो॥ च्या
हत हो तु हि निकट रहावो॥ ५२८॥ के हो मात घोते किया केरी॥ तुम ते विघ्र त वडु

समधरे॥इहीराजघातेअसपापा॥सभकुलहानेवडसंतापा॥५९०॥भीषमजेवडता
तहमारे॥द्रोणाचार्यगुरुदिजभ्रमचारे॥सुततिनकेभ्राताहितबंधहमारे॥करसंग्रामर
लेसंघारे॥५९१॥द्रुपदवैराटअसादिनृपघने॥हनेरलेवधुउणातनतजाने॥पौत्रभ
तीजेअसरमातलसम॥हतुकीनेतातेकियासरकसव॥५९२॥तुमसमसुखतेवने
वसावे॥विनुहरिहमाकोनलघावे॥सुनतसभीधर्मजकेज्ञाने॥धनधनमाय
तकरेवघाने॥५९३॥सर्वजनोवाच॥धनतुहिबुद्धधंनतुहिज्ञाना॥निजचित
करेविचारसुजाना॥धेनपकेमनअवेसैसे॥हमप्रजालोकसुखधारैकेसे
५९४॥पुजाँवेनसुनधर्मजवोत्योनिजभ्रातनसोवचनअभमोसे॥तुमराजस
मारप्रजसुखधरो॥हमकरोइन्नोकेभचनसमरो॥५९५॥भ्रातोवाच॥दोहरा॥
हमसमतुमेरेदाससमकरहैइनकीसेव॥तुमपरकाशोप्रजासुखधर्मजज्ञान
असमेव॥५९६॥कुंतीउवाच॥तुमकाहेअसैसीकरोसमजावोमहिमाह॥न्याइ
नीतवरतनकरोजिहसमजगसुखपाहि॥५९७॥चौपई॥चारीअआउआरहै
हमारी॥अबवतपहीमोकोतनकारी॥वादविवादमहितपुनगवावो॥समहर
घतनिजधामसिधावे॥५९८॥विशंपायनोवाच॥अबमोरवचनमाताकेजा
ने॥बिजीधारघवपरेमहाने॥दुरतनीरहदुगपगालपटाने॥गदगदरोइस
भीअकुलाने॥५९९॥धृतराष्ट्रगंधारीकोसीसुनिवाये॥हितसोसभकेअशि
घपाये॥हर्षितसभकीलाजेचरनी॥अपेविदापंहमतभुमकरनी॥६००॥डाउ
परवउघवअगाइप्रवेशे॥राजसंभारेतेजदिनेसे॥दोइवर्षहीहमाहसमाने
तवआनारददरसुदिघाने॥६०१॥नृपवउहितसोअआदरधारे॥नारदमोपछे
निहिवारे॥चिरपाछेतुमदर्शनुदीने॥करतेअवतहेपरवीने॥६०२॥कित

३५५ कार्य ते मोह विसार्यो॥ तव नारद मुनि वचन उचार्यो॥ नारदोवाच॥ हे धर्म जह हम
जहां रहां हैं॥ तुम न नहीं भले सम्भव सुनो हैं॥ गंगा ते आगम आव मो ह्यां॥ सुन इ
कु अचर्य ते कहों तो ह्यां॥ ६३॥ दोहरा॥ जब धृतराष्ट्र ते विदा हो नु म कराय बहु ज्ञान॥
धृतराष्ट्र त्याग कुरखेत्र को गये गंगा इस्नान॥ ६४॥ चौपई॥ कुंती गंधारी संजय व
र॥ बैठ्यो धृतराष्ट्र तप को धार॥ आठ दिन हो बहु न के पुत्र अभारा॥ राघ तजि अन्न निज मुख
सौं हत को॥ ६५॥ बैठ तप चल तजि अन्न रहे हैं संग॥ ऐसे से पुन इन के नेह मैं ग॥ गंगा त
ट इक कुटी बनाई॥ तहां बैठ तप करे सुहाई॥ ६६॥ नर रर सो यो फल निज पर रहे॥
आप न तौर ते दुख ह रहे॥ सन्ते सन्ते ते भीत ज दीने॥ पवन अहार भये पवीने॥ ६७
स्वा विषत पसी मन उन कीन॥ हिता॥ धारे उपमइ नो कीवरन ता॥ इहि विध सो षट मास
विहाने॥ तव हम उन को जाइ दिखाने॥ ६८॥ सबके तन न हीमा म्हु दिखा वें॥ ह्यां उ
चानहीं दुख आवे॥ कहूं तर वर के पत्र गंधारी॥ बहु दिन पाछे बात सु चारी॥ ६९
कुंती नि तपूत ए के बोरे॥ अंचवत जल भारी तप धोरे॥ धृतराष्ट्र पवन विनु कछु न
अहर रहे॥ तपके बल निज जीवन धरहे॥ ७०॥ जोहि चाहे संजय पले ज्यों वे भारी
उन कैसे कहि तो वे॥ तराये त्रिण के तुंग म हाने॥ चल्यो पवन बहुते जम्याने॥
७१॥ पर्यो अग्नि त्रिण माहं अचाने॥ उ उपो ज्वाल सम भय परं कपाने॥ इहि अग्नी
ते मन्च ल लग दिषावे॥ अग्नि च्यासु बहु रिदि उपजावे॥ ७२॥ मिग मस कर कोस
पंमि ग्रा स्ता॥ नि कस नस के जरे त नक ला॥ दिष इहि अग्नि ने जु बीचारे॥ आ ऊ पे
तन न शाकतन न धामे॥ ७३॥ संजय धृतराष्ट्र को सीयो उठाई॥ कुंती गंधारी हाथ गहा
ई॥ दौर च ले पे व लुन कि सी त न॥ चल न स के भये पक त विमन मन॥ अग्नि
ते बुध धृतराष्ट्र दिषायो॥ संजय सो भाष तप्र गराये॥ ७४॥ धृतराष्ट्रोवाच॥ दोहरा॥

हम जीवत नहीं बच सके तुम बिन जीय ले जाइ॥ काहे हम मेरे हित मरे मो को पाप लगाइ॥
६९५॥ संजय उवाच॥ चौपई॥ अगिनि मित्र तनी की न उचरही॥ निकसन मंत्र चित वडु पर
ही॥ हे धृतराष्ट्र जो तुहि ले जावे॥ कुंतीं गंधारी जरे दिखावे॥ ६९६॥ यौ उन कौं लै जाउ ज्ञानी॥
तुम जर मरहौ कठिन कहानी॥ अधु उपाव मन रिदिन पराबै॥ कहा करौ जिहि दुख सम जा
वै॥ ६९७॥ धृतराष्ट्र उवाच॥ हम ही रद्धरि देहि उधारे॥ राजभोग सुख त जम ये न्यारे॥ मित्र ज
मित्र हम रे न विचारे॥ हरि की इछा महि हित कारे॥ ६९८॥ द्विज तुम जावो जीव रचाये॥ मो को
पाप न देहु महा ये॥ ईह मोक्ष गिनि धार वडु ते जा॥ ज्ञा यो ईले निकस गमे जा॥ ६९९॥ संजय
सो धृतराष्ट्र कहीन व॥ हम धाउ तुम जाहु निकस अव॥ संजय भाग्यो इन कौं त्यागे॥ ईह तीन के
जरे ध्यान हरि लागे॥ ६२०॥ संजय मोह मिल्यो गंगा पर॥ उन मो सो सभ कही प्रगट कर॥
जहा जरे ये तहा हम गये॥ संजय कही सोई द्विग ये॥ ६२१॥ रिषि द्विज मो ये तहा इकठाने॥
उन की उपमा कैरे महाने॥ उन पर रुदन न के कूकै॥ धन धन सभ को मुख प्रगटये॥ ६२
२॥ तप के फल कैसे प्रगटाने॥ सुरपुर भोग भोग महाने॥ धर्म जम्न न वडु रुदन उठाये॥
नारद वैजे ज्ञान धुलाये॥ ६२३॥ सुन सनलोक सकल तहा आवै॥ परे रुदन अधु कहेन
जावै॥ नार पुर घर वे इकठाने॥ हाहाकार वडु शब्द मयाने॥ ६२४॥ द्रुपद सुता आदेश
दनाही॥ धूल के सिर भुम पर आही॥ रुदन करत धर्म ज प्रगटाये॥ तात समान जग के
सुख कारे॥ ६२५॥ यों कुरुवंश धृतराष्ट्र धरावत॥ सोइ करत मुख उचरावत॥ ज्ञान के से स्वी
मित्र अगिनि सु जारे॥ हरि की गति अधु लखी न पारे॥ ६२६॥ दस सहस्र सम गज बल जा
के तिह वज्र अगिनि ते निकसन साके॥ कुंतीं गंधारी की ता ता॥ जिन की सेव करत जग सा
ता॥ ६२७॥ तिन की ऐसी मित प्रगटाई॥ को उ हीन जन भी नहि पाई॥ हम से सतजि
ह के जग माही॥ आति ऐसी मित पाई॥ ६२८॥ हम ते कोउ निह काम न आये

२८५

मुहिवलतेजुधिराजुराद्धिणायो॥ कहांरहीमुहिराजवछुडाई॥ याकीमातानाशहिगतपाई॥
१२८॥ पुनभाषेहेन्सगिनजानै॥ तुहिंऐसेसीनहीवनतमहानै॥ ज्ञाईजैनतोहिंहि
थांउवजासो॥ तोहत्रिप्रायो॥ निजस्त्रमधासो॥ १२९॥ सरपतिसोयुध्कीनअपारे॥
तुमरीरधकरीहितमारे॥ तुमऐसीकीनेहमसंगा॥ जैसेकोउनकरेअभंगा॥ १३१
योहमहोवतनुहिनिकटायो॥ कादतअगिनितेभुजवलपायो॥ ऐसेसेकहिसमुरदन
केराही॥ हाइहाइमरवतेउचराही॥ १३२॥ नारदोवाच॥ दोहरा॥ धर्मजतमहोस्सुत
धर्मसर्वज्ञानजगमाह॥ हरिइधादिउधरेजीयमदनउठावोनाह॥ १३३॥ मात
तातजराजसुखतपुधारेमननमाह॥ तास्मरिरिषिमुनिजगतकेयपुतपधर
नसकाह॥ १३४॥ तिनपरमदनकहाकरेउनउनमगतलीन॥ दानयज्ञतिन
केहितेकरोवनेपरवीन॥ १३५॥ चौपई॥ नारदकेइहिवेनसनायो॥ धर्मजधी
र्धरेमरायो॥ सभीजाइगंगामजनायो॥ विधवततिलाजलदेत्रिप्रायो॥ १३६॥
धनेदानउनकेहितकीने॥ जिनकीगणतनपरेपुवीने॥ जराजरेयेतहागयेस
भ॥ दगाधेयेतनउनकेतुडेसभ॥ १३७॥ विधवतजारगंगजलमाही॥ दीयेप्र
वाहधर्मजिविसमाही॥ करमजुनहस्तनपुरआयो॥ सभकेमनमोचिंतमहायो॥
१३८॥ कीयेकर्मशास्त्रजेजनसारे॥ भोजनदानअनेकप्रकारे॥ पुनदिजरिषिसभ
तोषकरायो॥ पुननारदहोविदासिधायो॥ १३९॥ पंचदसवर्षयुद्धतेवीते॥ जवगये
वनजगतअतीते॥ तीनवर्षतपुवनमोकीने॥ तवईहिजरेप्रगटकरदीने॥ इ
ति भयो आसपर्वाश्रम॥ यागजजगततेनहीयासोपरम॥ इहिहतिहासजोसुने
हेतुधरा॥ कोकलुअघनाहरलेहैतिनकोवर॥ १४१॥ दुहलोकभोगतपावे॥ याजगा
रचनकातुधलखावे॥ हमलालाकोसीमतराखी॥ वडुहितकथापुरातरभाखी॥ १४२

दोहरा॥ व्यासपर्व पर्व भयो हित समकहि प्रगटाइ॥ पढे सुने जा घन रहे स्वर्ग वास सुख
पाइ॥६४३॥ जे व्यासि सिंधु सम जानहे अधिक हुलास मनो पाइ॥ मन क्रम नु सार के व
ता कही हासी ठौर महाइ॥६४४॥ हे कव जन मम से नती कहे स्वी समनो न्याइ॥ मलच
कहे स्रो धले सहमल्ला लवल जाइ॥६४५॥ इति श्री महाभारते महापुराणे व्यासप
र्वे कहमल्लाल रचित भाषायां समाप्तं॥१५॥ ॐ श्रीगणेशाय नमः॥ अथ मस श
लपर्व लिष्यते॥ सोरठा॥ श्री गणपति परसादि कथा सु षोडस पर्व की॥ रिदे प्रेम
उनमादि कहमल्लाल भाषा रचत॥१॥ चौपई॥ मूशल पर्व कहीय तजि हनाम॥
धरो व्यास बुध गुन के धाम॥२॥ वैशंपायन नो वाच॥ दुर्योधन पर जब बल धाके
ली धेरा जसुत पंडु सु चारे॥ वर्ष छतीस धरन सुख भोगे॥ समम्रातन नहीं दुःख
व्योगे॥३॥ कर्म रेष जव आनो सरभयो॥ सुख की ठौर दुख श्रम प्रगटयो॥ ति ह
जिहि रत्नप शक नदृग परही॥ विपरीत रीत समन पे दिषरही॥४॥ यो पंछी दा
हन सुख देहे॥ ते वामांग उडाना करहे॥ जे वामांग को हे सुखदायक॥ ते दीरे
दाहन दुखदायक॥५॥ कूप वावली सलता नीर॥ उछला वत व उते जगंभीर॥
होरघो धूर परभुम भाती॥ सूर्य चंद नदेत दिषाती॥६॥ वर्ष ठोर नभ उरत अंगा
रे॥ रवि मस्ता क्रांति स्यामा दिषारे॥ निरषनिरष सम जस सुख भर ही॥ होनि ३
मान सुख धीरवि सरही॥७॥ दोहरा॥ भाषत प्रसप रस कल मिल इहि जपम
कन दिषाइ॥ उपजे गोउत पातको या उपाउ कछु नाह॥८॥ पंडु पुत्र बैठे सभ आन
प्रगटे नारदक॥ श्री यदुपति की ठौर तेपुरी द्वारकादेक॥९॥ उनमाधीया द वस
कल प्रसप रकर स कनाम॥ सभ मारे रण भनमनो सुन सुत पंडु अको कामन॥१०॥

चौपई॥ तब धर्म जसमभ बडे बुलाये॥ तिन सो कहत वचन पुरगराये॥ याने रमुर वकी
सुन सुन बानी॥ सध बुध हमरी सकल भुलानी॥११॥ यादव पति ये प्राण हमा
रे॥ सदा सहाइ उ लक्षमति भारे॥ उन पर मत तके उ भेद ब्याये॥ इहि हि चित तचित तवनम
नसंताये॥१२॥ सभा लोक भाषत सुनन्नपवर॥ जहा है इ स्री कृष्ण धरन धर॥
तहा युद्ध के संखरपावे॥ इहि संदेस नाहि स्याम्ह लषावे॥१३॥ जवलौ स्याम्ह संदेसन
पैहै॥ तवलौ कहि हि चित म्हिं ततपै है॥ सुन पंडु सुत तवीरदेव विचारी॥ को पठहार क
सुध हित कारी॥१४॥ जन्मेजयो वाच॥ दोहरा॥ यादव हि उ प्रसपरलरे हे सिकथ्या
समु जान॥ कृष्णति कि महचर्य कृष्णावतरि देक हो सकल पुराण॥१५॥ वैशंपायनो
वाच॥ सुन यनमेजे ध्यान सो यादवकुल कि गाय॥ वर्षछती सभेजी महीध
र्मपुत्र सुख साय॥१६॥ वहुर रिषिन के शाप ते पुत्र प्रसपर धार॥ जायें इ दुके
लोक को सम यादव वलभार॥१७॥ जन्मेजयो वाच॥ चौपई॥ कि हि रिषि के सा
दीयो स राप॥ याते सम हत भये सुनाप॥ यादवपति रघकृष्णति भारी॥ कैसे
शापु ध्धे है तिन भारी॥१८॥ वैशंपायनो वाच॥ इक दिन विस्वामित्र वडु ज्ञाने॥
दुर्वासा नारद संग हि तानै॥ तीनो तपु साधत इक ठाये॥ तहा यौवन बालं क षेल
त आये॥१९॥ हरि लघु भ्रात सार णा तिह नामा॥ दुतीसाय सतर हम क्रम कामा
॥ वर वाल षेलत कान डंत॥ रिषो निकट सायेनि हस कंतमा॥२०॥ वालो क रीरिषि
न सो हमी॥ कसो सो वुनीय सपु सुरा सी॥ लो हु पाय तात उदर वधा ये॥ उर्व तन्नार कृ
च थी दिषाये॥२१॥ रच्छ यो जाई रिषिन ते वाले॥ तु मरिषि हो भारी तपु ज्वाले॥ तुम
तेरुध्यन हो जगत छपाना॥ गुन पुराट सब से हम हाना॥२२॥ इह नारी के उदर

मेरुरे॥ क्रियाउपजेजोबहेहोविचारे॥ रिषिकेपेइहिवातसुनायो॥ उग्रसेनदीयेदिगलाललरायो॥२३॥
नीकपुकारयाहहमजाने॥ याते जोउजन्मेसबषाने॥ तुमन्नीकेजीयसबोनलोई॥ यादवकुल
सबलीषेहोई॥२४॥ गर्वपराद्रुगतिक्षेनकहाने॥ हमसेरिषिनसोहासीठाने॥ यातेहम
इहिदीयोसराप॥ मोरयोमुरहैनाहकआप॥२५॥ दोहरा॥ श्रीयदुपतिभीजगतनतजेजा
हवेबैकुंठसुहाइ॥ बलभद्रुशेशकोधारवपुसलतामाहसमाइ॥२६॥ जबरसबलतैसे
मेरेप्रभुसपरवारसंग्राम॥ इहिविहिउरमिजानरिषिअधधरगयेनिजधाम॥२७॥ पुरीद्वा
रकातेनिकसपांडवानलीउराग॥ हस्तनपुरकोरिषिगयेजिनकेवचनकमेरा॥२८॥
चौपई॥ यादवरिषिकेवचनसुनाये॥ अतिचिंतातरचितविस्मायो॥ कीयेकर्मनिज
उधबलजाने॥ निजनिजगेहगयेचिंताने॥२९॥ पुरीद्वारकामहिसमाही॥ रि
षीशापसुनचितचिंताही॥ जाइकहमसोकहीसुनायो॥ नृपसुनमेतहाँरसुनाव
समायो॥३०॥ मखभाषतमहिगयेकनाई॥ ईशइघकिनहूनमिटाई॥ केतकदिन
यामाहविहाने॥ शापउदरमसशलप्रगटाने॥३१॥ जैसेमगदरमेलनहायो॥ अति
भारीलेहमईमकायो॥ दिषयादवदौरतविसमायो॥ उग्रसैननृपसोसघपायो॥
उग्रसैनतबबोलनुहारे॥ कहोमुसलकरहोसमधारे॥ नदीतीरमसशललेजाये॥
लडोघसावनबहुबलुलाये॥३३॥ अंगुलमात्ररहोजबआई॥ घसनसकाहरहे
बलुलाई॥ दीयोडारितिहिनदीमझारे॥ होनहारकहकैकोनिवारे॥ योघसघसन
दतरवीहिगये॥ तामसोकैराधवतपतिभयो॥३४॥ दोहरा॥ उग्रसैनहलधरहमन
मरतंडोरादीन॥ सुरापानकमबजोकरेताहकरोअपाधीन॥३५॥ नृपकहाकहासननसभ
उरेमदरानामुननलेहा॥ भलेचबेकेकहेजोतिहवहुशासननदेहा॥३६॥ तबम्रितुमान्तु

३६७ बकेरूपहो प्रगट घारकानान॥ स्याम वदन तन पीत कज्ञति मंडत सीस मयान॥३७॥
चौपई॥ निरतत अंगटे हेदिषरावै॥ ज्यों हरि ज्यों हि फिरत भार मय पावै॥ यादव सरता डोर षहा
रत॥ जुपत होत कतहू न दिषारत॥ ३८॥ लषीयत नाहर कहां लो पानी॥ चलत पवन प्रल
काल दिषानी॥ जिह चलत वहु नर गिर गिर परही॥ कौन सके जो धीर्य धरही॥ ३९॥ कछ
न हीं सुध वहु धर उडानी॥ ज्यों हरि कपा स्चुर कर हो जाही॥ वहु कपार धाम न प्रगटाने॥ स
मकछु करे हे हाइ कठाने॥ ४०॥ सो वत जन न केकोटे केशा॥ दाढी मख उठ कर तकु मेसा॥
सार कउ लूक समान सो वोले॥ नम कवं धगाहि शमन्नु कलोले॥ ४१॥ लैरे प्रसपर वडुम
घकोरे॥ सभ पुर जन न दिषद्र तकुपारे॥ जांह उदर गार्धप उपजेंही॥ जार्धप उदर
वछरे उपजाही॥ ४२॥ स्वान उदर उपजे मंजारी॥ मंजार उदर नि उले प्रगटारी॥ घा
दवमा हि वडवादि वधायो॥ दि जो रिषि तिह को दुहि पन पायो॥ ४३॥ सभ सो वन कज्ञति
लघु उचरावे॥ जुरुजो वडानन को जु दिषावे॥ पुरषन परत्नारी वलु पावै॥ ज्वाल जो तसु
निस्याम दिषावे॥ ४४॥ रिषि तपसी तपास्या विसतारे॥ तिह पर कपास हस प्रगटारे॥ उल
टी रीत जहत तह दिष्पावै॥ दिवस ह्लाद शीज्यों हि निदिषावे॥ ४५॥ दोहरा॥ महा भारथ के आदि
भीज उत्पात न काहू न दिषान॥ तिउ हरि श्री यदुपति नृपत मुरवे ते वच उचरान॥ ४६॥ श्री भ
गवानोवाच॥ चौपई॥ दुर्योधन कुल सह तह ताने॥ वर्षछतीस यमा हि वितानो॥ गांधा
री मुहि दीयो स्रापा॥ यदुकुल को षयल षोन्न मापा॥ ४७॥ एक रात श्री हम सुजाने॥
दीयो दंडोरा नगर मराने॥ कालतो वसस मन दी कडारे॥ चलो कर हि तीर्थ दरवारे॥ ४८॥
फिर उदंडो राजनर पुर माही॥ तव उपजी इकु त्रीयात दाही॥ कर्ण स्यामत ज्ञाति वसन स्याम
दंतपीत मय कार रूप काम॥ ४९॥ सवकल द्वार कामि हि ज्यों हि माही॥ दोरत फिरत अमरार हसा

हीं॥ पुनजनदिषदिषवहुभयपावहिं॥ पकल्योचहेतवढिगनदिषावहिं॥५०॥ घ
नेभूतप्रगटेपुरमाहीं॥ चीरपुरषजीयकेलेजाहीं॥ कोनहीसकेजूलेहथुडाई॥
तवचक्रसुदरशनचल्योरिसाई॥५१॥ सभकेदेषतनभेचढायो॥ भयोगुप्रकहूदि
गनदिषायो॥ पुनदारकहीररथकेसारथ॥ रथसोतसुवोधहीरिस्वार्थ॥५२॥ श्री
यदुपतिअजजहूनचढायो॥ तसुदेरवहुवेगकरायो॥ उतरीसंघतेपारसिधाने
सभुदिषरहेनाहढिग्याने॥५३॥ हलधरधनुधरसर्पकनकारे॥ सोहतसुदवहुतेज
नपारे॥ धुजतजसर्पनभउडोरसिधायो॥ भयोलोपकिननहूनदिषायो॥ दंदुलोक
नपसरपुकारहिं॥ जतिवउचेशवदउचारहिं॥५४॥ दोहरा॥ दूसरदिनयाद
वसकलमिलसललताकेतीर॥ तीर्थहेतगयेतहापावनकरेशरीर॥५५॥ चौपई
लोकदारकाकेइकठावे॥ सर्वदुवस्तगधारमहाने॥ षानपानपहरनकेसाजा
मदकेपानशस्त्रसामाजा॥५६॥ सुतकैनारसभसंगचलाये॥ गजरथअस्व
चढशोभसभाये॥ सिंघासनडोलेधवभारी॥ उढदूवेठेशाहव्योहारी॥५७॥ अंत
वृतनेचंदोइकनाता॥ वहुसमर्जानेनानाभाता॥ वहुजनविरछनछायादि
षाई॥ उतरपरेवहुशोभसुहाई॥५८॥ तवतिनतेउहोजिहनामा॥ वृषधरचाय
वतपकोधामा॥ श्रीयदुपतिकीअज्ञापाई॥ उतरठंडुकोगयोहितायो॥५९॥ जि
हतपजोतमगतिमुलहरतवर॥ उजीयारकरतसभभानसमोधर॥ पुनश्रीह्र
दमब्रसअसुवतोरे॥ अज्ञाभोजनकीनउचोरे॥६०॥ सोहतभोजपकवानमिठा
ई॥ षटरसभोजनसरसवाई॥ सुषमाजिजकोदानकरायो॥ जेवराखगोहेतुम्ह
षकाये॥६१॥ केउपरषकरमदरापाने॥ भयोउनमनसुधवुद्धितजाने॥ मदभाज

 नकारधरउनमन्नाा॥धीतिउनगिरतविस्धघ्ज्ञतिज्ञन्ना॥६॥॥मदज्ञं जलमरीदिज
भोजनपरा॥धरणावनज्ञरा टहासधरा॥भोजनत्यागकीनदिजवरतवा॥हरि
निरखतक्षयोा६ उकीजेज्ञवा॥६३॥शहिभोजनदिजकेहितन्नाही॥ज्ञवरमगध
धर्योतिहपाही॥वदुज्ञपस्परन्नज्ञतिघने॥रागीकवगुनजनज्ञनगने॥
६॥निजनिजगुनलागेप्रगटावन॥सुनेसभाबैठेहरिपावन॥उग्रसैननृप
ज्ञादिसकलजन॥रुदमभ्रातहलधरनिरमलमन॥६५॥सातकेसोसांवल
तवमेभारे॥प्रदुम्नज्ञादिसुतरुदमज्ञपारे॥वडेवडेयादवजेनामी॥वैठेसन
मुखज्ञतरजामी॥६६॥तहांहलधरमदपानकीनज्ञति॥मुखउचरेमदपात्र
ल्याउसत॥सभकोलागेमदज्ञचवाइन॥होउनमत्रीकैसेगाइन॥६७॥हल
धरसुतवर्माइकवैठे॥ज्ञचवज्ञचवमदभयेज्ञतिवौरे॥सातकप्रदुम्नसांवते
ज्ञाद्या॥हिइकठौरमदरा उनमादे॥६८॥सातकवहुउनमन्नभयोजव॥सुतव
रमाकीउरदेखतव॥सातकोवाच॥देषोसभजनयाकीउरे॥ईहणावतेहैनिज
चलघोरे॥६९॥सुनयाकीकरतूतस्नानोवो॥जिहपरगर्वतनूरसभाको॥इन्नज्ञ
सघामेरेसंगहोजव॥बालज्ञदोसरतकीनपापतव॥याप रगर्वतसभामऊ
रो॥ज्ञनधरतमुखवचनउचारे॥७०॥प्रदुम्नोवाच॥धंनधंनसातकमनत
भारे॥ज्ञतिसाचेतुमवचनउचारे॥सुतवर्माइहसुनउनमन्ना॥करतवच
नमुखतेगर्वन्ना॥७१॥सुतवर्मोवाच॥सातकतुमपरनिंदउचारो॥ज्ञपुनेक
र्मनहिदेखभारे॥भूरसवाकेहाथकटेतुम॥इहकियावलतुमकीनकहामुह
७२॥नवक्कीदपनदिघसातकडोरे॥कैसेनसमकोवचमोरे॥प्रत्ताोजत

जोइनहतुकीना॥ मणिलैभाज्योकहूपरवीना॥ ७३॥ जन्मेजयोवाच॥ दोहरा॥ शत्राजित
कीसभकथाकहुमोसोविस्तार॥ तासुनवेरीचाहज्ञतिकरोकृपाअतिभार॥ ७४॥ वैशंपा
यनोवाच॥ चौपई॥ शत्राजितयादवलघुभ्राता॥ वीरसेनजिहनामविख्याता॥ शत्राजि
तरविकीबहुसेवा॥ बहुप्रशंनभयेदिनमणिदेवा॥ ७५॥ होप्रशंनरविमणितिहिदीनी॥
याकीजोतभानसमकीनी॥ शत्राजितमणिलेकरद्वारी॥ आयोहरिकीसभामझारी॥
देषदूरतेसभजननजानहि॥ आयोरविहरिदरशनमहाने॥ कोहैलोकसुनीयेयदुदे
व॥ आवतभानतुहिदर्शनभेव॥ ७७॥ तवहसकेश्रीकृष्णउचारे॥ इसेभानुमत
जानुसुचारे॥ शत्राजितकोमणिरविदीने॥ तेमणिकंठवताइप्रवीने॥ ७८॥ इहिमे
आयोसभामंझारी॥ शत्राजितवैठोजोतत्रपारी॥ समयादवतिहिदेषनलागे॥ इहिह
मणिकहतेलईसभागे॥ ७९॥ शत्राजितोवाच॥ कोहरूसर्वमुहिदीनदयालहोइ॥ अजो
रवेंहुसुनयाहिकहोसोइ॥ जिहयायाहघरनठहरईये॥ हायसमानभुमकेचुन
लईये॥ ८०॥ सदाररहतयाकेनिकटाही॥ दुखभ्रमरुजनाकेकछुनाही॥ सिहसपवि
त्रतेअनादे॥ घरनसकेदुखताहअवादे॥ ८१॥ आवरघनेसुखहैयामाही॥ केतक
कहीयेकहेनजाही॥ सुनतसुनलोकसकलविस्माने॥ ८२॥ रहेमोनकछुकहन
सकाने॥ जवशत्राजितगेहसिधायो॥ तवरुकमइकुदूतपठायो॥ जाकहीदूतह
मभागतमणि॥ जोसभजगतेधारतवहुप्रणि॥ ८३॥ शत्राजितोवाच॥ कईव
र्षरविसेवकरीहम॥ भयेप्रशंनदिनंदेवहरणतम॥ कृपाधाररविमोहिमणिदी
ने॥ तेहमकेसेदेउप्रवीने॥ ८४॥ भद्रतआइहरिसोप्रगटारे॥ सुनभयेमोनकहुम
गुनभारे॥ एकदिवसताकोलघुभ्राता॥ वीरसैनजिहनामविख्याता॥ ८५॥ मंठ
धारमणिआषेटकोहिताआनस्वचरगयोदोराववतइतिउत॥ वनउदमनमोजाइप

३४५ गन्ना॥ सिंह व्याघ्र फिरते जिह बन्ना॥ १६॥ दोहरा॥ सन नमुख केहर धाम अश्व कूद
तें कूदि तजाइ॥ पुनि दौरत बन मो गयो गर्ज्यो काल जिह भाइ॥ १७॥ ताको बन मो
सिंह हनन मणि लै गयो उतार॥ पुनि केहर को रीछ हन मणि लै गयो बलार॥ १८॥ चौ
पई॥ शत्राजित भ्रात जो हन नही आयो॥ इह मोके तर्क दिन बीतायो॥ शत्राजित सभ
सों यें भाषत॥ कृष्न बैर हम सों बहु राषत॥ १९॥ मणि मांगत नाही हम दीन्ही॥ ति
ह हम सों ऐसे सकुच कीन्ही॥ मैहि भ्राता कौ सुध कछु नाही॥ हत्यो कहू पर कानन पा
ही॥ २०॥ लोगन भी सान्ची कर मान्यो॥ तब यदुपति ईह सन्नी कहान्यो॥ कोप धार सभ
हीर दक ठाये॥ बन को च्वले षोजत तिह पाये॥ २१॥ पहुचे तहा जहा बहि मार्यो॥ सिंह रूच
रन को चिह्न निहार्यो॥ २२॥ आगे हरि मणि तहां न पाई॥ देष देष सभ रहे बिसमाई॥ २३॥ स
म ल्लोकन कोऊ हम दिषायो॥ आगे गये मणि सिंह षु जाये॥ देष्यो सिंह जहा परो मारा
रीछ चरन तहा चिह्न निहारा॥ २४॥ आगे देहु मणि तहा न पाई॥ बिसमाने सभ सह
त कन्या ही॥ आगे चले रीछ मग जो हन॥ देषी गिर कंदर इक जो हन॥ २५॥ रीछे च
रन चिह्न ता माही॥ सभ दिषकं पाने भय षाई॥ श्री यदुपति भारी जिह रचना॥ ति
न सों उच्चरावत मुख बचना॥ २६॥ श्री मुख उवाच॥ हम जावो या कंदर माही॥ बर ज
रहे सभ हरि न रहाही॥ द्वादश दिन तुम मो हनि हारो॥ यो न कहा उनि जधा मसिधा
रो॥ २७॥ एकोर हम कयें कंदर माहि॥ घोर भयान कोतम र महा जर॥ कन्या इक तुम
माह निहारी॥ कहति सुंदर मुख जो तकपारी॥ २८॥ बालक एक कुपघरे माही॥ खेल
त तेहु मणि को वस कर हाही॥ कन्या जब देषे यदुराई॥ ऊचे शबद पुकार कराई॥ २९॥
धाम बन तस्कर नमु तापुकारे॥ कहायो दौरे तजु अतिभारे॥ हरि सन्मुख वे सो युध सं भारे॥
विप्रम कोइ दिन तार उचारे॥ ३०॥ धाम बंत तब ल हीन भयो जब॥ राध जोर करु बिनी

करीतब॥जामवंतोवाच॥श्रीरामविनाकोऊसमरथनाही॥केरीनवलमोकोबल
नाही॥१००॥अजवहमजानीतोहबडाई॥ममधरोनिजदासजनाई॥होतुमदस
रथसुतगुनपूर्न॥तुमहीकीयेसीसदसचूरन॥१०१॥जामवंतबहुउसततिधारे॥
सुताविवाहदईहितभारे॥दुवंघनीसंगदाजादीन्ना॥तेमणभेदईहोइअधीना॥
१०२॥दोहरा॥जामवतीकोमणसहततेलेआयेयदुराइ॥केद्वावाहरनारकोसभउठ
गयेविसमाइ॥१०३॥वादिसदिनजवरहमजीवाहरआयेनाह॥होनिरासभसभ
उठगये॥पुरीद्वारकामाहि॥१०४॥चोपई॥वलभद्रआदिसुनसुनदहुगाथा॥
भयेचिंतानचितचिंतअकाथा॥शत्राजितकोदेहिधिकारे॥जिहपाछेभयो
गुप्तमुरारे॥१०५॥दूरुरहेकधुसधनहीपाई॥भारशोकचितचिंतसमाई॥
अकस्मात्रप्रभपरगटभये॥तब॥निरषतहरषतभयेयादवसभ॥१०६॥पुन
बैठेहरिसभावनायो॥सभजनवोलइकेत्रकरायो॥शत्राजितकोवोलजगत
पति॥तेमणताहदईहर्षतअति॥१०७॥दोहरा॥शत्राजितकेभ्रातकीकथाआदि
तैंअंत॥हत्योसिंहजिंउताहकोप्रजगरअसीभगावंत॥१०८॥चोपई॥शत्राजित
सुनलजुतहोई॥होअधीनमुखभाषतसोई॥शत्राजितोवाच॥हेहरिपूरणब्र
लसनातन॥छिमाकरोममपापविमलमन॥१०९॥हरिकेचरणसरणलपटा
ने॥सुताविवाहदीनहितमाने॥सतभामाजिहनामउचारहि॥आनिसुंदरगु
नशीलअपारहि॥११०॥तेमणसुतासाथउनदीनी॥श्रीयदुपतिमणनाहन
लीनी॥पुनश्रीहरहमजाजपुलकीउरे॥जाहेपांउवाकेहितघोरे॥१११॥पाछेकृ
तवर्मअसकीने॥निजअलघभ्रातसोमंतरलीने॥उतदेवनामयाकोप्रजारोवे॥

रुक्माजुताताहकीनकरातिभाौवो॥१२२॥निशकंभधारीगयो
२५० मुजबल्लकंजाति॥शत्राजितकोहन्योजाइततं॥शत्राजितकोहतमणिल्या
यो॥सतभामासुनारदातपायो॥१२३॥हाशोकातरपितकीगाथा॥तेल्लद्रोणीधरी
चिंताता॥गईहस्तनापुरकोधाई॥जहांगयेथेश्रीयदुराई॥१२४॥जाइरुदनसोक
हिसभुगाथा॥रुदनकरतपितशोककाथा॥सतभामानारदनोदिखायो॥सम
लोगनकेरिदेतपायो॥१२५॥तातकालहरिगरुडमंगायो॥सतभामासगणचडदौरा
यो॥पुरीद्वारकाकीनप्रवेशा॥रुतवर्मभ्रातसनभयोनरेशा॥१२६॥मणिकंअक्रू
रकोदेनिजभागा॥चडुअरुस्वपरस्वडुमगलागा॥ताकेपाछेयदुपतिपरे॥मह
दानवजिनसंघरे॥१२७॥सतरहियोजनइकदिनगयो॥पाकिउअस्वतव
पायकभयो॥चरनेोवलदौरतभयभारी॥तवजापकुचेरुदनमुरारी॥१२८
चक्रसुदरसनकदमप्रहारयो॥ताकासीसकाटभुमडारयो॥दूहरहेहरिताके
चीरा॥मणिपाईनहीज्वालगंभीरा॥१२९॥

पाछेतेहलधरजूआयो॥मणनहीपाईहरिउचरायो॥सुनहलधरनिजरिदेखिचा
री॥भ्रातासोहीरनारप्यारी॥१३०॥हमसेभाषेवातवनाई॥मणदीनीत्रियकोहि
तपाई॥दूदेकोपंहेविदासिधरयो॥जनकपुरीमेमनजापगापरयो॥१३१॥जनक
भूपसुनहलधरआगम॥आइमिल्योवहुकीनसमागम॥वहुधाधननगप्रवे व
शकरायो॥वहुदिनकरेहुलासवधायो॥१३२॥विद्यागदाहलधरवहुलीने
हितधरजनकभूपसमदीने॥पहुचेसुहमद्वारकामाही॥सुनअक्रूरमजे
गयोतदाही॥१३३॥जवअक्रूरद्वारकात्यागी॥इंदुनवरषेमघअनुराजी॥
महादुकालद्वारकामाही॥कैसीरचनाहरिदिखराही॥१३४॥दोहरा॥अ
क्रूरपिताकोवरहुतोइकवारविधिजिहतपुभार॥जिहपुरतुहिरहघुअमघरे
इंदुनवरषेधारा॥१३५॥अक्रूरविरहितेमातको॥शोकभयोअधकान॥इंदु
नवरषतयाहतेरिषिकेवचनप्रमान॥१३६॥चौपई॥सवकलसोकमिल
हीरपेआयो॥करिपुकारशोकअधकायो॥तवश्रीहरिअक्रूरवुलायो॥
वहुआदरसोनिकटवहायो॥१३७॥तवअक्रूरमणआगेधरी॥लीजेकृपा
संधनरहती॥श्रीयदुपतिमनमाहविचारी॥वोलपठेहलधरसुभचारी
१३८॥अक्रूरकहायहलधरमणदेखे॥लूजतमयोमनमाहविशेषे॥पितुव
सदेवउठदेहुमिलायो॥दुहूहरिदेतेसोभमिटायो॥१३९॥रामकृष्णदोउअ
तिहरषाने॥कृष्णलालहितचितअधकाने॥चौथचंदभादवकादेखा॥
डीहदूषनमृदनेतवपेषा॥१४०॥दोहरा॥श्रीयदुपतजूकहीतेसत्राजित
कीजाय॥सातककहीकृतवरमसोवहुविसतारहिसाय॥१४१॥चौपई॥
सतभामासुनसुनपितुनामा॥रुदनकरतअनजलतजकामा॥कहत

३५१ दुष्टन सो विकल विचारे॥ सोपि तु वैर तुमन्ना हनि वारे॥१४२॥ मोहपि ताजि हर
कीन संहारन॥ तिनके तुमन्नीहि कीन विदारन॥ तब सातकी वाल्यो मन रवि वे
ना॥ सुन सतभामा म्रिग सम सैना॥१४३॥ हम तुहि पितु को वैर गहायो॥ तु
मेरे मन न सत्ता पुमि रहायो॥ इन पापी न सच्या मा संगे॥ हने द्रोपदी सुतनि हभं
गे॥१४४॥ धृष्टद्युम्न कैसी रवि भीम सरे॥ इन ही कीचि पर वलन्चरे॥ तब वही हर
की नारायुर मई परवना॥ चरे पार हरके भुज वलन्चरना॥१४५॥ ईहरवहि सातक
रख दुजनि को रे॥ कृतवर्मा पर कीन प्रहारे॥ ततोछिन ता सीस उतारे॥
सतभामा आयो निवारो॥१४६॥ कृतवर्मा हि चंद्र दिखायो॥ सातक पर दौर के
पायो॥ देख प्रद्युम्न रुक्मि कोप तता॥ भयो कोप भारी करन ता॥१४७॥ दौर सात
क का पग धारे॥ रख दुजन छैनच करनाह संभारे॥ सातक सर पर दुष्ट कुमारे॥ उ
न दो द्रुह तली न पृथ भारे॥१४८॥ दिख पदुम्नि कृति को धम राय॥ निजु
धी हरके दून शस्त्र दिखायो॥ एला उपरानि हठो र प्रहार्यो॥ जधन को धच्चि
स्मरि रौहि सहायो॥१४९॥ रहे शोध दौरे भुजभारी॥ हरि के सन मरव युधु हि
न धारी॥ हरि के सन्मुख जो को आवत॥ एरा पर रहर ता हहता वन॥१५०॥
सोरठा॥ एराब दुग सम न ना नकाति तीछ न्य यातन लठो॥ हरि न हर के दो जा
नो रहि सरापनि र चन से॥१५१॥ दोहरा॥ पिता पुत्र को हनत नहि भ्राते
भ्रात हनता इ॥ शिछ शछे उन मत्तने रे मधवृधर हीन काइ॥१५२॥ चौपई
हरि की सो दीरिघिन के शापे॥ कैरे पुस्य परपुत्र कमापे॥ उपर उप
पर एराप सहारे॥ रव दुगुस मा लग्न पुस्य पर डारे॥१५३॥ हरि के हर के दो
दो धम रहाने॥ छिकहि पुरातन भोत समाने॥ हरि के पुत्र पौत्र हनत है॥

ये॥ सकल कुटंब सहित तरण सो ये॥१५४॥ दिष श्री हरिजन निज सकल परिवारा॥ भरे जो
पर प्रीति ऋधि अरु अपारा॥ स्नेह बढ़ो दुहं प्रीति तिहो ई॥ अपापार लष तन नहिं कोई॥१५५
तब दारक हरि वचन उचारे॥ सुनो ई शत्रि भुवन उजीयारे॥ हलधर तुम रे भ्रात सु
जाना॥ उठे सभ्राते तेज महाना॥१५६॥ मधु सुदन नाद जु कह्यो सिधारे॥ मन तह तह
इक हू युध मारे॥ दारक वचन श्री हरि मन भाये॥ कहत सत्र जो तुम प्रगटाये॥१५७
हा को रघु ता की सुध लेवै॥ जहां है तहां जाइ दुबेवै॥ कै तक मजार रघु हाजचलायो
नरतल वैठो हल्ली दिषायो॥१५८॥ प्रीति विसमान नचि तीचि तरजपो रे॥ ध्यान न ग
न तप सीकी सारे॥ श्री यदुपत तानि अरगये तव॥ राम नन लष्यो को अपोज्ञ तब॥
दारक सो हरि वचन उचारे॥ ताते सुन हो वचन हमारे॥१५९॥ श्री भगवानो वाच॥
जाइ पांडुवन को सुध देहो॥ अरजुन को निज संग लै ऐहो॥ दारक रथ चढ़ वेग सिधायो॥ हस
नपुर पर वेश करायो॥१६०॥ पांडु हरि निज भ्रात वुलायो॥ सुदर्शन नाम याहि जग गा
यो॥ तासो हरि मुख वचन उचारे॥ सुन भइया सियाम्यो हि विचारे॥१६१॥ जाडु कुंवर लापु
री मज्ञारे॥ वाल नारा गीद करो सभारे॥ असन न होइ कहूं तस करथो धे॥ मन तको कुर पुर विघ
न करावे॥१६२॥ पितु वसुदेव की सुध जा लीजो॥ जे होवे आद्धि लमत की जो॥ त्रिभवन पति
के वचन सुनाये॥ जायो हरि भ्रात वउवे तब आये॥१६३॥ मजमो वकत एकुनिहारो॥ मद उ
नमन ए राज रघा सो॥ दूरे देष चल्यो तब धाई॥ हरि भ्राता ही मित्र जे लआई॥१६४॥ दो हर
व कहरि को भ्रात दिषदे रोवहुवलरारा॥ एरा की यो प्रहारतिन रहतारे भुमसमारे॥
१६५॥ चौपई॥ श्री यदुपति ता की सुधपाये॥ हलधर सो कहे वच प्रगटाये॥ श्री भगवा
नो वाच॥ भो मन ग्राम अग्नि पिरउपजाने॥ मन तको कुपुत्री अमुधरे मरा ने॥१६६॥
तुमहसी वैठो हरमन जासैस धारा हो॥ समुमस धस्यो वेतुं हिनिज रगैं हो॥ हरि को हरहम

गयेपुरमांही॥पितवसुदेवकोमिलेतदांही॥१६७॥यादवकुलकीसकलीगाथा॥
कहीप्रगटहरिपितुकेसाथा॥सुनवसुदेवनिजकुलकोहानो॥दुसहिदुखकीये
शोकमहानो॥१६८॥रुदनकरतगिरपरतधरन्नतल॥भयोविसुधनसंभारत
बुधबल॥सकलपुरीमेरुदनपरायो॥हरिपितवसुदेवबहुशोककरायो॥१६९॥
श्रीभगवानोवाच॥दोहरा॥शोकनसमनहुवसुदेवधासुनोपितासुखदेन॥
सुधसंभारसवधानहोभयीपुरीनिहचेन॥१७०॥जबलोअर्जुनकुशावही
पुरकीसुधलेनहु॥हमजोवहलधरीनकरपलुभरविलमुनदेहु॥१७१॥
चौपई॥हलधरहमुरामनमाहि॥निहारीरह॥तासोमिलधरोधीरअपार॥सभु
पादवरणभुमहतहोये॥जोहरिबिनुहमकोसुखनहीकोये॥१७२॥तिनविं
नुहमपुरमाहनजावे॥हलधरसोवनतपउपजावे॥ईहकहहमीप
नुचरनगहाये॥सीसनिवायरुदोलपटाये॥१७३॥दिवसकलीनातीलदना
वै॥दासीदासातिनतनपावै॥परीधनकछुनाहसनावत॥नवप्रीतहमउन
कोसमजावत॥१७४॥मनतेरोवोचितधीरधारहो॥ईहसमदधाईशरिचरहो॥
अर्जुनकुशावततुमरेपास॥दुखदहरसुखउरहेपरकास॥१७५॥दोहरा॥ईहकह
प्रभबलभद्रपैगयेवेगजगतिधार॥वेठोदेखोभ्रातनिजतेउतरनलीचितार॥
१७६॥चौपई॥हलधरमुखतेसर्पनिकासो॥सागरउरचल्योपरकासे॥बिनाप्र
नहलधरकीदेह॥परीनिरखतरतलहरितेह॥१७७॥अजहेपाछेगयेचलेह
रि॥सिंधतीरजाइठाढेभये॥बरधनिरखतसिंधसमकोरुपा॥जलतेनिकस्योज
लधस्वरुप॥१७८॥बहुउकार्दरजलधरनिधमांही॥धसेदोऊहरिरहेनिरखांही
पुनवासबकरकूरउक्सादे॥सभीमिलकरायेसर्पकसधादे॥१८०॥हरिनिरखंतराम

चिंतापरचित्त हरिभये॥ दुखित रवन्न एकौ तनि हारे॥ ज्ञान ध्यान परसौ सदि धा
रे॥१८१॥ चिंता रहे बैठ निजा रिदे विचारे॥ डंधारी के शाप सभारे॥ डंधारी मुनि दी
न सराया॥ ते ऊर्ज्जाइ प्रगटे सताया॥१८२॥ दुरवासा के वचन सभोरे॥ आये
ये बल्ली विघा घोरे॥ एसी रहम बल के जग माही॥ किसके डर ते भय कछु नाही
१८३॥ एक चरण तल ते भय जाने॥ ये भ्रम उपजे पग ते माने॥ जोर रवया द्रवस
कल हताने॥ हम भी जगत जचले म हाने॥१८४॥ इहि विचार हरि टोर इकांते॥
बैठे जाइ तर तल निरझांते॥ पौढे पग ज्ञान परधारे॥ वुध्रत्रतिसर्व इकठारे॥
१८५॥ तेसभ मन मोली नवनाये॥ सी सुनि वाइर हे बैठाये॥ हरि पद पद म च म
कते ऊभारी॥ तेदि ष बध करि रिदे विचारी॥१८६॥ बग जाने उन सरपर डारो॥ ज्ञ
निरम चूक सर जाह उचारो॥ तिनव ह्रद कधन कसी सरलायो॥ पदम चमक ध्या
न तह लायो॥१८७॥ दोहरा॥ शाप सभ ब केजव दीयो रिषि कोपत चित भारा॥ म
शल निकस्यो उदर ते घसयो ताहलु हार॥१८८॥ कंस गुल भर रद्यो शेष तव उव
न घसायो जाइ॥ डार दयो ति हीं सिंध मो लीयो मीन निगलाइ॥१८९॥ चौपई
इक बद्ध कपकरी व हु मीना॥ उदर फार तिह की नकस धीना॥ लोह मे घल ते नि
कस्यानी॥ उन इक बासी से कारट कानी॥१९०॥ ते सर रहम चम्न तक मारे॥
हेरायो तव हरे नि हारे॥ हरि को दे ष कज्ञ धिक के पाने॥ के पत भय कज्ञ घर के रो
मरा ने॥१९१॥ बध को वाच॥ बग जानत मुहि सरपर हारे॥ छिमा करो तव हम पा
प हमारे॥ हे हरि सर्व ज्ञान परमात्मा॥ ब्रह्मादिकं न तम धुर हत तहरन्न तम॥१९२॥ त्रि
भुवनपति तिन रथी पदीने॥ मरव ते वचन कहत पर कीने॥ श्री भगवानो वाच॥
जैसे ही थी हो वन हारी॥ तुम मत राषो रिदा तपारी॥१९३॥ तो हप पव कछु लाग

तनाही॥ तुमरहोसुखमितहरवमननमाही॥ तेहिध्यानमहपगमधरयो॥ मन
बुधिचिततनमनपगसंचरयो॥१२४॥ महपगध्यानतेइहिफलपावो॥ होइमर
तेवैकुंठसिधावो॥ तवहीनभतेउतरविवाना॥ लेग्योचढवहद्रवभयमाना॥
१२५॥ हरिपगचलजैवैकुंठसिधायो॥ हरिकरुणाकाहूंतेनपायो॥ पाछेजस
उतपातदिखायो॥ कदसरविकीजोनादिखायो॥१२६॥ रुद्रइकादशआयेतहां॥ कु
मारआस्विनीसुंदरमहा॥ उनचासमरुततिहठापुराने॥ आठोवसआये
हरषाने॥१२७॥ बारहिसूर्यमररतवंते॥ आयेहितहरिदरशनंते॥ धविस्वा
मित्ररिषिनारदआदे॥ सिद्धगंधर्वजिहनाहिमिरयादे॥१२८॥ चित्रसेनवि
स्वावसजसपसर॥ मिलनआयेतेतीसकोटसुर॥ हरिजन्मसमेवसुदेवमोहजि
मा॥ भयोउजीलआरामपुराचलतिम॥१२९॥ सभहीहरिकीउपमउचारी॥ निज
निजजनजनकीनेपुरारी॥ वहिचांदनस्मणहरिआवगता॥ भईलीनसभअपु
नीसजा॥ जिहहेतआयेथेतहगये॥ रूपमलालहरिअचरयुभये॥२००॥ दोहरा॥
डंडेलोकजवहरिगयेसुरपततचितहरषा॥ जानतआपुनेभागवडरीनसेव
हितमारा॥२०१॥ चौपई॥ इंद्रपुरीतेगयेआगेहरिरागमनसरेजिहसुरपतप
गाम॥ सुरनईशदोनोकरजोरे॥ विनतीकरतसुनहरिप्रभमोरे॥२०२॥ इंद्र
बान्हा॥ यातेआगेमनचलनसकाहीं॥ मोरहसकतेअवउछनरहाहीं॥ सुरपति
कोहरिविदाकराई॥ आगेगयेत्रिभुवनकेराई॥२०३॥ जन्मेजेसोवैशंपायन
सहतवचनहरिकेगुनगायन॥ भगवानगयेवैकुंठकेमाहीं॥ अवगाय
पंडुपुत्रपुराणहीं॥२०४॥ वैशंपायनेवाचा॥ दारउस्तारपजो॥ हरीपढायो॥ पं
उजानकीउरसिधायो॥ प्रथमपउस्मृतहरषपुराने॥ सन्मेरवींद्रपंचिततपुरा

मरुदारक दमकी तनकाल हि॥ यादव सह तनु शल्य हरि धारहिं गदार
की बाच॥

हाने॥२०५॥ पंडुसुतो वाच॥ सभु यादव हत भये सु जाने॥ सुनत पंडुसुत सभु विस्मा
ने॥२०६॥ चिंत परस्पर सुधि विसरी सारी॥ मनहु भिरहु सम सम आदि धारी॥ पुन सुध
पाइ भरत भे स्वासा॥ रहे कहा तुम कीन प्रकाशा॥२०७॥ पुन सुध हम तेरि दे विचा
रे॥ ऐसी भई कहा प्रगटारे॥ उन मो वे सकहा ते परयो॥ जिन प्रभु सपरकै स्वाधु धु
करयो॥२०८॥ दारुको वाच॥ रिषि सराप की सकल ली गाथा॥ दारुक प्रभु तासी पंडु सु
त साथा॥ जिउ जिउ युद्ध यादवा धारे॥ जिह विधि हरने कीये प्रगटारे॥२०९॥ दोहरा
धर्म पुत्र भ्रात नन सह हत सुनत भयो भय मान॥ जीवत मिरतक ते परे देखत प्रग
टमहान॥२१०॥ तव अर्जुन सन धर्मसो भाषत मन चिंतार॥ आज्ञा दीजे जाहु हर
महीर सुध ले दुस चार॥२११॥ चौपई॥ विन देखे चित ना हरपती जे॥ ते गमोह
अब आज्ञा दीजे॥ अर्जुन रथ चढ आज्ञा पाई॥ गयो पवन सम वेग लगाई॥२१२
पुरी द्वारका कीन प्रवेशा॥ देषी अति करूप दुख भेशा॥ पति विहीन जिउ नारि दि
षावे॥ तिउ राम कृष्ण विन पुरी लषावे॥२१३॥ सुरपुर ते जो अधिक सुहावत॥
हरि विन द्वारका दुखी दिषावत॥ दिषि अर्जुन दृग ते गत नीरा॥ चल्यो उमडउन
दि पावत धीरा॥२१४॥ सभ पुरजन ने अर्जुन निहारे॥ रुदन उठावत अति अन्
पारे॥ कैसे सो नरे पुर सो परयो॥ रुदन शवद सो नभ भुम भरयो॥२१५॥ अर्जुन
त्रीया सुत शोक संभारे॥ रोवत अति वडु शवद पुकारे॥ अर्जुन अपि ताभ्राता के सो
के॥ रुदन करत चित भार वियोगा॥२१६॥ निज निज दुख पुलषे अरनारी॥ रुदन
शवद जिह ही कह प्रगटारी॥ निरष सुनत दुख दुसह महाने॥ अर्जुन की सुध
वुध विसराने॥२१७॥ पुन चिर पाछे कछु सुध पाई॥ पूछे ऊमे स्वास भराई॥२१८

दोहरा॥ उभे स्वास अर्जुन धरत द्रिग मर झारत नीर॥ सुध पूछे वसदेव की कह
हे वीर निरधीर॥२२१॥ पूछत जायो वसदेव पे पौर यो देख्यो ताह॥ दोर चरन अ
र्जुन परे अति चिंता चित याह॥२२२॥ अर्जुन को वसदेव दिखाये॥ रुदन संभार
त रुदन उठाये॥ अर्जुन को कहू सके न वाता॥ सुत वियोग शोक अति साता॥
दुहू रुदन कीने अति भारी॥ शब्द सुनत दौरी सभ नारी॥२२२॥ जेती नार दार
का माही॥ अर्जुन के सन्मुख रुदनाही॥ केश सीस खुल परत भुम झार रहि॥ रोवत
अति दुख उच प्रकार रहि॥२२३॥ पुन वसदेव गदगद मुख वानी॥ अर्जुन सो क
हे शोक महानी॥ वसदेवोवाच॥ तोहू सखा कहां गयो दीखे हो॥ जिह सभ अस्र
हे ते सुव ते हे॥२२४॥ जिह सभ जग जै जिते नरेश॥ तेरा म सहत कहां गये दिनेशा
जैसे सुव हूतु विलाप उचारे॥ हाइ हाइ रोवत दुख भारे॥२२५॥ दोहरा॥ रुदन सखा
वसदेव सो पूछे कहो महान॥ कैसे सभ मुनक हते परो भयो सकल कुल हान॥२२६
वसदेवोवाच॥ कृतवर्मा सातक दोऊ भये इहि सभ मे निदान॥ बादु विवाद इन दुह
न के सभ मे हने जीय ज्ञान॥२२७॥ इन दोऊ भीन हीदो सुत बधु ज्ञान न ही चित माह॥
भयो रिषिन के शाप ते यामो अंसानर॥२२८॥ चौपई॥ मुनि रिस तव उजि न अ
करसिगारे॥ के सभ पज्ञाद कवल भारे॥ सभ पाल शाल अरो सिध समाने॥ क
लयम नसवली हताने॥२२९॥ तेम मधा ऊअके लगये वरा॥ कैसे जीवो विनह
लधर ही॥ अवर कर्म जो जो उन कीने॥ कहन सकन न नरिह बधुबीने॥२३०॥
उन्नी वमन अव के से सुख मोहा॥ मरण भला अहि रखी न विधोहा॥ जिह हीनह
रित जमो हलू पाये॥ कान पान निंदुरान बनाये॥२३१॥ गमन सभ मे मे सो उच

रानें॥कमलवदनतेवचनमहानें॥अर्जुनआवेगोतुहिपास॥तुमरीचिंताकरे
विनास॥२३२॥तुमरामगमेंनेंननिहारत॥फिउचकोरससउरविचारत॥तुम
कोजोआज्ञाहरिकीनें॥तेऊमरेहरिसखाप्रवीनें॥२३३॥हरिकीनारप्राणतेप्यारी
तिनकोभीकरगयेदुखारी॥मणीमरूतनगभरेमंडारे॥तुमहीसभकीवरेसभा
रे॥२३४॥जैसेजानोतैसेकरो॥मोहिजीवनकीआसनवरो॥रामकृष्णममपुत्र
विचारे॥प्रद्युम्नआदिपोतेवलकारे॥२३५॥तिहविनअवजगकियासुखधरहो॥
चिंतास्वासरेनदिनभरहो॥सुनअर्जुनहरिपितकेवेना॥उहीचितपरेआसुखदे
ना॥२३६॥हरिसखाउवाच॥हौंपितुमोहिहरिविनभ्रमभारे॥अधुनपरतहौंरेदेवि
चारे॥तुमनिहचेजानोजीयमाही॥हरिविनहमरेजीवननाही॥२३७॥धर्मजा
दिमुहिसवकलमिरात॥सुनसेतापहिउठिजातिआत॥द्रुपदसुतानिसदिनहरिध्या
नें॥सुनतभरेगीदूखमहानें॥२३८॥अववहमसभतजरजमरेगे॥हरिवियोगसह
नाहसकेगे॥वसुदेवोवाच॥हेसुतअवजीयनीकेजानो॥प्रीतलाजहिरदेपहिचा
नो॥२३९॥अवहमरोसुधवुधनरहानी॥जोजानोसोकरोविनानी॥वेशंपायनोवा
चा॥अर्जुननचिंततवाहरआयो॥दारुकसोहरिसदनसिधायो॥२४०॥दोहरा॥नेगीम
चीरहमकेआरदिजरहेवशेष॥हरिविनदुखअर्जुनहिदेपरोशोककीरेष॥२४१॥रद
नउठायोसभनमिलसकेनधीर्युधार॥हमलाललक्ष्मीरहमविनरखोनहिसेवि
चार॥२४२॥चौपई॥तवहिदनरिषितपसीवउज्ञाने॥धीर्यवचनकहतप्रगटाने॥दि
जरिषोवाच॥याकाशोकतुमरेमननमाही॥ताकेजन्ममरणदोऊनाही॥२४३॥अरुसे
अविनाशीदयाल॥अघकेअयोनकालकोकाल॥हरिकीरचनननजिनलखा
ई॥वेदपुरानसभरहेथकाई॥२४४॥फिउअरथकीसिखअर्जुनेवो॥तैसेहरिरचना

अवि वे वै॥ पृथि हिरन इहि स्वचन विचारै॥ गहो शांत चित धीर सभारै॥२४४॥ सहुनुकी
ये कथ्थु ह्राथ नपरई॥ सोइ करो जिहि कार्यसरई॥ साती देव सजव पर विहावै॥ पुरी
वारका जल मगनावै॥२४६॥ कथ्थुरि चारकै सन्न अर्क करे हो॥ सभ पुरजन को वाहर ध
रहो॥ डाजर थक अस्थ करहो इक ठाने॥ मतो विलमो वो ज्ञान महाने॥२४७॥ हरि रए
वास सकल ले जावो॥ इंद्रप्रस्थ ततकाल धरावो॥ अर्जुन्नोवाच॥ अनन्त रक्ष व ज्यन
न वरन्नामा॥ सभ कुल ते दूवरयो अक्रामा॥२४८॥ राज कअपुनीत हमाथ्य धराऊं॥
निज जगत जे वन्न तपसा पाऊं॥ हमरे पाछे दधि उमडावै॥ रहेई हा पुर सनमग
नावै॥२४९॥ जिउ जानो न्कलने वकी करहो॥ सच सम भीलन धरहो॥ पुरी द्वार
का जो ननत जावै॥ निह सस्से जल मोमगनावै॥२५०॥ अर्जुन वच सभ की स्वध
हरी॥ चलाचली सभ कै चित परी॥ पे अस तौरेन्न तहा वीताई॥ रोवत चिंतत शोक
तपाई॥२५१॥ भई प्रात उठ अर्जुन कै न्नै॥ वसदेव मिलन मनसा मन लीने॥ इ
हमो वसदेव वेधामा॥ हाहाकार उठ शबद उठान्ना॥२५२॥ सहंस नारी सर वेसधि
लोरै॥ वाहर निकसी कंठ पिया पारे॥ रोवत अति वहु शबद महाने॥ अर्जुन सुन चि
न धीरत जाने॥२५३॥ न तन्चिन दो रत वार रक्षायो॥ पृथ्थ तडी हरि विया श्रम उपजा
ये॥ इनो कहा जर वैरेन्नावि हानी॥ हरि पितु गयो तव प्रान्नत जानी॥२५४॥ राम कृष्ण
कै मात पनी॥ देवकी कैसे रोहणी विचारी॥ इन ते अादि हरि पितु की नारी॥ रोवत सि
रपर के पाविलारी॥ अर्जुन दृष्टि चिंतातुर भये॥ सिर तर सम अक्षत न तिहूलये॥ सी
म जान्न यांव पर धररौवे॥ मन चिंता की माल परोवै॥२५५॥ तव हरि न्ना रज अर्जुन परि
साई॥ मुख ने वचन कहे प्रगटाई॥ कौन सम अवचिंत विसारे॥ हरि पितु गावत
तकाल हि जारे॥२५६॥ अस मन हार इके उद्यम उपजावै॥ हमरानि कसन नरउन

परौवै॥ अर्जुन सुन वडु उद्यम धारे॥ हरि अपनु देहि वडु छवि हनि जोरे॥२५०॥ जह
दि जय जग करत तप भारे॥ अस्वमेध श्री रज भस्म भारे॥ चंदन अगर गर जी चिषावना
ये॥ अगर गजादि सुगंध धिर कायें॥२५१॥ दोहरा॥ चतुरदस त्रीय वसुदेव की हरिमा
ताते आदि॥ सम हौं पतने संग जरी पतिब्रत ला जमि जादि॥२५२॥ जारे देहि वसुदेव
की अर्जुन नाचि तचिंतान॥ आयो जह यादव हने पुर सपर युद्ध महान॥२५३॥ चौप
ई॥ मिरतक देव दुतु गनि हारे॥ अर्जुन शोक भरे वहु भारे॥ रोवत आ जा के रपं उ
सत वर॥ ईधन द्रुकठा करत तो छिन धर॥२५४॥ ईधन तनु गनकर पोल सु माने॥ दई अ
ग्नि सभ जार महाने॥ पुत्र पुत्र आदि सभ सुत की देह॥ दूंउ जराई वडे सनेह॥२५५
॥ जिन सभ जार महाने॥ पुत्र पुत्र आदि सभ सुत की देह॥ दूं उ जराई वडे सनेह॥२५५॥
सात कठ तव मैं अक्रूर॥ जार तमयो हरि पुत्र तम पूरा॥ ओर घने जो जान पछाने
तिने जराये वडे हाने॥२५६॥ राम कृष्ण दोनो की देहा॥ दूंउ निकार भार सनेहा॥
चंदन चिषावना इज्ञानी॥ वहु सुगंध तामो धिर जानी॥२५७॥ वेद उक्त सम क
म कराये॥ जार अर्जुन प्रेम चिंताये॥ दोहरा॥ पुरी द्वारका ते निकस आये सभ त
तकाल॥ इंद्र प्रस्थ को म गाली यो अर्जुन चिंत विशाल॥२५८॥ छोडु सम स्वह
रि की त्रीया को दासी दास अपार॥ अर्जुन आगे धार सभ परो पंथ चिंतार॥२५९
चौपई॥ वजमान अर्जुन कर कोप ता॥ सम के आडे भार करत ता॥ म द्रुह रे त्रीया
पा छे वर अर्जुन॥ पुरी त्याग उतरे दधि तत छिन॥२६०॥ सिंधु तट सम थाने ताने॥
उतर परे सभ अन जनि जथाने॥ उमडो सिंधु वडु लहर उठाई॥ छिने द्वारका जल
म गनाई॥२६१॥ निरख तन सभ चिंतातुर भये॥ मन्दर सम को भी जल मगन ये॥ ज
नरे भय उठ चले सकल जन॥ संग जिन्नो के रदा के अर्जुन॥२६२॥ नदी पंच
जह मेल करा ही॥ उतरे जाइ वडे वेग तदा ही॥ भील न को तहा वास सुना वत॥

२५६

लूट लेत जो तहा रहावत ॥२०६॥ उनो देष इनके धन सा जा ॥ अरवर नार समू
ह सभ ना जा ॥ घोर रथ कसंग निहारे ॥ भयो द्रोष मग लूटन हारे ॥२०७॥ होइ इक
चक्र धनुष सभारे ॥ मुदगर शक्त तधुर के भय पक्षोरे ॥ दीर पर इक वार हित आये ॥
लूटन लागे वलु तुम धरकाये ॥२०८॥ अरजुन उनके सन्मुख वे होई ॥ निरषत द्रो
स्या कहमुरव सोई ॥ अरजुनो वाच ॥ जादुन तहा जहा ते तुम कहआये ॥ अपुन प्रान
सभ लेहु बचाये ॥२०९॥ नातर यमके धाम सिधारो ॥ निज जीवन की आस बिसारो ॥
उनको अरजुन के बचन न मानो ॥ लूटन लागे दुष्ट भय त्यागेनो ॥२१०॥ गंगे बुझे ते उ
निनको हर के अरजुन ॥ तिऊं तउ लूट तम द हीठ जन ॥ शस्त्र सभार अरजुन के
सन्मुख ॥ युद्ध हेत दोरे मुरष चरष ॥२११॥ अरवस जान अरजुन धनु लीनो ॥
पुतं चच डावन न बनको मनु कीनो ॥ पुतं चन च डेव हुत करर स्यो ॥ होवि समान
चिंत चिंतक स्यो ॥२१२॥ हरि बियोग हम मनके से भयो ॥ धनुष चढावन त्यो भी गयो ॥
जो मुहि सन्मुरव सके न होई ॥ अब लूटत तनु छवले है सोई ॥२१३॥ बढेयतन पर
ते चच डायो ॥ पैं चन सके धनु बान न लगायो ॥ होई विस्मय करते धनु डारे ॥ रवउग
हा पसीनो न तकारे ॥२१४॥ षड्गुन निज से बहु बल लायो ॥ पै उसतन असी व
२१५॥ चिंत कप्रा धिकभयो चित्र भीत सम ॥ लहेलूटे द्रोषदु ष्ट तम ॥ इकइक भीलइ
कनार लूट करा ॥ लेसे जात वहु धन पोट भर ॥२१६॥ अरजुन दिषवहु रीस कज
रोवै ॥ चार तनि जपुन न निज कसोवे ॥ दिषन सके कुप धनुष गहायो ॥ बढेयत
न सो पान चलायो ॥२१७॥ सरवल तहने षने जन अरजुन ॥ वान नं वर्ष धारी
के धलर ना ॥ तहा हरि रचना कैसी कीने ॥ नूणा अषर तम भयो सरहीने ॥२१८

नृप अर्जुन निधुर उर वग्यो ॥ रथ्यो न समरता मे दुरखु भयो ॥ सर बिहीन उर वनृप दिखायो ॥
दोरो अर्जुन धनुष गहायो ॥ २२ ॥ धनुष धुलकुर जिमत तान न मारत ॥ जहि लागे
यम रो हि सिधारत ॥ पांच दस बीस एक ठे मारे ॥ यक तहोइ वहु रोसि हारे ॥ २३ ॥
वैशंपायनो वाच ॥ वे अर्जुन तक हा लो मारे ॥ उन वहु लूर कनी तिह वारे ॥ इ
कुसन मुख अर्जुन के लरही ॥ एक लूरधन तीय को करही ॥ २४ ॥ दोहरा ॥ युध
मे धनुष चुडेन हीच ओनिवरे वान ॥ जिन जी ते सुर अर्जुन समर समर व उप
जीन कस भयान ॥ २५ ॥ चौपई ॥ अर्जुन चिंत त तरि दे विचारे ॥ मृके ते वषु
न हो तति हि हवारे ॥ होइ अवश्य तहि रोवत ढिगमर ॥ हाहाकार तहे लंदमया
दवर ॥ २६ ॥ कहे मो हद दुरखु भमहे हरि विन ॥ समदेष तल्लूरे तीय केसो धनु ॥
हिरि को सिमर पुन कर [illegible] वल पायो ॥ खडग निकास के कोप दोरायो ॥ २७ ॥ जअ
छव चर हे ये धनन नारे ॥ ते व चाइ राषे व लधारे ॥ सभ जस्रा गो धर चल्यो वेग करा प
हुचे आइ कुरुषेत्र ठौर वर ॥ २८ ॥ [illegible] तव मोको पर तवु लाये ॥ आरहट न राजी तहि
ना मुधरायो ॥ सन्त स्नातक को कुरुषेत्र दे ॥ वजमान को इंदु प्रस्थ दे ॥ २९ ॥ तहा
हरि अर्जुन नायक आप्यारी ॥ सती भई कुरुषेत्र मझारी ॥ रुकमनन जामवती सतभामा
इन ती जो तप उच्यम सुधामा ॥ तपुकर ते कै अस हो भास्वी ॥ पुन उन कीव छुसघन
पुकाशी ॥ ३० ॥ दोहरा ॥ त अर्जुन गयो व्यास पहि हि चित दरसन कीन्चार ॥ जा
इ निवायो सीस पग ॥ व्यास निहारे तार ॥ ३१ ॥ मन न व्यास अर्जुन दरस जोयो चितातर
निरखाइ ॥ [illegible] लाल रिषि ज्ञानमय कहे वचन पुगराइ ॥ ३२ ॥ व्यासो वाच ॥ चौ
पई ॥ कहु अर्जुन तुहि हि [illegible] मभारी ॥ तुहि वदन पीत [illegible] ॥

ज्ञतुम रोचदि षाई ॥ बहु बिधि यावरो तो हि दुरकुम्नाई ॥ ३ ॥ ०॥ पतिस्स तहीन को उनार
निहारे ॥ सोल्ह ले लोल तुम बरेस्स चोरे ॥ वे ज्ञो दो स्सदि जकी यो तुहि घाता ॥ बेरए
तजतुम भगो ज्ञाता ॥ ३ ॥ १ ॥ ज्ञ जुन स्सुन त व्यास रे व चे न ॥ पुगर बहे हरि कीस
भर चेन ॥ पुन रही तुम हो वडे मह ने ॥ तहो स्स रलनि जस्सम पुगरा ने ॥ ३ ॥ २
दीह जे ज्ञ घतुम पुगर वषाने ॥ इन जे को उ मोहम हा ने ॥ जगको तजगये
हरि हल धरस्स ए ॥ यदुकुल पुस परभयो सबल हरन ॥ ३ ॥ ४ ॥ सातव ल तब मो
बल भारे ॥ पुदुम्नसां वहरि स्स तज्ञ न ज्ञारे ॥ उन तेज्ञ ीहि स्स भुधरस्स व ना मा ॥
हतुम ये पुस परयो धज्ञ का ना ॥ ३ ॥ ५ ॥ हरि की नित्तु मती हियों द स्सो वे ॥ सिं धज्ञ
पारस्स की जिउ जां वे ॥ वे ज्ञ का शुभ म परगिर परे ॥ वे षे ल ज्ञ चल पाहरते र
से ॥ ३ ॥ ६ ॥ जिउ ईहि स्स भज्ञन हो नी वा ता ॥ चि तु नि हचे न ही मा न त स्सा ता
ने उ हरि मरण जि उ जा ने ॥ ज्ञ व र ज्ञ चा न व स्सु नो व षा ने ॥ ३ ॥ ७ ॥ श्री यदु
कुल की स्स र ली ना रे ॥ हम ल्या ये नि ज स्स ग स्सु चो रे ॥ मग नो त स्स र र मो हि
मिला ने ॥ उन धारी वडुल्लू ट मह ने ॥ ३ ॥ ८ ॥ हम उन स्सो नि ज धन षु चा
उ ये ॥ पत ने ष उ गु न स्सरे उ ठाये ॥ वी हज्ञ जुन ने हो जी हि र प उ प रा ॥ स्सार
षस्से ज ज दी स्स धर न धरा ॥ ३ ॥ ९ ॥ भी ष्म द्रो ण कर्ण स्स स रे ॥ हम नि न हु व ल्लु ए क ल
रण चरे ॥ ज्ञ वर व डे दा न व हम मारे ॥ या की स्स र था न्ना हि वि चारे ॥ ३ ॥ १० ॥ ज्ञ
व हरि विन हम कैसे स्स भ ये ॥ त स्स र र नी च ल्लूट ले गये ॥ हम दे प त व धुना ह
चे ला ये ॥ या ने तुम स्सो भा ष स्सु ना ये ॥ ३ ॥ ११ ॥ ज्ञ वो वी हरि व ध जी वे हम हरि वि
न ॥ तुम व रर पा दे वे स्सि ष्या व रा ॥ रा ज स्स भ ला व हम चि न ते स्या गी ॥ स्स म ही

हौसुखपेहरिस्मिनराजी॥३११॥कहतकहतकृस्नअर्जुनमरणना॥भयोभीतरकौचित्र
समाना॥कृस्नअर्जुनकेवचसुननतब्यासवर॥चिंततकहतमुखतेसरवहिनहीर॥
३१२॥व्यासोवाच॥हेकृस्नअर्जुनसुनवचनहमारो॥चितमेधरहोधीरसुचारेरि
षिनशापयादवहतहोये॥भुमकेभारहरतेहरिसोये॥३१३॥हेकृस्नसरपापी
कृस्नघमारे॥तेसभहरिजूकीन्हसिघारे॥तेसभहनयादवहतहोये॥भुमकेभार
हरतेहरिसोये॥जिहघेकृस्नाये घेकृस्नघचरन॥तहहीगयेसर्वगुणपरन॥३१४
तुममतांचितकरोजीयमाही॥जन्ममरणहरिकेनकदाही॥तुमभीजोनायेज
गकीने॥भ्रातनसहतमजवलीप्रवीने॥३१६॥कृस्नवरीकेसीस्वपेन्नदिखाये॥
तुमहिहतकहेहोसुनेनोहितपाये॥शीलधर्मयसुरदेतुमारे॥तेउभाखतहोसुनेनोसुच
रे॥३१७॥सभकछुसमेकृस्नधीनउचारे॥दुखसुखराजतेजवलकारे॥तुमराराजेहे
रहेपछाने॥जगकेमोडासततुमसभजाने॥३१८॥इकुसमनतुमसभकृस्नसुरहताये॥
कृस्नवतुमसकेनशस्त्रउठाये॥निहचेजानोसमाविहाये॥राजनेरषतुहमालमिटयो
३१९॥तवलषयोजननसन्मुखयाते॥कृस्नवचोरनसोलरनसकाते॥लखुवातनकी
एकोवाता॥करोत्यागकरहोजगसाता॥३२०॥तुमसभकर्महरिकेवलकरे॥हरिव
रणवलवउसुखधरे॥घेचाहोहरिविनजगमाही॥सुखयसुतेजसवप्रभीनाही॥
३२१॥वैशंपायनोवाच॥कृस्नअर्जुनसुननतब्यासकेवचवर॥गजपुरगयोव्यासकेपगप
र॥जाधर्मजकेपगलपरायो॥चितचिंतातरमोनरहायो॥३२२॥सभभीभ्रातसुनदे
र तजाये॥तवकृस्नअर्जुनकहीसभप्रगटाये॥कृस्नअर्जुनहरिकीगाथसुनाये॥सभभमुर
छमनेछिनकमनहोये॥३२३॥दोहरा॥धर्मपुत्रभ्रातनसहतसोरद्रोपदीनार॥सुन
चिंतातरचितनरहोधारोदहीविचार॥३२४॥हरिविनहमराजीवननासवंदुखजीरवा

न॥ त्याग सर्व को धर्मी जीये जगत स्वप्न सम जान॥३२५॥ हरि हम प्रीतम तन जगये हम
कै ल दुख माहि॥ ररहना वन ता अवन ही राज भोग सुख नाहि॥३२६॥ म्म शल्य पर्व
ते पढे ते वैराग प्रेम हो नाहि॥ जग अस त्र सम भ जान के यामे चित न लगाइ॥३२७॥
पढे सुने या पर्व को हरिपुर ताको वास॥ जग को जाने नु धकर व्यास बाक परकाश॥
हरि हल धर हरि राम कहि यादव पति कहि नाथ॥ हम लाल जिस ने कहम्मोई
भया सनाथ॥३२८॥ इति श्री महाभारते पुराणे म्म शल्य पर्व समाप्तम॥१६॥ शुभं भवेत्
१ ॐ श्री गणेशाय नमः॥ अथ प्रस्थान पर्व लिख्यते॥ दोहा॥ गणनायक शिवपुत्र वरगु
णबुध करसा धाम॥ जगत पर जाके वंद पग करो परनि जगाम॥१॥ नपधन्ने जे सुनी जव
रल्धर हरि की गाथ॥ अर्जुन उपद कुल धे भयो उचरत जोरे हाथ॥२॥ जन्मे जयो वाच॥
धर्म पुत्र सो जव कही अर्जुन सम प्रगटाइ॥ उन सन के वैसे कही मो को नीक सुनाइ॥
३॥ वैशंपायन ने वाच॥ चौपई॥ धर्म पुत्र सुन निहस्वाधारे॥ हम जगत त जके हो हसुखारे
युधिष्ठरो वाच॥ अर्जुन सो भाषत सुन भाता॥ सम मे कधीन होत सभ वाता॥४॥ तव मु
हि स्मारा जस सुखु पावता॥ अब ई हस मा जु त्याग हि ताव ता॥ सो भी तसुनन नीकी माने
हरि चिन्न राजु न्न रहत विकाने॥५॥ पृथ सुत नामु धन राज पुत्र वर॥ अर्जुन सो जिह
दे नु कृधिक करा॥ अर्जुन सन तक भमेन न मराना॥ ता कासुत पुछत वउ ज्ञाना॥६॥ ग्याज
पुरराजु नाहि के दीना॥ पृथसुत नाहि के मे ची कीना॥ पुन श्री कृष्ण की वहन बुलाये॥
याहि सम भद्र नाम कहाये॥७॥ ता सो कहत धर्म सुत वैना॥ सुनो सुचार सर्व सुख दे
ना॥ नौरि सुत सुत तव उभ पकर हो वे॥ धर्म की नीत के राजन्न वलावे॥८॥ हरि सुत तसुत तसु त
वजमा नवर॥ इंदुप्रस्थ नि हि राजु पुर धरा॥ जिउ रम कैसे हरि मा हसने हा॥ ति उ
नुमराघ प्रसपरन्ने हा॥ अर्जुन समन होइ जो कल उपजावे॥ नादद सुनि जवसबर

वायो ॥ सदा मे लाहित तासो राखो ॥ हमरे वचन सुधा सम लागो ॥ ८ ॥ दोहरा ॥ ईह विधि धर्म जु
भ्रातस एणं गाम जुन जीन ॥ हूरि रह लधर ते कसादि ले जल कंस जल भर दीन ॥ ११ ॥ चौ
पई ॥ वसुदेव कसादयादव के नामा ॥ भर भर कंस जल दीन कस वा मा ॥ ७ ॥ र इस्नान धाम पु
न आये ॥ विप्रन को बहु दान दिवाये ॥ १२ ॥ हूरि स्नानीम तम आरीय जक्कीने ॥ जीय कमायो ताभो
जन दीने ॥ ३ ॥ जरथ कस स्व सुखपाल कसने के ॥ कीये दान पंडु सुत ता व वे के ॥ १३ ॥ द्रूप पान्चा
येको तहा वुलाई ॥ प्रीथ तम जता कर पकराई ॥ मख भाष्या तुम गारुह हमारे ॥ करो विनी
सुन्न हे सुखकारे ॥ १४ ॥ जिंउ तुम हम पर करणाधारी ॥ शशतर विद्या सकल सिषारी ॥
तिंउ ही प्रीथ तसो व उहे ता ॥ विद्या दान करो सुभ चेता ॥ १५ ॥ द्रूप पान्चार्यो वाच ॥ प्रीथ तह
मरे सुतेसु माना ॥ सुत ते कस धिक प्यार महाना ॥ निहि पित पुन तुम तजो कस के लो ॥ ति
हपरै सो न दया नहि मेले ॥ १६ ॥ द्रूप पान्चार्य के वचन सुनाये ॥ हरखे पंडु पुत्र सुखदाये ॥ द्रो
पदी सुहृत सुभ द्रुहरषी ॥ मनो सुधा की वरषा वरषी ॥ तेजो मंत्री सकल बुलाये ॥ तिन
सो धर्म जकहृ पगराये ॥ १७ ॥ धर्म जो वाच ॥ दोहरा ॥ जिंउ तुम हम सो हेत कसी तसेवा करत
सदाइ ॥ तिंउ प्रीथ तकीव रो कसव हमरे वचन सुनाइ ॥ १८ ॥ मंत्री उवाच ॥ जिंउ तुम हम के
ज्ञा ज्ञाधारो ॥ तिसे ही हम केरे सुचारो ॥ तुम हम को तज चले महाने ॥ हमरे जीवन मरन
समाने ॥ १९ ॥ धर्म जो वाच ॥ सुनो मीत जब समे हमारे ॥ भोगीम हील हे सुख भारे ॥ कस व
जो हम रा समना विहायो ॥ याते हम को लाग हिताये ॥ २० ॥ ईहि विधि पंडु सुत सभा मझारे ॥
भवणा ते के उतनिरवारे ॥ झरते मोतन माल उतारी ॥ केसन व हू टे दीने डारी ॥ २१ ॥ स
विप्रन को दान करायो ॥ निज वस्त्र के वसन लगाये ॥ धर्म जउ तेरदि व सभ भ्राते ॥ द्रुपद
सुत सन नहि तकसी तिकसाते ॥ २२ ॥ सभ उतारे भूषन चीरा ॥ भये तपसन के से भेस गंभीरा ॥ मि
हमे कसगिनया सो यगु करेता ॥ भोजन पक्वादि जन्नाद तघरने ॥ २४ ॥ तेरहि स्नान गंगा ज

लड्डासी॥ तिहस्यमदिबरोवतजनमासी॥ केसारदनुपरोतिहगाये॥ तातेअधिकनस्य
न्योवदाये॥२४॥ पंचभ्रातषस्मवरनारी॥ चलेदेसतजनपञ्जभचारी॥ सप्तमस्थान
मयोतिहसंडो॥ पाछेजातनहीरहतअभंगो॥२५॥ गजपुरकेपुरुषाअसनारी॥ पाछे
जातपुरीविस्मारे॥ विद्रिकारूसोबंधुनउच्चारे॥ चलेजातअपनेवीचारे॥ रुद्धारूपा
चार्योकोविदाकरायो॥ युधिष्ठिरसहापातिहकोपकरायो॥ अर्जुननारअनूपीनामा॥
अतिहिउदारशीलसतधामा॥२७॥ जाइगंगजलमाहलुपानी॥ वासककंन्यात
पमहानी॥ दोहरा॥ बंधवारहनसोजामिस्नीहितवरपछीमाइ॥ विहितेआगमते
हेअवइनकहीसभपुगटाइ॥२८॥ चोपई॥ पांचोभ्रातकीपांचोनारी॥ पूछितस्या
योवठमातसिचारी॥ पंछेवपांचषसमपंचाली॥ सप्तमस्थानचलेततकाली॥२
सेपरमनिदसकोगयेज्ञानी॥ सभअजगोमतधर्मविज्ञानी॥ पाछेभीमुतापाछे
अर्जुना॥ वहुसकुलसहदेवविमलमना॥३॥ पाछेशीलवंतपंचाली॥ चलेपं
पकतिचालउताली॥ पाछेस्थानजातहितमारे॥ चलेत्यागजगदेसस्चारे॥
पहकरजाइकीनइस्थाना॥ उतरपरेतिहतीरमहाना॥ अकसमातइकुपुरषुदिषा
योपर्वतसमतादेहिसुहायो॥३२॥ ताकीजोतसभदोरउजारी॥ धर्मजसोमिलवरह
तस्चारी॥ पुरुषेवाच॥ दोहे॥ अग्निमोहपहिचानो॥ ममीहतअर्जुनवनदग्धा
नो॥३३॥ अवजगकोतुमस्यागसिधारे॥ गांडीवधनुषुपितताजनुमारे॥ चक्र
सुदर्शनदीन्होशम्भु॥ तेभीहेइहिठौरमहाबर॥३४॥ तुमभीधनुषुमोहदेजावो॥
हमरेवचनसत्यमनभावो॥ अर्जुनसोसभभ्रातउचारे॥ साचकरहतीकहकाजतु
मारे॥३५॥ अर्जुनधनुसगनउतारयो॥ निसीतालकेजलमेडारयो॥ धनुषुडा
रदीयोजवजलमाही॥ तबवहपुरषुभयोलोपुतहाही॥३६॥ तहांतेदक्षनको

मगुहीने ॥ सकल देस तिन पग तल कीने ॥ नगर उजैन केदिष सुभ देसा ॥ पुरी द्वारका
कीन प्रवेशा ॥ ३७ ॥ जहा द्वारका जल मन गनाई ॥ ते ठौ अर्जुन सुभ दिषाई ॥ निरखत स
भके द्रुग ते नीरा ॥ चल्यो उमउ नहि पावत धीरा ॥ ३८ ॥ पुन पंजाव आये सुभ चारे ॥ व
हुरहिमाचल गिर निरषारे ॥ गये आगे इकु पर्वत आधे ॥ बिन्न वात तहां मधुनादि
बाधे ॥ वासू लांघत शैल सुमेरे ॥ तहा गये धानी हरि केरे ॥ ३९ ॥ दोहरा ॥ तहां द्रोपदी
गिर परी भीमसैन उचरान ॥ हे धर्म जइहि कौन अघ रही न्यार व उ ज्ञान ॥ ४० ॥ धर्म जो
वाचा ॥ शीलवंत सुभ कर्म सदैव इकु अघ इहि माह ॥ तांते हमसो विधुर अव गिरी
मरउ वाह ॥ ४१ ॥ चौपई ॥ भरता पांच धरत सुभ चोरे ॥ पांचो सो व द्रुहे तु सभारे ॥ अर्जु
नसो अध आधिक धरावत ॥ तिह अघ गिरि सधरन के पावता ॥ ४२ ॥ रही द्रोपदी आगे जाये न
केतकी दिवस विहावत भये ॥ गिरे सहदेव दिष भीम उचारयो ॥ हे धर्म पुत्र ई अघ
धारउ ॥ ४३ ॥ कौन पाप पड इहि भ्रम सगिराना ॥ हम सो न्यार होरस्यो व उ ज्ञाना ॥ धर्म जो
वाचा ॥ इहि मे जैसोर पाप को उनाही ॥ इही अघ निज विद्या डर वाही ॥ ४४ ॥ निजस
मान काहू न जनावत ॥ तांते गिरे भ्रम स अके पावता ॥ आगे गये नकुल गिर परयो ॥ के
ही भीम कहूं न अघ करयो ॥ ४५ ॥ धर्मा तन सुभ चार सदाई ॥ सेवक रत तनु मनी चिनु
लाई ॥ सव शील की षान सचारा ॥ कहू मे सो धर्म जे वीचारा ॥ ४६ ॥ धर्म जो वाचा ॥ दो
हरा ॥ इहि कुमार निज रूप सम काहू जानत नाहि ॥ इही पाप ते गिरस्यो जानु भीम
वउ वाह ॥ ४७ ॥ चौपई ॥ चितन चले मधु व हरन सकोने ॥ चलत चलत अर्जुन गि
रपाने ॥ भीमो वाच ॥ इहि सतवादी सत की षाने ॥ धर्म शील इहु नाहर हाने ॥ ४८ ॥ के
वन पाप दहु रस्यो इके तम ॥ कोहो प्रगट सुभ ज्ञान महेता ॥ ४९ ॥ धर्म जो वाचा ॥ दोहरा ॥
अर्जुन मो के अघ नही धर्म शील कसी सिभार ॥ जिहि कै गन इहि ठौर स्यो सुनो स्त्र

वनन्निरधारा।।५०।।जो ठीवधनषु जवकारगध्योतवगारवतरिदिमाह।।एकेदिनमोशाचस
भूहतेकोवनतजाह।।५१।।चौपई।।गवेतस्मघइहिईहारहेवरा।।गरवुनकीजेमाननतेहे
रघोगपुकार्यो।।हेधर्मजहमकेनगधधायो।।धर्मजोवाचा।।हेभ्राता।।५२।।भीमसेनोग
न्यो।।निर्वलसेतुळिसेनमान्यो।।५३।।तिसीपापतेईहारहानो।।भ्राघतधर्मज
म्प्राइमिल्यो।।सुरपतिमगमाही।।रतनजरतरथमाहसुहाही।।धर्मजकोनिरषतस्र
रपतिवर।।भ्राषेजावेठेन्हिरथपर।।५४।।स्वर्गमाहतुमकोलेजावो।।सभकौंतलत
हकौदिषरावे।।न्हवतुमस्वर्गभोगसुरवसारे।।सदन्नानंदकेरोहेप्यारे।।५६।।धर्म
जोवाच।।दोहरा।।हमभ्राताननमोविछुररे।।ववूनरहेन्यार।।न्हवउनकोतनस्वर्गमो
वेसेधामनरहमार।।५७।।उनभीजेसेन्चलेतवहमजावनयोग।।न्तिरउन्विन
स्वर्गवेविषसमानसभभोग।।५८।।चौपई।।धर्मपुत्रकेवचनसुनाये।।सुरपतिह
षेवचनपुनदाये।।तुमतेप्राजेहीनुहभ्राता।।स्वर्गविराजततेंवडगाता।।५९।।ध
मेजोवाच।।स्वानविनाहमस्वर्गनजाऊं।।स्वानन्चलेतोप्रीतहरषाऊं।।सुरपतो
वाच।।स्वानस्वर्गमेकैसेजावे।।वडनपुकेरेसुतहासिधावे।।६०।।यजेदानोजेन
कौयेनपारे।।तेभोकेसुरपुरसुखभारे।।स्नोभ्रपसचुगायहमारी।।स्वानन्नजावे
स्वर्गमझारी।।६१।।तोहिङामनसुरपुरजोहोई।।तेसमानवडभागनकोई।।त
जेस्वानरथमाहचढावो।।भ्रातोपुतवउभोगभगावो।।६२।।धर्मजोवाच।।ईहस्वान
रघोसंगहमारेमनगमोभारीकर्यदिषारे।।केनधर्मयाकोतजजाचू।।ईहमुहितेन
हीहोइस्नानाचू।।६३।।जीनतन्नारतजोस्वररराजा।।याविनस्वर्गमुंजेविनवोजा।।नि

कासजाहिन वडापहमारे॥ तवहरिकी हरिजानन हारे॥६४॥ चारपाप वड वेद उचारे॥ सुनो सुरे
सकरे प्रगटारे॥ प्रथम वडे रिपु ते जो भजके रा॥ सरणापरे काहूकी भय धरा॥६५॥ तिहि रिपु को
अजोगहि देवे॥ निजु सिर पापु अधिक अतिलेवे॥ दूसर त्रीय अवड जो मारे॥ तो अ
अतिही वडु अघमु धारे॥६६॥ तीसर परधन लये छिनाई॥ अवर लाइन देवे काई॥ चत
र्थमित्रकी नार निहारे॥ पापी पापी दुष्ट तर धारे॥६७॥ ईहि चारो अघभार वखाने॥
सुनो सुरेस वेदु पुराणे॥ स्नान करी हमरी वडु सेवा॥ अजान सभीत जगधे अभेवा॥
यावितु संगानको हहमारे॥ कौन धर्म तज चलो सचारे॥ इनी अन्न इनु पग स्वर्ग
न जावे॥ नित जचित तकी सच्ची पुराणवे॥६८॥ जे स्नान को नहि ले जावे॥ चले जाइ
मोको न खिजावे॥ वैशंपायने वाच॥ सुन जन्मेजे भाखीम्रपा॥ कथा स्नान की कहदे अ
नपा॥७०॥ धर्म स्वरूप स्नान को धारे॥ धर्म जसं ठाभयो हित भारे॥ अपुन्न पुत्र की प्रीथ्या पा
घेअरखत हो हरि देन समाये॥७१॥ दोहरा॥ धर्म स्नान ठात्याग वपु भयो अपुनो रूपा॥
सहन लाल कैसे सी निरख विसम्यो धर्म जमपा॥७२॥ धर्मो वाच॥ हे सुत तो हप नीथ्या
हे ते॥ स्नान रूपु भयो सुनो सुचे ते॥ जिंउ का तिं उ तुहि धर्म निहारो॥ निज तनन जास
भु संसानि वारो॥७३॥ धंनि धंनि सत शील तुमारे॥ तु ऊनि ज मनन ते धर्म न टारे॥
अजो भी हम यह रूप धरा॥ वनमो जाइ मिले तो सो वरा॥७४॥ तो ह भा तन तहा सभु हेतु
कीने॥ पुन हम तो हप रछ परवीने॥ एकु जीवत हो तुहि आछो॥ मोडा सेकु जा सो हित रा
बो॥७५॥ अजनु जनु भीम के नाम नल्ली ने॥ मोडपो नकुल जान परवीने॥ ईहि ईतहा
स्ववनपर्व माह वरा॥ तुहि शांत शील अपार धरन धरा॥७६॥ स्वाजा हि ते तुहि स्वर्ग मि
लायो॥ सुरप के हेत धरम ननन ही लायो॥ अव सुरपति संग रथ चढायो॥ जाइ स्वर्ग
तुम सम नन ही काये॥७७॥ जव सुर देवै धर्म पधान्नो॥ चरन्न लागनि जपा विमानो

दीनदेहिइ वहुविनती कीनै रे॥ विदा भये सुरपति सुख पाई रे॥ ८०॥ सोरठा॥ सुनि अस्वमेध तुम सुरदेव कुमार
ग्रसिनी संग गहि तजि॥ श्याम गंधर्व कै डर मै कुंती ओर वहु द्रौपदी राज हेइ॥ ८१॥ दोहरा॥ धर्म पुत्र को
देत वहु सुर पतरथु वैठाइ॥ अरजन मनरा पुर को पंच यको चल्यो रथु हरवाइ॥ ८२॥ चौपई॥ नार
द मनन मजन करि मिल्यो ये॥ सभे देखि तिहि सीस निवायो॥ तव नारद मुख वचन उचारे॥
सुनो सभी सुरके हे स्रवरा रे॥ ८३॥ अरजन जोगि विगीत पीन पभये॥ वडे तप धरकर जगत जगा
ये॥ धर्म जस भते उत्तम जाने॥ देहि सहित जो स्वर्ग सिधाने॥ ८४॥ देहि सहित को स्वर्ग
नगये॥ सभ ते ता पुरुषारथ भारी भये॥ सुन धर्म ज जोरे दोउ हाथा॥ नारद सो उचरत मुख गाथा॥
हे रिषि हम तुम सभ करे जाके॥ विनती करत है सुन लेसु भाठे॥ जहा हम मोरे भ्रात रहा ही ममो को
भी ले चलो तहा ही॥ ८४॥ उन विन स्वर्ग मुझे नहि भावे॥ जहा विहि है मो को ले जावे॥ सुरप
तो वमन्चा॥ देह सहित स्वर्ग सिधावत है सो॥ विनाम जनन हरि स्मरन धरै को॥ ८५॥ सभ को हित
तज हरि को ध्यावे॥ सो वहु भागी स्वर्ग सिधावे॥ तो हम भ्रात ई हा वैसे क सावे॥ हरि सरणा वि
नु कट नदिखावे॥ ८६॥ धर्म जो वाचा॥ दोहरा॥ हित चित हो जगदीस को विनती करो क
रजोर॥ मो हम भ्रात नि ज्ञ उपाकर धारे दम्म सी ठोर॥ ८७॥ जो विहि ईहां आवे न ही दूस
र विन तीए हू॥ जहा वसत है तहा ही मो को वासा देहू॥ ८८॥ विनम्भ्रात ने अरु द्रौपदी
मो हि कछु सुख नाह॥ ३हि विधि धर्मज मो न गहि वैठ रह्यो रथ माह॥ ८९॥ पुस्या
न पर्व पर्न भयो संतल पाठे साधा॥ वहम ला लभ भाषा करी गुरु चरणी धरमा था॥ ९०॥
ला ढे जा है॥ ९१॥ मन वांधत फल पावही जो ढुक ध्या वहा॥ ९२॥ भ्राता वह ता याहि को
पो वैप दु निरवान॥ ९३॥ सुरक संपत विद्या सुजस जान गनो कौ थान॥ ९३॥ भ्राता वह ता याहि को
मो जन लहै जिन वे हरि को ध्यान॥ ९४॥ इति श्री महाभारते पुराणे पुस्यान पर्व

लोकहम लालकरत भाषा समाप्तम ॥ १७ ॥ ॥ ॥ श्री गणेशाय नमः ॥ अथ स्वर्गारोहण लि
ख्यते ॥ दोहरा ॥ नृप जन्मे जे पृथ्वी ही है व्यास सो सब बड ज्ञान ॥ पंडु पुत्र सुरपुर गये सम हीप
मैस ज्ञान ॥ १ ॥ दुर्योधन की कहे सब गये यो कवन ज्ञस्थान ॥ भ्राता सन रणाभ मन मो जिन
युध्र कीये महान ॥ २ ॥ वैशंपायनोवाच ॥ चौपई ॥ जब धर्मज सुरपुर मो गयो ॥ तहां दुर्योधन
द्वीपयो ॥ रतन सिंघासन पर बैठान ॥ रवि सम याको तेज महान ॥ ३ ॥ अमजास पार्यो तिहि स
रेवेठे वर ॥ बउ छब ताकी देख युधिष्टर ॥ मधुर कोप चित तमो उपजायो ॥ मनौ रिस क तस्य सो
प्रहनायो ॥ ४ ॥ सुरपतोवाच ॥ हे नृप तुम कति कोप कीये मन ॥ निज हिरदे की गाथ थ
होगुन ॥ तुमने कोप कोन पर कीयो ॥ आज तुमार सुख वद्धि लीयो ॥ ५ ॥ धर्मजोवाच ॥ जि
हपापे सम जगत हरतानो ॥ जिस नहीं नेकु कृपा चित आनो ॥ हम पे जा के भ्रात विचा
रे ॥ सवे सुहिरदे की ये सुखारे ॥ ६ ॥ को न करे जो हम सो करी ॥ वरता जब छुरि दे नध
६ मी ॥ तिसे देख हो हर्ष न पाऊं ॥ पुन हिरदे की प्रगस्य नाऊं ॥ ७ ॥ जिह ठौरे दुर्योधन बसे ग ॥
तहां न बसवो मोहि मन न भाये ॥ निज भ्राता के निकट सिधारे ॥ स्वर्ग नरक कछु नाहीं व
चारे ॥ ८ ॥ जहां हमारे भ्रात बसाही ॥ तहां बसो मुनि स्वर्ग तहां ही ॥ बिन भ्राता जो स्वर्ग मे
गवर ॥ मोहि बिसवत तहां नरप सनो धर ॥ ९ ॥ तब नारद मुख वचन उचारे ॥ सुन धर्मज
शुच ज्ञान सुचारे ॥ ऐसे से वचन कहा प्रगटावो ॥ साची गाथ मोह सुवरणावो ॥ १० ॥ वेर
प्रीत ई हाको दून धरही ॥ जग की वात मभल सम पर है ॥ दुर्योधन ऐसे सी गत पाई ॥ जिह स
रसे वेहे तुम हाई ॥ ११ ॥ जो मरही सन्मुख रण माही ॥ ऐसे से सुर वसु रपुर पाही ॥ दोहरा ॥
जग की गाथ जग मो रही वेर क्रोध सार हेतु ॥ जग की गाथा जो को दूई हान धर हे चेत ॥
१ ॥ धर्मजोवाच ॥ चौपई ॥ हे मुनि तोह वचन सत माने ॥ पै दुख बिनती तुम सो वाने ॥

३६२ कोहिभ्रातभ्रमकर्नेसुचारे॥जिहभारीवलरणभ्रमधारे॥१३॥कहांवसतेहैमऊदिषावो॥यातेमो
हिदाहरषावो॥कहोकोएहमनावउभ्राता॥द्रुपदपुत्रकहांहैवउज्ञाता॥१४॥पुत्रद्रौपदीकेहै
कहां॥कहहुतअमंनतमसूरावलवाहा॥उनकेदेषनकोमहिचाहा॥मनवचकरमइहै
धरोउमगहा॥१५॥जीवतकोएपछान्योनाही॥जोमहिजेसभ्रातवलवाली॥जोहम
जानतउअपुनाभ्राता॥धासोयुध्दलषतउतपाता॥१६॥रीवसतहेगतहमारीउरे॥कोउ
सनमरवहोसकतनमोरे॥ताहिविनानकियास्वर्गहमोरे॥करणाकरमऊदेहुदिषारे॥१७
सुरपतेवाच॥जोतुममेरेमनइहैविसानी॥चलदेषोसमझोहितमानी॥नारदकुआऊदे
हसजाने॥तिहपाछेधर्मजअबआऊाने॥१८॥जिहमजपरेतिहभाइ॥कीचमीचपग नेमर
पिसलनहारे॥मर [illegible] कमसयेपरेतहीकुभ्रतिघन॥रकतमिजदिषहोतविमननमन॥१९
नम कोतिदुर्गंधतहांतेआवत॥दोरेवहेदिषेनजावत॥दोरदोरमानषोकटाही॥यतनकुअ
नेककेरेनतजाही॥२०॥कावकचीलकोअषराकुरुआपारा॥विछकसर्पउसेवहुवारा॥पा
पीजनकोदेहिसंतापा॥करवरलाटहोरदेवोअमापा॥२१॥लोहमेघअनगंतदिषा
वे॥यातेमानुषवउभ्रमपावे॥जैसेदुष्टतहांवेठारे॥जेमहिछिद्रउदरअतिभारे॥२२
डारसमानतादेहिदिषाने॥भ्रमकेगेकएदीहअधकाने॥अग्निनतप्रयासवृतिहहै
या॥नरकोदंउकैरेजिहस्यापा॥२३॥चोपई॥तप्ततेलतहांचरेकडाहि॥जाहिडारतजनको
तिहमाहि॥जानउनोकोनिकसेनाही॥तरफतरफवउदुखउपजाही॥२४॥दोहरा॥वउ
नरवरकेरकभरेलोहमईतपतान॥तिनसोलरकेगेवतेपावेकष्टभयान॥२५॥धर्मज
दिषविस्मेभयोकहिहेवचनउचार॥कतस्यापेसुरियाहिमनगाकहोहैभ्रातहमारे॥
रहा॥चोपई॥हमनकहयोजहांहेभ्रातरहमोरे॥लेजावोतिहटोरसुधारे॥तुममोकोऐसे

मगाल्याये॥ जिह निरषत सुध सकल मिटाये॥२६॥ पापी जनन विरलाप करत है॥ तिनको दिवज्ञीय वहु डरत है॥ नारदोवाच॥ जो भ्रात तो देषन की चाहा॥ तौ याही मग चलो उमगाहा॥२७॥ धर्म जोवाच॥ यामग नाहीं गमन हमारे॥ पीवा अहि पापी पीते सुचारे॥ तव द्रोपदी कैसे सम भ्रात॥ उठे पुकार सब दुष्य तिनका ताम॥२८॥ देष धर्म जउ कैसे स्रम माहीं॥ चलै धाउ उहन कोई हठोई॥ सुनत सबद दुह मद हष भरे थे॥ निरसन की व उकस्मास धरे थे॥२९॥ चितवत धर्म जहमै निकोरे॥ सो तो ऊस्मासी नराथे धारे॥ तुम तो हमने धाउ उठ चले॥ ताते हमकोत ही कलमन ले॥३०॥ जो हम तुमरे निकट रहावत॥ कैसे स्रम काहे उपजावत॥ धर्मज भ्रात तो सबद पधाने॥ हेय ठाडा मुरव द वचन रवधाने॥३१॥ को तुम कैसे दुरव स्रम सुधरे॥ जस पुनै नाम सघग ढ्रस वकरे॥ वोल्यो ध्रुप्यन भीम सुहि जानो॥ वोल्यो ऊस अर्जुन मुजे पधानो॥३२॥ नकुल सहदेव जस भमनन पुकारे॥ सुत ही सुत द्रुपद सुता रे॥ जस व रस सभी लै निज निज नामा॥ द्रुपद सुता वोली निह कामा॥३३॥ धर्म जस मन तास्यो उचराने॥ कि दक्ष घ तुम कैसे स्रम ठाने॥ दुर्योधन जो पाप कमावत॥ ते सुरपुर वहु भोग भोगावत॥३४॥ हमरे भ्रात जो सील महाने॥ अहि म हरवा भुम चार सु जाने॥ ते होवै कैसे स्रम माहीं॥ ऊस चर जहरि की गत तेन लषाहीं॥३५॥ ऊस पयवा मोहस्व प्रहीकायो॥ कै हरि निज चरि द्रादुष पायो॥ विस्मार दे नारद सो वैना॥ माठे धर्म जपंक जनेना॥३६॥ देनारद तुम नीके जाने॥ जो जाकम दुर्योधन ठाने॥ ते सुरषभ मोहे स्वर्ग ठमऊरे॥ यास मदूस को नादिषारे॥३७॥ मोह भ्रात जे वरसत थी लागा॥ तिन पर कैसे सी स्रम की लीना॥ तुम सुर सन पाधी फर जावो॥३८॥ हम इही ठौर रहै है लष पावो॥ भ्रात तनके तज वहून जावो॥ निज मन की सत गाय प्रगटावो॥ वेशंपायनोवाच॥ सुर कहि पयके धर्म जनन दीमा नै॥ तुम्स ठौर वस वो मन नकसाने॥३९॥ नवपे धाउ सुर सकली सिधारे॥ सुरपति सो मभ

२६३

गधपुगलतो॥ सुतेसहतसुरपीत तहुआसाधे॥ वीहसमुदुखुश्रसीधन गुप्राये॥ ७॥ त
वधमेजानिजरधर्मसेहोई॥ सुरवतेजहतसचनहितमैसोई॥ धर्मोवाच॥ हेसपुत्रह
मतेहप्रीधीहितमा॥ ऐसेमेदुरवदिषरायेहडीतम॥ ८॥ भासाजोयहारूपरमधारे॥ नोहि
प्रीधवनलईसुचारे॥ भसवभीहमदहुप्रीधमहाने॥ नुमनिजधर्मेनाहिमुरा
ने॥ ७८॥ दैत्रवाच॥ देवनपधर्मजन्याउसमसहोई॥ तुममतछोमवरोजीयलोई॥
उचतदृवारनुहिनरवुदिषावै॥ पुनसुरपुरतहिमोगमुगावै॥ ८३॥ दुखतेसु
खसुखतेदुखहोई॥ निजनिजसमसेप्रकासेसोई॥ हर्षशोकदोउसमेसहावे
निजनिजसमसेतेजदिषराव॥ ८४॥ जिमवहुपापकीयेपुनथोरे॥ लहेसुखथो
रपुनदुखजानिधोरे॥ जेहसमधथोरपुंनवहुकीने॥ निहरंचवअसमसुखजीत
नुहिनरवदिषाने॥ नसपुनेपापसनोचउजाने॥ ८६॥ दोहरा॥ रामभनजवगज
हनुमयोसमसुरधामजहनाम॥ तवतुमनिजगुरसोउसोसमसुधामहस्यो
समसा॥ ८७॥ उनजानीममसुनहस्योततीधनसाजेप्रान॥ तुमफुववहेफ
तीरचनदेषीमपमजान॥ ८८॥ देहानाहिदिषे रूभातनुहिनाहिदेपदीना॥
दुखसमनोकेउनाहथेमसुसेपदासार॥ ८९॥ चौपई॥ समसुरपुरवभोग
भुगावै॥ सपुनेसरलसुदेवदिषावै॥ मरामारथमोजोहतमये॥ सभसाठे
हैसरपुरगये॥ ९०॥ सभिसपुनपिनकेनिवराहो॥ रहेभानजयहऔहतउपजा
हो॥ तुमजगराजसुजगमोकीना॥ समसमेधयजधारपुकीना॥ ९१॥ निनके
फलमोगेसनिआरे॥ हरीचंदमानधा तासारे॥ मनसमरथमजीरथसादे
जिनकीनेवउयजसवादे॥ ९२॥ निरमधयेनुममोगमुगावै॥ सुरपुरजगज

सैमजन्तावे॥ इहांतेंगंगाभृमयपरजवजोवे॥ सवलजगतसपविहवरावे॥ ५२॥
दीहठंजोनरमजुनवरहे॥ चरदेहिपरहरसरवपुधरहे॥ धर्मसुनवेमजुन
धारये॥ नरदेहितेसरवपुत्रगटाये॥ ५४॥ सुतेसहतनपुसवंरिधीसवर॥ देवच
नुरभुजवहमजगतधर॥ शंखचक्रगदपद्मसुहाये॥ हरिसमीपकरजैनदिप
ये॥ ५५॥ द्वादसमसयेमद्रवरूगेवर॥ भीमपवनवेनिमरदेहतुधर॥ कमसुनीचुनार
निवरसहदेवा॥ नकुलसहतदोवेनिदभेवा॥ ५६॥ द्रुपदसुताकृतिसंदरस
ये॥ शोभलकृतिवढतेजसरूपे॥ धर्मजोचितद्रुपदसोवाता॥ वरेपुत्रटमनीह
नुकृतिकता॥ ५७॥ इंद्रोवाच॥ हेधर्मजइहिद्रोपदीनारी॥ जानजोयेलक्ष्मी
अवतारी॥ तुमरेहितधरनारस्वरूपा॥ गंधर्वनमहिमइकनरूपा॥ ५८॥ पुनमह
देवताहरवरदीनो॥ जन्मद्रुपदन्नपकेइनलीनो॥ पंचपुत्रजेइनउपजाये॥ ५९॥ को
चोहिगंधर्वमहाये॥ तेदिपनारदनिकरधरोये॥ मातसहतकृतिहठनहोये॥ ६०॥
नराजजोतातनुमार॥ तेभीपांडुगंधर्वअवतार॥ ६१॥ गंधर्वनमेदेहधरोये॥ कृत
वउछवसीहठनहोये॥ सभयादवपैसुरअवतारे॥ तेसनमुखसभदेषुसच्चारे॥ ६२॥
नृहिपितपंडुनारदोउसंगा॥ कुंतीमाद्रीरूपकसभंगा॥ तेममानिवदरहेछवजा
भाजीहठसर्वगुननागर॥ ६३॥ भीषमपितामहअष्टवसुरूपा॥ तेदेषाउनमाहिअ
२ नूपा॥ द्रोणाचार्यवृहस्पतिजानो॥ व्रहस्पतिनिजरहितेद्रुपानो॥ ६४॥ जोहि
जिहतेजोभयोअवतारे॥ निरतिहनिकरधरेहरषारे॥ सुनधर्मजसभद्रौपदीन
हारे॥ मनहठचितमेकृतिभारे॥ ६५॥ जन्मेजयोवाच॥ हेवैशंपायनवडज्ञानी॥
तुमसभमेवडेनामवषानी॥ द्रुपदसुतावैरागदेउभूपवर॥ तिनकेनामनवदेहम
शहर॥ ६६॥ धरोरच्चचपुत्रभीमकामसर॥ ६७॥ धककेतजितसेनबलपगा॥ कोरव

देभवीनेजेना मा॥ तिनने नाम नगने अरजनमा॥ ६६॥ वैशंपायन बोलाचा॥ जैसे तुम
अब पूछते उचा लो॥ तेतेरिषो प्रीतवास पुरू स्यो॥ व्यास रीषोकोउ परम हीना॥ तेते
तुमसुनवेहो ज्ञान पुरीना॥ ६७॥ जकअवतार जगतपति लीने॥ तुमको भार हरे सि
वही ने॥ जिरजि हरते वसुधा धर्मसेरे॥ तेते जग धार तअवतरे॥ धर्न भार जव दूर करा
ये॥ अपुनअपुन धाहर सभ आये॥ अबबहुतादस अदुअवतारे॥ तिनकीकहो
सुनो जीय धारे॥ ६८॥ द्रुपदे बैरा टदेउ भूपम हावर॥ पुन धष्टके तचेकतान छत्र
धरा॥ अवर संत वविदर हीरध्याने॥ भरश्रवा पुन शल्प महाने॥ ७०॥ उग्रसे
न वसुदेव वसुदेव सभुत॥ पुनअनुन अर्जुन को सुत को सुत॥ दुर्योधन कलयुग अव
तरयो॥ शकुन द्वापुर ते वपधरयो॥ ७१॥ धर्म जम यो धर्मअवतारे॥ सभ हीनिज
निजधामो सधारे॥ हलधर सेसनागपीउ ये॥ सकलम नोर्थपूर्न भये॥ ७२॥ षो
डस सहस्र वहर मकीना॥ ते सभु गंगमा हमगनारी॥ जोइस्वर्ग भोगे सभ भो
गा॥ मिलीवरदनवो दूरयेवियो गा॥ ७३॥ दोहरा॥ उदररा अस्मीतेउदयो भीमसेन
कोपत॥ वाकेनाम घरेग नत्तवर तमो वडु अवरतत॥ ७४॥ रावसान मोज्ञानि
ल्यो अपुने अंस पछान॥ दुर्योधन के भ्रात सभ उग ये निजनिज इस्थान॥ ७५॥
केतुहरवई इंदुवे वईवर्णो ह सा था॥ अपुने अपुने ज्ञार लेरचनी दषाई ना
थ॥ ७६॥ चौपई॥ जन्मे जेइहिंह निहास सुनायो॥ भयो पुसनरीयदर्षन मायो॥ अ
पुनव जनसप नेवी ना॥ भोजनादि जनको धन वहु दीना॥ ७७॥ सहूधन दे सभ जविदा
कराये॥ हमसलाल नवडुज्ञाने दुपाये॥ वैशंपायन गरु ज्ञा पाई॥ अपवको भारत
कथा सुनाई॥ ७८॥ कहिश्रीभ व सुनन उपवेउ ज्ञानी॥ जो जनपठे सुने धरध्यानी॥
भारीफल तिहहवा प्रहोई॥ सम भनेउ ब्रम जन जग सोई॥ ७९॥ महाभारथ आगजन इति

नाना॥ कुरुकुलमयोमर्यन्तपनानाना॥ नासमानान्तपमयोनकाई॥ माधीनानाध
सोगुनयाही॥ ८॥ जोदिजसुनेबुद्धिवढुपावै॥ वढुपंडुतजगमाहसदावै॥
धत्रीसुनेस्तरमनतवाहै॥ त्पतसुनेरणमुमन्दिनुगाडु॥ शत्रुनजोनहीपी
ठीदषावै॥ रहेउदारनाहसकुचावै॥ गावैतनारजोसुनेहितनाई॥ वढुधनी
नीसुतउपजाई॥ ८२॥ वैशंपायनकहेसुनजमपवर॥ जोइहिकथासुनेदी
यहितुधर॥ सुनेश्रवणदेमनवचकरमकर॥ तापरहोवतसदाप्रसंनहरि॥
८३॥ स्नानदीपमनएसेकोई॥ सोफलपावेसमनहीहोई॥ न्हावस्नठतीर्थ
केइस्नाना॥ सोफलपावे नहीसमाना॥ ८४॥ जोदसलापवरेरेजोदाना॥
दसविधवेदविधाना॥ गायाजाइविधवंपिंडकेरे॥ हेमदानहेगौवहुते
रे॥ ८५॥ महाभार्थकोपुनमहावर॥ जोनरपठेसुनेहीयेहितुधर॥ महाचा
रपदाथम्बितवन॥ महाभारथसुनत्रिप्रविमन॥ ८६॥ अर्थधर्मपुनमो
षकामना॥ हुइप्राप्तिजिनभारतसुना॥ अर्थनीमिकसुनेनरकोई॥ तिहि
वाधतपलप्राप्तहोई॥ ८७॥ विद्यार्थीविद्यापावै॥ तपकर्ताथीसोस्वर्गसुध
पठेअर्थलोभजनजोसुनावै॥ मंदितपमिपदुसोनरपावै॥ ८८॥ ओरजनमके
पापजेरेतिहिगावैधोनवहुरेआवैनाहि॥ जोनरपर्वनेसुनमहाभारथ॥
जगुसुमदुउनरेनरहावत॥ ८९॥ विधसोसुनेश्रद्धनेत्रोजादि॥ पजनकुरे
पावैफलस्वादि॥ प्राप्तहोइआनंदमगनहीरा॥ नहीपुनपावेसमसर॥ ९०॥ मदो
दर॥ अर्थधर्मघसुमहावरस्नमचंदरनीयोअपाप॥ धर्मपुत्रकोपसदीयोकी
अमरनपुताप॥ ९१॥ जोतीथासहतरुवषेत्रमोनलाभ्रहेनरकोइ॥ सोरदरु

से न्यारा जन देखावे सम न नहीं होइ ॥४२॥ धन त्रसना थी धन पावे हे यसु ग्रसी जे कारा ॥ पाप
न से भार्या स्रुत नेह मिल विषमि दे ग्रनपार ॥४३॥ चौपई ॥ तीन वर्ष मोइहु इति हास ॥
स्रवन कीये सिध्य थास ॥ दुख सुख सर्व दौर मोहो होई ॥ या हूं पढे दुरखु रहे न को
ई ॥४४॥ प्रात काल इहि तन पठे सुनाई ॥ तिह कौ उपजे फल सु अधिकाई ॥ जे उत्रज्ञा
रद दधिनि उ अनि हास ॥ दधिते हो वेम वन प्रकास ॥४५॥ इहि मो भी व उत्रपथि
रे है ॥ ग्यान वान पर ब्रह्म ग्रहन रे है ॥ नरसिंतिक्रचर्य इतिहास सुना वहि ॥ या कौ शोभ
न वरन न पावे ॥ रेध्या जोइ ध्याकर प्रात सुना वहि ॥ स्रु फल मन नोर्थ ग्रपुने पा
वे ॥ स्रु धा समान इहि ग्रंथ पछाने ॥ जिह सुन जीव हर्ष स्रव माने ॥४६॥ प
दै सवे यम दे ऊहि धू दै ॥ ता कै फल न निह कवहू न षदे ॥ डी हस्लोक ध्या उपरलो
की सिधाई ॥ तिस को कुइ जे कारस दाई ॥४७॥ दोहरा ॥ कलयुग को है जा दि अं
न द्वापुर जाइये ॥ भारत कीये सकजा पर रहम चंद चतुर षेत मे ॥४८॥ रहम ला
ल भाषा करी सुनी ये स तन सुजान ॥ पठते सुन ते होइ यस जो वे कुंठ महान ॥
४९॥ रहम लाल भाषा करी जैसी बुध जे ज्ञान ॥ छमन जन सों विनती क
रो करो न हास महान ॥ महाभारथ पर्व मध्ये भाषा करी चना इ ॥ रहम लाल
कीनी विनती हरि जन दास जन ॥५०॥



